प्रकाशकीय

रामचरितमानस के इस संस्करण के संपादक मानसमराल स्व० श्री शंभु
नारायण जी चौबे की धुन, निरति और लगन का अनुभव वे ही कर सकते हैं
जिन्होंने उनको इस राम-काज में दिन रात एक करते और आपा मिटाते देखा
। इस निष्काम अध्यवसाय का फल राष्ट्र को देने से पूर्व ही उनके चल बसने
से जो क्षति हुई है वह कहाँ पूरी होने की ? और न ऐसा 'रतन' कभी मिलने
का। नि:स्व होते हुए भी जो नित्य निरंतर नि:स्वार्थ रहा जो मूर्तिमान्—

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च ।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ।
समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः ।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ।
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येनकेनचित्

था, वही मानस के कार्य का अधिकारी था, वही, वही।

फिर भी क्या कहा जाय 'काल्स्य कुटिला गति' को कि वे अपने इस
गौरवप्रयत्न के मुद्रण का आरंभमात्र देख सके अभी बालकांड के दो ही तीन
फर्मे छपे थे कि वे न रहे।

मानस के इस संस्करण के पाठ निर्धारण में उन्होंने निम्नांकित पाँच प्रतियों
का उपयोग किया है। पाठभेद में इन प्रतियों का इन्हीं संख्याओं से निर्देश
हुआ है—

१. श्रावणकुंज अयोध्यावाली १६६१ की प्रति।

२. राजापुरवाली अयोध्याकांड की प्रति।

३. १७१० वाली संपूर्ण प्रति जो इस समय काशीनरेश के सरस्वती भंडार
में है।

४. १७२१ की प्रति जो अधुना भारत कलाभवन काशी में है। इसे तथा
१७६२ वाली प्रति को स्व० चौबे जी ने खोज निकाला और उन्हीं की कृपा से
अब ये भारत कलाभवन में सुरक्षित हैं।

५. १७६२ की संपूर्ण प्रति।

६. मिर्जापुर के प्रसिद्ध रामायणी श्री रामगुलाम जी के शिष्य छक्कनलाल जी की प्रति की प्रतिलिपि, जिसे म० म० प० सुधाकर द्विवेदी के पिता ने प्रस्तुत किया था।

अब तक मानस के जो भी प्रामाणिक संस्करण प्रकाशित हुए हैं उन सब में प्रायः इन्हीं प्रतियों या इन पर आधृत प्रतियों का उपयोग किया गया है। किंतु प्रस्तुत संग्रह की विशेषता यह है कि इसके संपादक स्वर्गीय चौबे जी ने बहुत प्रतिकूल परिस्थितियों में विशेष परिश्रमपूर्वक उक्त सभी प्रतियों से स्वयं अक्षर अक्षर मिलाकर अपने पाठ निर्धारित किए। अन्य संपादकों ने या तो भ्रामक प्रतिलिपियों का उपयोग किया या उनके पूर्ववर्ती संपादकों ने जो भ्रामक पाठ दिए थे उन्हीं को लेकर पाठ निर्धारित किए। इस कारण अधिकांश संस्करण वैज्ञानिक दृष्टि से अशुद्ध रह गए हैं।

श्रावणकुंज वाली प्रति में कुछ हेर फेर किया गया है। राजापुरवाली प्रति में भी अनेक छूटें हैं। यद्यपि पाठ की दृष्टि तथा वर्तनी की एकरूपता की दृष्टि से यह प्रति विशेष महत्त्व की है पर इसके लेखक को,जान पड़ता है, पंक्ति छोड़ जाने की बान थी जिस कारण इसमें अनेक भ्रम उत्पन्न हुए।

इसी प्रकार काशीनरेश के सरस्वती भंडारवाली, १७१० वि० की प्रति में अनेक पन्ने जीर्ण होने के कारण बदल दिए गए हैं और उनके पाठ किसी इधर वाली प्रति से लिए गए हैं जो सर्वथा अमान्य हैं।

१७२१ वि० वाली प्रति बहुत दिनों तक अज्ञातवास में रही। प्रसिद्ध मानस-प्रेमी श्री भागवतदास ने, जिन्होंने मानस के प्रामाणिक संस्करण निकालने का प्रथम प्रयास किया, इस प्रति का उल्लेख किया है और इसे अपनी प्रति का आधार माना है। इसकी प्रतिलिपियों से ही लोग काम चलाते रहे। ये प्रतिलिपियाँ भ्रामक हैं, क्योंकि मूल पोथी पर कई संशोधकों ने मनमाने संशोधन कर डाले थे जिन्हें प्रतिलिपिकारों ने तद्वत् ग्रहण किया।

१७६२ वि० वाली प्रति पौने सोलह आने १७२१ वाली प्रति की अनुगामिनी है। एक प्रतिशत में यह जहाँ १७२१ वि० वाली प्रति से भिन्न होती है वहाँ ऐसे सुंदर पाठ देती है कि उन्हें स्वीकार करना पड़ता है।

रामगुलाम जी की धारा श्रावणकुंज वाली धारा से अलग प्रतीत होती है, और ऐसा जान पड़ता है कि यह धारा उस समुदाय की थी जिसने मानस को अपने जान प्रांजल रूप देना चाहा है। क्षेपक तो उन्होंने नहीं जोड़े पर अपना पांडित्य अवश्य लगाया। छक्कनलाल वाली प्रति में पीछे से किसी ने ऐसे संशोधन कर दिए हैं जो १७२१ वाली प्रति के निकट हैं अर्थात् वह रामगुलाम

जी वाली परंपरा परिवर्तित कर दी गई है।

जिन अन्य प्रतियों का उपयोग मानस के दूसरे संपादकों ने किया है उनमें सर्वश्री बाबा रघुनाथदास, बंदन पाठक और कोदवराम की मुद्रित प्रतियाँ उल्लेखनीय हैं। इनमें से पूर्वोक्त दो प्रतियाँ रामगुलाम जी की परंपरा में हैं, फलत. छक्कनलाल की प्रति से इतनी समानता रखती है कि उनका अंतर्भाव उसमें हो जाता है। शेषोक्त कोदवराम की प्रति, जो गोसाईं जी की मूल परंपरा में बतलाई जाती है जितनी बार मुद्रित हुई उसमें पाठ परिवर्तन होते गए। साथ ही, उसकी मूल प्रति के कभी दर्शन न हुए। अतएव परिशोधन में उसका उपयोग करना उचित न समझा गया।

उक्त छह प्रतियों से प्रत्येक पाठ भेद आधुनिक संपादन शैली के अनुसार तुलनात्मक रीति पर रजिस्टरों पर चढ़ाया गया और फिर उसके गुण अवगुण पर ही विचार नहीं किया गया, प्रत्युत यह भी पाया गया कि प्रति १, ३, ४ और ५ किसी एक मूल प्रति पर अवलंबित हैं। किंतु उस मूल प्रति में ही समय समय पर परिवर्तन किए गए जिनसे शाखाभेद उत्पन्न हुआ।

ऐसा अनुमान होता है कि गोस्वामी जी ने ही समय समय पर ये परिवर्तन किए। यदि मानस की रचना के लिए बारह वर्ष का समय रख लिया जाय, जो अतिरिक्त लंबा समय है, तो 'संवत् सोरह सौ इकतीसा' से चलकर उसकी परिसमाप्ति १६४३ वि० के लगभग हुई होगी, अर्थात् इसके उपरांत गोस्वामी जी लगभग चालीस वर्ष विद्यमान रहे। यह असंभव है कि अपनी इस स्वान्त सुखाय कृति का वे नियमपूर्वक पारायण न करते रहे हों। ऐसे पारायणों में कवि के लिये नई नई सूझ का होना स्वाभाविक है, फलतः यह जान पड़ता है कि १७६२ वाली प्रति में जो पाठ हैं वे ही गोस्वामी जी के अंतिम पाठ हैं क्योंकि बाद वाली प्रतियों में भक्तवृंद ने जो हेर फेर किए हैं उनमें वह स्वारस्य नहीं है जो स्वयम् कवि के परिवर्तन में।

इसी दृष्टि से स्व० चौबे जी ने अधिकतर ऐसे पाठों को मूल में स्थान दिया है। फिर भी वाचकों को सब पाठ उपलब्ध हो जायँ इसलिये सभी पाठांतर टिप्पणी में दे दिए गए हैं जिनका पाठ निर्देश उक्त क्रमिक संख्या के अनुसार है। इन टिप्पणियों के संबंध में यह बात विश्वास के साथ कही जा सकती है कि तद् तद् प्रतियों के जो रूप इनमें दिए गए हैं वे ही मान्य हैं अन्य संस्करणों में यदि उनका कोई दूसरा रूप दिया गया है तो प्रमादवश ही।

अवधी के ह्रस्व एकार और ओकार के लिये ` तथा ` का प्रयोग भी इस

संस्करण की नवीनता है। मानस का पाठ करनेवाला विशेषतः अन्य भाषा भाषियों को निश्चय ही इससे बहुत सुविधा होगी।

वर्तनी के संबंध में पुरानी प्रतियों का ही अनुसरण किया गया है। उनकी एकरूपता अगले संस्करण तक के लिए स्थगित कर दी गई थी। किंतु जैसा आरंभ में कह चुके हैं हमारे दुर्भाग्यवश चौबे जी पहले दो तीन फार्म की ही उपाट देख सके कि स्वजनों के हृदय में सदा हरा रहनेवाला घाव छोड़कर महाप्रस्थान कर गए। बिना अत्युक्ति के, मानस विषयक अतुल, असीम एवं अगाध ज्ञान उनके संग चला गया। अतः यह दूसरा संस्करण वाला काम अनिश्चित काल के लिये टल गया। इसी प्रकार संपादन-संबंधी विस्तृत भूमिका भी जिसकी पांडुलिपि वे बहुत कुछ तैयार कर चुके थे नहीं दी जा सकी, क्योंकि बहुत खोजने पर भी उसका अभी तक पता नहीं लग सका। उसीके अभाव में इन पंक्तियों द्वारा उस दिवंगत आत्मा के महत् कार्य का कुछ परिचय देने की चेष्टा की गई है।

खेद, जिस काम के लिये दिन रात एक कर उन्होंने अपने को मिटा दिया था उसे वे पूरा न देख सके। वे जो कार्य अधूरा छोड़ गए उसकी पूर्ति राम अधीन है। फिर भी प्रयत्न किया जायगा कि उनके कार्य के वैज्ञानिक अंश का विस्तृत परिचय लोक के समक्ष उपस्थित किया जाय। प्रार्थना है कि भगवान् इस संकल्प को पूरा करें।

वसंत पंचमी २००५ वि०

रामचरितमानस
प्रथम सोपान

सुजन समाज सकल गुन खानी। करौं प्रनाम सप्रेम सुबानी।
साधु चरित सुभ चरित कपासू। निरस बिसद गुन मय फल जासू।
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा। बंदनीय जेहिं जग जसु पावा।
मुद मंगल मय संत समाजू। जो जग जंगम तीरथराजू।
राम भगति जहँ सुरसरि धारा। सरसै ब्रह्म बिचार प्रचारा।
बिधि निषेध मय कलि मल हरनी। करम कथा रबिनंदिनि बरनी।
हरि हर कथा बिराजति बेनी। सुनत सुलभ[1] मुद मंगल देनी।
बटु बिस्वासु अचल निज धरमा। तीरथ साज[2] समाज सुकरमा।
सबहि सुलभ सब दिन सब देसा। सेवत सादर समन कलेसा।
अकथ अलौकिक तीरथराऊ। देइ सद्य फल प्रगट प्रभाऊ॥

सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग।
लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग॥ २॥

मज्जन फल पेखिअ ततकाला। काक होहिं पिक बकौ मराला।
सुनि आचरज करै जनि कोई। सतसंगति महिमा नहि गोई।
बालमीकि नारद घटजोनी। निज निज मुखनि कही निज होनी।
जलचर थलचर नभचर नाना। जे जड़ चेतन जीव जहाना।
मति कीरति गति भूति भलाई। जब जेहिं जतन जहाँ जेहिं पाई।
सो जानब सतसंग प्रभाऊ। लोकहु बेद न आन उपाऊ।
बिनु सतसंग बिबेक न होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।
सतसंगति मुद मंगल मूला। सोइ फल सिधि सब साधन फूला।
सठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परस[3] कुधातु सुहाई।
बिधि बस सुजन कुसंगति परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं।

१–४, ५; सकल ६.
२–४, ५; राज ६.
३–४, ५; परसि ६.

बिधि हरि हर कबि कोबिद बानी। कहत साधु महिमा सकुचानी॥
सो मो सन कहि जात न कैसे। साक बनिक मनि गन गुन जैसे॥
वंदौं संत समान चित हित अनहित नहिं कोउ।
अंजलिगत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोउ॥
संत सरल चित जगत हित जानि सुभाउ सनेहु।
बाल बिनय सुनि करि कृपा राम चरन रति देहु॥ ३॥

बहुरि बंदि खलगन सतिभाए। जे बिनु काज दाहिनेहु[१] बाए।
पर हित हानि लाभ जिन्ह केरे। उजरें हरष बिषाद बसेरे।
हरि हर जस राकेस राहु से। पर अकाज भट सहसबाहु से।
जे परदोष लखहिं सहसाखी। पर हित घृत जिन्हके मन माखी।
तेज कृसानु रोष महिषेसा। अघ अवगुन धन धनी धनेसा।
उदय केतु सम हित सबही के। कुंभकरन सम सोवत नीके।
पर अकाज लगि तनु परिहरहीं। जिमि हिम उपल कृषी दलि गरहीं।
बंदौं खल जस सेष सरोषा। सहस बदन बरनै[२] पर दोषा।
पुनि प्रनवौं पृथुराज समाना। पर अघ सुनै सहस दस काना।
बहुरि सक्र सम बिनवौं तेही। संतत सुरानीक हित जेही।
बचन बज्र जेहि सदा पिआरा। सहस नयन पर दोष निहारा॥
उदासीन अरि मीत हित सुनत जरहिं खल रीति।
जानि पानि जुग जोरि जनु बिनती करइ सप्रीति॥ ४॥

मैं अपनी दिसि कीन्ह[३] निहोरा। तिन्ह निज ओर न लाउब भोरा।
बायस पलिअहिं अति अनुरागा। होहिं निरामिष कबहुँ[४] कि कागा।
बंदौं संत असज्जन चरना। दुखप्रद उभय बीच कछु बरना।

१–४, ५; दाहिने ६.
*३–३, ४, ५; कीन्हि ६.
२–४, ५, ६; बरनइ ३.
४–१, ३, ६; कबहिं ४, ५.

बिछुरत एक प्रान हरि लेंईं। मिलत एक दुख दारुन[1] देंईं।
उपजहिं एक संग जग माहीं। जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं।
सुधा सुरा सम साधु असाधू। जनक एक जग जलधि अगाधू।
भल अनभल निज निज करतूती। लहत सुजस अपलोक बिभूती।
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू। गरल अनल कलि मल सरि ब्याधू।
गुन अवगुन जानत सब कोई। जो जेहि भाव नीक तेहि सोई॥

भलो भलाइहि[2] पै लहै लहै निचाइहि[2] नीचु।
सुधा सराहिअ अमरता गरल सराहिअ मीचु॥ ५॥

खल अघ अगुन साधु गुन गाहा। उभय अपार उदधि अवगाहा।
तेहि तें कछु गुन दोष बखाने। संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने।
भलेउ पोच सब बिधि उपजाये। गनि गुन दोष बेद बिलगाये।
कहहिं बेद इतिहास पुराना। बिधि प्रपंचु गुन अवगुन साना।
दुख सुख पाप पुन्य दिन राती। साधु असाधु सुजाति कुजाती।
दानव देव ऊँच अरु नीचू। अमिअ सजीवनु माहुरु मीचू।
माया ब्रह्म जीव जगदीसा। लच्छि अलच्छि रंक अवनीसा।
कासी मग सुरसरि क्रमनासा[3]। मरु मारव महिदेव गवासा।
सरग नरक अनुराग बिरागा। निगम अगम गुन दोष बिभागा।

जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं[4] पय परिहरि बारि बिकार॥ ६॥

अस बिबेक जब देइ बिधाता। तब तजि दोष गुनहि मनु राता।
काल सुभाउ करम बरिआई। भलेउ प्रकृति बस चुकइ भलाई।

१–१, ३, ४, ५; दारुन दुख ६. ३–१, ३, ६; कर्मनासा ४, ५.
२–१,३,४,५; भलाई, निचाई ६. ४–१, ३, ४, ५; गहहिं ६.

सो सुधारि हरिजन[1] जिमि लेहीं। दलि दुख दोष बिमल जसु देहीं।
खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू। मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू।
लखि सुबेष जग बंचक जेऊ। बेष प्रताप पूजिअहिं[2] तेऊ।
उघरहिं अंत न होइ निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू।
कियेहु कुबेष साधु सनमानू। जिमि जग जामवंत हनुमानू।
हानि कुसंग सुसंगति लाहू। लोकहु बेद बिदित सब काहू।
गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा। कीचहि मिलइ नीच जल संगा।
साधु असाधु सदन सुक सारीं। सुमिरहिं राम देहिं गनि गारीं।
धूम कुसंगति कारिख होई। लिखिअ पुरान मंजु मसि सोई।
सोइ जल अनल अनिल संघाता। होइ जलद जग जीवन दाता॥

ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग लखहि सुलच्छन लोग॥
सम प्रकास तम पाख दुहुँ नाम भेद बिधि कीन्ह।
ससि पोषक सोषक[3] समुझि जग जस अपजस दीन्ह॥
जड़ चेतन जग जीव जत सकल राम मय जानि।
बंदौं सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि॥
देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्ब।
बंदौं किन्नर रजनिचर कृपा करहु अब सर्ब॥ ७॥

आकर चारि लाख चौरासी। जाति जीव जल थल नभ[4] बासी।
सीय राम मय सब जग जानी। करौं प्रनाम जोरि जुग पानी।
जानि कृपाकर किंकर मोहू। सब मिलि करहु छाड़ि छल छोहू।
निज बुधि बल भरोस मोहि नाहीं। तातें बिनय करौं सब पाहीं।

१—१, ४, ५, ६; हरितन ३.
२—१, ३, ४, ५; पूजिअत ६,
३—४, ५; सोषक पोषक १, ३, ६.
४—१, ३, नभ जल थल ४, ५; नभ थल जल ६.

करन चहौं रघुपति गुन गाहा । लघु मति मोरि चरित अवगाहा ।
सूझ न एकौ अंग उपाऊ । मन मति रंक मनोरथ राऊ ।
मति अति नीचि ऊँचि रुचि आछी । चहिअ अमिअँ जग जुरै न छाछी ।
छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई । सुनिहहिं बाल बचन मन लाई ।
जौं बालक कह तोतरि बाता । सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता ।
हँसिहहिं कूर कुटिल कुबिचारी । जे पर दूषन भूषन धारी ।
निज कवित्त केहि लाग न नीका । सरस होउ अथवा अति फीका ।
जे पर भनिति सुनत हरषाहीं । ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं ।
जग बहु नर सरि सर[1] सम भाई । जे निज बाढ़ि बढ़हिं जल पाई ।
सज्जन सकृत[2] सिंधु सम कोई । देखि पूर बिधु बाढ़ै जोई ॥

भाग छोट अभिलाषु बड़ करउँ एक बिश्वास ।
पैहहिं सुख सुनि सुजन जन[3] खल करिहहिं उपहास ॥ ८ ॥

खल परिहास होइ हित मोरा । काक कहहिं कलकंठ कठोरा ।
हंसहि बक गादुर[4] चातकही । हसहिं मलिन खल बिमल बतकही ।
कबित रसिक न राम पद नेहू । तिन्ह कहँ सुखद हास रस एहू ।
भाषा भनिति भोरि मति मोरी । हँसिबे जोग हसें नहिं खोरी ।
प्रभु पद प्रीति न सामुझि नीकी । तिन्हहिं कथा सुनि लागिहि फीकी ।
हरि हर पद रति मति न कुतरकी । तिन्ह कहुँ मधुर कथा रघुबर की ।
राम भगति भूषित जिअ जानी । सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी ।
कबि न होउँ नहिं चतुर[5] प्रबीनू । सकल कला सब बिद्या हीनू ।
आखर अरथ अलंकृति नाना । छंद प्रबंध अनेक बिधाना ।
भाव भेद रस भेद अपारा । कबित दोष गुन बिबिध प्रकारा ।

१–४, ५; सर सरि १, ३, ६. ४–१, ३, ६; गादुर मोर ५; दादुर मोर ४.
२–१, ३, ६; सकृति ४, ५. ५–४, ५, ६; बचन १, ३.
*३–४. ५ ६: सब १, ३.

कबित बिबेक एक नहिं मोरें । सत्य कहौं लिखि कागरे[1] कोरे ॥
भनिति मोरि सब गुन रहित बिस्व बिदित गुन एक ।
सो बिचारि सुनिहहिं सुमति जिन्हके बिमल बिबेक ॥ ९ ॥
एहि मह रघुपति नाम उदारा । अति पावन पुरान श्रुति सारा ।
मंगल भवन अमंगल हारी । उमा सहित जेहि जपत पुरारी ।
भनिति बिचित्र सुकबि कृत जोऊ । राम नाम बिनु सोह न सोऊ ।
बिधुबदनी सब भाँति सँवारी । सोह न बसन बिना बर नारी ।
सब गुन रहित कुकबि कृत बानी । राम नाम जस अंकित जानी ।
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही । मधुकर सरिस संत गुनग्राही ।
जदपि कबित रस एकौ नाहीं । राम प्रताप प्रगट एहि माहीं ।
सोइ भरोस मोरें मन आवा । केहि न सुसंग बड़त्तनु[2] पावा ।
धूमौ तजै सहज करुआई । अगरु प्रसंग सुगंध बसाई ।
भनिति भदेस बस्तु भलि बरनी । रामकथा जग मंगल करनी ॥
मंगल करनि कलि मल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ[3] की ।
गति कूर कबिता सरित की ज्यों सरित पावन पाथ की[4] ।
प्रभु सुजस संगति भनिति भलि होइहि सुजन मन भावनी ।
भव अंग भूति मसान की सुमिरत सुहावनि पावनी ॥
प्रिय लागिहि अति सबहि मम भनिति राम जस संग ।
दारु बिचारु कि करइ कोउ[5] बंदिअ मलय प्रसंग ॥
स्याम सुरभि पय बिसद अति गुनद करहिं सब पान ।
गिरा ग्राम्य[6] सिय राम जस गावहिं सुनहिं सुजान ॥ १० ॥
मनि मानिक मुकुता छबि जैसी । अहि गिरि गज सिर सोह न तैसी ।

१—१, ३, ४, ५; कागद ६.
*२—१, ३, ४, ५, बडपनु ६.
३—१, ३, ६; रघुबीर ४, ५.
४—१, ३, ६; पातकी ४, ५.
५—१, ३; कोइ ४, ५, ६.
६—१, ३, ४, ५; ग्राम ६.

नृप किरीट तरुनी तनु पाई। लहहिं सकल सोभा अधिकाई।
तैसेहि सुकबि कबित बुध कहहीं। उपजहिं अनत अनत छबि लहहीं।
भगति हेतु बिधि भवन बिहाई। सुमिरत सारद आवति धाई।
राम चरित सर बिनु अन्हवायें। सो श्रम जाइ न कोटि उपायें।
कबि कोबिद अस हृदयँ बिचारी। गावहि हरि जस कलि मल हारी।
कीन्हे प्राकृत जन गुन गाना। सिर धुनि गिरा लगति[1] पछिताना।
हृदय सिंधु मति सीपि समाना। स्वाती सारद कहहिं सुजाना।
जौं बरषै बर बारि बिचारू। होहिं कबित मुकुता मनि चारू॥

जुगुति बेधि पुनि पोहिअहि रामचरित बर ताग।
पहिरहिं सज्जन बिमल उर सोभा अति अनुराग॥११॥

जे जनमे कलिकाल कराला। करतब बायस बेष मराला।
चलत कुपंथ बेद मग छाँड़े। कपट कलेवर कलि मल भाँड़े।
बंचक भगत कहाइ राम के। किंकर कंचन कोह काम के।
तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी। धींग[2] धरमध्वज धंधक[3] धोरी।
जौं अपने अवगुन सब कहऊँ। बाढ़इ कथा पार नहिं लहऊँ।
तातें मैं अति अलप बखाने। थोरे महुँ[4] जानिहहिं सयाने।
समुझि बिबिध बिनती अब मोरी। कोउ न कथा सुनि देइहि खोरी।
एतेहु पर करिहहिं ते[6] असंका। मोहि तें अधिक ते[7] जड़ मति रंका।
कबि न होउँ नहिं चतुर कहावौं। मति अनुरूप राम गुन गावौं।
कहँ रघुपति के चरित अपारा। कहँ मति मोरि निरत संसारा।
जेहि मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं। कहहु तूल केहि लेखे माहीं।

१–४, ५, ६; लगत १, २.
२–१, ३; धिग ४, ५, ६.
*३–४, ५, ६; धंभ्रक १, २.
४–१, ३, ६; थोरेहि महँ ४, ५.
५–४, ५; बिबिध बिनती १, ३;
बिबिधि बिधि बिनती ६.
६–१, ३; जे ४, ५, ६.
७–१, ३, ४, ५; ते ६.

समुझत अमिति राम प्रभुताई। करत कथा मन अति कदराई॥
सारद सेप महेस विधि आगम निगम पुरान।
नेति नेति कहि जासु गुन करहिं निरंतर गान॥१२॥

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई। तदपि कहे बिनु रहा न कोई।
तहाँ बेद अस कारन राखा। भजन प्रभाउ भाँति बहु भाखा।
एक अनीह अरूप अनामा। अज सच्चिदानंद परधामा।
व्यापक विश्वरूप भगवाना। तेहिं धरि देह चरित कृत नाना।
सो केवल भगतन हित लागी। परम कृपाल प्रनत अनुरागी।
जेहि जन पर ममता अति छोहू। जेहिं करुना करि कीन्ह न कोहू।
गई बहोर गरीब निवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू।
बुध बरनहिं हरिजस अस जानी। करहिं पुनीत सुफल निज बानी।
तेहि बल मैं रघुपति गुन गाथा। कहिहउँ नाइ राम पद माथा।
मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गाई। तेहि मग चलत सुगम[1] मोहि भाई॥
अति अपार जे सरित बर जौं नृप सेतु कराहिं।
चढ़ि पिपीलिकउ परम लघु बिनु श्रम पारहि जाहिं॥१३॥

एहि प्रकार बल मनहिं देखाई। करिहौं रघुपति कथा सुहाई।
व्यास आदि कबिपुंगव नाना। जिन्ह सादर हरि सुजस बखाना।
चरन कमल बंदौं तिन्ह केरे। पूरहुँ[2] सकल मनोरथ मेरे।
कलि के कबिन्ह करौं परनामा। जिन्ह बरने रघुपति गुन ग्रामा।
जे प्राकृत कबि परम सयाने। भाषा जिन्ह हरिचरित बखाने।
भये जे अहहिं जे होइहहिं आगे। प्रनवौं सबनि कपट छल[3] त्यागे।
होहु प्रसन्न देहु बरदानू। साधु समाज भनिति सनमानू।

१–१, ३, ६; सुलभ ४, ५. ३–४, ५, ६; सबहि कपट सब १, ३.
२–१, ३; पूरहु ४, ५; पुरवहु ६.

जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं। सो श्रम बादि बालकबि करहीं।
कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कहँ हित होई।
राम सुकीरति भनिति भदेसा। असमंजस अस मोहि अँदेसा।
तुम्हरी कृपा सुलभ सोउ मोरें। सिअनि सोहावनि टाट पटोरें।
करहु अनुग्रह अस जिअ[1] जानी। बिमल जसहि अनुहरै सुबानी॥

सरल कबित कीरति बिमल सोइ आदरहिं सुजान।
सहज बयर बिसराइ रिपु जो सुनि करहिं बखान॥
सो न होइ बिनु बिमल मति मोहिं मति बल अति थोरि।
करहु कृपा हरि जस कहउँ पुनि पुनि कहौं निहोरि[2]॥
कबि कोबिद रघुबरचरित मानस मंजु मराल।
बाल बिनय सुनि सुरुचि लखि मोपर होहु कृपाल[3]॥

बंदौं मुनिपदकंजु रामायन जेहिं निरमयेउ।
सखर सुकोमल मंजु दोष रहित दूषन सहित॥
बंदौं चारिउ बेद भव बारिधि बोहित सरिस।
जिन्हहिं न सपनेहुँ खेद बरनत रघुबर बिसद जसु॥
बंदौं बिधि पद रेनु भवसागर जेहिं कीन्ह जहँ।
संत सुधा ससि धेनु प्रगटे खल बिष बारुनी॥

बिबुध बिप्र बुध ग्रह चरन बंदि कहौं कर जोरि।
होइ प्रसन्न पुरवहु सकल मंजु मनोरथ मोरि॥ १४॥

पुनि बंदौं सारद सुरसरिता। जुगल पुनीत मनोहर चरिता।
मज्जन पान पाप हर एका। कहत सुनत एक हर अबिबेका।
गुर पितु मातु महेस भवानी। प्रनवौं दीनबंधु दिनदानी।
सेवक स्वामि सखा सिय पी के। हित निरुपधि सब बिधि तुलसी के।

---

*१—१, ६; हिअ ४, ५. ३—१, ३, ४, ५; दयाल ६.
२—४, ५; कहउँ निहोर ६; करउँ निहोर १, ३.

कलि बिलोकि जग हित हर गिरिजा। साबर मंत्र जाल जिन्ह सिरजा।
अनमिल आखर अरथ न जापू। प्रगट प्रभाउ महेस प्रतापू।
होउ महेस[१] मोहि पर अनुकूला। करहुँ[२] कथा मुद मंगल मूला।
सुमिरि सिवा सिव पाइ पसाऊ। बरनउँ राम चरित चित चाऊ।
भनिति मोरि सिव कृपा बिभाती। ससि समाज मिलि मनहुँ सुराती।
जे एहि कथहि सनेह समेता। कहिहहि सुनिहहि समुझि सचेता।
होइहहि राम चरन अनुरागी। कलि मल रहित सुमंगल भागी॥
सपनेहु साचेहु मोहि पर जौं हर गौरि पसाउ।
तौ फुर होउ जो कहेउँ सब भाषा भनिति प्रभाउ॥१५॥

बंदौं अवधपुरी अति पावनि। सरजू सरि कलि कलुष नसावनि।
प्रनवौं पुर नर नारि बहोरी। ममता जिन्ह पर प्रभुहि न थोरी।
सिय निंदक अघ ओघ नसाए। लोक बिसोक बनाइ बसाए।
बंदौं कौसल्या दिसि प्राची। कीरति जासु सकल जग माची।
प्रगटेउ जहँ रघुपति ससि चारू। बिस्व सुखद खल कमल तुसारू।
दसरथ राउ सहित सब रानी। सुकृत सुमंगल मूरति मानी।
करौं प्रनाम करम मन बानी। करहु कृपा सुत सेवक जानी।
जिन्हहिं बिरचि बड़ भयेउ बिधाता। महिमा अवधि राम पितु माता॥
बंदौं अवध भुआल सत्य प्रेम जेहि राम पद।
बिछुरत दीनदयाल प्रिय तनु तृन इव परिहरेउ॥१६॥

प्रनवौं परिजन[३] सहित बिदेहू। जाहि रामपद गूढ़ सनेहू।
जोग भोग महँ राखेउ गोई। राम बिलोकत प्रगटेउ सोई।

१–४, ५; सो महेस ६; सो उमेस १, ३.   ३–१, २, ४, ५; पुरजन ६.
२–४, ५; करउँ ६; करिहि १, ३.

प्रनवौं प्रथम भरत के चरना । जासु नेम ब्रत जाइ न बरना ।
राम चरन पंकज मन जासू । लुबुध मधुप इव तजै न पासू ।
बंदौं लछिमन पद जलजाता । सीतल सुभग भगत सुखदाता ।
रघुपति कीरति बिमल पताका । दंड समान भयेउ जस जाका ।
सेष सहस्रसीस जगकारन । जो अवतरेउ भूमि भय टारन ।
सदा सो सानुकूल रह मोपर । कृपासिंधु सौमित्रि गुनाकर ।
रिपुसूदन पद कमल नमामी । सूर सुसील भरत अनुगामी ।
महावीर बिनवौं हनुमाना । राम जासु जस आपु बखाना ॥

प्रनवौं पवनकुमार खल बन पावक ज्ञान घन ।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ॥ १७ ॥

कपिपति रीछ[२] निसाचर राजा । अंगदादि जे कीस समाजा ।
बंदौं सब के चरन सुहाये । अधम सरीर राम जिन्ह पाये ।
रघुपति चरन उपासक जेते । खग मृग सुर नर असुर समेते ।
बंदौं पद सरोज सब केरे । जे बिनु काम राम के चेरे ।
सुक सनकादि भगत मुनि नारद । जे मुनिबर बिज्ञान बिसारद ।
प्रनवौं सबहि धरनि धरि सीसा । करहु कृपा जन जानि मुनीसा ।
जनकसुता जगजननि जानकी । अतिसय प्रिय करुनानिधान की ।
ताके जुग पद कमल मनावौं । जासु कृपा निर्मल मति पावौं ।
पुनि मन बचन कर्म रघुनायक । चरन कमल बंदौं सब लायक ।
राजिव नयन धरें धनु सायक । भगत बिपति भंजन सुखदायक ॥

गिरा अरथ जल बीचि सम देखिअत[३] भिन्न न भिन्न ।
बंदौं सीताराम पद जिन्हहिं परम प्रिय खिन्न ॥ १८ ॥

१–१, ३, ६; धर ४, ५.
२–४, ५, ६; रिछ १, ३.
*३–४, ५, ६; कहिअत १, ३.

बंदौं नाम राम रघुबर को । हेतु कृसानु भानु हिमकर को ।
बिधि हरि हर मय बेद प्रान सो । अगुन अनूपम गुननिधान सो ।
महामंत्र जोइ जपत महेसू । कासीं मुकुति हेतु उपदेसू ।
महिमा जासु जान गनराऊ । प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ ।
जान आदि कबि नाम प्रभाऊ[१] । भयेउ सुद्ध कहि[२] उलटा नाऊ[१] ।
सहस नाम सम सुनि सिव बानी । जपि जेईं पिय संग भवानी ।
हरषे हेतु हेरि हर ही को । कियै भूषनु तिय भूषन ती को ।
नाम प्रभाउ जान सिव नीको । कालकूट फलु दीन्ह अमी को ॥

बरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास ।
राम नाम बर बरन जुग सावन भादव मास ॥ १९ ॥

आखर मधुर मनोहर दोऊ । बरन बिलोचन जन जियँ जोऊ ।
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू । लोक लाहु परलोक निबाहू ।
कहत सुनत समुझत[३] सुठि नीके । राम लखन सम प्रिय तुलसी के ।
बरनत बरन प्रीति बिलगाती । ब्रह्म जीव इव[४] सहज सँघाती ।
नर नारायन सरिस सुभ्राता । जग पालक बिसेषि जन त्राता ।
भगति सुतिअ कल करन बिभूषन । जग हित हेतु बिमल बिधु पूषन ।
स्वाद तोष सम सुगति सुधा के । कमठ सेष सम धर बसुधा के ।
जन मन मंजु कंज[५] मधुकर से । जीह जसोमति हरि हलधर से ॥

एक छत्रु एकु मुकुट मनि सब बरनन्हि पर जोउ ।
तुलसी रघुबर नाम के बरन बिराजित दोउ ॥ २० ॥

समुझत सरिस नाम अरु नामी । प्रीति परसपर प्रभु अनुगामी ।
नाम रूप दुइ ईस उपाधी । अकथ अनादि सुसामुझि साधी ।

१–५; प्रतापू, जापू १, ३, ४, ६.
२–४, ५; करि १, ३, ६.
३–४, ५, ६; सुमिरत १, ३.
४–४, ५, ६; सम १,३.
५–१, ३, ६; कंज मंजु ४, ५.

को बड़ छोट कहत अपराधू। सुनि गुन भेद समुझिहहिं साधू।
देखिअहि रूप नाम आधीना। रूप ज्ञान नहिं नाम बिहीना।
रूप बिसेष नाम बिनु जाने। करतल गत न परहिं पहिचाने।
सुमिरिअ नाम रूप बिनु देखें। आवत हृदयँ सनेह बिसेषें।
नाम रूप गुन[१] अकथ कहानी। समुझत सुखद न परति बखानी।
अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी॥

राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौं चाहसि उजिआर॥ २१॥

नाम जीहँ जपि जागहिं जोगी। बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी।
ब्रह्म सुखहि अनुभवहिं अनूपा। अकथ अनामय नाम न रूपा।
जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ। नाम जीह जपि जानहिं[२] तेऊ।
साधक नाम जपहिं लौ[३] लाएँ। होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ।
जपहिं नामु जन आरत भारी। मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी।
राम भगत जग चारि प्रकारा। सुकृती चारिउ अनघ उदारा।
चहू चतुर कहुँ नाम अधारा। ग्यानी प्रभुहि बिसेषि पिआरा।
चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ। कलि बिसेषि नहिं आन उपाऊ॥

सकल कामना हीन जे राम भगति रस लीन।
नाम [४]पेम पीयूष ह्रद तिन्हहुँ किए मन मीन॥ २२॥

अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा।
मोरें[५] मत बड़ नामु दुहू तें। किये जेहि जुग निज बस निज बूतें[६]।
प्रौढ़ि सुजन जनि जानहिं जन की। कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की।
एक दारुगत देखिअ एकू। पावक सम जुग ब्रह्म बिबेकू।

---

*१–४, ५, ६; मति १, ३.
२–४, ५, ६; जानहु १, ३.
३–४, ५; लय १, ३
४–३, ४, ५; प्रेम १, ६.
५–१, ३, ६; हमरे ४, ५.
६–१, ३, ६; निज बसहू ते ४, ५.

उभय अगम जुग सुगम नाम तें। कहेउ नामु बड़ ब्रह्म राम तें।
ब्यापकु एकु ब्रह्म अबिनासी। सत चेतन घन आनँद रासी।
अस प्रभु हृदयँ अछत अबिकारी। सकल जीव जग दीन दुखारी।
नाम निरूपन नाम जतन तें। सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें॥

निरगुन तें येहि भाँति बड़ नाम प्रभाउ अपार।
कहउँ नामु बड़ राम तें निज बिचार अनुसार॥ २३॥

राम भगत हित नर तनु धारी। सहि संकट किये साधु सुखारी।
नामु सप्रेम जपत अनयासा। भगत होहिं मुद मंगल बासा।
राम एक तापस तिय तारी। नाम कोटि खल कुमति सुधारी।
रिषि हित राम सुकेतु सुता की। सहित सेन सुत कीन्हि बिबाकी।
सहित दोष दुख दास दुरासा। दलइ नामु जिमि रबि निसि नासा।
भंजेउ राम आपु भव चापू। भव भय भंजन नाम प्रतापू।
दंडकबनु प्रभु कीन्ह सुहावन। जन मन अमिति नाम किये पावन।
निसिचर निकर दले रघुनंदन। नामु सकल कलि कलुष निकंदन॥

सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्हि रघुनाथ।
नाम उधारे अमिति खल बेद बिदित गुन गाथ॥ २४॥

राम सुकंठ बिभीषन दोऊ। राखे सरन जान सबु कोऊ।
नाम गरीब अनेक निवाजे। लोक बेद बर बिरिद बिराजे।
राम भालु कपि कटकु बटोरा। सेतु हेतु श्रमु कीन्ह न थोरा।
नामु लेत भवसिंधु सुखाहीं। करहु बिचारु सुजन मन माहीं।
राम सकल कुल रावनु मारा। सीय सहित निज पुर पगु धारा।
राजा-रामु अवध रजधानी। गावत गुन सुर मुनि बर बानी।
सेवक सुमिरत नामु सप्रीती। बिनु श्रम प्रबल मोह दलु जीती।
फिरत सनेहँ मगन सुख अपनें। नाम प्रसाद सोच नहिं सपनें॥

१-४, ५; सकुल रन १, ३, ६.

ब्रह्म राम तें नामु बड़ बर दायक बर दानि।
रामचरित सत कोटि महुँ लिये महेस जिय जानि ॥ २५ ॥

नाम प्रसाद संभु अबिनासी। साजु अमंगल मंगल रासी।
सुक सनकादि साधु मुनि जोगी। नाम प्रसाद ब्रह्म सुख भोगी।
नारद जानेउ नाम प्रतापू। जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू।
नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू। भगत सिरोमनि भे प्रहलादू।
ध्रुअ सगलानि[1] जपेउ हरि नाऊँ। थापेउ[2] अचल अनूपम ठाऊँ।
सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू।
अपतु अजामिलु गजु गनिकाऊ। भये मुकुत हरि नाम प्रभाऊ।
कहउँ कहाँ लगि नाम बड़ाई। रामु न सकहिं नाम गुन गाई ॥
नामु राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु।
जो सुमिरत भयो भाँग ते तुलसी तुलसीदासु ॥ २६ ॥

चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका। भये नाम जपि जीव बिसोका।
बेद पुरान संत मत एहू। सकल सुकृत फल राम सनेहू।
ध्यानु प्रथम जुग मख बिधि दूजें। द्वापर परितोपन[3] प्रभु पूजें।
कलि केवल मल मूल मलीना। पाप पयोनिधि जन मन मीना।
नाम कामतरु काल कराला। सुमिरत समन सकल जग जाला।
राम नाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता।
नहिं कलि करम न भगति बिबेकू। राम नाम अवलंबन एकू।
कालनेमि कलि कपट निधानू। नाम सुमति समरथ हनुमानू ॥
राम नाम नर केसरी कनककसिपु कलिकालु।
जापक जन प्रहलाद जिमि पालिहि दलि सुरसालु ॥ २७ ॥

१–६; ध्रुव सगलानि १, ३; ध्रुअ सग लागि ४, ५.
२–४, ५; पायेउ १, ३, ६.
३–४, ५, ६; परितोषत १, ३.
४–१, ३, ६; सकल समन जजाला ४, ५.

भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ।
सुमिरि सो नाम राम गुन गाथा। करौ नाइ रघुनाथहि माथा।
मोरि सुधारिहि सो सब भाँती। जासु कृपा नहि कृपा अघाती।
राम सुस्वामि कुसेवकु मो सो। निज दिसि देखि दयानिधि पोसो।
लोकहुँ बेद सुसाहिब रीती। बिनय सुनत पहिचानत प्रीती।
गनी गरीब ग्राम नर नागर। पंडित मूढ़ मलीन उजागर।
सुकबि कुकबि निजमति अनुहारी। नृपहि सराहत सब नर नारी।
साधु सुजान सुसील नृपाला। ईस अंस भव परम कृपाला।
सुनि सनमानहिं[1] सबहिं सुबानी। भनिति भगति नति गति पहिचानी।
यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ। जान सिरोमनि कोसलराऊ।
रीझत राम सनेह निसोतें। को जग मंद मलिन मन मो तें॥

सठ सेवक की प्रीति रुचि रखिहहि राम कृपालु।
उपल किये जलजान जेहि सचिव सुमति कपि भालु॥
हौंहुँ कहावत सबु कहत राम सहत उपहास।
साहिब सीतानाथ से[2] सेवक तुलसीदास॥२८॥

अति बडि मोरि ढिठाई खोरी। सुनि अघ नरकहुँ नाक सँकोरी।
समुझि सहम मोहि अपडर अपने। सो सुधि राम कीन्हि नहि सपने।
सुनि अवलोकि सुचित चख चाही। भगति मोरि[4] मति स्वामि सराही।
कहत नसाइ होइ हिअ नीकी। रीझत राम जानि जन जी की।
रहति न प्रभु चित चूक किये की। करत सुरति सय[5] बार हिए की।
जेहि अघ बधेउ ब्याध जिमि बाली। फिरि सुकंठ सोइ कीन्हि कुचाली।
सोइ करतूति बिभीषन केरी। सपनेहु सो न राम हियँ हेरी।
ते भरतहि भेटत सनमानें। राजसभाँ[6] रघुबीर बखाने॥

१–१, ३, ६, सनमानिहि ४, ५
२–१, ४, ५, ६, मति ३.
३–४, ५. ६ सो १. ३.
४–१, ४, ५; मोरि ३, ६.
५–१, ३, ४, ५, सत ६.
६–१, ६; राम सभा ३, ४, ५.

प्रभु तरु तर कपि डार पर ते किये आपु समान।
तुलसी कहूँ[1] न राम से साहिब सीलनिधान॥
राम निकाईं रावरी है सब ही को नीक।
जौं यह साँची है सदा तौ नीको तुलसीक॥
एहिं बिधि निज गुन दोष कहि सबहि बहुरि सिरु नाइ।
बरनउँ रघुबर बिसद जसु सुनि कलि कलुष नसाइ॥२९॥

जागबलिक जो कथा सुहाई[2]। भरद्वाज मुनिबरहि सुनाई[2]।
कहिहौं सोइ संवाद बखानी। सुनहु[3] सकल सज्जन सुखु मानी।
संभु कीन्ह यह चरित सुहावा। बहुरि कृपा करि उमहि सुनावा।
सोइ सिव कागभुसुंडिहि दीन्हा। राम भगत अधिकारी चीन्हा।
तेहि सन जागबलिक पुनि पावा। तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा।
ते श्रोता बकता समसीला। सवदरसी[4] जानहिं हरि लीला।
जानहिं तीनि काल निज ग्याना। करतल गत आमलक समाना।
औरौ जे हरिभगत सुजाना। कहहिं सुनहिं समुझहिं बिधि नाना॥
मैं पुनि निज गुर सन सुनी कथा सो सूकरखेत।
समुझी नहिं तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत॥
श्रोता बकता ग्याननिधि कथा राम कै गूढ़।
किमि समुझौं मैं जीव जड़ कलि मल ग्रसित बिमूढ़॥३०॥

तदपि कही गुर बारहिं बारा। समुझि परी कछु मति अनुसारा।
भाषाबद्ध[5] करबि मैं सोई। मोरे मन प्रबोध जेहिं होई।
जस कछु बुधि बिबेक बल मेरें। तस कहिहौं हियँ हरि कें प्रेरें।

१–४, ५, ६; कहू १, ३. ६.
२–१, ३, ६, सुनाई, सुहाई ४, ५.
३–१, २, ४, ५; सुनत ६. ३.

निज संदेह मोह भ्रम हरनी। करौं कथा भव सरिता तरनी।
बुध बिश्राम सकल जन रंजनि। रामकथा कलि कलुष बिभंजनि।
रामकथा कलि पन्नग भरनी। पुनि बिबेक पावक कहुँ अरनी।
रामकथा कलि कामद गाई। सुजन सजीवनि मूरि सुहाई।
सोइ बसुधातल सुधा तरंगिनि। भयभंजनि भ्रम भेक भुअंगिनि।
असुर सेन सम नरक निकंदिनि। साधु बिबुध कुल हित गिरिनंदिनि
संत समाज पयोधि रमा सी। बिस्व भार भर अचल छमा सी।
जम गन मुहँ मसि जग जमुना सी। जीवन मुकुति हेतु जनु कासी।
रामहि प्रिय पावनि तुलसि सी। तुलसिदास हित हिय हुलसी सी।
सिव प्रिय मेकल सैल सुता सी। सकल सिद्धि सुख संपति रासी।
सदगुन सुर गन अंब अदिति सी। रघुबर भगति प्रेम परमिति सी॥

रामकथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु।
तुलसी सुभग सनेह बन सिय रघुबीर बिहारु॥ ३१॥

रामचरित चिंतामनि चारू। संत सुमति तिअ सुभग सिंगारू।
जग मंगल गुनग्राम राम के। दानि मुकुति धन धरम धाम के।
सदगुर ग्यान बिराग जोग के। बिबुध बैद भव भीम रोग के।
जननि जनक सिय राम पेम के। बीज सकल ब्रत धरम नेम के।
समन पाप संताप सोक के। प्रिय पालक परलोक लोक के।
सचिव सुभट भूपति बिचार के। कुंभज लोभ उदधि अपार के।
काम कोह कलिमल करि गन के। केहरि सावक जन मन बन के।
अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के। कामद घन दारिद दवारि के।
मंत्र महामनि बिषय ब्याल के। मेटत कठिन कुअंक भाल के।
हरन मोह तम दिनकर कर से। सेवक सालि पाल जलधर से।
अभिमत दानि देव तरुबर से। सेवत सुलभ सुखद हरिहर से।

प्रभु तरु तर कपि डार पर ते किये आपु समान।
तुलसी कहूँ न राम से साहिब सीलनिधान॥
राम निकाईं रावरी है सब ही को नीक।
जौं यह साँची है सदा तौ नीको तुलसीक॥
एहि विधि निज गुन दोष कहि सबहि बहुरि सिरु नाइ।
बरनउँ रघुबर बिसद जसु सुनि कलि कलुष नसाइ॥२९॥

जागबलिक जो कथा सुहाई[१]। भरद्वाज मुनिबरहि सुनाई[२]।
कहिहौं सोइ संवाद बखानी। सुनहु[३] सकल सज्जन सुखु मानी।
संभु कीन्ह यह चरित सुहावा। बहुरि कृपा करि उमहि सुनावा।
सोइ सिव कागभुसुंडिहि दीन्हा। राम भगत अधिकारी चीन्हा।
तेहि सन जागबलिक पुनि पावा। तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा।
ते श्रोता बकता समसीला। सबदरसी[४] जानहिं हरि लीला।
जानहिं तीनि काल निज ग्याना। करतल गत आमलक समाना।
औरौ जे हरिभगत[५] सुजाना। कहहिं सुनहिं समुझहिं बिधि नाना॥
मैं पुनि निज गुर सन सुनी कथा सो सूकरखेत।
समुझी नहिं तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत॥
श्रोता बकता ग्याननिधि कथा राम कै गूढ़।
किमि समुझौं मै जीव जड़ कलि मल ग्रसित बिमूढ़॥३०॥

तदपि कही गुर बारहि बारा। समुझि परी कछु मति अनुसारा।
भाषाबद्ध[६] करबि मैं सोई। मोरे मन प्रबोध जेहि होई।
जस कछु बुधि बिबेक बल मेरें। तस कहिहौं हियँ हरि कें प्रेरें।

१–४, ५, ६, कहू १, ३.
२–१, ३, ६, सुनाई, सुहाई ४, ५.
३–१, ३, ४, ५; सुनत ६.
४–१, ३, ४, ५; समदरसी ६.
५–१, ३, ६; भगति ४, ५.
६–४, ५, ६; भाषाबद्ध १, ३.

निज संदेह मोह भ्रम हरनी । करौं कथा भव सरिता तरनी ।
बुध बिश्राम सकल जन रंजनि । रामकथा कलि कलुष बिभंजनि ।
रामकथा कलि पन्नग भरनी । पुनि बिबेक पावक कहुँ अरनी ।
रामकथा कलि कामद गाई । सुजन सजीवनि मूरि सुहाई ।
सोइ बसुधातल सुधा तरंगिनि । भयभंजनि भ्रम भेक भुअंगिनि ।
असुर सेन सम नरक निकंदिनि । साधु बिबुध कुल हित गिरिनंदिनि
संत समाज पयोधि रमा सी । बिस्व भार भर अचल छमा सी ।
जम गन मुँह मसि जग जमुना सी । जीवन मुकुति हेतु जनु कासी ।
रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी । तुलसिदास हित हिय हुलसी सी ।
सिव प्रिय मेकल सैल सुता सी । सकल सिद्धि सुख संपति रासी ।
सदगुन सुर गन अंब अदिति सी । रघुबर भगति प्रेम परमिति सी ॥

रामकथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु ।
तुलसी सुभग सनेह बन सिय रघुबीर बिहारु ॥ ३१ ॥

रामचरित चिंतामनि चारू । संत सुमति तिअ सुभग सिंगारू ।
जग मंगल गुनग्राम राम के । दानि मुकुति धन धरम धाम के ।
सदगुर ग्यान बिराग जोग के । बिबुध बैद भव भीम रोग के ।
जननि जनक सिय राम प्रेम के । बीज सकल ब्रत धरम नेम के ।
समन पाप संताप सोक के । प्रिय पालक परलोक लोक के ।
सचिव सुभट भूपति बिचार के । कुंभज लोभ उदधि अपार के ।
काम कोह कलिमल करि गन के । केहरि सावक जन मन बन के ।
अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के । कामद घन दारिद दवारि के ।
मंत्र महामनि बिषय ब्याल के । मेटत कठिन कुअंक भाल के ।
हरन मोह तम दिनकर कर से । सेवक सालि पाल जलधर से ।
अभिमत दानि देव तरुबर से । सेवत सुलभ सुखद हरि हर से ।

सुकबि सरद नभ मन उड़गन से। राम भगत जन जीवन धन से॥
सकल सुकृत फल भूरि भोग से। जग हित निरुपधि साधु लोग से॥
सेवक मन मानस मराल से। पावन गंग तरंग माल से॥

कुपथ कुतरक कुचालि कलि कपट दंभ पाखंड।
दहन राम गुन ग्राम जिमि इंधन अनल प्रचंड॥
रामचरित राकेस कर सरिस सुखद सब काहु।
सज्जन कुमुद चकोर चित हित बिसेषि बड़ लाहु॥ ३२॥

कीन्हि प्रस्न जेहि भाँति भवानी। जेहि बिधि संकर कहा बखानी॥
सो सब हेतु कहब मैं गाई। कथा प्रबंध बिचित्र बनाई॥
जेहिं यह कथा सुनी नहिं होई। जनि आचरजु करै सुनि सोई॥
कथा अलौकिक सुनहिं जे ग्यानी। नहिं आचरजु करहिं अस जानी॥
रामकथा कै मिति जग नाहीं। असि प्रतीति तिन्ह के मन माहीं॥
नाना भाँति राम अवतारा। रामायन सत कोटि अपारा॥
कलप भेद हरि चरित सुहाए। भाँति अनेक मुनीसन्ह गाए॥
करिअ न संसय अस उर आनी। सुनिअ कथा सादर रति मानी॥

राम अनंत अनंत गुन अमित कथा बिस्तार।
सुनि आचरजु न मानिहहिं जिन्ह कें बिमल बिचार॥ ३३॥

एहि बिधि सब संसय करि दूरी। सिर धरि गुर पद पंकज धूरी॥
पुनि सबही बिनवौं कर जोरी। करत कथा जेहिं लाग न खोरी॥
सादर सिवहि नाइ अब माथा। बरनौं बिसद राम गुन गाथा॥
संबत सोरह सै एकतीसा। करौं कथा हरिपद धरि सीसा॥
नौमी भौमवार मधु मासा। अवधपुरीं यह चरित प्रकासा॥
जेहि दिन राम जनम श्रुति गावहिं। तीरथ सकल तहाँ चलि आवहिं॥
असुर नाग खग नर मुनि देवा। आइ करहिं रघुनायक सेवा।

१–४, ५, ६; घर १, ३ . . . २–४, ५; प्रनवौं ६; बिनवौं १, ३

जन्म महोत्सव रचहिं सुजाना। करहिं राम कल कीरति गाना॥
मज्जहिं सज्जन बृंद बहु पावन सरजू नीर।
जपहिं राम धरि ध्यान उर सुंदर स्याम सरीर॥ ३४॥

दरस परस मज्जन अरु पाना। हरै पाप कह बेद पुराना।
नदी पुनीत अमिति महिमा अति। कहि न सकै सारदा बिमल मति।
राम[१] धामदा पुरी सुहावनि। लोक समस्त बिदित अति पावनि।
चारि खानि जग जीव अपारा। अवध तजें तनु नहि संसारा।
सब बिधि पुरी मनोहर जानी। सकल सिद्धिप्रद मंगल खानी।
बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा। सुनत नसाहिं काम मद दंभा।
रामचरितमानस एहि नामा। सुनत श्रवन पाइअ बिश्रामा।
मन करि बिषय अनल बन जरई। होइ सुखी जौ येहिं सर परई।
रामचरितमानस मुनि भावन। बिरचेउ संभु सुहावन पावन।
त्रिबिधि दोष दुख दारिद दावन। कलि कुचालि कुलि कलुष नसावन।
रचि महेस निज मानस राखा। पाइ सुसमउ सिवा सन भाखा।
तातें रामचरितमानस बर। धरेउ नाम हिअँ हेरि हरषि हर।
कहौं कथा सोइ सुखद सुहाई। सादर सुनहु सुजन मन लाई॥
जस मानस जेहि बिधि भयेउ जग प्रचार जेहिं हेतु।
अब सोइ कहौं प्रसंग सब सुमिरि उमा बृषकेतु॥ ३५॥

संभु प्रसाद सुमति हिअँ हुलसी। रामचरितमानस कबि तुलसी।
करइ मनोहर मति अनुहारी। सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी।
सुमति भूमि थल हृदय अगाधू। बेद पुरान उदधि घन साधू।
बरषहिं राम सुजस बर बारी। मधुर मनोहर मंगल कारी।
लीला सगुन जो कहहिं बखानी। सोइ स्वच्छता करै मल हानी।
प्रेम भगति जो बरनि न जाई। सोइ मधुरता सुसीतलताई।

१–१, ३, ६; नाम ४, ५.

सो जल सुकृत सालि हित होई। राम भगत जन जीवन सोई।
मेधा महिगत सो जल पावन। सकिलि[1] श्रवनमग चलेउ सुहावन।
भरेउ सुमानस सुथल थिराना। सुखद सीत रुचि चारु चिराना॥
सुठि सुंदर संबाद बर[2] बिरचे बुद्धि बिचारि[2]।
तेइ[3] एहि पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि[2]॥ ३६॥

सप्त प्रबंध सुभग सोपाना। ज्ञान नयन निरखत मन माना।
रघुपति महिमा अगुन अबाधा। बरनब सोइ बर बारि अगाधा।
राम सीअ जस सलिल सुधा सम। उपमा बीच[4] बिलास मनोरम।
पुरइनि सघन चारु चौपाई। जुगुति मंजु मनि सीप सुहाई।
छंद सोरठा सुंदर दोहा। सोइ बहुरंग कमल कुल सोहा।
अरथ अनूप सुभाव सुभासा। सोइ पराग मकरंद सुबासा।
सुकृत पुंज मंजुल अलि माला। ज्ञान बिराग बिचार मराला।
धुनि अवरेब कबित गुन जाती। मीन मनोहर ते बहु भाँती।
अरथ धरम कामादिक चारी। कहब ज्ञान बिज्ञान बिचारी।
नव रस जप तप जोग बिरागा। ते सब जलचर चारु तड़ागा।
सकृती साधु नाम गुन गाना। ते बिचित्र जल बिहग समाना।
संत सभा चहु दिसि अँवराई। श्रद्धा रितु बसंत सम गाई।
भगति निरूपन बिबिध बिधाना। छमा दया दम[5] लता बिताना।
सम जम नियम[6] फूल फल ज्ञाना। हरिपद रति रस[7] बेद बखाना।
औरौ कथा अनेक प्रसंगा। तेइ सुक पिक बहु बरन बिहंगा।
पुलक बाटिका बाग बन सुख[8] सुबिहंग बिहारु।
माली सुमन सनेह जल सींचत लोचन चारु॥ ३७॥

१–१, ३, ६; सकल ४, ५.
२–१, ३, ६; रुचि, बिचारु, चारु ४, ५.
३–१, ३; ते ४, ५, ६.
४–१, ३; बीचि ६; बिमल ४, ५.
५–३, ४, ५, ६; द्रुम १.
६–१, ३, ४, ५; नेम ६.
७–४, ५, ६; रस बर १, ३.
८–१, ३; सुक ४, ५, ६.

जे[1] गावहिं यह चरित सँभारे। तेइ येहि ताल चतुर रखवारे।
सदा सुनहि सादर नर नारी। तेइ सुर बर मानस अधिकारी।
अति खल जे बिषई बग कागा। एहिं सर निकट न जाहिं अभागा।
संबुक भेक सेवार समाना। इहाँ न बिषय कथा रस नाना।
तेहि कारन आवत हिअँ हारे। कामी काक बलाक बिचारे।
आवत येहिं सर अति कठिनाई। रामकृपा बिनु आइ न जाई।
कठिन कुसंग कुपंथ कराला। तिन्ह के बचन बाघ हरि ब्याला।
गृह कारज नाना जंजाला। तेइ अति दुर्गम सैल बिसाला।
बन बहु बिषम मोह मद माना। नदीं कुतर्क भयंकर नाना॥

जे श्रद्धा संबल रहित नहिं संतन्ह कर साथ।
तिन कहुँ मानस अगम अति जिन्हहिं न प्रिय रघुनाथ॥ ३८॥

जौं करि कष्ट जाइ पुनि कोई। जातहिं नींद जुड़ाई होई।
जड़ता जाड़ बिषम उर लागा। गएहुँ न मज्जन पाव अभागा।
करि न जाइ सर मज्जन पाना। फिरि आवै समेत अभिमाना।
जौं बहोरि कोउ पूछन आवा। सर निंदा करि ताहि बुझावा।
सकल बिघ्न ब्यापहिं नहिं तेही। राम सुकृपा बिलोकहिं जेही।
सोइ सादर सर मज्जनु[2] करई। महा घोर त्रयताप न जरई।
ते नर यह सर तजहिं न काऊ। जिन्ह के रामचरन भल भाऊ[3]।
जो नहाइ चह एहिं सर भाई। सो सतसंग करौ मन लाई।
अस मानस मानस चष चाही। भइ कबि बुद्धि बिमल अवगाही।
भयेउ हृदयँ आनंद उछाहू। उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रबाहू।
चली सुभग कबिता सरिता सो। राम बिमल जस जल भरिता सो।
सरजू नाम सुमंगल मूला। लोक बेद मत मंजुल कूला।

१–१, ३, ६; जो ४, ५. ३–१, ३, ६; चाऊ ४, ५.
२–१, ३; मज्जन सर ४, ५, ६.

नदी पुनीत सुमानस नंदिनि । कलि मल तिनें तरु मूल निकंदिनि॥
श्रोता त्रिविधि समाज पुर ग्राम नगर दुहुँ कूल।
संत सभा अनुपम अवध सकल सुमंगल मूल ॥ ३९ ॥

राम भगति सुरसरितहि जाई । मिली सुकीरति सरजु सुहाई[2] ।
सानुज राम समर जसु पावन । मिलेउ महानदु सोन सुहावन ।
जुग विच भगति देवधुनि धारा । सोहति सहित सुविरति बिचारा ।
त्रिविधि ताप त्रासक तिमुहानी । राम सरूप सिंधु समुहानी ।
मानस मूल मिली सुरसरिही । सुनत सुजन मन पावन करिही ।
बिच बिच कथा बिचित्र बिभागा । जनु सरि तीर तीर बन बागा ।
उमा महेस बिबाह बराती । ते जलचर अगनित बहु भाती ।
रघुबर जनम अनंद बधाई । भवर तरंग मनोहरताई ॥
बालचरित चहुँ बंधु के बनज बिपुल बहु रंग ।
नृप रानी परिजन सुकृत मधुकर बारि बिहंग ॥ ४० ॥

सीय स्वयंबर कथा सुहाई । सरित सुहावनि सो छबि छाई ।
नदी नाव पटु प्रश्न अनेका । केवट कुसल उतर सबिबेका ।
सुनि अनुकथन परसपर होई । पथिक समाज सोह सरि सोई ।
घोर धार भृगुनाथ रिसानी । घाट सुबंधे[3] राम बर बानी ।
सानुज राम बिबाह उछाहू । सो सुभ उमग सुखद सब काहू ।
कहत सुनत हरषहिं पुलकाहीं । ते सुकृती मन मुदित नहाहीं ।
राम तिलक हित मंगल साजा । परब जोग जनु जुरेउ[4] समाजा ।
काई कुमति केकई केरी । परी जासु फल बिपति घनेरी ॥

१–१, ४, ५; तुन ३, ६. ३–४, ५; सुबधु ६; सुबद्ध १, २.
२–१, ३, ६; सहाई ४, ५ ४–४, ५, ६; जुरे १, २.

समन अमित उतपात सब भरत चरित जप जाग।
कलि खल अघ अवगुन कथन ते जल मल बग काग॥ ४१॥

कीरति सरित छहूँ रितु रूरी। समय सुहावनि पावनि भूरी।
हिम हिमसैलसुता सिव ब्याहू। सिसिर सुखद प्रभु जनम उछाहू।
बरनब राम बिबाह समाजू। सो मुद मंगल मय रितुराजू।
ग्रीषम दुसह राम बन गमनू। पंथ कथा खर आतप पवनू।
बरषा घोर निसाचर रारी। सुरकुल सालि सुमंगल कारी।
राम राज सुख बिनय बड़ाई। बिसद सुखद सोइ सरद सुहाई।
सती सिरोमनि सिय गुन गाथा। सोइ गुन अमल अनूपम पाथा।
भरत सुभाउ सुसीतलताई। सदा एक रस बरनि न जाई।
अवलोकनि बोलनि मिलनि प्रीति परसपर हास।
भायप भलि चहुँ बंधु की जल माधुरी सुबास॥ ४२॥

आरति बिनय दीनता मोरी। लघुता ललित सुबारि न खोरी[२]।
अदभुत सलिल सुनत गुनकारी। आस पिआस मनोमल हारी।
राम सुपेमहि पोषत पानी। हरत सकल कलि कलुष गलानी।
भव श्रम सोषक तोषक तोषा। समन दुरित[३] दुख दारिद दोषा।
काम कोह मद मोह नसावन। बिमल बिबेक बिराग बढ़ावन।
सादर मज्जन पान किए तें। मिटहिं पाप परिताप हिए तें।
जिन्ह एहिं बारि न मानस धोए। ते कायर कलिकाल बिगोए।
तृषित निरखि रबि कर भव बारी। फिरिहहिं मृग जिमि जीव दुखारी॥
मति अनुहारि सुबारि गुन गन गनि मन अन्हवाइ।
सुमिरि भवानी संकरहि कह कबि कथा सुहाइ॥

१-४, ५, ६; अघ खल १, ३.
२-४, ५; खोरी १, ६.
३-१, ६; दुखित ४, ५.

अब रघुपति पद पंकरुह हिअँ धरि पाय प्रसाद।
कहौं जुगल मुनिबर्य कर मिलन सुभग संबाद ॥ ४३ ॥

भरद्वाज मुनि बसहि प्रयागा। तिन्हहि राम पद अति अनुरागा।
तापस सम दम दया निधाना। परमारथ पथ परम सुजाना।
माघ मकरगत रबि जब होई। तीरथपतिहि आव सब कोई।
देव दनुज किन्नर नर श्रेनी। सादर मज्जहि सकल त्रिबेनी।
पूजहिं माधव पद जलजाता। परसि अपयबटु हरषहिं गाता।
भरद्वाज आश्रम अति पावन। परम रम्य मुनिबर मन भावन।
तहाँ होइ मुनि रिषय समाजा। जाहिं जे मज्जन तीरथराजा।
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा। कहहिं परसपर हरि गुन गाहा ॥

ब्रह्म निरूपन धर्म बिधि बरनहिं तत्त्व बिभाग।
कहहिं भगति भगवंत कै संजुत ज्ञान बिराग ॥ ४४ ॥

एहिं प्रकार भरि माघ नहाहीं। पुनि सब निज निज आश्रम जाहीं।
प्रति संबत अति होइ अनंदा। मकर मज्जि गवनहिं मुनिबृंदा।
एक बार भरि मकर नहाए। सब मुनीस आश्रमन्ह सिधाए।
जागबलिक मुनि परम बिबेकी। भरद्वाज राखे पद टेकी
सादर चरन सरोज पखारे। अति पुनीत आसन बैठारे।
करि पूजा मुनि सुजस बखानी। बोले अति पुनीत मृदु बानी।
नाथ एक संसउ बड़ मोरें। करगत बेदतत्त्व[2] सब तोरें।
कहत सो मोहि लागति भय लाजा। जौं न कहौं बड़ होइ अकाजा ॥

संत कहहिं असि नीति प्रभु श्रुति पुरान मुनि गाव।
होइ न बिमल बिबेक उर गुर सन किएँ[1] दुराव ॥ ४५ ॥

अस बिचारि प्रगटौं[3] निज मोहू। हरहु नाथ करि जन पर छोहू।

---

[1] १–३, ४, ५; कीऐं १; ससय ६. [3] ३–१ ३, ६; प्रगटे ५; प्रगट्यौ ४.
[2] २–१, ३, ६; तत्त्व बेद ४, ५

राम नाम कर अमिति प्रभावा । संत पुरान उपनिषद गावा ।
संतत जपत संभु अविनासी । सिव भगवान ज्ञान गुन रासी ।
आकर चारि जीव जग अहहीं । कासीं मरत परम पद लहहीं ।
सोपि राम महिमा मुनिराया । शिव उपदेसु करत करि दाया ।
रामु कवन प्रभु पूछौं तोही । कहिय बुझाइ कृपानिधि मोही ।
एक राम अवधेसकुमारा । तिन्ह कर चरित विदित संसारा ।
नारि बिरह दुखु लहेउ अपारा । भएउ रोषु रन रावन मारा ॥
प्रभु सोइ रामु कि अपर कोउ जाहि जपत त्रिपुरारि ।
सत्य धाम सर्वज्ञ तुम्ह कहहु विवेकु विचारि ॥ ४६ ॥

जैसें मिटै मोह[1] भ्रमु भारी । कहहु सो कथा नाथ विस्तारी ।
जागबलिक बोले मुसुकाई । तुम्हहि विदित रघुपति प्रभुताई ।
राम भगत तुम्ह मन क्रम बानी । चतुराई तुम्हारि मैं जानी ।
चाहहु सुनें राम गुन गूढ़ा । कीन्हिहु[2] प्रश्न[3] मनहु अति मूढ़ा ।
तात सुनहु सादर मनु लाई । कहहुँ राम कै कथा सुहाई ।
महा मोहु महिषेसु बिसाला । रामकथा कालिका कराला ।
रामकथा ससि किरन समाना । संत चकोर करहिं जेहि[4] पाना ।
ऐसेइ संसय कीन्ह भवानी । महादेव तब कहा बखानी ॥
कहौं सो मति अनुहारि अब उमा संभु संवाद ।
भएउ समय जेहि हेतु जेहि[5] सुनु मुनि मिटहिं[6] विषाद ॥ ४७ ॥

एक बार त्रेता जुग माहीं । संभु गए कुंभज रिषि पाहीं ।
संग सती जगजननि भवानी । पूजे रिषि अखिलेश्वर जानी ।
रामकथा मुनिवर्ज बखानी । सुनी महेस परम सुखु मानी ।

१–१, ३, ६; भए ५; मये ४.
२–४, ५, ६; मोर १, ३.
३–१, ३; कीन्हेहु प्रश्न ६; कहेहु प्रश्न ४, ५.
४–४, ५, ६; जोहि १, ३.
५–१, ३, ६; अब ४, ५.
६–४, ५, ६; मिटिहि १, ३.

रिषि पूछी हरि भगति सुहाई। कही संभु अधिकारी पाई।
कहत सुनत रघुपति गुन गाथा। कछु दिन वहाँ रहे गिरिनाथा।
मुनि सन बिदा मागि त्रिपुरारी। चले भवन सँग दच्छकुमारी।
तेहि अवसर भंजन महि भारा। हरि रघुबंस लीन्ह अवतारा।
पिता बचन तजि राजु उदासी। दंडकबन बिचरत अबिनासी॥

हृदय बिचारत जात हर केहि बिधि दरसनु होई।
गुप्त रूप अवतरेउ प्रभु गएँ जान सबु कोइ॥
संकर उर अति छोभु सती न जानहिं मरमु सोइ।
तुलसी दरसन लोभु मन डरु लोचन लालची॥ ४८॥

रावन मरनु मनुज कर जाचा। प्रभु बिधि बचनु कीन्ह चह साचा।
जौं नहिं जाउँ रहै पछितावा। करत बिचारु न बनत बनावा।
एहि बिधि भए सोच बस ईसा। तेहीं समय जाइ दससीसा।
लीन्ह नीच मारीचहि संगा। भएउ तुरत सोइ कपट कुरंगा।
करि छलु मूढ़ हरी बैदेही। प्रभु प्रभाउ तस बिदित न तेही।
मृग बधि बंधु सहित प्रभु आए। आश्रमु देखि नयन जल छाए।
बिरह बिकल इव नर रघुराई। खोजत बिपिन फिरत दोउ भाई।
कबहूँ जोग बियोग न जाकें। देखा प्रगट दुसह दुखु ताकें॥

अति बिचित्र रघुपति चरित जानहिं परम सुजान।
जे मतिमंद बिमोह बस हृदयँ धरहिं कछु आन॥ ४९॥

संभु समय तेहि रामहि देखा। उपजा हियँ अति हरषु बिसेषा।
भरि लोचन छबिसिंधु निहारी। कुसमय जानि न कीन्हि चिन्हारी।

१-१, २, ४, ५, कहा ६.
२-४, ५; जानहिं १, २
३-४, ५, ६; नर इव १, २
५-४, ५, ६, [illegible]
६-१, २, ६।

जय सच्चिदानंद जगपावन । अस कहि चलेउ[1] मनोजनसावन ।
चले जात शिव सती समेता । पुनि पुनि पुलकत कृपानिकेता ।
सती सो दसा[2] संभु कै देखी । उर उपजा संदेहु बिसेखी[3] ।
संकरु जगत बंद्य जगदीसा । सुर नर मुनि सब नावहिं सीसा ।
तिन्ह नृपसुतहि कीन्ह परनामा । कहि सच्चिदानंद परधामा ।
भये मगन छबि तासु बिलोकी । अजहुँ प्रीति उर रहति न रोकी ॥
ब्रह्म जो व्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद ।
सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जानत बेद ॥ ५० ॥

बिष्णु जो सुर हित नर तनु धारी । सोउ सर्बज्ञ जथा त्रिपुरारी ।
खोजै सो कि अज्ञ इव नारी । ज्ञान धाम श्रीपति असुरारी ।
संभु गिरा पुनि मृषा न होई । शिव सर्बज्ञ जान सबु कोई ।
अस संसय मन भएउ अपारा । होइ न हृदय प्रबोध प्रचारा ।
जद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी । हर अंतरजामी सब जानी ।
सुनहि सती तव नारि सुभाऊ । संसय अस न धरिय तन[4] काऊ ।
जासु कथा कुंभज रिषि गाई । भगति जासु मैं मुनिहि सुनाई ।
सोइ[5] मम इष्टदेव रघुबीरा । सेवत जाहि सदा मुनि धीरा ॥
मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत बिमल मन जेहि ध्यावहीं ।
कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति गावहीं ।
सोइ रामु व्यापक ब्रह्म भुवन निकाय पति मायाधनी ।
अवतरेउ अपने भगत हित निज तंत्र नित[6] रघुकुलमनी ॥
लाग न उर उपदेसु जदपि कहेउ सिव बार बहु ।
बोले बिहसि महेसु हरि माया बलु जानि जिय ॥ ५१ ॥

१—१, ३, ४, ५; चले ६.
२—१, ३, ६; दशा ४, ५.
३—४, ५, ६; नावत १, ३.
४—४, ५, ६; उर १, ३.
५—१, ३, ६; सो ४, ५.
६—१, ३; निज ४, ५, ६.

रिपि पूछी हरि भगति सुहाई । कही[1] संभु अधिकारी पाई ।
कहत सुनत रघुपति गुन गाथा । कछु दिन तहाँ रहे गिरिनाथा ।
मुनि सन बिदा मागि त्रिपुरारी । चले भवन सँग दच्छकुमारी ।
तेहि अवसर भंजन महि भारा । हरि रघुबंस लीन्ह अवतारा ।
पिता बचन तजि राजु उदासी । दंडकबन बिचरत अबिनासी ॥

हृदय बिचारत जात हर केहि बिधि दरसनु होई ।
गुप्त रूप अवतरेउ प्रभु गएँ जान सबु कोइ ॥
संकर उर अति छोभु सती न जानइँ[2] मरमु सोइ ।
तुलसी दरसन लोभु मन डरु लोचन लालची ॥ ४८ ॥

रावन मरनु मनुज कर जाचा । प्रभु बिधि बचन कीन्ह चह साचा ।
जौं नहि जाउँ रहै पछितावा । करत बिचारु न बनत बनावा ।
एहि बिधि भए सोच बस ईसा । तेहीं समय जाइ दससीसा ।
लीन्ह नीच मारीचहि संगा । भएउ तुरत सोइ कपट कुरंगा ।
करि छलु मूढ़ हरी बैदेही । प्रभु प्रभाउ तस बिदित न तेही ।
मृग बधि बंधु सहित प्रभु[3] आए । आश्रमु देखि नयन जलु छाए ।
बिरह बिकल इव नरँ[4] रघुराई । खोजत बिपिन फिरत दोउ भाई ।
कबहूँ जोग बियोग न जाकें । देखा प्रगट दुसह[5] दुखु ताकें ॥

अति बिचित्र रघुपति चरित जानहि परम सुजान ।
जे मतिमंद बिमोह बस हृदय धरहिं कछु आन ॥ ४९ ॥

संभु समय तेहि रामहि देखा । उपजा हियँ अति[6] हरषु बिसेखा ।
भरि लोचन छबि सिंधु निहारी । कुसमय जानि न कीन्हि चिन्हारी ।

१–१, ३, ४, ५; कहा ६.
२–४, ५; जानहिं १, ३.
३–४; ५, ६; हरि १, ३.
४–४, ५, ६; नर इव १, ३.
५–४, ५, ६; बिरह १, ३.
६–१, ३, ६; तेहि ४, ५.

जय सच्चिदानंद जगपावन। अस कहि चलेउ[1] मनोजनसावन।
चले जात सिव सती समेता। पुनि पुनि पुलकत कृपानिकेता।
सती सो दसा[2] संभु कै देखी। उर उपजा संदेहु बिसेखी।
संकरु जगत बंद्य जगदीसा। सुर नर मुनि सब नावहिं[3] सीसा।
तिन्ह नृपसुतहि कीन्ह परनामा। कहि सच्चिदानंद परधामा।
भये मगन छबि तासु बिलोकी। अजहुँ प्रीति उर रहति न रोकी॥
ब्रह्म जो ब्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद।
सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जानत बेद॥ ५०॥

बिष्णु जो सुर हित नर तनु धारी। सोउ सर्बज्ञ जथा त्रिपुरारी।
खोजै सो कि अज्ञ इव नारी। ज्ञान धाम श्रीपति असुरारी।
संभु गिरा पुनि मृषा न होई। सिव सर्बज्ञ जान सबु कोई।
अस संसय मन भएउ अपारा। होइ न हृदय प्रबोध प्रचारा।
जद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी। हर अंतरजामी सब जानी।
सुनहि सती तव नारि सुभाऊ। संसय अस न धरिय तन[4] काऊ।
जासु कथा कुंभज रिषि गाई। भगति जासु मैं मुनिहि सुनाई।
सोइ[5] मम इष्टदेव रघुबीरा। सेवत जाहि सदा मुनि धीरा॥
मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत बिमल मन जेहि ध्यावहीं।
कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति गावहीं।
सोइ रामु ब्यापक ब्रह्म भुवन निकाय पति मायाधनी।
अवतरेउ अपने भगत हित निज तंत्र नित[6] रघुकुलमनी॥
लाग न उर उपदेसु जदपि कहेउ सिव बार बहु।
बोले बिहसि महेसु हरि माया बलु जानि जिय॥ ५१॥

१–१, ३, ४, ५; चले ६.
२–१, ३, ६; दसा ४, ५.
३–४, ५, ६; नावत १, ३.
४–४, ५, ६; उर १, ३.
५–१, ३, ६; सो ४, ५.
६–१, ३; निज ४, ५, ६.

जो तुम्हरें मन अति संदेहू। तौ किन जाइ परीछा[1] लेहू।
तब[2] लगि बैठ अहौं बट छाहीं। जब लगि तुम्ह ऐहहु मोहि पाहीं।
जैसें जाइ मोह भ्रम भारी। करेहु सो जतनु बिबेकु बिचारी।
चली सती सिव आयसु पाई। करइ[3] बिचारु करौं का भाई।
इहाँ संभु अस मन अनुमाना। दच्छसुता कहुँ नहिं कल्याना।
मोरेहु कहें न संसय जाहीं। बिधि बिपरीत भलाई नाहीं।
होइहि सोइ जो राम रचि राखा। को करि तर्क[4] बढ़ावै साखा।
अस कहि जपन लगे[5] हरि नामा। गईं सती जहँ प्रभु सुख धामा।
पुनि पुनि हृदय बिचार करि धरि सीता कर रूप।
आगे होइ चलि पंथ तेहिं जेहिं आवत नरभूप॥ ५२॥

लछिमन दीख उमा कृत बेषा। चकित भये भ्रम हृदय बिसेषा।
कहि न सकत कछु अति गंभीरा। प्रभु प्रभाउ जानत मतिधीरा।
सती कपटु जानेउ सुरस्वामी। सबदरसी सब अंतरजामी।
सुमिरत जाहि मिटै अज्ञाना। सोइ सर्बज्ञ रामु भगवाना।
सती कीन्ह चह तहहुँ दुराऊ। देखहु नारि सुभाउ प्रभाऊ।
निज माया बलु हृदय बखानी। बोले बिहसि राम मृदु बानी।
जोरि पानि प्रभु कीन्ह प्रनामू। पिता समेत लीन्ह निज[6] नामू।
कहेउ बहोरि कहाँ बृषकेतू। बिपिन अकेलि फिरहु केहि हेतू॥
राम बचन मृदु गूढ़ सुनि उपजा अति संकोचु।
सती सभीत महेस पहिं चलीं हृदय बड़ सोचु॥ ५३॥

मैं संकर कर कहा न माना। निज अज्ञानु राम पर आना।
जाइ उतरु अब देहौं काहा। उर उपजा अति दारुन दाहा।

१–१, ३; परिच्छा ६; परिछया ४, ५.
२–३, ४, ५, ६; तव १.
३–४, ५, ६; करहिं १, ३.
४–१, ३; कै तरक ४, ५, ६.
५–४, ५ ६; लगे जपन १, ३.
६–१, ३, हरि ४, ५, ६.

जाना राम सती दुखु पावा । निज प्रभाउ कछु प्रगटि जनावा ।
सतीं दीख कौतुकु मग जाता । आगें रामु सहित श्री भ्राता ।
फिरि चितवा पाछें प्रभु देखा । सहित बंधु सिय सुंदर बेखा ।
जहँ चितवहि तहँ प्रभु आसीना । सेवहिं सिद्ध मुनीस प्रबीना ।
देखे सिव बिधि बिष्णु अनेका । अमित प्रभाउ एक तें एका ।
बंदत चरन करत प्रभु सेवा । बिबिध बेष देखे सब देवा ॥

सती बिधात्री इंदिरा देखी अमिति अनूप ।
जेहि जेहि बेष अजादि सुर तेहि तेहि तन अनुरूप ॥ ५४ ॥

देखे जहँ तहँ रघुपति जेते । सक्तिन्ह[1] सहित सकल सुर तेते ।
जीव चराचर जे[2] संसारा । देखे सकल अनेक प्रकारा ।
पूजहिं प्रभुहि देव बहु देखा । राम रूप दूसर नहिं देखा ।
अवलोके रघुपति बहुतेरे । सीता सहित न बेष घनेरे ।
सोई रघुबर सोइ लछिमनु सीता । देखि सती अति भई सभीता ।
हृदय कंप तन सुधि कछु नाहीं । नयन मूदि बैठीं मग माहीं ।
बहुरि बिलोकेउ नयन उघारी । कछु न दीख तहँ दच्छकुमारी ।
पुनि पुनि नाइ रामपद सीसा । चलीं तहाँ जहँ रहे गिरीसा ॥

गईं समीप महेस तब हँसि पूछी कुसलात ।
लीन्हि परीछा कवन बिधि कहहु सत्य सब बात ॥ ५५ ॥

सतीं समुझि रघुबीर प्रभाऊ । भयबस प्रभु[3] सन कीन्ह दुराऊ ।
कछु न परीछा लीन्हि गोसाईं । कीन्ह प्रनामु तुम्हारिहिं नाईं ।
जो तुम्ह कहा सो मृषा न होई । मोरें मन प्रतीति अति सोई ।
तब संकर देखेउ धरि ध्याना । सतीं जो कीन्ह चरित सबु जाना ।

१–१, २, ६; सक्तन्ह ४, ५. ३–४, ५, ६; सिव १, २.
२–४, ५, ६; जो १, २.

बहुरि राम मायहि सिरु नावा। प्रेरि सती[1] जेहि झूँठ कहावा।
हरि इच्छा भावी बलवाना। हृदय बिचारत संभु सुजाना।
सतीं कीन्ह सीता कर बेपा। सिव उर भयेउ बिपाद बिसेपा।
जौं अब करौं सती सन प्रीती। मिटै भगति पथु होइ अनीती॥
परम प्रेम तजि जाइ नहिं[2] किएँ पेम बड़ पाप।
प्रगटि न कहत महेसु कछु हृदय अधिक संतापु॥ ५६॥

तब संकर प्रभु पद सिरु नावा। सुमिरत रामु हृदय अस आवा।
एहि तन सतिहि भेट मोहि नाहीं। शिव संकल्पु कीन्ह मन माहीं।
अस बिचारि संकरु मतिधीरा। चले भवन सुमिरत रघुबीरा।
चलत गगन भै गिरा सुहाई। जय महेस भलि भगति दृढ़ाई।
अस पन तुम्ह बिनु करैं को आना। राम भगत समरथ भगवाना।
सुनि नभगिरा सती उर सोचा। पूछा सिवहि समेत सकोचा।
कीन्ह कवन पन कहहु कृपाला। सत्यधाम प्रभु दीनदयाला।
जदपि सती पूछा बहु भाँतीं। तदपि न कहेउ त्रिपुरआराती॥
सतीं हृदय अनुमान किय सबु जानेउ सर्बग्य।
कीन्ह कपटु मैं संभु सन नारि सहज जड़ अग्य॥
जलु पय सरिस बिकाइ देखहु प्रीति की रीति भलि।
बिलग होइ[3] रसु जाइ कपट खटाई परत पुनि[3]॥ ५७॥

हृदय सोचु समुझत निज करनी। चिंता अमिति जाइ नहि बरनी।
कृपासिंधु सिव परम अगाधा। प्रगट न कहेउ मोर अपराधा।
संकर रुख अवलोकि भवानी। प्रभु मोहि तजेउ हृदय अकुलानी।
निज अघ समुझि न कछु कहि जाई। तपै अवा इव उर अधिकाई।
सतिहि ससोच जानि बृपकेतू। कही कथा सुंदर सुख हेतू।

१—४, ५, सतिहि १, २, ६. 	३—१, ३; होइ, ही ६; होत, ही ४, ५.
२—४, ५, ६; पुनीत न जाइ तजि १, ३.

बरनत पंथ बिबिध इतिहासा। बिश्वनाथ पहुँचे कैलासा।
तहँ पुनि संभु समुझि पन आपन। बैठे बट तर करि कमलासन।
संकर सहज सरूपु सम्हारा। लागि समाधि अखंड अपारा॥
सती बसहिं कैलास तब अधिक सोचु मन माहिं।
मरमु न कोऊ जान कछु जुग सम दिवस सिराहिं॥ ५८॥

नित नव सोचु सती उर भारा। कब जैहौं दुख सागर पारा।
मैं जो कीन्ह रघुपति अपमाना। पुनि पति बचन मृषा करि जाना।
सो फलु मोहि बिधाता दीन्हा। जो कछु उचित रहा सोइ कीन्हा।
अब बिधि अस बूझिय नहि तोही। संकर बिमुख जिआवसि मोही।
कहि न जाय कछु हृदय गलानी। मन महुँ रामहि सुमिरि[1] सयानी।
जौं प्रभु दीनदयालु कहावा। आरति हरन बेद जसु गावा।
तौ मैं बिनय करौं कर जोरी। छूटौ[2] बेगि देह यह मोरी।
जौं मोरें सिव चरन सनेहू। मन क्रम बचन सत्य ब्रतु एहू॥
तौ सबदरसी सुनिअ प्रभु करौ सो बेगि उपाइ।
होइ मरन जेहि बिनहि श्रम दुसह बिपत्ति बिहाइ॥ ५९॥

एहि बिधि दुखित प्रजेसकुमारी। अकथनीय दारुन दुखु भारी।
बीते संबत सहस सतासी। तजी समाधि संभु अबिनासी।
रामनाम सिव सुमिरन लागे। जानेउ सती जगतपति जागे।
जाइ संभु पद बंदनु कीन्हा। सनमुख संकर आसनु दीन्हा।
लगे कहन हरिकथा रसाला। दच्छ प्रजेस भये तेहि काला।
देखा बिधि बिचारि सब लायक। दच्छहि कीन्ह प्रजापति नायक।
बड़ अधिकार दच्छ जब पावा। अति अभिमानु हृदय तब आवा।
नहि अस कोउ[3] जनमा जग माहीं। प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं॥

१–१, सुमिर ३, ४, ५, ६. ३–४, ५, ६, कोउ श्रम १, ३.
२–१, ३, ४, ५; छूटै ६.

दच्छ लिए मुनि बोलि सब करन लगे बड़ जाग।
नेवते सादर सकल सुर जे[१] पावत मष भाग॥ ६०॥

किन्नर नाग सिद्ध गंधर्बा। बधुन्ह समेत चले सुर सर्बा।
बिष्णु बिरंचि महेसु बिहाई। चले सकल सुर जान बनाई।
सतीं बिलोके ब्योम बिमाना। जात चले सुंदर बिधि नाना।
सुरसुंदरीं करहिं कल गाना। सुनत श्रवन छूटहिं मुनि ध्याना।
पूछेउ तब शिव कहेउ बखानी। पिता जग्य सुनि कछु हरषानी।
जौ महेसु मोहि आयसु देहीं। कछु दिन जाइ रहौं मिस एही।
पति परित्याग हृदय दुखु भारी। कहै न निज अपराध बिचारी।
बोलीं सती मनोहर बानी। भय संकोच प्रेम रस सानी॥

पिता भवन उत्सव परम जौ प्रभु आयसु होइ।
तौ मैं जाउँ कृपायतन[२] सादर देखन सोइ॥ ६१॥

कहेहु नीक मोरेहुँ[३] मन भावा। यह अनुचित नहिं नेवत पठावा।
दच्छ सकल निज सुता बोलाईं। हमरें बयर तुम्हौ[४] बिसराईं।
ब्रह्मसभाँ हम सन दुखु माना। तेहि तें अजहु करहिं अपमाना।
जौ बिनु बोलें जाहु भवानी। रहै न सीलु सनेहु न कानी।
जदपि मित्र प्रभु पितु गुर गेहा। जाइअ बिनु बोलें[५] न सँदेहा।
तदपि बिरोध मान जहँ कोई। तहाँ गए कल्यान न होई।
भाँति अनेक संभु समुझावा। भावी बस न ज्ञानु उर आवा।
कह प्रभु जाहु जो बिनहि बोलाएं। नहि भलि बात हमारें[६] भाएं॥

कहि देखा हर जतन बहु रहै न दच्छकुमारि।
दिए मुख्य गन संग तब बिदा कीन्हि त्रिपुरारि॥ ६२॥

१—२, ६; जो १, ४, ५.
२—१, ३, ६; कृपाश्रयन ४, ५.
—१, ३, ६; मोरे ४, ५.
४—१, ३, ६; तुम्हे ४, ५.
५—४, ५; बोलेहु १, ३, ६.
६—१, ३; हमारेहि ४, ५.

पिता भवन जब गईं भवानी। दच्छ त्रास काहु न सनमानी।
सादर भलेहि मिली एक माता। भगिनी मिलीं बहुत मुसुकाता।
दच्छ न कछु पूछी कुसलाता। सतिहि बिलोकि जरे सब गाता।
सतीं जाइ देखेउ तब जागा। कतहु न दीख संभु कर भागा।
तब चित चढ़ेउ जो संकर कहेऊ। प्रभु अपमानु समुझि उर दहेऊ।
पाछिल दुखु अस हृदय न[1] व्यापा। जस यह भएउ महा परितापा।
जद्यपि जग दारुन दुख नाना। सब तें कठिन जाति अवमाना।
समुझि सो सतिहि भएउ अति क्रोधा। बहु बिधि जननी कीन्ह प्रबोधा॥

शिव अपमानु न जाइ सहि हृदय न होइ प्रबोध।
सकल सभहि हठि हटकि तब बोलीं बचन सक्रोध॥ ६३॥

सुनहु सभासद सकल मुनिंदा। कही सुनी जिन्ह संकर निंदा।
सो फलु तुरत लहब सब काहूं। भली भाँति पछिताब पिताहूं।
संत संभु श्रीपति अपबादा। सुनिअ जहाँ तहँ असि मरजादा।
काटिअ[2] तासु जीभ जो बसाई। श्रवन मूदि न त[3] चलिअ पराई।
जगदातमा महेसु पुरारी। जगत जनक सब के हितकारी।
पिता मंदमति निंदत तेही। दच्छ शुक्र संभव यह देही।
तजिहौं तुरत देह तेहि हेतू। उर धरि चंद्रमौलि बृषकेतू।
अस कहि जोग अगिनि तनु जारा। भएउ सकल मख हाहाकारा॥

सती मरनु सुनि संभुगन लगे करन मख खीस।
जग्य बिधंस बिलोकि भृगु रच्छा कीन्हि मुनीस॥ ६४॥

समाचार सब[4] संकर पाए। बीरभद्रु करि कोपु पठाए।
जग्य बिधंस जाइ तिन्ह कीन्हा। सकल सुरन्हि[5] बिधिवत फलु दीन्हा।

१–४, ५, ६; न हृदय अस १, ३
२–१, ३, ४, ५; काटिअ ६.
३–१, ३, ६; तब ४, ५.
४–१, ३, ४, ५; जन ६.
५–४, ५; सुरन्ह १, ३, ६.

मैं जग बिदित दच्छगति सोई । जसि कछु संभु बिमुख कै होई ।
यह इतिहास सकल जग जानी[1] । तातें[2] मैं संछेप बखानी[1] ।
सतीं मरत हरि सन बरु मागा । जनम जनम सिव पद अनुरागा ।
तेहि कारन हिमगिरि गृह जाई । जनमीं पारबती तनु पाई ।
जब तें उमा सैल गृह जाईं । सकल सिद्धि संपति तहँ छाईं ।
जहँ तहँ मुनिन्ह सुआश्रम कीन्हे । उचित बास हिमभूधर दीन्हे ॥

सदा सुमन फल सहित सब द्रुम नव नाना जाति[3] ।
प्रगटीं सुंदर सैल पर मनिआकर बहु भाँति ॥ ६५ ॥

सरिता सब पुनीत जलु बहहीं । खग मृग मधुप सुखी सब रहहीं ।
सहज बयरु सब जीवन्ह[4] त्यागा । गिरि पर सकल करहिं अनुरागा ।
सोह सैल गिरिजा गृह आएँ । जिमि जनु राम भगति के पाएँ ।
नित नूतन मंगल गृह तासू । ब्रह्मादिक गावहिं जसु जासू ।
नारद समाचार सब पाए । कौतुकहीं गिरि गेह सिधाए ।
सैलराज बड़ आदर कीन्हा । पद पखारि बर[5] आसनु दीन्हा ।
नारि सहित मुनिपद सिरु नावा । चरन सलिल सबु भवनु सिंचावा ।
निज सौभाग्य बहुत बिधि[6] बरना । सुता बोलि मेली मुनि चरना ॥

त्रिकालज्ञ सर्बज्ञ तुम्ह गति सर्बत्र तुम्हारि ।
कहहु सुता के दोष गुन मुनिबर हृदय बिचारि ॥ ६६ ॥

कह मुनि बिहसि गूढ़ मृदु बानी । सुता तुम्हारि सकल गुनखानी ।
सुंदर[7] सहज सुसील सयानी । नाम उमा अंबिका भवानी ।
सब लच्छन संपन्न कुमारी । होइहि संतत पिअहि पिआरी ।

१–१, ३, ४, ५; जाना, बखाना ६.
२–३, ४, ५, ६; तौंते १.
३–१, ३, ६; सब नाना भांति ४,५.
४–१, ४, ५; जीवन ६; जीवइ ३.
५–१, ३, ६; तब ४, ५.
६–४, ५, ६; गिरि १, ३.
७–१, ३, ४, ५; सुंदरि ६.

सदा अचल एहि कर अहिवाता । एहि तें जसु पैहहि पितु माता ।
होइहि पूज्य सकल जग माहीं । एहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं ।
एहि कर नामु सुमिरि संसारा । त्रिय[१] चढ़िहहिं पतिव्रत असिधारा ।
सैल सुलच्छन सुता तुम्हारी । सुनहु जे[२] अब अवगुन दुइ चारी ।
अगुन अमान मातु पितु हीना । उदासीन सब संसय छीना ॥
जोगी जटिल अकाम मन नगन अमंगल बेख ।
अस स्वामी एहि कह मिलिहि परी हस्त असि रेख ॥ ६७ ॥

सुनि मुनि गिरा सत्य जिय जानी । दुख दंपतिहि उमा हरषानी ।
नारदहूँ यह भेदु न जाना । दसा एक समुझब[३] बिलगाना ।
सकल सखी गिरिजा गिरि मैना । पुलक सरीर भरे जल नैना ।
होइ न मृषा देवरिषि भाखा । उमा सो बचनु हृदय धरि राखा ।
उपजेउ सिव पद कमल सनेहू । मिलन कठिन मन भा[४] संदेहू ।
जानि कुअवसरु प्रीति दुराई । सखि उछंग बैठी[५] पुनि जाई ।
झूठि न होइ देवरिषि बानी । सोचहि दंपति सखीं सयानी ।
उर धरि धीर कहै गिरिराऊ । कहहु नाथ का करिअ उपाऊ ॥
कह मुनीस हिमवंत सुनु जो बिधि लिखा लिलार ।
देव दनुज नर नाग मुनि कोउ न मेटनिहार ॥ ६८ ॥

तदपि एक मैं कहौं उपाई । होइ करै जौ दैउ[६] सहाई ।
जस बर मैं बरनेउँ तुम्ह पाहीं । मिलिहि उमहि तस संसय नाहीं ।
जे जे बर के दोष बखानें । ते सब सिव पहिं मैं अनुमानें ।
जौ बिबाहु संकर सन होई । देखौ गुन समस्तँ[७] सबु कोई ।

१–१, ४, ५; तिय ६.
२–१, ३, ६; जो ४, ५.
३–३, ४, ५, ६; समुझत १.
४–१, ३; भा मन ४, ५, ६.
५–१; सखी उछंग बैठि ३, ४, ५, ६.
६–१, ३; दऊ ४, ५; दैव ६.
७–४, ५; दोषौ गुन सम कह १, ३, ६.

जौं अहि सेज सयन हरि करहीं । बुध कछु तिन्हकरें[1] दोपु न धरहीं ।
भानु कृसानु सर्ब रस खाहीं । तिन्ह कह मंद कहत कोउ नाहीं ।
सुभ अरु असुभ सलिल सब बहई[2] । सुरसरि कोउ अपुनीत न कहई[2] ।
समरथ कहुँ[3] नहि दोस गोसाईं । रबि पावक सुरसरि कीं नाईं ॥
जौं अैसहि इसिषा करहि नरँ[4] बिबेक अभिमान ।
परहि कलप भरि नरक महु जीव कि ईस समान ॥ ६९ ॥

सुरसरि जल कृत बारुनि जाना । कबहु न संत करहि तेहि पाना ।
सुरसरि मिलें सों पावन जैसें । ईस अनीसहि अंतरु तैसें ।
संभु सहज समरथ भगवाना । एहिं बिबाह सब बिधि कल्याना ।
दुराराध्य पै अहहि महेसू । आसुतोप पुनि किएँ कलेसू ।
जौं तपु करै कुमारि तुम्हारी । भाविउ मेटि सकहि त्रिपुरारी ।
जद्यपि बर अनेक जग माहीं । एहिं[6] कहँ सिव तजि दूसर नाहीं ।
बरदायक प्रनतारति भंजन । कृपासिंधु सेवक मनरंजन ।
इच्छित फल बिनु सिव अवराधें । लहिअ न कोटि जोग जप साधें ॥
अस कहि नारद सुमिरि हरि गिरिजहि दीन्हि असीस ।
होइहि अबँ[7] कल्यान सबँ संसय तजहु गिरीस ॥ ७० ॥

अस कहिं[8] ब्रह्मभवन मुनि गएऊ । आगिल चरित सुनहु जस भएऊ ।
पतिहि एकांत पाइ कह मैना । नाथ न मैं बूझें[9] मुनि बैना ।
जौं घरु बरु कुलु होइ अनूपा । करिअ बिबाहु सुता अनुरूपा ।
न त कन्या बरु रहउ कुआरी । कंत उमा मम प्रानपिआरी ।

१–१, ३, ४, ५; कहँ ६.
२–१, ३; बहहीं, कहहीं ४, ५, ६.
३–१, ३; को ४, ५, ६.
४–४, ५; अस हिषिषा करहि नर जड़ १, ३, ६.
५–१, ३, ४, ५; सु ६.
६–१, ३, ६; इन्ह ४, ५.
७–४, ५, ६; यह, अब १, ३.
८–४, ५, ६; कहि अस १, ३.
९–४, ५; समुझे १, ३, ६.

जौं न मिलिहि वरु गिरिजहि जोगू। गिरि जड़ सहज कहिहि सबु लोगू।
सोइ बिचारि पति करेहु बिहाहू। जेहि न बहोरि होइ उर दाहू।
अस कहि परी चरन धरि सीसा। बोले सहित सनेह गिरीसा।
बरु पावक प्रगटै ससि माहीं। नारद बचनु अन्यथा नाहीं॥
प्रिया सोचु परिहरहु अब[1] सुमिरहु श्रीभगवान।
पारबती[2] निरमएउ जेहि सोइ करिहि कल्यान॥ ७१॥

अब जौं तुम्हहि सुता पर नेहू। तौ अस जाइ सिखावनु देहू।
करै सो तपु जेहि मिलहि महेसू। आन उपाय न मिटिहि कलेसू।
नारद बचन सगर्भ सहेतू। सुंदर सब गुन निधि वृषकेतू।
अस बिचारि सब[3] तजहु असंका। सबहि भाँति संकरु अकलंका।
सुनि पति बचन हरषि मन माहीं। गईं तुरत उठि गिरिजा पाहीं।
उमहि बिलोकि नयन भरे बारी। सहित सनेह गोद बैठारी।
बारहि बार लेति[4] उर लाई। गदगद कंठ न कछु कहि जाई।
जगत मातु सर्बज्ञ भवानी। मातु सुखद बोलीं मृदु बानी॥
सुनहि मातु मैं दीख अस सपन सुनावौं तोहि।
सुंदर गौर सुबिप्रबर अस उपदेसेउ मोहि॥ ७२॥

करहि जाइ तपु सैलकुमारी। नारद कहा सो सत्य बिचारी।
मातु पितहि पुनि यह[5] मत भावा। तपु सुखप्रद दुख दोष नसावा।
तप बल रचै प्रपंचु बिधाता। तप बल बिष्णु सकल जगत्राता।
तप बल संभु करहिं संघारा। तप बल सेषु धरै महि भारा।
तप अधार सब सृष्टि भवानी। करहि जाइ तपु अस जिय जानी।
सुनत बचन बिसमित महतारी। सपन सुनाएउ गिरिहि हँकारी।

१–१, ३, ५; धरनि ४, ६.
२–४, ५; सबु, पारबतिहि १, ३, ६
३–४, ५; तुम्ह १, ३, ६.
४–१, ३, ४, ५; लेइ ६.
५–१, ३, ६; येहि ४, ५.

मातु पितहि बहु बिधि समुझाई । चलीं उमा तप हित हरषाई ।
प्रिय परिवार पिता अरु माता । भए[1] बिकल मुख आव न बाता ॥
बेदसिरा मुनि आइ तब सबहि कहा समुझाइ ।
पारवती महिमा सुनत रहे प्रबोधहि पाइ ॥ ७३ ॥

उरि धरि उमा प्रानपति चरना । जाइ बिपिनि लागीं तपु करना ।
अति सुकुमार न तनु तपु जोगू । पति पद सुमिरि तजे[2] सबु भोगू ।
नित नव चरन उपज अनुरागा । बिसरी देह तपहि मनु लागा ।
संबत सहस मूल फल खाए । सागु खाइ सत बरष गवाए ।
कछु दिन भोजनु बारि बतासा । किए कठिन कछु दिन उपवासा ।
बेलपाति[3] महि परै सुखाई । तीनि सहस संबत सोइ खाई ।
पुनि परिहरे सुखानेउ[4] परना । उमहि नामु तब भएउ[5] अपरना ।
देखि उमहि तप खीन सरीरा । ब्रह्म गिरा भै गगन गभीरा ॥
भएउ मनोरथ सुफल तव सुनु गिरिराजकुमारि ।
परिहरु दुसह कलेस सब अब मिलहहिं त्रिपुरारि ॥ ७४ ॥

अस तपु काहु न कीन्ह भवानी । भए अनेक धीर मुनि ज्ञानी ।
अब उर धरहु ब्रह्म बर बानी । सत्य सदा संतत सुचि जानी ।
आवै पिता बोलावन जबही । हठ परिहरि घर जाएहु तबही ।
मिलिहिं[6] जबहिं अब[7] सप्त रिषीसा । जानिहु[8] तब प्रमान बागीसा ।
सुनत गिरा बिधि गगन बखानी । पुलक गात गिरिजा हरषानी ।
उमा चरित सुंदर मैं गावा । सुनहु संभु कर चरित सुहावा ।
जब तें सतीं जाइ तनु त्यागा । तब तें शिव मन भएउ बिरागा ।

१–१, ३, ६; भएउ ४, ५.
२–४, ५, ६; तजेउ १, ३.
३–१, ४, ५; बेलवाती ३; बेलपाति ६.
४–१, ३; सुखाने ४, ५, ६.
५–१, ३, ६; भए ४, ५.
६–४, ५; मिलहि १, ३, ६.
७–४,५,६: तुम्हहि जब १, ३.
८–४, ५; जानेहु १, ३, ६.

जपहिं सदा रघुनायक नामा। जहँ तहँ सुनहिं राम गुन ग्रामा॥
चिदानंद सुखधाम शिव बिगत मोह मद काम[1]।
बिचरहिं महि धरि हृदय हरि सकल लोक आराम[2]॥ ७५॥

कतहु मुनिन्ह उपदेसहिं ज्ञाना। कतहु रामगुन करहिं बखाना।
जदपि अकाम तदपि भगवाना। भगत बिरह दुख दुखित सुजाना।
एहि बिधि गएउ कालु बहु बीती। नित नै होइ रामपद प्रीती।
नेमु प्रेमु संकर कर देखा। अबिचल हृदय भगति कै रेखा।
प्रगटे रामु कृतज्ञ कृपाला। रूप सील निधि तेज बिसाला।
बहु प्रकार संकरहि सराहा। तुम्ह बिनु अस ब्रतु को निरबाहा।
बहु बिधि राम शिवहि समुझावा। पारबती कर जन्मु सुनावा।
अति पुनीत गिरजा कै करनी। बिस्तर सहित कृपानिधि बरनी॥
अब बिनती मम सुनहु शिव जौ मो पर निजु नेहु।
जाइ बिवाहहु सैलजहि यह मोहि मागें देहु॥ ७६॥

कह शिव जदपि उचित अस नाहीं। नाथ बचन पुनि मेटि न जाहीं।
सिर धरि आएसु करिअ तुम्हारा। परम धरमु यह नाथ हमारा।
मातु पिता प्रभु गुर[3] कै बानी। बिनहि बिचार करिअ सुभ जानी।
तुम्ह सब भाँति परम हितकारी। अज्ञा सिर पर नाथ तुम्हारी।
प्रभु तोषेउ[4] सुनि संकर बचना। भक्ति बिबेक धर्म जुत रचना।
कह प्रभु हर तुम्हार पन रहेऊ। अब उर राखेहु हम जो[5] कहेऊ।
अंतरधान भए अस भाखी। संकर सोइ[6] मूरति उर राखी।
तबहि सप्तरिषि सिव पहि आए। बोले प्रभु अति बचन सुहाए॥

१—६; मान १, ३, ४, ५.
२—४, ५, ६; अभिराम १, ३.
३—४, ५; गुर प्रभु १, ३, ६.
४—१, ३, ४, ५; तोपे ६.
५—१, ४, ५; जो हम ३, ६.
६—१, ३, ४, ५; सो ६.

पारवती पहि जाइ तुम्ह प्रेम परिच्छा लेहु ।
गिरिहि प्रेरि[1] पठएहु[2] भवन् दूरि करेहु संदेहु ॥ ७७ ॥

रिपिन्ह गौरि देखी तहँ कैसी । मूरतिवंत तपस्या जैसी ।
बोले मुनि सुनु सैलकुमारी । करहु कवन कारन तपु भारी ।
केहि अवराधहु का तुम्ह चहहू । हम सन सत्य मरमु सब[3] कहहू ।
सुनत रिपिन्ह के बचन भवानी । बोली गूढ़ मनोहर[4] बानी ।
कहत मरम[5] मनु अति सकुचाई । हसिहहु सुनि हमारि जड़ताई ।
मनु हठ परा न सुनै सिखावा । चहत बारि पर भीति उठावा ।
नारद कहा सत्य सोई[6] जाना । बिनु पंखन्ह हम चहहिं उड़ाना ।
देखहु मुनि अबिबेक हमारा । चाहिअ सदा सिवहि[7] भरतारा ॥
सुनत बचन बिहसे रिपय गिरि संभव तव देह ।
नारद कर उपदेसु सुनि कहहु बसेउ किसु[8] गेह ॥ ७८ ॥

दच्छ सुतन्ह उपदेसेन्हि जाई । तिन्ह फिरि भवनु न देखा आई ।
चित्रकेतु कर घर उन घाला । कनककसिपु कर पुनि अस हाला ।
नारद सिप जे सुनहि नर नारी । अवसि होहिं[9] तजि भवन भिखारी ।
मन कपटी तन सज्जन चीन्हा । आपु सरिस सबही चह कीन्हा ।
तेहिके बचन मानि बिस्वासा । तुम्ह चाहहु पति सहज उदासा ।
निर्गुन निलज कुबेप कपाली । अकुल अगेह दिगंबरु ब्याली ।
कहहु कवन सुखु अस बर पाएँ । भल भूलिहु ठग के बौराएँ ।
पंच कहे शिव सती बिबाही । पुनि अवडेरि मराएन्हि ताही ॥

१–१, ३, जाइ ४, ५.
२–१, ३, ४, ५; पठवहु ६.
३–४, ५; किन १, ३, ६.
४–४, ५; बचन मृदु ६.
५–४, ५, ६; बचन १, ३.
६–१, ३; सत्य हम ४, ५, ६.
७–१, ३, ६; सिवहि सदा ४, ५.
८–१, ३, ४, ५; बसिउ किसु ६.
९–१, ३, ६; होइ ४, ५.

अब सुख सोवत सोचु नहिं भीखि मागि भव खाहिं ।
सहज एकाकिन्ह के भवन कबहुँ कि नारि खटाहिं ॥ ७९ ॥

अजहूँ मानहु कहा हमारा । हम तुम्ह कहुँ बरु नीक बिचारा ।
अति सुंदर सुचि सुखद सुसीला । गावहिं बेद जासु जसु लीला ।
दूषन रहित सकल गुन रासी । श्रीपति पुर बैकुंठ निवासी ।
अस बरु तुम्हहि मिलाउब आनी । सुनत बिहसि कह बचन भवानी ।
सत्य कहेहु गिरिभव तनु एहा । हठ न छूट छूटै बरु देहा ।
कनकौ पुनि पषान तें होई । जारेहु सहजु न परिहर सोई ।
नारद बचन न मैं परिहरऊँ । बसौ भवनु उजरौ नहि डरऊँ ।
गुर के बचन प्रतीति न जेही । सपनेहु सुगम न सुख सिधि तेही ॥

महादेव अवगुन भवन बिष्णु सकल गुनधाम ।
जेहि कर मनु रम जाहि सन तेहि तेहीं सन काम ॥ ८० ॥

जौ तुम्ह मिलतेहु प्रथम मुनीसा । सुनतिउँ सिख तुम्हारि धरि सीसा ।
अब मैं जनम संभु सैं हारा । को गुन दूषन करै बिचारा ।
जौ तुम्हरें हठ हृदय बिसेषी । रहि न जाइ बिनु किए बरेषी ।
तौ कौतुकिअन्ह आलसु नाहीं । बर कन्या अनेक जग माहीं ।
जनम कोटि लगि रगरि हमारी । बरौं संभु नतु रहौं कुआरी ।
तजौं न नारद कर उपदेसू । आपु कहहि सत बार महेसू ।
मैं पाँ परौं कहै जगदंबा । तुम गृह गवनहु भएउ बिलंबा ।
देखि प्रेमु बोले मुनि ग्यानी । जय जय जगदंबिके भवानी ॥

तुम्ह माया भगवान शिव सकल जगत पितु मातु ।
नाइ चरन सिर मुनि चले पुनि पुनि हरषत गातु ॥ ८१ ॥

१–१, ३; बचन कह बिहँसि ४,५,६.
२–१, ३, ६; सुधि ४, ५.
३–१, ४, ५; तुम्ह ३, ६.
४–४, ५, ६; हित १, ३.
५–४, ५, ६; रगर १, ३.
६–१, ३, ४, ५; बरैं ६.
७–१, ३, ४, ५; उपदेसा, मेहसा ६.
८–१, ३, ४, ५; हरषित ६.

जाइ मुनिन्ह[1] हिमवंतु पठाए। करि बिनती गिरजहि गृह ल्याए।
बहुरि सप्तरिषि सिव पहिं जाई। कथा उमा कै सकल सुनाई।
भए मगन सिव सुनत सनेहा। हरषि सप्तरिषि गवनें गेहा।
मनु करि थिरु[2] तब संभु सुजाना। लगे करन रघुनायक ध्याना।
तारकु असुर भएउ तेहि काला। भुज प्रताप बल तेज बिसाला।
तेहि सब लोक लोकपति जीते। भए देव सुख संपति रीते।
अजर अमर सो जीति न जाई। हारे सुर करि बिबिध लराई।
तब बिरंचि पहिं[3] जाइ पुकारे। देखे बिधि सब देव दुखारे॥

सब सन कहा बुझाइ बिधि दनुज निधन तब होइ।
संभु सुक्र संभूत सुत एहि जीतै रन सोइ॥ ८२॥

मोर कहा सुनि करहु उपाई। होइहि ईस्वर करिहि सहाई।
सतीं जो तजी दच्छ मख देहा। जनमी जाइ हिमाचल गेहा।
तेहि तपु कीन्ह संभु पति लागी। सिव समाधि बैठे सबु त्यागी।
जदपि अहै असमंजस भारी। तदपि बात एक सुनहु हमारी।
पठवहु कामु जाइ सिव पाहीं। करै छोभु संकर मन माहीं।
तब हम जाइ सिवहि सिर नाई। करवाउब बिबाहु बरिआई।
एहि बिधि भलेहि देव हित होई। मत अति नीक कहै सबु कोई।
अस्तुति[4] सुरन्ह कीन्हि अति[4] हेतू। प्रगटेउ बिषमबान झखकेतू॥

सुरन्ह कही निज बिपति सब सुनि मन कीन्ह बिचार।
संभु बिरोध न कुसल मोहि बिहसि कहेउ अस मार॥ ८३॥

तदपि करब मैं काजु तुम्हारा। श्रुति कह परम धरम उपकारा।
परहित लागि तजै जो[5] देही। संतत संत प्रसंसहिं तेही।

१–१, ३, ६; मुनीशन्ह ४, ५
२–४, ५, ६; थिरु करि १, ३.
३–४, ५, ६; सन १.
४–१; प्रस्तुति, अस ४, ५, ६.
५–१, जे ४, ५, ६.

अस कहि चलेउ सबहि सिरु नाई। सुमन धनुष कर लेत[1] सहाई।
चलत मार अस हृदय[2] बिचारा। शिव बिरोध ध्रुव मरन हमारा।
तब आपन प्रभाव बिस्तारा। निज बस कीन्ह सकल संसारा।
कोपेउ जबहि बारिचरकेतू। छन महुँ मिटे सकल श्रुतिसेतू।
ब्रह्मचर्ज ब्रत संजम नाना। धीरज धर्म ज्ञान बिज्ञाना।
सदाचार जप जोग बिरागा। सभय बिबेक कटकु सबु भागा॥
भागेउ बिबेक सहाय सहित सो सुभट संजुग महि मुरे।
सदग्रंथ पर्बत कंदरन्हि महु जाई तेहि अवसर दुरे।
होनिहार का करतार को रखवार जग खरभरु परा।
दुइ माथ केहि रतिनाथ जेहि कहुँ कोपि कर धनु सरु धरा॥
जे सजीव जग चर अचर[3] नारि पुरुष अस नाम।
ते निज निज मरजाद तजि भए सकल बस काम॥ ८४॥

सबके हृदय मदन अभिलाखा। लता निहारि नवहिं तरुसाखा।
नदीं उमगि अंबुधि कहुँ धाईं। संगम करहिं तलाव तलाईं।
जहँ असि दसा जड़न्ह[4] कै बरनी। को कहि सकै सचेतन करनी।
पसु पच्छी नभ जल थल चारी। भए कामबस समय बिसारी।
मदन अंध ब्याकुल सब लोका। निसि दिनु नहि अवलोकहिं कोका।
देव दनुज नर किन्नर ब्याला। प्रेत पिसाच भूत बेताला।
न्ह कै दसा न कहेउँ बखानी। सदा काम के चेरे जानी।
सिद्ध बिरक्त महा मुनि जोगी। तेपि काम बस भए बियोगी॥
भए कामबस जोगीस तापस पावरन्हि की को कहे।
देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहे।

१–४, ५, ६; सहित १. ३–४, ५; अचर चर १, ६.
२–१, ६; हृदे ४, ५. ४–१, ६; जड़नि ४, ५.

अबला बिलोकहिं पुरुषमय जग पुरुष सब अबलामयं।
दुइ दंड भरि ब्रह्मांड भीतर काम कृत कौतुक अयं॥
धरी न काहूँ धीर सबके बन मनसिज हरे।
जे[१] राखे रघुबीर ते उबरे तेहि काल महु॥ ८५॥

उभय घरीं अस कौतुक भएऊ। जब लगि काम संभु पहिं गएऊ।
शिवहिं बिलोकि संसकेउ मारू। भएउ जथाथित सबु संसारू।
भए तुरत जग[२] जीव सुखारे। जिमि मद उतरि गएं मतवारे।
रुद्रहिं देखि मदन भय माना। दुराधरष दुर्गम भगवाना।
फिरत लाज कछु करि नहिं जाई। मरन ठानि मन रचेसि उपाई।
प्रगटेसि तुरत रुचिर रितुराजा। कुसुमित नव तरुराजि[३] बिराजा।
बन उपबन बापिका तड़ागा। परम सुभग सब दिसा बिभागा।
जहँ तहँ जनु उमगत अनुरागा। देखि मुएहु मन मनसिज जागा॥
जागै[४] मनोभव मुएहु मन बन सुभगता न परै कही।
सीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अनल[५] सखा सही।
बिकसे सरन्हि बहु कंज गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा।
कलहंस पिक सुक सरस रव करि गान नाचहिं अपछरा॥
सकल कला करि कोटि बिधि हारेउ सेन समेत।
चली न अचल समाधि शिव कोपेउ हृदयनिकेत॥ ८६॥

देखि रसाल बिटपबर साखा। तेहि पर चढ़ेउ मदन मन माखा।
सुमनचाप निज सर संधानें। अति रिसि ताकि श्रवन लगि तानें।
छाड़े बिषम बिसिख उर लागे। छूटि[६] समाधि संभु तब जागे।

१—१, ६; जो २, ५.
२—१, ३; सब ४, ५.
३—१; तरु जाति ४, ५; तरुसखा ६.
४—१, ४, ५; जागेउ ६.
५—१, ६; अनिल ४, ५.
६—१, ४, ५; छुटी ६.

भएउ ईस मन छोभु बिसेखी। नयन उघारि सकल दिसि देखी।
सौरभ पल्लव मदनु बिलोका। भएउ कोपु कंपेउ त्रैलोका।
तब सिव तीसर नयन उघारा। चितवत काम भएउ जरि छारा।
हाहाकार भएउ जग भारी। डरपे सुर भए असुर सुखारी।
समुझि काम सुख सोचहिं भोगी। भए अकंटक साधक जोगी॥
जोगी अकंटक भए पति गति सुनति रति मुरुछित भई।
रोदति बदति बहु भाँति करुना करत संकर पहिं गई।
अति प्रेम करि बिनती बिबिध बिधि जोरि कर सनमुख रही।
प्रभु आसुतोष कृपाल सिव अबला निरखि बोले सही॥
अब तें रति तव नाथ कर होइहि नामु अनंग।
बिनु बपु ब्यापिहि सबहि पुनि सुनु निज मिलन प्रसंग॥ ८७॥

जब जदुबंस कृष्ण अवतारा। होइहि हरन महा महिभारा।
कृष्णतनय होइहि पति तोरा। बचन अन्यथा होइ न मोरा।
रति गवनी सुनि संकर बानी। कथा अपर अब कहौं बखानी।
देवन्ह समाचार सब पाए। ब्रह्मादिक बैकुंठ सिधाए।
सब सुर बिष्णु बिरंचि समेता। गये जहाँ सिव कृपानिकेता।
पृथक पृथक तिन्हि कीन्हि प्रसंसा। भए प्रसंन चंद्रअवतंसा।
बोले कृपासिंधु बृषकेतू। कहहु अमर आए[१] केहि हेतू।
कह बिधि तुम्ह प्रभु[२] अंतरजामी। तदपि भगति बस बिनवौं स्वामी॥
सकल सुरन्ह के हृदय अस संकर परम उछाहु।
निज नयनन्हि देखा चहहिं[३] नाथ तुम्हार बिबाहु॥ ८८॥

यह उत्सव देखिअ भरि लोचन। सोइ कछु करहु मदनमदमोचन।
काम जारि रति कहुँ बरु दीन्हा। कृपासिंधु यह अति भल कीन्हा।

१–१, ४, ५, आयेहु ६. ३–१, ६; नहीं ४, ५.
२–१, ४, ५; प्रभु तुम्ह ६.

सासति करि पुनि करहिं पसाऊ। नाथ प्रभुन्ह कर सहज सुभाऊ।
पारबतीं तपु कीन्ह अपारा। करहु तासु अब अंगीकारा।
सुनि बिधि बिनय समुझि प्रभु बानी। ऐसेइ होउ कहा सुखु मानी।
तब देवन्ह दुंदुभी बजाईं। बरषि सुमन जयजय सुरसाईं।
अवसरु जानि सप्तरिषि आए। तुरतहिं बिधि गिरि भवन पठाए।
प्रथम गए जहँ रहीं भवानी। बोले मधुर बचन छल सानी॥

कहा हमार न सुनेहु[१] तब नारद कें उपदेस।
अब भा झूठ तुम्हार पनु जारेउ कामु महेस॥ ८९॥

सुनि बोलीं मुसुकाइ भवानी। उचित कहेहु[२] मुनिबर बिज्ञानी।
तुम्हरें जान कामु अब जारा। अब लगि संभु रहे सबिकारा।
हमरें जान सदा सिव जोगी। अज अनवद्य अकाम अभोगी।
जौं मैं सिव सेए अस जानी। प्रीति समेत करम मन बानी।
तौ हमार पन सुनहु मुनीसा। करिहहिं सत्य कृपानिधि ईसा।
तुम्ह जो कहा हर जारेउ मारा। सोइ अति बड़ अबिबेक तुम्हारा।
तात अनल कर सहज सुभाऊ। हिम तेहि निकट जाइ नहिं काऊ।
गएं समीप सो अवसि नसाई। असि मनमथ महेस कै नाईं॥

हिअँ हरषे मुनि बचन सुनि देखि प्रीति बिस्वास।
चले भवानिहि नाइ सिर गए हिमाचल पास॥ ९०॥

सबु प्रसंगु गिरिपतिहि सुनावा। मदन दहन सुनि अति दुखु पावा।
बहुरि कहेउ रति कर बरदाना। सुनि हिमवंत बहुत सुखु माना।
हृदय बिचारि संभु प्रभुताई। सादर मुनिबर लिए बोलाई।
सुदिनु सुनखतु सुघरी सोचाई। बेगि बेद बिधि लगन धराई।
पत्री सप्तरिषिन्ह सो[३] दीन्ही। गहि पद बिनय हिमाचल कीन्ही।

१–६, सुनहु १, ४, ५.   ३–४, ५, ६; सोइ १.
२–१, ६, कहेउ ४, ५.

जाइ बिधिहि तिन्ह दीन्हि सो पाती । बाचत प्रीति न हृदय समाती ।
लगन बाचि अज[1] सबहि सुनाई । हरषे मुनि सब सुर समुदाई ।
सुमन बृष्टि नभ बाजन बाजे । मंगल सकल[2] दसहु दिसि साजे ॥

लगे सवारन सकल सुर वाहन बिबिध बिमान ।
होंहि सगुन मंगल सुभद[3] करहिं अपछरा गान ॥ ९१ ॥

शिवहिं संभुगन करहिं सिंगारा । जटा मुकुट अहि मौरु सँवारा ।
कुंडल कंकन पहिरे ब्याला । तन बिभूति पट[4] केहरिछाला ।
ससि ललाट सुंदर सिर गंगा । नयन तीनि उपबीत भुजंगा ।
गरल कंठ उर नर सिर माला । असिव बेष सिवधाम कृपाला ।
कर त्रिसूल अरु डमरु बिराजा । चले बसहँ चढ़ि बाजहि बाजा ।
देखि शिवहि सुरत्रिय मुसुकाहीं । बर लायक दुलहिनि जग नाहीं ।
बिष्णु बिरंचि आदि सुरब्राता । चढ़ि चढ़ि बाहन चले बराता ।
सुर समाज सब भाँति अनूपा । नहि बरात दूलह अनुरुपा ॥

बिष्णु कहा अस बिहसि तब[5] बोलि सकल दिसिराज ।
बिलग बिलग होइ चलहु सब निज निज सहित समाज ॥ ९२ ॥

बर अनुहारि बरात न भाई । हसी करैहहु पर पुर जाई ।
बिष्णु बचन सुनि सुर मुसुकाने । निज निज सेन सहित बिलगाने ।
मनही मन महेस मुसुकाहीं । हरि के बिंग्य बचन नहि जाहीं ।
अति प्रिय बचन सुनत प्रिय केरे । भृंगिहि प्रेरि सकल गन टेरे ।
शिव अनुसासन सुनि सब आए । प्रभु पद जलज सीस तिन्ह नाए ।
नाना बाहन नाना बेखा । बिहसे सिव समाज निज देखा ।

१–१, अस ४, ५, बिधि ६.
२–४, ५, ६, कलस १
३–१, ४, ५; सुभग ६.
४–१, ४, ५; कटि ६.
५–१, ५, तब बिहसि वर ४; तब बिहसि करि ६.

कोउ मुखहीन बिपुलमुख काहू। बिनुपद कर कोउ बहु पद बाहू।
बिपुल नयन कोउ नयनबिहीना। रिष्ट पुष्ट कोउ अति तन खीना॥
तन खीन कोउ अति पीन पावन कोउ अपावन गति धरें।
भूषन कराल कपाल कर सब सद्य सोनित तन भरें।
खर स्वान सुअर[1] सृगाल मुख गन बेष अगनित को गनें।
बहु जिनस प्रेत पिसाच जोगि जमात बरनत नहि बनें॥
नाचहिं गावहिं गीत परम तरंगी भूत सब।
देखत[2] अति बिपरीत बोलहि बचन बिचित्र बिधि॥ ९३॥

जस दूलहु तसि बनी बराता। कौतुक बिबिध होहिं मग जाता।
इहाँ हिमाचल रचेउ बिताना। अति बिचित्र नहि जाइ बखाना।
सैल सकल जहँ लगि जग माहीं। लघु बिसाल नहि बरनि सिराहीं।
बन सागर सब नदीं तलावा। हिमगिरि सब कहु नेवत पठावा।
कामरूप सुंदर तन धारी। सहित समाज सहित बर नारी।
गए सकल तुहिनाचल गेहा। गावहिं मंगल सहित सनेहा।
प्रथमहि गिरि बहु[3] गृह सवराए। जथा जोगु जहँ तहँ सब छाए।
पुर सोभा अवलोकि सुहाई। लागै लघु बिरंचि निपुनाई॥
लघु लाग बिधि की निपुनता अवलोकि पुर सोभा सही।
बन बाग कूप तडाग सरिता सुभग सब सक को कही।
मंगल बिपुल तोरन पताका केतु गृह गृह सोहहीं।
बनिता पुरुष सुंदर चतुर छबि देखि मुनि मन मोहहीं॥
जगदंबा जहँ अवतरी सो पुर बरनि कि जाइ।
रिद्धि सिद्धि संपत्ति[4] सुख नित नूतन अधिकाइ॥ ९४॥

नगर निकट बरात सुनि आई। पुर खरभरु सोभा अधिकाई।

१–१, ६, असुर ४, ५. ३–१, ५, सब ४, ६.
२–१, ४, ५, देखियत ६. ४–१, ५; रिधि सिधि सपति सकल ४, ६.

करि बनाव सब बाहन नाना। चले लेन सादर अगवाना।
हिअ हरषे सुर सेन निहारी। हरिहि देखि अति भए सुखारी।
शिव समाज जब देखन लागे। बिडरि चले बाहन सब भागे।
धरि धीरजु तहँ रहे सयाने। बालक सब लै जीव पराने।
गए भवन पूछहिं पितु माता। कहहिं बचन भय कंपित गाता।
कहिअ कहा कहि जाइ न बाता। जम कर धार किधौं बरिआता।
बरु बौराह बरद[1] असवारा। ब्याल कपाल बिभूषन छारा॥

तन छार ब्याल कपाल भूषन नगन जटिल भयंकरा।
सँग भूत प्रेत पिसाच जोगिनि बिकट मुख रजनीचरा।
जो जिअत रहिहि बरात देखत पुन्य बड़ तेहि कर सही।
देखिहि सो उमा बिबाह घर घर बात असि लरिकन्हि कही॥

समुझि महेस समाज सब जननि जनक मुसुकाहिं।
बाल बुझाए बिबिध बिधि निडर होहु डरु नाहिं॥ ९५॥

लै अगवान बरातहि आए। दिए सबहि जनवास सुहाए।
मैना सुभ आरती सँवारी। संग सुमंगल गावहिं नारी।
कंचन थार सोह 'बर पानी। परिछन चलीं हरहि हरषानी।
बिकट बेष रुद्रहि जब देखा। अबलन्ह उर भय भएउ बिसेषा।
भागि भवन पैठीं अति त्रासा। गए महेसु जहाँ जनवासा।
मैना हृदय भएउ दुख भारी। लीन्ही बोलि गिरीसकुमारी।
अधिक सनेह गोद बैठारी। स्याम सरोज नयन भरे[2] बारी।
जेहि बिधि तुम्हहि रूप अस दीन्हा। तेहि जड़ बरु बाउर कस कीन्हा॥

कस कीन्ह बर बौराह बिधि जेहि तुम्हहि सुंदरता दई।
जो फलु चहिअ सुरतरुहि सो बरबस बबूरहि लागई।

१–४, ५, ६; बसह १. २–१, ४, ५; भरि ६.

तुम्ह सहित गिरि तें गिरौं पावक जरौं जलनिधि महु परौं।
घरु जाउ अपजसु होउ जग जीवत बिवाहु न हौं करौं॥
भईं बिकल अबला सकल दुखित देखि गिरिनारि।
करि बिलापु रोदति बदति सुता सनेहु संभारि॥ ९६॥

नारद कर मैं काह बेगारा[1]। भवनु मोर जिन्ह बसत उजारा।
अस उपदेसु उमहि जिन्ह दीन्हा। बौरे बरहि लागि तपु कीन्हा।
साचेहु उन्हकें मोह न माया। उदासीन धनु धामु न जाया।
पर घर घालक लाज न भीरा। बाँझ कि जान प्रसव कै[2] पीरा।
जननिहि बिकल बिलोकि भवानी। बोली जुत बिबेक मृदु बानी।
अस बिचारि सोचहि मति[3] माता। सो न टरै जो रचै बिधाता।
करम लिखा जौ बाउर नाहू। तौ कत दोसु लगाइअ काहू।
तुम्ह सन मिटहि कि बिधि के अंका। मातु ब्यर्थ जनि[4] लेहु कलंका॥
जनि लेहु मातु कलंकु करुना परिहरहु अवसरु नहीं।
दुखु सुखु जो लिखा लिलार हमरें जाब जहँ पाउब तहीं।
सुनि उमा बचन बिनीत कोमल सकल अबला सोचहीं।
बहु भाँति बिधिहि लगाइ दूषन नयन बारि बिमोचहीं॥
तेहि अवसर नारद सहित अरु रिषिसप्त समेत।
समाचार सुनि तुहिनगिरि गवने तुरत निकेत॥ ९७॥

तब नारद सबही समुझावा। पूरुब कथा प्रसंगु सुनावा।
मयना सत्य सुनहु मम बानी। जगदंबा तव सुता भवानी।
अजा अनादि सक्ति अबिनासिनि। सदासंभु[*] अरधंग निवासिनि।
जग संभव पालन लय कारिनि। निज इच्छा लीला बपु धारिनि।

१–१, ४; काह बिगारा ५, ६.
२–१, ४, ५; की ६.
३–१, ४, ५; जनि ६.
४–१, ६; जिनि ४, ५.
*५–१, ६; सदा संग ४, ५.

जनमीं प्रथम दच्छ गृह जाई। नामु सती सुंदर तनु पाई।
तहहुँ सती संकरहि बिबाहीं। कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं।
एक बार आवत शिव संगा। देखेउ रघुकुल कमल पतंगा।
भयेउ मोहु शिव कहा न कीन्हा। भ्रम बस[1] बेषु सीअ कर लीन्हा॥
सिय बेषु सतीं जो कीन्ह तेहि अपराध संकर परिहरीं।
हर बिरहं जाइ बहोरि पितु कें जग्य जोगानल जरीं।
अब जनमि तुम्हरें भवन निज पति लागि दारुन तप किआ।
अस जानि संसय तजहु गिरिजा सर्बदा संकर प्रिआ॥
सुनि नारद के बचन तब सब कर मिटा बिषाद।
छन महु ब्यापेउ सकल पुर घर घर यह संबाद॥ ९८॥

तब मयना हिमवंत अनंदे। पुनि पुनि पारबती पद बंदे।
नारि पुरुष सिसु जुबा सयानें। नगर लोग सब अति हरषानें।
लगे होन पुर मंगल गाना[2]। सजे सबहिं हाटक घट नाना।
भाँति अनेक भई जेवनारा। सूप सास्त्र जस किछु ब्यवहारा।
सो जेवनार कि जाइ बखानी। बसहि भवन जेहि मातु भवानी।
सादर बोले सकल बराती। बिष्णु बिरंचि देव सब जाती।
बिबिधि पाँति बैठी जेवनारा। लागे परुसन निपुन सुआरा।
नारि बृंद सुर जेवत जानी। लगीं देन गारी मृदु बानी॥
गारीं मधुर स्वर देहिं सुंदरि बिंग्य[3] बचन सुनावहीं।
भोजन करहिं सुर अति बिलंबु बिनोद सुनि सचु पावहीं।
जेवत जो बढ़्यो अनंदु सो मुख कोटिहूँ न परै कह्यो।
अँचवाइ दीन्हे पान गवने बास जहँ जाको रह्यो॥

१—१, ४, ५; बरबस ६.
२—१, ६, नाना ४, ५.
३—१, ब्यग ४, ५; ब्यंग्य ६.

बहुरि मुनिन्ह हिमवंत कहु लगन सुनाई आइ।
समय बिलोकि बिबाह कर पठए देव बोलाइ ॥ ९९ ॥

बोलि सकल सुर सादर लीन्हे। सबहि जथोचित आसन दीन्हे॥
बेदी बेदबिधान सवारी। सुभग सुमंगल गावहिं नारी॥
सिंघासनु अति दिव्य सुहावा। जाइ न बरनि बिरंचि बनावा॥
बैठे सिव बिप्रन्ह सिरु नाई। हृदय सुमिरि निज प्रभु रघुराई॥
बहुरि मुनीसन्ह उमा बोलाई। करि सिंगारु सखीं लै आई॥
देखत रूप सकल सुर मोहे। बरनैं छबि अस जग कबि[1] को है॥
जगदंबिका जानि भवभामा। सुरन्ह मनहि मन कीन्ह प्रनामा॥
सुंदरता मरजाद भवानी। जाइ न कोटिहुँ[2] बदन बखानी॥

कोटिहुँ[2] बदन नहि बनैं बरनत जगजननि सोभा महा।
सकुचहिं कहत श्रुति सेष सारद मंदमति तुलसी कहा।
छबि खानि मातु भवानि गवनीं मध्य मंडप सिव जहाँ।
अवलोकि सकहि न सकुचि पति पद कमल मन मधुकर तहाँ ॥

मुनि अनुसासन गनपतिहि पूजेउ संभु भवानि।
कोउ सुनि संसय करै जनि सुर अनादि जिअ जानि ॥१००॥

जसि बिबाह कै बिधि श्रुति गाई। महामुनिन्ह सो सब करवाई॥
गहि गिरीस कुस कन्या पानी। भवहि समरपीं जानि भवानी॥
पानिग्रहन जब कीन्ह महेसा। हियँ हरषे तब सकल सुरेसा॥
बेद मंत्र मुनिबर उच्चरहीं। जय जय जय संकर सुर करहीं॥
बाजहिं बाजन बिबिध बिधाना। सुमनबृष्टि नभ भै बिधि नाना॥
हर गिरजा कर भएउ बिबाहू। सकल भुवन भरि रहा उछाहू॥
दासीं दास तुरग रथ नागा[3]। धेनु बसन मनि बस्तु बिभागा[3]॥

१–१, ४, ५; कवि जग ६.
२–१, ६; कोटिवहु ४, ५.
३–१, ६; नाना, विधाना ४, ५.

अन्न कनक भाजन भरि जाना। दाइज दीन्ह न जाइ बखाना॥
दाइज दियो बहु भाँति पुनि कर जोरि हिमभूधर कह्यो।
का देउँ पूरनकाम संकर चरन पंकज गहि रह्यो।
शिव कृपा सागर ससुर कर संतोषु सब भाँतिहि कियो।
पुनि गहे पद पाथोज मयना प्रेम परिपूरन हियो॥
नाथ उमा मम प्रान सम[१] गृह किंकरी करेहु।
छमेहु सकल अपराध अब होइ प्रसंन बर देहु॥१०१॥
बहु बिधि संभु सासु समुझाई। गवनीं भवन चरन सिरु नाई।
जननीं उमा बोलि तब लीन्ही। लै उछंग सुंदर सिख दीन्ही।
करेहु सदा संकर पद पूजा। नारि धरमु पति देव न दूजा।
बचन कहत भरे लोचन बारी। बहुरि लाइ उर लीन्हि कुमारी।
कत बिधि सृजीं नारि जग माहीं। पराधीन सपनेहु सुखु नाहीं।
भै अति प्रेम बिकल महतारी। धीरजु कीन्ह कुसमय बिचारी।
पुनि पुनि मिलति परति गहि चरना। परम प्रेमु कछु जाइ न बरना।
सब नारिन्ह मिलि भेंटि भवानी। जाइ जननि उर पुनि लपटानी॥
जननिहि बहुरि मिलि चलीं उचित असीस सब काहूँ दईं।
फिरि फिरि बिलोकति मातु तन जब[२] सखीं लै शिव पहिं गईं।
जाचक सकल संतोषि संकरु उमा सहित भवन[३] चले।
सब अमर हरषे सुमन बरषि निसान नभ बाजे भले॥
चले संग हिमवंतु तब पहुचावन अति हेतु।
बिबिध भाँति परितोषु करि बिदा कीन्हि बृषकेतु॥१०२॥
तुरत भवन आए गिरिराई। सकल सैल सर लिए बोलाई।
आदर दान बिनय बहु माना। सब कर बिदा कीन्ह हिमवाना।

१–१, ४, ५; प्रिय ६. ३–१, ३, ६; भवनहि ४, ५.
२–४, ५, ६; तब १, ३.

जबहि संभु कैलासहि आए। सुर सब निज निज लोक सिधाए।
जगत मातु पितु संभु भवानी। तेहिं सिंगारु न कहउँ बखानी।
करहिं बिबिध बिधि भोग बिलासा। गनन्ह समेत बसहिं कैलासा।
हर गिरिजा बिहार नित नयेऊ। ऐहि बिधि बिपुल काल चलि गयेऊ।
तब[1] जनमेउ पटबदन कुमारा। तारकु असुरु समर जेहि मारा।
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना। पन्मुख[2] जन्मु सकल जग जाना॥

जग जान पन्मुख[3] जन्मु कर्मु प्रतापु पुरुपारथु महा।
तेहि हेतु मैं बृपकेतु सुत कर चरित संछेपहि कहा।
यह उमा संभु बिबाहु जे नर नारि कहहिं जे गावहीं।
कल्यान काज बिबाह मंगल सर्वदा सुखु पावहीं॥

चरित सिंधु गिरिजारमन बेद न पावहिं[4] पारु।
बरनै तुलसीदास किमि अति मति मंद गँवारु॥१०३॥

संभु चरित सुनि सरस सुहावा। भरद्वाज मुनि अति सुख पावा।
बहु लालसा कथा पर बाढ़ी। नयन्हि[5] नीरु रोमावलि ठाढ़ी।
प्रेम बिबस मुख आव न बानी। दसा देखि हरषे मुनि ज्ञानी।
अहो धन्य तव जन्मु मुनीसा। तुम्हहि प्रान सम प्रिय गौरीसा।
सिव पद कमल जिन्हहिं रति नाहीं। रामहि ते सपनेहुँ[6] न सोहाहीं।
बिनु छल बिस्वनाथ पद नेहू। राम भगत कर लच्छन येहू।
सिव सम को रघुपति ब्रतधारी। बिनु अघ तजी सती असि नारी।
पनु करि रघुपति भगति देखाई। को सिव सम रामहि प्रिय भाई॥

प्रथमहिं कहि मैं[7] सिव चरित बूझा मरमु तुम्हार।
सुचि सेवक तुम्ह राम के रहित समस्त बिकार॥१०४॥

१–१, ३, ६; जब ४, ५.
२–१, ३, ६; पटमुख ४, ५.
३–१, ३; पनमुख ४, ५, ६.
४–१, ३, ४, ५; पावै ६.
५–१, ३, ४, ५; नयन ६.
६–१, ३, ६; सपने ४, ५.
७–४, ५, ६; मैं कहि १, ३.

मैं जाना तुम्हार गुन सीला। कहौं सुनहु अब रघुपति लीला।
सुनु मुनि आजु समागम तोरें। कहि न जाइ जस सुखु मन मोरें।
रामचरित अति अमित मुनीसा। कहि न सकहिं सत कोटि अहीसा।
तदपि जथाश्रुत कहौं बखानी। सुमिरि गिरापति प्रभु धनुपानी।
सारद दारुनारि सम स्वामी। रामु सूत्रधर अंतरजामी।
जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी। कवि उर अजिर नचावहिं बानी।
प्रनवौं सोइ कृपाल रघुनाथा। बरनौं बिसद तासु[१] गुन गाथा।
परम रम्य गिरिबरु कैलासू। सदा जहाँ शिव उमा निवासू॥

सिद्ध तपोधन जोगि जन सुर किन्नर मुनिबृंद।
बसहिं तहाँ सुकृती सकल सेवहिं शिव सुखकंद ॥१०५॥

हरि हर बिमुख धर्म रति नाहीं। ते नर तहँ सपनेहु नहि जाहीं।
तेहि गिरि पर बट बिटप बिसाला। नित नूतन सुंदर सब काला।
त्रिबिध समीर सुसीतल छाया। शिव बिश्राम बिटप श्रुति गाया।
एक बार तेहि तर प्रभु गयेऊ। तरु बिलोकि उर अति सुखु भयेऊ।
निज कर डासि नाग रिपु छाला। बैठे सहजहि संभु कृपाला।
कुंद इंदु दर गौर सरीरा। भुज प्रलंब परिधन मुनि चीरा।
तरुन अरुन अंबुज सम चरना। नख दुति भगत हृदय तम हरना।
भुजग भूति भूषन त्रिपुरारी। आननु सरद चंद छबि हारी॥

जटा मुकुट सुरसरित सिर लोचन नलिन बिसाल।
नीलकंठ लावन्यनिधि सोह बाल बिधु भाल ॥१०६॥

बैठें सोह कामरिपु कैसें। धरें सरीरु सांत रसु जैसें।
पारबती भल अवसरु जानी। गईं संभु पहिं मातु भवानी।
जानि प्रिया आदरु अति कीन्हा। बाम भाग आसनु हर दीन्हा।
बैठीं शिव समीप हरपाई। पूरुब जन्म कथा चित आई।

१–१, ३, ४, ५; जासु ६.

पति हिय हेतु अधिक मन मानी[1] । बिहसि उमा बोलीं मृदु बानी[1] ।
कथा जो सकल लोक हितकारी । सोइ पूछन चह सैलकुमारी ।
बिस्वनाथ मम नाथ पुरारी । त्रिभुवन महिमा बिदित तुम्हारी ।
चर अरु अचर नाग नर देवा । सकल करहिं पद पंकज सेवा ॥
प्रभु समरथ सर्बज्ञ शिव सकल कला गुन धाम ।
जोग ज्ञान वैराग्य निधि प्रनत कलपतरु नाम ॥ १०७ ॥

जौं मो पर प्रसन्न सुखरासी । जानिय सत्य मोहि निज दासी ।
तौ प्रभु हरहु मोर अज्ञाना । कहि रघुनाथ कथा बिधि नाना ।
जासु भवनु सुरतरु तर होई । सहि कि दरिद्र जनित दुखु सोई ।
ससिभूषन अस हृदय बिचारी । हरहु नाथ मम मति भ्रम भारी ।
प्रभु जे मुनि परमारथ बादी । कहहिं राम कहुँ ब्रह्म अनादी ।
सेस सारदा बेद पुराना । सकल करहिं रघुपति गुन गाना ।
तुम्ह पुनि राम राम दिन राती । सादर जपहु अनंग अराती[2] ।
राम सो अवधनृपति सुत सोई । की अज अगुन अलखगति कोई ॥
जौं नृप तनय त ब्रह्म किमि नारि बिरह मति भोरि ।
देखि चरित महिमा सुनत भ्रमति बुद्धि अति मोरि ॥१०८॥

जौं अनीह व्यापक बिभु कोऊ । कहहु बुझाइ नाथ मोहि सोऊ ।
अज्ञ जानि रिस उर जनि धरहू । जेहि बिधि मोह मिटै सोइ करहू ।
मैं बन दीख राम प्रभुताई । अति भय बिकल न तुम्हहि सुनाई ।
तदपि मलिन मन बोधु न आवा । सो फलु भली भाँति हम पावा ।
अजहूँ कछु संसउ मन मोरें । करहु कृपा बिनवौं कर जोरें ।
प्रभु तब मोहि बहु भाँति प्रबोधा । नाथ सो समुझि करहु जनि क्रोधा ।
तब कर अस बिमोह अब नाहीं । रामकथा पर रुचि मन माहीं ।

१–४, ५; अनुमानी, प्रिय बानी १, ३; मनमाहीं, हर पाहीं ६.
२–१, ३, ६; आराती ४, ५.

कहहु पुनीत राम गुन गाथा। भुजगराज भूषन सुरनाथा॥
बंदौं पद धरि धरनि सिरु विनय करौं कर जोरि।
बरनहु रघुबर बिसद जसु श्रुति सिद्धांत निचोरि॥ १०९॥

जदपि जोषिता अन अधिकारी[1]। दासी मन क्रम बचन तुम्हारी।
गूढ़ौ तत्व न साधु दुरावहिं। आरत अधिकारी जहँ पावहिं।
अति आरति पूछौं सुर राया। रघुपति कथा कहहु करि दाया।
प्रथम सो कारन कहहु बिचारी। निर्गुन ब्रह्म सगुन बपु धारी।
पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा। बाल चरित पुनि कहहु उदारा।
कहहु जथा जानकी बिबाही। राज तजा सो दूषन काही।
बन बसि कीन्हे चरित अपारा। कहहु नाथ जिमि रावन मारा।
राज बैठि कीन्ही बहु लीला। सकल कहहु संकर सुखसीला॥
बहुरि कहहु करुनायतन कीन्ह जो अचरज[2] राम।
प्रजा सहित रघुबंस मनि किमि गवने निज धाम॥ ११०॥

पुनि प्रभु कहहु सो तत्व बखानी। जेहि बिज्ञान मगन मुनि ज्ञानी।
भगति ज्ञान बिज्ञान बिरागा। पुनि सब बरनहु सहित बिभागा।
औरौ राम रहस्य अनेका। कहहु नाथ अति बिमल बिबेका।
जो प्रभु मैं पूछा नहि, होई। सोउ दयाल राखहु जनि गोई।
तुम्ह त्रिभुवन गुर बेद बखाना। आन जीव पावर का जाना।
प्रश्न उमा के[3] सहज सुहाई। छल बिहीन सुनि सिव मन भाई।
हर हिय रामचरित सब आए। प्रेम पुलक लोचन जल छाए।
श्री रघुनाथ रूप उर आवा। परमानंद अमित सुख पावा॥
मगन ध्यान रस दंड जुग पुनि मन बाहेर कीन्ह।
रघुपति चरित महेस तब हरषित बरनै लीन्ह॥ १११॥

---

*१-४, ५, ६; नहिं अधिकारी १, ३.   ३-१, २, ४, ५; वर ६.
२-३, ५, ६; आचरज १, ४.

झूठेउ सत्य जाहि बिनु जाने। जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचानें।
जेहि जाने जग जाइ हेराई। जागे जथा सपन भ्रम जाई।
बंदौं बाल रूप सोइ रामू। सब सिधि सुलभ जपत जिसु नामू।
मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवौ सो दसरथ अजिर बिहारी।
करि प्रनाम रामहि त्रिपुरारी। हरपि सुधा सम गिरा उचारी।
धन्य धन्य गिरिराज कुमारी। तुम्ह समान नहि कोउ अधिकारी[1]।
पूँछेहु रघुपति कथा प्रसंगा। सकल लोक जग पावनि गंगा।
तुम्ह रघुबीर चरन अनुरागी। कीन्हिहु प्रश्न जगत हित लागी॥

राम कृपा तें पारवति[2] सपनेहु तब मन माहि।
सोक मोह संदेह भ्रम मम बिचार कछु नाहि॥ ११२॥

तदपि असंका कीन्हिहु सोई। कहत सुनत सब कर हित होई।
जिन्ह हरि कथा सुनी नहि काना। श्रवन रंध्र अहि भवन समाना।
नयनन्हि संत दरस नहि देखा। लोचन मोरपंख कर लेखा।
ते सिर कटुतुंबरि सम तूला। जे न नमत हरि गुर पद मूला।
जिन्ह हरिभगति हृदय नहि आनी। जीवत सव समान तेइ[3] प्रानी।
जो नहि करै राम गुन गाना। जीह सो दादुर जीह समाना।
कुलिस कठोर निठुर सोइ छाती। सुनि हरि चरित न जो हरपाती।
गिरिजा सुनहु राम कै लीला। सुरहित दनुज बिमोहन सीला॥

रामकथा सुरधेनु सम सेवत सब सुखदानि।
सँत[4] समाज सुर लोक सब को न सुनै अस जानि॥ ११३॥

रामकथा सुंदर करतारी। संसय बिहग उड़ावनिहारी।
रामकथा कलि बिटप कुठारी। सादर सुनु गिरिराजकुमारी।
राम नाम गुन चरित सुहाए। जनम करम अगनित श्रुति गाए।

---

*१–४, ६; उपकारी १, ३, ५.   ३–१, २, ४, ५; ते ६.

२–१, ३, ४, ५; हिमसुता ६.   *४–१, ४, ५, ६; सत ३.

जथा अनंत राम भगवाना। तथा कथा कीरति गुन[२] नाना।
तदपि जथाश्रुत जसि मति मोरी। कहिहौं देखि प्रीति अति तोरी।
उमा प्रश्न तव सहज सुहाई। सुखद संत संमत मोहि भाई।
एक बात नहि मोहि सोहानी। जदपि मोह बस कहेहु भवानी।
तुम्ह जो कहा राम कोउ आना। जेहि श्रुति गाव धरहि मुनि ध्याना॥
कहहिं सुनहिं अस अधम नर ग्रसे जे मोह पिसाच।
पाखंडी हरिपद बिमुख जानहिं झूठ न साच॥११४॥

अज्ञ अकोबिद अंध अभागी। काई विषय मुकुर मन लागी।
लंपट कपटी कुटिल बिसेखी। सपनेहु संत सभा नहि देखी।
कहहिं ते बेद असंमत बानी। जिन्हहिं न[२] सूझ लाभु नहि हानी।
मुकुर मलिन अरु नयन बिहीना। राम रूप देखहिं किमि दीना।
जिन्हके अगुन न सगुन बिबेका। जल्पहिं कलपित बचन अनेका।
हरि माया बस जगत भ्रमाहीं। तिन्हहिं कहत कछु अघटित नाहीं।
बातुल भूत बिबस मतवारे। ते नहि बोलहिं बचन बिचारे।
जिन्ह कृत महा मोह मद पाना। तिन्ह कर कहा करिअ नहिं काना॥
अस निज हृदय बिचारि तजु संसय भजु रामपद।
सुनु गिरिराजकुमारि भ्रमतम रबिकर बचन मम॥११५॥

सगुनहि अगुनहि नहि कछु भेदा। गावहि मुनि पुरान बुध बेदा।
अगुन अरूप अलख अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई।
जो गुन रहित सगुन सोइ कैसें। जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसें।
जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा। तेहि किमि कहिअ बिमोह प्रसंगा।
राम सच्चिदानंद दिनेसा। नहिं तहँ मोह निसा लव लेसा।
सहज प्रकास रूप भगवाना। नहिं तहँ पुनि बिज्ञान बिहाना।

१–१, ३, ४, ५; बिधि ६. २–४, ५, ६; जिन्ह के अगुन १, ३.

जेहि इमि गावहिं बेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान ।
सोइ दसरथसुत भगत हित कोसलपति भगवान ॥ ११८ ॥

कासी मरत जंतु अवलोकी । जासु नाम बल करौं बिसोकी ।
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी । रघुबर बस[१] उर अंतरजामी ।
बिबसहु जासु नाम नर कहहीं । जनम अनेक रचित अघ दहहीं ।
सादर सुमिरन जे नर करहीं । भव बारिधि गोपद इव तरहीं ।
राम सो परमातमा भवानी । तहँ भ्रम अति अबिहित तव बानी ।
अस संसय आनत उर माहीं । ज्ञान बिराग सकल गुन जाहीं ।
सुनि सिव के भ्रम भंजन बचना । मिटि गै सब कुतरक कै रचना ।
भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती । दारुन असंभावना बीती ॥

पुनि पुनि प्रभु पद कमल गहि जोरि पंकरुह पानि ।
बोली गिरिजा बचन बर मनहु प्रेम रस सानि ॥ ११९ ॥

ससि कर सम सुनि गिरा तुम्हारी । मिटा मोह सरदातप भारी ।
तुम्ह कृपाल सबु संसउ हरेऊ । राम स्वरूप जानि मोहि परेऊ ।
नाथ कृपा अब गयेउ बिषादा । सुखी भइउँ प्रभु चरन प्रसादा ।
अब मोहि आपनि किंकरि जानी । जदपि सहज जड़ नारि अयानी ।
प्रथम जो मैं पूछा सोइ कहहू । जौं मो पर प्रसंन प्रभु अहहू ।
राम ब्रह्म चिन्मय अबिनासी । सर्ब रहित सब उर पुर बासी ।
नाथ धरेउ नर तनु केहि हेतू । मोहि समुझाइ कहहु बृषकेतू ।
उमा बचन सुनि परम बिनीता । रामकथा पर प्रीति पुनीता ॥

हिय हरषे कामारि तब संकर सहज सुजान ।
बहु बिधि उमहि प्रसंसि पुनि बोले कृपानिधान ॥
सुनु सुभ कथा भवानि रामचरितमानस बिमल ।
कहा भुसुंडि बखानि सुना बिहगनायक गरुड़ ॥

*१–१, ३, ४, ५, सब ६.

हरप विपाद ज्ञान अज्ञाना। जीव धर्म अहमिति अभिमाना।
राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना। परमानंद परेस[1] पुराना॥
पुरुप प्रसिद्ध प्रकास निधि प्रगट परावर नाथ।
रघुकुल मनि मम स्वामि सोइ कहि सिव नाएउ माथ॥११६॥

निज भ्रम नहिं समुझहिं अज्ञानी। प्रभु पर मोह धरहिं जड़ प्रानी।
जथा गगन घन पटल निहारी। झाँपेउ भानु कहहिं कुबिचारी।
चितव जो लोचन अंगुलि लाएँ। प्रगट जुगल ससि तेहि कें भाएँ।
उमा रामबिपइक अस मोहा। नभ तम धूम धूरि[2] जिमि सोहा।
बिपय करन[3] सुर जीव समेता। सकल एक तें एक सचेता।
सब कर परम प्रकासक जोई। राम अनादि अवधपति सोई।
जगत प्रकास्य प्रकासक रामू। मायाधीस ज्ञान गुन धामू।
जासु सत्यता तें जड़ माया। भास सत्य इव मोह सहाया॥
रजत सीप महुँ भास जिमि जथा भानु कर बारि।
जदपि मृपा तिहुँ काल सोइ भ्रम न सकै कोउ टारि॥११७॥

एहि बिधि जग हरि आस्रित रहई। जदपि असत्य देत दुख अहई।
जौं सपनें सिर काटै कोई। बिनु जागें न दूरि दुख होई।
जासु कृपा अस भ्रम मिटि जाई। गिरिजा सोइ कृपाल रघुराई।
आदि अंत कोउ जासु न पावा। मति अनुमानि निगम अस गावा।
बिनु पद चलै सुनै बिनु काना। कर बिनु करम करै बिधि नाना।
आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बकता बड़ जोगी।
तन बिनु परस नयन बिनु देखा। ग्रहै घ्रान बिनु बास असेखा[4]।
असि सब भाँति अलौकिक करनी। महिमा जासु जाइ नहिं बरनी॥

१–१, ३, ६; पुरुप ४, ५. ३–१, ३, ६; करत ४, ५.
२–१, ३, ४, ५; धूरि धूम ६. ४–१, ३, ५; बिसेषा ४, ६.

जेहि इमि गावहिं वेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान ।
सोइ दसरथसुत भगत हित कोसलपति भगवान ॥ ११८ ॥

कासी मरत जंतु अवलोकी । जासु नाम बल करौं बिसोकी ।
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी । रघुबर बस उर अंतरजामी ।
बिबसहु जासु नाम नर कहहीं । जनम अनेक रचित अघ दहहीं ।
सादर सुमिरन जे नर करहीं । भव बारिधि गोपद इव तरहीं ।
राम सो परमातमा भवानी । तहँ भ्रम अति अबिहित तव बानी ।
अस संसय आनत उर माहीं । ग्यान बिराग सकल गुन जाहीं ।
सुनि सिव के भ्रम भंजन बचना । मिटि गै सब कुतरक कै रचना ।
भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती । दारुन असंभावना बीती ॥

पुनि पुनि प्रभु पद कमल गहि जोरि पंकरुह पानि ।
बोलीं गिरिजा बचन बर मनहु प्रेम रस सानि ॥ ११९ ॥

ससि कर सम सुनि गिरा तुम्हारी । मिटा मोह सरदातप भारी ।
तुम्ह कृपाल सबु संसउ हरेऊ । राम स्वरूप जानि मोहि परेऊ ।
नाथ कृपा अब गयेउ बिषादा । सुखी भयउँ प्रभु चरन प्रसादा ।
अब मोहि आपनि किंकरि जानी । जदपि सहज जड़ नारि अयानी ।
प्रथम जो मैं पूछा सोइ कहहू । जौं मो पर प्रसंन प्रभु अहहू ।
राम ब्रह्म चिन्मय अबिनासी । सर्ब रहित सब उर पुर बासी ।
नाथ धरेउ नर तनु केहि हेतू । मोहि समुझाइ कहहु बृषकेतू ।
उमा बचन सुनि परम बिनीता । रामकथा पर प्रीति पुनीता ॥

हिय हरषे कामारि तब संकर सहज सुजान ।
बहु बिधि उमहि प्रसंसि पुनि बोले कृपानिधान ॥

सुनु सुभ कथा भवानि रामचरितमानस बिमल ।
कहा भुसुंडि बखानि सुना बिहगनायक गरुड़ ॥

*१–१, ३, ४, ५; सब ६.

सो संवाद उदार जेहिं बिधि भा आगे कहब।
सुनहु राम अवतार चरित परम सुंदर अनघ॥
हरि गुन नाम अपार कथा रूप अगनित अमित।
मैं निज मति अनुसार कहौं उमा सादर सुनहु॥ १२०॥

सुनु गिरिजा हरि चरित सुहाए[१]। बिपुल बिसद निगमागम गाए[१]।
हरि अवतार हेतु जेहि होई। इदमित्थं कहि जाइ न सोई।
राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी। मत हमार अस सुनहि सयानी।
तदपि संत मुनि बेद पुराना। जस कछु कहहिं स्वमति अनुमाना।
तस मैं सुमुखि सुनावौं तोही। समुझि परै जस कारन मोही।
जब जब होइ धरम कै हानी। बढ़हिं असुर अधरम[२] अभिमानी।
करहिं अनीति जाइ नहि बरनी। सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी।
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥
अमुर मारि थापहिं सुरन्ह राखहिं निज श्रुति सेतु।
जग बिस्तारहिं बिसद जस रामजन्म कर हेतु॥ १२१॥

सोइ जस गाइ भगत भव तरहीं। कृपासिंधु जनहित तनु धरहीं।
राम जनम के हेतु अनेका। परम बिचित्र एक तें एका।
जनम एक दुइ कहौं बखानी। सावधान सुनु सुमति भवानी।
द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ। जय अरु बिजय जान सब कोऊ।
बिप्र स्राप तें दूनौं भाई। तामस असुर देह तिन्ह पाई।
कनककसिपु अरु हाटकलोचन। जगत बिदित सुरपति मद मोचन।
बिजई समर बीर बिख्याता। धरि बराह बपु एक निपाता।
होइ नरहरि दूसर पुनि मारा। जन प्रहलाद सुजस बिस्तारा॥
भए निसाचर जाइ तेइ महाबीर बलवान।
कुंभकरन रावन सुभट सुर बिजई जग जान॥ १२२॥

१–१, ३, ५; सुहावा, गावा ४, ६. *२–१, ३, ४, ५; अधम ६.

सुकृत न भए हते भगवाना । तीनि जनम द्विज बचन भवाना ।
एक बार तिन्हके हित लागी । धरेउ सरीर भगत अनुरागी ।
कस्यप अदिति तहाँ[1] पितु माता । दसरथ कौसल्या बिख्याता ।
एक कलप ऐहि बिधि अवतारा । चरित पवित्र किए संसारा ।
एक कलप सुर देखि दुखारे । समर जलंधर सन[2] सब हारे ।
संभु कीन्ह संग्राम अपारा । दनुज महा बल मरै न मारा ।
परम सती असुराधिप नारी । तेहि बल ताहि न जितहि पुरारी ॥

छल करि टारेउ तासु ब्रत प्रभु सुर कारज कीन्ह ।
जब तेहि जानेउ मरम तब श्राप कोप करि दीन्ह ॥ १२३ ॥

तासु श्राप हरि दीन्ह[3] प्रवाना । कौतुक निधि कृपाल भगवाना ।
तहाँ जलंधर रावन भएेऊ । रन हति राम परम पद दएेऊ ।
एक जनम कर कारन एहा । जेहि लगि राम धरी नर देहा ।
प्रति अवतार कथा प्रभु केरी । सुनु मुनि बरनी कबिन घनेरी ।
नारद श्राप दीन्ह एक बारा । कलप एक तेहि लगि अवतारा ।
गिरिजा चकित भईं सुनि बानी । नारद बिष्णु भगत पुनि ज्ञानी ।
कारन कवन श्राप मुनि दीन्हा । का अपराध रमापति कीन्हा ।
यह प्रसंग मोहि कहहु पुरारी । मुनि मन मोह आचरज भारी ॥

बोले बिहसि महेस तब ज्ञानी मूढ़ न कोइ ।
जेहि जस रघुपति करहिं जब सो तस तेहि छन होइ ॥

कहौं राम गुन गाथ भरद्वाज सादर सुनहु ।
भव भंजन रघुनाथ भजु तुलसी तजि मान मद ॥ १२४ ॥

हिम गिरि गुहा एक अति पावनि । बह समीप सुरसरी सुहावनि ।
आश्रम परम पुनीत सुहावा । देखि देवरिषि मन अति भावा ।

१–१, ३, ६, महा ४, ५. ३–१, २, ४, ५, कीन्ह ६.
२–१, ३, ४, ५; सौं ६.

निरखि सैल सरि बिपिन बिभागा । भएउ रमापति पद अनुरागा ।
सुमिरत हरिहि श्राप गति बाधी । सहज बिमल मन लागि समाधी ।
मुनि गति देखि सुरेस डेराना । कामहि बोलि कीन्ह सनमाना ।
सहित सहाय जाहु मम हेतू । चलेउ हरषि हिय जलचरकेतू ।
सुनासीर मन महुँ असि त्रासा । चहत देवरिषि मम पुर बासा ।
जे कामी लोलुप जग माहीं । कुटिल काक इव सबहि डेराहीं ॥
सूख हाड़ लै भाग सठ स्वान निरखि मृगराज ।
छीनि लेइ जनि जानि जड़ तिमि सुरपतिहि न लाज ॥ १२५ ॥

तेहि आश्रमहि मदन जब गएऊ । निज माया बसंत निरमएऊ ।
कुसुमित बिबिध बिटप बहु रंगा । कूजहि कोकिल गुंजहिं भृंगा ।
चली सुहावनि त्रिबिध बयारी । काम कृसानु जगावनिहारी[१] ।
रंभादिक सुरनारि नवीना । सकल असमसर कला प्रबीना ।
करहिं गान बहु तान तरंगा । बहु बिधि क्रीड़हि पानि पतंगा ।
देखि सहाय मदन हरषाना । कीन्हेसि पुनि प्रपंच बिधि नाना ।
काम कला कछु मुनिहि न ब्यापी । निज भय डरेउ मनोभव पापी ।
सीम कि चाँपि सकै कोउ तासू । बड़ रखवार रमापति जासू ॥
सहित सहाय सभीत अति मानि हारि मन मयन ।
गहेसि जाइ मुनि चरन कहि सुठि आरत मृदु बयन[२] ॥ १२६ ॥

भएउ न नारद मन कछु रोषा । कहि प्रिय बचन काम परितोषा ।
नाइ चरन सिरु आयेसु पाई । गएउ मदन तब सहित सहाई ।
मुनि सुसीलता आपनि करनी । सुरपति सभाँ जाइ सब बरनी ।
सुनि सबकें मन अचरजु आवा । मुनिहि प्रसंसि हरिहि सिरु नावा ।
तब नारद गवने सिव पाहीं । जिता काम अहमिति मन माहीं ।

१—४, ५, बढावनिहारी १, ३, ६.
२—४, ५, ६; तब कहि सुठि आरत बचन १, ३.

मार चरित संकरहि सुनाए। अति प्रिय जानि महेस सिखाए।
बार बार बिनवौं मुनि तोही। जिमि यह कथा सुनायहु मोही।
तिमि जनि हरिहि सुनावहु[1] कबहूँ। चलेहुँ प्रसंग दुराएहु तबहूँ॥
संभु दीन्ह उपदेस हित नहि नारदहि सोहान।
भरद्वाज कौतुक सुनहु हरि इच्छा बलवान॥ १२७॥

राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई। करै अन्यथा अस नहि कोई।
संभु बचन मुनि मन नहि भाए। तब बिरंचि के लोक सिधाए।
एक बार करतल बर बीना। गावत हरि गुन गान प्रबीना।
छीरसिंधु गवने मुनिनाथा। जहँ बस श्रीनिवास श्रुतिमाथा।
हरषि मिले उठि[2] रमानिकेता। बैठे आसन रिषिहि समेता।
बोले बिहसि चराचरराया। बहुते दिनन[3] कीन्हि मुनि दाया।
काम चरित नारद सब भाखे। जद्यपि प्रथम बरजि सिव राखे।
अति प्रचंड रघुपति कै माया। जेहि न मोह अस को जग जाया॥
रूख बदन करि बचन मृदु बोले श्रीभगवान।
तुम्हरे सुमिरन तें मिटहि मोह मार मद मान॥ १२८॥

सुनु मुनि मोह होइ मन ताके। ज्ञान बिराग हृदय नहि जाके।
ब्रह्मचरज ब्रत रत मति धीरा। तुम्हहि कि करै मनोभव पीरा।
नारद कहेउ सहित अभिमाना। कृपा तुम्हारि सकल भगवाना।
करुनानिधि मन दीख बिचारी। उर अंकुरेउ गर्ब तरु भारी।
बेगि सो मैं डारिहौं उखारी[4]। पन हमार सेवक हितकारी।
मुनि कर हित मम कौतुक होई। अवसि उपाय करबि मैं सोई।
तब नारद हरिपद सिर नाई। चले हृदय अहमिति अधिकाई।
श्रीपति निज माया तब प्रेरी। सुनहु कठिन करनी तेहि केरी॥

१–१, ३, ४, ५; सुनाएहु ६. ३–४, ५; दिन कीन्ही १, ३; दिनन्हि ६
२–१, ३, ५; उठे प्रभु कृपा ४, ६. ४–१, ३, ५; उपारी ४, ६.

बिरचेउ मगु महुँ नगर तेहि सत जोजन बिस्तार ।
श्रीनिवास पुर तें अधिक रचना बिबिध प्रकार ॥ १२९ ॥

बसहिं नगर सुंदर नर नारी । जनु बहु मनसिज रति तनु धारी ।
तेहि पुर बसै सीलनिधि राजा । अगनित हय गय सेन[1] समाजा ।
सत सुरेस सम बिभव बिलासा । रूप तेज बल नीति[2] निवासा ।
बिस्व मोहिनी तासु कुमारी । श्री बिमोह जिसु[3] रूपु निहारी ।
सोइ हरि माया सब गुन खानी । सोभा तासु कि जाइ बखानी ।
करै स्वयंबर सो नृपबाला । आए तहँ अगनित महिपाला ।
मुनि कौतुकी नगर तेहि गअेऊ । पुरबासिन्ह सब पूछत भअेऊ ।
सुनि सब चरित भूप गृह आए । करि पूजा नृप मुनि बैठाए ॥

आनि देखाई नारदहि भूपति राजकुमारि ।
कहहु नाथ गुन दोष सब अेहि के हृदय बिचारि ॥ १३० ॥

देखि रूप मुनि बिरति बिसारी । बड़ी बार लगि रहे निहारी ।
लच्छन तासु बिलोकि भुलानें । हृदय हरष नहिं प्रगट बखानें ।
जो अेहि बरै अमर सोइ होई । समर भूमि तेहि जीत न कोई ।
सेवहिं सकल चराचर ताही । बरै सीलनिधि कन्या जाही ।
लच्छन सब बिचारि उर राखे । कछुक बनाइ भूप सन भाखे ।
सुता सुलच्छन कहि नृप पाहीं । नारद चले सोच मन माहीं ।
करौं जाइ सोइ जतन बिचारी । जेहि प्रकार मोहि बरै कुमारी ।
जप तप कछु न होइ तेहि[4] काला । है बिधि[5] मिलै कवन बिधि बाला ॥

अेहि अवसर चाहिअ परम सोभा रूप बिसाल ।
जो बिलोकि रीझै कुअँरि तब मेलइ जयमाल ॥ १३१ ॥

१–१, ३, ४, ५; सहित ६.
२–१, ३, ६; सील ४, ५.
३–१, ३, ४, ५; जेहि ६.
४–१, ३, ५, ६; येहि ४.
५–१, ३, ४, ५; हे बिधि ६.

हरि सन मागौं सुंदरताई । होइहि जात गहरु अति[1] भाई ।
मोरें हित हरि सम नहिं कोऊ । ऐहि औसर सहाय सोइ होऊ ।
बहु बिधि बिनय कीन्हि तेहि काला । प्रगटेउ प्रभु कौतुकी[2] कृपाला ।
प्रभु बिलोकि मुनि नयन जुड़ानें । होइहि काजु हिएं हरषानें ।
अति आरति कहि कथा सुनाई । करहु कृपा करि होहु सहाई ।
आपन रूप देहु प्रभु मोही । आन भाँति नहिं पावौं ओही ।
जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा । करहु सो बेगि दास मैं तोरा ।
निज माया बल देखि बिसाला । हियँ हँसि बोले दीनदयाला ॥

जेहि बिधि होइहि परम हित नारद सुनहु तुम्हार ।
सोइ हम करब न आन कछु बचन न मृषा हमार ॥ १३२ ॥

कुपथ माँग रुज ब्याकुल रोगी । बैद न देइ सुनहु मुनि जोगी ।
ऐहि बिधि हित तुम्हार मैं ठएऊ । कहि अस अंतरहित प्रभु भएऊ ।
मायाबिबस भए मुनि मूढ़ा । समुझी नहिं हरि गिरा निगूढ़ा ।
गवनें तुरत तहाँ रिषिराई । जहाँ स्वयंबर भूमि बनाई ।
निज निज आसन बैठे राजा । बहु बनाव करि सहित समाजा ।
मुनि मन हरष रूप अति मोरें । मोहि तजि आनहि बरिहि न भोरें ।
मुनि हित कारन कृपानिधाना । दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना ।
सो चरित्र लखि काहुँ न पावा । नारद जानि सबहिं सिर नावा ॥

रहे तहाँ दुइ रुद्र गन ते जानहिं सब भेउ ।
बिप्र बेष देखत फिरहिं परम कौतुकी तेउ ॥ १३३ ॥

जेहि समाज बैठे मुनि जाई । हृदय रूप अहमिति अधिकाई ।
तहँ बैठे महेस गन दोऊ । बिप्र बेष गति लखै न कोऊ ।
करहिं कूट नारदहि सुनाई । नीकि दीन्हि हरि सुंदरताई ।

१—१, ३, ४, ५; मोहि ६.
२—१, ३; प्रगटे प्रभु कौतुकी ६; प्रगटउ प्रभु कोतकी ४, ५.

रीझिहि राजकुअँरि छबि देखी। इन्हहि बरिहि हरि जानि बिसेषी।
मुनिहि मोह मन हाथ पराएँ। हँसहिं संभुगन अति सचु पाएँ।
जदपि सुनहिं मुनि अटपटि बानी। समुझि न परै बुद्धि भ्रम सानी।
काहु न लखा सो चरित बिसेखा। सो सरूप नृप कन्याँ देखा।
मर्कट बदन भयंकर देही। देखत हृदय क्रोध भा तेही॥

सखीं संग लै कुअँरि तब चलि जनु राजमराल।
देखत फिरै महीप सब कर सरोज जयमाल॥ १३४॥

जेहि दिसि बैठे नारद फूली। सो दिसि तेहिं न बिलोकी भूली।
पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं। देखि दसा हरगन मुसुकाहीं।
धरि नृप तनु तहँ गयउ कृपाला। कुअँरि हरषि मेलेउ जयमाला।
दुलहिनि लै गे लच्छिनिवासा। नृपसमाज सब भयउ निरासा।
मुनि अति बिकल मोहँ मति नाठी। मनि गिरि गई छूटि जनु गाँठी।
तब हरगन बोले मुसुकाई। निज मुख मुकुर बिलोकहु जाई।
अस कहि दोउ भागे भयँ भारी। बदन दीख मुनि बारि निहारी।
बेषु बिलोकि क्रोध अति बाढ़ा। तिन्हहि सराप दीन्ह अति गाढ़ा॥

होहु निसाचर जाइ तुम्ह कपटी पापी दोउ।
हँसेहु हमहि सो लेहु फल बहुरि हँसेहु मुनि कोउ॥ १३५॥

पुनि जल दीख रूप निज पावा। तदपि हृदयँ संतोष न आवा।
फरकत अधर कोप मन माहीं। सपदि चले कमलापति पाहीं।
देहउँ श्राप कि मरिहउँ जाई। जगत मोरि उपहास कराई।
बीचहिं पंथ मिले दनुजारी। संग रमा सोइ राजकुमारी।
बोले मधुर बचन सुरसाईं। मुनि कहँ चले बिकल की नाईं।
सुनत बचन उपजा अति क्रोधा। माया बस न रहा मन बोधा।
पर संपदा सकहु नहिं देखी। तुम्हरें इरिषा कपट बिसेषी।
मथत सिंधु रुद्रहि बौरायहु। सुरन्ह प्रेरि बिष पान करायहु॥

असुर सुरा बिष संकरहि आपु रमा मनि चारु ।
स्वारथ साधक कुटिल तुम्ह सदा कपट ब्यवहारु ॥ १३६ ॥

परम स्वतंत्र न सिर पर कोई । भावै मनहि करहु तुम्ह सोई ।
भलेहि मंद मंदेहि भल करहू । बिसमय हरष न हिअँ कछु धरहू ।
डहकि डहकि परिचेहु सब काहू । अति असंक मन सदा उछाहू ।
कर्म सुभासुभ तुम्हहि न बाधा । अब लगि तुम्हहि न काहू साधा ।
भले भवन अब बायन दीन्हा । पावहुगे फल आपन कीन्हा ।
बंचेहु मोहि जवनि धरि देहा । सोइ तनु धरहु श्राप मम एहा ।
कपि आकृति तुम्ह कीन्हि हमारी । करिहहिं कीस सहाय तुम्हारी ।
मम अपकार कीन्ह तुम्ह भारी । नारि बिरह तुम्ह होब दुखारी ॥

श्राप सीस धरि हरषि हिय प्रभु बहु बिनती कीन्हि ।
निज माया कै प्रबलता करषि कृपानिधि लीन्हि ॥ १३७ ॥

जब हरि माया दूरि निवारी । नहि तहँ रमा न राजकुमारी ।
तब मुनि अति सभीत हरि चरना । गहे पाहि प्रनतारतिहरना ।
मृषा होउ मम श्राप कृपाला । मम इच्छा कह दीनदयाला ।
मैं दुर्बचन कहे बहुतेरे । कह मुनि पाप मिटिहि किमि मेरे ।
जपहु जाइ संकर सत नामा । होइहि हृदय तुरत बिश्रामा ।
कोउ नहि सिव समान प्रिय मोरें । असि परतीति तजहु जनि भोरें ।
जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी । सो न पाव मुनि भगति हमारी ।
अस उर धरि महि बिचरहु जाई । अब न तुम्हहि माया नियराई ॥

बहु बिधि मुनिहि प्रबोधि प्रभु तब भये अंतरधान ।
सत्यलोक नारद चले करत राम गुन गान ॥ १३८ ॥

हर गन मुनिहि जात पथ देखी । बिगत मोह मन हरष बिसेखी ।
अति सभीत नारद पहिं आए । गहि पद आरत बचन सुनाए ।
हर गन हम न बिप्र मुनि राया । बड़ अपराध कीन्ह फल पाया ।

श्राप अनुग्रह करहु कृपाला। बोले नारद दीन दयाला॥
निसिचर जाइ होहु तुम्ह दोऊ। बैभव बिपुल तेज बल होऊ॥
भुज बल बिस्व जितब तुम्ह जहिआ। धरिहहिं बिष्नु मनुज तनु तहिआ॥
समर मरन हरि हाथ तुम्हारा। होइहहु मुकुत न पुनि संसारा॥
चले जुगल मुनि पद सिर नाई। भए निसाचर कालहि पाई॥
एक कलप ऐहि हेतु प्रभु लीन्ह मनुज अवतार।
सुर रंजन सज्जन सुखद हरि भंजन भुवि भार॥ १३९॥

ऐहि बिधि जनम करम हरि केरे। सुंदर सुखद बिचित्र घनेरे॥
कलप कलप प्रति प्रभु अवतरहीं। चारु चरित नाना बिधि करहीं॥
तब तब कथा मुनीसन्ह गाई। परम पुनीत प्रबंध बनाई॥
बिबिध प्रसंग अनूप बखानें। करहिं न सुनि[1] आचरजु सयाने॥
हरि अनंत हरिकथा अनंता। कहहिं सुनहिं बहु बिधि सब संता॥
रामचंद्र के चरित सुहाए। कलप कोटि लगि जाहिं न गाए॥
यह प्रसंग मैं कहा भवानी। हरि माया मोहहि मुनि ग्यानी॥
प्रभु कौतुकी प्रनत हितकारी। सेवत सुलभ सकल दुखहारी॥
सुर नर मुनि कोउ नाहिं जेहि न मोह माया प्रबल।
अस बिचारि मन माहिं भजिअ महा[2] मायापतिहि॥ १४०॥

अपर हेतु सुनु सैलकुमारी। कहौं बिचित्र कथा बिस्तारी॥
जेहि कारन अज अगुन अरूपा। ब्रह्म भएेउ कोसलपुर भूपा॥
जो प्रभु बिपिन फिरत तुम्ह देखा। बंधु समेत धरें मुनि बेषा॥
जासु चरित अवलोकि भवानी। सती सरीर रहिहु बौरानी॥
अजहु न छाया मिटति तुम्हारी। तासु चरित सुनु भ्रम रुज हारी॥
लीला कीन्हि जो तेहि अवतारा। सो सब कहिहौं मति अनुसारा॥

१–१, ३, ४, ५; कछु ६. २–१, ३, ४, ५; कस न भजिय ६.

भरद्वाज मुनि संकर बानी। सँकुचि सप्रेम उमा मुसुकानी॥
लगे बहुरि बरनै वृषकेतू। सो अवतार भअेउ जेहि हेतू॥
सो मैं तुम्ह सन कहौं सबु सुनु मुनीस मन लाइ।
रामकथा कलि मल हरनि मंगल करनि सुहाइ॥ १४१॥

स्वायंभू मनु अरु सतरूपा। जिन्हतें भै नर सृष्टि अनूपा।
दंपति धरम आचरन नीका। अजहुँ गाव श्रुति जिन्हकै लीका।
नृप उत्तानपाद सुत तासू। ध्रुव हरि भगत भअेउ सुत जासू।
लघु सुत नाम प्रियब्रत ताही। बेद पुरान प्रसंसहिं जाही।
देवहूति[1] पुनि तासु कुमारी। जो मुनि कर्दम कै प्रिय नारी।
आदि देव प्रभु दीनदयाला। जठर धरेउ जेहि कपिल कृपाला।
सांख्य सास्त्र जिन्ह प्रगट बखाना। तत्त्व बिचार निपुन भगवाना।
तेहि मनु राज कीन्ह बहु काला। प्रभु आयसु सब[2] बिधि प्रतिपाला॥
होइ न बिषय बिराग भवन बसत भा चौथपन।
हृदय बहुत दुख लाग जनम गअेउ हरि भगति बिनु॥ १४२॥

बरबस राज सुतहि तब[3] दीन्हा। नारि समेत गवन बन[4] कीन्हा।
तीरथ बर नैमिष बिख्याता। अति पुनीत साधक सिधि दाता।
बसहि तहाँ मुनि सिद्ध समाजा। तहँ हिअ हरषि चलेउ[5] मनु राजा।
पंथ जात सोहहिं मतिधीरा। ग्यान भगति जनु धरें सरीरा।
पहुचे जाइ धेनुमति तीरा। हरषि नहाने निरमल नीरा।
आए मिलन सिद्ध मुनि ग्यानी। धरम धुरंधर नृपरिषि जानी।
जहँ तहँ तीरथ रहे सुहाए। मुनिन्ह सकल सादर करवाए।
कृस सरीर मुनि पट परिधाना। संत[6] समाज नित सुनहिं पुराना॥

१—१, ३, ४, ५; देवहुती ६.
२—१, ३, ४, ५; बहु ६.
३—१, ३, ४, ५; पुनि ६.
४—१, ३, ६, तब ४, ५
५—१, ३, ४. ५; चले ६
*६—१, ४, ५; सत ३, ६.

द्वादस अच्छर मंत्र पुनि जपहिं सहित अनुराग ।
बासुदेव पद पंकरुह दंपति मन अति लाग ॥ १४३ ॥

करहिं अहार साक फल कंदा । सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानंदा ।
पुनि हरि हेतु करन तप लागे । बारि अधार मूल फल त्यागे ।
उर अभिलाष निरंतर होई । देखिअ नयन परम प्रभु सोई ।
अगुन अखंड अनंत अनादी । जेहि चिंतहिं परमारथ बादी ।
नेति नेति जेहि बेद-निरूपा । निजानंद निरुपाधि अनूपा ।
संभु बिरंचि बिष्णु भगवाना । उपजहिं जासु अंस तें नाना ।
ऐसेउ प्रभु सेवक बस अहई । भगत हेतु लीला तनु गहई ।
जो यह बचन सत्य श्रुति भाषा । तौ हमार पूजिहि अभिलाषा ॥
ऐहि बिधि बीते बरष षट सहस बारि आहार ।
संबत सप्त सहस्र पुनि रहे समीर अधार ॥ १४४ ॥

बरष सहस दस त्यागेउ सोऊ । ठाढ़े रहे एक पद दोऊ ।
बिधि हरि हर तप देखि अपारा । मनु समीप आए बहु बारा ।
माँगहु बर बहु भाँति लोभाए । परम धीर नहिं चलहिं चलाए ।
अस्थि मात्र होइ रहे सरीरा । तदपि मनाग मनहिं नहिं पीरा ।
प्रभु सर्बग्य दास निज जानी । गति अनन्य तापस नृप रानी ।
माँगु माँगु बरु भै नभबानी । परम गभीर कृपामृत सानी ।
मृतक जिआवनि गिरा सुहाई । श्रवन रंध्र होइ उर जब आई ।
हृष्ट पुष्ट तन भए सुहाए । मानहु अबहिं भवन तें आए ॥
श्रवन सुधा सम बचन सुनि पुलक प्रफुल्लित गात ।
बोले मनु करि दंडवत प्रेम न हृदय समात ॥ १४५ ॥

सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनू । बिधि हरि हर बंदित पद-रेनू ।

१-१, ३; धुनि ४, ५, ६.

सेवत सुलभ सकल सुखदायक। प्रनतपाल सचराचर नायक।
जौं अनाथ हित हम पर नेहू। तौ प्रसंन होइ यह बर देहू।
जो सरूप बस सिव मन माहीं। जेहि कारन मुनि जतन कराहीं।
जो भुसुंडि मन मानस हंसा। सगुन अगुन जेहि निगम प्रसंसा।
देखहिं हम सो रूप भरि लोचन। कृपा करहु प्रनतारति मोचन।
दंपति बचन परम प्रिय लागे। मृदुल बिनीत प्रेम रस पागे।
भगतबछल प्रभु कृपानिधाना। बिस्वबास प्रगटे भगवाना॥

नील सरोरुह नील मनि नील नीरनिधि[१] स्याम।
लाजहिं तन सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम॥ १४६॥

सरद मयंक बदन छबि सींवाँ। चारु कपोल चिबुक दर[२] ग्रीवाँ।
अधर अरुन रद सुंदर नासा। बिधु कर निकर बिनिंदक हासा।
नव अंबुज अंबक छबि नीकी। चितवनि ललित भावँती जी की।
भृकुटि मनोज चाप छबि हारी। तिलक ललाट पटल दुतिकारी।
कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा। कुटिल केस जनु मधुप समाजा।
उर श्रीबत्स रुचिर बनमाला। पदिक हार भूषन मनि जाला।
केहरि कंधर चारु जनेऊ। बाहु बिभूषन सुंदर तेऊ।
करि कर सरिस सुभग भुज दंडा। कटि निषंग कर सर कोदंडा॥

तड़ित बिनिंदक पीत पट उदर रेख बर तीनि।
नाभि मनोहर लेति जनु जमुन भवँर छबि छीनि॥ १४७॥

.द राजीव बरनि नहि जाहीं। मुनि मन मधुप बसहिं जेन्ह माहीं।
ाम भाग सोभति[३] अनुकूला। आदिसक्ति छबिनिधि जग मूला।
ासु अंस उपजहिं गुन खानी। अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी।
भृकुटि बिलास जासु जग होई। राम बाम दिसि सीता सोई।

१–४, ५, नीरधर १, ३, ६. ३–१, ३, ४, ५; सोभित ६.
२–६; रद; १, ३, ४, ५.

छबि समुद्र हरि रूप बिलोकी। ऐकटक रहे नयन पट रोकी।
चितवहिं सादर रूप अनूपा। तृप्ति न मानहिं मनु सतरूपा।
हरष बिबस तन दसा भुलानी। परे दंड इव गहि पद पानी।
सिर परसे प्रभु निज कर कंजा। तुरत उठाए करुनापुंजा॥
बोले कृपानिधान पुनि अति प्रसंन मोहि जानि।
माँगहु बर जोइ भाव मन महादानि अनुमानि॥१४८॥

सुनि प्रभु बचन जोरि जुग पानी। धरि धीरजु बोलीं[1] मृदु बानी।
नाथ देखि पद कमल तुम्हारे। अब पूरे सब काम हमारे।
एक लालसा बड़ि उर माहीं। सुगम अगम कहि जाति सो नाहीं।
तुम्हहिं देत अति सुगम गोसाईं। अगम लाग मोहि निज कृपनाईं।
जथा दरिद्र बिबुधतरु पाई। बहु संपति माँगत सकुचाई।
तासु प्रभाउ जान हिअ[2] सोई। तथा हृदय मम संसय होई।
सो तुम्ह जानहु अंतरजामी। पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी।
सकुच बिहाइ माँगु नृप मोही। मोरें नहिं अदेय कछु तोही॥
दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहौं सतिभाउ।
चाहौं तुम्हहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ॥१४९॥

देखि प्रीति सुनि बचन अमोले। एवमस्तु करुनानिधि बोले।
आपु सरिस खोजौं कहँ जाई। नृप तव तनय होब मैं आई।
सतरूपहि बिलोकि कर जोरें। देबि मागु बरु जो रुचि तोरें।
जो बरु नाथ चतुर नृप माँगा। सोइ कृपालु मोहि अति प्रिय लागा।
प्रभु परंतु सुठि होति ढिठाई। जदपि भगति[3] हित तुम्हहिं सोहाई।
तुम्ह ब्रह्मादि जनक जगस्वामी। ब्रह्म सकल उर अंतरजामी।

१-१, ४, ५; बोले ३, ६. ३-१, ३, ४, ५; भगत ६.
*२-४, ५; जानहि १, ३; न जानहि ६.

अस समुभत मन[1] संसय होई। कहा जो प्रभु प्रवान पुनि सोई।
जे निज भगत नाथ तव अहहीं। जो सुख पावहिं जो गति लहहीं॥
सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति सोइ निज चरन सनेहु।
सोइ बिबेक सोइ रहनि प्रभु हमहिं कृपा करि देहु॥ १५०॥

सुनि मृदु गूढ़ रुचिर बर[2] रचना। कृपासिंधु बोले मृदु बचना।
जो कछु रुचि तुम्हरे मन माहीं। मैं सो दीन्ह सब संसय नाहीं।
मातु बिबेक अलौकिक तोरें। कबहुँ न मिटिहि अनुग्रह मोरें।
बंदि चरन मनु कहेउ बहोरी। अवर एक बिनती प्रभु मोरी।
सुत बिषैक तव पद रति होऊ। मोहि बड़ मूढ़ कहै[3] किन कोऊ।
मनिबिनुफनि जिमि जलबिनुमीना। मम जीवन मिति तुम्हहिं अधीना।
अस बरु मागि चरन गहि रहेऊ। एवमस्तु करुनानिधि कहेऊ।
अब तुम्ह मम अनुसासन मानी। बसहु जाइ सुरपति रजधानी॥
तहँ करि भोग बिसाल[4] तात गएँ कछु काल पुनि।
होइहहु अवध भुआल तब मैं होब तुम्हार सुत॥ १५१॥

इच्छा मय नर बेष सवारें। होइहौं प्रगट निकेत तुम्हारें।
अंसन्ह सहित देह धरि ताता। करिहौं चरित भगत सुख दाता।
जे सुनि सादर नर बड़भागी। भव तरिहहिं ममता मद त्यागी।
आदिसक्ति जेहि जग उपजाया। सोउ अवतरहि मोरि यह माया।
पूरब मैं अभिलाष तुम्हारा। सत्य सत्य पन सत्य हमारा।
पुनि पुनि अस कहि कृपानिधाना। अंतरधान भए भगवाना।
दंपति उर धरि भगतकृपाला। तेहि आश्रमनि बसे कछु काला।
समय पाइ तनु तजि अनयासा। जाइ कीन्ह अमरावति बासा॥

१–१, ३, ४, ५; उर ६.
२–१, ३, ४, ५; बर ६.
३–१, ३, ४, ५; कहौ ६.
४–१, ३, ६; बिलास ४, ५.

यह इतिहास पुनीत अति उमहि कही[१] वृषकेतु ।
भरद्वाज सुनु अपर पुनि राम जनम कर हेतु ॥ १५२ ॥

सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी । जो गिरिजा प्रति संभु बखानी ।
बिस्व बिदित अेक कैकय देसू । सत्यकेतु तहँ बसै नरेसू ।
धरम धुरंधर नीति निधाना । तेज प्रताप सील बलवाना ।
तेहि कें भए जुगल सुत बीरा । सब गुन धाम महा रनधीरा ।
राजधनी जो जेठ सुत आही । नाम प्रतापभानु अस ताही ।
अपर सुतहि अरिमर्दन नामा । भुज बल अतुल अचल संग्रामा ।
भाइहि भाइहि[२] परम समीती । सकल दोष छल बरजित प्रीती ।
जेठे सुतहि राज नृप दीन्हा । हरि हित आपु गवन बन कीन्हा ॥
जब प्रतापरबि भअेउ नृप फिरी दोहाई देस ।
प्रजापाल अति बेद बिधि कतहुँ नहीं अघ लेस ॥ १५३ ॥

नृप हितकारक सचिव सयाना । नाम धरमरुचि सुक्र समाना ।
सचिव सयान बंधु बल बीरा । आपु प्रताप पुंज रनधीरा ।
सेन संग चतुरंग अपारा । अमित सुभट सब समर जुझारा ।
सेन बिलोकि राउ हरषाना । अरु बाजे गहगहे निसाना ।
बिजय हेतु कटकई बनाई । सुदिन साधि[३] नृप चलेउ बजाई ।
जहँ तहँ परी अनेक लराईं । जीते सकल भूप बरिआईं ।
सप्त दीप भुज बल बस कीन्हे । लै लै दंड छाड़ि नृप[४] दीन्हे ।
सकल अवनि मंडल तेहि काला । एक प्रतापभानु महिपाला ॥
स्वबस बिस्व करि बाहुबल निज पुर कीन्ह प्रबेस ।
अरथ धरम कामादि सुख सेवै समय नरेसु ॥ १५४ ॥

१–१, ३, ४, ५; कहा ६.
२–१, ३, ४, ५; भाई ६.
३–१, ३, ४, ५; सोधि ६.
४–१, ३, ५, सब ४, ६.

भूप प्रतापभानु बल पाई। कामधेनु भै भूमि सुहाई।
सब दुख बरजित प्रजा सुखारी। धरमसील सुंदर नर नारी।
सचिव धरमरुचि हरि पद प्रीती। नृप हित हेतु सिखव नित नीती।
गुर सुर संत पितर महिदेवा। करै सदा नृप सब कै सेवा।
भूप धरम जे बेद बखानें। सकल करै सादर सुख मानें।
दिन प्रति देइ बिबिध बिधि दाना। सुनै सास्त्र बर बेद पुराना।
नाना बापी कूप तड़ागा। सुमन बाटिका सुंदर बागा।
बिप्रभवन सुरभवन सुहाए। सब तीरथन्ह बिचित्र बनाए।।

जहँ लगि कहे पुरान श्रुति एक एक सब जाग।
बार सहस्र सहस्र नृप किए सहित अनुराग।। १५५।।

हृदय न कछु फल अनुसंधाना। भूप बिबेकी परम सुजाना।
करै जे धरम करम मन बानी। बासुदेव अर्पित नृप ज्ञानी।
चढ़ि बर बाजि बार ऐक राजा। मृगया कर सब साजि समाजा।
बिंध्याचल गभीर बन गऐऊ। मृग पुनीत बहु मारत भऐऊ।
फिरत बिपिन नृप दीख बराहू। जनु बन दुरेउ ससिहि ग्रसि राहू।
बड़ बिधु नहिं समात मुख माहीं। मनहु क्रोध बस उगिलत नाहीं।
कोल कराल दसन छबि गाई। तनु बिसाल पीवर अधिकाई।
घुरुघुरात हयं आरौ पाएँ। चकित बिलोकत कान उठाएँ।।

नील महीधर सिखर सम देखि बिसाल बराहु।
चपरि चलेउ हय सुटुकि नृप हाँकि न होइ निबाहु।। १५६।।

आवत देखि अधिक रव बाजी। चलेउ बराह मरुत गति भाजी।
तुरत कीन्ह नृप सर संधाना। महि मिलि गऐउ बिलोकत बाना।
तकि तकि तीर महीस चलावा। करि छल सुअर सरीर बचावा।
प्रगटत दुरत जाइ मृग भागा। रिस बस भूप चलेउ सँग लागा।
गऐउ दूरि घन गहन बराहू। जहँ नाहिन गज बाजि निबाहू।

अति अकेल बन बिपुल कलेसू। तदपि न मृग मग तजै नरेसू।
कोल बिलोकि भूप बड़ धीरा। भागि पैठ गिरि गुहा गभीरा।
अगम देखि नृप अति पछिताई। फिरेउ महा बन परेउ भुलाई॥
खेद खिन्न छुद्धित तृषित राजा बाजि समेत।
खोजत ब्याकुल सरित सर जल बिनु भअेउ अचेत॥ १५७॥

फिरत बिपिन आश्रम अेक देखा। तहँ बस नृपति कपट मुनि[1] बेखा।
जासु देस नृप लीन्ह छड़ाई। समर सेन तजि गअेउ पराई।
समय प्रतापभानु कर जानी। आपन अति असमय अनुमानी।
गअेउ न गृह मन बहुत गलानी। मिला न राजहि नृप अभिमानी।
रिस उर मारि रंक जिमि राजा। बिपिन बसै तापस के साजा।
तासु समीप गवन नृप कीन्हा। यह प्रतापरबि तेहिं तब चीन्हा।
राउ तृषित नहि सो पहिचाना। देखि सुबेष महामुनि जाना।
उतरि तुरग तें कीन्ह प्रनामा। परम चतुर न कहेउ निज नामा॥
भूपति तृषित बिलोकि तेहिं सरबरु दीन्ह देखाइ।
मज्जन पान समेत हय कीन्ह नृपति हरपाइ॥ १५८॥

गै श्रम सकल सुखी नृप भअेऊ। निज आश्रम तापस लै गअेऊ।
आसन दीन्ह अस्त रबि जानी। पुनि तापस बोलेउ मृदुबानी।
को तुम्ह कस बन फिरहु अकेलें। सुंदर जुवा जीव परहेलें।
चक्रबर्त्ति[2] के लच्छन तोरें। देखत दया लागि अति मोरें।
नाम प्रतापभानु अवनीसा। तासु सचिव मैं सुनहु मुनीसा।
फिरत अहेरें परेउँ भुलाई। बड़ें भाग देखेउँ पद आई।
हम कहँ दुर्लभ दरस तुम्हारा। जानत हौं कछु भल होनिहारा।
कह मुनि तात भअेउ अँधियारा। जोजन सत्तरि नगरु तुम्हारा॥

१–१, ३, ४, ५; जती के ६. २–१, ३, ४, ५; चक्रवती ६.

निसा घोर गंभीर बन पंथ न सुनहु सुजान।
बसहु आजु अस जानि तुम्ह[2] जाएहु होत बिहान।
तुलसी जसि भवतव्यता तैसी मिलै सहाइ।
आपुनु आवै ताहि पहिं[2] ताहि तहाँ लै जाइ॥ १५९॥

भलेहि नाथ आयेसु धरि सीसा। बाँधि तुरग तरु बैठ महीसा।
नृप बहु भाँति प्रसंसेउ ताही। चरन बंदि निज भाग्य सराही।
पुनि बोलेउ मृदु गिरा सुहाई। जानि पिता प्रभु करौं ढिठाई।
मोहि मुनीस सुत सेवक जानी। नाथ नाम निज कहहु बखानी।
तेहि न जान नृप नृपहि सो जाना। भूप सुहृद सो कपट सयाना।
बैरी पुनि छत्री पुनि राजा। छल बल कीन्ह चहै निज काजा।
समुझि राज सुख दुखित अराती। अवा अनल इव सुलगै छाती।
सरल बचन नृप के सुनि काना। बयर सँभारि हृदय हरषाना॥
कपट बोरि बानी मृदुल बोलेउ जुगुति समेत।
नाम हमार भिखारि अब निर्धन रहित निकेत॥ १६०॥

कह नृप जे बिज्ञान निधाना। तुम्ह सारिखे गलित अभिमाना।
सदा रहहिं अपनपौ दुराएँ। सब बिधि कुसल कुबेष बनाएँ।
तेहि तें कहहिं संत श्रुति टेरें। परम अकिंचन प्रिय हरि केरें।
तुम्ह सम अधन भिखारि अगेहा। होत बिरंचि सिवहि संदेहा।
जोसि सोसि तव चरन नमामी। मो पर कृपा करिअ अब स्वामी।
सहज प्रीति भूपति कै देखी। आपु बिषय बिस्वास बिसेखी।
सब प्रकार राजहि अपनाई। बोलेउ अधिक सनेह जनाई।
सुनु सति भाउ कहौं महिपाला। इहाँ बसत बीते बहु काला॥

१–१, ३, ४, ५; तुम्ह जानि अस ६. २–१, ३, ५; ताहि ले आवै ताहि पहिं कि ४, ६.

अब लगि मोहि न मिलेउ कोउ मैं न जनावौं काहु ।
लोकमान्यता अनल सम कर तप कानन दाहु ॥
तुलसी देखि सुबेखु भूलहि मूढ़ न चतुर नर ।
सुंदर केकिहि[1] पेखु बचन सुधा सम असन अहि ॥ १६१ ॥

तातें गुपुत रहौं जग[2] माहीं । हरि तजि किमपि प्रयोजन नाहीं ।
प्रभु जानत सब बिनहि जनाएँ । कहहु कवन सिधि लोक[3] रिझाएँ ।
तुम्ह सुचि सुमति परम प्रिय मोरें । प्रीति प्रतीति मोहि पर तोरें ।
अब जौं तात दुरावौं तोही । दारुन दोष घटै अति मोही ।
जिमि जिमि तापसु कथै उदासा । तिमि तिमि नृपहि उपज बिस्वासा ।
देखा स्वबस कर्म मन बानी । तब बोला तापस बगध्यानी ।
नाम हमार एकतनु भाई । सुनि नृप बोलेउ पुनि सिरु नाई ।
कहहु नाम कर अरथ बखानी । मोहि सेवक अति आपन जानी ॥
आदि सृष्टि उपजी जबहि तब उतपति भइ मोरि ।
नामु एकतनु हेतु तेहिं देह न धरी बहोरि ॥ १६२ ॥

जनि आचरजु करहु मन माहीं । सुत तप तें दुर्लभ कछु नाहीं ।
तप बल तें जग सृजै बिधाता । तपबल बिष्णु भए परित्राता ।
तपबल संभु करहिं संहारा । तप तें अगम न कछु संसारा ।
भएउ नृपहि सुनि अति अनुरागा । कथा पुरातन कहै सो लागा ।
करम धरम इतिहास अनेका । करै निरूपन बिरति बिबेका ।
उदभव पालन प्रलय कहानी । कहेसि अमित आचरज बखानी ।
सुनि महीप[4] तापस बस भएऊ । आपन नाम कहन तब लएऊ ।
कह तापस नृप जानौं तोही । कीन्हेहु कपट लाग भल मोही ॥

१–६ ; केकहि १, ३, ४, ५.   ३–३, ४, ५; लोग १, ६.
२–१, ३, ४, ६; बन ५.   ४–१, ३, ४, ५; महीस ६.

सुनु महीस असि नीति जहँ तहँ नाम न कहहिं नृप ।
मोहि तोहि पर अति प्रीति सोइ चतुरता बिचारि तव ॥ १६३ ॥

नाम तुम्हार प्रतापदिनेसा । सत्यकेतु तव पिता नरेसा ।
गुर प्रसाद सब जानिअँ राजा । कहिय न आपन जानि अकाजा ।
देखि तात तव सहज सुधाई । प्रीति प्रतीति नीति निपुनाई ।
उपजि परी ममता मन मोरें । कहीं कथा निज पूछें तोरें ।
अब प्रसंन मैं संसय नाहीं । मॉगु जो भूप भाव मन माहीं ।
सुनि सुबचन भूपति हरषाना । गहि पद बिनय कीन्हि बिधि नाना ।
कृपासिंधु मुनि दरसन तोरें । चारि पदारथ करतल मोरें ।
प्रभुहि तथापि प्रसंन बिलोकी । मॉगि अगम बरु होउँ असोकी[1] ॥
जरा मरन दुख रहित तनु समर जितै जिनि[2] कोउ ।
एकछत्र रिपु हीन महि राज कलप सत होउ ॥ १६४ ॥

कह तापस नृप ऐसेइ होऊ । कारन एक कठिन सुनु सोऊ ।
कालौ तुअ पद नाइहि सीसा । एक बिप्र कुल छाडि महीसा ।
तप बल बिप्र सदा बरिआरा । तिन्हके कोप न कोउ रखवारा ।
जौं बिप्रन्ह बस करहु नरेसा । तौ तुअ बस[3] बिधि बिष्णु महेसा ।
चल[4] न ब्रह्म कुल सन बरिआई । सत्य कहौं दोउ भुजा उठाई ।
बिप्र श्राप बिनु सुनु महिपाला । तोर नास नहि कवनेहु काला ।
हरषेउ राउ बचन सुनि तासू । नाथ न होइ मोर अब नासू ।
तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना । मोकहुँ सर्बकाल कल्याना ॥
एवमस्तु कहि कपटमुनि बोला कुटिल बहोरि ।
मिलब हमार भुलाब निज कहहु त[5] हमहिं न खोरि ॥ १६५ ॥

१–१, ३, ४, ५, बिसोकी ६ ४–१, ३, ६, चलै ४, ५
२–१, ३, ४ ५; जितौ जनि ६ ५–४, ५, ६, तहँ १, ३
*३–१, ६; सब ३, ४, ५.

तातें मैं तोहि बरजौं राजा। कहें कथा तव परम अकाजा।
छठें श्रवन यह परत कहानी। नास तुम्हार सत्य मम बानी।
यह प्रगटें अथवा द्विज श्रापा। नास तोर सुनु भानुप्रतापा।
आन उपाय निधन तव नाहीं। जौं हरि हर कोपहिं मन माहीं।
सत्य नाथ पद गहि नृप भाखा। द्विज गुर कोप कहहु को[1] राखा।
राखै गुर जौं कोप बिधाता। गुर बिरोध नहि कोउ जगत्राता।
जौं न चलब हम कहें तुम्हारें। होउ नास नहिं सोच हमारें।
एकहि डर डरपत मन मोरा। प्रभु महिदेव श्राप अति घोरा॥

होहिं बिप्र बस कवन बिधि कहहु कृपा करि सोउ।
तुम्ह तजि दीनदयाल निज[2] हितू न देखौं कोउ॥ १६६॥

सुनु नृप बिबिध जतन जग माहीं। कष्टसाध्य पुनि होहिं कि नाहीं।
अहै एक अति सुगम उपाई। तहाँ परंतु एक कठिनाई।
मम आधीन जुगुत नृप सोई। मोर जाब तव नगर न होई।
आजु लगें अरु जब तें भएऊँ। काहू के गृह ग्राम न गएऊँ।
जौं न जाउँ तव होइ अकाजू। बना आइ असमंजस आजू।
सुनि महीस बोलेउ मृदु बानी। नाथ निगम असि नीति बखानी।
बड़े सनेह लघुन्ह पर करहीं। गिरि निज सिरनि सदा तृन धरहीं।
जलधि[3] अगाध मौलि बह फेनू। संतत धरनि धरत सिर रेनू॥

अस कहि गहे नरेस पद स्वामी होहु कृपाल।
मोहि लागि दुख सहिअ प्रभु सज्जन दीनदयाल॥ १६७॥

जानि नृपहि आपन आधीना। बोला तापस कपट प्रबीना।
सत्य कहौं भूपति सुनु तोही। जग नाहिन दुर्लभ कछु मोही।
अवसि काज मैं करिहौं तोरा। मन क्रम[4] बचन भगत तैं मोरा।

१–१, ३, ४, ५; केहि ६.
२–१, ३, ५; अब ४, ६.
३–६; जल १, ३, ४, ५.
४–४, ५, ६· तन १ ३.

जोग जुगुति जप[1] मंत्र प्रभाऊ। फलै तबहिं जब करिअ दुराऊ॥
जौं नरेस मैं करौं रसोई। तुम्ह परुसहु मोहि जान न कोई॥
अन्न सो जोइ जोइ भोजन करई। सोइ सोइ तव आयसु अनुसरई॥
पुनि तिन्ह कें गृह जेंवै जोऊ। तव बस होइ भूप सुनु सोऊ॥
जाइ उपाय रचहु नृप एहू। संबत भरि संकलप करेहू॥

नित नूतन द्विज सहस सत बरेहु सहित परिवार।
मैं तुम्हरे संकलप लगि दिनहिं करबि जेवनार॥ १६८॥

एहि बिधि भूप कष्ट अति थोरें। होइहहिं सकल बिप्र बस तोरें॥
करिहहिं बिप्र होम मख सेवा। तेहिं[2] प्रसंग सहजेहिं बस देवा॥
और एक तोहि कहौं लखाऊ। मैं एहि बेष न आउब काऊ॥
तुम्हरे उपरोहित कहुँ राया। हरि आनब मैं करि निज माया॥
तपबल तेहि करि आपु समाना। रखिहौं इहाँ बरष परवाना॥
मैं धरि तासु बेषु सुनु राजा। सब बिधि तोर सँवारब काजा॥
गै निसि बहुत सयन अब कीजे। मोहि तोहि भूप भेंट दिन तीजे॥
मैं तपबल तोहि तुरग समेता। पहुँचैहौं सोवतहि निकेता॥

मैं आउब सोइ बेषु धरि पहिचानेहु तब मोहि।
जब एकांत बोलाइ सब कथा सुनावौं तोहि॥ १६९॥

सयन कीन्ह नृप आयसु मानी। आसन जाइ बैठ छल ग्यानी॥
श्रमित भूप निद्रा अति आई। सो[3] किमि सोव सोच अधिकाई॥
कालकेतु निसिचर तहँ आवा। जेहिं सूकर होइ नृपहि भुलावा॥
परम मित्र तापस नृप केरा। जानै सो अति कपट घनेरा॥
तेहि के सत सुत अरु दस भाई। खल अति अजय देव दुखदाई॥
प्रथमहि भूप समर सब मारे। बिप्र संत सुर देखि दुखारे॥

१–४, ५, ६; तप १, ३.
२–१, ३, ६; तिहि ४, ५.
३–१, ३, ४, ५; सोइ ६.

तेहि खल पाछिल बयरु सँभारा । तापस नृप मिलि मंत्र बिचारा ।
जेहि रिपु छय सोइ रचेन्हि उपाऊ । भावी बस न जान कछु राऊ ॥
रिपु तेजसी अकेल अपि लघु करि गनिअ न ताहु ।
अजहुँ देत दुख रवि ससिहि सिर अवसेषित राहु ॥ १७० ॥

तापस नृप निज सखहि निहारी । हरषि मिलेउ उठि भएउ सुखारी ।
मित्रहि कहि सब कथा सुनाई । जातुधान बोला सुख पाई ।
अब साधेउँ रिपु सुनहु नरेसा । जौं तुम्ह कीन्ह मोर उपदेसा ।
परिहरि सोच रहहु तुम्ह सोई । बिनु औषध बिआधि बिधि खोई ।
कुल समेत रिपु मूल बहाई । चौथें दिवस मिलब मैं आई ।
तापसनृपहि बहुत परितोषी । चला महा कपटी अति रोषी ।
भानुप्रतापहि बाजि समेता । पहुचाएसि छन माझ निकेता ।
नृपहि नारि पहि सयन कराई । हय गृह बाधेसि बाजि बनाई ॥
राजा के उपरोहितहि हरि लै गएउ बहोरि ।
लै राखेसि गिरिखोह महु माया करि[1] मति भोरि ॥ १७१ ॥

आपु बिरचि उपरोहित रूपा । परेउ जाइ तेहि सेज अनूपा ।
जागेउ नृप अनभएँ बिहाना । देखि भवन अति अचरजु माना ।
मुनि महिमा मन महुँ अनुमानी । उठेउ गवहिं जेहिं जान न रानी ।
कानन गएउ बाजि चढ़ि तेहीं । पुर नरनारि न जानेउ केहीं ।
गएँ जाम जुग भूपति आवा । घर घर उत्सव बाज बधावा ।
उपरोहितहि देख जब राजा । चकित बिलोक सुमिरि सोइ काजा ।
जुग सम नृपहि गए दिन तीनी । कपटी मुनि पद रह[2] मति लीनी ।
समय जानि उपरोहित आवा । नृपहि मतें सब कहि समुझावा ॥
नृप हरषेउ पहिचानि गुरु भ्रम बस रहा न चेत ।
बरे तुरत सतसहस बर बिप्र कुटुंबसमेत ॥ १७२ ॥

१–१, ३, ४, ५; करि माया ६. २–१, ३, ४, ५; रहि ६.

उपरोहित जेवनार बनाई । छरस चारि बिधि जसि श्रुति गाई ।
मायामय तेहि कीन्हि रसोई । बिंजन बहु गनि सकै न कोई ।
बिबिध मृगन्ह कर आमिष राँधा । तेहि महु बिप्र मासु खल साँधा ।
भोजन कहुँ सब बिप्र बोलाए । पद पखारि सादर बैठाए ।
परुसन जबहि लाग महिपाला । भै अकासबानी तेहि काला ।
बिप्र बृंद उठि उठि गृह जाहू । है बड़ि हानि अन्न जनि खाहू ।
भयेउ रसोईं भूसुर मासू । सब द्विज उठे मानि बिस्वासू ।
भूप बिकल मति मोह भुलानी । भावी बस न आव मुख[1] बानी ॥

बोले बिप्र सकोप तब नहि कछु कीन्ह बिचार ।
जाइ निसाचर होहु नृप मूढ़ सहित परिवार ॥ १७३ ॥

छत्रबंधु तैं बिप्र बोलाई । घालै लिए सहित समुदाई ।
ईस्वर राखा धरम हमारा । जैहसि तैं समेत परिवारा ।
संवत मध्य नास तव होऊ । जलदाता न रहिहि[2] कुल कोऊ ।
नृप सुनि साप बिकल अति त्रासा । भै बहोरि बर गिरा अकासा ।
बिप्रहु श्राप बिचारि न दीन्हा । नहि अपराध भूप कछु कीन्हा ।
चकित बिप्र सब सुनि नभ बानी । भूप गयेउ जहँ भोजन खानी ।
तहँ न असन नहि बिप्र सुआरा । फिरेउ राउ मन सोच अपारा ।
सब प्रसंग महिसुरन्ह सुनाई । त्रसित परेउ अवनी अकुलाई ॥

भूपति भावी मिटै नहि जदपि न दूषन तोर ।
किएँ अन्यथा होइ नहि बिप्र श्राप अति घोर ॥ १७४ ॥

अस कहि सब महिदेव सिधाए । समाचार पुरलोगन्ह पाए ।
सोचहिं दूषन दैवहि देहीं । बिरचत हंस काग किय जेहीं[3] ।
उपरोहितहि भवन पहुँचाई । असुर तापसहि खबरि जनाई ।

१–१, ३, ४, ५ ; मुख आव न ६.   ३–१, ३, ६ ; तेही ४, ५.
२–१, ३, ४, ५ · रहौ ६.

तेहि खल जहँ तहँ पत्र पठाए। सजि सजि सेन भूप सब धाए।
घेरेन्हि नगर निसान बजाई। बिबिध भाँति नित होइ[1] लराई।
जूझे सकल सुभट करि करनी। बंधु समेत परेउ नृप धरनी।
सत्यकेतु कुल कोउ नहिं बाचा। बिप्र श्राप किमि होइ असाँचा।
रिपु जिति सब नृप नगर बसाई। निज पुर गवने जय जसु पाई॥
भरद्वाज सुनु जाहि जब होइ बिधाता बाम।
धूरि मेरु सम जनक जम ताहि ब्याल सम दाम॥ १७५॥

काल पाइ मुनि सुनु[2] सोइ राजा। भअेउ निसाचर सहित समाजा।
दस सिर ताहि बीस भुजदंडा। रावन नाम बीर बरिबंडा[3]।
भूप अनुज अरिमर्दन नामा। भअेउ सो कुंभकरन बल धामा।
सचिव जो रहा धरमरुचि जासू। भअेउ बिमात्र बंधु लघु तासू।
नाम बिभीषन जेहि जग जाना। बिष्णु भगत बिज्ञान निधाना।
रहे जे सुत सेवक नृप केरे। भए निसाचर घोर घनेरे।
कामरूप खल जिनस अनेका। कुटिल भयंकर बिगत बिबेका।
कृपा रहित हिंसक सब पापी। बरनि न जाइ[4] बिस्व परितापी॥
उपजे जदपि पुलस्त्य कुल पावन अमल अनूप।
तदपि महीसुर स्राप बस भए सकल अघ रूप॥ १७६॥

कीन्ह बिबिध तप तीनिहुँ[5] भाई। परम उग्र नहि बरनि सो[6] जाई।
गअेउ निकट तप देखि बिधाता। माँगहु बर[7] प्रसन्न मैं ताता।
करि बिनती पद गहि दससीसा। बोलेउ बचन सुनहु जगदीसा।
हम काहू के मरहिं न मारे। बानर मनुज जाति दुइ बारे।

१-१, ३, ४, ५; होति ६.
२-१, ३, ४, ५; सुनि ६.
३-१, ३, ४, ५; बरचडा ६.
४-१, ४, ५; जाहि ६.
५-१, ४, ५; तीनिउँ ६.
६-१,५; सो बरनि न ६; मोहि बरनि न ४.
७-१, ६; बरद ४, ५.

एवमस्तु तुम्ह बड़ तप कीन्हा । मैं ब्रह्मा मिलि तेहि बर दीन्हा ।
पुनि प्रभु कुंभकरन पहिं गअेऊ । तेहि बिलोकि मन बिसमय भअेऊ ।
जौं अेहिं खल नित करब अहारू । होइहि सब उजारि संसारू ।
सारद प्रेरि तासु मति फेरी । माँगेसि नींद मास पट केरी ॥
गए बिभीषन पास पुनि कहेउ पुत्र बर मागु ।
तेहि माँगेउ भगवंत पद कमल अमल अनुरागु ॥ १७७ ॥

तिन्हहिं देइ बर ब्रह्म सिधाए । हरषित ते अपने गृह आए ।
मयतनुजा मंदोदरि नामा । परम सुंदरी नारि ललामा ।
सोइ मय दीन्हि रावनहिं आनी । होइहि जातुधान पति जानी ।
हरषित भअेउ नारि भलि पाई । पुनि दोउ बंधु बिआहेसि[1] जाई ।
गिरि त्रिकूट अेक सिंधु मझारी । बिधि निर्मित दुर्गम अतिभारी ।
सोइ मय दानव बहुरि सवारा । कनक रचित मनि भवन अपारा ।
भोगावति जसि अहि कुल बासा । अमरावति जसि सक्र निवासा ।
तिन्हतें अधिक रम्य अति बंका । जग बिख्यात नाम तेहि लंका ॥
खाईं सिंधु गभीर अति चारिहुँ दिसि फिरि आव ।
कनक कोट मनि खचित दृढ़ बरनि न जाइ बनाव ।
हरि प्रेरित जेहि कलप जोइ जातुधानु पति होइ ।
सूर प्रतापी अतुल बल दल समेत बस सोइ ॥ १७८ ॥

रहे तहाँ निसिचर भट भारे । ते सब सुरन्ह समर संहारे ।
अब तहँ रहहिं सक्र के प्रेरे । रच्छक कोटि जच्छपति केरे ।
दसमुख कतहुँ खबरि असि पाई । सेन साजि गढ़ घेरेसि जाई ।
देखि बिकट भट बड़ि कटकाई । जच्छ जीव लै गए[2] पराई ।
फिरि सब नगर दसानन देखा । गअेउ सोच सुख भअेउ बिसेखा ।

१–६; बिआहसि १, ४, ५. २–१, ३, ४, ५; गएउ ६.

सुंदर सहज अगम अनुमानी। कीन्हि तहाँ रावन रजधानी।
जेहि जग जोग बाँटि गृह दीन्हे। सुखी सकल रजनीचर कीन्हे।
एक बार कुबेर पर धावा। पुष्पक जान जीति लै आवा॥
कौतुकहीं कैलास पुनि लीन्हिसि[१] जाइ उठाइ।
मनहुँ तौलि निज बाहु बल चला बहुत सुख पाइ॥ १७९॥

सुख संपति सुत सेन सहाई। जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाई।
नित नूतन सब बाढ़त जाई। जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई।
अतिबल कुंभकरन अस भ्राता। जेहि कहुँ नहि प्रतिभट जग जाता।
करै पान सोवै षट मासा। जागत होइ तिहूँ पुर त्रासा।
जौं दिन प्रति अहार कर सोई। बिस्व बेगि सब चौपट होई।
समर धीर नहि जाइ बखाना। तेहि सम अमित बीर बलवाना।
बारिदनाद जेठ सुत तासू। भट महुँ प्रथम लीक जग जासू।
जेहि न होइ रन सनमुख कोई। सुरपुर नितहि परावन होई॥
कुमुख अकंपन कुलिसरद धूमकेतु अतिकाय।
एक एक जग जीति सक ऐसे सुभट निकाय॥ १८०॥

कामरूप जानहिं सब माया। सपनेहुँ जिन्ह के धरम न दाया।
दसमुख बैठ सभाँ एक बारा। देखि अमित आपन परिवारा।
सुत समूह जन परिजन नाती। गनै को पार निसाचर जाती।
सेन बिलोकि सहज अभिमानी। बोला बचन क्रोध मद सानी।
सुनहु सकल रजनीचर जूथा। हमरे बैरी बिबुध बरूथा।
ते सनमुख नहि करहिं लराई। देखि सबल रिपु जाहिं पराई।
तेन्ह कर मरन एक बिधि होई। कहौं बुझाइ सुनहु अब सोई।
द्विज भोजन मख होम सराधा। सबकै जाइ करहु तुम बाधा॥

१—१, ३, ४, ५; लीन्हेसि ६.

छुधा छीन बल हीन सुर सहजेहिं मिलिहहिं आइ।
तब मारिहौं कि छाड़िहौं भली भाँति अपनाइ ॥ १८१ ॥

मेघनाद कहुँ पुनि हँकरावा। दीन्ही सिख[1] बलु बयरु बढ़ावा।
जे सुर समर धीर बलवाना। जिन्हकें लरिबे कर अभिमाना।
तिन्हहिं जीति रन आनेसु बाँधी। उठि सुत पितु अनुसासन काँधी।
ऐहि बिधि सबही अज्ञा दीन्ही। आपनु चलेउ[2] गदा कर लीन्ही।
चलत दसानन डोलति अवनी। गर्जत गर्भ स्रवत[3] सुररवनी।
रावन आवत सुनेउ सकोहा। देवन्ह तकेउ मेरु गिरि खोहा।
दिगपालन्ह के लोक सुहाए। सूनें सकल दसानन पाए।
पुनि पुनि सिंघनाद करि भारी। देइ देवतन्ह गारि पचारी[4]।
रन मद मत्त फिरइ जग धावा। प्रतिभट खोजत कतहुँ न पावा।
रबि ससि पवन बरुन धनधारी। अगिनि काल जम सब अधिकारी।
किंनर सिद्ध मनुज सुर नागा। हठि सबही के पंथहि लागा।
ब्रह्म सृष्टि जहँ लगि तनुधारी। दसमुख बसबर्ती नर नारी।
आयसु करहिं सकल भयभीता। नवहिं आइ नित चरन बिनीता ॥

भुजबल बिस्व बस्य करि राखेसि कोउ न सुतंत्र।
मंडलीकमनि रावन राज करै निज मंत्र।
देव जच्छ गंधर्ब नर किंनर नाग कुमारि।
जीति बरीं निज बाहु बल बहु सुंदर बर नारि ॥ १८२ ॥

इन्द्रजीत सन जो कछु कहेऊ। सो सब जनु पहिलेहिं करि रहेऊ।
प्रथमहिं जिन्ह कहुँ आयसु दीन्हा। तिन्ह कर चरित सुनहु जो कीन्हा।
देखत भीम रूप सब पापी। निसिचर निकर देव परितापी।
करहिं उपद्रव असुर निकाया। नाना रूप धरहिं करि माया।

१–१, ३, ६; सिष ४, ५. ३–४, ५, ६; स्रवहि १, ३.
२–१, ३, ४, ५; आपुन चला ६. ४–१, ४, ५; प्रचारी ३, ६.

जेहि बिधि होइ धर्म निर्मूला। सो सब करहिं बेद प्रतिकूला।
जेहि जेहि देस धेनु द्विज पावहिं। नगर गाउँ पुर आगि लगावहिं।
सुभ आचरन कतहुँ नहिं होई। देव बिप्र गुरु मान न कोई।
नहि हरि भगति जग्य तप ग्याना[1]। सपनेहुँ सुनिय न बेद पुराना॥

जप जोग बिरागा तप मख भागा श्रवन सुनै दससीस[2]।
आपुन उठि धावै रहै न पावै धरि सब घालै खीस[2]।
अस भ्रष्ट अचारा भा संसारा धर्म सुनिअ नहि कान[2]।
तेहि बहु बिधि त्रासै देस निकासै जो कह बेद पुरान[2]॥

बरनि न जाइ अनीति घोर निसाचर जो करहिं।
हिंसा पर अति प्रीति तिन्ह के पापहि कवनि मिति॥ १८३॥

बाढ़े खल बहु चोर जुआरा। जे लंपट पर धन पर दारा।
मानहिं मातु पिता नहिं देवा। साधुन्ह सन करवावहिं सेवा।
जिन्ह के यह आचरन भवानी। ते जानेहु निसिचर सब[3] प्रानी।
अतिसै देखि धर्म कै ग्लानी[4]। परम सभीत धरा अकुलानी।
गिरि सरि सिंधु भार नहि मोही। जस मोहि गरुव एक पर द्रोही।
सकल धर्म देखै बिपरीता। कहि न सकै रावन भय भीता।
धेनु रूप धरि हृदय बिचारी। गई तहाँ जहँ सुर मुनि झारी।
निज संताप सुनायेसि रोई। काहू तें कछु काज न होई॥

सुर मुनि गंधर्बा मिलि करि सर्बा गे बिरंचि के लोक[5]।
सँग गो तनु धारी भूमि बिचारी परम बिकल भय सोक[5]।
ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना मोर कछू[6] न बसाइ[5]।
जाकरि तैं दासी सो अबिनासी हमरेउ तोर सहाइ[5]॥

१-१, ३, ४, ५; जग्य जप ग्याना ६.
*२-१, ३, ४, ५; दससीसा, खीसा, काना, पुराना ६.
३-१, ३, ४, ५; सम ६. *५-१,३,४,५; लोका, सोका, बसाई, सहाई ६.
४-१, ३, ४, ५; हानी ६. ६-१, ३, ४, ५; मोरेउ कछु ६.

धरनि धरहि मन धीर कह बिरंचि हरिपद सुमिरु।
जानत जन की पीर प्रभु भंजिहि दारुन बिपति॥ १८४॥

बैठे सुर सब करहिं बिचारा। कहँ पाइअ प्रभु करिय पुकारा।
पुर बैकुंठ जान कह कोई। कोउ कह पयनिधि बस प्रभु सोई।
जा के हृदय भगति जसि प्रीती। प्रभु तहँ प्रगट सदा तेहि[1] रीती।
तेहि समाज गिरिजा मैं रहेऊँ। अवसर पाइ बचन अेक कहेऊँ।
हरि व्यापक सर्वत्र समाना। प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना।
देस काल दिसि बिदिसिहु माहीं। कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं।
अग जगमय सब रहित बिरागी। प्रेम तें प्रभु प्रगटै जिमि आगी।
मोर बचन सब के मन माना। साधु साधु करि ब्रह्म बखाना॥

सुनि बिरंचि मन हरष तन पुलक[2] नयन बह नीर।
अस्तुति करत जोर कर सावधान मति धीर॥ १८५॥

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंत[3]।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंत[3]।
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानै कोइ[3]।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करौ अनुग्रह सोइ[3]।
जय जय अबिनासी सब घट बासी व्यापक परमानंद[3]।
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंद[3]।
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगत मोह मुनिबृंद[3]।
निसि बासर ध्यावहिं गुन गन गावहिं जयति सच्चिदानंद[3]।
जेहि सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई संग सहाय न दूजा[4]।
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिय भगति न पूजा[4]।

१–१, २, ४, ५; यह ६.
२–१, ६; पुलकि ३, ४, ५.
*३–१, २, ४, ५; भगवता, कता, कोई, सोई, परमानदा, मुकुदा, मुनिबृंदा, सच्चिदानदा ६.
४–६; न कोउ दूजा, न कछु पूजा १, ३, ४, ५.

जो भव भय भंजन मुनिमन रंजन गंजन[1] बिपति बरूथ[2] ।
मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी सरन सकल सुर जूथ[2] ।
सारद[3] श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहुँ कोउ नहिं जान ।
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे द्रवौ सो श्री भगवान ।
भव बारिधि मंदर सब बिधि सुंदर गुनमंदिर सुखपुंज ।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पदकंज ॥
जानि सभय सुर भूमि सुनि बचन समेत सनेह ।
गगनगिरा गंभीर भइ हरनि सोक संदेह ॥ १८६ ॥

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा । तुम्हहिं लागि धरिहौं नर बेसा ।
अंसन्ह सहित मनुज अवतारा । लेहौं दिनकर बंस उदारा ।
कस्यप अदिति महा तप कीन्हा । तिन्ह कहुँ मैं पूरब बर दीन्हा ।
ते दसरथ कौसल्या रूपा । कोसलपुरी प्रगट नर भूपा ।
तिन्हके गृह अवतरिहौं जाई । रघुकुल तिलक सो चारिउ भाई ।
नारद बचन सत्य सब करिहौं । परम सक्ति समेत अवतरिहौं ।
हरिहौं सकल भूमि गरुआई । निर्भय होहु देव समुदाई ।
गगन ब्रह्म बानी सुनि काना । तुरत फिरे[4] सुर हृदय जुड़ाना ।
तब ब्रह्मा धरनिहि समुझावा । अभय भई भरोस जिय आवा ।
निज लोकहि बिरंचि गे देवन्ह इहै सिखाइ ।
बानर तनु धरि धरि महि[5] हरि पद सेवहु जाइ ॥ १८७ ॥

गए देव सब निज निज धामा । भूमि सहित मन[6] कहुँ बिश्रामा ।
जो कछु आयसु ब्रह्मा दीन्हा । हरषे देव बिलंब न कीन्हा ।

१–१, ३, ४, ५; खंडन ६.
*२–१, ३, ४, ५; बरूथा, जूथा; ६. जान, भगवान, पुंज, कंज,
३–६; सादर ३, ४, ५.
*४–३, ४, ५; फिरे १, ६.
५–१, ४, ५, ६; धरनि महँ ३.
६–१, ३, ४, ५; निज मन ६.

बनचर देह धरी छिति माहीं। अतुलित बल प्रताप तिन्ह पाहीं।
गिरि तरु नख आयुध सब बीरा। हरि मारग चितवहिं मति धीरा।
गिरि कानन जहँ तहँ भरि[१] पूरी। रहे निज निज अनीक रचि[२] रूरी।
यह सब रुचिर चरित मैं भाषा। अब सो सुनहु जो बीचहिं राषा।
अवधपुरी रघुकुल मुनिराऊ[३]। बेद बिदित तेहि दसरथ नाऊ।
धर्म धुरंधर गुननिधि ज्ञानी। हृदय भगति मति सारँगपानी।।

कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत।
पति अनुकूल प्रेम दृढ़ हरि पद कमल बिनीत।। १८८।।

एक बार[४] भूपति मन माहीं। भै गलानि मोरे सुत नाहीं।
गुरु गृह गए[५] तुरत महिपाला। चरन लागि करि बिनय बिसाला।
निज दुख सुख सब गुरहि सुनाअेउ। कहि बसिष्ठ बहुबिधि समुझाअेउ।
धरहु धीर होइहहिं सुत चारी। त्रिभुवन बिदित भगत भयहारी।
शृंगी रिषिहि बसिष्ठ बोलावा। पुत्रकाम सुभ[६] जज्ञ करावा।
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हे। प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हे।
जो बसिष्ठ कछु हृदय बिचारा। सकल काजु भा सिद्ध तुम्हारा।
यह हबि बाटि देहु नृप जाई। जथा जोग जेहि भाग बनाई।।

तब अदस्य[७] भअे पावक सकल सभहि समुझाइ।
परमानंद मगन नृप हरष न हृदय समाइ।। १८९।।

तबहिं राय प्रिय नारि बोलाईं। कौसल्यादि तहाँ चलि आईं।
अर्ध भाग कौसल्यहि दीन्हा। उभय भाग आधे कर कीन्हा।
कैकेई कहँ नृप सो दअेऊ। रह्यो सो उभय भाग पुनि भअेऊ।

१—१, ३, ४, ५; महि ६.
२—१,६; रुचि ३, ४, ५.
*३—१, ३, ४, ५; मनि राऊ ६.
४—१, ३, ४, ५; समै ६.
५—१, ३, ४, ५, गएउ ६
६—१, ३, ४, ५; लगि ६
७—१, ३, ६; अदृश ४, ५.

कौसल्या कैकेई[1] हाथ धरि। दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसंन करि।
ऐहिं बिधि गर्भ सहित सब नारी। भई हृदयँ हरपित सुख भारी।
जा दिन तें हरि गर्भहि आए। सकल लोक सुख संपति छाए।
मंदिर महुँ सब राजहिं रानी। सोभा सील तेज की खानी।
सुख जुत कछुक काल चलि गओऊ। जेहि प्रभु प्रगट सो अवसर भओऊ॥

जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल।
चर अरु अचर हरप जुत राम जनम सुख मूल॥ १९०॥

नौमी तिथि मधु मास पुनीता। सुकल पच्छ अभिजित हरि प्रीता।
मध्य दिवस अति सीत न घामा। पावन काल[2] लोक बिश्रामा।
सीतल मंद सुरभि बह बाऊ। हरपित सुर संतन्ह मन चाऊ।
बन कुसुमित गिरिगन मनिआरा। श्रवहिं सकल सरिताऽमृतधारा।
सो अवसर बिरंचि जब जाना। चले सकल सुर साजि बिमाना।
गगन बिमल संकुल सुर जूथा। गावहिं गुन गंधर्ब बरूथा।
बरपहिं सुमन सुअंजलि साजी। गहगहि गगन दुंदुभी बाजी।
अरतुति करहिं नाग मुनि देवा। बहु बिधि लावहिं निज निज सेवा॥

सुर समूह बिनती करि पहुँचे निज निज धाम।
जग निवास प्रभु प्रगटे अखिल लोक बिश्राम॥ १९१॥

भओ प्रगट कृपाला परमदयाला कौसल्या हितकारी।
हरपित महतारी मुनिमनहारी अद्भुत रूप बिचारी।
लोचन अभिरामं तनु घनस्यामं निज आयुध भुज चारी।
भूपन बनमाला नयन बिसाला सोभा सिंधु खरारी।
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंत[3]।

१–१, ३, ४, ५; कैकइ ६.
२–१, ३, ४. ५; सकल ६.
*३–१, ३, ४, ५; अनता ६.

माया गुन ज्ञानातीत अमाना वेद पुरान भनंत[1]।
करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संत[1]।
सो मम हित लागी जनअनुरागी भए प्रगट श्रीकंत[1]।
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहै।
मम उर सो बासी[2] यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै।
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै।
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूप[1]।
कीजै सिसु लीला अति प्रिय सीला यह सुख परम अनूप[1]।
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूप[1]।
यह चरित जे गावहिं हरपद पावहिं ते न परहिं भवकूप[1]॥
बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार॥ १९२॥

सुनि सिसु रुदन परम प्रिय बानी। संभ्रम चलि आईं सब रानी।
हरपित जहँ तहँ धाईं दासी। आनँद मगन सकल पुर बासी।
दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना। मानहुँ ब्रह्मानंद समाना।
परम प्रेम मन पुलक सरीरा। चाहत उठन करत मति धीरा।
जाकर नाम सुनत सुभ होई। मोरें गृह आवा प्रभु सोई।
परमानंद पूरि मन राजा। कहा बोलाइ बजावहु बाजा।
गुरु बसिष्ठ कहँ गयेउ हँकारा। आए द्विजन सहित नृप द्वारा।
अनुपम बालक देखिन्हि जाई। रूप रासि गुन कहि न सिराई॥
नंदीमुख सराध करि जातकरम सब कीन्ह।
हाटक धेनु बसन मनि नृप बिप्रन्ह कहँ दीन्ह॥ १९३॥

०१—१, ३, ४, ५, भनंता, संता, कंता, रूपा, अनूपा, भूपा, कूपा ६.
२—१, ३, ४, ६, उर बासी ५

धज पताक तोरन पुर छावा। कहि न जाइ जेहिं भाँति बनावा।
सुमनवृष्टि अकास तें होई। ब्रह्मानंद मगन सब लोई।
बृंद बृंद मिलि चलीं लोगाईं। सहज सिंगार किएँ उठि धाईं।
कनक कलस मंगल भरि थारा। गावत पैठहिं भूप दुआरा।
करि आरती नेवछावरि करहीं। बार बार सिसु चरनन्हि परहीं।
मागध सूत बंदिगन गायक। पावन गुन गावहिं रघुनायक।
सर्बस दान दीन्ह सब काहूँ। जेहिं पावा राखा नहिं ताहूँ।
मृगमद चंदन कुंकुम कीचा। मची सकल बीथिन्ह बिच बीचा॥
गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगटेउ सुखमाकंद।
हरषवंत सब जहँ तहँ नगर नारि नर बृंद॥ १९४॥

कैकयसुता सुमित्रा दोऊ। सुंदर सुत जनमत भैं ओऊ।
वोह सुख संपति समय समाजा। कहि न सकै सारद अहिराजा।
अवध पुरी सोहै येहि भाँती। प्रभुहि मिलन आई जनु राती।
देखि भानु जनु मन सकुचानी। तदपि बनी संध्या अनुमानी।
अगर धूप जनु बहु अँधिआरी। उड़ै अबीर मनहुँ अरुनारी।
मंदिर मनि समूह जनु तारा। नृप गृह कलस सो इंदु उदारा।
भवन बेद धुनि अति मृदु बानी। जनु खग मुखर समय जनु सानी।
कौतुक देखि पतंग भुलाना। एक मास तेइँ जात न जाना॥
मासदिवस कर दिवस भा मरम न जानै कोइ।
रथ समेत रबि थाकेउ निसा कवन बिधि होइ॥ १९५॥

यह रहस्य काहू नहि जाना। दिनमनि चले करत गुन गाना।
देखि महोत्सव सुर मुनि नागा। चले भवन [illegible] भागा।

१-१, ३, ४, ५; नर ६. ३-१, ३ ५;
२-१, ५; सार्वनिवत्तायरि ३, ४, ५. १ ६, ६.

औरो एक कहौं निज चोरी। सुनु गिरिजा अति दृढ़ मति तोरी।
काकभुसुंडि संग हम दोऊ। मनुज रूप जानै नहि कोऊ।
परमानंद प्रेम सुख फूले। बीथिन्ह फिरहिं मगन मन भूले।
यह सुभ चरित जान पै सोई। कृपा राम कै जापर होई।
तेहि अवसर जो जेहि बिधि आवा। दीन्ह भूप जो जेहिं मन भावा।
गज रथ तुरग हेम गो हीरा। दीन्हे नृप नाना बिधि चीरा॥

मन संतोषे सबन्हि के जहँ तहँ देहिं असीस।
सकल तनय चिरजीवहु तुलसिदास के ईस॥ १९६॥

कछुक दिवस बीते येहिं भाँती। जात न जानिय दिन अरु राती।
नामकरन कर अवसरु जानी। भूप बोलि पठए मुनि ज्ञानी।
करि पूजा भूपति अस भाखा। धरिअ नाम जो मुनि गुनि राखा।
इन्हके नाम अनेक अनूपा। मैं नृप कहब स्वमति अनुरूपा।
जो आनंदसिंधु सुखरासी। सीकर तें त्रैलोक सुपासी।
सो सुखधाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक बिश्रामा।
बिस्व भरन पोपन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई।
जाकें सुमिरत[२] तें रिपु नासा। नाम सत्रुहन बेद प्रकासा॥

लच्छन धाम राम प्रिय सकल जगत आधार।
गुरु बसिष्ठ तेहि राखा लछिमन नाम उदार॥ १९७॥

धरे नाम गुर हृदय बिचारी। बेद तत्त्व नृप तव सुत चारी।
मुनि धन जन सरबस सिव प्राना। बाल केलि रस तेहि सुख माना।
बारेहि ते निज हित पति जानी। लछिमन राम चरन रति मानी।
भरत सत्रुहन दूनौ भाई। प्रभु सेवक जसि प्रीति बड़ाई।
स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी। निरखहिं छबि जननी तृन तोरी।

१– १, ३, ५; सकल रस ४, ६. २–१, ३, ४, ५; सुमिरन ६.

चारिउ सील रूप गुन धामा। तदपि अधिक सुखसागर[1] रामा।
हृदय अनुग्रह इंदु प्रकासा। सूचत किरन मनोहर हासा।
कबहुँ उछंग कबहुँ बरपलना। मातु दुलारै कहि प्रिय ललना॥
व्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन बिगत बिनोद।
सो अज प्रेम भगति बस कौसल्या के गोद॥ १९८॥

काम कोटि छबि स्याम सरीरा। नील कंज बारिद गंभीरा।
अरुन चरन पंकज नखजोती। कमलदलन्हि बैठे जनु मोती।
रेख कुलिस ध्वज अंकुस सोहे। नूपुर धुनि सुनि मुनि मन मोहे।
कटि किंकिनी उदर त्रय रेखा। नाभि गभीर जान जिहिं[2] देखा।
भुज बिसाल भूषन जुत भूरी। हिय हरिनख अति सोभा रूरी।
उर मनिहार पदिक की सोभा। बिप्रचरन देखत मन लोभा।
कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई। आनन अमित मदन छबि छाई।
दुइ दुइ दसन अधर अरुनारे। नासा तिलक को बरनै पारे।
सुंदर श्रवन सुचारु कपोला। अति प्रिय मधुर तोतरे बोला।
चिक्कन कच कुंचित गभुआरे। बहु प्रकार रचि मातु सँवारे।
पीत झगुलिआ तनु पहिराई। जानु पानि बिचरनि मोहि भाई।
रूप सकहिं नहि कहि श्रुति सेखा। सो जानै सपनेहुँ जेहि देखा॥
सुख संदोह मोह पर ज्ञान गिरा गोतीत।
दंपति परम प्रेम बस कर सिसु चरित पुनीत॥ १९९॥

ओहि बिधि राम जगत पितु माता। कोसलपुर बासिन्ह सुख दाता।
जिन्ह रघुनाथ चरन रति मानी। तिन्ह की यह गति प्रगट भवानी।
रघुपति बिमुख जतन कर कोरी। कवन सकै भव बंधन छोरी।

१–६; सादर १, ३, ४, ५. २–१, ३, ४, ५; जिन्ह ६.

जीव चराचर सब[1] कै[2] राखे। सो माया प्रभु सों भय भाखे।
भृकुटि बिलास नचावै ताही। अस प्रभु छाड़ि भजिय कहु काही।
मन क्रम बचन छाड़ि चतुराई। भजत कृपा करिहहिं[3] रघुराई।
ऐहि बिधि सिसु बिनोद प्रभु कीन्हा। सकल नगर बासिन्ह सुख दीन्हा।
लै उछंग कबहुँक हलरावै। कबहु पालने घालि झुलावै॥

प्रेम मगन कौसल्या निस दिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता बाल चरित कर गान॥ २००॥

एक बार जननी अन्हवाए। करि सिंगार पलना पौढ़ाए।
निज कुल इष्ट देव भगवाना। पूजा हेतु कीन्ह अस्नाना।
करि पूजा नैवेद्य चढ़ावा। आपु गई जहँ पाक बनावा[4]।
बहुरि मातु तहवाँ चलि आई। भोजन करत देखि सुत जाई।
गै जननी सिसु पहिं भयभीता। देखा बाल तहाँ पुनि सूता।
बहुरि आइ देखा सुत सोई। हृदयँ कंप मन धीर न होई।
इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा। मति भ्रम मोर कि आन बिसेखा।
देखि राम जननी[5] अकुलानी। प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी॥

देखरावा मातहि निज अद्भुत रूप अखंड।
रोम रोम प्रति लागे कोटि कोटि ब्रह्मंड॥ २०१॥

अगनित रबि ससि सिव चतुरानन। बहु गिरि सरित सिंधु महि कानन।
काल कर्म गुन ज्ञान सुभाऊ। सोउ देखा जो सुना न काऊ।
देखी माया सब बिधि गाढ़ी। अति सभीत जोरें कर ठाढ़ी।
देखा जीव नचावै जाही। देखी भगति जो छोरै ताही।
तन पुलकित मुख बचन न आवा। नयन मूँदि चरननि सिरु नावा।

१–१, ३, ४, ५; बस ६.
२–१, ४, ५; करि ३, ६.
३–१, ३, ४, ५; करिहैं ६.
४–६; जहाँ पाक बनवा १, ३, ४, ५.
५–१, ३, ४, ५; देखा राम जननि ६.

बिसमयवंत देखि महतारी। भए बहुरि सिसु रूप खरारी।
अस्तुति करि न जाइ भय माना। जगतपिता मैं सुत करि जाना।
हरि जननी[1] बहु बिधि समुझाई। यह जनि कतहुँ कहसि[1] सुनु माई॥
बार बार कौसल्या बिनय करै कर जोरि।
अब जनि कबहूँ ब्यापै[2] प्रभु मोहि माया तोरि॥ २०२॥

बाल चरित[3] हरि बहुबिधि कीन्हा। अति अनंद दासन्ह कहँ दीन्हा।
कछुक काल बीते सब भाई। बड़े भए परिजन सुखदाई।
चूड़ाकरन कीन्ह गुरु जाई। बिप्रन्ह पुनि दछिना बहु पाई।
परम मनोहर चरित अपारा। करत फिरत चारिउ सुकुमारा।
मन क्रम बचन अगोचर जोई। दसरथ अजिर बिचर प्रभु सोई।
भोजन करत बोल जब राजा। नहि आवत तजि बाल समाजा।
कौसल्या जब बोलन जाई। ठुमुकु ठुमुकु[4] प्रभु चलहिं पराई।
निगम नेति सिव अंत न पावा। ताहि धरै जननी हठि धावा।
धूसरि धूर भरे तनु आए। भूपति बिहसि गोद बैठाए॥
भोजन करत चपल चित इत उत अवसरु पाइ।
भाजि[5] चले किलकत मुख दधि ओदन लपटाइ॥ २०३॥

बाल चरित अति सरल सुहाए। सारद सेष संभु श्रुति गाए।
जिन्ह कर मन इन्ह सन नहि राता। ते जन बंचित किए बिधाता।
भए कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता।
गुर गृह गए पढ़न रघुराई। अलप काल बिद्या सब पाई।
जाकी सहज स्वास श्रुति चारी। सो हरि पढ़[6] यह कौतुक भारी।
बिद्या बिनय निपुन गुन सीला। खेलहिं खेल सकल नृप लीला।

१–१, ३, ४, ५; जननिहि, कहहि ६.
२–१, ३, ६; कबहुँ ब्यापेइ ४, ५.
३–१, ३, ६; चरित्र ४, ५.
४–१, ३, ४, ५; ठुमुक ठुमुक ६.
५–१, ४, ५; भागि ४, ६.
६–१, ३, ६; पढ़े ४, ५.

करतल बान धनुष अति सोहा। देखत रूप चराचर मोहा।
जिन्ह बीथिन्ह बिहरैं सब भाई। थकित होहिं सब लोग लुगाई॥
कोसलपुर बासी नर नारि बृद्ध अरु बाल।
प्रानहुँ ते प्रिय लागत सब कहुँ राम कृपाल॥ २०४॥

बंधु सखा सँग लेहिं बोलाई। बन मृगया नित खेलहिं जाई।
पावन मृग मारहिं जिय जानी। दिन प्रति नृपहि देखावहिं आनी।
जे मृग राम बान के मारे। ते तनु तजि सुरलोक सिधारे।
अनुज सखा सँग भोजन करहीं। मातु पिता अग्या अनुसरहीं।
जेहि बिधि सुखी होहिं पुर लोगा। करहिं कृपानिधि सोइ संजोगा।
बेद पुरान सुनहिं मन लाई। आपु कहहिं अनुजन्ह समुझाई।
प्रातकाल उठि कै रघुनाथा। मातु पिता गुरु[२] नावहिं माथा।
आयसु मागि करहिं पुर काजा। देखि चरित हरषै मन राजा॥
ब्यापक अकल अनीह अज निर्गुन नाम न रूप।
भगत हेतु नाना बिधि करत चरित्र अनूप॥ २०५॥

यह सब चरित कहा मैं गाई। आगिलि कथा सुनहु मन लाई।
बिश्वामित्र महामुनि ग्यानी। बसहिं बिपिन सुभ आश्रम जानी।
जहँ जप जग्य जोग[३] मुनि करहीं। अति मारीच सुबाहुहि डरहीं।
देखत जग्य निसाचर धावहिं। करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं।
गाधितनय मन चिंता ब्यापी। हरि बिनु मरहिं न निसिचर पापी।
तब मुनिवर मन कीन्ह बिचारा। प्रभु अवतरेउ हरन महिभारा।
एहूँ मिस देखौं पद जाई। करि बिनती आनौं दोउ भाई।
ग्यान बिराग सकल गुन अयना। सो प्रभु मैं देखब भरि नयना॥

१–१, ३, ४, ५; बिहरहिं ६. ३–१, ३, ४, ५; जप जोग जग्य ६.
२–१, ३, ६; मातु पितु गुरु ४, ५. ४–१, ३, ४, ५; एहि मिसि मैं देखौं पद ६.

बहु बिधि करत मनोरथ जात लागि नहिं बार ।
करि मज्जन सरऊ[1] जल गए भूप दरबार ॥ २०६ ॥

मुनि आगमन सुना जब राजा । मिलन गयेउ लै बिप्र समाजा ।
करि दंडवत मुनिहि सनमानी । निज आसन बैठारेन्हि आनी ।
चरन पखारि कीन्हि अति पूजा । मो सम आजु धन्य नहि दूजा ।
बिबिध भाँति भोजन करवावा । मुनिवर हृदय हरप अति पावा ।
पुनि चरननि मेले सुत चारी । राम देखि मुनि देह बिसारी ।
भए मगन देखत मुख सोभा । जनु चकोर पूरन ससि लोभा ।
तब मन हरपि वचन कह राऊ । मुनि अस कृपा न कीन्हिहु काऊ ।
केहि कारन आगमन तुम्हारा । कहहु सो करत न लावौं बारा ।
असुर समूह सतावहिं मोही । मैं जाचन आयेउँ नृप तोही ।
अनुज समेत देहु रघुनाथा । निसिचर बध मैं होब सनाथा ॥
देहु भूप मन हरपित तजहु मोह अज्ञान ।
धर्म सुजस प्रभु तुम्हकौं इन्ह कहँ अति कल्यान ॥ २०७ ॥

सुनि राजा अति अप्रिय बानी । हृदय कंप मुखदुति कुमुलानी ।
चौथेंपन पायेउँ सुत चारी । बिप्र बचन नहि कहेहु बिचारी ।
मागहु भूमि धेनु धन कोसा । सर्बस देउँ आजु सह रोसा ।
देह प्रान तें प्रिय कछु नाही । सोउ मुनि देउँ निमिप अेक माही ।
सब सुत प्रीय प्रान की[2] नाईं । राम देत नहि बनै गोसाईं ।
कहँ निसिचर अति घोर कठोरा । कहँ सुंदर सुत परम किसोरा ।
सुनि नृप गिरा प्रेम रस सानी । हृदय हरप माना मुनि ज्ञानी ।
तब बसिष्ठ बहु बिधि समुझावा । नृप संदेह नास कहँ पावा ।
अति आदर दोउ तनय बोलाए । हृदय लाइ बहु भाँति सिखाए ।
मेरे प्रान नाथ सुत दोऊ । तुम्ह मुनि पिता आन नहि कोऊ ॥

१–१, ३, ४, ५; सरजू ६. २–१, ४, ५; प्रिय मुहि प्रान कि ६.

सौंपे भूप रिषिहि सुत बहु बिधि देइ असीस।
जननी भवन गए प्रभु चले नाइ पद सीस॥
पुरुषसिंह दोउ बीर हरषि चले मुनि भय हरन।
कृपासिंधु मति धीर अखिल बिस्व कारन करन॥ २०८॥

अरुन नयन उर बाहु बिसाला। नील जलज तनु स्याम तमाला।
कटि पट पीत कसे बर भाथा। रुचिर चाप सायक दुहुँ हाथा।
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई। बिस्वामित्र महानिधि पाई।
प्रभु ब्रह्मन्य देव मैं जाना। मोहि निति पिता तजेउ भगवाना।
चले जात मुनि दीन्हि देखाई। सुनि ताड़का क्रोध करि धाई।
एकहि बान प्रान हरि लीन्हा। दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा।
तब रिषि निज नाथहि जिय चीन्ही। बिद्यानिधि कहुँ बिद्या दीन्ही।
जा तें लाग न छुधा पिपासा। अतुलित बल तन तेज प्रकासा॥
आयुध सर्ब समर्पि कै प्रभु निज आश्रम आनि।
कंद मूल फल भोजन दीन्ह भगति हित जानि॥ २०९॥

प्रात कहा मुनि सन रघुराई। निर्भय जज्ञ करहु तुम्ह जाई।
होम करन लागे मुनि भारी। आपु रहे मख की रखवारी।
सुनि मारीच निसाचर क्रोही[१]। लै सहाय धावा मुनि द्रोही।
बिनु फर बान राम तेहि मारा। सत जोजन गा सागर पारा।
पावकसर सुबाहु पुनि जारा[२]। अनुज निसाचर कटकु सँघारा।
मारि असुर द्विज निर्भय कारी। अस्तुति करहिं देव मुनि भारी।
तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया। रहे कीन्हि बिप्रन्ह पर दाया।
भगति हेतु बहु कथा पुराना। कहे बिप्र[३] जद्यपि प्रभु जाना।
तब मुनि सादर कहा बुझाई। चरित एक प्रभु देखिअ जाई।

१–१, ३, ४, ५, कोही ६. ३–१, ३, ५; कहे रिषि ४, ६
२–४, ५, ६, मारा १, ३.

धनुष जज्ञ करि[1] रघुकुल नाथा। हरषि चले मुनिवर के साथा।
आश्रम एक दीख मग माहीं। खग मृग जीव जंतु तहँ नाहीं।
पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी। सकल कथा मुनि कही बिसेखी॥

गौतम नारि श्राप बस उपल देह धरि धीर।
चरन कमल रज चाहति कृपा करहु रघुबीर॥ २१०॥

परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तप पुंज सही।
देखत रघुनायक जन सुख दायक सनमुख होइ कर जोरि रही।
अतिप्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहि आवै बचन कही।
अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुग नयनन्हि[2] जलधार बही।
धीरजु मनु कीन्हा प्रभु कहुँ चीन्हा रघुपति कृपा भगति पाई।
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ग्यानगम्य जय रघुराई।
मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई।
राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि पाहि सरनहि आई।
मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना।
देखेउँ भरि लोचन हरि भव मोचन इहै लाभु संकर जाना।
बिनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न बर मागौं[3] आना।
पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना।
जेहि पद सुरसरिता परम पुनीता प्रगट भई सिव सीस धरी।
सोइ पद पंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरेउ कृपाल हरी।
ऐहि भाँति सिधारी गौतमनारी बार बार हरि चरन परी।
जो अति मन भावा सो बरु पावा गै पति लोक अनंद भरी॥

अस प्रभु दीन बंधु हरि कारन रहित दयाल।
तुलसिदास सठ तेहि भजु छाड़ि कपट जंजाल॥ २११॥

---

[1]-१, २; कह ४, ५; मुनि ६.
[2]-१,३,६; चरनहि लागी जुग नैन्हि ४,५.
[3]-४, ५, ६; मागौं बर १, ३.

चले राम लछिमन मुनि संगा। गये जहाँ जग पावनि गंगा।
गाधिसूनु सब कथा सुनाई। जेहि प्रकार सुरसरि महि आई।
तब प्रभु रिषिन्ह समेत नहाए। बिबिध दान महिदेवन्ह पाए।
हरषि चले मुनि बृंद सहाया। बेगि बिदेह नगरु निअराया।
पुर रम्यता राम जब देखी। हरषे अनुज समेत बिसेखी।
बापी कूप सरित सर नाना। सलिलु सुधा सम मनि सोपाना।
गुंजत मंजु मत्त रस भृंगा। कूजत कल बहु बरन बिहंगा।
बरन बरन बिकसे बनजाता। त्रिबिध समीरु सदा सुखदाता॥

सुमन बाटिका बाग बन बिपुल बिहंग निवास।
फूलत फलत सुपल्लवत सोहत पुर चहुँ पास॥ २१२॥

बनै न बरनत नगर निकाई। जहाँ जाइ मन तहँ लोभाई।
चारु बजारु बिचित्र अबारी। मनिमय बिधि जनु स्वकर सवाँरी।
धनिक बनिक बर धनद समाना। बैठे सकल बस्तु लै नाना।
चौहट सुंदर गली सुहाई। संतत रहहिं सुगंध सिंचाई।
मंगलमय मंदिर सब केरे। चित्रित जनु रतिनाथ चितेरे।
पुर नर नारि सुभग सुचि संता। धरमसील ग्यानी गुनवंता।
अति अनूप जहँ जनक निवासू। बिथकहिं बिबुध बिलोकि बिलासू।
होत चकित चित कोट बिलोकी। सकल भुवन सोभा जनु रोकी॥

धवल धाम मनि पुरट पट सुघटित नाना भाँति।
सिय निवास सुंदर सदनु सोभा किमि कहि जाति॥ २१३॥

सुभग द्वार सब कुलिस कपाटा। भूप भीर नट मागध भाटा।
बनी बिसाल बाजि गज साला। हय गज रथ संकुल सब काला।
सूर सचिव सेनप बहुतेरे। नृप गृह सरिस सदन सब केरे।
पुर बाहेर सर सरित समीपा। उतरे जहँ तहँ बिपुल महीपा।

१—१, ३, ६; जनु बिधि ४, ५.

देखि अनूप एक अँवराई। सब सुपास सब भाँति सुहाई।
कौसिक कहेउ मोर मनु माना। इहाँ रहिअ रघुवीर सुजाना।
भलेहि नाथ कहि कृपा निकेता। उतरे तहँ मुनि वृंद समेता।
विश्वामित्र महामुनि आए। समाचार मिथिलापति पाए॥
संग सचिव सुचि भूरि भट भूसुर बर गुर ज्ञाति।
चले मिलन मुनिनायकहि मुदित राउ येहि भाँति॥ २१४॥

कीन्ह प्रनामु चरन धरि माथा। दीन्हि असीस मुदित मुनिनाथा।
विप्र वृंद सब सादर वंदे। जानि भाग्य बड़ राउ अनंदे।
कुसल प्रश्न कहि वारहि वारा। विश्वामित्र नृपहि वैठारा।
तेहि अवसर आए दोउ भाई। गए रहे देखन फुलवाई।
स्याम गौर मृदु वयस किसोरा। लोचन सुखद विश्व चित चोरा।
उठे सकल जब रघुपति आए। विश्वामित्र निकट वैठाए।
भये सब सुखी देखि दोउ भ्राता। वारि विलोचन पुलकित गाता।
मूरति मधुर मनोहर देखी। भयेउ विदेहु विदेहु विसेखी॥
प्रेम मगन मनु जानि नृपु करि विवेकु धरि धीर।
वोलेउ मुनि पद नाइ सिरु गदगद गिरा गभीर॥ २१५॥

कहहु नाथ सुंदर दोउ वालक। मुनि कुल तिलक कि नृप कुल पालक।
ब्रह्मु जो निगम नेति कहि गावा। उभय वेप धरि की सोइ आवा।
सहज विराग रूप मनु मोरा। थकित होत जिमि चंद चकोरा।
ता तें प्रभु पूछौं सतिभाऊ। कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ।
इन्हहि विलोकत अति अनुरागा। वरवस ब्रह्म सुखहि मनु त्यागा।
कह मुनि विहसि कहेहु नृप नीका। वचन तुम्हार न होइ अलीका।
ये प्रिय सबहि जहाँ लगि प्रानी। मनु मुसुकाहिं रामु सुनि वानी।
रघुकुल मनि दसरथ के जाए। मम हित लागि नरेस पठाए॥

राम्रु लखनु दोउ बंधु बर रूप सील बल धाम ।
मख राखेउ सबु साखि जगु जिते असुर संग्राम ॥ २१६ ॥

मुनि तव चरन[१] देखि कह राऊ । कहि न सकौं निज पुन्य प्रभाऊ ।
सुंदर स्याम गौर दोउ भ्राता । आनदहू के आनददाता ।
इन्ह कै प्रीति परसपर पावनि । कहि न जाइ मन भाव सुहावनि ।
सुनहु नाथ कह मुदित बिदेहू । ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू ।
पुनि पुनि प्रभुहि चितव नरनाहू । पुलकगात उर अधिकु उछाहू ।
मुनिहि प्रसंसि नाइ पद सीसू । चलेउ लवाइ नगर अवनीसू ।
सुंदर सदनु सुखद सब काला । तहाँ बासु लै दीन्ह भुआला ।
करि पूजा सब बिधि सेवकाई । गयेउ राउ गृह बिदा कराई ॥

रिषय संग रघुबंस मनि करि भोजनु बिश्रामु ।
बैठे प्रभु भ्राता सहित दिवसु रहा भरि जामु ॥ २१७ ॥

लखन हृदय लालसा बिसेखी । जाइ जनकपुर आइअ देखी ।
प्रभु भय बहुरि मुनिहि सकुचाहीं । प्रगट न कहहिं मनहिं मुसुकाहीं ।
राम अनुज मन की गति जानी । भगत बछलता हिय हुलसानी ।
परम बिनीत सकुचि मुसुकाई । बोले गुर अनुसासन पाई ।
नाथ लखनु पुरु देखन चहहीं । प्रभु सकोच डर प्रगट न कहहीं ।
जौ राउर आयेसु मैं पावउँ । नगरु देखाइ तुरत लै आवउँ ।
सुनि मुनीसु कह बचन सप्रीती । कस न राम तुम्ह राखहु नीती ।
धरम सेतु पालक तुम्ह ताता । प्रेम बिबस सेवक सुख दाता ॥

जाइ देखि आवहु नगरु सुख निधान दोउ भाय ।
करहु सुफल सब के नयन सुंदर बदन देखाय ॥ २१८ ॥

मुनि पद कमल बंदि दोउ भ्राता । चले लोक लोचन सुख दाता ।
बालक बृंद देखि अति सोभा । लगे संग लोचन मनु लोभा ।

१–१, ३, ६; मुनि तव चरित ४, ५

पीत बसन परिकर कटि भाथा। चारु चाप सर सोहत हाथा।
तन अनुहरत सुचंदन खोरी। स्यामल गौर मनोहर जोरी।
केहरि कंधर बाहु बिसाला। उर अति रुचिर नाग मनि माला।
सुभग शोन सरसीरुह लोचन। बदन मयंक ताप त्रय मोचन।
कानन्हि कनकफूल छबि देहीं। चितवत चितहि चोरि जनु लेहीं।
चितवनि चारु भृकुटि बर बाँकी। तिलक रेख सोभा जनु चाँकी॥

रुचिर चौतनी सुभग सिर मेचक कुंचित केस।
नख सिख सुंदर बंधु दोउ सोभा सकल सुदेस॥ २१९॥

देखन नगरु भूप सुत आए। समाचार पुरबासिन्ह पाए।
धाए धाम काम सब त्यागी। मनहु रंक निधि लूटन लागी।
निरखि सहज सुंदर दोउ भाई। होहिं सुखी लोचन फलु पाई।
जुबतीं भवन झरोखन्हि लागीं। निरखहिं राम रूप अनुरागीं।
कहहिं परसपर बचन सप्रीती। सखि इन्ह कोटि काम छबि जीती।
सुर नर असुर नाग मुनि माहीं। सोभा असि कहुँ सुनिअत नाहीं।
बिष्णु चारि भुज बिधि मुख चारी। बिकट बेष मुख पंच पुरारी।
अपर देउ अस कोउ न आही[1]। येह छबि सखी पटतरिय[2] जाही॥

बय किसोर सुखमा सदन स्याम गौर सुख धाम।
अंग अंग पर वारिअहि कोटि कोटि सत काम॥ २२०॥

कहहु सखी अस को तनु धारी। जो न मोह येहु रूपु निहारी।
कोउ सप्रेम बोली मृदु बानी। जो मैं सुना सो सुनहु सयानी।
ए दोऊ दसरथ के ढोटा। बाल मरालन्हि के कल जोटा।
मुनि कौसिक मख के रखवारे। जिन्ह रन अजिर निसाचर मारे।
स्याम गात कल कंज बिलोचन। जो मारीच सुभुज मद मोचन।
कौसल्यासुत सो सुख खानी। नामु रामु धनु सायक पानी।

१-१, ३, ४, ५; कोऊ नाही, सखि पटतरिये ६.

गौर किसोर वेषु वर काछें । कर सर चाप राम के पाछें ।
लछिमनु नामु राम लघु भ्राता । सुनु सखि तासु सुमित्रा माता ॥
बिप्र काजु करि बंधु दोउ मग मुनि बधू उधारि ।
आए देखन चाप मख सुनि हरषीं सब नारि ॥ २२१ ॥
देखि राम छबि कोउ अेक कहई । जोगु जानकिहि येहु बरु अहई ।
जौ सखि इन्हहि देख नरनाहू । पन परिहरि हठि करै बिबाहू ।
कोउ कह ए भूपति पहिचाने । मुनि समेत सादर सनमाने ।
सखि परंतु पनु राउ न तजई । बिधि बस हठि अबिबेकहि भजई ।
कोउ कह जौ भल अहइ बिधाता । सब कहँ सुनिअ उचित फलदाता ।
तौ जानकिहि मिलिहि बरु एहू । नाहिन आलि इहाँ संदेहू ।
जौ बिधि बस अस बनै सँजोगू । तौ कृतकृत्य होइ सब लोगू ।
सखि हमरें आरति अति तातें । कबहुक ए आवहिं येहि नातें ॥
नाहि त हम कहुँ सुनहु सखि इन्ह कर दरसनु दूरि ।
येह संघटु तब होइ जब पुन्य पुराकृत भूरि ॥ २२२ ॥
बोली अपर कहेहु सखि नीका । येहि बिबाह अति हित सबही का ।
कोउ कह संकर चाप कठोरा । ए स्यामल मृदु गात किसोरा ।
सबु असमंजस अहइ सयानी । येह सुनि अपर कहै मृदु बानी ।
सखि इन्ह कह कोउ कोउ अस कहहीं । बड़ प्रभाउ देखत लघु अहहीं ।
परसि जासु पद पंकज धूरी । तरी अहिल्या कृत अघ भूरी ।
सो कि रहिहि बिनु सिवधनु तोरें । येह प्रतीति परिहरिअ न मोरें ।
जेहि बिरंचि रचि सीय सवारी । तेहि स्यामल बरु रचेउ बिचारी ।
तासु बचन सुनि सब हरषानी । ऐसेइ होउ कहहिं मृदु बानी ॥
हिय हरषहिं बरषहिं सुमन सुमुखि सुलोचनि बृंद ।
जाहिं जहाँ जहँ बंधु दोउ तहँ तहँ परमानंद ॥ २२३ ॥
पुर पूरब दिसि गे दोउ भाई । जहँ धनु मख हित भूमि बनाई ।

अति बिस्तार चारु गच ढारी। बिमल बेदिका रुचिर सवारी।
चहुँ दिसि कंचन मंच बिसाला। रचे जहाँ बैठहिं महिपाला।
तेहिं पाछें समीप चहु पासा। अपर मंच मंडली बिलासा।
कछुक ऊँचि सब भाँति सुहाई। बैठहिं नगर लोग जहँ जाई।
तिन्हके निकट बिसाल सुहाए। धवल धाम बहु बरन बनाए।
जहँ बैठे देखहिं सब नारीं। जथाजोगु निज कुल अनुहारीं।
पुर बालक कहि कहि मृदु बचना। सादर प्रभुहि देखावहिं रचना॥
सब सिसु येहि मिस प्रेम बस परसि मनोहर गात।
तनु पुलकहिं अति हरषु हिय[1] देखि देखि दोउ भ्रात॥ २२४॥

सिसु सब राम प्रेम बस जानें। प्रीति समेत निकेत बखानें।
निज निज रुचि सब लेहिं बोलाई। सहित सनेह जाहिं दोउ भाई।
रामु देखावहिं अनुजहि रचना। कहि मृदु मधुर मनोहर बचना।
लव निमेष महुँ भुवन निकाया। रचै जासु अनुसासन माया।
भगति हेतु सोइ दीन दयाला। चितवत चकित धनुष मख साला।
कौतुकु देखि चले गुर पाहीं। जानि बिलंबु त्रास मन माहीं।
जासु त्रास डर कहुँ डरु होई। भजन प्रभाउ देखावत सोई।
कहि बातैं मृदु मधुर[2] सुहाईं। किए बिदा बालक बरिआईं॥
सभय सप्रेम बिनीत अति सकुच सहित दोउ भाइ।
गुर पद पंकज नाइ सिर बैठे आयेसु पाइ॥ २२५॥

निसि प्रबेस मुनि आयेसु दीन्हा। सबहीं संध्या बंदनु कीन्हा।
कहत कथा इतिहास पुरानी। रुचिर रजनि जुग जाम सिरानी।
मुनिबर सयन कीन्हि तब जाई। लगे चरन चापन दोउ भाई।
जिन्ह के चरन सरोरुह लागी। करत बिबिध जप[3] जोग बिरागी।

१–१, ३, ४, ५; हिय हरष अति ६. ३–१, ३, ४, ५; बिधि ६.
२–१, ३, ४, ५; बचन ६.

तेइ दोउ बंधु प्रेम जनु जीते। गुर पद कमल[1] पलोटत प्रीते।
बार बार मुनि अग्या दीन्ही। रघुबर जाइ सयन तब कीन्ही।
चापत चरन लखनु उर लाएँ। सभय सप्रेम परम सचु पाएँ।
पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता। पौढ़े धरि उर पद जलजाता॥

उठे लखनु निसि बिगत सुनि अरुनसिखा धुनि कान।
गुर तें पहिलेहि जगतपति जागे रामु सुजान॥ २२६॥

सकल सौच करि जाइ नहाए। नित्य निबाहि मुनिहि सिर नाए।
समय जानि गुर आयेसु पाई। लेन प्रसून चले दोउ भाई।
भूप बागु बर[2] देखेउ जाई। जहँ बसंत रितु रही लोभाई।
लागे बिटप मनोहर नाना। बरन बरन बर बेलि बिताना।
नव पल्लव फल सुमन सुहाए। निज संपति सुररूख लजाए।
चातक कोकिल कीर चकोरा। कूजत बिहग नटत कल मोरा।
मध्य बाग सरु सोह सुहावा। मनि सोपान बिचित्र बनावा।
बिमल सलिलु सरसिज बहुरंगा। जल खग कूजत गुंजत भृंगा॥

बागु तड़ागु बिलोकि प्रभु हरषे बंधु समेत।
परम रम्य आरामु यहु जो रामहि सुख देत॥ २२७॥

चहुँ दिसि चितइ पूँछि मालीगन। लगे लेन दल फूल मुदित मन।
तेहि अवसर सीता तहँ आई। गिरिजा पूजन जननि पठाई।
संग सखीं सब सुभग सयानी। गावहिं गीत मनोहर बानी।
सर समीप गिरिजा गृहु सोहा। बरनि न जाइ देखि मनु मोहा।
मज्जनु करि सर सखिन्ह समेता। गईं मुदित मन गौरि निकेता।
पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा। निज अनुरूप सुभग बरु मागा।
एक सखी सिय संगु बिहाई। गई रही देखन फुलवाई।
तेहि दोउ बंधु बिलोके जाई। प्रेम बिबस सीता पहिं आई॥

१–१, ३, ४, ५; पदुम ६. २–१, ३, ४, ५; बाग भूप बर ६.

अति बिस्तार चारु गच ढारी। बिमल बेदिका रुचिर सवारी।
चहुँ दिसि कंचन मंच बिसाला। रचे जहाँ बैठहिं महिपाला।
तेहिं पाछें समीप चहु पासा। अपर मंच मंडली बिलासा।
कछुक ऊँचि सब भाति सुहाई। बैठहिं नगर लोग जहँ जाई।
तिन्हके निकट बिसाल सुहाए। धवल धाम बहु बरन बनाए।
जहँ बैठे देखहिं सब नारीं। जथाजोगु निज कुल अनुहारीं।
पुर बालक कहि कहि मृदु बचना। सादर प्रभुहि देखावहिं रचना॥

सब सिसु येहि मिस प्रेम बस परसि मनोहर गात।
तनु पुलकहिं अति हरषु हिय[1] देखि देखि दोउ भ्रात॥ २२४॥

सिसु सब राम प्रेम बस जानें। प्रीति समेत निकेत बखानें।
निज निज रुचि सब लेहिं बोलाई। सहित सनेह जाहिं दोउ भाई।
रामु देखावहिं अनुजहि रचना। कहि मृदु मधुर मनोहर बचना।
लव निमेष महुँ भुवन निकाया। रचै जासु अनुसासन माया।
भगति हेतु सोइ दीन दयाला। चितवत चकित धनुप मख साला।
कौतुकु देखि चले गुर पाहीं। जानि बिलंबु त्रास मन माहीं।
जासु त्रास डर कहुँ डरु होई। भजन प्रभाउ देखावत सोई।
कहि बातैं मृदु मधुर[2] सुहाईं। किए बिदा बालक बरिआईं॥

सभय सप्रेम बिनीत अति सकुच सहित दोउ भाइ।
गुर पद पंकज नाइ सिर बैठे आयेसु पाइ॥ २२५॥

निसि प्रवेस मुनि आयेसु दीन्हा। सबहीं संध्या बंदनु कीन्हा।
कहत कथा इतिहास पुरानी। रुचिर रजनि जुग जाम सिरानी।
मुनिबर सयन कीन्हि तब जाई। लगे चरन चापन दोउ भाई।
जिन्ह के चरन सरोरुह लागी। करत बिबिध जप[3] जोग बिरागी।

१–१, ३, ४, ५; हिय हरष अति ६.
२–१, ३, ४, ५; बचन ६.
३–१, ३, ४, ५; बिधि ६.

तेइ दोउ बंधु प्रेम जनु जीते। गुर पद कमल[1] पलोटत प्रीते।
बार बार मुनि अज्ञा दीन्ही। रघुबर जाइ सयन तब कीन्ही।
चापत चरन लखनु उर लाएँ। सभय सप्रेम परम सचु पाएँ।
पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता। पौढ़े धरि उर पद जलजाता॥
उठे लखनु निसि बिगत सुनि अरुनसिखा धुनि कान।
गुर तें पहिलेहिं जगतपति जागे रामु सुजान॥ २२६॥

सकल सौच करि जाइ नहाए। नित्य निबाहि मुनिहि सिर नाए।
समय जानि गुर आयेसु पाई। लेन प्रसून चले दोउ भाई।
भूप बागु बर[2] देखेउ जाई। जहँ बसंत रितु रही लोभाई।
लागे बिटप मनोहर नाना। बरन बरन बर बेलि बिताना।
नव पल्लव फल सुमन सुहाए। निज संपति सुररूख लजाए।
चातक कोकिल कीर चकोरा। कूजत बिहग नटत कल मोरा।
मध्य बाग सरु सोह सुहावा। मनि सोपान बिचित्र बनावा।
बिमल सलिलु सरसिज बहुरंगा। जल खग कूजत गुंजत भृंगा॥
बागु तड़ागु बिलोकि प्रभु हरषे बंधु समेत।
परम रम्य आरामु येहु जो रामहि सुख देत॥ २२७॥

चहुँ दिसि चितइ पूँछि मालीगन। लगे लेन दल फूल मुदित मन।
तेहि अवसर सीता तहँ आई। गिरिजा पूजन जननि पठाई।
संग सखीं सब सुभग सयानी। गावहिं गीत मनोहर बानी।
सर समीप गिरिजा गृहु सोहा। बरनि न जाइ देखि मनु मोहा।
मज्जनु करि सर सखिन्ह समेता। गई मुदित मन गौरि निकेता।
पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा। निज अनुरूप सुभग बरु मागा।
एक सखी सिय संगु बिहाई। गई रही देखन फुलवाई।
तेहि दोउ बंधु बिलोके जाई। प्रेम बिबस सीता पहिं आई॥

१—१, ३, ४, ५; पदुम ६. २—१, ३, ४, ५; बाग भूप कर ६.

तासु दसा देखी सखिन्ह पुलक गात जलु नयन।
कहु कारनु निज हरष कर पूछहिं सब मृदु बयन ॥ २२८ ॥

देखन बागु कुअर दुइ[1] आए। बय किसोर सब भाँति सुहाए।
स्याम गौर किमि कहउँ बखानी। गिरा अनयन नयन बिनु बानी।
सुनि हरषीं सब सखीं सयानी। सिय हिय अति उतकंठा जानी।
एक कहइ नृपसुत तेइ आली। सुने जे मुनि सँग आए काली।
जिन्ह निज रूप मोहनी डारी। कीन्हे स्वबस नगर नर नारी।
बरनत छबि जहँ तहँ सब लोगू। अवसि देखिअहि देखन जोगू।
तासु बचन अति सियहि सोहाने। दरस लागि लोचन अकुलानें।
चलीं अग्र करि प्रिय सखि सोई। प्रीति पुरातन लखै न कोई ॥

सुमिरि सीय नारद बचन उपजी प्रीति पुनीत।
चकित बिलोकति सकल दिसि जनु सिसु मृगी सभीत ॥ २२९ ॥

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि। कहत लखन सन रामु हृदय गुनि।
मानहु मदन दुंदुभी दीन्ही। मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्हीं।
अस कहि फिरि चितये तेहि ओरा। सिय मुख ससि भये नयन चकोरा।
भये बिलोचन चारु अचंचल। मनहु सकुचि निमि तजे दिगंचल[2]।
देखि सीय सोभा सुखु पावा। हृदय सराहत बचनु न आवा।
जनु बिरंचि सब निज निपुनाई। बिरचि बिस्व कहँ प्रगटि देखाई।
सुंदरता कहु सुंदर करई। छबिगृह दीप सिखा जनु बरई।
सब उपमा कबि रहे जुठारी। केहि पटतरौं बिदेहकुमारी ॥

सिय सोभा हिय बरनि प्रभु आपनि दसा बिचारि।
बोले सुचि मन अनुज सन बचन समय अनुहारि ॥ २३० ॥

तात जनकतनया येह सोई। धनुष जग्य जेहि कारन होई।

१–१, ३, ४, ५; दोउ ६. २–१, ३, ४, ५; दृगंचल ६

पूजन गौरि सखीं लै आई। करत प्रकास फिरहिं फुलवाई।
जासु बिलोकि अलौकिक सोभा। सहज पुनीत मोर मनु छोभा।
सो सबु कारन जान बिधाता। फरकहि सुभद[१] अंग सुनु भ्राता।
रघुबंसिन्ह कर सहज सुभाऊ। मनु कुपंथ पगु धरै न काऊ[२]।
मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी। जेहि सपनेहु पर नारि न हेरी।
जिन्ह कै लहहि न रिपु रन पीठी। नहि पावहि परतिय मनु डीठी।
मंगन लहहि न जिन्ह कै नाही। ते नर बर थोरे जग माहीं॥

करत बतकही अनुज सन मनु सिय रूप लोभान।
मुख सरोज मकरंद छबि करै मधुप इव पान॥ २३१॥

चितवति चकित चहू दिसि सीता। कहँ गये नृपकिसोर मनचिंता।
जहँ बिलोकि मृग सावक नैनीं। जनु तहँ बरिस कमल सित श्रेनी।
लता ओट तब सखिन लखाए। स्यामल गौर किसोर सुहाए।
देखि रूपु लोचन ललचाने। हरषे जनु निज निधि पहिचानें।
थके नयन रघुपति छबि देखे। पलकन्हिहूँ परिहरीं निमेखे।
अधिक सनेह देह भै भोरी। सरद ससिहि जनु चितव चकोरी।
लोचन मग रामहि उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी।
जब सिय सखिन्ह प्रेम बस जानी। कहि न सकहिं कछु मन सकुचानी॥

लता भवन तें प्रगट भये तेहि अवसर दोउ भाइ।
निकसे जनु जुग बिमल बिधु जलद पटल बिलगाइ॥ २३२॥

सोभा सींव सुभग दोउ बीरा। नील पीत जलजाभ[३] सरीरा।
मोरपंख सिर सोहत नीके। गुच्छ बीच बिच[४] कुसुमकली के।
भाल तिलक श्रमबिंदु सुहाए। श्रवन सुभग भूषन छबि छाए।

१—१, ४, ५; सुभग ३, ६.
२—१,३,४,५; मूलि न देहिं कुमारग पाऊ ६.
*३—१,३; जलजात ६; जलजान ४,५.
४—१, ३, ४, ५; गुच्छे बिच बिच ६

भृकुटि कच घूँघरवारे। नव सरोज लोचन रतनारे।
चिबुक नासिका कपोला। हास बिलास लेत मनु मोला।
न कहि न जाइ मोहि पाही। जो बिलोकि बहु काम लजाहीं।
ने माल कंबु कल गीवाँ। काम कलभ कर भुज बल सीवाँ।
समेत बाम कर दोना। साँवर कुअरु सखी सुठि लोना॥
केहरि कटि पट पीत धर सुखमा सील निधान।
देखि भानुकुल भूषनहि बिसरा सखिन्ह अपान॥ २३३॥

रजु अेक आलि सयानी। सीता सन बोली गहि पानी।
गौरि कर ध्यानु करेहू। भूप किसोर देखि किन लेहू।
सीय तब नयन उघारे। सनमुख दोउ रघुसिंघ निहारे।
व देखि राम कै सोभा। सुमिरि पिता पनु मनु अति छोभा।
सखिन लखी जब सीता। भये गहरु सब कहहिं सभीता।
ाउब अेहि बरिआँ[1] काली। अस कहि मन बिहसी अेक आली।
ारा सुनि सिय सँकुचानी। भयेउ बिलंबु मातु भय मानी।
ड़ि धीर राम उर आने। फिरी अपनपउ पितु बस जाने॥
देखन मिस मृग बिहग तरु फिरै बहोरि बहोरि।
निरखि निरखि रघुबीर छबि बाढ़ै प्रीति न थोरि॥ २३४॥

कठिन सिव चाप बिसूरति। चलीं राखि उर स्यामल मूरति।
ब जात जानकी जानी। सुख सनेह सोभा गुन[2] खानी।
ेममय मृदु मसि कीन्ही। चारु चित्त भीतीं[3] लिखि लीन्ही।
भवानी भवन बहोरी। बंदि चरन बोलीं कर जोरी।
ाय गिरिबरराज किसोरी। जय महेस मुख चंद चकोरी।
गजबदन षडानन माता। जगत जननि दामिनि दुतिगाता।

-१, ४, ५; बेरिआँ ६.   ३-१, ५; चित्र भीतर ४, ६.
-१, ४, ५; कै ६.

नहि तव आदि अंत[1] अवसाना। अमित प्रभाउ बेदु नहिं जाना।
भव भव बिभव पराभव कारिनि। बिस्व बिमोहिनि स्वबस बिहारिनि॥
पति देवता सुतीय महुँ मातु प्रथम तव रेख।
महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेख॥ २३५॥

सेवत तोहि सुलभ फल चारी। बरदायनी पुरारि[2] पिआरी।
देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे।
मोर मनोरथु जानहु नीकें। बसहु सदा उर पुर सबही कें।
कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेहीं। अस कहि चरन गहे बैदेहीं।
बिनय प्रेम बस भई भवानीं। खसी माल मूरति मुसुकानीं।
सादर सिअँ प्रसादु सिर धरेऊ। बोली गौरि हरषु हियँ भरेऊ[3]।
सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मनकामना तुम्हारी।
नारद बचनु सदा सुचि साचा। सो बरु मिलिहि जाहिं मनु राचा॥
मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो[4]।
करुनानिधानु सुजानु सीलु सनेहु जानत रावरो[4]।
येहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अलीं।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली॥
जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥ २३६॥

हृदय सराहत सीय लोनाई। गुरु समीप गवने दोउ भाई।
राम कहा सबु कौसिक पाहीं। सरल सुभाउ छुआ छल नाहीं।
सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही। पुनि असीस दुहुँ भाइन्ह दीन्ही।
सफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। रामु लखनु सुनि भये सुखारे।
करि भोजन मुनिबर बिग्यानी। लगे कहन कछु कथा पुरानी।

१–१, ४, ५, मध्य ६ ३–४, ५, ६, भयेऊ १.
२–४, ५, ६, बरदायननि १. ४–४, ५, ६ साँवरे, रावरे १.

दिवस गुर आयेसु पाई। संध्या करन चले दोउ भाई।
देखि ससि उयेउ सुहावा। सियमुखसरिस देखि सुख पावा।
बेचारु कीन्ह मन माहीं। सीय वदन सम हिमकरु नाँहीं॥
जनमु सिंधु पुनि बंधु बिपु दिन मलीन सकलंकु।
सिय मुख समता पाव किमि चंदु बापुरो रंकु॥ २३७॥
ढ़ै बिरहिनि दुखदाई। ग्रसै राहु निज संधिहि पाई।
सोक प्रद पंकज द्रोही। अवगुन बहुत चंद्रमा तोही।
मुख पटतर दीन्हे। होइ दोषु बड़ अनुचित कीन्हे।
वछबि बिधु ब्याज बखानी। गुर पहि चले निसा बड़ि जानी।
नि चरन सरोज प्रनामा। आयेसु पाइ कीन्ह बिश्रामा।
निसा रघुनायक जागे। बंधु बिलोकि कहन अस लागे।
अरुनु अवलोकहु ताता। पंकज कोक लोक सुख दाता।
रवन जोरि जुग पानी। प्रभु प्रभाउ सूचक मृदु बानी॥
अरुनोदय सकुचे कुमुद उडगन जोति मलीन।
जिमि तुम्हार आगवनु सुनि भये नृपति बलहीन॥ २३८॥
। नखत करहिं उजिआरी। टारि न सकहिं चाप तम भारी।
कोक मधुकर खग नाना। हरपे सकल निसा अवसाना।
प्रभु सब भगत तुम्हारे। होइहहिं टूटें धनुपु सुखारे।
ानु बिनु श्रम तम नासा। दुरे नखत जग तेजु प्रकासा।
ज उदय ब्याज रघुराया। प्रभु प्रतापु सब नृपन्ह देखाया।
त बल महिमा उदघाटी। प्रगटी धनु बिघटन परिपाटी।
वन सुनि प्रभु मुसुकानें। होइ सुचि सहज पुनीत नहानें।
क्रेया करि गुर पहि आए। चरन सरोज सुभग सिर नाए।
; तब जनक बोलाए। कौसिक मुनि पहि तुरत पठाए।
बिनय तिन्ह आइ सुनाई। हरपे बोलि लिये दोउ भाई॥

सतानंद पद बंदि प्रभु बैठे गुर पहिं जाइ।
चलहु तात मुनि कहेउ तब पठवा जनक बोलाइ ॥ २३९ ॥

सीय स्वयंबरु देखिअ जाई। ईसु काहि धौं देइ बड़ाई।
लखन कहा जस भाजनु सोई। नाथ कृपा तव जापर होई।
हरषे मुनि सब सुनि बर बानी। दीन्हि असीस सबहि सुखु मानी।
पुनि मुनि बृंद समेत कृपाला। देखन चले धनुष मख साला।
रंगभूमि आए दोउ भाई। असि सुधि सब पुरबासिन्ह पाई।
चले सकल गृह काज बिसारी। बाल जुबान जठर नर नारी।
देखी जनक भीर भै भारी। सुचि सेवक सब लिये हँकारी।
तुरत सकल लोगन्ह पहिं जाहू। आसन उचित देहु सब काहू ॥
कहि मृदु बचन बिनीत तिन्ह बैठारे नर नारि।
उत्तम मध्यम नीच लघु निज निज थल अनुहारि ॥ २४० ॥

राजकुअर तेहि अवसर आए। मनहु मनोहरता तन छाए।
गुन सागर नागर बर बीरा। सुंदर स्यामल गौर सरीरा।
राज समाज बिराजत रूरे। उडगन महुँ जनु जुग बिधु पूरे।
जिन्हकें रही भावना जैसी। प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी।
देखहिं भूप महा रनधीरा। मनहु बीर रसु धरें सरीरा।
डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी। मनहु भयानक मूरति भारी।
रहे असुर छल छोनिप बेखा। तिन्ह प्रभु प्रगट काल सम देखा।
पुरबासिन्ह देखे दोउ भाई। नर भूषन लोचन सुखदाई ॥
नारि बिलोकहिं हरषि हिय निज निज रुचि अनुरूप।
जनु सोहत सृंगार धरि मूरति परम अनूप ॥ २४१ ॥

बिदुषन्ह प्रभु बिराटमय दीसा। बहु मुख कर पग लोचन सीसा।
जनक जाति अवलोकहिं कैसें। सजन सगे प्रिय लागहिं जैसें।

१—४, ५, जरठ १, ६   २—४, ५, ६, रूप १

सहित बिदेह बिलोकहिं रानी। सिसु सम प्रीति न जाति[1] बखानी।
जोगिन्ह परम तत्त्वमय भासा। शांत सुद्ध सम सहज प्रकासा।
हरिभगतन्ह देखे दोउ भ्राता। इष्टदेव इव सब सुख दाता।
रामहि चितव भायँ जेहि सीया। सो सनेहु सुखु नहिं कथनीया।
उर अनुभवति न कहि सक सोऊ। कवन प्रकार कहै कवि कोऊ।
येहि बिधि रहा जाहि जस भाऊ। तेहि तस देखेउ कोसलराऊ॥

राजत राज समाज महुँ कोसलराज किसोर।
सुंदर स्यामल गौर तनु बिस्व बिलोचन चोर॥ २४२॥

सहज मनोहर मूरत दोऊ। कोटि काम उपमा लघु सोऊ।
सरद चंद निंदक मुख नीके। नीरज नयन भावते जी के।
चितवनि[2] चारु मार मनु हरनी। भावति हृदय जाति नहि बरनी।
कल कपोल श्रुति कुंडल लोला। चिबुक अधर सुंदर मृदु बोला।
कुमुदबंधु कर निंदक हासा। भृकुटी बिकट मनोहर नासा।
भाल बिसाल तिलक झलकाहीं। कच बिलोकि अलि अवलि लजाहीं।
पीत चौतनी सिरन्हि सुहाई। कुसुमकली बिच बीच बनाई।
रेखैं रुचिर कंबु कल ग्रीवाँ। जनु तिभुवन[3] सुपमा[4] की सीवाँ॥

कुंजर मनि कंठा कलित उरन्हि तुलसिका माल।
बृषभ कंध केहरि ठवनि बल निधि बाहु बिसाल॥ २४३॥

कटि तूनीर पीत पट बाँधें। कर सर धनुष बाम बर काँधें।
पीत जग्य उपबीत सुहाए। नखसिख मंजु महा छबि छाए।
देखि लोग सब भये सुखारे। ऐकटक लोचन चलत न तारे[5]।
हरपे जनकु देखि दोउ भाई। मुनि पद कमल गहे तब जाई।

१–१, ४, ५; जाइ ६.
२–१, ६; चितवति ४, ५.
३–४, ५; त्रिभुवन १, ६.
४–१, ४, ५; उपमा ६.
५–१, ४, ५; चलत न टारे ६.

करि बिनती निज कथा सुनाई। रंगअवनि सब मुनिहि देखाई।
जहँ जहँ जाहिं कुअर बर दोऊ। तहँ तहँ चकित चितव सबु कोऊ।
निज निज रुख रामहि सबु देखा। कोउ न जान कछु मरमु बिसेखा।
भलि रचना मुनि नृप सन कहेऊ। राजा मुदित महा सुखु लहेऊ॥
सब मंचन्ह तें मंचु अेकु सुंदर बिसद बिसाल।
मुनि समेत दोउ बंधु तहँ बैठारे महिपाल॥ २४४॥

प्रभुहि देखि सब नृप हिय हारे। जनु राकेस उदय भये तारे।
अस प्रतीति सब के मन माहीं। राम चाप तोरब सक नाहीं।
बिनु भंजेहु भवधनुपु बिसाला। मेलिहि सीय राम उर माला।
अस बिचारि गवनहु घर भाई। जसु प्रतापु बलु तेजु गवाई।
बिहसे अपर भूप सुनि बानी। जे अबिबेक अंध अभिमानी।
तोरेहु धनुपु ब्याहु अवगाहा। बिनु तोरे को कुअरि बिआहा।
एक बार कालउ किन होऊ। सिय हित समर जितब हम सोऊ।
येह सुनि अवर[१] महिप मुसुकाने। धरमसील हरिभगत सयानें॥
सीय बिआहबि राम गरबु दूरि करि नृपन्ह को[२]।
जीति को सक संग्राम दसरथ के रन बाँकुरे॥ २४५॥

व्यर्थ मरहु जनि गाल बजाई। मनमोदकन्हि कि भूख बताई।
सिखि हमारि सुनि परम पुनीता। जगदंबा जानहु जिय सीता।
जगतपिता रघुपतिहि बिचारी। भरि लोचन छबि लेहु निहारी।
सुंदर सुखद सकल गुन रासी। ए दोउ बंधु संभु उर बासी।
सुधासमुद्र समीप बिहाई। मृगजलु निरखि मरहु कत धाई।
करहु जाइ जा कहुँ जोइ भावा। हम तौ आजु जनम फलु पावा।
अस कहि भले भूप अनुरागे। रूप अनूप बिलोकन लागे।
देखहिं नभ सुर चढ़े बिमाना। बरपहि सुमन करहिं कल गाना॥

१–२, ४, ५, अपर ६ २–४, ५, ६; के १

जानि सुअवसरु सीय तब पठई जनक बोलाइ।
चतुर सखीं सुंदर सकल सादर चलीं लवाइ ॥ २४६ ॥

सिय सोभा नहि जाइ बखानी। जगदंबिका रूप गुन खानी।
उपमा सकल मोहि लघु लागी। प्राकृत नारि अंग अनुरागी।
सिय बरनिय तेइ उपमा देई। कुकबि कहाइ अजसु को लेई।
जौ पटतरिअ तीय सम[१] सीया। जग असि जुबति कहाँ कमनीया।
गिरा मुखर तनु अरध भवानी। रति अतिदुखित अतनु पति जानी।
बिप बारुनीं बंधु प्रिय जेही। कहिअ रमा सम किमि बैदेही।
जौ छबि सुधा पयोनिधि होई। परम रूपमय कच्छपु सोई।
सोभा रजु मंदरु सिंगारू। मथै पानि पंकज निज मारू ॥
येहि बिधि उपजै लच्छि जब सुंदरता सुख मूल।
तदपि सकोच समेत कबि कहहिं सीय सम तूल ॥ २४७ ॥

चलीं संग लै सखी सयानी। गावत गीत मनोहर बानी।
सोह नवल तनु सुंदर सारी। जगतजननि अतुलित छबि भारी।
भूषन सकल सुदेस सुहाये। अंग अंग रचि सखिन्ह बनाए।
रंगभूमि जब सिय पगु धारीं। देखि रूपु मोहे नर नारीं।
हरषि सुरन्ह दुंदुभीं बजाईं। बरषि प्रसून अपछरा गाईं।
पानि सरोज सोह जयमाला। अवचट चितए सकल भुआला।
सीय चकित चित रामहि चाहा। भये मोहबस सब नरनाहा।
मुनि समीप देखे दोउ भाई। लगे ललकि लोचन निधि पाई ॥
गुरजन लाज समाजु बड़ देखि सीय सकुचानि।
लागि बिलोकन सखिन्ह तन रघुबीरहि उर आनि ॥ २४८ ॥

राम रूपु अरु सिय छबि देखें। नरनारिन्ह परिहरीं निमेखें।

---

*१–१, ६; म ४, ५.

सोचहिं सकल कहत सकुचाहीं। बिधि सन बिनय करहिं मन माहीं।
हरु बिधि बेगि जनक जड़ताई। मति हमार असि देहि सुहाई।
बिनु बिचार पन तजि नरनाहू। सीय राम कर करै बिबाहू।
जगु भल कहिहि भाव सब काहू। हठ कीन्हे अंतहुँ उर दाहू।
येहिं लालसाँ मगन सबु लोगू। बरु साँवरो जानकी जोगू।
तब बंदीजन जनक बोलाए। बिरिदावलीं कहत चलि आए।
कह नृपु जाइ कहहु पन मोरा। चले भाट हिअ हरषु न थोरा॥

बोले बंदी बचन बर सुनहु सकल महिपाल।
पन बिदेह कर कहहिं हम भुजा उठाइ बिसाल॥ २४९॥

नृप भुज बलु बिधु सिवधनु राहू। गरुअ कठोर बिदित सब काहू।
रावनु बानु महाभट भारे। देखि सरासनु गवहिं सिधारे।
सोइ पुरारिकोदंड कठोरा। राज समाज आजु जेइ[1] तोरा।
त्रिभुवन जय समेत बैदेहीं। बिनहि बिचार बरै हठि तेही।
सुनि पन सकल भूप अभिलाषे। भटमानी अतिसय मन माषे।
परिकर बाँधि उठे अकुलाई। चले इष्टदेवन्ह सिर नाई।
तमकि ताकि तक[2] शिवधनु धरहीं। उठइ न कोटि भाँति बल करहीं।
जिन्हके कछु बिचार मन माहीं। चाप समीप महीप न जाहीं॥

तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप उठै न चलहिं लजाइ।
मनहु पाइ भट बाहु बलु अधिकु अधिकु गरुआइ॥ २५०॥

भूप सहस दस एकहि बारा। लगे उठावन टरै न टारा।
डगै न संभु सरासनु कैसें। कामी बचनु सती मनु जैसें।
सब नृप भये जोग उपहासी। जैसें बिनु बिराग संन्यासी।
कीरति बिजय बीरता भारी। चले चाप कर बरबस हारी।
श्रीहत भए हारि हिय राजा। बैठे निज निज जाइ समाजा।

१ *–६, जोइ १, ४, ५. २–१, ४, ५, ताकि ६.

नृपन्ह बिलोकि जनक अकुलानें। बोले बचन रोष जनु साने।
दीप दीप के भूपति नाना। आए सुनि हम जो पनु ठाना।
देव दनुज धरि मनुज सरीरा। बिपुल बीर आए रनधीरा॥
कुअरि मनोहर[1] बिजय बड़ि कीरति अतिकमनीय।
पावनिहार बिरंचि जनु रचेउ न धनु दमनीय॥ २५१॥

कहहु काहि यहु लाभु न भावा। काहुँ न संकर चापु चढ़ावा।
रहौ चढ़ाउब तोरब भाई। तिलु भरि भूमि न सके छड़ाई।
अब जनि कोउ माखै भटमानी। बीर बिहीन मही मैं जानीं।
तजहु आस निज निज गृह जाहू। लिखा न बिधि बैदेहि बिबाहू।
सुकृतु जाइ जौ पनु परिहरऊँ। कुअरि कुआरि रहउ का करऊँ।
जौ जनतेउँ बिनु भट भुमि[2] भाई। तौ पनु करि होतेउँ न हसाई।
जनक बचन सुनि सब नर नारी। देखि जानकिहिं भये दुखारी।
माखे लखनु कुटिल मैं भौहें। रदपट फरकत नयन रिसौहें॥
कहि न सकत रघुबीर डर लगे बचन जनु बान।
नाइ राम पद कमल सिरु बोले गिरा प्रमान॥ २५२॥

रघुबंसिन्ह महुँ जहँ कोउ होई। तेहि समाज अस कहै न कोई।
कही जनक जसि अनुचित बानी। बिद्यमान रघुकुल मनि जानी।
सुनहु भानु कुल पंकज भानू। कहौं सुभाउ न कछु अभिमानू।
जौं तुम्हारि अनुसासनि पावौं। कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौं।
काचे घट जिमि डारौं फोरी। सकौं मेरु मूलक जिमि[3] तोरी।
तव प्रताप महिमा भगवाना। को बापुरो पिनाकु पुराना।
नाथ जानि अस आयेसु होऊ। कौतुक करौं बिलोकिअ सोऊ।
कमल नाल जिमि चाप चढ़ावौं। जोजन सत प्रमान लै धावौं॥

१—१, ४, ५; मनोहरि ६.
२—१, ५; भुमि भट बिनु ४; भुवि भट बिनु ६.
३—१, ४, ५; इव ६.

तोरौं छत्रकदंड जिमि तव प्रताप बल नाथ।
जौ न करौं प्रभु पद सपथ कर न धरौं धनु भाथ॥ २५३॥

लखन सकोप बचन जब[1] बोले। डगमगानि महि दिग्गज डोले।
सकल लोक सब भूप डेरानें। सिय हिय हरषु जनक सकुचानें।
गुर रघुपति सब मुनि मन माहीं। मुदित भये पुनि पुनि पुलकाहीं।
सयनहिं रघुपति लखनु नेवारे। प्रेम समेत निकट बैठारे।
बिस्वामित्रु समय सुभ जानी। बोले अति सनेहमय बानी।
उठहु राम भंजहु भव चापा। मेटहु तात जनक परितापा।
सुनि गुर बचन चरन सिरु नावा। हरषु बिषादु न कछु उर आवा।
ठाढ़े भए उठि सहज सुभाए। ठवनि जुवा मृगराजु लजाए॥
उदित उदय गिरि मंच पर रघुबर बाल पतंग।
बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग॥ २५४॥

नृपन्ह केरि आसा निसि नासी। बचन नखत अवली न प्रकासी।
मानी महिप कुमुद सकुचानें। कपटी भूप उलूक लुकानें।
भये बिसोक कोक मुनि देवा। बरिसहिं सुमन जनावहिं[2] सेवा।
गुर पद बंदि सहित अनुरागा। राम मुनिन्ह सन आयेसु मागा।
सहजहि चले सकल जग स्वामी। मत्त मंजु बर कुंजर गामी।
चलत रामु सब पुर नर नारी। पुलक पूरि तन भये सुखारी।
बंदि पितर सब सुकृत सभाँरे। जौ कछु पुन्य प्रभाउ हमारे।
तौ सिवधनु मृनाल की नाईं। तोरहुँ रामु गनेस गोसाईं॥
रामहि प्रेम समेत लखि सखिन्ह समीप बोलाइ।
सीता मातु सनेह बस बचन कहै बिलखाइ॥ २५५॥

सखि सब कौतुक देखनिहारे। जेउ कहावत हितू हमारे।

१-४, ५, ६, जे १. २-१, ६, जनावैं ४, ५.

कोउ न बुझाइ कहै नृप[1] पाहीं। ए बालक असि हठ भलि नाहीं।
रावन बान छुआ नहि चापा। हारे सकल भूप करि दापा।
सो धनु राजकुअर कर देहीं। बाल मराल कि मंदर लेहीं।
भूप सयानप सकल सिरानी। सखि बिधि गति कछु जाति[2] न जानी।
बोली चतुर सखी मृदु बानी। तेजवंत लघु गनिअ न रानी।
कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा। सोषेउ सुजसु सकल संसारा।
रबिमंडल देखत लघु लागा। उदयँ तासु तिभुवन तम भागा॥

मंत्र परम लघु जासु बस बिधि हरि हर सुर सर्ब।
महा मत्त गजराज कहुँ बस कर अंकुस खर्ब॥ २५६॥

काम कुसुम धनु सायक लीन्हे। सकल भुवन अपने बस कीन्हे।
देबि तजिअ संसउ अस जानी। भंजब धनुषु राम सुनु रानी।
सखी बचन सुनि भै परतीती। मिटा बिषादु बढ़ी अति[3] प्रीती।
तब रामहि बिलोकि बैदेही। सभय हृदय बिनवति जेहि तेही।
मनही मन मनाव अकुलानी। होहु प्रसंन महेस भवानी।
करहु सफल आपनि सेवकाई। करि हित हरहु चाप गरुआई।
गननायक बरदायक देवा। आजु लगें कीन्हिउँ तुअ सेवा।
बार बार बिनती सुनि मोरी। करहु चाप गुरुता अति थोरी॥

देखि देखि रघुबीर तन सुर मनाव धरि धीर।
भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावली सरीर॥ २५७॥

नीकें निरखि नयन भरि सोभा। पितु पनु सुमिरि बहुरि मनु छोभा।
अहह तात दारुनि हठ ठानी। समुझत नहि कछु लाभु न हानी।
सचिव सभय सिख देइ न कोई। बुध समाज बड़ अनुचित होई।
कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा। कहँ स्यामल मृदु गात किसोरा।

१-४, ५, ६; गुर १
२-१, ४, ५, जाइ ६.
३-१, ४, ५; भई मन ६.

बिधि केहि भाँति धरौं उर धीरा। सिरिस सुमन कन बेधिअ हीरा।
सकल सभा कै मति भै भोरी। अब मोहि संभुचाप गति तोरी।
निज जड़ता लोगन्ह पर डारी। होहि हरुअ रघुपतिहि निहारी।
अति परिताप सीय मन माहीं। लव निमेष जुग सय[1] सम जाहीं॥
प्रभुहि चितइ[2] पुनि चितव महि राजत लोचन लोल।
खेलत मनसिज मीन जुग जनु बिधु मंडल डोल॥ २५८॥

गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी। प्रगट न लाज निसा अवलोकी।
लोचन जलु रह लोचन कोना। जैसें परम कृपन कर सोना।
सकुची ब्याकुलता बड़ि जानी। धरि धीरजु प्रतीति उर आनी।
तन मन बचन मोर पनु[3] साचा। रघुपति पद सरोज चितु[4] राचा।
तौ भगवान सकल उर बासी। करिहिं[5] मोहि रघुबर कै दासी।
जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलै न कछु संदेहू।
प्रभु तन चितै प्रेम पन[6] ठाना। कृपानिधान राम सबु जाना।
सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसें। चितव गरुरु[7] लघु ब्यालहि जैसें॥
लखन लखेउ रघुबंस मनि ताकेउ हर कोदंडु।
पुलकि गात बोले बचन चरन चापि ब्रह्मंडु॥ २५९॥

दिसि कुंजरहु कमठ अहि कोला। धरहु धरनि धरि धीर न डोला।
रामु चहहिं संकर धनु तोरा। होहु सजग सुनि आयेसु मोरा।
चाप समीप रामु जब आए। नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाए।
सब कर संसउ अरु अग्यानू। मंद महीपन्ह कर अभिमानू।
भृगुपति केरि गरब गरुआई। सुर मुनिबरन्ह केरि कदराई।
सिय कर सोचु जनक पछितावा। रानिन्ह कर दारुन दुख दावा।

१–१, ४, ५, सत ६.
२–१, ४, ५, चितय ६.
३–४, ५, ६, मन १.
४–१, ४, ५; मन ६.
५–१, ४, ५, करिहहि ६.
६–४, ५, ६; तन १.
७–१, ४, ५, गरुड ६.

मंभु चाप बड़ बोहितु पाई । चढ़े जाइ सब संगु बनाई ।
राम बाहु बल सिंधु अपारू । चहत पार नहि कोउ कँड़हारू[1] ॥
राम बिलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि ।
चितई सीय कृपायतन जानी बिकल बिसेखि ॥ २६० ॥

देखी बिपुल बिकल[2] बैदेही । निमिप बिहात कलप सम तेही ।
तृपित बारि बिनु जो तनु त्यागा । मुयें करै का सुधा तड़ागा ।
का बरपा सब कृपी सुखानें । समय चुकें पुनि का पछितानें ।
अस जिय जानि जानकी देखी । प्रभु पुलके लखि प्रीति बिसेखी ।
गुरहि प्रनाम मनहि मन कीन्हा । अतिलाघव उठाइ धनु लीन्हा ।
दमकेउ दामिनि जिमि जब लयेऊ । पुनि नभ धनु मंडल सम भयेऊ ।
लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़ें । काहु न लखा देख सब ठाढ़ें ।
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा । भरे भुवन धुनि घोर कठोरा ॥
भरे भुवन घोर कठोर रव रवि बाजि तजि मारगु चले ।
चिकरहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरुम कलमले ।
सुर असुर मुनि कर कान दिन्हे[3] सकल बिकल बिचारहीं ।
कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं ॥
संकर चापु जहाजु सागरु रघुबर बाहु बलु ।
बूड़ सो[4] सकल समाज चढ़ा जो प्रथमहि मोह बस ॥ २६१ ॥

प्रभु दोउ चाप खंड महि डारे । देखि लोग सब भये सुखारे ।
कौसिकरूप पयोनिधि पावन । प्रेम बारि अवगाह सुहावन ।
रामरूप राकेसु निहारी । बढ़त बीचि पुलकावलि भारी ।
बाजे नभ गहगहे निसाना । देवबधू नाचहि करि गाना ।
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीसा । प्रभुहि प्रसंसहि देहिं असीसा ।

१–१, ४, ५; कढ़िहारू ६.
२–१, ४, ५; बिकल अतिहि ६.
*३–१, ४, ५; दीन्हे ६.
४–१, ४, ५; बूड़ा ६.

बरिसहिं सुमन रंग बहु माला। गावहि किंनर गीत रसाला।
रही भुवन भरि जय जय बानी। धनुष भंग धुनि जात न जानी।
मुदित कहहिं जहँ तहँ नर नारी। भंजेउ राम संभुधनु भारी॥
बंदी मागध सूत गन बिरिद बदहि मति धीर।
करहिं निछावरि लोग सब हय गय मनि धन चीर॥ २६२॥

झाँझि मृदंग संख सहनाई। भेरि ढोल दुंदुभी सुहाई।
बाजहि बहु बाजनें सुहाए। जहँ तहँ जुवतिन्ह मंगल गाए।
सखिन्ह सहित हरषी अति रानी। सूखत धानु परा जनु पानी।
जनक लहेउ सुखु सोचु बिहाई। पैरत थके थाह जनु पाई।
श्रीहत भये भूप धनु टूटें। जैसे दिवस दीप छबि छूटें।
सीय सुखहि बरनिय केहि भाँती। जनु चातकी पाइ जलु स्वाती।
रामहि लखनु बिलोकत कैसें। ससिहि चकोर किसोरकु जैसें।
सतानंद तब आयेसु दीन्हा[1]। सीता गमनु समीपहि[2] कीन्हा[1]॥
संग सखी सुंदर चतुर गावहिं मंगलचार।
गवनी बाल मराल गति सुखमा अंग अपार॥ २६३॥

सखिन्ह मध्य सिय सोहति कैसी[3]। छबि गन मध्य महाछबि जैसी[3]।
कर सरोज जयमाल सुहाई। बिस्व बिजय सोभा जेहिं छाई।
तन सकोच मन परम उछाहू। गूढ़ प्रेमु लखि परै न काहू।
जाइ समीप राम छबि देखी। रहि जनु कुअरि चित्र अवरेखी।
चतुर सखीं लखि कहा बुझाई। पहिरावहु जयमाल सुहाई।
सुनत जुगल कर माल उठाई। प्रेम बिबस पहिराइ न जाई।
सोहत जनु जुग जलज सनाला। ससिहि सभीत देत जयमाला।
गावहिं छबि अवलोकि सहेली। सिय जयमाल राम उर मेली॥

---

*१-१, ४, ५; दीन्ही, कीन्ही ६. ३-४, ५, ६, कैसे, जैसे १.
२-१, राम पहिं ४, ५, ६

रघुबर उर जयमाल देखि देव बरिसहि सुमन।
सकुचे सकल भुआल जनु बिलोकि रबि कुमुद गन ॥ २६४ ॥

पुर अरु ब्योम बाजनें बाजे। खल भये मलिन साधु सब राजे।
सुर किंनर नर नाग मुनीसा। जय जय जय कहि देहिं असीसा।
नाचहिं गावहिं बिबुध बधूटीं। बार बार कुसुमांजलि[1] छूटीं।
जहँ तहँ बिप्र बेद धुनि करहीं। बंदी बिरिदावलि उचरहीं।
महि पातालु नाक[2] जसु ब्यापा। राम बरी सिय भंजेउ चापा।
करहि आरतीं पुर नर नारी। देहिं निछावरि बित्त बिसारी।
सोहति सीय राम कै जोरी। छबि सिंगारु मनहुँ अेक ठोरी।
सखीं कहहिं प्रभु पद गहु सीता। करति न चरन परस अतिभीता॥
गौतम तिय गति सुरति करि नहि परसति पग पानि।
मन बिहसे[3] रघुबंसमनि प्रीति अलौकिक जानि ॥ २६५ ॥

तब सिय देखि भूप अभिलाषे। कूर कपूत मूढ़ मन माषे।
उठि उठि पहिरि सनाह अभागे। जहँ तहँ गाल बजावन लागे।
लेहु छड़ाइ[4] सीय कह कोऊ। धरि बाँधहु नृप बालक दोऊ।
तोरें धनुषु चाड़ नहि सरई। जीवत हमहि कुअरि को बरई।
जौं बिदेहु कछु करै सहाई। जीतहु समर सहित दोउ भाई।
साधु भूप बोले सुनि बानी। राज समाजहि लाज लजानी।
बलु प्रतापु बीरता बड़ाई। नाक पिनाकहि संग सिधाई।
सोइ सूरता कि अब कहुँ पाई। असि बुधि तौ बिधि मुहु मसि लाई॥
देखहु रामहि नयन भरि तजि इरिषा मदु कोहु[5]।
लखन रोषु पावकु प्रबलु जानि सलभ जनि होहु ॥ २६६ ॥

१–१, ४, ५; कुसुमावलि ६.
२–१, ४, ५; ब्योम ६.
३–१, ४, ५; हिय हरषे ६.
४–१, ४, ५; छिनाइ ६.
५–१, ४, ५; मोहु ६.

बैनतेय बलि जिमि चह कागू। जिमि ससु चहै नागअरि भागू।
जिमि चह कुसल अकारन कोही। सब संपदा चहै सिव द्रोही।
लोभ लोलु कल[1] कीरति चहई। अकलंकता कि कामी लहई।
हरि पद बिमुख परा गति[2] चाहा। तस तुम्हार लालचु नरनाहा।
कोलाहलु सुनि सीय सकानी। सखीं लवाइ गईं जहँ रानी।
रामु सुभाय चले गुर पाहीं। सिय सनेहु बरनत मन माहीं।
रानिन्ह सहित सोच बस सीया। अब धौं बिधिहि काह करनीया।
भूप बचन सुनि इत उत तकहीं। लखनु राम डर बोलि न सकहीं॥

अरुन नयन भृकुटी कुटिल चितवत नृपन्ह सकोप।
मनहु मत्त गजगन निरखि सिंघ किसोरहि[3] चोप॥ २६७॥

खरभरु देखि बिकल पुर[4] नारी। सब मिलि देहिं महीपन्ह गारी।
तेहि अवसर सुनि सिवधनु भंगा। आयेउ भृगु कुल कमल पतंगा।
देखि महीप सकल सकुचाने। बाज झपट जनु लवा लुकाने।
गौरि सरीर भूति भलि भ्राजा। भाल बिसाल त्रिपुंड बिराजा।
सीस जटा ससि बदनु सुहावा। रिस बस कछुक अरुन होइ आवा।
भृकुटीं कुटिल नयन रिस राते। सहजहुँ चितवत मनहु रिसाते।
बृषभ कंध उर बाहु बिसाला। चारु जनेउ माल[5] मृगछाला।
कटि मुनिबसन तून दुइ बाँधें। धनु सर कर कुठारु कल काँधें॥

सांत बेषु करनी कठिन बरनि न जाइ सरूप।
धरि मुनि तनु जनु बीर रसु आयेउ जहँ सब भूप॥ २६८॥

देखत भृगुपति बेषु कराला। उठे सकल भय बिकल भुआला।
पितु समेत कहि निज निज नामा। लगे करन सब दंड प्रनामा।

---

*१–१, ४, ५; लोभी लोलुप ६
२–१, ४, ५; सुगति जिमि ६.
३–४, ५, ६; किसोरहु १.
४–१, ४, ५; नर ६.
५–१, ४, ५; जनेऊ कटि ६.

जेहि सुभाय चितवहिं हितु जानीं। सो जानैं जनु आइ खुटानीं।
जनक बहोरि आइ सिरु नावा। सीय बोलाइ प्रनामु करावा।
आसिष दीन्हि सखीं हरखानी। निज समाज लै गईं सयानी।
बिस्वामित्रु मिले पुनि आई। पद सरोज मेले दोउ भाई।
रामु लखनु दसरथ के ढोटा। दीन्हि असीस देखि भल जोटा।
रामहि चितइ रहे थकि लोचन। रूपु अपार मार मद मोचन॥

बहुरि बिलोकि बिदेह सन कहहु काह अति भीर।
पूँछत जानि अजान जिमि ब्यापेउ कोपु सरीर॥ २६९॥

समाचार कहि जनक सुनाए। जेहि कारन महीप सब आए।
सुनत बचन फिरि अनत निहारे। देखे चाप खंड महि डारे।
अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुषु कैं[1] तोरा।
बेगि देखाउ मूढ़ न त आजू। उलटौं महि जहँ लहि तव राजू[2]।
अतिडरु उतरु देत नृप नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं।
सुर मुनि नाग नगर[3] नर नारी। सोचहिं सकल त्रास उर भारी।
मन पछिताति सीय महतारी। बिधि अब सवरी[4] बात बेगारी।
भृगुपति कर सुभाउ सुनि सीता। अरध निमेष कलप सम बीता॥

सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीरु।
हृदयँ न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु॥ २७०॥

नाथ संभु धनु भंजनिहारा। होइहि कोउ[5] ओक दासु तुम्हारा।
आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई।
सुनहु राम जेहि सिव धनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।

१—१, ४, ५; केइ ६.
२—१, ४, ५; लगे समाजू ६.
३—१, ५; सिद्ध ४, ६.
४—१, ४, ५; सवाँरि सब ६.
५—१; कोउ ४, ५, ६.

सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहि सब राजा।
सुनि मुनि बचन लखनु मुसुकानें। बोले परसुधरहि अपमानें।
बहु धनुही तोरीं लरिकाईं। कबहु न असि रिस[1] कीन्हि गोसाईं।
येहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू॥
रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम तिपुरारि[2] धनु बिदित सकल संसार॥ २७१॥

लखन कहा हसि हमरें जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना।
का छति लाभु जून धनु तोरें। देखा राम नये कें[3] भोरें।
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू।
बोले चितै परसु कीं ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा।
बालकु बोलि बधौं नहि तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही।
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्व बिदित क्षत्रिय कुल द्रोही।
भुज बल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही।
सहस बाहु भुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीप कुमारा॥
मातु पितहि जनि सोच बस करसि महीस[4] किसोर।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अतिघोर॥ २७२॥

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महा भटमानी।
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उडावन फूँकि पहारू।
इहाँ कुम्हड़बतिआ कोउ नाहीं। जे तरजनीं देखि मरि जाहीं।
देखि कुठारु सरासनु बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना।
भृगुकुल[5] समुझि जनेउ बिलोकी। जो कछु कहहु सहौं रिस रोकी।
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरें कुल इन्ह पर न सुराई॥

१–४, ६, तुम्ह रिस ५, असि रिस १.
२–१, ४, ५, त्रिपुरारि ६.
३–४, ५, ६, नयन के १.
४–१, ५; करहि महीप ४, ६
५–४, ५, ६; भृगुसुत १.

बधें पापु अपकीरति हारें। मारतहूँ पाँ परिअ तुम्हारें।
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा॥
जो बिलोकि अनुचित कहेउँ छमहु महा मुनि धीर।
सुनि सरोष भृगुबंस मनि बोले गिरा गभीर॥ २७३॥

कौसिक सुनहु मंद येहु बालकु। कुटिलु काल बस निज कुलघालकु।
भानु बंस राकेस कलंकू। निपट निरंकुसु अबुधु असंकू।
काल कवलु होइहि छन माहीं। कहौं पुकारि खोरि मोहि नाहीं।
तुम्ह हटकहु जौं चहहु उबारा। कहि प्रतापु बलु रोपु हमारा।
लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा।
अपने मुहु तुम्ह आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी।
नहि संतोषु तो[2] पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू।
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावहु सोभा॥
सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहि आपु।
बिद्यमान रन पाइ रिपु कायर करहि प्रलापु[3]॥ २७४॥

तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। बार बार मोहि लागि बोलावा।
सुनत लखन के बचन कठोरा। परसु सुधारि धरेउ कर घोरा।
अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू। कटुबादी बालकु बध जोगू।
बाल बिलोकि बहुतु मैं बाँचा। अब येहु मरनिहार[4] भा साँचा।
कौसिक कहा छमिअ अपराधू। बाल दोष गुन गनहि न साधू।
कर[5] कुठार मैं अकरुन[6] कोही। आगें अपराधी गुरु द्रोही।
उतर देत छोंड़ौ बिनु मारे। केवल कौसिक सील तुम्हारे।
न त येहि काटि कुठार कठोरें। गुरहि उरिन होतेउँ श्रम थोरें॥

१–१; मुख ४, ५, ६.
२–१; तौ ४, ५, ६.
३–४, ५, ६; कथहिं प्रतापु १.
४–१; ४, ५; हूँ मरनिहार ६.
५–४, ५, ६; खर १.
६–१; अकारन ४, ५; अकरन ६.

गाधिसूनु कह हृदय हसि मुनिहि हरिअरइ सूझ ।
अयमय खाँड न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ ॥ २७५ ॥

कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा । को नहि जान बिदित संसारा ।
माता पितहि अरिन[1] भये नीकें । गुर रिनु रहा सोचु बड़ जी कें ।
सो जनु हमरेहि माथें काढ़ा । दिन चलि गये ब्याज बड़ बाढ़ा ।
अब आनिअ ब्यवहरिआ बोली । तुरत देउँ मैं थैली खोली ।
सुनि कटु बचन कुठार सुधारा । हाय हाय सब सभा पुकारा ।
भृगुबर परसु देखावहु मोही । बिप्र बिचारि बचौं नृप द्रोही ।
मिले न कबहुँ सुभट रन गाढ़े । द्विज देवता घरहि[2] के बाढ़े ।
अनुचित कहि सब लोगु पुकारे । रघुपति सयनहि लखनु नेवारे ॥

लखन उतर आहुति सरिस भृगुबर कोपु कृसानु ।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुल भानु ॥ २७६ ॥

नाथ करहु बालक पर छोहू । सूध दूधमुख करिअ न कोहू ।
जो पै प्रभु प्रभाउ कछु जाना । तौ कि बराबरि करै अयाना ।
जो लरिका कछु अचगरि करहीं । गुर पितु मातु मोद मन भरहीं ।
करिअ कृपा सिसु सेवक जानी । तुम्ह सम सील धीर मुनि ज्ञानी ।
राम बचन सुनि कछुक जुड़ाने । कहि कछु लखनु बहुरि मुसुकाने ।
हसत देखि नखसिख रिस ब्यापी । राम तोर भ्राता बड़ पापी ।
गौर सरीर स्यामु मन माहीं । कालकूट मुख पयमुख नाहीं ।
सहज टेढ़ अनुहरै न तोही । नीचु मीचु सम देख न मोही ॥

लखन कहेउ हसि सुनहु मुनि क्रोधु पाप कर मूल ।
जेहि बस जन अनुचित करहिं चरहिं[3] बिस्व प्रतिकूल ॥ २७७ ॥

मैं तुम्हार अनुचर मुनिराया । परिहरि कोपु करिअ अब दाया ।

१-१, ४, ५, उरिन ६ ३-१, ४, ५, होहिं ६
२-१, ४, ५, घरहीं ६.

टूट चाप नहि जुरिहि रिसानें । बैठिअ होइहहिं पाय पिरानें ।
जौ अतिप्रिय तौ करिअ उपाई । जोरिअ कोउ बड़ गुनी बोलाई ।
बोलत लखनहि जनकु डेराहीं । मष्ट करहु अनुचित भल नाहीं ।
थर थर काँपहिं पुर नर नारी । छोट कुमारु खोट अति[1] भारी ।
भृगुपति सुनि सुनि निरभय बानी । रिस तनु जरै होइ बल हानी ।
बोले रामहि देइ निहोरा । बचौं बिचारि बंधु लघु तोरा ।
मनु मलीन तनु सुंदर कैसें । बिष रस भरा कनक घट जैसें ॥

सुनि लछिमनु बिहसे बहुरि नयन तरेरे राम ।
गुर समीप गवनें सकुचि[2] परिहरि बानी बाम ॥ २७८ ॥

अतिबिनीत मृदु सीतल बानी । बोले रामु जोरि जुग पानी ।
सुनहु नाथ तुम्ह सहज सुजाना । बालक बचन करिअ नहि काना ।
बररै बालकु एकु सुभाऊ । इन्हहिं न बिदुष बिदूषहिं काऊ ।
तेहिं नाहीं कछु काजु बिगारा । अपराधी मैं नाथ तुम्हारा ।
कृपा कोपु बधु बंध[3] गोसाईं । मो पर करिअ दास की नाईं ।
कहिअ बेगि जेहि बिधि रिस जाई । मुनि नायक सोइ करौं उपाई ।
कह मुनि राम जाइ रिस कैसें । अजहुँ अनुज तव चितव अनैसें ।
येहि के कंठ कुठारु न दीन्हा । तौ मैं काह कोपु करि कीन्हा ॥

गर्भ श्रवहिं अवनिप रवनि सुनि कुठार गति घोर ।
परसु अछत देखौं जिअत बैरी भूप किसोर ॥ २७९ ॥

बहै न हाथु दहै रिस छाती । भा कुठार कुंठित नृपघाती ।
भयेउ बाम बिधि फिरेउ सुभाऊ । मोरे हृदयँ कृपा कसि काऊ ।
आजु दयाँ दुखु दुसह सहावा । सुनि सौमित्रि बिहसि सिरु नावा ।
बाउ कृपामूरति अनुकूला । बोलत बचन झरत जनु फूला ।

१-४, ५, ६; बड़ १.
२-१, ४, ५; बहुरि ६.
३-४, ५; बधु ६; बधव १.

जौं पै कृपा जरहि मुनि गाता । क्रोधु भयें तनु राख बिधाता ।
देखु जनकु हठि बालकु एहू । कीन्ह चहत जड़ जमपुर गेहू ।
बेगि करहु किन आँखिन्ह ओटा । देखत छोट खोट नृप ढोटा ।
बिहसे लखनु कहा मन माहीं । मूदें आँखि कतहुँ कोउ नाहीं ॥

परसुरामु तब राम प्रति बोले उर अतिक्रोधु ।
संभु सरासनु तोरि सठ करसि हमार प्रबोधु ॥ २८० ॥

बंधु कहइ कटु संमत तोरें । तूँ छल बिनय करसि कर जोरें ।
करु परितोषु मोर संग्रामा । नाहि त छाड़ु कहाउब रामा ।
छलु तजि करहि समरु सिवद्रोही । बंधु सहित न त मारौं तोही ।
भृगुपति बकहिं कुठारु उठाए । मन मुसुकाहिं रामु सिरु नाए ।
गुनह[1] लखन कर हम पर रोषू । कतहुँ सुधाइहु तें बड़ दोषू ।
टेढ़ जानि संका सब[2] काहू । बक्र चंद्रमहि ग्रसै न राहू ।
राम कहेउ रिस तजिअ मुनीसा । कर कुठारु आगें येह सीसा ।
जेहि रिस जाइ करिअ सोइ स्वामी । मोहि जानिअ आपन अनुगामी ॥

प्रभु सेवकहि समरु कस तजहु[3] बिप्रबर रोसु ।
बेषु बिलोकें कहेसि कछु बालकहू नहि दोसु ॥ २८१ ॥

देखि कुठारु बान धनु धारी । भै लरिकहि रिस बीरु बिचारी ।
नाम जान पै तुम्हहि न चीन्हा । बंस सुभायँ उतरु तेहि दीन्हा ।
जौं तुम्ह औतेहु मुनि कीं नाईं । पद रज सिर सिसु धरत गोसाईं ।
छमहु चूक अनजानत केरी । चहिअ बिप्र उर कृपा घनेरी ।
हमहि तुम्हहि सरिबरि कसि नाथा । कहहु न कहाँ चरन कहँ माथा ।
राम मात्र लघु नामु हमारा । परसु सहित बड़ नाम तोहारा ।
देव एक गुनु धनुष हमारे । नव गुन परम पुनीत तुम्हारे ।

---

*१–४, ५, ६; गुनह १.   ३–१, ४, ५; तजिय ६.
२–४, ५, ६; सब बदे १.

सब प्रकार हम तुम्ह सन हारे। छमहु बिप्र अपराध हमारे॥
बार बार मुनि बिप्रबर कहा राम सन राम।
बोले भृगुपति सरुष हसि तहूँ बंधु सम बाम॥ २८२॥

निपटहि द्विज करि जानहि मोही। मैं जस बिप्र सुनावौं तोही।
चाप स्रुवा सर आहुति जानू। कोपु मोर अति घोर कृसानू।
समिधि सेन चतुरंग सुहाई। महा महीप भये पसु आई।
मैं येहिं परसु काटि बलि दीन्हे। समर जग्य जप[1] कोटिक कीन्हे।
मोर प्रभाउ बिदित नहि तोरें। बोलसि निदरि बिप्र कें भोरें।
भंजेउ चापु दापु बड़ बाढ़ा। अहमिति मनहु जीति जगु ठाढ़ा।
राम कहा मुनि कहहु बिचारी। रिस अति बड़ि लघु चूक हमारी।
छुअतहि टूट पिनाक पुराना। मैं केहि हेतु करौं अभिमाना॥
जौ हम निदरहिं बिप्र बदि सत्य सुनहु भृगुनाथ।
तौ अस को जग सुभट जेहि भयबस नावहिं माथ॥ २८३॥

देव दनुज भूपति भट नाना। समबल अधिक होउ बलवाना।
जौ रन हमहि पचारैं[2] कोऊ। लरहि सुखेन कालु किन होऊ।
छत्रिय तनु धरि समर सकाना[3]। कुलकलंकु तेहि पावर आना।
कहौं सुभाउ न कुलहि प्रसंसी। कालहु डरहि न रन रघुबंसी।
बिप्र बंस कै असि प्रभुताई। अभय होइ जो तुम्हहि डेराई।
सुनि मृदु बचन गूढ़ रघुपति के। उघरे पटल परसुधर मति के।
राम रमापति कर धनु लेहू। खैंचहु मिटै मोर संदेहू।
देत चापु आपुहि चलि गयेऊ। परसुराम मन बिसमय भयेऊ॥
जाना राम प्रभाउ तब पुलक प्रफुल्लित गात।
जोरि पानि बोले बचन हृदय न प्रेमु अमात[4]॥ २८४॥

१-१, जग ६; जन ४, ५.
२-१, ४, ५, प्रचारैं ६.
३-१, ६; डेरना ४, ५.
४-१, ४, ५, समात ६.

जय रघुबंस बनज बन भानू। गहन दनुज कुल दहन कृसानू।
जय सुर बिप्र धेनु हितकारी। जय मद मोह कोह भ्रम हारी।
बिनय सील करुना गुन सागर। जयति बचन रचना अतिनागर।
सेवक सुखद सुभग सब अंगा। जय सरीर छबि कोटि अनंगा।
करौं काह मुख एक प्रसंसा। जय महेस मन मानस हंसा।
अनुचित बहुत कहेउँ अज्ञाता। छमहु छमा मंदिर दोउ भ्राता।
कहि जय जय जय रघुकुल केतू। भृगुपति गये बनहि तप हेतू।
अपभय कुटिल महीप डेराने। जहँ तहँ कायर गवहिं पराने॥[१]

देवन्ह दीन्ही दुंदुभी प्रभु पर बरषहिं फूल।
हरषे पुर नर नारि सब मिटी मोहमय सूल॥ २८५॥

अति गहगहे बाजनें बाजे। सबहि मनोहर मंगल साजे।
जूथ जूथ मिलि सुमुखि सुनयनी। करहिं गान कल कोकिल बयनी।
सुखु बिदेह कर बरनि न जाई। जन्म दरिद्र मनहु निधि पाई।
बिगत त्रास भइ सीय सुखारी। जनु बिधु उदयँ चकोरकुमारी।
जनक कीन्ह कौसिकहि प्रनामा। प्रभु प्रसाद धनु भंजेउ रामा।
मोहि कृतकृत्य कीन्ह दुहुँ भाई। अब जो उचित सो कहिअ गोसाईं।
कह मुनि सुनु नरनाथ प्रबीना। रहा बिबाहु चाप आधीना।
टूटतहीं धनु भयेउ बिबाहू। सुर नर नाग बिदित सब काहू॥

तदपि जाइ तुम्ह करहु अब जथा बंस ब्यवहारु।
बूझि बिप्र कुल बृद्ध गुर बेद बिदित आचारु॥ २८६॥

दूत अवधपुर पठवहु जाई। आनहि नृप दसरथहि बोलाई।
मुदित राउ कहि भलेहि कृपाला। पठए दूत बोलि तेहि काला।
बहुरि महाजन सकल बोलाए। आइ सबन्हि सादर सिर नाए।
हाट बाट मंदिर सुर बासा। नगरु सनारहु चारिहु पासा।

१–१, ४, ५, राय ६.

हरषि चले निज निज गृह आए। पुनि परिचारक बोलि पठाए।
रचहु बिचित्र बितान बनाई। सिर धरि बचन चले सचुपाई।
पठए बोलि गुनी तिन्ह नाना। जे बितान बिधि कुसल सुजाना।
बिधिहि बंदि तिन्ह कीन्ह अरंभा। बिरचे कनककदलि के खंभा॥

हरित मनिन्ह के पत्र फल पदुमराग के फूल।
रचना देखि बिचित्र अति मनु बिरंचि कर भूल॥ २८७॥

बेनु हरित मनिमय सब कीन्हे। सरल सपरब परहि नहि चीन्हे।
कनक कलित अहिबेलि बनाई। लखि नहि परै सपरन सुहाई।
तेहिके रचि पचि बंध बनाए। बिच बिच मुकुता दाम सुहाए।
मानिक मरकत कुलिस पिरोजा। चीर कोरि पचि रचे सरोजा।
किए भृंग बहुरंग बिहंगा। गुंजहि कूजहिं[1] पवन प्रसंगा।
सुरप्रतिमा खंभन्ह[2] गढ़ि काढ़ीं। मंगल द्रव्य लिये सब ठाढ़ीं।
चौकैं भाँति अनेक पुराईं। सिंधुरमनिमय सहज सुहाई॥

सौरभ पल्लव सुभग सुठि किए नीलमनि कोरि।
हेम बौरु[3] मरकत घवरि लसति पाटमय डोरि॥ २८८॥

रचे रुचिर बर बंदनिवारे। मनहु मनोभव फंद सवारे।
मंगल कलस अनेक बनाए। ध्वज पताक पट चमर सुहाए।
दीप मनोहर मनिमय नाना। जाइ न बरनि बिचित्र बिताना।
जेहि मंडप दुलहिनि बैदेही। सो बरनैं असि मति कबि केही।
दूलहु रामु रूप गुन सागर। सो बितानु तिहुँ लोक उजागर।
जनक भवन कै सोभा जैसी। गृह गृह प्रति पुर देखिअ तैसी।
जेहि तेरहुति तेहि समय निहारी। तेहि लघु लाग[4] भुवन दस चारी।
जो संपदा नीच गृह सोहा। सो बिलोकि सुरनायकु मोहा॥

१–१, ४, ५; कुंजहि ६.   ३–१, ४, ५; बौरि ६.
२–१, ४, ५; खंभन्हि ६.   ४–४, ५, ६; लगति १.

बसै नगर जेहि लच्छि करि कपट नारि बर बेषु ।
तेहि पुर कै सोभा कहत सकुचहि सारद सेषु ॥ २८९ ॥

पहुँचे दूत रामपुर पावन । हरषे नगरु बिलोकि सुहावन ।
भूप द्वार तिन्ह खबरि जनाई । दसरथ नृप सुनि लिए बोलाई ।
करि प्रनामु तिन्ह पाती दीन्ही । मुदित महीप आप उठि लीन्ही ।
बारि बिलोचन बाँचत पाती । पुलक गात आई भरि छाती ।
रामु लखनु उर कर बर चीठी । रहि गये कहत न खाटी मीठी ।
पुनि धरि धीर पत्रिका बाची । हरषी सभा बात सुनि साँची ।
खेलत रहे तहाँ सुधि पाई । आए भरतु सहित हित भाई ।
पूछत अतिसनेह सकुचाई । तात कहाँ तें पाती आई ॥

कुसल प्रान प्रिय बंधु दोउ अहहिं कहहु केहि देस ।
सुनि सनेह साने बचन बाँची बहुरि नरेस ॥ २९० ॥

सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता । अधिक सनेहु समात न गाता ।
प्रीति पुनीत भरत कै देखी । सकल सभा सुखु लहेउ बिसेखी ।
तब नृप दूत निकट बैठारे । मधुर मनोहर बचन उचारे ।
भैआ कहहु कुसल दोउ बारे । तुम्ह नीकें निज नैन निहारे ।
स्यामल गौर धरें धनु भाथा । बय किसोर कौसिक मुनि साथा ।
पहिचानहु तुम्ह कहहु सुभाऊ । प्रेम बिबस पुनि पुनि कह राऊ ।
जा दिन तें मुनि गए लवाई । तब तें आजु साँचि सुधि पाई ।
कहहु बिदेह कवन बिधि जानें । सुनि प्रिय बचन दूत मुसुकाने ॥

सुनहु महीपति मुकुटमनि तुम्ह सम धन्य न कोउ ।
रामु लखनु जाकें तनय बिस्व बिभूषन दोउ ॥ २९१ ॥

पूछन जोगु न तनय तुम्हारे । पुरुषसिंघ तिहुँ पुर उजिआरे ।
जिन्हके जस प्रताप के आगें । ससि मलीन रबि सीतल लागें ।

१–४, ५, ६; जिन्हके १.

तिन्ह कहँ कहिअ नाथ किमि चीन्हे । देखिअ रबि कि दीप कर लीन्हे ।
सीय स्वयंबर भूप अनेका । समिटे सुभट एक तें एका ।
संभुसरासन काहुँ न टारा । हारे सकल बीर बरिआरा ।
तीनि लोक महँ जे भटमानी । सभ कै सकति संभुधनु भानी ।
सकै उठाइ सरासुर[1] मेरू । सोउ हिय हारि गयेउ करि फेरू ।
जेहिं कौतुक सिवसैलु उठावा । सो तेहिं सभा पराभउ पावा ॥

तहाँ राम रघुबंसमनि सुनिअ महा महिपाल ।
भंजेउ चापु प्रयास बिनु जिमि गजु पंकजमाल[2] ॥ २९२ ॥

सुनि सरोष भृगुनायकु आए । बहुत भाँति तिन्ह आँखि देखाए ।
देखि राम बलु निज धनु दीन्हा । करि बहु बिनय गवनु बन कीन्हा ।
राजन रामु अतुलबल जैसें । तेज निधान लखनु पुनि तैसें ।
कंपहिं भूप बिलोकत जाकें । जिमि गज हरि किसोर कें ताकें ।
देव देखि तव बालक दोऊ । अब न आँखि तर आवत कोऊ ।
दूत बचन रचना प्रिय लागी । प्रेम प्रताप बीर रस पागी ।
सभा समेत राउ अनुरागे । दूतन्ह[3] देन निछावरि लागे ।
कहि अनीति ते मूदहिं काना । धरमु बिचारि सबहि सुखु माना ।

तब उठि भूप बसिष्ठ कहुँ दीन्हि[4] पत्रिका जाइ ।
कथा सुनाई गुरहि सब सादर दूत बोलाइ ॥ २९३ ॥

सुनि बोले गुर अति सुखु पाई । पुन्य पुरुष कहुँ महि सुख छाई ।
जिमि सरिता सागर महुँ जाहीं । जद्यपि ताहि कामना नाहीं ।
तिमि सुख संपति बिनहि बोलाये । धरमसील पहिं जाहि सुभाये ।
तुम्ह गुर बिप्र धेनु सुर सेवी । तसि पुनीत कौसल्या देवी ।
सुकृती तुम्ह समान जग माहीं । भयेउ न है कोउ होनेउ नाहीं ।

१–१, ६; सुरासुर ४, ५. ३–१, ४, ५; सब मिन्हि ६.
२–१, ४, ५; नाल ६. ४–१, ३, ४, ५; दई ६.

तुम्ह तें अधिक पुन्य बड़ कार्के । राजन राम सरिस सुत जार्के ।
बीर बिनीत धरम ब्रत धारी । गुन सागर बर बालक चारी ।
तुम्ह कहुँ सर्ब काल कल्याना । सजहु बरात बजाइ निसाना ॥
चलहु बेगि सुनि गुर बचन भलेहिं नाथ सिरु नाइ ।
भूपति गवनें भवन तब दूतन्ह बासु देवाइ ॥ २९४ ॥

राजा सब रनिवासु बोलाई । जनक पत्रिका बाँचि सुनाई ।
सुनि संदेसु सकल हरषानी । अपर कथा सब भूप बखानी ।
प्रेम प्रफुल्लित राजहिं रानीं । मनहु सिखिनि सुनि बारिद बानी ।
मुदित असीस देहिं गुरनारीं । अति आनंद मगन महतारीं ।
लेहिं परसपर अतिप्रिय पाती । हृदय लगाइ जुड़ावहिं छाती ।
राम लखन कै कीरति करनी । बारहि बार भूप बर बरनीं ।
मुनि प्रसादु कहि द्वार सिधाए । रानिन्ह तब महिदेव बोलाए ।
दिए दान आनंद समेता । चले बिप्र बर आसिष देता ॥
जाचक लिए हँकारि दीन्हि निछावरि कोटि बिधि ।
चिरु जीवहुँ सुत चारि चक्रवर्ति दसरत्थ के ॥ २९५ ॥

कहत चले पहिरे पट नाना । हरषि हनें[१] गहगहे निसाना ।
समाचार सब लोगन्हँ पाए । लागे घर घर होन बधाए ।
भुवन चारि दस भरा[२] उछाहू । जनकसुता रघुबीर बिआहू ।
सुनि सुभ कथा लोग अनुरागे । मग गृह गली सवारन लागे ।
जद्यपि अवध सदैव सुहावनि । रामपुरी मंगलमय पावनि ।
तदपि प्रीति कै रीति[३] सुहाई । मंगल रचना रची बनाई ।
धज[४] पताक पट चामर चारू । छावा परम बिचित्र बजारू ।
कनक कलस तोरन मनि जाला । हरद दूब दधि अच्छत माला ॥

१–१, ३, ५; अरु बाजे ४, ६.   ३–४, ५, ६, भँति १, ३.
२–१, ३, ४, ५; भयउ ६.   ४–१, ३, ४, ५; ध्वज ६.

मंगलमय निज निज भवन लोगन्ह रचे बनाइ।
बीथीं सीचीं चतुरसम चौकें चारु पुराइ॥ २९६॥

जहँ तहँ जूथ जूथ मिलि भामिनि। सजि नवसप्त सकल दुति दामिनि।
बिधुबदनीं मृग बालक[1] लोचनि। निज सरूप रति मानु बिमोचनि।
गावहिं मंगल मंजुल बानीं। सुनि कलरव कलकंठि लजानी।
भूप भवन किमि जाइ बखाना। बिस्व बिमोहन रचेउ बिताना।
मंगल-द्रव्य मनोहर नाना। राजत बाजत बिपुल निसाना।
कतहुँ बिरिद बंदी उचरहीं। कतहु बेद धुनि भूसुर करहीं।
गावहिं सुंदरि मंगल गीता। लै लै नामु रामु अरु सीता।
बहुतु उछाहु भवनु अति थोरा। मानहु उमगि चला चहुँ ओरा॥

सोभा दसरथ भवन कइ को कबि बरनै पार।
जहाँ सकल सुर सीसमनि राम लीन्ह अवतार॥ २९७॥

भूप भरत पुनि लिये बोलाई। हय गय स्यंदन साजहु जाई।
चलँहु बेगि रघुबीर बराता। सुनत पुलक पूरे दोउ भ्राता।
भरत सकल साहनी[2] बोलाए। आयेसु दीन्ह मुदित उठि धाए।
रचि रुचि जीन तुरग तिन्ह साजे। बरन बरन बर बाजि बिराजे।
सुभग सकल सुठि चंचल करनी। अय इव जरत धरत पग धरनीं।
नाना जाति न जाहिं बखानें। निदरि पवनु जनु चहत उड़ाने।
तिन्ह सब छयल भये असवारा। भरत सरिस बय राजकुमारा।
सब सुंदर सब[3] भूषन धारी। कर सर चाप तून कटि भारी॥

छरे छबीले छैल सब सूर सुजान नवीन।
जुग पद चर असवार प्रति जे असि कला प्रवीन॥ २९८॥

बाँधे बिरिद बीर रन गाढ़े। निकसि भये पुर बाहेर ठाढ़े।

१–१, ३, ४, ५, सावक ६.
*२–१, ३, ६; सौंहँनी ४, ५.
३–१, ३, ६; सुदर सब बहु ४, ५.

फेरहिं चतुर तुरग गति नाना। हरपहिं सुनि सुनि पनव निसाना।
रथ सारथिन्ह विचित्र बनाए। धज[1] पताक मनि भूपन लाए।
चवर चारु किंकिनि धुनि करहीं। भानुजान सोभा अपहरहीं।
सावकरन अगनित हय होते। ते तिन्ह रथन्ह सारथिन्ह जोते।
सुंदर सकल अलंकृत सोहे। जिन्हहि बिलोकत मुनि मन मोहे।
जे जल चलहि थलहि की नाईं। टाप न बूड बेग अधिकाईं।
अस्त्र सस्त्र सबु साजु बनाई। रथी सारथिन्ह लिये बोलाई॥
चढि चढि रथ बाहेर नगर लागी जुरन बरात।
होत सगुन सुंदर सबहि जो जेहिं कारज जात॥ २९९॥

कलित करिबरन्हि परीं अँबारी। कहि न जाइ[2] जेहि भाँति सवारीं।
चले मत्त गजघटा[3] बिराजीं। मनहु सुभग सावन घन राजीं।
बाहन अपर अनेक बिधाना। सिबिका सुभग सुखासन जाना।
तिन्ह चढि चले बिप्र बर बृंदा। जनु तनु धरें सकल श्रुति छंदा।
मागध सूत बंदि गुनगायक। चले जान चढि जो जेहि लायक।
बेसर ऊँट बृपभ बहु जाती। चले बस्तु भरि अगनित भाँती।
कोटिन्ह काँवरि चले कहारा। बिबिध बस्तु को बरनै पारा।
चले सकल सेवक समुदाई। निज निज साजु समाजु बनाई॥
सब कें उर निर्भर हरपु पूरित पुलक सरीर।
कबहि देखिबे नयन भरि रामु लखनु दोउ बीर॥ ३००॥

गरजहिं गज घंटा धुनि घोरा। रथ रव बाजि हिंस[4] चहुँ ओरा।
निदरि घनहि घुम्मरहिं[5] निसाना। निज पराइ कछु सुनिअँ न काना।
महा भीर भूपति कें द्वारें। रज होइ जाइ पपानु पवारें।

१-१, ३, ४, ५, ध्वज ६.
२-१, ६, जाहिं ४, ५
३-१, गजघट ४, ५, ६
४-१, ६, हिंसहिं ४, ५.
५-४, ५, ६, घुर्मरहिं १.

चढ़ीं अटारिन्ह देखहिं नारीं। लिएँ आरती मंगल थारीं।
गावहिं गीत मनोहर नाना। अति आनंदु न जाइ बखाना।
तब सुमंत्र दुइ स्यंदन साजी। जोते रबि हय निंदक बाजी।
दोउ रथ रुचिर भूप पहिं आनें। नहि सारद पहिं जाहिं बखानें।
राज समाजु एक रथ साजा। दूसर तेज पुंज अतिभ्राजा[1]॥
तेहिं रथ रुचिर बसिष्ठ कहुँ हरषि चढ़ाइ नरेसु।
आपु चढ़ेउ स्यंदन सुमिरि हर गुर गौरि गनेसु॥ ३०१॥

सहित बसिष्ठ सोह नृपु कैसे। सुरगुर संग पुरंदरु जैसे।
करि कुलरीति बेद बिधि राऊ। देखि सबहि सब भाँति बनाऊ।
सुमिरि रामु गुर आयेसु पाई। चले महीपति संख बजाई।
हरषे बिबुध बिलोकि बराता। बरषहिं सुमन सुमंगल दाता।
भयेउ कोलाहलु हय गय गाजे। ब्योम बरात बाजनें बाजे।
सुर नर नारि सुमंगल गाईं। सरस राग बाजहिं सहनाईं।
घंट घंटि धुनि बरनि न जाहीं। सरौ करहिं पाइक फहराहीं।
करहिं बिदूषक कउतुक नाना। हास कुसल कल गान सुजाना॥
तुरग नचावहिं कुअर बर अकनि मृदंग निसान।
नागर नट चितवहिं चकित डगहिं न ताल बँधान॥ ३०२॥

बनै न बरनत बनी बराता। होंहिं सगुन सुंदर सुभदाता।
चारा चापु बाम दिसि लेई। मनहु सकल मंगल कहि देई।
दाहिन कागु सुखेत सुहावा। नकुल दरसु सब काहूँ पावा।
सानुकूल बह त्रिबिध बयारी। सघट सबाल आव बर नारी।
लोवा फिरि फिरि दरसु देखावा। सुरभी सनमुख सिसुहि पिआवा।
मृगमाला फिरि दाहिनि आई। मंगल गन जनु दीन्हि देखाई।

१-१, ३, ४, ५; लजि राजा ६.

छेमकरी कह छेम बिसेखी । स्यामा बाम सुतरु पर देखी ।
सनमुख आयेउ दधि अरु मीना । कर पुस्तक दुइ बिप्र प्रबीना ॥
मंगलमय कल्यानमय अभिमत[1] फल दातार ।
जनु सब साँचे होन हित भए सगुन अेक बार ॥ २०३ ॥

मंगल सगुन सुगम सब ताकें । सगुन ब्रह्म सुंदर सुत जाकें ।
राम सरिस बरु दुलहिनि सीता । समधी दसरथु जनकु पुनीता ।
सुनि अस ब्याहु सगुन सब नाँचे । अब कीन्हे बिरंचि हम साँचे ।
येहि बिधि कीन्ह बरात पयाना । हय गय गाजहिं हनें निसाना ।
आवत जानि भानु कुल केतू । सरितन्हि जनक बँधाए सेतू ।
बीच बीच बर बासु बनाए । सुरपुर सरिस संपदाँ छाए ।
असनु सयनं बर बसन सुहाए । पावहिं सब निज निज मन भाए ।
नित नूतन सुख लखि अनुकूले । सकल बरातिन्ह मंदिर भूले ॥
आवत जानि बरात बर सुनि गहगहे निसान ।
सजि गज रथ पदचर तुरग लेन चले अगवान ॥ २०४ ॥

कनक कलस कल[2] कोपर थारा । भाजन ललित अनेक प्रकारा ।
भरे सुधा सम सब पकवानें । भाँति भाँति नहि जाहिं बखानें ।
फल अनेक बर बस्तु सुहाईं । हरषि भेंट हित भूप पठाईं ।
भूषन बसन महा मनि नाना । खग मृग हय गय बहु बिधि जाना ।
मंगल सगुन सुगंध सुहाए । बहुत भाँति महिपाल पठाए ।
दधि चिउरा उपहार अपारा । भरि भरि कावरि चले कहारा ।
अगवानन्ह जब दीखि बराता । उर आनंदु पुलक भर[3] गाता ।
देखि बनाव सहित अगवाना । मुदित बराती[4] हनें निसाना ॥

१–१, ३, ६; अभितह ४, ५
२–४, ५, ६; भरि १, ३.
३–१, ४, ५, भरे ६.
४–४, ५, ६; बरातिन्ह १, ३

चढ़ीं अटारिन्ह देखहिं नारीं । लिएँ आरती मंगल
गावहिं गीत मनोहर नाना । अति आनंदु न जा
तब सुमंत्र दुइ स्यंदन साजी । जोते रबि हय नि
दोउ रथ रुचिर भूप पहिं आनें । नहि सारद पहिं
राज समाजु एक रथ साजा । दूसर तेज पुंज

तेहिं रथ रुचिर बसिष्ठ कहुँ हरषि चढ़ाइ न
आपु चढ़ेउ स्यंदन सुमिरि हर गुर गौरि ग

सहित बसिष्ठ सोह नृपु कैसे । सुरगुर संग
करि कुलरीति बेद बिधि राऊ । देखि सबहि स
सुमिरि रामु गुर आयेसु पाई । चले महीप
हरषे बिबुध बिलोकि बराता । बरपहिं सु
भयेउ कोलाहलु हय गय गाजे । ब्योम
सुर नर नारि सुमंगल गाईं । सरस ग
घंट घंटि धुनि बरनि न जाहीं । सरो कर
करहिं बिदूषक कउतुक नाना । हास कुसल

तुरग नचावहिं कुअर बर अकनि मृदंग
नागर नट चितवहिं चकित डगहिं न ता

बनै न बरनत बनी बराता । होंहिं सगुन
चारा चापु बाम दिसि लेई । मनहु सकल
दाहिन कागु सुखेत सुहावा । नकुल दरसु सब
सानुकूल बह त्रिबिध बयारी । सघट सबाल आ
लोवा फिरि फिरि दरसु देखावा । सुरभी सनमुख सि
मृगमाला फिरि दाहिनि आई । मंगल गन जनु दी

१–१, ३, ४, ५; लघि राजा ६.

मुनिहि दंडवत कीन्ह महीसा। बार बार पद रज धरि सीसा।
कौसिक राउ लिये उर[1] लाई। कहि असीस पूँछी कुसलाई।
पुनि दंडवत करत दोउ भाई। देखि नृपति उर सुखु न समाई।
सुत हियँ[1] लाइ दुसह दुखु मेटे। मृतक सरीर प्रान जनु भेंटे।
पुनि बसिष्ठ पद सिर तिन्ह नाए। प्रेम मुदित मुनिबर[2] उर लाए।
बिप्र बृंद बंदे दुहु भाईं। मनभावतीं असीसें पाईं।
भरत सहानुज कीन्ह प्रनामा। लिये उठाइ लाइ उर रामा।
हरषे लखनु देखि दोउ भ्राता। मिले प्रेम परिपूरित गाता॥

पुरजन परिजन जातिजन जाचक मंत्री मीत।
मिले जथाबिधि सबहि प्रभु परम कृपाल बिनीत॥ ३०८॥

रामहि देखि बरात जुड़ानी। प्रीति कि रीति न जाति[3] बखानी।
नृप समीप सोहहि सुत चारी। जनु धनु धरमादिक तनु धारी।
सुतन्ह समेत दसरथहि देखी। मुदित नगर नर नारि बिसेखी।
सुमन बरसि सुर हनहिं निसाना। नाक नटीं नाचहि करि गाना।
सतानंदु अरु बिप्र सचिव गन। मागध सूत बिदुष बंदीजन।
सहित बरात राउ सनमाना। आयेसु मागि फिरे अगवाना।
प्रथम बरात लगन तें आई। ता तें पुर प्रमोदु अधिकाई।
ब्रह्मानंदु लोगु सब लहहीं। बढ़हुँ दिवस निसि बिधि सन कहहीं॥

रामु सीय सोभा अवधि सुकृत अवधि दोउ राज।
जहँ तहँ पुरजन कहहिं अस मिलि नर नारि समाज॥ ३०९॥

जनक सुकृत मूरति बैदेही। दसरथ सुकृत रामु धरें देही।
इन्ह सम काहुँ न सिव अवराधे। काहुँ न इन्ह समान फल लाधे।
इन्ह सम कोउ न भयेउ जग माहीं। है नहिं कतहूँ होनेउ नाहीं।

१–१, ३, ४, ५; उर ६ ३–१, ४, ५; जाइ ६.
२–१, ३, ४, ५; गुर प्रभु ६.

हरषि परसपर मिलन हित कछुक चले बगमेल।
जनु आनंद समुद्र दुइ मिलत बिहाइ सुबेल ॥ ३०५ ॥

बरषि सुमन सुर सुंदरि गावहिं। मुदित देव दुंदुभी बजावहिं।
बस्तु सकल राखीं नृप आगें। बिनय कीन्ह तिन्ह अति अनुरागें।
प्रेम समेत राय सबु लीन्हा[1]। भै बकसीस जाचकन्हि दीन्हा[1]।
करि पूजा मान्यता बड़ाई। जनवासे कहुँ चले लवाई।
बसन बिचित्र पाँवड़े परहीं। देखि धनदु धन मदु परिहरहीं।
अतिसुंदर दीन्हेउ जनवासा। जहँ सब कहुँ सब भाँति सुपासा।
जानीं सिय बरात पुर आई। कछु निज महिमा प्रगटि जनाई।
हृदय सुमिरि सब सिद्धि बोलाईं। भूप पहुनई करन पठाईं॥
सिधि सब सिय आयसु अकनि गईं जहाँ जनवास।
लियें संपदा सकल सुख सुरपुर भोग बिलास ॥ ३०६ ॥

निज निज बास बिलोकि बराती। सुर सुख सकल सुलभ सब भाँती।
बिभव भेदु कछु कोउ न जाना। सकल जनक कर करहिं बखाना।
सिय महिमा रघुनायक जानी। हरषे हृदय हेतु पहिचानी।
पितु आगमनु सुनत दोउ भाई। हृदय न अति आनंदु अमाई[2]।
सकुचन्ह कहि न सकत गुर पाहीं। पितु दरसन लालचु मन माहीं।
बिस्वामित्र बिनय बड़ि देखी। उपजा उर संतोषु बिसेखी।
हरषि बंधु दोउ हृदय लगाए। पुलक अंग अंबक जल छाए।
चले जहाँ दसरथु जनवासे। मनहु सरोबरु तकेउ[3] पिआसे॥
भूप बिलोके जबहि मुनि आवत सुतन्ह समेत।
उठे[4] हरषि सुख सिंधु महु चले थाह सी लेत ॥ ३०७ ॥

१–१, ४, ५; लीन्ही, दीन्ही ६.
२–१, ४, ५; समाई ६
३–१, ४, ५, तके ६,
४–४, ५, ६; उठेउ १.

मुनिहि दंडवत कीन्ह महीसा। बार बार पद रज धरि सीसा।
कौसिक राउ लिये उर[१] लाई। कहि असीस पूँछी कुसलाई।
पुनि दंडवत करत दोउ भाई। देखि नृपति उर सुखु न समाई।
सुत हिय[१] लाइ दुसह दुखु[१] मेटे। मृतक सरीर प्रान जनु भेंटे।
पुनि बसिष्ठ पद सिर तिन्ह नाए। प्रेम मुदित मुनिबर[२] उर लाए।
बिप्र बृंद बंदे दुहु भाईं। मनभावतीं असीसें पाईं।
भरत सहानुज कीन्ह प्रनामा। लिये उठाइ लाइ उर रामा।
हरषे लखनु देखि दोउ भ्राता। मिले प्रेम परिपूरित गाता॥

पुरजन परिजन जातिजन जाचक मंत्री मीत।
मिले जथाबिधि सबहि प्रभु परम कृपाल बिनीत॥ ३०८॥

रामहि देखि बरात जुड़ानी। प्रीति कि रीति न जाति[३] बखानी।
नृप समीप सोहहि सुत चारी। जनु धनु धरमादिक तनु धारी।
सुतन्ह समेत दसरथहि देखी। मुदित नगर नर नारि बिसेखी।
सुमन बरसि सुर हनहिं निसाना। नाक नटीं नाचहि करि गाना।
सतानंदु अरु बिप्र सचिव गन। मागध सूत बिदुप बंदीजन।
सहित बरात राउ सनमाना। आयेसु मागि फिरे अगवाना।
प्रथम बरात लगन तें आई। ता तें पुर प्रमोदु अधिकाई।
ब्रह्मानंदु लोगु सब लहहीं। बढ़हुँ दिवस निसि बिधि सन कहहीं॥

रामु सीय सोभा अवधि सुकृत अवधि दोउ राज।
जहँ तहँ पुरजन कहहिं अस मिलि नर नारि समाज॥ ३०९॥

जनक सुकृत मूरति बैदेही। दसरथ सुकृत रामु धरें देही।
इन्ह सम काहुँ न सिव अवराधे। काहुँ न इन्ह समान फल लाधे।
इन्ह सम कोउ न भयेउ जग माहीं। है नहिं कतहूँ होनेउ नाहीं।

१–१, ३, ४, ५; उर ६ ३–१, ४, ५, जाइ ६.
२–१, ३, ४, ५, गुर प्रभु ६.

हम सब सकल सुकृत कै रासी। भये जग जनमि जनकपुर बासी।
जिन्ह जानकी राम छवि देखी। को सुकृती हम सरिस बिसेखी।
पुनि देखब रघुबीर बिआहू। लेब भली बिधि लोचन लाहू।
कहहिं परसपर कोकिल बयनीं। येहि बिआह बड़ लाभु सुनयनी।
बड़ें भाग बिधि बात बनाई। नयन अतिथि होइहहिं दोउ भाई॥

बारहि बार सनेह बस जनक बोलाउब सीय।
लेन आइहहिं बंधु दोउ कोटि काम कमनीय॥ ३१०॥

बिबिध भाँति होइहि पहुनाई। प्रिय न काहि अस सासुर माई।
तब तब राम लखनहि निहारी। होइहहिं सब पुरलोग सुखारी।
सखि जस राम लखन कर जोटा। तैसेइ भूप संग दुइ ढोटा।
स्याम गौर सब अंग सुहाए। ते सब कहहिं देखि जे आए।
कहा एक मैं आजु निहारे। जनु बिरंचि निज हाथ सवारे।
भरतु रामहीं की अनुहारी। सहसा लखि न सकहिं नर नारी।
लखनु सत्रुसूदन अेक रूपा। नख सिख तें सब अंग अनूपा।
मन भावहिं मुख बरनि न जाहीं। उपमा कहुँ त्रिभुअन कोउ नाहीं॥

उपमा न कोउ कह दासु तुलसी कतहु कबि कोबिद कहें।
बल बिनय बिद्या सील सोभा सिंधु इन्ह से अेइ अहें।
पुर नारि सकल पसारि अंचल बिधिहि बचन सुनावहीं।
ब्याहिअहुँ चारिउ भाइ येहिं पुर हम सुमंगल गावहीं॥

कहहिं परस्पर नारि बारि बिलोचन पुलक तन।
सखि सबु करब पुरारि पुन्य पयोनिधि भूप दोउ॥ ३११॥

येहिं बिधि सकल मनोरथ करहीं। आनद उमगि उमगि उर भरहीं।
जे नृप सीय स्वयंबर आए। देखि बंधु सब तिन्ह सुख पाए।
कहत राम जसु बिसद बिसाला। निज निज गेह गये महिपाला।

१–४, ५, ६; भरन १, ३.

गयें बीति कछु दिन येहि भाँती । प्रमुदित पुरजन सकल बराती ।
मंगल मूल लगन दिनु आवा । हिमरितु अगहनु मासु सुहावा ।
ग्रह तिथि नखतु जोगु बर बारू । लगन सोधि बिधि कीन्ह बिचारू ।
पठै दीन्हि नारद सन सोई । गनीं जनक के गनकन्ह जोई ।
सुनीं सकल लोगन येह बाता । कहहिं जोतिषी अपर बिधाता ॥
धेनुधूरि बेला बिमल सकल सुमंगल मूल ।
बिप्रन्ह कहेउ बिदेह सन जानि सगुन अनुकूल ॥ ३१२ ॥

उपरोहितहि कहेउ नरनाहा । अब बिलंब कर कारनु काहा ।
सतानंद तब सचिव बोलाए । मंगल सकल साजि सब ल्याए ।
संख निसान पनव बहु बाजे । मंगल कलस सगुन सुभ साजे ।
सुभग सुआसिनि गावहिं गीता । करहिं बेद धुनि बिप्र पुनीता ।
लेन चले सादर येहि भाँती । गये जहाँ जनवास बराती ।
कोसलपति कर देखि समाजू । अति लघु लाग तिन्हहि सुरराजू ।
भयेउ समउ अब धारिअ पाऊ । येह सुनि परा निसानहि घाऊ ।
गुरहि पूछि करि कुलबिधि राजा । चले संग मुनि साधु समाजा ॥
भाग्य बिभव अवधेस कर देखि देव ब्रह्मादि ।
लगे सराहन सहस मुख जानि जनम निज बादि ॥ ३१३ ॥

सुरन्ह सुमंगल अवसरु जाना । बरषहिं सुमन बजाइ निसाना ।
सिव ब्रह्मादिक बिबुध बरूथा । चढ़े बिमानन्हि नाना जूथा ।
प्रेम पुलक तन हृदय उछाहू । चले बिलोकन राम बिआहू ।
देखि जनकपुरु सुर अनुरागे । निज निज लोक सबहि लघु लागे ।
चितवहिं चकित बिचित्र बिताना । रचना सकल अलौकिक नाना ।
नगर नारि नर रूप निधाना । सुघर सुधरम सुसील सुजाना ।

१-४, ५, ६, आदि १, .

तिन्हहि देखि सब सुर सुरनारीं[1]। भये नखत जनु बिधु उजिआरीं।
बिधिहि भयेउ आचरजु बिसेखी। निज करनी कछु कतहुँ न देखी॥
सिव समुझाये देव सब जनि आचरज भुलाहु।
हृदयँ बिचारहु धीर धरि सिय रघुबीर बिआहु॥ ३१४॥

जिन्ह कर नामु लेत जग माहीं। सकल अमंगल मूल नसाहीं।
करतल होहिं पदारथ चारी। तेइ सिय रामु कहेउ कामारी।
येहि बिधि संभु सुरन्ह समुझावा। पुनि आगे बर बसहु चलावा।
देवन्ह देखे दसरथु जाता। महामोदु मन पुलकित गाता।
साधु समाजु संग महिदेवा। जनु तनु धरे करहिं सुर[2] सेवा।
सोहत साथ सुभग सुत चारी। जनु अपबरग सकल तनुधारी।
मरकत कनक बरन बर[3] जोरी। देखि सुरन्ह भै प्रीति न थोरी।
पुनि रामहि बिलोकि हिय हरषे। नृपहि[4] सराहि सुमन तिन्ह बरषे॥
राम रूपु नख सिख सुभग बारहि बार निहारि।
पुलक गात लोचन सजल उमा समेत पुरारि॥ ३१५॥

केकिकंठ दुति स्यामल अंगा। तड़ित बिनिंदक बसन सुरंगा।
ब्याह बिभूषन बिबिध बनाए। मंगलमय[5] सब भाँति सुहाए।
सरद बिमल बिधु बदन सुहावन। नयन नवल राजीव लजावन।
सकल अलौकिक सुंदरताई। कहि न जाइ मनहीं मन भाई।
बंधु मनोहर सोहहिं संगा। जात नचावत चपल तुरंगा।
राजकुअर बरबाजि देखावहिं। बंसप्रसंसक बिरिद सुनावहिं।
जेहि तुरंग पर रामु बिराजे। गति बिलोकि खगनायकु लाजे।
कहि न जाइ सब भाँति सुहावा। बाजि बेषु जनु काम बनावा॥

१–१, ३, ६; सुरपुर नारी ४, ५.
२–४, ५, ६; सुल १, ३.
३–१, ३, ४, ५; तनु ६.
४–१, ३, ४, ५; नृपति ६.
५–४, ५, ६; मंगल सब १.

जनु बाजि बेषु बनाइ मनसिजु राम हित अति सोहई।
आपनें बय बल रूप गुन गति सकल भुवन बिमोहई।
जगमगत जीनु जराव जोति सुमोति मनि मानिक लगे।
किंकिनि ललाम लगामु ललित बिलोकि सुर नर मुनि ठगे॥
प्रभु मनसहि लयलीन मनु चलत चाल छबि पाव।
भूषित उडगन तड़ित घनु जनु बर बरहि नचाव॥ ३१६॥

जेहि बर बाजि रामु असवारा। तेहिं सारदउ न बरनैं पारा।
संकरु राम रूप अनुरागे। नयन पंचदस अतिप्रिय लागे।
हरि हित सहित रामु जब जोहे। रमा समेत रमापति मोहे।
निरखि राम छबि बिधि हरषाने। आठै नयन जानि पछिताने।
सुरसेनप उर बहुत उछाहू। बिधि तें डेवढ़ लोचन[१] लाहू।
रामहि चितव सुरेसु सुजाना। गौतम श्रापु परम हित माना।
देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं। आजु पुरंदर सम कोउ नाहीं।
मुदित देव गन रामहि देखी। नृप समाज दुहु हरषु बिसेषी॥
अति हरषु राज समाजु दुहु दिसि दुंदुभी बाजहि घनी।
बरषहिं सुमन सुर हरषि कहि जयजयति जय रघुकुल मनी।
येहि भाँति जानि बरात आवत बाजनें बहु बाजहीं।
रानी सुआसिनि बोलि परिछनि हेतु मंगल साजहीं॥
सजि आरतीं अनेक बिधि मंगल सकल सवारि।
चलीं मुदित परिछनि करन गजगामिनि बर नारि॥ ३१७॥

बिधुबदनी सब सब मृगलोचनि। सब निज तन छबि रति मदु मोचनि।
पहिरे बरन बरन बर चीरा। सकल बिभूषन सजें सरीरा।
सकल सुमंगल अंग बनाएँ। करहिं गान कलकंठि लजाएं।
कंकन किंकिनि नूपुर बाजहिं। चाल बिलोकि कामगज लाजहिं॥

१–१, २; सुलोचन ४, ५, ६.

बाजहिं बाजन विविध प्रकारा। नभ अरु नगर सुमंगल चारा।
सची सारदा रमा भवानी। जे सुरतिय सुचि सहज सयानीं।
कपट नारि वर बेष बनाई। मिलीं सकल रनवासहि जाई।
करहिं गान कल मंगल बानी। हरष बिबस सब काहु न जानी॥
को जान केहि आनंद बस सब ब्रह्मु बर परिछन चलीं।
कल गान मधुर निसान बरषहिं सुमन सुर सोभा भलीं।
आनंदकंदु बिलोकि दूलहु सकल हिय हरषित भईं।
अंभोज अंबक अंबु उमगि सुअंग पुलकावलि छईं॥
जो सुखु भा सिय मातु मन देखि राम बर बेषु।
सो न सकहिं कहि कलप सत सहस सारदा सेषु॥ २१८॥

नयन नीर हटि[1] मंगल जानी। परिछनि करहिं मुदित मन रानी।
बेद बिहित[2] अरु कुल आचारू[3]। कीन्ह भलीं बिधि सब ब्यवहारू।
पंच सबद सुनि मंगल गाना। पट पावड़े परहिं बिधि नाना।
करि आरती अरघु तिन्ह दीन्हा। राम गमनु मंडप तब कीन्हा।
दसरथु सहित समाज बिराजे। बिभव बिलोकि लोकपति लाजे।
समय समय सुर बरषहिं फूला। सांति पढ़हिं महिसुर अनुकूला।
नभ अरु नगर कोलाहलु होई। आपनि पर कछु सुनें न कोई।
येहिं बिधि रामु मंडपहि आए। अरघु देइ आसन बैठाए॥
बैठारि आसन आरती करि निरखि बरु सुखु पावहीं।
मनि बसन भूषन भूरि वारहिं नारि मंगल गावहीं।
ब्रह्मादि सुर बर बिप्र भेष बनाइ कौतुकु देखहीं।
अवलोकि रघुकुल कमल रबि छबि सुफल जीवन लेखहीं॥

---

*१–१, ४, ५; हटि ६. ३–४, ५, ६; ब्यवहारू, १.
२–१, ४, ५; बिदित ६.

नाऊ बारी भाट नट राम निछावरि पाइ।
मुदित असीसहिं नाइ सिर हरपु न हृदय समाइ ॥ ३१९ ॥

मिले जनकु दसरथु अतिप्रीती। करि बैदिक लौकिक सब रीती।
मिलत महा दोउ राज बिराजे। उपमा खोजि खोजि कबि लाजे।
लहीं न कतहु हारि हिय मानी। इन्ह सम एइ उपमा उर आनी।
सामध देखि देव अनुरागे। सुमन बरषि जसु गावन लागे।
जगु बिरंचि उपजावा जब तें। देखे सुने ब्याह बहु तब तें।
सकल भाँति सम[1] साजु समाजू। सम समधी देखे हम आजू।
देवगिरा सुनि सुंदर[2] साँची। प्रीति अलौकिक दुहुँ दिसि माँची।
देत पाँवड़े अरघु सुहाये। सादर जनकु मंडपहि ल्याये॥
मंडपु बिलोकि बिचित्र रचना रुचिरता मुनि मन हरे।
निज पानि जनक सुजान सब कहुँ आनि सिंघासन धरे।
कुलइष्ट सरिस बसिष्ठ पूजे बिनय करि आसिष लही।
कौसिकहि पूजत परम प्रीति कि रीति तौ न परै कही॥
बामदेव आदिक रिषय पूजे मुदित महीस।
दिए दिव्य आसन सबहि सब सन लही असीस ॥ ३२० ॥

बहुरि कीन्ह कोसलपति पूजा। जानि ईस सम भाउ[3] न दूजा।
कीन्ह जोरि कर बिनय बड़ाई। कहि निज भाग्य बिभव बहुताई।
पूजे भूपति सकल बराती। समधी सम सादर सब भाँती।
आसन उचित दिये सब काहू। कहौं काह मुख एक उछाहू।
सकल बरात जनक सनमानी। दान मान बिनती बर बानी।
बिधि हरि हरु दिसिपति दिनराऊ। जे जानहिं रघुबीर प्रभाऊ[4]।

१–४, ५, सब १, ३, ६.   ३–२, ३, ४, ५; भार ६.
२–१, ३, ४, ५; सुदरि ६.   ४–१, ३, ४, ५; सुभाऊ ६.

कपट बिप्र बर बेषु बनाएँ। कौतुक देखहि अतिसचु पाएँ।
पूजे जनक देव सम जानें। दिए सुआसन बिनु पहिचानें॥
पहिचान को केहि जान सबहि अपान सुधि भोरी भई।
आनंदकंदु बिलोकि दूलहु उभय दिसि आनँदमई।
सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दए।
अवलोकि सीलु सुभाउ प्रभु को बिबुध मन प्रमुदित भए॥
रामचंद्र मुख चंद्र छबि लोचन चारु चकोर।
करत पान सादर सकल प्रेमु प्रमोदु न थोर॥ ३२१॥

समउ बिलोकि बसिष्ठ बोलाए। सादर सतानंदु सुनि आए।
बेगि कुअरि अब आनहु जाई। चले मुदित मुनि आयेसु पाई।
रानी सुनि उपरोहित बानी। प्रमुदित सखिन्ह समेत सयानी।
बिप्रबधू कुल बृद्ध बोलाईं। करि कुल रीति सुमंगल गाईं।
नारि बेष जे सुर बर बामा। सकल सुभाय सुंदरी स्यामा।
तिन्हहि देखि सुखु पावहिं नारी। बिनु पहिचानि प्रान[1] ते प्यारी।
बार बार सनमानहि रानी। उमा रमा सारद[2] सम जानी।
सीय[3] सवारि समाजु बनाई। मुदित मंडपहि चलीं लवाई॥
चलि ल्याइ सीतहि सखीं सादर सजि सुमंगल भामिनी।
नवसत्त[4] साजें सुंदरीं सब मत्त कुंजरगामिनीं।
कल गान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं कामकोकिल लाजहीं।
मंजीर नूपुर कलित कंकन ताल गति बर बाजहीं॥
सोहति बनिता बृंद महुँ सहज सुहावनि सीय।
छबि ललना गन मध्य जनु सुखमा तिय कमनीय॥ ३२२॥

सिय सुंदरता बरनि न जाई। लघु मति बहुत मनोहरताई।

१–४, ५, ६; प्रानहु १, ३.
२–१, ३, ६; सादर ४, ५.
३–३, ४, ५, ६; सिय १.
४–१, ४, ५; सप्त ३, ६.

आवत दीखि बरातिन्ह सीता। रूप रासि सब भाँति पुनीता।
सबहि मनहिं मन किये प्रनामा। देखि राम भये पूरन कामा।
हरषे दसरथु सुतन्ह समेता। कहि न जाइ उर आनँदु जेता।
सुर प्रनामु करि बरिसहिं फूला। मुनि असीस धुनि मंगलमूला।
गान निसान कोलाहलु भारी। प्रेम प्रमोद मगन नर नारी।
येहि बिधि सीय मंडपहि आई। प्रमुदित सांति पढ़हि मुनिराई।
तेहि अवसर कर बिधि ब्यवहारू। दुहुँ कुलगुर सबु कीन्ह अचारू॥
आचारु करि गुर गौर गनपति मुदित बिप्र पुजावहीं।
सुर प्रगटि पूजा लेहिं देहिं असीस अतिसुखु पावहीं।
मधुपर्क मंगल द्रब्य जो जेहि समय मुनि मन महुँ चहैं।
भरे कनक कोपर कलस सो तब लियेहि[1] परिचारक रहैं।
कुल रीति प्रीति समेत रबि कहि देत सबु सादर कियें[2]।
येहि भाँति देव पुजाइ सीतहि सुभग सिंघासनु[3] दियें[2]।
सिय राम अवलोकनि परसपर प्रेमु काहु न लखि परै।
मन बुद्धि बर बानी अगोचर प्रगट कबि कैसें करै॥
होम समय तनु धरि अनलु अतिसुख आहुति लेहिं।
बिप्र बेष धरि बेद सब कहि बिबाह बिधि देहिं॥ ३२३॥

जनक पाटमहिषी जग जानीं। सीय मातु किमि जाइ बखानी।
सुजसु सुकृत सुख सुंदरताई। सब समेटि बिधि रची बनाई।
समउ जानि मुनिबरन्ह बोलाई। सुनत सुआसिनि सादर ल्याई।
जनक बाम दिसि सोह सुनयना। हिमगिरि संग बनी जनु मयना।
कनक कलस मनि कोपर रूरे। सुचि सुगंध मंगल जल पूरे।
निज कर मुदित रायँ अरु रानी। धरे राम के आगें आनी।

१–१, ३; लिये ४, ५, ६.
२–१, ३, ४, ५; कियो, दियो ६.
३–१, ३, ४, ५; सिंहासनु ६.

पढ़हिं बेद मुनि[1] मंगल बानी। गगन सुमन झरि अवसर जानी।
बरु बिलोकि दंपति अनुरागे। पाय पुनीत पखारन लागे॥

लागे पखारन पाय पंकज प्रेम तनु पुलकावली।
नभ नगर गान निसान जय धुनि उमगि जनु चहुँ दिसि चली।
जे पद सरोज मनोजअरि उर सर सदैव बिराजहीं।
जे सकृत[2] सुमिरत बिमलता मन सकल कलि मल भाजहीं।
जे परसि मुनिबनितौं लही गति रही जो पातकमई।
मकरंदु जिन्हको संभु सिर सुचिता अवधि सुर बरनई।
करि मधुप मन मुनि जोगिजन जे सेइ अभिमत गति लहें।
ते पद पखारत भाग्य भाजनु जनकु जय जय सब कहें।
बर कुअँरि करतल जोरि साखोचारु दोउ कुलगुर करैं।
भयो पानिगहनु बिलोकि बिधि सुर मनुज मुनि आनँद भरैं।
सुखमूल दूलहु देखि दंपति पुलक तनु हुलस्यो हियो[3]।
करि लोक बेद बिधान कन्यादानु नृप भूपन कियो[3]।
हिमवंत जिमि गिरिजा महेसहि हरिहि श्री[4] सागर दई।
तिमि जनक रामहि सिय समरपी बिस्व कल कीरति नई।
क्यों करै बिनय बिदेहु कियो बिदेहु मूरति सावँरी।
करि होमु बिधिवत गाँठि जोरी होन लागीं भावँरी॥

जय धुनि बंदी बेद धुनि मंगलगान निसान।
सुनि हरपहिं बरसहिं बिबुध सुरतरु सुमन सुजान॥ ३२४॥

कुअँरु कुअँरि कल भाँवरि देहीं। नयन लाभु सब सादर लेहीं।
जाइ न बरनि मनोहर जोरी। जो उपमा कछु कहौं सो थोरी[5]।
राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं। जगमगाति मनि खंभन्ह माहीं[5]।

१—१, ३, ६, मुनि ४, ५
२—१, ३, ६, सुकृत ४, ५
३—४, ५, ६ हिये, किये १, ३
४—१, ३, ६, श्रिय ४, ५
५—ये पंक्तियाँ १, ३ में नहीं हैं।

मनहु मदन रति धरि बहु रूपा। देखत राम बिआहु अनूपा।
दरस लालसा सकुच न थोरी। प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी।
भये मगन सब देखनिहारे। जनक समान अपान बिसारे।
प्रमुदित मुनिन्ह भाँवरी फेरीं। नेग सहित सब रीति निबेरीं।
रामु सीय सिर सेंदुरु देहीं। सोभा कहि न जाति बिधि केहीं।
अरुन पराग जलजु भरि नीकें। ससिहि भूष अहि लोभ अमी कें।
बहुरि बसिष्ठ दीन्हि अनुसासन। बरु दुलहिनि बैठे अेक आसन॥
बैठे बरासन रामु जानकि मुदित मन दसरथु भये।
तनु पुलक पुनि पुनि देखि अपनें सुकृत सुरतरु फल नये।
भरि भुवन रहा उछाहु राम बिबाहु भा सबहीं कहा।
केहि भाँति बरनि सिरात रसना एक येहु मंगलु महा।
तब जनक पाइ बसिष्ठ आयसु ब्याह साजु सँवारिकै।
मांडवी श्रुतिकीरति उर्मिला कुअरि लै हंकारिकै।
कुसकेतु कन्या प्रथम जो गुन सील सुख सोभामई।
सब रीति प्रीति समेत करि सो ब्याहि नृप भरतहि दई।
जानकी लघु भगिनी सकल सुंदरि सिरोमनि जानि कै।
सो जनक[१] दीन्हीं ब्याहि लखनहि सकल बिधि सनमानि कै।
जेहि नामु श्रुतिकीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुनआगरी।
सो दई रिपुसूदनहि भूपति रूप सील उजागरी।
अनुरूप बर दुलहिनि परस्पर लखि सकुचि हिय हरषहीं।
सब मुदित सुंदरता सराहहिं सुमन सुर गन बरषहीं।
सुंदरी सुंदर बरन्ह सह सब एक मंडप राजहीं।
जनु जीव उर चारिउ अवस्था बिभुन्ह[२] सहित बिराजहीं॥

१–४, ५, ६; तनय   ३.   २–१, ३, ६; प्रभुन्ह ४, ५

मुदित अवधपति सकल सुत बधुन्ह समेत निहारि।
जनु पाये महिपाल मनि क्रियन्ह सहित फल चारि ॥ ३२५ ॥

जसि रघुबीर ब्याह बिधि बरनी। सकल कुअर ब्याहे तेहि करनी।
कहि न जाइ कछु दाइज भूरी। रहा कनक मनि मंडपु पूरी।
कंबल बसन बिचित्र पटोरे। भाँति भाँति बहु मोल न थोरे।
गज रथ तुरग दास अरु दासीं। धेनु अलंकृत कामदुहा सीं।
बस्तु अनेक करिअ किमि लेखा। कहि न जाइ जानहि जिन्ह देखा।
लोकपाल अवलोकि सिहानें। लीन्ह अवधपति सबु सुखु मानें।
दीन्ह जाचकन्हि जो जेहि भावा। उबरा सो जनवासेंहि आवा।
तब कर जोरि जनकु मृदु बानी। बोले सब बरात सनमानी॥

सनमानि सकल बरात आदर दान बिनय बड़ाइ कै।
प्रमुदित महा मुनि बृंद बंदे पूजि प्रेम लड़ाइ कै।
सिरु नाइ देव मनाइ सब सन कहत कर संपुट किएँ।
सुर साधु चाहत भाउ सिंधु कि तोप जल अंजलि दिएँ।
कर जोरि जनकु बहोरि बंधु समेत कोसलराय[१] सों।
बोले मनोहर बयन सानि सनेह सील सुभाय सों।
सनमंध[२] राजन रावरें हम बड़े अब सब बिधि भये।
येहि राज साज समेत सेवक जानिबे[३] बिनु गथ लये।
ए दारिका परिचारिका करि पालिबी करुना नई[४]।
अपराधु छमिबो बोलि पठए बहुत हौं[५] ढीठ्यों कई[६]।
पुनि भानुकुल भूषन सकल सनमान निधि समधी किए।
कहि जाति नहि बिनती परस्पर प्रेम परिपूरन हिए।

१–१, ३, ६; कोसलराव ४, ५.
२–१, ३, सनबंध ६; संबंध ४, ५.
३–१, ३, ४, ५; जानिबी ६.
४–१, ३, ४, ५; करुनामई ६.
५–१, ३, ६; है ४, ५.
६–१, ३; दई ४, ५.

वृंदारका गन सुमन बरिसहिं राउ जनवासेहि चले।
दुंदुभी जय धुनि बेद धुनि नभ नगर कौतूहल भले।
तब सखी मंगल गान करत मुनीस आयेसु पाइ कै।
दूलह दुलहिनिन्हि सहित सुंदरि चलीं कोहबर ल्याइ कै॥
पुनि पुनि रामहि चितव सिय सकुचति मनु सकुचै न।
हरत मनोहर मीन छबि प्रेम पिआसे नैन॥ ३२६॥

स्याम सरीरु सुभाय सुहावन। सोभा कोटि मनोज लजावन।
जावक जुत पद कमल सुहाए। मुनि मन मधुप रहत जिन्ह छाए।
पीत पुनीत मनोहर धोती। हरति बाल रबि दामिनि जोती।
कल किंकिनि कटिसूत्र मनोहर। बाहु बिसाल बिभूषन सुंदर।
पीत जनेउ महाछबि देई। करमुद्रिका चोरि चितु लेई।
सोहत ब्याह साज सब साजे। उर आयत उरु भूषन राजे[1]।
पिअर उपरना काखा सोती। दुहुँ आँचरन्हि लगे मनि मोती।
नयन कमल कल कुंडल काना। बदनु सकल सौंदर्ज निधाना।
सुंदर भृकुटि मनोहर नासा। भाल तिलकु रुचिरता निवासा।
सोहत मौरु मनोहर माथें। मंगलमय मुकुता मनि गाथें॥
गाथें महामनि मौरु मंजुल अंग सब चित चोरहीं।
पुर नारि सुर सुंदरी बरहिं बिलोकि सब तिन तोरहीं।
मनि बसन भूषन वारि आरति करहिं मंगल गावहीं।
सुर सुमन बरिसहिं सूत मागध बंदि सुजसु सुनावहीं।
कोहबरहि आने[2] कुअर कुअँरि सुआसिनिन्ह सुख पाइ कै।
अतिप्रीति लौकिक रीति लागीं करन मंगल गाइ कै।
लहकौरि गौरि सिखाव रामहि सीय सन सारद कहैं।

१—१, ३, उर भूषन राते ४, ५, भूषन उर राजे ६.
२—१, ६; आनि ३, ४, ५.

रनिवासु हास बिलास रस बस जन्म को फलु सब लहैं।
निज पानि मनि महु देखि प्रतिमूरति[१] सुरूप[२] निधान की।
चालति न भुजबल्ली बिलोकनि बिरह भय बस जानकी।
कौतुक बिनोद प्रमोदु प्रेमु न जाइ कहि जानहि अली।
बर कुअरि सुंदर सकल सखी लवाइ जनवासेहि चली।
तेहि समय सुनिअ असीस जहँ तहँ नगर नभ आनँदु महा।
चिरुजिअहु जोरी चारु चारयो मुदित मन सबही कहा।
जोगींद्र सिद्ध मुनीस देव बिलोकि प्रभु दुंदुभि हनी।
चले हरषि बरषि प्रसून निज निज लोक जय जय जय भनी॥
सहित बधूटिन्ह कुअर सब तब आए पितु पास।
सोभा मंगल मोद भरि उमगेउ जनु जनवास॥ ३२७॥

पुनि जेवनार भई बहु भाँती। पठये जनक बोलाइ बराती।
परत पाँवड़े बसन अनूपा। सुतन्ह समेत गवनु कियो भूपा।
सादर सब के पाय पखारे। जथाजोगु पीढ़न्ह बैठारे।
धोये जनक अवधपति चरना। सीलु सनेहु जाइ नहि बरना।
बहुरि राम पद पंकज धोए। जे हर हृदय कमल महुँ गोए।
तीनिउ भाइ राम सम जानी। धोये चरन जनक निज पानी।
आसन उचित सबहि नृप दीन्हे। बोलि सूपकारी[३] सब लीन्हें।
सादर लगे परन पनवारे। कनक कील मनि पान सवारे॥
सूपोदन सुरभी सरपि सुंदर स्वादु पुनीत।
छन महुँ सब के परुसि गे चतुर सुआर बिनीत॥ ३२८॥

पंचकवलि करि जेवन लागे। गारि गान सुनि अति[४] अनुरागे।
भाँति अनेक परे पकवानें। सुधा सरिस नहि जाहिं बखाने।

१-४, ५, ६; देखियति मूरति १, ३. ३-१, ३, ४, ५; सूपकारक ६.
२-१, ३, ४, ५; सरूप ६. ४-१, ३, ४, ५; गारीगान सुनहिं ६.

परुसन लगे सुआर सुजाना। बिंजन बिबिध नाम को जाना।
चारि भाँति भोजन बिधि गाई। एक एक बिधि बरनि न जाई।
छ रस रुचिर बिंजन बहु जाती। एक एक रस अगनित भाँती।
जेवत देहिं मधुर धुनि गारी। लै लै नाम पुरुष अरु नारी।
समय सुहावनि गारि बिराजा। हसत राउ सुनि सहित समाजा।
येहि बिधि सबही भोजनु कीन्हा। आदर सहित आचमनु दीन्हा[१]॥

देइ पान पूजे जनक दसरथु सहित समाज।
जनवासेहि गवने मुदित सकल भूप सिरताज॥ ३२९॥

नित नूतन मंगल पुर माहीं। निमिष सरिस दिन जामिनि जाहीं।
बड़े भोर भूपति मनि जागे। जाचक गुन गन गावन लागे।
देखि कुअर बर बधुन्ह समेता। किमि कहि जात मोदु मन जेता।
प्रात क्रिया करि गे गुर पाहीं। महा प्रमोदु प्रेमु मन माहीं।
करि प्रनामु पूजा कर जोरी। बोले गिरा अमिअ जनु बोरी।
तुम्हरीं कृपा सुनहु मुनिराजा। भयेउँ आजु मैं पूरनकाजा।
अब सब बिप्र बोलाइ गोसाईं। देहु धेनु सब भाँति बनाई।
सुनि गुर करि महिपाल बड़ाई। पुनि पठए मुनि बृंद बोलाई॥

बामदेउ अरु देवरिषि बालमीकि जाबालि।
आए मुनिबर निकर तब कौसिकादि तपसालि॥ ३३०॥

दंड प्रनाम सबहि नृप कीन्हे। पूजि सप्रेम बरासन दीन्हे।
चारि लक्ष बर धेनु मगाईं। काम सुरभि सम सील सुहाई।
सब बिधि सकल अलंकृत कीन्हीं। मुदित महिप महिदेवन्ह दीन्हीं।
करत बिनय बहु बिधि नरनाहू। लहेउँ आजु जग जीवन लाहू।
पाइ असीस महीसु अनंदा। लिये बोलि पुनि जाचक बृंदा।
कनक बसन मनि हय गय स्यंदन। दिये बूझि रुचि रबिकुल नंदन।

१–१, ३, ४, ५, लीन्हा ६.

चले पढ़त गावत गुनगाथा। जयजय जय दिनकर कुल नाथा।
येहि बिधि राम बिआह उछाहू। सकै न बरनि सहसमुख जाहू॥
बार बार कौसिक चरन सीसु नाइ कह राउ।
येह सबु सुखु मुनिराज तव कृपा कटाक्ष पसाउ[1]॥ ३२१॥

जनक सनेहु सीलु करतूती। नृपु सबरात[2] सराह बिभूती।
दिन उठि बिदा अवधपति मागा। राखहिं जनकु सहित अनुरागा।
नित नूतन आदरु अधिकाई। दिन प्रति सहस भाँति पहुँनाई।
नित नव नगरु अनंद उछाहू। दसरथ गवनु सोहाइ न काहू।
बहुत दिवस बीते ओहि भाँती। जनु सनेहँ रजु बँधे बराती।
कौसिक सतानंद तब जाई। कहा बिदेह नृपहि समुझाई।
अब दसरथ कहँ आयेसु देहू। जद्यपि छाड़ि न सकहु सनेहू।
भलेहिं[3] नाथ कहि सचिव बोलाए। कहि जय जीव सीस तिन्ह नाए॥
अवधनाथु चाहत चलन भीतर करहु जनाउ।
भये प्रेम बस सचिव सुनि बिप्र सभासद राउ॥ ३२२॥

पुरबासी सुनि चलिहिं[4] बराता। बूझत बिकल परस्पर बाता।
सत्य गवनु सुनि सब बिलखाने। मनहु साँझ सरसिज सकुचाने।
जहँ जहँ आवत बसे बराती। तहँ तहँ सिद्ध[5] चला बहु भाँती।
बिबिधि भाँति मेवा पकवाना। भोजन साजु न जाइ बखाना।
भरि भरि बसह अपार कहारा। पठई जनक अनेक सुसारा[6]।
तुरग लाखु रथ सहस पचीसा। सकल सवारे नख अरु सीसा।
मत्त सहस दस सिंधुर साजे। जिन्हहिं देखि दिसिकुंजर लाजे।

१—१, ३; प्रभाउ ४, ५, ६.
*२—४, ५; सबराती सराह बिभूती १,
सब राति सराहत बीती ६;
सब भाँति सराह बिभूती ३.
३—३, ४, ५, ६; भलेह १.
४—१, ३, ४, ५; चलहि ६.
५—१, ३, ४, ५; सीध ६.
*६—१, ३, ४, ५; सुग्रारा ६.

कनक बसन मनि भरि भरि जोना। महिषीं धेनु बस्तु बिधि नाना॥
दाइज[1] अमित न सकिअ कहि दीन्ह बिदेह बहोरि।
जो अवलोकत लोकपति लोक संपदा थोरि॥ ३३३॥

सबु समाजु येहिं भाँति बनाई। जनक अवधपुर दीन्ह पठाई॥
चलिहि बरात सुनत सब रानी। बिकल मीन गन जनु[2] लघु पानी।
पुनि पुनि सीय गोद करि लेहीं। देइ असीस सिखावनु देहीं।
होयेहु संतत पिअहि पिआरी। चिरु अहिवातु असीस हमारी।
सासु ससुर गुर सेवा करेहू। पति रुख लखि आयेसु अनुसरेहू।
अतिसनेह बस सखीं सयानीं। नारि धरम सिखवहिं मृदु बानी।
सादर सकल कुअरि समुझाई। रानिन्ह बार बार उर लाई।
बहुरि बहुरि भेटहिं महतारी। कहहिं बिरंचि रचीं कत नारी॥
तेहि अवसर भाइन्ह सहित रामु भानुकुल केतु।
चले जनक मंदिर मुदित बिदा करावन हेतु॥ ३३४॥

चारिउ भाइ सुभायँ सुहाए। नगर नारि नर देखन धाए।
कोउ कह चलन चहत हहिं आजू। कीन्ह बिदेह बिदा कर साजू।
लेहु नयन भरि रूपु निहारी। प्रिय पाहुने भूप सुत चारी।
को जानै केहि सुकृत सयानी। नयन अतिथि कीन्हे बिधि आनी।
मरनसीलु जिमि पाव[3] पिऊखा। सुरतरु लहै जनम कर भूखा।
पाव नारकी हरिपदु जैसें। इन्ह कर दरसनु हम कहुँ तैसें।
निरखि राम सोभा उर धरहू। निज मन फनि मूरति मनि करहू।
येहिं बिधि सबहि नयन फलु देता। गये कुअर सब राजनिकेता॥
रूप सिंधु सब बंधु लखि हरषि उठेउ[4] रनिवासु।
करहिं निछावरि आरतीं महा मुदित मन सासु॥ ३३५॥

१–१, ३, ४, ५; जाइ ६.
२–१, ३, ४, ५; जिमि ६.
३–१, ३, ४, ५; पाइ ६.
४–४, ५, ६; उठी १, ३.

देखि राम छबि अति अनुरागीं। प्रेम बिबस पुनि पुनि पद लागीं।
रही न लाज प्रीति उर छाई। सहज सनेहु बरनि किमि जाई।
भाइन्ह सहित उबटि अन्हवाए। छ रस असन अति हेतु जेवाए।
बोले राम सुअवसरु जानी। सील सनेह सकुचमय बानी।
राउ अवधपुर चहत सिधाए। बिदा होन हम इहाँ[1] पठाए।
मातु मुदित मन आयेसु देहू। बालक जानि करब नित नेहू।
सुनत बचन बिलखेउ रनिवासू। बोलि न सकहिं प्रेम बस सासू।
हृदय लगाइ कुअँरि सब लीन्हीं। पतिन्ह सौंपि बिनती अति कीन्हीं॥

करि बिनय सिय रामहि समरपी जोरि कर पुनि पुनि कहै।
बलि जाउँ तात सुजान तुम्ह कहुँ बिदित गति सबकी अहै।
परिवारु पुरजन मोहि राजहि प्रान प्रिय सिय जानिबी।
तुलसीस सील[2] सनेह लखि निज किंकरी करि मानिबी॥

तुम्ह परिपूरन काम जान सिरोमनि भाव प्रिय।
जन गुन गाहक राम दोष दलन करुनायतन॥ ३३६॥

अस कहि रही चरन गहि रानी। प्रेम पंक जनु गिरा समानी।
सुनि सनेह सानी बर बानी। बहु बिधि राम सासु सनमानी।
राम बिदा मागा[3] कर जोरी। कीन्ह प्रनामु बहोरि बहोरी।
पाइ असीस बहुरि सिरु नाई। भाइन्ह सहित चले रघुराई।
मंजु मधुर मूरति उर आनी। भईं सनेह सिथिल सब रानी।
पुनि धीरजु धरि कुअँरि हँकारी। बार बार भेटहिं महतारी।
पहुँचावहिं फिरि मिलहिं बहोरी। बढ़ी परस्पर प्रीति न थोरी।
पुनि पुनि मिलति सखिन्ह[4] बिलगाई। बाल बच्छ जिमि धेनु लवाई॥

१–१, ३, ४, ५; इहाँ हमहिं ६.   ३–३, ४, ५, ६; मागत १.
२–१, ४, ५; तुलसी सुसील ३,६.   ४–१, ३, ४, ५; सखी ६.

प्रेम बिबस नर नारि सब सखिन्ह सहित रनिवासु।
मानहु कीन्ह बिदेहपुर करुना बिरहँ निवासु॥ ३३७॥

सुक सारिका जानकीं ज्याए। कनक पिंजरन्हि राखि पढ़ाए।
ब्याकुल कहहिं कहाँ बैदेही। सुनि धीरजु परिहरै न केही।
भये बिकल खग मृग येहि भाँती। मनुज दसा कैसे कहि जाती।
बंधु समेत जनकु तब आए। प्रेम उमगि लोचन जल छाए।
सीय[1] बिलोकि धीरता भागी। रहे कहावत परम बिरागी।
लीन्हि रायँ उर लाइ जानकी। मिटी महा मरजाद ग्यान की।
समुझावत सब सचिव सयाने। कीन्ह बिचारु अनवसरु जानें।
बारहिं बार सुता उर लाईं। सजि सुंदरि पालकीं मगाईं॥

प्रेम बिबस परिवारु सबु जानि सुलगन नरेस।
कुअरि चढ़ाई पालकिन्ह सुमिरे सिद्धि[2] गनेस॥ ३३८॥

बहु बिधि भूप सुता समुझाई। नारि धरमु कुलरीति सिखाई।
दासीं दास दिए बहुतेरे। सुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे।
सीय चलत ब्याकुल पुर बासी। होहिं सगुन सुभ मंगल रासी।
भूसुर सचिव समेत समाजा। संग चले पहुचावन राजा।
समय बिलोकि बाजनें बाजे। रथ गज बाजि बरातिन्ह साजे।
दसरथ बिप्र बोलि सब लीन्हे। दान मान परिपूरन कीन्हे।
चरन सरोज धूरि धरि सीसा। मुदित महीपति पाइ असीसा।
सुमिरि गजाननु कीन्ह पयाना। मंगल मूल सगुन भये नाना॥

सुर प्रसून बरषहिं हरषि करहिं अपछरा गान।
चले अवधपति अवधपुर मुदित बजाइ निसान॥ ३३९॥

नृप करि बिनय महाजन फेरे। सादर सकल मागनें टेरे।
भूषन बसन बाजि गज दीन्हे। प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हे।

१–१, ३, ४, ५; सियहि ६.   २–३, ४, ५; सिद्ध १, ६.

बार बार बिरिदावलि भाखी। फिरे सकल रामहि उर राखी।
बहुरि बहुरि कोसलपति कहहीं। जनक प्रेम बस फिरैं न चहहीं।
पुनि कह भूपति बचन सुहाए। फिरिअ महीस दूरि बड़ि आए।
राउ बहोरि उतरि भये ठाढ़े। प्रेम प्रबाह बिलोचन बाढ़े।
तब बिदेहु बोले कर जोरी। बचन सनेह सुधा जनु बोरी।
करौं कवन बिधि बिनय बनाई। महाराज मोहि दीन्हि बड़ाई॥

कोसलपति समधी सजन सनमानें सब भाँति।
मिलनि परसपर बिनय अति प्रीति न हृदय समाति॥ ३४०॥

मुनि मंडलिहि जनक सिरु नावा। आसिरबाद सबहि सन पावा।
सादर पुनि भेंटे जामाता। रूप सील गुन निधि सब भ्राता।
जोरि पंकरुह पानि सुहाए। बोले बचन प्रेम जनु जाए।
राम करौं केहि भाँति प्रसंसा। मुनि महेस मन मानस हंसा।
करहि जोग जोगी जेहि लागी। कोहु मोहु ममता मदु त्यागी।
ब्यापकु ब्रह्मु अलखु अबिनासी। चिदानंदु निरगुन गुनरासी।
मन समेत जेहि जान न बानी। तरकि न सकहि सकल अनुमानी।
महिमा निगमु नेति कहि[1] कहई। जो तिहुँ काल एकरस अहई[2]॥

नयन बिषय मो कहुँ भयेउ सो समस्त सुख मूल।
सबुइ सुलभ[3] जग जीव कहँ भयें ईसु अनुकूल॥ ३४१॥

सबहि भाँति मोहि दीन्हि बड़ाई। निज जन जानि लीन्ह अपनाई।
होहिं सहस दस सारद सेखा। करहिं कलप कोटिक भरि लेखा।
मोर भाग्य राउर गुन गाथा। कहि न सिराहि सुनहु रघुनाथा।
मैं कछु कहौं एकु बलु मोरें। तुम्ह रीझहु सनेह सुठि थोरे।
बार बार मागौं कर जोरें। मनु परिहरै चरन जनि मोरें।

१—१, ४, ५; नित ३, ६. ३—४, ५, ६; लाभु १, ३.
२—१, ४, ५, ६; रहई ३.

सुनि बर बचन प्रेम जनु पोषे। पूरन कामु रामु परितोषे।
करि बर बिनय ससुर सनमानें। पितु कौसिक बसिष्ठ सम जानें।
बिनती बहुरि[1] भरत सन कीन्ही। मिलि सप्रेम पुनि आसिष दीन्ही॥
मिले लखन रिपुसूदनहि दीन्हि असीस महीस।
भये परसपर प्रेम बस फिरि फिरि नावहि सीस॥ ३४२॥

बार बार करि बिनय बड़ाई। रघुपति चले संग सब भाई।
जनक गहे कौसिक पद जाई। चरन रेनु सिर नयनन्हि लाई।
सुनु मुनीस बर दरसन तोरें। अगमु न कछु प्रतीति मन मोरें।
जो सुख सुजसु लोकपति चहहीं। करत मनोरथ सकुचत अहहीं।
सो सुखु सुजसु सुलभ मोहि स्वामी। सब सिधि तव दरसन अनुगामी।
कीन्ह बिनय पुनि पुनि सिरु नाई। फिरे महीसु आसिषा पाई।
चली बरात निसान बजाई। मुदित छोट बड़ सब समुदाई।
रामहि निरखि ग्राम नर नारी। पाइ नयन फलु होहिं सुखारी॥
बीच बीच बर बास करि मग लोगन्ह सुखु देत।
अवध समीप पुनीत दिन पहुची आइ जनेत॥ ३४३॥

हनें निसान पनव बर बाजे। भेरि संख धुनि हय गय गाजे।
झाँझि भेरि[2] डिंडिमीं सुहाई। सरस राग बाजहिं सहनाई।
पुरजन आवत अकनि बराता। मुदित सकल पुलकावलि गाता।
निज निज सुंदर सदन सवारे। हाट बाट चौहट पुर द्वारे।
गली सकल अरगजा सिंचाई। जहँ तहँ चौकें चारु पुराई।
बना बजारु न जाइ बखाना। तोरन केतु पताक बिताना।
सफल पूगफल कदलि रसाला। रोपे बकुल कदंब तमाला।
लगे सुभग तरु परसत धरनीं। मनिमय आलबाल कल करनी॥

१–२, ३, बहुत ४, ५, ६ २–३, ४, ५, बिरव १, बीन ६,

बिबिध भाँति मंगल कलस गृह गृह रचे सवारि ।
सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब रघुबर पुरी निहारि ॥ ३४४ ॥

भूप भवन तेहिं अवसर सोहा । रचना देखि मदन मनु मोहा ।
मंगल सगुन मनोहरताई । रिधि सिधि सुख संपदा सुहाई[1] ।
जनु उछाह सब सहज सुहाए । तनु धरि धरि दसरथ गृह छाए ।
देखन हेतु राम बैदेही । कहहु लालसा होइ न केही ।
जूथ जूथ मिलि चलीं सुआसिनि । निजछबि निदरहिं मदनबिलासिनि ।
सकल सुमंगल सजें आरतीं । गावहिं जनु बहु बेष भारतीं ।
भूपति भवन कोलाहलु होई । जाइ न बरनि समउ सुखु सोई ।
कौसल्यादि राम महतारी । प्रेम बिबस तन दसा बिसारी ॥
दिए दान बिप्रन्ह बिपुल पूजि गनेसु पुरारि ।
प्रमुदित परम दरिद्र जनु पाइ पदारथ चारि ॥ ३४५ ॥

मोद प्रमोद बिबस सब माता । चलहिं न चरन सिथिल भये गाता ।
राम दरस हित अति अनुरागीं । परिछनि साजु सजन सब लागीं ।
बिबिध बिधान बाजनें बाजे । मंगल मुदित सुमित्रा साजे ।
हरद दूब दधि पल्लव फूला । पान पूगफल मंगल मूला ।
अच्छत अंकुर रोचन लाजा । मंजुल मंजरि[2] तुलसि बिराजा ।
छुहे पुरट घट सहज सुहाए । मदन सकुन[3] जनु नीड़ बनाए ।
सगुन सुगंध न जाहिं बखानी । मंगल सकल सजहिं सब रानी ।
रचीं आरतीं बहुत बिधाना । मुदित करहिं कल मंगल गाना ॥
कनक थार भरि मंगलन्हि कमल करन्हि लिये[4] मात ।
चलीं मुदित परिछनि करन पुलक पल्लवित गात ॥ ३४६ ॥

---

[1]–४, ५; आए १, ३, ६. [3]–१, ३, ४, ५; सकुन ६.
[2]–१, ४, ५; मजुर मजरि ३;
[2]मंजुल मंगल ६.

धूप धूम नभु मेचकु भयेऊ । सावन घन घमंडु जनु ठयेऊ ।
सुरतरु सुमन माल सुर वरषहिं । मनहु बलाक अवलि मनु करषहिं ।
मंजुल मनिमय बंदनिवारे । मनहु पाकरिपु चाप सवारे ।
प्रगटहि दुरहि अटन्हि पर भामिनि। चारु चपल जनु दमकहि दामिनि ।
दुंदुभि धुनि घन गरजनि घोरा । जाचक चातक दादुर मोरा ।
सुर सुगंध सुचि वरषहिं वारी । सुखी सकल ससि पुर नर नारी ।
समउ जानि गुर आयेसु दीन्हा । पुर प्रवेसु रघुकुल मनि कीन्हा ।
सुमिरि संभु गिरिजा गनराजा । मुदित महीपति सहित समाजा ॥

होंहिं सगुन वरषहिं सुमन सुर दुंदुभीं बजाइ ।
बिबुधवधू नाचहिं मुदित मंजुल मंगल गाइ ॥ ३४७ ॥

मागध सूत बंदि नट नागर । गावहिं जसु तिहुँ लोक उजागर ।
जयधुनि बिमल बेद बर बानी । दस दिसि सुनियँ सुमंगल सानी ।
बिपुल बाजने बाजन लागे । नभ सुर नगर लोग अनुरागे ।
बने बराती बरनि न जाहीं । महा मुदित मन सुख न समाहीं ।
पुरबासिन्ह तब राय जोहारे । देखत रामहि भये सुखारे ।
करहिं निछावरि मनि गन चीरा । बारि बिलोचन पुलक सरीरा ।
आरति करहिं मुदित पुर नारी । हरषहिं निरखि कुअँर बर चारी ।
सिबिका सुभग ओहार उघारी । देखि दुलहिनिन्ह होहिं सुखारी ॥

येहि बिधि सबही देत सुखु आए राज दुआर ।
मुदित मातु परिछनि करहिं बधुन्ह समेत कुमार ॥ ३४८ ॥

करहिं आरती बारहि बारा । प्रेमु प्रमोदु कहै को पारा ।
भूषन मनि पट नाना जाती । करहि निछावरि अगनित भाँती ।
बधुन्ह समेत देखि सुत चारी । परमानंद मगन महतारी ।
पुनि पुनि सीय राम छबि देखी । मुदित सुफल जग जीवनु लेखी ।
सखी सीय मुखु पुनि पुनि चाही । गान करहिं निज सुकृत सराही ।

बरषहिं सुमन छनहि छन देवा। नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा।
देखि मनोहर चारिउ जोरीं। सारद उपमा सकल ढठोरीं।
देत न बनहि निपट लघु लागीं। अेकटक रहीं रूप अनुरागीं॥
निगम नीति कुल रीति करि अरघ पाँवड़े देत।
बधुन्ह सहित सुत परिछि सब चलीं लवाइ निकेत॥ ३४९॥

चारि सिंघासन सहज सुहाए। जनु मनोज निज हाथ बनाए।
तिन्ह पर कुअरि कुअर बैठारे। सादर पाय पुनीत पखारे।
धूप दीप नैवेद वेद बिधि। पूजे बर दुलहिनि मंगल निधि।
बारहि बार आरती करहीं। ब्यजन चारु चामर सिर ढरहीं।
वस्तु अनेक निछावरि होहीं। भरीं प्रमोद मातु सब सोहीं।
पावा परम तत्त्व जनु जोगी। अमृतु लहेउ जनु संतत रोगी।
जनम रंकु जनु पारस पावा। अंधहि लोचन लाभु सुहावा।
मूक बदन जनु सारद छाई। मानहु समर सूर जय पाई॥
अहि सुख तें सत कोटि गुन पावहिं मातु अनंदु।
भाइन्ह सहित बिआहि घर आए रघुकुल चंदु।
लोक रीति जननीं करहिं बर दुलहिनि सकुचाहिं।
मोद बिनोद बिलोकि बड़ रामु मनहि मुसुकाहिं॥ ३५०॥

देव पितर पूजे बिधि नीकीं। पूजीं सकल बासना जी कीं।
सबहि बंदि मागहिं बरदाना। भाइन्ह सहित राम कल्याना।
अंतरहित सुर आसिष देहीं। मुदित मातु अंचल भरि लेहीं।
भूपति बोलि बराती लीन्हे। जान बसन मनि भूषन दीन्हे।
आयेसु पाइ राखि उर रामहि। मुदित गये सब निज निज धामहि।
पुर नर नारि सकल पहिराए। घर घर बाजन लगे बधाए।
जाचक जन जाचहिं जोइ जोई। प्रमुदित राउ देहि सोइ सोई।
सेवक सकल बजनिआँ नाना। पूरन किये दान सनमाना॥

देहिं असीस जोहारि सब गावहिं गुन गन गाथ ।
तब गुरु भूसुर सहित गृह गवनु कीन्ह नरनाथ[1] ॥ ३५१ ॥

जो बसिष्ठ अनुसासन दीन्ही । लोक बेद बिधि सादर कीन्ही ।
भूसुर भीर देखि सब रानीं । सादर उठीं भाग्य बड़ जानी ।
पाय पखारि सकल अन्हवाये । पूजि भलीं बिधि भूप जेंवाए ।
आदर दान प्रेम परिपोषे । देत असीस सकल[2] मन तोषे ।
बहु बिधि कीन्ह गाधिसुत पूजा । नाथ मोहि सम धन्य न दूजा ।
कीन्हि प्रसंसा भूपति भूरी । रानिन्ह सहित लीन्हि पग धूरी ।
भीतर भवन दीन्ह बर बासू । मनु जोगवत रह[3] नृपु रनिवासू ।
पूजे गुर पद कमल बहोरी । कीन्हि बिनय उर प्रीति न थोरी ॥
बधुन्ह समेत कुमार सब रानिन्ह सहित महीसु ।
पुनि पुनि बंदत गुर चरन देत असीस मुनीसु ॥ ३५२ ॥

बिनय कीन्हि उर अति अनुरागे । सुत संपदा राखि सब आगे ।
नेगु मागि मुनिनायक लीन्हा । आसिरबाद बहुत बिधि दीन्हा ।
उर धरि रामहि सीय समेता । हरषि कीन्ह गुर गवनु निकेता ।
बिप्र बधू सब भूप बोलाईं । चैल[4] चारु भूषन पहिराईं ।
बहुरि बोलाइ सुआसिनि लीन्हीं । रुचि बिचारि पहिरावनि दीन्हीं ।
नेगी नेग जोग सब लेहीं । रुचि अनुरूप भूपमनि देहीं ।
प्रिय पाहुने पूज्य[5] जे जाने । भूपति भलीं भाँति सनमाने ।
देव देखि रघुबीर बिबाहू । बरषि प्रसून प्रसंसि उछाहू ॥
चले निसान बजाइ सुर निज निज पुर सुख पाइ ।
कहत परसपर राम जसु प्रेमु न हृदय समाइ ॥ ३५३ ॥

१–१, ५; रघुनाथ ४, ६
२–४, ५, ६, चले १.
३–१, ४, ५, सब ६
४–१, ४, ५, चार ६.
५–१, ४, ५, भूप ६.

सब बिधि सबहि समदि नरनाहू । रहा हृदयँ भरि पूरि उछाहू ।
जहँ रनिवास तहाँ पगु धारे । सहित बधूटिन्ह कुअर निहारे ।
लिये गोद करि मोद समेता । को कहि सकै भएउ सुखु जेता ।
बधू सप्रेम गोद बैठारीं । बार बार हिय हरषि दुलारीं ।
देखि समाजु मुदित रनिवासू । सब के उर अनंदु कियो बासू ।
कहेउ भूप जिमि भयेउ बिबाहू । सुनि सुनि हरषु होइ सब काहू ।
जनकराज गुन सीलु बड़ाई । प्रीति रीति संपदा सुहाई ।
बहु बिधि भूप भाट जिमि बरनी । रानीं सब प्रमुदित सुनि करनी ॥

सुतन्ह समेत नहाइ नृप बोलि बिप्र गुर ग्याति ।
भोजनु कीन्हि अनेक बिधि घरीं पंच गइ राति ॥ ३५४ ॥

मंगल गान करहिं बर भामिनि । भै सुख मूल मनोहर जामिनि ।
अँचै पान सब काहूँ पाए । स्रग सुगंध भूषित छबि छाए ।
रामहि देखि रजायेसु पाई । निज निज भवन चले सिर नाई ।
प्रेमु प्रमोदु बिनोदु बड़ाई । समउ समाजु मनोहरताई ।
कहि न सकहिं सत सारद सेसू । बेद बिरंचि महेसु गनेसू ।
सो मैं कहौं कवन बिधि बरनी । भूमिनागु सिर धरै कि धरनी ।
नृप सब भाँति सबहि सनमानी । कहि मृदु बचन बोलाईं रानीं ।
बधू लरिकिनीं पर घर आईं । राखेहु नयन पलक की नाईं ॥

लरिका श्रमित उनींद बस सयन करावहु जाइ ।
अस कहि गे बिश्राम गृह राम चरन चितु लाइ ॥ ३५५ ॥

भूप बचन सुनि सहज सुहाए । जटित[१] कनक मनि पलँग डसाये ।
सुभग सुरभि पय फेनु समाना । कोमल कलित सुपेतीं नाना ।
उपबरहन बर बरनि न जाहीं । स्रग सुगंध मनि मंदिर माहीं ।
रतन दीप सुठि चारु चँदोवा । कहत न बनै जान जेहिं जोवा ।

१-४, ५, ६, जरित १.

सेज रुचिर रचि रामु उठाए। प्रेम समेत पलँग पौढ़ाए[1]।
अज्ञा पुनि पुनि भाइन्ह दीन्हीं। निज निज सेज सयन तिन्ह कीन्हीं।
देखि स्याम मृदु मंजुल गाता। कहहिं सप्रेम बचन सब माता।
मारग जात भयावनि भारी। केहि बिधि तात ताड़का मारी॥
घोर निसाचर बिकट भट समर गनहिं नहिं काहु।
मारे सहित सहाय किमि खल मारीच सुबाहु॥ ३५६॥

मुनि प्रसाद बलि तात तुम्हारी। ईस अनेक करवरैं टारी।
मख रखवारी करि दुहुँ भाई। गुर प्रसाद सब बिद्या पाई।
मुनि तिय तरी लगत पग धूरी। कीरति रही भुवन भरि पूरी।
कमठ पीठि पबि कूट कठोरा। नृप समाज महुँ सिवधनु तोरा।
बिस्व बिजय जसु जानकि पाई। आए भवन ब्याहि सब भाई।
सकल अमानुष करम तुम्हारे। केवल कौसिक कृपा सुधारे।
आजु सुफल जग जनमु हमारा। देखि तात बिधु बदनु तुम्हारा।
जे दिन गये तुम्हहि बिनु देखें। ते बिरंचि जनि पारहिं लेखें॥
राम प्रतोषीं मातु सब कहि बिनीत बर बयन।
सुमिरि संभु गुर बिप्र पद किये नींद बस नयन॥ ३५७॥

निँदउहँ[2] बदनु सोह सुठि लोना। मनहु साँझ सरसीरुह सोना।
घर घर करहिं जागरन नारी। देहिं परसपर मंगल गारी।
पुरी बिराजति राजति रजनी। रानीं कहहिं बिलोकहु सजनी।
सुंदर बधू सासु लै सोईं। फनिकन्ह जनु सिर मनि उर गोईं।
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे। अरुनचूड़ बर बोलन लागे।
बंदि मागधन्हि[3] गुन गन गाए। पुरजन द्वार जोहारन आए।
बंदि बिप्र सुर गुर पितु माता। पाइ असीस मुदित सब भ्राता।

१–१, ६; पउढ़ाए ४, ५.
२–१, ४, ५; नीदउँ ६.
३–१, ३, ४, ५; बंदी मागध ६.

जननिन्ह सादर बदन निहारे। भूपति संग द्वार पगु धारे॥
कीन्हि सौच सब सहज सुचि सरित पुनीत नहाइ।
प्रात क्रिया करि तात पहिं आए चारिउ भाइ॥ ३५८॥

भूप बिलोकि लिये उर लाई। बैठे हरषि रजायेसु पाई।
देखि रामु सब सभा जुड़ानी। लोचन लाभु अवधि अनुमानी।
पुनि बसिष्ठ मुनि कौसिकु आए। सुभग आसनन्हि मुनि बैठाए।
सुतन्ह समेत पूजि पद लागे। निरखि राम दोउ गुर अनुरागे।
कहहिं बसिष्ठु धरम इतिहासा। सुनहि महीस सहित रनिवासा।
मुनि मन अगम गाधिसुत करनी। मुदित बसिष्ठ बिपुल बिधि बरनी।
बोले बामदेउ सब साची। कीरति कलित लोक तिहुँ माची।
सुनि आनंदु भयेउ सब काहू। राम लखन उर अधिक उछाहू॥
मंगल मोद उछाहु नित जाहिं दिवस येहि भाँति।
उमगी अवध अनंद भरि अधिक अधिक अधिकाति॥ ३५९॥

सुदिन साधि[1] कल कंकन छोरे। मंगल मोद बिनोद न थोरे।
नित नव सुखु सुर देखि सिहाहीं। अवध जनम जाचहिं बिधि पाहीं।
बिस्वामित्रु चलन नित चहहीं। राम सप्रेम बिनय बस रहहीं।
दिन दिन सयगुन भूपति भाऊ। देखि सराह महा मुनिराऊ।
मागत बिदा राउ अनुरागे। सुतन्ह समेत ठाढ़ भै आगे।
नाथ सकल संपदा तुम्हारी। मै सेवकु समेत सुत नारी।
करब सदा लरिकन्ह पर छोहू। दरसनु देत रहब मुनि मोहू।
अस कहि राउ सहित सुत रानी। परेउ चरन मुख आव न बानी।
दीन्हि असीस बिप्र बहु भाँती। चले न प्रीति रीति कहि जाती।
रामु सप्रेम संग सब भाई। आयेसु पाइ फिरे पहुँचाई॥

१-४, ५, ६; सोधि १.

राम रूपु भूपति भगति ब्याहु उछाहु अनंदु ।
जात सराहत मनहि मन मुदित गाधिकुल चंदु ॥ ३६० ॥

बामदेव रघुकुल गुर ज्ञानी । बहुरि गाधिसुत कथा बखानी ।
सुनि मुनि सुजसु मनहि मन राऊ । बरनत आपन पुन्य प्रभाऊ ।
बहुरे लोग रजायसु भयेऊ । सुतन्ह समेत नृपति गृह गयेऊ ।
जहँ तहँ राम ब्याहु सबु गावा । सुजस पुनीत लोक तिहुँ छावा ।
आए ब्याहि रामु घर जब तें । बसे अनंद अवध सब तब तें ।
प्रभु बिआह जस भयेउ उछाहू । सकहिं न बरनि गिरा अहिनाहू ।
कवि कुल जीवनु पावन जानी । राम सीय जसु मंगल खानी ।
तेहि तें मैं कछु कहा बखानी । करन पुनीत हेतु निज बानी ॥

निज गिरा पावनि करन कारन राम जसु तुलसी कह्यो ।
रघुबीर चरित अपार बारिधि पारु कबि कौने लह्यो ।
उपबीत ब्याह उछाह मंगल सुनि जे सादर गावहीं ।
बैदेहि राम प्रसाद ते जन सर्बदा सुखु पावहीं ॥

सिय रघुबीर बिबाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं ।
तिन्ह कहुँ सदा उछाहु मंगलायतन राम जसु ॥ ३६१ ॥

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
प्रथमो सोपान समाप्त

रामचरितमानस
द्वितीय सोपान

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

वामांके[1] च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके।
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट्।
सोयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा।
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशंकरः पातु माम् ॥१॥
प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा[2] न मम्ले वनवासदुःखतः।
मुखांबुजश्री रघुनंदनस्य मे सदास्तु सा मंजुलमंगलप्रदा ॥२॥
नीलांबुजश्यामलकोमलांगं सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥३॥

श्रीगुरुचरन सरोज रज निज मन मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥

जब तें रामु ब्याहि घर आए। नित नव मंगल मोद बधाए।
भुवन चारिदस भूधर भारी। सुकृत मेघ बरषहिं सुख बारी।
रिधि सिधि संपति नदी सुहाई। उमगि अवध अंबुधि कहुँ आई।
मनिगन पुर नर नारि सुजाती। सुचि अमोल सुंदर सब भाँती।
कहि न जाइ कछु नगर बिभूती। जनु येतनिअँ बिरंचि करतूती।
सब बिधि सब पुरलोग सुखारी। रामचंद मुख चंदु निहारी।
मुदित मातु सब सखी सहेली। फलित बिलोकि मनोरथ[3] बेली।
राम रूपु गुन सीलु सुभाऊ। प्रमुदित होइ देखि सुनि राऊ॥

सबकें उर अभिलाषु अस कहहिं मनाइ महेसु।
आपु अछत जुबराज पदु रामहि देउ नरेसु ॥ १ ॥

१–३, ४, ६; यस्यांके २.   ३–२, ३; मनोहर ४, ६
२–२, ३, ५; गताभिषेकात्तथा ६.

एक समय सब सहित समाजा। राजसभा रघुराज बिराजा।
सकल सुकृत मूरति नरनाहूं। राम सुजसु सुनि अतिहि उछाहू[1]।
नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषें। लोकप करहिं प्रीति रुख राखें।
तिभुवन तीनि काल जग माहीं। भूरि भाग दसरथ सम नाहीं।
मंगल मूल रामु सुत जासू। जो कछु कहिअ थोर सबु तासू।
रायँ सुभायँ मुकुरु कर लीन्हा। बदनु बिलोकि मुकुटु सम कीन्हा।
स्रवन समीप भये सित;केसा। मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा।
नृप जुबराजु राम कहुँ देहू। जीवन जनम लाहु किन लेहू॥

येह बिचारु उर आनि नृप सुदिनु सुअवसरु पाइ।
प्रेम पुलकि तन मुदित मन गुरहि सुनायेउ जाइ॥ २॥

कहइ भुआलु सुनिअ मुनिनायक। भये रामु सब बिधि सब लायक।
सेवक सचिव सकल पुरबासी। जे हमरे अरि मित्र उदासी।
सबहि रामु प्रिय जेहि बिधि मोही। प्रभु असीस जनु तनु धरि सोही।
बिप्र सहित परिवार गोसाईं। करहिं छोहु सब रौरिहि[2] नाईं।
जे गुर चरन रेनु सिर धरहीं। ते जनु सकल बिभव बस करहीं।
मोहि सम यहु अनुभयेउ न दूजें। सबु पायेउँ रज पावनि पूजें।
अब अभिलाषु एकु मन मोरें। पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरें।
मुनि प्रसंन लखि सहज सनेहू। कहेउ नरेस रजायसु देहू॥

राजन राउर नामु जसु सब अभिमत दातार।
फल अनुगामी महिपमनि मन अभिलाषु तुम्हार॥ ३॥

सब बिधि गुरु प्रसंन जिय जानी। बोलेउ राउ रहसि मृदुबानी।
नाथ रामु करिअहिं जुबराजू। कहिअ कृपा करि करिअ समाजू।
मोहि अछत यहु होइ उछाहू। लहहिं लोग सब लोचन लाहू।
प्रभु प्रसाद सिव सबइ निबाहीं। येह लालसा एक मन माहीं।

१—यह पंक्ति ३ में नहीं है। २—२, ३; रउरेहि ५, ६.

पुनि न सोच तनु रहउ कि जाऊ। जेहि न होइ पाछें पछिताऊ।
सुनि मुनि दसरथ बचन सुहाए। मंगल मोद मूल मन भाए।
सुनु नृप जासु बिमुख पछिताहीं। जासु भजन बिनु जरनि न जाहीं।
भयेउ तुम्हार तनय सोइ स्वामी। रामु पुनीत प्रेम अनुगामी॥

बेगि बिलंबु न करिअ नृप साजिअ सबुइ समाजु।
सुदिनु सुमंगलु तबहिं जब रामु होहिं जुबराजु॥ ४॥

मुदित महीपति मंदिर आए। सेवक सचिव सुमंत्रु बोलाए।
कहि जय जीव सीस तिन्ह नाए। भूप सुमंगल बचन सुनाए।
प्रमुदित मोहि कहेउ गुर आजू। रामहि राय देहु जुबराजू।
जौं पाँचहि मत लागइ नीका। करहु हरषि हिय रामहि टीका।
मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी। अभिमत बिरव परेउ जनु पानी।
बिनती सचिव करहिं कर जोरी। जिअहु जगतपति बरिस करोरी।
जग मंगल भल काजु बिचारा। बेगिअ नाथ न लाइअ बारा।
नृपहि मोदु सुनि सचिव सुभाखा। बढ़त बौंड जनु लही सुसाखा॥

कहेउ भूप मुनिराज कर जोइ जोइ आयसु होइ।
राम राज अभिषेक हित बेगि करहु सोइ सोइ॥ ५॥

हरषि मुनीस कहेउ मृदु बानी। आनहु सकल सुतीरथ पानी।
औषध मूल फूल फल पाना। कहे नाम गनि मंगल नाना।
चामर चरम बसन बहु भाँती। रोम पाट पट अगनित जाती।
मनिगन मंगल बस्तु अनेका। जो जग जोगु भूप अभिषेका।
बेद बिहित[२] कहि सकल बिधाना। कहेउ रचहु पुर बिबिध बिताना।
सफल रसाल पूगफल केरा। रोपहु बीथिन्ह पुर चहुँ फेरा।
रचहु मंजु मनि चौकइ चारू। कहहु बनावन बेगि बजारू।
पूजहु गनपति गुर कुलदेवा। सब बिधि करहु भूमिसुर सेवा॥

१—यह पंक्ति २ में नहीं है। २—३, ५, ६; बिदित २.

ध्वज पताक तोरन कलस सजहु तुरग रथ नाग।
सिर धरि मुनिबर बचन सबु निज निज काजहि लाग ॥ ६ ॥

जो मुनीस जेहि आयेसु दीन्हा। सो तेहिं काजु प्रथम जनु कीन्हा।
बिप्र साधु सुर पूजत राजा। करत राम हित मंगल काजा।
सुनत राम अभिषेक सुहावा। बाज गहागह अवध बधावा।
राम सीय तन सगुन जनाए। फरकहिं मंगल अंग सुहाए।
पुलकि सप्रेम परसपर कहहीं। भरत आगमनु सूचक अहहीं।
भए बहुत दिन अतिअवसेरी। सगुन प्रतीति भेंट प्रिय केरी।
भरत सरिस प्रिय को जग माहीं। इहइ सगुन फलु दूसर नाहीं।
रामहि बंधु सोचु दिन राती। अंडन्हि कमठ हृदउ जेहि भाँती ॥

ऐहि अवसर मंगलु परम सुनि रहसेउ रनिवासु।
सोभत लखि बिधु बढ़त जनु बारिधि बीचि बिलासु ॥ ७ ॥

प्रथम जाइ जिन्ह बचन सुनाए। भूषन बसन भूरि तिन्ह पाए।
प्रेम पुलकि तन मनु अनुरागी। मंगल कलस सजन सब लागीं।
चौकइँ चारु सुमित्रा पूरी। मनिमय बिबिध भाँति अतिरूरी।
आनँद मगन राम महतारी। दिये दान बहु बिप्र हँकारी।
पूजीं ग्रामदेबि सुर नागा। कहेउ बहोरि देन बलि भागा।
जेहि बिधि होइ रामु कल्यानू। देहु दया करि सो बरदानू।
गावहिं मंगल कोकिल बयनी। बिधु बदनी मृग सावक नयनी ॥

राम राज अभिषेकु सुनि हिय हरषे नर नारि।
लगे सुमंगल सजन सब बिधि अनुकूल बिचारि ॥ ८ ॥

तब नरनाहँ बसिष्ठु बोलाए। राम धाम सिख देन पठाए।
गुर आगमनु सुनत रघुनाथा। द्वार आइ पद नायेउ माथा।
सादर अरघ देइ घर आनें। सोरह भाँति पूजि सनमाने।
गहे चरन सिय सहित बहोरी। बोले रामु कमल कर जोरी।

सेवक सदन स्वामि आगमनू। मंगल मूल अमंगल दमनू।
तदपि उचित जनु बोलि सप्रीती। पठइअ काज नाथ असि नीती।
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू। भयेउ पुनीत आजु येहु गेहू।
आयेसु होइ सो करउँ गोसाईं। सेवकु लहइ स्वामि सेवकाई॥

सुनि सनेह साने बचन मुनि रघुबरहि प्रसंस।
राम कस न तुम्ह कहहु अस हंस बंस अवतंस॥ ९॥

बरनि राम गुन सीलु सुभाऊ। बोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ।
भूप सजेउ अभिषेक समाजू। चाहत देन तुम्हहि जुबराजू।
राम करहु सब संजम आजू। जौं बिधि कुसल निबाहइ काजू।
गुरु सिख देइ राय पहिं गयेऊ। राम हृदयँ अस बिसमउ भयेऊ।
जनमे एक संग सब भाई। भोजन सयन केलि लरिकाई।
करनबेध उपबीत बिआहा। संग संग सब भये[1] उछाहा।
बिमल बंस यहु अनुचित एकू। बंधु बिहाइ बड़ेहि अभिषेकू।
प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई। हरउ भगत मन कै कुटिलाई॥

तेहि अवसर आए लखन मगन प्रेम आनंद।
सनमाने प्रिय बचन कहि रघुकुल कैरव चंद॥ १०॥

बाजहि बाजन बिबिध बिधाना। पुर प्रमोदु नहि जाइ बखाना।
भरत आगमनु सकल मनावहिं। आवहुँ बेगि नयन फलु पावहिं।
हाट बाट घर गली अथाई। कहहिं परसपर लोग लोगाई।
कालि लगन भलि केतिक बारा। पूजिहि बिधि अभिलाषु हमारा।
कनक सिंघासन सीय समेता। बैठहिं रामु होइ चित चेता।
सकल कहहिं कब होइहि काली। बिघन मनावहिं[2] देव कुचाली।
तिन्हहि सोहाइ न अवध बधावा। चोरहि चंदिनि राति न भावा।
सारद बोलि बिनय सुर करहीं। बारहि बार पाय लै परहीं॥

१–२, ३, ५, भएउ ६ २–२, ३, ५, मनावहिं ६.

विपति हमारि बिलोकि बड़ि मातु करिअ सोइ आजु ।
रामु जाहिं बन राजु तजि होइ सकल सुर काजु ॥ ११ ॥

सुनि सुर बिनय ठाढ़ि पछिताती । भइउँ सरोज बिपिन हिम राती ।
देखि देव पुनि कहहिं निहोरी । मातु तोहि नहि थोरिउ खोरी ।
बिसमय हरष रहित रघुराऊ । तुम्ह जानहु सब राम प्रभाऊ ।
जीव करम बस सुख दुख भागी । जाइअ अवध देव हित लागी ।
बार बार गहि चरन सँकोची । चली बिचारि बिबिध[1] मति पोची ।
ऊँच निवासु नीचि करतूती । देखि न सकहिं पराइ बिभूती ।
आगिल काजु बिचारि बहोरी । करिहहिं चाह कुसल कबि मोरी ।
हरषि हृदय दसरथ पुर आई । जनु ग्रहदसा दुसह दुखदाई ॥
नामु मंथरा मंदमति चेरी कैकै केरि ।
अजस पेटारी ताहि करि गई गिरा मति फेरि ॥ १२ ॥

दीख[2] मंथरा नगरु बनावा । मंजुल मंगल बाज बधावा ।
पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू । राम तिलकु सुनि भा उर दाहू ।
करै बिचारु कुबुद्धि कुजाती । होइ अकाजु कवन बिधि राती ।
देखि लागि मधु कुटिल किराती । जिमि गवँ तकै लेउँ केहि भाँती ।
भरत मातु पहिं गइ बिलखानी । का अनमनि हसि कह हँसि रानी ।
ऊतरु देइ न लेइ उसासू । नारि चरित करि ढारइ आँसू ।
हँसि कह रानि गालु बड़ तोरें । दीन्हि लखन सिख अस मन मोरें ।
तबहुँ न बोल चेरि बड़ि पापिनि । छाड़इ स्वास कारि जनु सापिनि ॥
सभय रानि कह कहसि किन कुसल रामु महिपालु ।
लखनु भरतु रिपुदवनु सुनि भा कुबरी उर सालु ॥ १३ ॥

कत सिख देइ हमहिं कोउ माई । गालु करब केहि कर बलु पाई ।

१–२, ३, ५; बिबुध ६.   २–२, ३, ६; देखि ५.

रामहि छाडि कुसल केहि आजू। जिन्हहिं जनेसु देइ जुबराजू।
भयेउ कौसिलहि बिधि अति दाहिन। देखत गरब रहत उर नाहिन।
देखहु कस न जाइ सब सोभा। जो अवलोकि मोर मनु छोभा।
पूतु बिदेस न सोचु तुम्हारें। जानति हहु बस नाहु हमारें।
नींद बहुत प्रिय सेज तुराई। लखहु न भूप कपट चतुराई।
सुनि प्रिय बचन मलिन मनु जानी। झुकी रानि अब रहु अरगानी।
पुनि अस कबहुँ कहसि घरफोरी। तब धरि जीभ कढ़ावौं तोरी॥

काने खोरे कूबरे कुटिल कुचाली जानि।
तिय बिसेषि पुनि चेरि कहि भरत मातु मुसुकानि॥ १४॥

प्रियबादिनि सिख दीन्हिउँ तोही। सपनेहु तो पर कोपु न मोही।
सुदिनु सुमंगलदायकु सोई। तोर कहा फुर जेहि दिन होई।
जेठ स्वामि सेवक लघु भाई। येह दिनकर कुल रीति सुहाई।
राम तिलकु जौं साचेहुँ काली। देउँ मागु मन भावत आली।
कौसल्या सम सब महतारी। रामहि सहज सुभाय पिआरी।
मो पर करहिं सनेहु बिसेखी। मैं करि प्रीति परीछा देखी।
जौं बिधि जनमु देइ करि छोहू। होहुँ राम सिय पूत पुतोहू।
प्रान तें अधिक रामु प्रिय मोरें। तिन्हके तिलक छोभु कस तोरें॥

भरत सपथ तोहि सत्य कहु परिहरि कपट दुराउ।
हरष समय बिसमउ करसि कारन मोहि सुनाउ॥ १५॥

एकहि बार आस सब पूजी। अब कछु कहब जीभ करि दूजी।
फोरै जोगु कपारु अभागा। भलेउ कहत दुख रौरेहि लागा।
कहहि झूठि फुरि बात बनाई। ते प्रिय तुम्हहिं करुइ मैं माई।
हमहुँ कहबि अब ठकुरसोहाती। नाहि त मौन रहब दिनु राती।
करि कुरूप बिधि परबस कीन्हा। बवा सो लुनिअ लहिअ जो दीन्हा।

१–३, ५, ६, छेदि २

कोउ नृप होउ हमहि का हानी। चेरि छाड़ि अब होब कि रानी।
जारइ जोगु सुभाउ हमारा। अनभल देखि न जाइ तुम्हारा।
ता तें कछुक बात अनुसारी। छमिअ देवि बड़ चूक हमारी॥
गूढ़ कपट प्रिय बचन सुनि तीय अधरबुधि रानि।
सुर माया बस बैरिनिहि सुहृद जानि पतिआनि॥ १६॥

सादर पुनि पुनि पूँछति ओही। सबरीं गान मृगी जनु मोही।
तसि मति फिरी अहइ जसि भावी। रहसी चेरि घात जनु फाबी।
तुम्ह पूँछहु मै कहत डेराऊँ। धरेहु मोर घरफोरी नाऊँ।
सजि प्रतीति बहुबिधि गढ़ि छोली। अवध साढ़साती[१] तब बोली।
प्रिय सिय रामु कहा तुम्ह रानी। रामहि तुम्ह प्रिय सो फुरि बानी।
रहा प्रथम अब ते दिन बीते। समउ फिरें रिपु होहिं पिरीते।
भानु कमल कुल पोषनि हारा। बिनु जर[२] जारि करइ सोइ छारा।
जरि तुम्हारि चह सवति उखारी। रूँधहु करि उपाउ बर बारी॥
तुम्हहि न सोचु सोहाग बल निज बस जानहु राउ।
मन मलीन मुहु मीठ नृपु राउर सरल सुभाउ॥ १७॥

चतुर गँभीर राम महतारी। बीचु पाइ निज बात सँवारी।
पठये भरतु भूप ननिऔरें। राम मातु मत जानब रौरें।
सेवहिं सकल सवति मोहि नीकें। गरबित भरत मातु बल पी कें।
सालु तुम्हार कौसिलहि माई। कपट चतुर नहि होइ जनाई।
राजहि तुम्ह पर प्रेमु बिसेखी। सवति सुभाउ सकइ नहि देखी।
रचि प्रपंचु भूपहि अपनाई। राम तिलक हित लगन धराई।
येहु कुल उचित राम कहुँ टीका। सबहि सोहाइ मोहि सुठि नीका।
आगिल बात समुझि डरु मोही। देउ दैउ फिरि सो फलु ओही॥

१–२, ३, ६; सारसाती ५. २–२, ३; जल ५, ६.

रचि पचि कोटिक कुटिलपन कीन्हेसि कपट प्रबोधु।
कहिसि कथा सतु सवति कै जेहि बिधि बाढ़ बिरोधु॥ १८॥

भावी बस प्रतीति उर आई। पूँछ रानि पुनि सपथ देवाई।
का पूँछहु तुम्ह अबहुँ न जाना। निज हित अनहित पसु पहिचाना।
भयेउ पाख दिनु सजत समाजू। तुम्ह पाई सुधि मोहि सन आजू।
खाइअ पहिरिअ राज तुम्हारें। सत्य कहें नहिं दोषु हमारें।
जौं असत्य कछु कहब बनाई। तौ बिधि देइहि हमहि सजाई।
रामहि तिलक कालि जौ भयेऊ। तुम्ह कहुँ बिपति बीजु बिधि बयेऊ।
रेख खँचाइ कहउँ बलु भाखी। भामिनि भइहु दूध कइ माखी।
जौं सुत सहित करहु सेवकाई। तौ घर रहहु न आन उपाई॥

कद्रूँ बिनतहि दीन्ह दुखु तुम्हहिं कौसिलाँ देब।
भरतु बंदि गृह सेइहहिं लखनु राम के नेब॥ १९॥

कैकयसुता सुनत कटु बानी। कहि न सकइ कछु सहमि सुखानी।
तन पसेउ कदली जिमि काँपी। कुबरीं दसन जीभ तब चाँपी।
कहि कहि कोटिक कपट कहानी। धीरजु धरहु प्रबोधिसि रानी।
कीन्हिसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू। जिमि न नवइ फिरि उकठि कुकाठू[2]।
फिरा करमु प्रिय लागि कुचाली। बकिहि सराहइ मानि मराली।
सुनु मंथरा बात फुरि तोरी। दहिन आँखि नित फरकइ मोरी।
दिन प्रति देखहुँ राति कुसपनें। कहउँ न तोहि मोह बस अपनें।
काह करौं सखि सूध सुभाऊ। दाहिन बाम न जानउँ काऊ॥

अपने चलत न आजु लगि अनभल काहु क कीन्ह।
केहि अघ एकहि बार मोहि दैअँ दुसह दुखु दीन्ह॥ २०॥

नैहर जनमु भरब बरु जाई। जिअत न करबि सवति सेवकाई।
अरि बस दैउ जिआवत जाही। मरनु नीक तेहि जीवन चाही।

१–२, ६; कौशिलाँ ३, ५ २–यह पंक्ति २ में नहीं है।

दीन बचन कह बहु बिधि रानी। सुनि कुबरीं तिय माया ठानी।
अस कस कहहु मानि मन ऊना। सुखु सोहागु तुम्ह कहुँ दिन दूना।
जेहिं राउर अति अनभल ताका। सोइ पाइहि येहु फलु परिपाका।
जबतें कुमत सुना मैं स्वामिनि। भूख न बासर नींद न जामिनि।
पूँछेउँ गुनिन्ह रेख तिन्ह[१] खाँची। भरत भुआल होंहि यहु साँची।
भामिनि करहु त कहउँ उपाऊ। हइ तुम्हरीं सेवा बस राऊ॥
परउँ कूप तुअ बचन पर सकौं पूत पति त्यागि।
कहसि मोर दुखु देखि बड़ कस न करब हित लागि॥ २१॥

कुबरीं करि कबुली कैकेई। कपट छुरी उर पाहन टेई।
लखइ न रानि निकट दुखु कैसे। चरइ हरित तिन बलिपसु जैसे।
सुनत बात मृदु अंत कठोरी। देति मनहुँ मधु माहुर घोरी।
कहइ चेरि सुधि अहइ कि नाहीं। स्वामिनि कहिहु कथा मोहि पाहीं।
दुइ बरदान भूप सन थाती। मागहु आजु जुड़ावहु छाती।
सुतहि राजु रामहि बनबासू। देहु लेहु सब सवति हुलासू।
भूपति राम सपथ जब करई। तब मागेहु जेहि बचनु न टरई।
होइ अकाजु आजु निसि बीतें। बचनु मोर प्रिय मानेहु जी तें॥
बड़ कुघातु करि पातकिनि कहेसि कोपगृह जाहु।
काजु सँवारेहु सजग[२] सबु सहसा जनि पतिआहु॥ २२॥

कुबरिहि रानि प्रान प्रिय जानी। बार बार बड़ि बुद्धि बखानी।
तोहि सम हितु न मोर संसारा। बहे जात कइ भइसि अधारा।
जौं बिधि पुरब मनोरथु काली। करौं तोहि चखपूतरि आली।
बहु बिधि चेरिहि आदरु देई। कोपभवन गवनी कैकेई।
बिपति बीजु बरषा रितु चेरी। भुँइ भइ कुमति कैकई केरी।

१–२, ३, ६; तें ५ᵃ   २–२, ३, ५; सजुग ६.

पाइ कपट जलु अंकुर जामा। बर दोउ दल दुख फल परिनामा।
कोप समाजु साजि सबु सोई। राजु करत निज कुमति बिगोई।
राउर नगर कोलाहलु होई। यह कुचालि कछु जान न कोई॥
प्रमुदित पुर नर नारि सब सजहिं सुमंगलचार।
अेक प्रविसहिं अेक निर्गमहिं भीर भूप दरबार॥ २३॥

बालसखा सुनि हिय हरषाहीं। मिलि दस पाँच राम पहिं जाहीं।
प्रभु आदरहि प्रेमु पहिचानी। पूँछहि कुसल खेम मृदु बानी।
फिरहिं भवन प्रिय आयसु पाई। करत परसपर राम बड़ाई।
को रघुबीर सरिस संसारा। सीलु सनेहु निबाहनिहारा।
जेहि जेहि जोनि करम बस भ्रमहीं। तहँ तहँ ईसु देउ यह हमहीं।
सेवक हम स्वामी सियनाहू। होउ नात येहु ओर निबाहू।
अस अभिलाषु नगर सब काहू। कैकयसुता हृदय अति दाहू।
को न कुसंगति पाइ नसाई। रहइ न नीच मतें चतुराई॥
साँझ समय सानंद नृपु गयेउ कैकई गेह।
गवनु निठुरता निकट कियें जनु धरि देह सनेह॥ २४॥

कोपभवन सुनि सकुचेउ राऊ। भय बस अगहुड परइ न पाऊ।
सुरपति बसइ बाहँबल जाकें। नरपति सकल रहहिं रुख ताकें।
सो सुनि तिय रिस गयेउ सुखाई। देखहु काम प्रताप बड़ाई।
सूल कुलिस असि अँगवनिहारे। ते रतिनाथ सुमन सर मारे।
सभय नरेसु प्रिया पहिं गयेऊ। देखि दसा दुखु दारुन भयेऊ।
भूमि सयन पटु मोट पुराना। दिये डारि तन भूषन नाना।
कुमतिहि कसि कुबेषता फाबी। अनअहिवातु सूच जनु भावी।
जाइ निकट नृपु कह मृदु बानी। प्रानप्रिया केहि हेतु रिसानी॥
केहि हेतु रानि रिसानि परसत पानि पतिहि नेवारई।
मानहुँ सरोष भुअंगभामिनि बिषम भाँति निहारई।

दोउ बासना रसना दसन बर मरम ठाहरु देखई।
तुलसी नृपति भवतव्यता बस काम कौतुक लेखई॥
बार बार कह राउ सुमुखि सुलोचनि पिकबचनि।
कारन मोहि सुनाउ गजगामिनि निज कोप कर॥ २५॥

अनहित तोर प्रिया केइँ कीन्हा। केहि दुइ सिर केहि जमु चह लीन्हा।
कहु केहि रंकहि करउँ नरेसू। कहु केहि नृपहि निकासउँ देसू।
सकौं तोर अरि अमरउ मारी। काह कीट बपुरे नर नारी।
जानसि मोर सुभाउ बरोरू। मनु तव आनन चंद चकोरू।
प्रिया प्रान सुत सरबसु मोरें। परिजन प्रजा सकल बस तोरें।
जौं कछु कहउँ कपटु करि तोही। भामिनि राम सपथ सत मोही।
बिहसि मागु मनभावति बाता। भूषन सजहि मनोहर गाता।
घरी कुघरी समुझि जिय देखू। बेगि प्रिया परिहरहि कुबेषू॥
येह सुनि मन गुनि सपथ बड़ि बिहसि उठी मतिमंद।
भूषन सजति बिलोकि मृगु मनहु किरातिनि फंद॥ २६॥

पुनि कह राउ सुहृद जिअ जानी। प्रेम पुलकि मृदु मंजुल बानी।
भामिनि भयेउ तोर मनभावा। घर घर नगर अनंद बधावा।
रामहि देउँ कालि जुबराजू। सजहि सुलोचनि मंगल साजू।
दलकि उठेउ सुनि हृदय कठोरू। जनु छुइ गयेउ पाक बरतोरू।
ऐसिउ पीर बिहसि तेहिं[१] गोई। चोरनारि जिमि प्रगटि न रोई।
लखी[२] न भूप कपट चतुराई। कोटि कुटिल मनि[३] गुरू पढ़ाई।
जद्यपि नीति निपुन नरनाहू। नारि चरित जलनिधि अवगाहू।
कपट सनेहु बढ़ाइ बहोरी। बोली बिहसि नयन मुहु मोरी॥

१–२, ३, ५, तेइ ६.
२–५, ६; लखहि २.
३–२, ३, ६, मति ५.

मॉगु मॉगु पै कहहु पिय कबहुँ न देहु न लेहु।
देन कहेहु बरदान दुइ तेउ पावत संदेहु॥ २७॥

जानेउ मरमु राउ हँसि कहई। तुम्हहि कोहाब परम प्रिय अहई।
थाती राखि न मॉगिहु काऊ। बिसरि गयेउ मोहि भोर सुभाऊ।
झूठेहुँ हमहि दोसु जनि देहू। दुइ कै चारि मॉगि मकु[1] लेहू।
रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्रान जाहुँ बरु बचनु न जाई।
नहि असत्य सम पातक पुंजा। गिरि सम होहिं कि कोटिक गुंजा।
सत्य मूल सब सुकृत सुहाए। बेद पुरान बिदित मुनि[2] गाए।
तेहि पर राम सपथ करि आई। सुकृत सनेह अवधि[3] रघुराई।
बात दृढ़ाइ[4] कुमति हँसि बोली। कुमत कुबिहग कुलह जनु खोली॥
भूप मनोरथ सुभग बनु सुख सुबिहंग समाजु।
भिल्लिनि जिमि छाड़न चहति बचनु भयंकर बाजु॥ २८॥

सुनहुँ प्रान प्रिय भावत जी का। देहु एक बर भरतहि टीका।
माँगौं दूसर बर कर जोरी। पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी।
तापस बेष बिसेषि उदासी। चोदह बरिस रामु बनबासी।
सुनि मृदु बचन भूप हिय सोकू। ससिकर छुअत बिकल जिमि कोकू[5]।
गयेउ सहमि नहि कछु कहि आवा। जनु सचान बन झपटेउ लावा।
बिवरन भयेउ निपट नरपालू। दामिनि हनेउ मनहु तरु तालू।
माथे हाथ मूदि दोउ लोचन। तनु धरि सोचु लाग जनु सोचन।
मोर मनोरथु सुरतरु फूला। फरत करिनि जिमि हतेउ समूला।
अवध उजारि कीन्हि कैकेई। दीन्हिसि अचल बिपति कै नेई॥
कवनें अवसर का भयेउ गयेउँ नारि बिस्वास।
जोग सिद्धि फल समय जिमि जतिहि अबिद्या नास॥ २९॥

१–२, ३, ६; बरु ५.
२–२, ५, ६; मुनु ३.
३–३, ५, ६; अवध २.
४–२, ३, ५, दिढ़ाइ ६.
५–३ में यह अर्धाली नहीं है।

ओहि विधि राउ मनहि मन झाँखा। देखि कुभाँति कुमति मनु माखा।
भरतु कि राउर पूत न होंही। आनेहु मोल बेसाहि कि मोही।
जो सुनि सरु अस लाग तुम्हारें। काहे न बोलहु बचनु सँभारें।
देहु उतरु अनुकरहु[१] कि नाहीं। सत्यसंध तुम्ह रघुकुल माहीं।
देन कहेहु अब जनि बरु देहू। तजहु सत्य जग अपजसु लेहू।
सत्य सराहि कहेहु बरु देना। जानेहु लेइहि माँगि चबेना।
सिबि दधीचि बलि जो कछु भाषा। तनु धनु तजेउ बचन पनु राखा।
अतिकटु बचन कहति कैकेई। मानहु लोन जरे पर देई॥

धरम धुरंधर धीर धरि नयन उघारे राय।
सिरु धुनि लीन्हि उसास असि मारेसि मोहि कुठाय॥ ३०॥

आगें दीखि जरत रिस भारी। मनहु रोष तरवारि उघारी।
मूठि कुबुद्धि धार निठुराई। धरी कूबरीं[२] सान बनाई।
लखी महीप कराल कठोरा। सत्य कि जीवनु लेइहि मोरा।
बोले राउ कठिन करि छाती। बानी सबिनय तासु सोहाती।
प्रिया बचन कस कहसि कुभाँती। भीर[३] प्रतीति प्रीति करि हाँती।
मोरें भरतु रामु दुइ आँखी। सत्य कहउँ करि संकरु साखी।
अवसि दूतु मैं पठइब प्राता। ऐहहिं बेगि सुनत दोउ भ्राता।
सुदिनु सोधि सबु साज सजाई। देउँ भरत कहुँ राजु बजाई[४]॥

लोभु न रामहि राजु कर बहुत भरत पर प्रीति।
मैं बड़ छोट बिचारि जिय करत रहेउँ नृपनीति॥ ३१॥

राम सपथ सत कहउँ सुभाऊ। राम मातु कछु कहेउ न काऊ।
मैं सबु कीन्ह तोहि बिनु पूछें। तेहि तें परेउ मनोरथु छूछें।
रिस परिहरु अब मंगल साजू। कछु दिन गएँ भरत जुबराजू।

१—२, ३, ५; अरु कहहु ६.   ३—२, ३, ५; भीरु ६.
२—२, ३, ६; कुबरि खर ५.   ४—२, ३, ६; बड़ाई ५.

एकहिं बात मोहि दुखु लागा। बरु दूसर असमंजस[1] माँगा।
अजहूँ हृदउ जरत तेहि आँचा। रिस परिहास कि साँचेहु साँचा।
कहु तजि रोषु राम अपराधू। सबु कोउ कहइ रामु सुठि साधू।
तुहूँ सराहसि करसि सनेहू। अब सुनि मोहि भयेउ संदेहू।
जासु सुभाउ अरिहि अनुकूला। सो किमि करिहि मातु प्रतिकूला॥
प्रिया हास रिस परिहरहि माँगु बिचारि बिबेकु।
जेहि देखौं अब नयन भरि भरत राज अभिषेकु॥ ३२॥

जिअइ मीन बरु बारि बिहीना। मनि बिनु फनिकु जिअइ दुख दीना।
कहउँ सुभाउ न छलु मन माहीं। जीवनु मोर राम बिनु नाहीं।
समुझि देखु जियँ[2] प्रिया प्रबीना। जीवनु राम दरस आधीना।
सुनि मृदु बचन कुमति अति जरई। मनहु अनल आहुति घृत परई।
कहइ करहु किन कोटि उपाया। इहाँ न लागिहि राउरि माया।
देहु कि लेहु अजसु करि नाहीं। मोहि न बहुत प्रपंच सोहाहीं।
रामु साधु तुम्ह साधु सयानें। राम मातु भलि सब पहिचानें।
जस कौसिलाँ मोर भल ताका। तस फलु उन्हहि देउँ करि साका॥
होत प्रात मुनि बेष धरि जौं न रामु बन जाहिं।
मोर मरनु राउर अजसु नृप समुझिअ मन माहिं॥ ३३॥

अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी। मानहु रोष तरंगिनि बाढ़ी।
पाप पहार प्रगट भइ सोई। भरी क्रोध जल जाइ न जोई।
दोउ बर कूल कठिन हठ धारा। भँवर कूबरी बचन प्रचारा।
ढाहत भूपरूप तरु मूला। चली बिपति बारिधि अनुकूला।
लखी नरेस बात फुरि[2] साँची। तिय मिस मीचु सीस पर नाँची।
गहि पद बिनय कीन्ह बैठारी। जनि दिनकर कुल होसि कुठारी।
माँगु माथ अबहीं देउँ तोही। राम बिरह जनि मारसि मोही।

१–२, ३, ६; प्रिय ५. २–२; सब ३, ५, ६.

राखु राम कहुँ जेहि तेहि भाँती। नाहि त जरिहि जनमु भरि छाती॥
देखी ब्याधि असाधि नृपु परेउ धरनि धुनि माथ।
कहत परम आरत बचन राम राम रघुनाथ॥ ३४॥

ब्याकुल राउ सिथिल सब गाता। करिनि कलपतरु मनहु निपाता।
कंठु सूख मुख आव न बानी। जनु पाठीनु दीनु बिनु पानी।
पुनि कह कटु कठोर कैकेई। मनहुँ घाय महुँ माहुरु देई।
जौं अंतहु अस करतबु रहेऊ। माँगु माँगु तुम्ह केहि बल कहेऊ।
दुइ कि होहिं ओक समय भुआला। हँसब ठठाइ फुलाउब गाला।
दानि कहाउब अरु कृपनाई। होइ कि खेम कुसल रौताई।
छाडहु बचनु कि धीरजु धरहू। जनि अबला जिमि करुना करहू।
तनु तिय तनय धामु धनु धरनी। सत्यसंध कहुँ तृन सम बरनी॥
मरम बचन सुनि राउ कह कहु कछु दोषु न तोर।
लागेउ तोहि पिसाच जिमि कालु कहावत मोर॥ ३५॥

चहत न भरत भूपतहि भोरें। बिधिबस कुमति बसी जिय तोरें।
सो सबु मोर पाप परिनामू। भयेउ कुठाहर जेहि बिधि बामू।
सुबस बसिहि फिरि अवध सुहाई। सब गुन धाम राम प्रभुताई।
करिहहिं भाइ सकल सेवकाई। होइहि तिहुँ पुर राम बड़ाई।
तोर कलंकु मोर पछिताऊ। मुयेहु न मिटिहि न जाइहि काऊ।
अब तोहि नीक लाग करु सोई। लोचन ओट बैठु मुहु गोई।
जब लगि जिअउँ कहउँ कर जोरी। तब लगि,जनि कछु कहसि बहोरी।
फिर पछतैहसि अंत अभागी। मारसि गाइ नहारू लागी॥
परेउ राउ कहि कोटि बिधि काहे करसि निदानु।
कपट सयानि न कहति कछु जागति मनहुँ मसानु॥ ३६॥

राम राम रट बिकल भुआलू। जनु बिनु पंख बिहंग बेहालू।

१–२, ३, ६, अनु ५.

हृदयँ मनाव भोरु जनि होई। रामहि जाइ कहइ जनि कोई।
उदउ करहु जनि रवि रघुकुलगुर। अवध बिलोकि सूल होइहि उर।
भूप प्रीति कैकइ कठिनाई। उभय अवधि बिधि रची बनाई।
बिलपत नृपहि भयेउ भिनुसारा। बीना बेनु संख धुनि द्वारा।
पढ़हिं भाट गुन गावहिं गायक। सुनत नृपहिं जनु लागहिं सायक।
मंगल सकल सोहाहिं न कैसें। सहगामिनिहि बिभूषन जैसें।
तेहि निसि नींद परी नहि काहू। राम दरस लालसा उछाहू॥

द्वार भीर सेवक सचिव कहहिं उदित रबि देखि।
जागेउ अजहुँ न अवधपति कारनु कवनु बिसेखि॥ ३७॥

पछिलें पहर भूपु नित जागा। आजु हमहिं बड़ अचरजु लागा।
जाहु सुमंत्र जगावहु जाई। कीजिअ काजु रजायसु पाई।
गये सुमंत्रु तब राउर माहीं। देखि भयावन जात डेराहीं।
धाइ खाइ जनु जाइ न हेरा। मानहु बिपति बिषाद बसेरा।
पूँछें कोउ न ऊतरु देई। गये जेहि भवन भूप कैकेई।
कहि जयजीव बैठ सिर नाई। देखि भूप गति गयेउ सुखाई।
सोच बिकल बिबरन महि परेऊ। मानहुँ कमल मूलु परिहरेऊ।
सचिउ सभीत सकै नहि पूँछी। बोली असुभभरी सुभछूछी॥

परी न राजहि नींद निसि हेतु जान जगदीसु।
रामु रामु रटि भोरु किय कहइ न मरमु महीसु॥ ३८॥

आनहु रामहि बेगि बोलाई। समाचार तब पूछेहु आई।
चलेउ सुमंत्रु राय रुख जानी। लखी कुचालि कीन्हि कछु रानी।
सोच बिकल मग परइ न पाऊ। रामहि बोलि कहिहि का राऊ।
उर धरि धीरजु गयेउ दुआरें। पूँछहिं सकल देखि मनु मारें।
समाधानु करि सो सब ही का। गयेउ जहाँ दिनकर कुल टीका।
राम सुमंत्रहिं आवत देखा। आदरु कीन्ह पिता सम लेखा।

निरखि बदनु कहि भूप रजाई। रघुकुल दीपहि चलेउ लेवाई।
रामु कुभाँति सचिव सँग जाहीं। देखि लोग जहँ तहँ बिलखाहीं॥
जाइ दीख रघुबंसमनि नरपति निपट कुसाजु।
सहमि परेउ लखि सिंघिनिहि मनहुँ बृद्ध गजराजु॥ ३९॥

सूखहिं अधर जरइ सब अंगू। मनहु दीन मनि हीन भुअंगू।
सरुष समीप दीखि कैकेई। मानहु मीचु घरी गनि लेई।
करुनामय मृदु राम सुभाऊ। प्रथम दीख दुख सुना न काऊ।
तदपि धीर धरि समउ बिचारी। पूँछी मधुर बचन महतारी।
मोहि कहु मातु तात दुख कारनु। करिअ जतनु जेहि होइ निवारनु।
सुनहु राम सबु कारन एहू। राजहि तुम्ह पर बहुत सनेहू।
देन कहेन्हि मोहि दुइ बरदाना। माँगेउँ जो कछु मोहि सोहाना।
सो सुनि भयेउ भूप उर सोचू। छाड़ि न सकहिं तुम्हार सँकोचू॥
सुत सनेहु इत बचन उत संकट परेउ नरेसु।
सकहु त आयसु धरहु सिर मेटहु कठिन कलेसु॥ ४०॥

निधरक बैठि कहै कटु बानी। सुनत कठिनता अति अकुलानी।
जीभ कमान बचन सर नाना। मनहु महिपु मृदु लच्छ समाना।
जनु कठोरपनु धरें सरीरू। सिखइ धनुषबिद्या बर बीरू।
सबु प्रसंगु रघुपतिहि सुनाई। बैठि मनहु तनु धरि निठुराई।
मन मुसुकाइ भानुकुल भानू। रामु सहज आनंद निधानू।
बोले बचन बिगत सब दूपन। मृदु मंजुल जनु बाग बिभूषन।
सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी। जो पितु मातु बचन अनुरागी।
तनय मातु पितु तोषनिहारा। दुर्लभ जननि सकल संसारा॥
मुनिगन मिलनु बिसेषि बन सबहि भाँति हित मोर।
तेहि पर पितु आयेसु बहुरि संमत जननी तोर॥ ४१॥

०१-५, ६; महँ २, ३.

भरतु प्रान प्रिय पावहिं राजू। बिधि सब बिधि मोहि सनमुख आजू।
जौं न जाउँ बन ऐसेहु काजा। प्रथम गनिअ मोहि मूढ़ समाजा।
सेवहिं अरँडु कलपतरु त्यागी। परिहरि अमृतु लेहिं बिषु माँगी।
तेउ न पाइअ[1] समउ चुकाहीं। देखु बिचारि मातु मन माहीं।
अंब एकु दुखु मोहि बिसेखी। निपट बिकल नरनायकु देखी।
थोरिहि बात पितहि दुखु भारी। होति प्रतीति न मोहि महतारी।
राउ धीरु गुन उदधि अगाधू। भा मोहि तें कछु बड़ अपराधू।
जा तें मोहि न कहत कछु राऊ। मोरि सपथ तोहि कहु सति भाऊ॥

सहज सरल रघुबर बचन कुमति कुटिल करि जान।
चलइ जोंक जल बक्र गति जद्यपि सलिलु समान॥ ४२॥

रहसी रानि राम रुख पाई। बोली कपट सनेहु जनाई।
सपथ तुम्हार भरत कै आना। हेतु न दूसर मैं कछु जाना।
तुम्ह अपराध जोगु नहि ताता[1]। जननी जनक बंधु सुखदाता।
राम सत्य सबु जो कछु कहहू। तुम्ह पितु मातु बचन रत अहहू।
पितहि बुझाइ कहहु बलि सोई। चौथेंपन जेंहि अजसु न होई।
तुम्ह सम सुअन सुकृत जेहि दीन्हे। उचित न तासु निरादरु कीन्हे।
लागहिं कुमुख बचन सुभ कैसे। मगह गयादिक तीरथ जैसे।
रामहि मातु बचन सब भाए। जिमि सुरसरि गत सलिल सुहाए॥

गइ मुरुछा रामहि सुमिरि नृप फिरि करवट लीन्ह।
सचिव राम आगमनु कहि बिनय समय सम कीन्ह॥ ४३॥

अवनिप अकनि रामु पगु धारे। धरि धीरजु तब नयन उघारे।
सचिव सँभारि राउ बैठारे। चरन परत नृप रामु निहारे।
लिए सनेह बिकल उर लाई। गइ मनि मनहु फनिक फिरि पाई।

१–२, ५; पाइ अस ३, ६.

रामहि चितइ रहेउ नरनाहू । चला बिलोचन बारि प्रबाहू ।
सोक बिबस कछु कहइ न पारा । हृदय लगावत बारहिं बारा ।
बिधिहि मनाव राउ मन माहीं । जेहि रघुनाथु न कानन जाहीं ।
सुमिरि महेसहि कहइ निहोरी । बिनती सुनहुँ सदासिव मोरी ।
आसुतोष तुम्ह अवढर दानी । आरति हरहु दीन जनु जानी ॥
तुम्ह प्रेरक सबकें हृदयँ सो मति रामहि देहु ।
बचनु मोर तजि रहहिं घर परिहरि सीलु सनेहु ॥ ४४ ॥

अजसु होउ जग सुजसु नसाऊ । नरक परौं बरु सुरपुर जाऊ ।
सब दुख दुसह सहावउ मोही । लोचन ओट रामु जनि होहीं ।
अस मन गुनइँ राउ नहि बोला । पीपर पात सरिस मनु डोला ।
रघुपति पितहि प्रेम बस जानी । पुनि कछु कहिहि मातु अनुमानी ।
देस काल अवसर अनुसारी । बोले बचन बिनीत बिचारी ।
तात कहौं कछु करौं ढिठाई । अनुचितु छमब जानि लरिकाई ।
अति लघु बात लागि दुखु पावा । काहु न मोहि कहि प्रथम जनावा ।
देखि गोसाइहिं, पूछिउँ माता । पुनि प्रसंगु भये सीतल गाता ॥
मंगल समय सनेह बस सोचु परिहरिअ तात ।
आयेसु देइअ हरषि हिय कहि पुलके प्रभु गात ॥ ४५ ॥

धन्य जनमु जगतीतल तासू । पितहि प्रमोदु चरित सुनि जासू ।
चारि पदारथ करतल ताकें । प्रिय पितु मातु प्रान सम जाकें ।
आयेसु पालि जनम फलु पाई । ऐहउँ बेगिहि होउ रजाई ।
बिदा मातु सन आवौं माँगी । चलिहौं बनहिं बहुरि पग लागी ।
अस कहि रामु गवनु तब कीन्हा । भूप सोक बस उतरु न दीन्हा ।
नगर ब्यापि गइ बात सुतीछी । छुअत चढ़ी जनु सब तन बीछी ।
सुनि भये बिकल सकल नर नारी । बेलि बिटप जिमि देखि दवारी ।
जो जहँ सुनइ धुनइँ सिरु सोई । बड़ बिषादु नहि धीरजु होई ॥

मुख सुखाहिं लोचन श्रवहिं सोकु न हृदय समाइ।
मनहुँ करुन रस कटकई उतरी अवध बजाइ ॥ ४६ ॥

मिलेहि माँझ बिधि बात बेगारी। जहँ तहँ देहिं कैकइहि गारी।
एहि पापिनिहि बूझि का परेऊ। छाइ भवन पर पावकु धरेऊ।
निज कर नयन काढ़ि चह दीखा। डारि सुधा बिषु चाहति चीखा।
कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी। भइ रघुबंस बेनु बन आगी।
पालव बैठि पेड़ु येहि काटा। सुख महुँ सोक ठाटु धरि ठाटा।
सदा रामु येहि प्रान समाना। कारन कवन कुटिलपनु ठाना।
सत्य कहहिं कबि नारि सुभाऊ। सब बिधि अगहु[1] अगाध दुराऊ।
निज प्रतिबिंबु बरुकु गहि जाई। जानि न जाइ नारि गति भाई ॥

काह न पावकु जारि सक का न समुद्र समाइ।
का न करइ अबला प्रबल केहि जग कालु न खाइ ॥ ४७ ॥

का सुनाइ बिधि काह सुनावा। का देखाइ चह काह देखावा।
एक कहहिं भल भूप न कीन्हा। बरु बिचारि नहि कुमतिहि दीन्हा।
जो हठि भयेउ सकल दुख भाजनु। अबला बिबस ग्यानु गुनु गा जनु।
एक धरम परमिति पहिचानें। नृपहि दोसु नहिं देहिं सयानें।
सिबि दधीचि हरिचंद कहानी। एक एक सन कहहिं बखानी।
एक भरत कर संमत कहहीं। एक उदास भाय सुनि रहहीं।
कान मूदि कर रद गहि जीहा। एक कहहिं एह बात अलीहा।
सुकृत जाहिं अस कहत तुम्हारें। रामु भरत कहुँ प्रान पिआरे[2] ॥

चंदु चवइ बरु अनल कन सुधा होइ बिष तूल।
सपनेहुँ कबहुँ न करहिं किछु भरतु राम प्रतिकूल ॥ ४८ ॥

एक बिधातहि दूषनु देहीं। सुधा देखाइ दीन्ह बिषु जेहीं।
खरभरु नगर सोचु सब काहू। दुसह दाहु उर मिटा उछाहू।

१–२, ३, अगमु ५, ६.   २–२, ६; परम पिआरे ३, ५

विप्रबधू कुलमान्य जठेरी । जे प्रिय परम कैकई केरी ।
लगीं देन सिख सीलु सराही । बचन बान सम लागहिं ताही ।
भरतु न मोहि प्रिय राम समाना । सदा कहहु येहु सबु जगु जाना ।
करहु राम पर सहज सनेहू । केहि अपराध आजु बनु देहू ।
कबहुँ न कियेहु सवतिआ रेसू । प्रीति प्रतीति जान सबु देसू ।
कौसल्याँ अब काह बिगारा । तुम्ह जेहि लागि बज्र पुर पारा ॥

सीय कि पिय सँगु परिहरिहि लखनु कि रहिहहिं धाम ।
राजु कि भूँजब भरत पुर नृपु कि जिइहि बिनु राम ॥ ४९ ॥

अस बिचारि उर छाड़हु कोहू । सोक कलंक कोठि[१] जनि होहू ।
भरतहि अवसि देहु जुबराजू । कानन काह राम कर काजू ।
नाहिन रामु राज के भूखे । धरम धुरीन बिषय रस रूखे ।
गुरगृह बसहुँ रामु तजि गेहू । नृप सन अस बरु दूसर लेहू ।
जौं नहि लगिहहु कहें हमारें । नहि लागिहि कछु हाथ तुम्हारे ।
जौं परिहास कीन्हि कछु होई । तौ कहि प्रगट जनावहु सोई ।
राम सरिस सुत कानन जोगू । काह कहिहि सुनि तुम्ह कहुँ लोगू ।
उठहु बेगि सोइ करहु उपाई । जेहि बिधि सोकु कलंकु नसाई ॥

जेहि भाँति सोकु कलंकु जाइ उपाय करि कुल पालही ।
हठि फेरु रामहि जात बन जनि बात दूसरि चालही ।
जिमि भानु बिनु दिनु प्रान बिनु तनु चंदु बिनु जिमि जामिनी ।
तिमि अवध तुलसीदास प्रभु बिनु समुझि धौं जिय भामिनी ॥

सखिन्ह सिखावनु दीन्ह सुनत मधुर परिनाम हित ।
तेहिं कछु कान न कीन्ह कुटिल प्रबोधी कूबरी ॥ ५० ॥

उतरु न देइ दुसह रिस रूखी । मृगिन्ह चितव जनु बाघिनि भूखी ।
ब्याधि असाधि जानि तिन्ह त्यागी । चलीं कहत मतिमंद अभागी ।

१–२, ३; कोपि ५, ६.

राजु करत येह दैअँ बिगोई। कीन्हेसि अस जस करइ न कोई।
ऐहि निधि निलपहिं पुर नर नारी। देहिं कुचालिहिं कोटिक गारी।
जरहिं बिषमजर लेहिं उसासा। कवनि राम बिनु जीवन आसा।
निपुल नियोग प्रजा अकुलानी। जनु जलचर गन सूखत पानी।
अतिनिषाद बस लोग लोगाई। गये मातु पहिं रामु गोसाईं।
मुखु प्रसंनु चित चौगुन चाऊ। मिटा[१] सोचु जनि राखइ राऊ॥

नव गयंदु रघुबीर मनु राजु अलान समान।
छूट जानि बन गवनु सुनि उर अनंदु अधिकान॥ ५१॥

रघुकुल तिलक जोरि दोउ हाथा। मुदित मातु पद नायेउ माथा।
दीन्हि असीस लाइ उर लीन्हे। भूषन बसन निछावरि कीन्हे।
बारबार मुख चुंबति माता। नयन नेह जलु पुलकित गाता।
गोद राखि पुनि हृदयँ लगाए। स्रवत प्रेम रस पयद सुहाए।
प्रेमु प्रमोदु न कछु कहि जाई। रंकु धनद पदवी जनु पाई।
सादर सुंदर बदनु निहारी। बोली मधुर बचन महतारी।
कहहु तात जननी बलिहारी। कबहिं लगन मुद मंगलकारी।
सुकृत सील सुख सींव सुहाई। जनम लाभ कइ अवधि अघाई॥

जेहि चाहत नर नारि सब अति आरत ऐहि भाँति।
जिमि चातक चातकि तृषित बृष्टि सरद रितु स्वाति॥ ५२॥

तात जाउँ बलि बेगि नहाहू। जो मन भाव मधुर कछु खाहू।
पितु समीप तब जायेहु भैआ। भ बड़ि बार जाइ बलि मैआ।
मातु बचन सुनि अति अनुकूला। जनु सनेह सुरतरु के फूला।
सुख मकरंद भरे श्रियमूला। निरखि राम मनु भँवरु न भूला।
धरम धुरीन धरम गति जानी। कहेउ मातु सन अति मृदु बानी।
पिता दीन्ह मोहि कानन राजू। जहँ सब भाँति मोर बड़ काजू।

१–२, ३, ५; इदै ६.

आयेसु देहि मुदितमन माता। जेंहि मुद मंगल कानन जाता।
जनि सनेह बस डरपसि भोरें। आनँदु अंब अनुग्रह तोरें॥
बरष चारि दस बिपिन बसि करि पितु बचन प्रमान।
आइ पाय पुनि देखिहौं मनु जनि करसि मलान॥ ५३॥

बचन बिनीत मधुर रघुबर के। सर सम लगे मातु उर करके।
सहमि सूखि सुनि सीतलि बानी। जिमि जवास परें पावस पानी।
कहि न जाइ कछु हृदयँ बिषादू। मनहुँ मृगी सुनि केहरि नादू।
नयन सजल तन थरथर काँपी। मांजहि खाइ मीन जनु मापी।
धरि धीरजु सुत बदनु निहारी। गदगद बचन कहति महतारी।
तात पितहि तुम्ह प्रान पिआरे। देखि मुदित नित चरित तुम्हारे।
राजु देन कहुँ सुभ दिन साधा। कहेउ जान बन केहि अपराधा।
तात सुनावहु मोहि निदानू। को दिनकर कुल भयेउ कृसानू॥
निरखि राम रुख सचिव सुत कारनु कहेउ बुझाइ।
सुनि प्रसंगु रहि मूक जिमि दसा बरनि नहि जाइ॥ ५४॥

राखि न सकइ न कहि सक जाहू। दुहूँ भाँति उर दारुन दाहू।
लिखत सुधाकर गा लिखि राहू। बिधि गति बाम सदा सब काहू।
धरम सनेह उभय मति घेरी। भइ गति साँप छुछुंदरि केरी।
राखौं सुतहि करौं अनुरोधू। धरमु जाइ अरु बंधु बिरोधू।
कहौं जान बन तौ बड़ि हानी। संकट सोच बिबस भइ रानी।
बहुरि समुझि तिय धरमु सयानी। रामु भरतु दोउ सुत सम जानी।
सरल सुभाउ राम महतारी। बोली बचन धीर धरि भारी।
तात जाउँ बलि कीन्हेहु नीका। पितु आयेसु सब धरम क टीका॥
राजु देन कहि दीन्ह बनु मोहि न सो दुख लेसु।
तुम्ह बिनु भरतहि भूपतिहि प्रजहि प्रचंड कलेसु॥ ५५॥

१-२, ३, ५; मोरे ६.

जौं केवल पितु आयेसु ताता। तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता।
जौं पितु मातु कहेउ बन जाना। तौ काननु सत अवध समाना।
पितु बनदेव मातु बनदेवी। खग मृग चरन सरोरुह सेवी।
अंतहुँ उचित नृपहि बनबासू। बय बिलोकि हिय होइ हराँसू।
बड़भागी बनु अवध अभागी। जो रघुबंस तिलक तुम्ह त्यागी।
जौं सुत कहौं संग मोहि लेहू। तुम्हरे हृदय होइ संदेहू।
पूत परम प्रिय तुम्ह सबही के। प्रान प्रान के जीवन जी के।
ते तुम्ह कहहु मातु बन जाऊँ। मैं सुनि बचन बैठि पछिताऊँ॥

अस बिचारि नहिं करउँ हठ झूठ सनेहु बढ़ाइ।
मानि मातु कर नात बलि सुरति बिसरि जनि जाइ॥ ५६॥

देव पितर सब तुम्हहिं गोसाईं। राखहुँ पलक नयन की नाईं।
अवधि अंबु प्रिय परिजन मीना। तुम्ह करुनाकर धरम धुरीना।
अस बिचारि सोइ करहु उपाई। सबहि जिअत जेहिं भेंटहु आई।
जाहु सुखेन बनहि बलि जाऊँ। करि अनाथ जन परिजन गाऊँ।
सब कर आजु सुकृत फल बीता। भयेउ करालु कालु बिपरीता।
बहु बिधि बिलपि चरन लपटानी। परम अभागिनि आपुहि जानी[१]।
दारुन दुसह दाहु उर ब्यापा। बरनि न जाहिं बिलाप कलापा।
राम उठाइ मातु उर लाई। कहि मृदु बचन बहुरि समुझाई॥

समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ।
जाइ सासु पद कमल जुग बंदि बैठि सिरु नाइ॥ ५७॥

दीन्हि असीस सासु मृदु बानी। अति सुकुमारि देखि अकुलानी।
बैठि नमित मुख सोचति सीता। रूप रासि पति पेमु पुनीता।
चलन चहत बन जीवननाथू। केहि सुकृती सन होइहि साथू।

१-३ में यह अर्धाली नहीं है।

की तनु प्रान कि केवल प्राना । बिधि करतबु कछु जाइ न जाना ।
चारु चरन नख लेखति धरनी । नूपुर मुखर मधुर कबि बरनी ।
मनहुँ प्रेम बस बिनती करहीं । हमहिं सीय पद जनि परिहरहीं ।
मंजु बिलोचन मोचति बारी । बोली देखि राम महतारी ।
तात सुनहुँ सिय अतिसुकुमारी । सासु ससुर परिजनहिं पिआरी ॥

पिता जनक भूपालमनि ससुर भानुकुल भानु ।
पति रबिकुल कैरव बिपिन बिधु गुन रूप निधानु ॥ ५८ ॥

मैं पुनि पुत्रबधू प्रिय पाई । रूप रासि गुन सील सुहाई ।
नयन पुतरि करि प्रीति बढ़ाई । राखेउँ प्रान जानकिहि लाई ।
कलपबेलि जिमि बहु बिधि लाली । सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली ।
फूलत फलत भयेउ बिधि बामा । जानि न जाइ काह परिनामा ।
पलँग पीठ तजि गोद हिंडोरा । सिय न दीन्ह पगु अवनि कठोरा ।
जिअनमूरि जिमि जोगवत रहऊँ । दीप बाति नहि टारन कहऊँ ।
सोइ सिय चलन चहति बन साथा । आयेसु काह होइ रघुनाथा ।
चंद किरन रस रसिक चकोरी । रबि रुख नयन सकै किमि जोरी ॥

करि केहरि निसिचर चरहिं दुष्ट जंतु बन भूरि ।
बिष बाटिक कि सोह सुत सुभग सजीवनि मूरि ॥ ५९ ॥

बन हित कोल किरात किसोरी । रची बिरंचि बिषय सुख भोरी ।
पाहन कृमि जिमि कठिन सुभाऊ । तिन्हहि कलेसु न कानन काऊ ।
कै तापस तिय कानन जोगू । जिन्ह तप हेतु तजा सब भोगू ।
सिय बन बसिहि तात केहि भाँती । चित्र लिखित कपि देखि डेराती ।
सुरसर सुभग बनज बन चारी । डाबर जोगु कि हंसकुमारी ।
अस बिचारि जस आयेसु होई । मैं सिख देउँ जानकिहि सोई ।
जौं सिय भवन रहइ कह अंबा । मोहि कहँ होइ बहुत अवलंबा ।
सुनि रघुबीर मातु प्रिय बानी । सील सनेह सुधा जनु सानी ॥

कहि प्रिय वचन विवेकमय कीन्हि मातु परितोषु ।
लगे प्रबोधन जानकिहि प्रगटि बिपिन गुन दोषु ॥ ६० ॥

मातु समीप कहत सकुचाहीं । बोले समउ समुझि मन माहीं ।
राजकुमारि सिखावनु सुनहू । आनि भाँति जिय जनि कछु गुनहू ।
आपन मोर नीक जौं चहहू । बचनु हमार मानि गृह रहहू ।
आयसु मोर सासु सेवकाई । सब बिधि भामिनि भवन भलाई ।
येहि तें अधिक धरमु नहि दूजा । सादर सासु ससुर पद पूजा ।
जब जब मातु करिहि सुधि मोरी । होइहि प्रेम बिकल मति भोरी ।
तब तब तुम्ह कहि कथा पुरानी । सुंदरि समुझायेहु मृदु बानी ।
कहौं सुभाय सपथ सत मोही । सुमुखि मातु हित राखौं तोही ॥
गुर श्रुति संमत धरम फलु पाइअ बिनहि कलेस ।
हठ बस सब संकट सहे गालव नहुष नरेस ॥ ६१ ॥

मैं पुनि करि प्रवान पितु बानी । बेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी ।
दिवस जात नहि लागिहि बारा । सुंदरि सिखवनु सुनहु हमारा ।
जौं हठ करहु प्रेम बस बामा । तौ तुम्ह दुखु पाउब परिनामा ।
काननु कठिन भयंकरु भारी । घोर घामु हिम बारि बयारी ।
कुस कंटक मग काँकर नाना । चलब पयादेहि बिनु पदत्राना ।
चरन कमल मृदु मंजु तुम्हारे । मारग अगम भूमिधर भारे ।
कंदर खोह नदीं नद नारे । अगम अगाध न जाहिं निहारे ।
भालु बाघ वृक केहरि नागा । करहिं नाद सुनि धीरजु भागा ॥
भूमि सयन बलकल बसन असनु कंद फल मूल ।
ते कि सदा सब दिन मिलहिं सबुइ समय अनुकूल ॥ ६२ ॥

नरअहार रजनीचर चरहीं । कपट बेष बिधि कोटिक करहीं ।
लागइ अति पहार कर पानी । बिपिन बिपति नहि जाइ बखानी ।

व्याल कराल बिहग बन घोरा। निसिचर निकर नारि नर चोरा।
डरपहिं धीर गहन सुधि आएँ। मृगलोचनि तुम्ह भीरु सुभाएँ।
हंस गवनि तुम्ह नहि बन जोगू। सुनि अपजसु मोहि देइहि लोगू।
मानस सलिल सुधा प्रतिपाली। जिअइ कि लवनपयोधि मराली।
नव रसाल बन बिहरन सीला। सोह कि कोकिल बिपिन करीला।
रहहु भवन अस हृदय बिचारी। चंदबदनि दुखु कानन भारी॥

सहज सुहृद गुर स्वामि सिख जो न करइ सिर मानि।
सो पछिताइ अघाइ उर अवसि होइ हित हानि॥ ६३॥

सुनि मृदु बचन मनोहर पिअ के। लोचन ललित भरे जल सिय के।
सीतल सिख दाहक भइ कैसें। चकइहि सरद चंद निसि जैसें।
उतरु न आव बिकल बैदेही। तजन चहत सुचि स्वामि सनेही।
बरबस रोकि बिलोचन बारी। धरि धीरजु उर अवनि कुमारी।
लागि सासु पग कह कर जोरी। छमबि देबि बड़ि अबिनय मोरी।
दीन्हि प्रानपति मोहि सिख सोई। जेहि बिधि मोर परम हित होई।
मैं पुनि समुझि दीखि मन माहीं। पिय बियोग सम दुखु जग नाहीं॥

प्राननाथ करुनायतन सुंदर सुखद सुजान।
तुम्ह बिनु रघुकुल कुमुद बिधु सुरपुर नरक समान॥ ६४॥

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई। प्रिय परिवारु सुहृद समुदाई।
सासु ससुर गुर सजन सहाई। सुत सुंदर सुसील सुखदाई।
जहँ लगि नाथ नेह अरु नातें। पिय बिनु तियहि तरनिहु ते ताते।
तनु धनु धामु धरनि पुर राजू। पति बिहीन सबु सोक समाजू।
भोग रोग सम भूषन भारू। जम जातना सरिस संसारू।
प्राननाथ तुम्ह बिनु जग माहीं। मो कहुँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं।
जिअ बिनु देह नदी बिनु बारी। तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी।
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारें। सरद बिमल बिधु बदनु निहारें॥

खग मृग परिजन नगरु बनु बलकल बिमल दुकूल ।
नाथ साथ सुर सदन सम परनसाल सुख मूल ॥ ६५ ॥

बनदेवीं बनदेव उदारा॰। करिहहिं सासु ससुर सम सारा ।
कुस किसलय साथरी सुहाई । प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई ।
कंद मूल फल अमिअ अहारू । अवध सौध सत सरिस पहारू ।
छिनु छिनु प्रभु पद कमल बिलोकी । रहिहौं मुदित दिवस जिमि कोकी ।
बन दुख नाथ कहे बहुतेरे । भय बिषाद परिताप घनेरे ।
प्रभु बियोग लवलेस समाना । सब मिलि होहिं न कृपानिधाना ।
अस जियँ जानि सुजान सिरोमनि । लेइअ संग मोहि छाड़िअ जनि ।
बिनती बहुत करौं का स्वामी । करुनामय उर अंतरजामी ॥

राखिअ अवध जो अवधि लगि रहत जानिअहिं प्रान ।
दीनबंधु सुंदर सुखद सील सनेह निधान ॥ ६६ ॥

मोहि मग चलत न होइहि हारी । छिनु छिनु चरन सरोज निहारी ।
सबहि भाँति पिय सेवा करिहौं । मारग जनित सकल श्रम हरिहौं ।
पाय॰ पखारि बैठि तरु छाहीं । करिहौं बाउ मुदित मन माहीं ।
श्रम कन सहित स्याम तनु देखें । कहँ दुख समउ प्रानपति पेखें ।
सम महि तृन तरु पल्लव डासी । पाय पलोटिहि सब निसि दासी ।
बार बार मृदु मूरति जोही । लागिहि तात बयारि न मोही ।
को प्रभु सँग मोहि चितवनि हारा । सिंघ बधुहि जिमि ससक सिआरा ।
मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू । तुम्हहि उचित तपु मो कहुँ भोगू ॥

ऐसेउ बचन कठोर सुनि जौं न हृदउ बिलगान ।
तौ प्रभु बिषम बियोग दुख सहिहहिं पावँर प्रान ॥ ६७ ॥

अस कहि सीय बिकल भइ भारी । बचन बियोगु न सकी सँभारी ।
देखि दसा रघुपति जिअ जाना । हठि राखे नहिं राखिहि प्राना ।
कहेउ कृपालु भानुकुल नाथा । परिहरि सोचु चलहु बन साथा ।

नहि बिषाद कर अवसरु आजू । बेगि करहु बन गवन समाजू ।
कहि प्रिय वचन प्रिया समुझाई । लगे मातु पद आसिष पाई ।
बेगि प्रजा दुख मेटब आई । जननी निठुर बिसरि जनि जाई ।
फिरिहि दसा बिधि बहुरि कि मोरी । देखिहौं नयन मनोहर जोरी ।
सुदिनु सुघरी तात कब होइहि । जननी जिअत बदन बिधु जोइहि[१] ॥
बहुरि बच्छ कहि लालु कहि रघुपति रघुबर तात ।
कबहिं बोलाइ लगाइ हियँ हरषि निरखिहौं गात ॥ ६८ ॥

लखि सनेह कातरि महतारी । बचनु न आव बिकल भइ भारी ।
राम प्रबोधु कीन्ह बिधि नाना । समउ सनेहु न जाइ बखाना ।
तब जानकी सासु पग लागी । सुनिय माय मैं परम अभागी ।
सेवा समय दैअँ बनु दीन्हा । मोर मनोरथु सफल न कीन्हा ।
तजब छोभु जनि छाड़िअ छोहू । करमु कठिन कछु दोसु न मोहू ।
सुनि सिय बचन सासु अकुलानी । दसा कवनि बिधि कहौं बखानी ।
बारहि बार लाइ उर लीन्ही । धरि धीरजु सिख आसिष दीन्ही ।
अचल होउ अहिवातु तुम्हारा । जब लगि गंग जमुन जल धारा ॥
सीतहि सासु असीस सिख दीन्हि अनेक प्रकार ।
चली नाइ पद पदुम सिरु अतिहित बारहिं बार ॥ ६९ ॥

समाचार जब लछिमन पाये । ब्याकुल बिलख बदन उठि धाये ।
कंप पुलक तन नयन सनीरा । गहे चरन अतिप्रेम अधीरा ।
कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े । मीनु दीनु जनु जल तें काढ़े ।
सोचु हृदय बिधि का होनिहारा । सबु सुखु सुकृतु सिरान हमारा ।
मो कहुँ काह कहब रघुनाथा । रखिहहिं भवन कि लेहहिं साथा ।
राम बिलोकि बंधु कर जोरें । देह गेह सब सन तृनु तोरें ।

१—यह पंक्ति १७६२ वि० की प्रति में नहीं है । संभवतः छूट गई है । भागवतदास ने ग्रहण किया है अतः सं० १७२१ में अवश्य ही है ।

बोले बचनु राम नयनागर। सील सनेह सरल सुख सागर।
तात प्रेम बस जनि कदराहू। समुझि हृदय परिनाम उछाहू॥
मातु पिता गुर स्वामि सिख सिर धरि करहिं सुभायँ।
लहेउ लाभु तिन्ह जनम कर नतरु जनमु जग जायँ॥ ७०॥
अस जिय जानि सुनहु सिख भाई। करहु मातु पितु पद सेवकाई।
भवन भरतु रिपुसूदनु नाहीं। राउ वृद्ध मम दुखु मन माहीं।
मैं बन जाउँ तुम्हहि लेइ साथा। होइ सबहि बिधि अवध अनाथा।
गुर पितु मातु प्रजा परिवारू। सब कहुँ परइ दुसह दुख भारू।
रहहु करहु सब कर परितोषू। नतरु तात होइहि बड़ दोषू।
जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृपु अवसि नरक अधिकारी।
रहहु तात असि नीति बिचारी। सुनत लखनु भये ब्याकुल भारी।
सिअरे बचन सूखि गये कैसें। परसत तुहिन तामरसु जैसें॥
उतरु न आवत प्रेम बस गहे चरन अकुलाइ।
नाथ दासु मैं स्वामि तुम्ह तजहु त काह बसाइ॥ ७१॥
दीन्हि मोहि सिख नीकि गोसाईं। लागि अगम अपनी कदराईं।
नर बर धीर धरम धुरधारी। निगम नीति कहुँ ते अधिकारी।
मैं सिसु प्रभु सनेह प्रतिपाला। मंदरु मेरु कि लेहिं मराला।
गुर पितु मातु न जानउँ काहू। कहउँ सुभाउ नाथ पतिआहू।
जहँ लगि जगत सनेह सगाई। प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई।
मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी। दीनबंधु उर अंतरजामी।
धरम नीति उपदेसिअ ताही। कीरति भूति सुगति प्रिय जाही।
मन क्रम बचन चरन रत होई। कृपासिंधु परिहरिअ कि सोई।
करुना सिंधु सुबंधु के सुनि मृदु बचन बिनीत।
समुझाए उर लाइ प्रभु जानि सनेह सभीत॥ ७२॥
मागहु बिदा मातु सन जाई। आवहु बेगि चलहु बन भाई।

मुदित भये सुनि रघुबर बानी। भअेउ लाभ बड़ गइ बड़ि हानी।
हरषित हृदय मातु पहिं आए। मनहु अंध फिरि लोचन पाए।
जाइ जननि पग नायेउ माथा। मनु रघुनंदनु जानकि साथा।
पूछे मातु मलिन मनु देखी। लखन कही सब कथा बिसेखी।
गई सहमि सुनि बचन कठोरा। मृगी देखि दव जनु चहुँ ओरा।
लखन लखेउ भा अनरथ आजू। अेहि सनेह बस करब अकाजू।
मागत बिदा सभय सकुचाहीं। जाइ संग बिधि कहिहि कि नाहीं॥
समुझि सुमित्रा राम सिय रूपु सुसीलु सुभाउ।
नृप सनेहु लखि धुनेउ सिरु पापिनि दीन्हि कुदाउ॥ ७३॥

धीरजु धरेउ कुअवसरु जानी। सहज सुहृद बोली मृदु बानी।
तात तुम्हारि मातु बैदेही। पिता रामु सब भाँति सनेही।
अवध तहाँ जहँ राम निवासू। तहइँ दिवसु जहँ भानु प्रकासू।
जौं पै सीय रामु बन जाहीं। अवध तुम्हार काजु कछु नाहीं।
गुर पितु मातु बंधु सुर साईं। सेइअहिं सकल प्रान की नाईं।
रामु प्रान प्रिय जीवन जी के। स्वारथरहित सखा सबही के।
पूजनीय प्रिय परम जहाँ तें। सब मानिअहिं राम के नातें।
अस जिय जानि संग बन जाहू। लेहु तात जग जीवनु लाहू॥
भूरि भागभाजनु भयेहु मोहि समेत बलि जाउँ।
जौं तुम्हरें मनु छाड़ि छलु कीन्ह राम पद ठाउँ॥ ७४॥

पुत्रवती जुबती जग सोई। रघुपति भगतु जासु सुतु होई।
नतरु बाँझ भलि बादि बिआनी। राम बिमुख सुत तें हित जानी[१]।
तुम्हरेहिं भाग रामु बन जाहीं। दूसर हेतु तात कछु नाहीं।
सकल सुकृत कर बड़ फलु[२] एहू। राम सीय पद सहज सनेहू।
रागु रोषु इरिषा मदु मोहू। जनि सपनेहु इन्हके बस होहू।

१–२, ३; हानी ५, ६ २–२; फलु सुत ३, ५, ६.

सकल प्रकार बिकार बिहाई। मन क्रम बचन करेहु सेवकाई।
तुम्ह कहुँ बन सब भाँति सुपासू। सँग पितु मातु रामु सिय जासू।
जेहिं न रामु बन लहहिं कलेसू। सुत सोइ करेहु इहइ उपदेसू॥
उपदेसु येहु, जेहिं तात तुम्हरें रामु सिय सुखु पावहीं।
पितु मातु प्रिय परिवारु पुर सुख सुरति बन बिसरावहीं।
तुलसी प्रभुहि सिख देइ आयेसु दीन्ह पुनि आसिष दई।
रति होउ अबिरल अमल सिय रघुबीर पद नित नित नई॥
मातु चरन सिरु नाइ चले तुरत संकित हृदय।
बागुर बिपम तोराइ मनहुँ भाग मृगु भाग बस॥ ७५॥
गये लखनु जहँ जानकिनाथू। भे मन मुदित पाइ प्रिय साथू।
बंदि राम सिय चरन सुहाए। चले संग नृप मंदिर आए।
कहहिं परसपर पुर नर नारी। भलि बनाइ बिधि बात बिगारी।
तन कृस मन दुखु बदन मलीने। बिकल मनहुँ माखी मधु छीने।
कर मीजहिं सिरु धुनि पछिताहीं। जनु बिनु पंख बिहग अकुलाहीं।
भइ बड़ि भीर भूप दरबारा। बरनि न जाइ बिषादु अपारा।
सचिव उठाइ राउ बैठारे। कहि प्रिय बचन रामु पगु धारे।
सिय समेत दोउ तनय निहारी। ब्याकुल भयेउ भूमिपति भारी॥
सीय सहित सुत सुभग दोउ देखि देखि अकुलाइ।
बारहिं बार सनेह बस राउ लेइ उर लाइ॥ ७६॥
सकइ न बोलि बिकल नरनाहू। सोक जनित उर दारुन दाहू।
नाइ सीसु पद अति अनुरागा। उठि रघुबीर बिदा तब मागा।
पितु असीस आयसु मोहि दीजै। हरप समय बिसमउ कत कीजै।
तात कियें प्रिय प्रेम प्रमादू। जसु जग जाइ होइ अपबादू।
सुनि सनेह बस उठि नरनाहाँ। बैठारे रघुपति गहि बाहाँ।
सुनहु तात तुम्ह कहुँ मुनि कहहीं। रामु चराचर नायकु अहहीं।

सुभ अरु असुभ करम अनुहारी। ईसु देइ फलु हृदय बिचारी।
करै जो करमु पाव फलु सोई। निगम नीति असि कह सबु कोई॥
और करै अपराधु कोउ और पाव फल भोगु।
अतिबिचित्र भगवंत गति को जग जानइ जोगु॥ ७७॥

राय राम राखन हित लागी। बहुत उपाय किये छलु त्यागी।
लखी राम रुख रहत न जाने। धरम धुरंधर धीर सयाने।
तब नृप सीय लाइ उर लीन्ही। अतिहित बहुत भाँति सिख दीन्ही।
कहि बन के दुख दुसह सुनाए। सासु ससुर पितु सुख समुझाए।
सिय मनु राम चरन अनुरागा। घरु न सुगमु बनु बिषमु न लागा।
औरउ सबहि सीय समुझाई। कहि कहि बिपिन बिपति अधिकाई।
सचिव नारि गुर नारि सयानी। सहित सनेह कहहिं मृदु बानी।
तुम्ह कहुँ तौ न दीन्ह बनवासू। करहु जो कहहिं ससुर गुर सासू॥
सिख सीतलि हित मधुर मृदु सुनि सीतहि न सोहानि।
सरद चंद चंदिनि लगत जनु चकई अकुलानि॥ ७८॥

सीय सकुच बस उतरु न देई। सो सुनि तमकि उठी कैकेई।
मुनि पट भूषन भाजन आनी। आगें धरि बोली मृदु बानी।
नृपहि प्रान प्रिय तुम्ह रघुबीरा। सील सनेह न छाड़िहि भीरा।
सुकृतु सुजसु परलोकु नसाऊ। तुम्हहि जान बन कहिहि न काऊ।
अस बिचारि सोइ करहु जो भावा। राम जननि सिख सुनि सुखु पावा।
भूपहि बचन बान सम लागे। करहिं न प्रान पयान अभागे।
लोग बिकल मुरछित नरनाहू। काह करिअ कछु सूझ न काहू।
रामु तुरत मुनि बेषु बनाई। चले जनक जननी सिरु नाई॥
सजि बन साजु समाजु सब बनिता बंधु समेत।
बंदि बिप्र गुर चरन प्रभु चले करि सबहि अचेत॥ ७९॥

निकसि बसिष्ठ द्वार भये ठाढ़े। देखे लोग बिरह दव दाढ़े।

कहि प्रिय बचन सकल समुझाए। बिप्र बृंद रघुबीर बोलाए।
गुर सन कहि बरषासन दीन्हे। आदर दान बिनय बस कीन्हे।
जाचक दान मान संतोषे। मीत पुनीत प्रेम परितोषे।
दासी दास बोलाइ बहोरी। गुरहि सौंपि बोले कर जोरी।
सब कै सार सँभार गोसाईं। करबि जनक जननी की नाईं।
बारहिं बार जोरि जुग पानी। कहत रामु सब सन मृदु बानी।
सोइ सब भाँति मोर हितकारी। जेहि तें रहै भुआल सुखारी॥

सातु सकल मोरें बिरहँ जेहि न होहिं दुख दीन।
सोइ उपाउ तुम्ह करेहु सब पुरजन परम प्रबीन॥ ८०॥

ऐहि बिधि राम सबहि समुझावा। गुर पद पदुम हरषि सिरु नावा।
गनपति गौरि गिरीसु मनाई। चले असीस पाइ रघुराई।
राम चलत अति भयेउ बिषादू। सुनि न जाइ पुर आरत नादू।
कुसगुन लंक अवध अतिसोकू। हरष बिषाद बिबस सुरलोकू।
गइ मुरुछा तब भूपति जागे। बोलि सुमंत्रु कहन अस लागे।
रामु चले बन प्रान न जाहीं। केहि सुख लागि रहत तन माहीं।
ऐहि तें कवन ब्यथा बलवाना। जो दुखु पाइ तजहि तनु प्राना।
पुनि धरि धीर कहै नरनाहू। लै रथु संग सखा तुम्ह जाहू॥

सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनकसुता सुकुमारि।
रथ चढ़ाइ देखराइ बनु फिरेहु गयें दिन चारि॥ ८१॥

जौं नहि फिरहिं धीर दोउ भाई। सत्यसंध दृढ़ब्रत रघुराई।
तौ तुम्ह बिनय करेहु कर जोरी। फेरिअ प्रभु मिथिलेस किसोरी।
जब सिय कानन देखि डेराई। कहेहु मोरि सिख अवसरु पाई।
सासु ससुर अस कहेउ सँदेसू। पुत्रि फिरिअ बन बहुत कलेसू।
पितु गृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी। रहेहु जहाँ रुचि होइ तुम्हारी।
ऐहि बिधि करेहु उपाय कदंबा। फिरइ त होइ प्रान अवलंबा

नाहि त मोर मरनु परिनामा। कछु न बसाइ भयें बिधि बामा।
अस कहि मुरुछि परा महि राऊ। राम लखनु सिय आनि देखाऊ॥
पाइ रजायसु नाइ सिरु रथु अति बेग बनाइ।
गयेउ जहाँ बाहेर नगर सीय सहित दोउ भाइ॥ ८२॥

तब सुमंत्र नृप बचन सुनाए। करि बिनती रथ रामु चढ़ाए।
चढ़ि रथ सीय सहित दोउ भाई। चले हृदय अवधहि सिरु नाई।
चलत रामु लखि अवध अनाथा। बिकल लोग सब लागे साथा।
कृपासिंधु बहु बिधि समुझावहिं। फिरहिं प्रेम बस पुनि फिरि आवहिं।
लागति अवध भयावनि भारी। मानहु कालराति अँधिआरी।
घोर जंतु सम पुर नर नारी। डरपहिं एकहि एक निहारी।
घर मसान परिजन जनु भूता। सुत हित मीत मनहुँ जमदूता।
बागन्ह बिटप बेलि कुँभिलाहीं। सरित सरोवर देखि न जाहीं॥
हय गय कोटिन्ह केलिमृग पुर पसु चातक मोर।
पिक रथांग सुक सारिका सारस हंस चकोर॥ ८३॥

राम बियोग बिकल सब ठाढ़े। जहँ तहँ मनहु चित्र लिखि काढ़े।
नगरु सफल[1] बनु गहबर भारी। खग मृग बिपुल सकल नर नारी।
बिधि कैकई किरातिनि कीन्ही। जेंहि दव दुसह दसहुँ दिसि दीन्ही।
सहि न सके रघुबर बिरहागी। चले लोग सब ब्याकुल भागी।
सबहि बिचारु कीन्ह मनमाहीं। राम लखनु सिय बिनु सुखु नाहीं।
जहाँ रामु तहँ सबुइ समाजू। बिनु रघुबीर अवध नहि काजू।
चले साथ अस मंत्रु दृढ़ाई। सुर दुर्लभ सुख सदन बिहाई।
राम चरन पंकज प्रिय जिन्हहीं। बिषय भोग बस करहिं कि तिन्हहीं॥
बालक बृद्ध बिहाय गृह लगे लोग सब साथ।
तमसा तीर निवासु किय प्रथम दिवस रघुनाथ॥ ८४॥

१-२, ३, ५; सफल ६.

रघुपति प्रजा प्रेम बस देखी । सदय हृदय दुखु भयेउ बिसेखी ।
करुनामय रघुनाथ गोसाईं । बेगि पाइअहिं पीर पराईं ।
कहि सप्रेम मृदु बचन सुहाए । बहु बिधि राम लोग समुझाए ।
किए धरम उपदेस घनेरे । लोग प्रेम बस फिरहिं न फेरें ।
सीलु सनेहु छाड़ि नहि जाई । असमंजस बस भे रघुराई ।
लोग सोग श्रम बस गये सोई । कछुक देवमाया मति मोई ।
जबहिं जाम जुग जामिनि बीती । राम सचिव सन कहेउ सप्रीती ।
खोजु मारि रथु हाँकहु ताता । आन उपाय बनिहि नहि बाता ।।

राम लखनु सिय जान चढ़ि संभु चरन सिरु नाइ ।
सचिव चलायेउ तुरत रथ इत उत खोज दुराइ ।। ८५ ।।

जागे सकल लोग भयें भोरू । गे रघुनाथ भयेउ अतिसोरू ।
रथ कर खोज कतहुँ नहि पावहिं । राम राम कहि चहुँ दिसि धावहिं ।
मनहुँ बारिनिधि बूड़ जहाजू । भयेउ बिकल बड़ बनिक समाजू ।
एकहि एक देहिं उपदेसू । तजे राम हम जानि कलेसू ।
निंदहिं आपु सराहहिं मीना । धिग जीवनु रघुबीर बिहीना ।
जौं पै प्रिय बियोगु बिधि कीन्हा । तौ कस मरनु न मागें दीन्हा ।
ऐहि बिधि करत प्रलाप कलापा । आए अवध भरे परितापा ।
बिषम बियोगु न जाइ बखाना । अवधि आस सब राखहिं प्राना ।।

राम दरस हित नेम ब्रत लगे करन नर नारि ।
मनहुँ कोक कोकी कमल दीन बिहीन तमारि ।। ८६ ।।

सीता सचिव सहित दोउ भाई । सृंगबेरपुर पहुँचे जाई ।
उतरे राम देवसरि देखी । कीन्ह दंडवत हरषु बिसेखी ।
लखन सचिव सिय किये प्रनामा । सबहि सहित सुखु पायेउ रामा ।
गंग सकल मुद मंगल मूला । सब सुख करनि हरनि सब सूला ।
कहि कहि कोटिक कथा प्रसंगा । रामु बिलोकहिं गंग तरंगा ।

सचिवहि अनुजहि प्रियहि सुनाई। बिबुध नदी महिमा अधिकाई।
मज्जनु कीन्ह पंथ श्रम गयेऊ। सुचि जलु पिअत मुदित मन भयेऊ।
सुमिरत जाहि मिटइ श्रम भारू। तेहि श्रमु येह लौकिक ब्यवहारू॥
सुद्ध सच्चिदानंदमय कंद भानुकुल केतु।
चरित करत नर अनुहरत संसृति सागर सेतु॥ ८७॥

येह सुधि गुह निषाद जब पाई। मुदित लिये प्रिय बंधु बोलाई।
लिये फल मूल भेंट भरि भारा। मिलन चलेउ हियँ हरषु अपारा।
करि दंडवत भेंट धरि आगें। प्रभुहि बिलोकत अतिअनुरागे।
सहज सनेह बिबस रघुराई। पूँछी कुसल निकट बैठाई।
नाथ कुसल पद पंकज देखें। भयेउँ भागभाजनु जन लेखें।
देव धरनि धनु धामु तुम्हारा। मैं जनु नीचु सहित परिवारा।
कृपा करिअ पुर धारिअ पाऊ। थापिअ जनु सब लोग सिहाऊ।
कहेहु सत्य सबु सखा सुजाना। मोहि दीन्ह पितु आयेसु आना॥
बरष चारिदस बासु बन मुनि ब्रत बेषु अहारु।
ग्राम बासु नहि उचित सुनि गुहहि भयेउ दुख भारु॥ ८८॥

राम लखन सिय रूपु निहारी। कहहिं सप्रेम ग्राम नर नारी।
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे। जिन्ह पठए बन बालक ऐसे।
एक कहहिं भल भूपति कीन्हा। लोयन लाहु हमहि बिधि दीन्हा।
तब निषादपति उर अनुमाना। तरु सिंसुपा मनोहर जाना।
लै रघुनाथहि ठाउँ देखावा। कहेउ राम सब भाँति सुहावा।
पुरजन करि जोहारु घर आए। रघुबर संध्या करन सिधाए।
गुहँ सँवारि साँथरी डसाई। कुस किसलयमय मृदुल सुहाई।
सुचि फल मूल मधुर मृदु जानी। दोना भरि भरि राखेसि आनी[१]॥

१—३, ५, ६; पानी २.

सिय सुमंत्र भ्राता सहित कंद मूल फल खाइ।
सयन कीन्ह रघुबंसमनि पाय पलोटत भाइ ॥ ८९ ॥

उठे लखनु प्रभु सोवत जानी। कहि सचिवहि सोवन मृदु बानी।
कछुक दूरि सजि बान सरासन। जागन लगे बैठि बीरासन।
गुह बोलाइ पाहरू प्रतीती। ठाँव ठाँव राखे अतिप्रीती।
आपु लखन पहिं बैठेउ जाई। कटि भाथी सर चाप चढ़ाई।
सोवत प्रभुहि निहारि निषादू। भएउ प्रेम बस हृदय बिषादू।
तनु पुलकित जलु लोचन बहई। बचन सप्रेम लखन सन कहई।
भूपति भवनु सुभायँ सुहावा। सुरपति सदनु न पटतर पावा।
मनिमय रचित चारु चौबारे। जनु रतिपति निज हाथ सँवारे ॥

सुचि सुबिचित्र सुभोगमय सुमन सुगंध सुबास।
पलँग मंजु मनि दीप जहँ सब बिधि सकल सुपास ॥ ९० ॥

बिबिध बसन उपधान तुराईं। छीर फेन मृदु बिसद[1] सुहाईं।
तहँ सियरामु सयन निसि करहीं। निज छबि रति मनोज मदु हरहीं।
तेइ सियरामु साँथरी सोए। श्रमित बसन बिनु जाहिं न जोए।
मातु पिता परिजन पुरबासी। सखा सुसील दासु अरु दासी।
जोगवहिं जिन्हहि प्रान की नाईं। महि सोवत तेइ रामु गोसाईं।
पिता जनक जग बिदित प्रभाऊ। ससुर सुरेस सखा रघुराऊ।
रामचंदु पति सो बैदेही। सोवत महि बिधि बाम न केही।
सिय रघुबीर कि कानन जोगू। करमु प्रधान सत्य कह लोगू ॥

कैकयनंदिनि मंदमति कठिन कुटिल पनु कीन्ह।
जेहि रघुनंदन जानकिहि सुख अवसर दुखु दीन्ह ॥ ९१ ॥

भइ दिनकर कुल बिटप कुठारी। कुमति कीन्ह सबु बिस्व दुखारी।
भएउ बिषादु निषादहि भारी। रामु सीय महि सयन निहारी।

१—२, ३, ६, बसन ५

बोले लखनु मधुर मृदु बानी। ग्यान बिराग भगति रस सानी।
काहु न कोउ सुख दुख कर दाता। निज कृत करम भोग सबु भ्राता।
जोग बियोग भोग भल मंदा। हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा।
जनमु मरनु जहँ लगि जगजालू। संपति बिपति करमु अरु कालू।
धरनि धामु धनु पुर परिवारू। सरगु नरकु जहँ लगि ब्यवहारू।
देखिअ सुनिअ गुनिअ मनमाहीं। मोह मूल परमारथु नाहीं॥
सपनें होइ भिखारि नृपु रंकु नाकपति होइ।
जागें लाभु न हानि कछु तिमि प्रपंचु जिय जोइ॥ ९२॥

अस बिचारि नहि कीजिअ रोसू। काहुहि बादि न देइअ दोसू।
मोह निसा सबु सोवनिहारा। देखिअ सपन अनेक प्रकारा।
ऐहि जग जामिनि जागहिं जोगी। परमारथी प्रपंच बियोगी।
जानिअ तबहिं जीव जग जागा। जब सब बिषय बिलास बिरागा।
होइ बिबेकु मोह भ्रम भागा। तब रघुनाथ चरन अनुरागा।
सखा परम परमारथु एहू। मन क्रम बचन राम पद नेहू।
राम ब्रह्म परमारथरूपा। अबिगत अलख अनादि अनूपा।
सकल बिकार रहित गत भेदा। कहि नित नेति निरूपहिं बेदा॥
भगत भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपाल।
करत चरित धरि मनुज तनु सुनत मिटहिं जगजाल॥ ९३॥

सखा समुझि अस परिहरि मोहू। सिय रघुबीर चरन रत होहू।
कहत राम गुन भा भिनुसारा। जागे जग मंगल सुखदारा।
सकल सौच करि राम नहावा। सुचि सुजान बटछीर मगावा।
अनुज सहित सिर जटा बनाए। देखि सुमंत्र नयन जल छाए।
हृदयँ दाहु अति बदन मलीना। कह कर जोरि बचन अतिदीना।
नाथ कहेउ अस कोसलनाथा। लै रथु जाहु राम कें साथा।

१–२, ३, ६; सुख दातारा ५.

चनु देखाइ सुरसरि अन्हवाई। आनेहु फेरि बेगि दोउ भाई।
लखनु रामु सिय आनेहु फेरी। संसय सकल सँकोच निबेरी॥
नृप अस कहेउ गोसाँइ जस कहइ करौं बलि सोइ।
करि बिनती पायन्ह परेउ दीन्ह बाल जिमि रोइ॥ ९४॥

तात कृपा करि कीजिअ सोई। जातें अवध अनाथ न होई।
मंत्रिहि राम उठाइ प्रबोधा। तात धरम मतु[१] तुम्ह सबु सोधा।
सिबि दधीचि हरिचंद नरेसा। सहे धरम हित कोटि कलेसा।
रंतिदेव बलि भूप, सुजाना। धरमु धरेउ सहि संकट नाना।
धरमु न दूसर सत्य समाना। आगम निगम पुरान बखाना।
मैं सोइ धरमु सुलभ करि पावा। तजें तिहूँ पुर अपजसु छावा।
संभावित कहुँ अपजस लाहू। मरन कोटि सम दारुन दाहू।
तुम्ह सन तात बहुत का कहऊँ। दियें उतरु फिरि पातकु लहऊँ॥
पितु पद गहि कहि कोटि नति बिनय करब कर जोरि।
चिंता कवनिहु बात कै तात करिअ जनि मोरि॥ ९५॥

तुम्ह पुनि पितु सम अति हित मोरें। बिनती करौं तात कर जोरें।
सब बिधि सोइ करतब्य तुम्हारें। दुखु न पाव पितु सोच हमारें।
सुनि रघुनाथ सचिव संबादू। भयेउ सपरिजन बिकल निषादू।
पुनि कछु लखन कही कटु बानी। प्रभु बरजे बड़ अनुचित जानी।
सकुचि राम निज सपथ देवाई। लखन सँदेसु कहिअ जनि जाई।
कह सुमंत्रु पुनि भूप सँदेसू। सहि न सकिहि सिय बिपिन कलेसू।
जेहि बिधि अवध आव फिरि सीया। सोइ रघुबरहि तुम्हहि करनीया।
नतरु निपट अवलंब बिहीना। मैं न जिअब जिमि जल बिनु मीना॥
मइकें ससुरें सकल सुख जबहिं जहाँ मनु मान।
तहँ तब रहिहि सुखेन सिय जब लगि बिपति बिहान॥ ९६॥

१–२, ३; मगु ५, ६.

बिनती भूप कीन्ह जेहि भाँती । आरति प्रीति न सो कहि जाती ।
पितु सँदेसु सुनि कृपानिधाना । सियहि दीन्हि सिख कोटि बिधाना।
सासु ससुर गुरु प्रिय परिवारू । फिरहु त सबकर मिटइ खभारू ।
सुनि पति बचन कहति बैदेही । सुनहु प्रानपति परम सनेही ।
प्रभु करुनामय परम बिबेकी । तनु तजि रहति छाँह किमि छेंकी।
प्रभा[1] जाइ कहँ भानु बिहाई । कहँ चंद्रिका चंदु तजि जाई ।
पतिहि प्रेम मय बिनय सुनाई । कहति सचिव सन गिरा सुहाई ।
तुम्ह पितु ससुर सरिस हितकारी । उतरु देउँ फिरि अनुचित भारी ॥

आरति बस सनमुख भइउँ बिलगु न मानब तात ।
आरजसुत पद कमल बिनु बादि जहाँ लगि नात ॥ ९७ ॥

पितु बैभव बिलासु मैं डीठा । नृप मनि मुकुट मिलित[2] पद पीठा ।
सुख निधान अस पितु गृह[3] मोरें । पिय बिहीन मन भाव न भोरें ।
ससुरु चक्कवइ[4] कोसलराऊ । भुवन चारि दस प्रगट प्रभाऊ ।
आगें होइ जेहि सुरपति लेई । अरध सिंघासन आसनु देई ।
ससुरु ऐतादस अवध निवासू । प्रिय परिवारु मातु सम सासू ।
बिनु रघुपति पद पदुम परागा । मोहि केउ सपनेहुँ सुखद न लागा ।
अगम पंथ बन भूमि पहारा । करि केहरि सरि सरित अपारा ।
कोल किरात कुरंग बिहंगा । मोहि सब सुखद प्रानपति संगा ॥

सासु ससुर सन मोरि हुँति बिनय करबि परि पायँ ।
मोरि सोचु जनि करिअ कछु मैं बन सुखी सुभायँ ॥ ९८ ॥

प्राननाथ प्रिय देवर साथा । बीर धुरीन धरें धनु भाथा ।
नहि मग श्रमु भ्रमु दुख मन मोरें । मोहि लगि सोचु करिअ जनि भोरें ।
सुनि सुमंत्रु सियं सीतलि बानी । भयेउ बिकल जनु फनि मनि हानी ।

१—२, ३, ६; प्रान ५.
२—२, ६; मिलत ५, ६.
३—२, ३, ६; माइक ५.
४—२; कोउ ३, ५; सब ६.

नयन सूझ नहिं सुनइँ न काना। कहि न सकइ कछु अति अकुलाना।
राम प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती। तदपि होति नहि सीतलि छाती।
जतन अनेक साथ हित कीन्हे। उचित उतर रघुनंदन दीन्हे।
मेटि जाइ नहि राम रजाई। कठिन करम गति कछु न बसाई।
राम लखन सिय पद सिरु नाई। फिरेउ बनिकु जिमि मूर गँवाई॥

रथु हाँकेउ हय रामतन हेरि हेरि हिहिनाहिं।
देखि निपाद बिपाद बस धुनहिं सीस पछिताहिं॥ ९९॥

जासु बियोग बिकल पसु ऐसे। प्रजा मातु पितु जिइहहिं[२] कैसे।
बरबस राम सुमंत्रु पठाए। सुरसरि तीर आपु तब आए।
माँगी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना।
चरन कमल रज कहुँ सबु कहई। मानुप करनि मूरि कछु अहई।
छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई।
तरनिउँ मुनि घरिनी होइ जाई। बाट परै मोरि नाव उड़ाई।
ऐहिं प्रतिपालउँ सबु परिवारू। नहि जानौं कछु और कबारू।
जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पद पदुम पखारन कहहू॥

पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं।
मोहि राम राउरि आन दसरथ सपथ सब साची कहौं।
बरु तीर मारहु लखनु पै जब लगि न पाय पखारिहौं।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपालु पारु उतारिहौं॥

सुनि केवट के बयन प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहसे करुना अयन चितइ जानकी लखन तन॥ १००॥

कृपासिंधु बोले मुसुकाई। सोइ करु जेहिं तव नाव न जाई।
बेगि आनु जल पाय पखारू। होत बिलंबु उतारहि पारू।
जासु नाम सुमिरत अेक बारा। उतरहिं नर भवसिंधु अपारा।

१–२, ३; जनु ५, ६. २–२; जीइहहि ३, ६; जीवहि ५.

सोइ कृपालु केवटहिं निहोरा। जेहिं जगु किये तिहुँ पगहु तें थोरा।
पद नख निरखि देवसरि हरषी। सुनि प्रभु बचन मोह मति करषी।
केवट राम रजायसु पावा। पानि कठवता भरि लेइ आवा।
अति आनंद उमगि अनुरागा। चरन सरोज पखारन लागा।
बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं। ओहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीं॥

पद पखारि जलु पान करि आपु सहित परिवार।
पितर पारु करि प्रभुहिं पुनि मुदित गअेउ लइ पार॥ १०१॥

उतरि ठाढ़ भअे सुरसरि रेता। सीय रामु गुह लखन समेता।
केवट उतरि दंडवत कीन्हा। प्रभुहि सकुच ओहि नहि कछु दीन्हा।
पिय हिय की सिय जाननिहारी। मनि मुँदरी मन मुदित उतारी।
कहेउ कृपाल लेहि उतराई। केवट चरन गहे अकुलाई।
नाथ आजु मइँ काह न पावा। मिटे दोष दुख दारिद दावा।
बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी। आजु दीन्हि बिधि बनि भलि भूरी।
अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें। दीन दयाल अनुग्रह तोरें।
फिरती बार मोहि जो देबा। सो प्रसादु मइँ सिर धरि लेबा॥

बहुतु कीन्ह प्रभु लखन सिय नहि कछु केवटु लेइ।
बिदा कीन्ह करुनायतन भगति बिमल बरु देइ॥ १०२॥

तब मज्जनु करि रघुकुलनाथा। पूजि पारथिव नायेउ माथा।
सिय सुरसरिहि कहेउ कर जोरी। मातु मनोरथ पुरउबि मोरी।
पति देवर सँग कुसल बहोरी। आइ करउँ जेहि पूजा तोरी।
सुनि सिय बिनय प्रेमरस-सानी। भइ तब बिमल बारि बर बानी।
सुनु रघुबीर प्रिया बैदेही। तब प्रभाउ जग बिदित न केही।
लोकप होहिं बिलोकत तोरें। तोहि सेवहिं सब सिधि कर जोरें।
तुम्ह जो हमहि बड़ि बिनय सुनाई। कृपा कीन्हि मोहि दीन्हि बड़ाई।
तदपि देबि मइँ देबि असीसा। सफल होन [illegible] बागीसा॥

प्राननाथ देवर सहित कुसल कोसला आइ।
पूजिहि सब मन कामना सुजसु रहिहि जग छाइ ॥ १०३ ॥

गंग बचन सुनि मंगल मूला। मुदित सीय सुरसरि अनुकूला।
तब प्रभु गुहहि कहेउ घर जाहू। सुनत सूख मुखु भा उर दाहू।
दीन बचन गुह कह कर जोरी। बिनय सुनहु रघुकुलमनि मोरी।
नाथ साथ रहि पंथु देखाई। करि दिन चारि चरन सेवकाई।
जेहि बन जाइ रहब रघुराई। परनकुटी मैं करबि सुहाई।
तब मोहि कहँ जसि देब रजाई। सोइ करिहौं रघुबीर दोहाई।
सहज सनेहु राम लखि तासू। संग लीन्ह गुह हृदय हुलासू।
पुनि गुह ग्याति बोलि सब लीन्हें। करि परितोषु बिदा तब[1] कीन्हें ॥

तब गनपति सिव सुमिरि प्रभु नाइ सुरसरिहि माथ।
सखा अनुज सिय सहित बन गवनु कीन्ह रघुनाथ ॥१०४॥

तेहि दिन भयेउ बिटप तर बासू। लखन सखा सब कीन्ह सुपासू।
प्रात प्रातकृत करि रघुराई। तीरथराजु दीख प्रभु जाई।
सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी। माधव सरिस मीतु हितकारी।
चारि पदारथ भरा भँडारू। पुन्य प्रदेस देस अति चारू।
छेत्रु अगमु गढ़ु गाढ सुहावा। सपनेहु नहि प्रतिपच्छिन्ह पावा।
सेन सकल तीरथ बर बीरा। कलुष अनीक दलन रन धीरा।
संगमु सिंघासनु सुठि सोहा। छत्रु अपयबटु मुनि मनु मोहा।
चवर जमुन अरु गंग तरंगा। देखि होहिं दुख दारिद भंगा ॥

सेवहिं सुकृती साधु सुचि पावहिं सब मन काम।
बंदी बेद पुरान गन कहहिं बिमल गुन ग्राम ॥१०५॥

को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ। कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ।
अस तीरथपति देखि सुहावा। सुख सागर रघुबर सुखु पावा।

१-२, सब ३,५,६

कहि सिय लखनहि सखहि सुनाई। श्रीमुख तीरथराज बड़ाई।
करि प्रनामु देखत बन बागा। कहत महातम अति अनुरागा।
ऐहि बिधि आइ बिलोकी बेनी। सुमिरत सकल सुमंगल देनी।
मुदित नहाइ कीन्हि सिव सेवा। पूजि जथाबिधि तीरथ देवा।
तब प्रभु भरद्वाज पहिं आए। करत दंडवत मुनि उर लाए।
मुनि मन मोद[1] न कछु कहि जाई। ब्रह्मानंद रासि जनु पाई॥
दीन्हि असीस मुनीस उर अति अनंदु अस जानि।
लोचन गोचर सुकृत फल मनहुँ किए बिधि आनि॥१०६॥

कुसल प्रश्न करि आसन-दीन्हे। पूजि प्रेम परिपूरन कीन्हे।
कंद मूल फल अंकुर नीके। दिये आनि मुनि मनहु अमी के।
सीय लखन जन सहित सुहाये। अतिरुचि राम मूल फल खाये।
भये बिगत श्रम रामु सुखारे। भरद्वाज मृदु बचन उचारे।
आजु सुफल तपु तीरथ त्यागू। आजु सुफल जपु जोग बिरागू।
सुफल सकल सुभ-साधन साजू। राम तुम्हहिं अवलोकत आजू।
लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी। तुम्हरें दरस आस सब पूजी।
अब करि कृपा देहु वरु एहू। निज पद सरसिज सहज सनेहू॥
करम बचन मन छाड़ि छलु जब लगि जनु न तुम्हार।
तब लगि सुखु सपनेहुँ नहीं किये कोटि उपचार॥१०७॥

सुनि मुनि बचन रामु सकुचाने। भाव भगति आनंद अघाने।
तब रघुबर मुनि सुजसु सुहावा। कोटि भाँति कहि सबहि सुनावा।
सो बड़ सो सब गुन गन गेहू। जेहि मुनीस तुम्ह आदर देहू।
मुनि रघुबीर परसपर नवहीं। बचन अगोचर सुखु अनुभवहीं।
ऐह सुधि पाइ प्रयाग निवासी। बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी।
भरद्वाज आश्रम सब आए। देखन दसरथ सुअन सुहाए।

[1] १-२, ३, ५; मोद ६.

राम प्रनाम कीन्ह सब काहू। मुदित भए लहि लोयन लाहू।
देहिं असीस परम सुखु पाई। फिरे सराहत सुंदरताई॥

राम कीन्ह बिश्राम निसि प्रात प्रयाग नहाइ।
चले सहित सिय लखन जन मुदित मुनिहि सिरु नाइ॥१०८॥

राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं। नाथ कहिअ हम केहि मग जाहीं।
मुनि मन बिहसि राम सन कहहीं। सुगम सकल मग तुम्ह कहुँ अहहीं।
साथ लागि मुनि सिष्य बोलाए। सुनि मन मुदित पचासक आए।
सबन्हि राम पर प्रेम अपारा[1]। सकल कहहिं मगु दीख हमारा।
मुनि बटु चारि संग तब दीन्हे। जिन्ह बहु जनम सुकृत सब कीन्हे।
करि प्रनामु रिषि आयेसु पाई। प्रमुदित हृदयँ चले रघुराई।
ग्राम निकट निकसहिं जब[2] आई। देखहिं दरसु नारि नर धाई।
होहिं सनाथ जनम फलु पाई। फिरहिं दुखित मनु संग पठाई॥

बिदा किए बटु बिनय करि फिरे पाइ मन काम।
उतरि नहाए जमुन जल जो सरीर सम स्याम॥१०९॥

सुनत तीर बासी नर नारी। धाए निज निज काज बिसारी।
लखन राम सिय सुंदरताई। देखि करहिं निज भाग्य बड़ाई।
अति लालसा बसहिं[3] मन माहीं। नाउँ गाउँ बूझत सकुचाहीं।
जे तिन्ह महुँ बय बिरिध सयाने। तिन्ह करि जुगुति रामु पहिचाने।
सकल कथा तिन्ह सबहि सुनाई। बनहिं चले पितु आयसु पाई।
सुनि सबिषाद सकल पछिताहीं। रानी राय कीन्हि भल नाहीं।
तेहि अवसर एकु तापसु आवा। तेज पुंज लघु बयस सुहावा।
कबि अलखित गति बेषु बिरागी। मन क्रम बचन राम अनुरागी॥

१–३, ५, ६, अपारा २. ३–२, सबहि ३, ५, ६.
२–३, ५, ६; जब निकसहिं २.

सजल नयन तन पुलकि निज इष्ट देउ पहिचानि ।
परेउ दंड जिमि धरनि तल दसा न जाइ बखानि ॥११०॥

राम सप्रेम पुलकि उर लावा । परम रंक जनु पारसु पावा ।
मनहुँ प्रेमु परमारथु दोऊ । मिलत धरें तनु कह सबु कोऊ ।
बहुरि लखन पायन्ह सोइ लागा । लीन्ह उठाइ उमगि अनुरागा ।
पुनि सिय चरन धूरि धरि सीसा । जननि जानि सिसु दीन्हि असीसा ।
कीन्ह निपाद दंडवत तेही । मिलेउ मुदित लखि राम सनेही ।
पिअत नयन पुट रूपु पियूखा । मुदित सुअसनु पाइ जिमि भूखा ।
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे । जिन्ह पठए बन बालक ऐसे ।
राम लखन सिय रूपु निहारी । होहिं[1] सनेह बिकल नर नारी ॥

तब रघुबीर अनेक बिधि सखहि सिखावनु दीन्ह ।
राम रजायसु सीस धरि भवन गवनु तेइँ कीन्ह ॥१११॥

पुनि सिय राम लखन कर जोरी । जमुनहि कीन्ह प्रनामु बहोरी ।
चले ससीय मुदित दोउ भाई । रबितनुजा कइ करत बड़ाई ।
पथिक अनेक मिलहिं मग जाता । कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता ।
राज लषन सब अंग तुम्हारें । देखि सोचु अति हृदय हमारें ।
मारगु चलहु पयादेहिं पाएँ । ज्योतिषु झूठ हमारें[2] भाएँ ।
अगमु पंथु गिरि कानन भारी । तेहि महँ साथ नारि सुकुमारी ।
करि केहरि बन जाइ न जोई । हम सँग चलहिं जो आयसु होई ।
जाब जहाँ लगि तहँ पहुँचाई । फिरब बहोरि तुम्हहि सिरु नाई ॥

ऐहि बिधि पूँछहिं प्रेम बस पुलक गात जलु नैन ।
कृपासिंधु फेरहिं तिन्हहि कहि बिनीत मृदु बैन ॥११२॥

जे पुर गाँव बसहिं मग माहीं । तिन्हहि नाग सुर नगर सिहाहीं ।
केहि सुकृतीं केहि घरीं बसाए । धन्य पुन्यमय परम सुहाए ।

१–२; सोच ३, ५, ६.   २–३, ५, ६; हमारेहि २.

जहँ जहँ राम चरन चलि जाहीं। तिन्ह समान अमरावति नाहीं।
पुन्य पुंज मग निकट निवासी। तिन्हहि सराहहिं सुरपुर बासी।
जे भरि नयन बिलोकहिं रामहिं। सीता लखन सहित घनस्यामहिं।
जे सर सरित राम अवगाहहिं। तिन्हहि देव सर सरित सराहहिं।
जेहि तरु तर प्रभु बैठहिं जाई। करहिं कलपतरु तासु बड़ाई।
परसि रामु पद पदुम परागा। मानति भूमि भूरि निज भागा॥

छाँह करहिं घन बिबुध गन बरषहिं सुमन सिहाहिं।
देखत गिरि बन बिहग मृग रामु चले मगु जाहिं॥११३॥

सीता लखन सहित रघुराई। गाँव निकट जब निकसहिं जाई।
सुनि सब बाल बृद्ध नर नारी। चलहिं तुरत गृह काजु बिसारी।
राम लखन सिअ रूप निहारी। पाइ नयन फलु होहिं सुखारी।
सजल बिलोचन पुलक सरीरा। सब भये मगन देखि दोउ बीरा।
बरनि न जाइ दसा तिन्ह केरी। लहि जनु रंकन्हि सुरमनि ढेरी।
एकन्ह एक बोलि सिख देहीं। लोचन लाहु लेहु छन एहीं।
रामहिं देखि एक अनुरागे। चितवत चले जाहिं सँग लागे।
एक नयन मग छबि उर आनी। होहिं सिथिल तन मन बर बानी॥

एक देखि बट छाँह भलि डासि मृदुल तृन पात।
कहहिं गँवाइअ छिनुकु श्रमु गवनब अबहि कि प्रात॥११४॥

एक कलस भरि आनहिं पानी। अँचइअ नाथ कहहिं मृदु बानी।
सुनि प्रिय बचन प्रीति अति देखी। रामु कृपालु सुसील बिसेखी।
जानी श्रमित सीय मन माहीं। घरिक बिलंबु कीन्ह बट छाहीं।
मुदित नारि नर देखहिं सोभा। रूप अनूप नयन मनु लोभा।
एकटक सब सोहहिं चहुँ ओरा। रामचंद्र मुख चंद चकोरा।
तरुन तमाल बरन तनु सोहा। देखत कोटि मदन मनु मोहा।
दामिनि बरन लखनु सुठि नीके। नख सिख सुभग भावते जी के।

मुनि पट कटिन्ह कसें तूनीरा। सोहहिं कर कमलनि धनु तीरा॥
जटा मुकुट सीसनि सुभग उर भुज नयन बिसाल।
सरद परब बिधु बदन बर लसत स्वेदकन जाल॥११५॥

बरनि न जाइ मनोहर जोरी। सोभा बहुत थोरि मति मोरी।
राम लखन सिय सुंदरताई। सब चितवहिं चित मन मति लाई।
थके नारि नर पेम पिआसे। मनहुँ मृगी मृग देखि दिआ से।
सीय समीप ग्राम तिय जाहीं। पूछत अति सनेह सकुचाहीं।
बार बार सब लागहिं पाएँ। कहहिं बचन मृदु सरल सुभाए।
राजकुमारि बिनय हम करहीं। तिय सुभाय कछु पूँछत डरहीं।
स्वामिनि अबिनय छमबि हमारी। बिलगु न मानबि जानि गँवारी।
राजकुअँर दोउ सहज सलोनें। इन्ह तें लही दुति मरकत सोनें॥
स्यामल गौर किसोर बर सुंदर सुखमा अयन।
सरद सर्बरीनाथ मुखु सरद सरोरुह नयन॥११६॥

कोटि मनोज लजावनिहारे। सुमुखि कहहु को आहिं तुम्हारे।
सुनि सनेहमय मंजुल बानी। सकुची सिय मन महुँ मुसुकानी।
तिन्हहि बिलोकि बिलोकति धरनी। दुहुँ सँकोच सकुचति बरबरनी।
सकुचि सप्रेम बालमृगनयनी। बोली मधुर बचन पिकबयनी।
सहज सुभाय सुभग तन गोरे। नामु लखनु लघु देवर मोरे।
बहुरि बदनु बिधु अचल ढाँकी। पिय तन चितइ भौंह करि बाँकी।
खंजन मंजु तिरीछे नयननि। निज पति कहेउ तिन्हहि सिय सयननि।
भईं मुदित सब ग्राम बधूटीं। रंकन्ह राय रासि जनु लूटीं॥
अति सप्रेम सिय पायँ परि बहु बिधि देहिं असीस।
सदा सोहागिनि होहु तुम्ह जब लगि महि अहि सीस॥११७॥

पारबती सम पति प्रिय होहू। देबि न हम पर छाड़ब छोहू।

१-२, ३, ४, ५; हम ६. २-२; सकुचि सीय ३, ५, ६.

पुनि पुनि बिनय करिअ कर जोरी। जौं ऐहि मारग फिरिअ बहोरी।
दरसनु देब जानि निज दासी। लखी सीय सब पेम पिआसी।
मधुर बचन कहि कहि परितोषीं। जनु कुमुदिनी कौमुदी पोषीं।
तबहिं लखन रघुबर रुख जानी। पूछेउ मगु लोगन्हि मृदु बानी।
सुनत नारि नर भये दुखारी। पुलकित गात बिलोचन बारी।
मिटा मोदु मन भये मलीने। बिधि निधि दीन्हि लेत जनु छीने।
समुझि करम गति धीरजु कीन्हा। सोधि सुगम मगु तिन्ह कहि दीन्हा॥

लखन जानकी सहित तब गवनु कीन्ह रघुनाथ।
फेरे सब प्रिय बचन कहि लिए लाइ मन साथ॥११८॥

फिरत नारि नर अतिपछिताहीं। दैअहि दोषु देहिं मन माहीं।
सहित बिषाद परसपर कहहीं। बिधि करतब उलटे सब अहहीं।
निपट निरंकुस निठुर निसंकू। जेहि ससि कीन्ह सरुज सकलंकू।
रूखु कलपतरु सागरु खारा। तेहिं पठये बन राजकुमारा।
जौं पै इन्हहिं दीन्ह बनबासू। कीन्ह बादि बिधि भोग बिलासू।
ए बिचरहि मग बिनु पदत्राना। रचे बादि बिधि बाहन नाना।
ए महि परहिं डासि कुस पाता। सुभग सेज कत सृजत बिधाता।
तरुबर बास इन्हहि बिधि दीन्हा। धवल धाम रचि रचि श्रमु कीन्हा॥

जो ए मुनि पट धर जटिल सुंदर सुठि सुकुमार।
बिबिध भाँति भूषन बसन बादि किए करतार॥११९॥

जो ए कंद मूल फल खाहीं। बादि सुधादि असन जग माहीं।
एक कहहिं ए सहज सुहाए। आपु प्रगट भये बिधि न बनाए।
जहँ लगि बेद कही बिधि करनी। श्रवन नयन मन गोचर बरनी।
देखहु खोजि भुवन दस चारी। कहँ अस पुरुष कहाँ असि नारी।
इन्हहि देखि बिधि मनु अनुरागा। पटतर जोगु बनावइ लागा।
कीन्ह बहुत श्रम ऐक न आए। तेहि इरिषा बन आनि दुराए।

एक कहहिं हम बहुत न जानहिं । आपुहि परम धन्य करि मानहिं ।
ते पुनि पुन्य पुंज हम लेखे । जे देखहिं देखिहहिं जिन्ह देखे ॥
ऐहि बिधि कहि कहि बचन प्रिय लेहिं नयन भरि नीर ।
किमि चलिहहिं मारग अगम सुठि सुकुमार सरीर ॥१२०॥

नारि सनेह बिकल बस होंही । चकई साँझ समय जनु सोही ।
मृदु पद कमल कठिन मगु जानी । गहबरि हृदय कहहिं बर बानी[1] ।
परसत मृदुल चरन अरुनारे । सकुचति महि जिमि हृदय हमारे ।
जौ जगदीस इन्हहि बनु दीन्हा । कस न सुमनमय मारगु कीन्हा ।
जौ माँगा पाइअ बिधि पाहीं । ए रखिअहिं सखि आखिन्ह माहीं ।
जे नर नारि न अवसर आए । तिन्ह सिय रामु न देखन पाए ।
सुनि सुरूपु बूझहिं अकुलाई । अब लगि गये कहाँ लगि भाई ।
समरथ धाइ बिलोकहिं जाई । प्रमुदित फिरहिं जनम फलु पाई ॥
अबला बालक वृद्ध जन कर मीजहिं पछिताहिं ।
होहिं प्रेम बस लोग इमि रामु जहाँ जहँ जाहिं ॥१२१॥

गाँव गाँव अस होइ अनंदू । देखि भानु कुल कैरव चंदू ।
जे कछु समाचार सुनि पावहिं । ते नृप रानिहि दोसु लगावहिं ।
कहहिं एक अतिभल नरनाहू । दीन्ह हमहिं जेहि[2] लोचन लाहू ।
कहहिं परसपर लोग लोगाई । बातें सरल सनेह सुहाई ।
ते पितु मातु धन्य जिन्ह जाए । धन्य सो नगरु जहाँ तें आए ।
धन्य सो देसु सैलु बनु गाऊँ । जहँ जहँ जाहिं धन्य सोइ ठाऊँ ।
सुखु पायेउ बिरंचि रचि तेही । ए जेहि के सब भाँति सनेही ।
राम लखन पथि कथा सुहाई । रही सकल मग कानन छाई ॥
ऐहि बिधि रघुकुल कमल रबि मग लोगन्ह सुख देत ।
जाहिं चले देखत बिपिन सिय सौमित्रि समेत ॥१२२॥

१–२, ६; मृदु बानी ३, ५.   २–३, ५, ६; जोइ २.

आगें रामु लखनु बने पाछें । तापस बेष बिराजत काछें ।
उभय बीच सिय सोहति कैसें । ब्रह्म जीव बिच माया जैसें ।
बहुरि कहउँ छबि जसि मन बसई । जनु मधु मदन मध्य रति लसई ।
उपमा बहुरि कहउँ जिय जोही । जनु बुध बिधु बिच रोहिनि सोही ।
प्रभु पद रेख बीच बिच सीता । धरति चरन मग चलति सभीता ।
सीय राम पद अंक बराएँ । लखनु चलहिं मगु दाहिन लाएँ ।
राम लखन सिय प्रीति सुहाई । बचन अगोचर किमि कहि जाई ।
खग मृग मगन देखि छबि होंही । लिये चोरि चित राम बटोही ॥

जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय सिय समेत दोउ भाइ ।
भव मगु अगमु अनंदु तेइ बिनु श्रम रहे सिराइ ॥१२३॥

अजहुँ जासु उर सपनेहु काऊ । बसहुँ[1] लखनु सिय रामु बटाऊ ।
राम धाम पथ पाइहि सोई । जो पथु पाव कबहु मुनि कोई ।
तब रघुबीर श्रमित सिय जानी । देखि निकट बटु सीतल पानी ।
तहँ बसि कंद मूल फल खाई । प्रात नहाइ चले रघुराई ।
देखत बन सर सैल सुहाए । बालमीकि आश्रम प्रभु आए ।
रामु दीख मुनि बासु सुहावन । सुंदर गिरि काननु जलु पावन ।
सरनि सरोज बिटप बन फूले । गुंजत मंजु मधुप रस भूले ।
खग मृग बिपुल कोलाहल करहीं । बिरहित बैर मुदित मन चरहीं ॥

सुचि सुंदर आश्रमु निरखि हरषे राजिव नैन ।
सुनि रघुबर आगमनु मुनि-आगें आयेउ लेन ॥१२४॥

मुनि कहुँ राम दंडवत कीन्हा । आसिरबादु बिप्रबर दीन्हा ।
देखि राम छबि नयन जुड़ाने । करि सनमानु आश्रमहिं आने ।
मुनिबर अतिथि प्रान प्रिय पाए । कंद मूल फल मधुर मँगाए ।
सिय सौमिति्र राम फल खाए । तब मुनि आश्रम[2] दिए सुहाए ।

१–२; बसहि ३, ५, ६.   २–२; आसन ३, ५, ६.

बालमीकि मन आनँदु भारी। मंगल मूरति नयन निहारी।
तब कर कमल जोरि रघुराई। बोले बचन श्रवन सुखदाई।
तुम्ह त्रिकालदरसी मुनिनाथा। बिस्व[१] बदर जिमि तुम्हरे हाथा।
अस कहि प्रभु सब कथा बखानी। जेहि जेहि भाँति दीन्ह बनु रानी॥
तात बचन पुनि मातु हित भाइ भरत अस राउ।
मो कहुँ दरस तुम्हार प्रभु सबु मम पुन्य प्रभाउ॥१२५॥

देखि पाय मुनिराय तुम्हारे। भये सुकृत सब सुफल हमारे।
अब जहँ राउर आयसु होई। मुनि उदवेगु न पावइ कोई।
मुनि तापस जिन्ह तें दुखु लहहीं। ते नरेस बिनु पावक दहहीं।
मंगल मूल बिप्र परितोषू। दहइ कोटि कुल भूसुर रोषू।
अस जिअ जानि कहिअ सोइ ठाऊँ। सिय सौमित्रि सहित जहँ जाऊँ।
तहँ रचि रुचिर परन तृन साला। बासु करउँ कछु कालु कृपाला।
सहज सरल सुनि रघुबर बानी। साधु साधु बोले मुनि ग्यानी।
कस न कहहु अस रघुकुल केतू। तुम्ह पालक संतत श्रुति सेतू॥
श्रुति सेतु पालक राम तुम्ह जगदीस माया जानकी।
जो सृजति जगु पालति हरति रुख पाइ कृपानिधान की।
जो सहससीसु अहीसु महिधरु लखनु सचराचर धनी।
सुर काज धरि नरराज तनु चले दलन खल निसिचर अनी॥
राम सरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धि पर।
अबिगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह॥१२६॥

जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे। बिधि हरि संभु नचावनिहारे।
तेउ न जानहिं मरमु तुम्हारा। और तुम्हहि को जाननिहारा।
सोइ जानइ जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई।
तुम्हरिहि कृपा तुम्हहि रघुनंदन। जानहिं भगत भगत उर चंदन।

१–२,३,६; बिसु ५.

दानंदमय देह तुम्हारी। बिगत बिकार जान अधिकारी।
तनु धरेहु संत-सुर काजा। कहहु करहु जस प्राकृत राजा।
देखि सुनि चरित तुम्हारे। जड़ मोहहिं बुध होंहि सुखारे।
जो कहहु करहु सबु साचा। जस काछिअ तस चाहिअ नाचा।।
पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ मैं पूँछत सकुचाउँ।
जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावउँ ठाउँ।।१२७।।
मुनि बचन प्रेम रस साने। सकुचि राम मन महुँ मुसुकाने।
मीकि हँसि कहहिं बहोरी। बानी मधुर अमिअ रस बोरी।
राम अब कहउँ निकेता। जहाँ बसहु सिय लखन समेता।
के श्रवन समुद्र समाना। कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना।
निरंतर होहिं न पूरे। तिन्हके हिय तुम्ह कहुँ गृह रूरे।
चातक जिन्ह करि राखे। रहहि दरस जलधर अभिलाषे।
हें सरित सिंधु सर भारी। रूप बिंदु जल होहिं सुखारी।
कें हृदयँ सदन सुखदायक। बसहु बंधु सिय सह रघुनायक।।
जसु तुम्हार मानस बिमल हंसिनि जीहा जासु।
मुकुताहल गुन गन चुनइ राम बसहु मन[१] तासु।।१२८।।
साद सुचि सुभग सुबासा। सादर जासु लहइ नित नासा।
निवेदित भोजनु करहीं। प्रभु प्रसाद पट भूषन धरहीं।
वहिं सुर गुर द्विज देखी। प्रीति सहित करि बिनय बिसेखी।
करहिं राम नित[१] पूजा। राम भरोस हृदय नहि दूजा।
म तीरथ चलि जाहीं। राम बसहु तिन्ह के मन माहीं।
नित जपहि तुम्हारा। पूजहिं तुम्हहि सहित परिवारा।
ोम करहिं बिधि नाना। बिप्र जेवाइ देहिं बहु दाना।
ाधिक गुरहि जिअ जानी। सकल भाय सेवहिं सनमानी।।

।५,६ हिय २ २-२, पद ३,५,६

सबु करि माँगहिं एकु फलु राम चरन रति होउ ।
तिन्ह कें मन-मंदिर बसहु सिय रघुनंदन दोउ ॥१२९॥

काम कोह[1] मद मान न मोहा । लोभ न छोभ न राग न द्रोहा ।
जिन्ह कें कपट दंभ नहि माया । तिन्ह कें हृदय बसहु रघुराया ।
सब के प्रिय सब के हितकारी । दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी ।
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी । जागत सोवत सरन तुम्हारी ।
तुम्हहि छाड़ि गति दूसरि नाहीं । राम बसहु तिन्ह के मन माहीं ।
जननी सम जानहिं पर नारी । धनु पराव बिष तें बिष भारी ।
जे हरषहिं पर संपति देखी । दुखित होहिं पर बिपति बिसेखी ।
जिन्हहि राम तुम्ह प्रान पिआरे । तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे ॥

स्वामि सखा पितु मातु गुर जिन्हके सब तुम्ह तात ।
मन मंदिर तिन्ह के बसहु सीय सहित दोउ भ्रात ॥१३०॥

अवगुन तजि सब के गुन गहहीं । बिप्र धेनु हित संकट सहहीं ।
नीति निपुन जिन्ह कइ जग लीका । घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका ।
गुन तुम्हार समुझइ निज दोसा । जेहि सब भाँति तुम्हार भरोसा ।
राम भगत प्रिय लागहिं जेही । तेहि उर[2] बसहु सहित बैदेही ।
जाति पाँति धनु धरमु बड़ाई । प्रिय परिवारु सदनु सुखदाई ।
सब तजि तुम्हहिं रहइ लउ[2] लाई । तेहि के हृदय रहहु रघुराई ।
सरगु नरकु अपबरगु समाना । जहँ तहँ देख धरें धनु बाना ।
करम बचन मन राउर चेरा । राम करहु तेहि के उर डेरा ॥

जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु तुम्ह सन सहज सनेहु ।
बसहु निरंतर तासु मन सो राउर निज गेहु ॥१३१॥

ओहि बिधि मुनिवर भवन देखाए । बचन सप्रेम राम मन भाए ।
कह मुनि सुनहु भानु कुल नायक । आश्रमु कहउँ समय सुखदायक ।

१–५, ६; मोह २, ३.   २–३, ५, ६, उर २

चित्रकूट गिरि करहु निवासू। तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू।
सैलु सुहावन कानन चारू। करि केहरि मृग विहग बिहारू।
नदी पुनीत पुरान बखानी। अत्रि प्रिया निज तप बल आनी।
सुरसरि धार नाउँ मंदाकिनि। जो सब पातक पोतक डाकिनि।
अत्रि आदि मुनिबर बहु बसहीं। करहिं जोग जप तप तन कसहीं।
चलहु सफल श्रम सब कर करहू। राम देहु गौरव गिरिबरहू॥

चित्रकूट महिमा अमित कही महा मुनि गाइ।
आइ नहाये सरित बर सिय समेत दोउ भाइ॥१३२॥

रघुबर कहेउ लखन भल घाटू। करहु कतहुँ अब ठाहर ठाटू।
लखन दीख पय उतर करारा। चहुँ दिसि फिरेउ धनुष जिमि नारा।
नदी पनच सर सम दम दाना। सकल कलुष कलि साउज नाना।
चित्रकूट जनु अचलु अहेरी। चुकइ न घात मार मुठभेरी।
अस कहि लखन ठाउँ देखरावा। थलु बिलोकि रघुबर सुखु पावा।
रमेउ राम मनु देवन्ह जाना। चले सहित सुर थपति प्रधाना[1]।
कोल किरात बेष सब आए। रचे परन तृन सदन सुहाए।
बरनि न जाहिं मंजु दुइ साला। एक ललित लघु एक बिसाला॥

लखन जानकी सहित प्रभु राजत रुचिर निकेत।
सोह मदनु मुनि बेष जनु रति रितुराज समेत॥१३३॥

अमर नाग किंनर दिसिपाला[2]। चित्रकूट आए तेहि काला।
रामु प्रनामु कीन्ह सब काहू। मुदित देव लहि लोचन लाहू।
बरषि सुमन कह देव समाजू। नाथ सनाथ भये हम आजू।
करि बिनती दुख दुसह सुनाए। हरषित निज निज सदन सिधाए।
चित्रकूट रघुनंदनु छाए। समाचार सुनि सुनि मुनि आए।
आवत देखि मुदित मुनि बृंदा। कीन्ह दंडवत रघुकुल चंदा।

१—२, ३, ५; सुरपति परधाना ६. २—२, ३, ६; दिगपाला ५.

मुनि रघुवरहि लाइ उर लेहीं। सुफल होन हित आसिष देहीं।
सिय सौमित्रि राम छबि देखहिं। साधन सकल सफल करि लेखहिं॥
जथाजोग सनमानि प्रभु बिदा किए मुनि बृंद।
करहिं जोग जप जाग तप निज आश्रमन्हि सुछंद॥१३४॥

अेह सुधि कोल किरातन्ह पाई। हरषे जनु नव निधि घर आई।
कंद मूल फल भरि भरि दोना। चले रंक जनु लूटन सोना।
तिन्ह महँ जिन्ह देखे दोउ भ्राता। अपर तिन्हहि पूँछहि मगु जाता।
कहत सुनत रघुबीर निकाई। आइ सबन्हि देखे रघुराई।
करहिं जोहारु भेंट धरि आगे। प्रभुहि बिलोकहिं अति अनुरागे।
चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े। पुलक सरीर नयन जल बाढ़े।
राम सनेह मगन सब जाने। कहि प्रिय बचन सकल सनमाने।
प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी। बचन बिनीत कहहिं कर जोरी॥
अब हम नाथ सनाथ सब भए देखि प्रभु पाय।
भाग हमारे आगमनु राउर कोसलराय॥१३५॥

धन्य भूमि बन पंथ पहारा। जहँ जहँ नाथ पाउ तुम्ह धारा।
धन्य बिहग मृग कानन चारी। सफल जनम भये तुम्हहिं निहारी।
हम सब धन्य सहित परिवारा। दीख दरसु भरि नयन तुम्हारा।
कीन्ह बासु भलि ठाउँ बिचारी। इहाँ सकल रितु रहब सुखारी।
हम सब भाँति करब सेवकाई। करि केहरि अहि बाघ बराई।
बन बेहड़ गिरि कंदर खोहा। सब हमार प्रभु पग पग जोहा।
जहँ तहँ[1] तुम्हहि अहेर खेलाउब। सर निरझर भल[2] ठाउँ देखाउब।
हम सेवक परिवार समेता। नाथ न सकुचब आयसु देता॥
बेद बचन मुनि मन अगम ते प्रभु करुनाअयन।
बचन किरातन्ह के सुनत जिमि पितु बालक बयन॥१३६॥

१–२, ५, ६, तहँ तहँ ३. २–५, ६, जल २, ३.

रामहि केवल पेमु पिआरा। जानि लेउ जो जाननिहारा।
राम सकल बनचर तब तोषे। कहि मृदु बचन प्रेम परिपोषे।
बिदा किये सिर नाइ सिधाए। प्रभु गुन कहत सुनत घर आए।
ऐहि बिधि सिय समेत दोउ भाई। बसहिं बिपिन सुर मुनि सुखदाई।
जब तें आइ रहे रघुनायकु। तब तें भयेउ बनु मंगलदायकु।
फूलहिं फलहिं बिटप बिधि नाना। मंजु बलित बर बेलि बिताना।
सुरतरु सरिस सुभायँ सुहाए। मनहुँ बिबुध बन परिहरि आए।
गुंज मंजुतर मधुकर श्रेनी। त्रिबिध बयारि बहइ सुख देनी॥

नीलकंठ कलकंठ सुक चातक चक्क चकोर।
भाँति भाँति बोलहिं बिहग श्रवन सुखद चित चोर॥१३७॥

करि केहरि कपि कोल कुरंगा। बिगत बैर बिचरहिं सब संगा।
फिरत अहेर राम छबि देखी। होंहि मुदित मृग बृंद बिसेखी।
बिबुध बिपिन जहँ लगि जग माहीं। देखि राम बनु सकल सिहाहीं।
सुरसरि सरसइ दिनकरकन्या। मेकलसुता गोदावरि धन्या।
सब सर सिंधु नदी नद नाना। मंदाकिनि कर करहिं बखाना।
उदय अस्त गिरि अरु कैलासू। मंदर मेरु सकल सुरबासू।
सैल हिमाचल आदिक जेते। चित्रकूट जसु गावहिं तेते।
बिंधि मुदित मन सुखु न समाई। श्रम बिनु बिपुल बड़ाई पाई॥

चित्रकूट के बिहग मृग बेलि बिटप तृन जाति।
पुन्य पुंज सब धन्य अस कहहिं देव दिन राति॥१३८॥

नयनवंत रघुबरहि बिलोकी। पाइ जनम फल होहिं बिसोकी।
परसि चरन रज अचर सुखारी। भये परमपद के अधिकारी।
सो बनु सैलु सुभाय सुहावन। मंगलमय अतिपावन पावन।

१–३, ५, ६, त्रिबिध २.

महिमा कहिअ कवनि बिधि तासू। सुख सागर जहँ कीन्ह निवासू।
पयपयोधि तजि अवध बिहाई। जहँ सिय लखनु रामु रहे आई।
कहि न सकहिं सुखमा जसि कानन। जौं सत सहस होहिं सहसानन।
सो मैं बरनि कहौं बिधि केहीं। डाबर कमठ कि मंदरु लेहीं।
सेवहिं लखनु करम मन बानी। जाइ न सीलु सनेहु बखानी॥

छिनु छिनु लखि सिय राम पद जानि आपु पर नेहु।
करत न सपनेहुँ लखनु चितु बंधु मातु पितु गेहु॥१३९॥

राम संग सिय रहति सुखारी। पुर परिजन गृह सुरति बिसारी।
छिनु छिनु पिय बिधु बदनु निहारी। प्रमुदित मनहुँ चकोर कुमारी।
नाह नेहु नित बढ़त बिलोकी। हरषित रहति दिवस जिमि कोकी।
सिय मनु राम चरन अनुरागा। अवध सहस सम बनु प्रिय लागा।
परनकुटी प्रिय प्रियतम संगा। प्रिय परिवारु कुरंग बिहंगा।
सासु ससुर सम मुनितिय मुनिबर। असनु अमिअ सम कंद मूल फर।
नाथ साथ साँथरी सुहाई। मयन सयन सय सम सुखदाई।
लोकप होहिं बिलोकत जासू। तेहि कि मोहि सक बिषय बिलासू॥

सुमिरत रामहिं तजहिं जन तृन सम बिषय बिलासु।
राम प्रिया जग जननि सिय कछु न आचरजु तासु॥१४०॥

सीय लखनु जेहि बिधि सुखु लहहीं। सोइ रघुनाथ करहिं सोइ कहहीं।
कहहिं पुरातन कथा कहानी। सुनहिं लखनु सिय अति सुखु मानी।
जब जब रामु अवध सुधि करहीं। तब तब बारि बिलोचन भरहीं।
सुमिरि मातु पितु परिजन भाई। भरत सनेहु सीलु सेवकाई।
कृपासिंधु प्रभु होहिं दुखारी। धीरजु धरहिं कुसमउ बिचारी।
लखि सिय लखनु बिकल होइ जाहीं। जिमि पुरुषहि अनुसर परिछाहीं।
प्रिया बंधु गति लखि रघुनंदनु। धीर कृपाल भगत उर चंदनु।
लगे कहन कछु कथा पुनीता। सुनि सुखु लहहिं लखनु अरु सीता॥

राम लखन सीता सहित सोहत परन निकेत।
जिमि बासव बस अमरपुर सची जयंत समेत ॥१४१॥

जोगवहिं प्रभु सिय लखनहि कैसें। पलक बिलोचन गोलक जैसें।
सेवहिं लखनु सीय रघुबीरहि। जिमि अबिबेकी पुरुष सरीरहि।
ओहि बिधि प्रभु बन बसहिं सुखारी। खग मृग सुर तापस हितकारी।
कहेउ राम बन गवनु सुहावा। सुनहु सुमंत्र अवध जिमि आवा।
फिरेउ निषादु प्रभुहि पहुँचाई। सचिव सहित रथ देखेसि आई।
मंत्री बिकल बिलोकि निषादू। कहि न जाइ जस भयेउ बिषादू।
राम राम सिय लखनु पुकारी। परेउ धरनि तल व्याकुल भारी।
देखि दखिन दिसि हय हिहिनाहीं। जनु बिनु पंख बिहग अकुलाहीं॥

नहिं तृनु चरहिं न पिअहिं जलु मोचहिं लोचन बारि।
व्याकुल भए निषाद सब रघुबर बाजि निहारि ॥१४२॥

धरि धीरजु तब कहइ निषादू। अब सुमंत्र परिहरहु बिषादू।
तुम्ह पंडित परमारथ ग्याता। धरहु धीर लखि बाम बिधाता।
बिबिध कथा कहि कहि मृदु बानी। रथ बैठारेउ बरबस आनी।
सोक सिथिल रथु सकै न हाँकी। रघुबर बिरह पीर उर बाँकी।
चरफराहिं मग चलहिं न घोरे। बन मृग मनहु आनि रथ जोरे।
अढुकि परहिं फिरि हेरहिं पीछें। राम बियोग बिकल दुख तीछें।
जो कहु रामु लखनु बैदेही। हिंकरि हिंकरि हित हेरहिं तेही।
बाजि बिरह गति कहि किमि जाती। बिनु मनि फनिक बिकल जेहि भाँती॥

भयेउ निषादु बिषादु बस देखत सचिव तुरंग।
बोलि सुसेवक चारि तब दिये सारथी संग ॥१४३॥

गुह सारथिहि फिरेउ पहुँचाई। बिरहु बिषादु बरनि नहि जाई।
चले अवध लै रथहि निषादा। होंहि छनहिं छन मगन बिषादा।
सोच सुमंत्र बिकल दुख दीना। धिग जीवन रघुबीर बिहीना।

रहिहि न अंतहु अधमु सरीरू । जसु न लहेउ बिछुरत रघुबीरू ।
भये अजस अघ भाजन प्राना । कवन हेतु नहिं करत पयाना ।
अहह मंद मनु अवसर चूका । अजहुँ न हृदय होत दुइ टूका ।
मीजि हाथ सिरु धुनि पछिताई । मनहु कृपन धन रासि गँवाई ।
बिरिद बाँधि बर बीरु कहाई । चलेउ समर जनु सुभट पराई ।।

बिप्र बिबेकी बेद बिद संमत साधु सुजाति ।
जिमि धोखें मद पान कर सचिव सोच तेहि भाँति ।।१४४।।

जिमि कुलीन तिय साधु सयानी । पति देवता करम मन बानी ।
रहै करम बस परिहरि नाहू । सचिव हृदय तिमि दारुन दाहू ।
लोचन सजल डीठि भइ थोरी । सुनइ न श्रवन बिकल मति भोरी ।
सूखहिं अधर लागि मुह लाटी । जिउ न जाइ उर अवधि कपाटी ।
बिबरन भयेउ न जाइ निहारी । मारेसि मनहुँ पिता महतारी ।
हानि गलानि बिपुल मन ब्यापी । जमपुर पंथ सोच जिमि पापी ।
बचनु न आव हृदय पछिताई । अवध काह मैं देखब जाई ।
राम रहित रथु देखिहि जोई । सकुचिहि मोहि बिलोकत सोई ।।

धाइ पूछिहहिं मोहि जब बिकल नगर नर नारि ।
उतरु देब मैं सबहिं तब हृदय बज्रु बैठारि ।।१४५।।

पुछिहहिं दीन दुखित सब माता । कहब काह मैं तिन्हहिं बिधाता ।
पूँछिहि जबहिं लखन महतारी । कहिहौं कवन सँदेस सुखारी ।
राम जननि जब आइहि धाई । सुमिरि बच्छु जिमि धेनु लवाई ।
पूँछत उतरु देब मैं तेही । गे बनु राम लखनु बैदेही ।
जोइ पूँछिहि तेहि ऊतरु देबा । जाइ अवध अब येहु सुखु लेबा ।
पूँछिहि जबहिं राउ दुख दीना । जिवनु जासु रघुनाथ अधीना ।
देहौं उतरु कौनु मुहु लाई । आयेउँ कुसल कुअँर पहुँचाई ।
सुनत लखन सिय राम सँदेसू । तृन जिमि तनु परिहरिहि नरेसू ।।

हृदउ न बिदरेउ पंक जिमि बिछुरत प्रीतमु नीरु ।
जानत हौं मोहि दीन्ह बिधि येहु जातना सरीरु ॥१४६॥

ऐहि बिधि करत पंथ पछितावा । तमसा तीर तुरत रथु आवा ।
बिदा किए करि बिनय निषादा । फिरे पायँ परि बिकल बिषादा ।
पैठत नगर सचिव सकुचाई । जनु मारेसि गुर बाँभन गाई ।
बैठि बिटप तर दिवसु गँवावा । साँझ समय तब अवसरु पावा ।
अवध प्रवेसु कीन्ह अँधियारें । पैठ भवन रथु राखि दुआरें ।
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाए । भूप द्वार रथु देखन आए ।
रथु पहिचानि बिकल लखि घोरे । गरहि गात जिमि आतप ओरे ।
नगर नारि नर ब्याकुल कैसें । निघटत नीर मीन गन जैसें ॥

सचिव आगमनु सुनत सबु बिकल भयेउ रनिवासु ।
भवनु भयंकरु लाग तेहि मानहुँ प्रेत निवासु ॥१४७॥

अति आरति सब पूँछहिं रानी । उतरु न आव बिकल भइ बानी ।
सुनइ न श्रवन नयन नहिं सूझा । कहहु कहाँ नृपु तेहि तेहि बूझा ।
दासिन्ह दीख सचिव बिकलाई । कौसल्या गृह गईं लवाई ।
जाइ सुमंत्र दीख कस राजा । अमिअ रहित जनु चंदु बिराजा ।
आसन सयन बिभूषन हीना । परेउ भूमि तल निपट मलीना ।
लेइ उसासु सोच ऐहि भाँती । सुरपुर ते जनु खँसेउ जजाती ।
लेत सोच भरि छिनु छिनु छाती । जनु जरि पंख परेउ सपाती ।
राम राम कह राम सनेही । पुनि कह राम लखन बैदेही ॥

देखि सचिव जय जीव कहि कीन्हेउ दंड प्रनामु ।
सुनत उठेउ ब्याकुल नृपति कहु सुमंत्र कहँ रामु ॥१४८॥

भूप सुमंत्रु लीन्ह उर लाई । बूडत कछु अधार जनु पाई ।
सहित सनेह निकट बैठारी । पूँछत राउ नयन भरि बारी ।

१-२, ३, ५, जेहि तेहि ६

राम कुसल कहु सखा सनेही। कहँ रघुनाथ लखनु बैदेही।
आने फेरि कि बनहि सिधाए। सुनत सचिव लोचन जल छाए।
सोक बिकल पुनि पूँछ नरेसू। कहु सिय राम लखन संदेसू।
राम रूप गुन सील सुभाऊ। सुमिरि सुमिरि उर सोचत राऊ।
राज[१] सुनाइ दीन्ह बनबासू। सुनि मन भयेउ न हरष हराँसू।
सो सुत बिछुरत गए न प्राना। को पापी बड मोहि समाना॥
सखा रामु सिय लखनु जहँ तहाँ मोहि पहुँचाउ।
नाहि त चाहत चलन अब प्रान कहौं सति भाउ॥१४९॥

पुनि पुनि पूँछत मंत्रिहि राऊ। प्रियतम सुअन सँदेस सुनाऊ।
करहि सखा सोइ बेगि उपाऊ। रामु लखनु सिय नयन देखाऊ।
सचिउ धीर धरि कह मृदु बानी। महाराज तुम्ह पंडित ग्यानी।
बीर सुधीर धुरंधर देवा। साधु समाजु सदा तुम्ह सेवा।
जनम मरन सब दुख सुख भोगा। हानि लाभु प्रिय मिलन बियोगा।
काल करम बस होहिं गोसाईं। बरबस राति दिवस की नाईं।
सुख हरषहिं जड दुख बिलखाहीं। दोउ सम धीर धरहिं मन माहीं।
धीरजु धरहु बिबेकु बिचारी। छाडिअ सोचु सकल हितकारी॥
प्रथम बासु तमसा भयेउ दूसर सुरसरि तीर।
न्हाइ रहे जलपानु करि सिय समेत दोउ बीर॥१५०॥

केवट कीन्ह बहुत सेवकाई। सो जामिनि सिंगरौर गँवाई।
होत प्रात बटछीरु मगावा। जटामुकुट निज सीस बनावा।
राम सखा तब नाव मगाई। प्रिया चढ़ाइ चढे रघुराई।
लखनु बान धनु धरे बनाई। आपु चढ़े प्रभु आयेसु पाई।
बिकल बिलोकि मोहि रघुबीरा। बोले मधुर बचन धरि धीरा।
तात प्रनामु तात सन कहेहू। बार बार पद पंकज गहेहू।

१-३, ५, ६, राउ २

करबि पायँ परि बिनय बहोरी। तात करिअ जनि चिंता मोरी।
बन मग मंगल कुसल हमारें। कृपा अनुग्रह पुन्य तुम्हारें॥
तुम्हरें अनुग्रह तात कानन जात सब सुखु पाइहौं।
प्रतिपालि आयसु कुसल देखन पाय पुनि फिरि आइहौं।
जननी सकल परितोषि परि परि पायँ करि बिनती घनी।
तुलसी करेहु सोइ जतनु जेहिं कुसली रहहिं कोसल धनी॥
गुर सन कहब सँदेसु बार बार पद पदुम गहि।
करब सोइ उपदेसु जेंहि न सोच मोहि अवधपति॥१५१॥
पुरजन परिजन सकल निहोरी। तात सुनायेहु बिनती मोरी।
सोइ सब भाँति मोर हितकारी। जा तें रह, नरनाहु सुखारी।
कहब सँदेसु भरत के आएँ। नीति न तजिअ राजपदु पाएँ।
पालेहु प्रजहि करम मन बानी। सेयेहु मातु सकल सम जानी।
ओर निबाहेहु भायप भाई। करि पितु मातु सुजन सेवकाई।
तात भाँति तेहि राखब राऊ। सोच मोर जेहि करइ न काऊ।
लखन कहे कछु बचन कठोरा। बरजि राम पुनि मोहि निहोरा।
बार बार निज सपथ देवाई। कहबि न तात लखन लरिकाई॥
कहि प्रनामु कछु कहन लिय सिय भइ सिथिल सनेह।
थकित बचन लोचन सजल पुलक पल्लवित देह॥१५२॥

तेहि अवसर रघुबर रुख पाई। केवट पारहि नाव चलाई।
रघुकुल तिलक चले ऐहि भाँती। देखउँ ठाढ़ कुलिस धरि छाती।
मैं आपन किमि कहउँ कलेसू। जियत फिरेउ लेइ राम सँदेसू।
अस कहि सचिव बचन रहि गयेऊ। हानि गलानि सोच बस भयेऊ।
सूत बचन सुनतहिं नरनाहू। परेउ धरनि उर दारुन दाहू।
तलफत बिषम मोह मन मापा। माँजा मनहु मीन कहुँ ब्यापा।
करि बिलाप सब रोवहिं रानी। महा बिपति किमि जाइ बखानी।

सुनि बिलाप दुखहू दुखु लागा। धीरजहू कर धीरजु भागा॥
भयेउ कोलाहलु अवध अति सुनि नृप राउर सोरु।
बिपुल बिहग बन परेउ निसि मानहु कुलिस कठोरु॥१५३॥

प्रान कंठगत भयेउ भुआलू। मनि बिहीन जनु ब्याकुल ब्यालू।
इंद्री सकल बिकल भइ भारी। जनु सर सरसिज बनु बिनु बारी।
कौसल्या नृपु दीख मलाना। रबिकुल रबि अथयेउ जिय जाना।
उर धरि धीर राम महतारी। बोली बचन समय अनुसारी।
नाथ समुझि मन करिअ बिचारू। राम बियोग पयोधि अपारू।
करनधार तुम्ह अवध जहाजू। चढ़ेउ सकल प्रिय पथिक समाजू।
धीरजु धरिअ त पाइअ पारू। नाहि त बूड़िहि सबु परिवारू।
जौ जिय धरिअ बिनय पिय मोरी। रामु लखनु सिय मिलहिं बहोरी॥
प्रिया बचन मृदु सुनत नृप चितयेउ आँखि उघारि।
तलफत मीन मलीन जनु सींचत[1] सीतल बारि॥१५४॥

धरि धीरजु उठि बैठ भुआलू। कहु सुमंत्र कहँ रामु कृपालू।
कहाँ लखनु कहँ रामु सनेही। कहँ प्रिय पुत्रबधू बैदेही।
बिलपत राउ बिकल बहु भाँती। भइ जुग सरिस सिराति न राती।
तापस अंध साप सुधि आई। कौसल्यहि सब कथा सुनाई।
भयेउ बिकल बरनत इतिहासा। राम रहित धिग जीवन आसा।
सो तनु राखि करबि मैं काहा। जेहिं न प्रेमपनु मोर निबाहा।
हा रघुनंदन प्रान पिरीते। तुम्ह बिनु जिअत बहुत दिन बीते।
हा जानकी लखन हा रघुबर। हा पितु हित चित चातक जलधर॥
राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम।
तनु परिहरि रघुबर बिरह राउ गयेउ सुरधाम॥१५५॥

---

[1] १–२, सींचेउ ३, ५, ६

जिअन मरन फलु दसरथ पावा। अंड अनेक अमल जसु छावा।
जिअत राम बिधु बदनु निहारा। राम बिरह करि मरनु सँवारा।
सोक बिकल सब रोवहिं रानी। रूपु सीलु बलु तेजु बखानी।
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा। परहिं भूमि तल बारहिं बारा।
बिलपहिं बिकल दास अरु दासी। घर घर रुदनु करहिं पुरबासी।
अँथयेउ आजु भानुकुल भानू। धरम अवधि गुन रूप निधानू।
गारी सकल कैकइहि देहीं। नयन बिहीन कीन्ह जग जेहीं।
अेहि बिधि बिलपत रैनि बिहानी। आए सकल महामुनि ग्यानी॥

तब बसिष्ठ मुनि समय सम कहि अनेक इतिहास।
सोक नेवारेउ सबहि कर निज बिग्यान प्रकास॥१५६॥

तेल नाव भरि नृप तनु राखा। दूत बोलाइ बहुरि अस भाखा।
धावहु बेगि भरत पहिं जाहू। नृप सुधि कतहुँ कहहु जनि काहू।
अेतनेइ कहेउ भरत सन जाई। गुर बोलाइ पठयेउ दोउ भाई।
सुनि मुनि आयेसु धावन धाए। चले बेगि बर बाजि लजाए।
अनरथु अवध अरंभेउ जब तें। कुसगुन होंहि भरत कहुँ तब तें।
देखहिं राति भयानक सपना। जागि करहिं कटु कोटि कलपना।
बिप्र जेंवाइ देहिं दिन दाना। सिव अभिषेक करहिं बिधि नाना।
मागहिं हृदय महेस मनाई। कुसल मातु पितु परिजन भाई॥

अेहि बिधि सोचत भरत मन धावन पहुँचे आइ।
गुर अनुसासन श्रवन सुनि चले गनेसु मनाइ॥१५७॥

चले समीर बेग हय हाँके। नाघत सरित सैल बन बाँके।
हृदउ सोचु बड़ कछु न सोहाई। अस जानहि जिअँ जाउँ उड़ाई।
एक निमेष बरष सम जाई। अेहि बिधि भरत नगरु निअराई।

१–२, ३, ५; भरि ६.

असगुन होहिं नगर पैठारा। रटहिं कुभाँति कुखेत करारा।
खर सिआर बोलहिं प्रतिकूला। सुनि सुनि होइ भरत मन सूला।
श्रीहत सर सरिता बन बागा। नगरु बिसेषि भयावनु लागा।
खग मृग हय गय जाहिं न जोए। राम बियोग कुरोग बिगोए।
नगर नारि नर निपट दुखारी। मनहु सबन्हि सब संपति हारी॥
पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु गवहिं जोहारहिं जाँहि।
भरत कुसल पूँछि न सकहिं भय बिषादु मन माहिं॥१५८॥

हाट बाट नहिं जाइ निहारी। जनु पुर दह दिसि लागि दवारी।
आवत सुत सुनि कैकय नंदिनि। हरषी रबिकुल जलरुह चंदिनि।
सजि आरती मुदित उठि धाई। द्वारेंहि भेंटि भवन लेइ आई।
भरत दुखित परिवारु निहारा। मानहु तुहिन बनज बनु मारा।
कैकेई हरषित ऐहि भाँती। मनहुँ मुदित दव लाइ किराती।
सुतहि ससोच देखि मनु मारें। पूँछति नैहर कुसलु हमारें।
सकल कुसल कहि भरत सुनाई। पूँछी निज कुल कुसल भलाई।
कहु कहँ तात कहाँ सब माता। कहँ सिय रामु लखन प्रिय भ्राता॥
सुनि सुत बचन सनेहमय कपट नीर भरि नयन।
भरत श्रवन मन सूल सम पापिनि बोली बयन॥१५९॥

तात बात मैं सकल सँवारी। भइ मंथरा सहाय बिचारी।
कछुक काज बिधि बीच बिगारेउ। भूपति सुरपति पुर पगु धारेउ।
सुनत भरतु भये बिबस बिषादा। जनु सहमेउ करि केहरि नादा।
तात तात हा तात पुकारी। परे भूमि तल ब्याकुल भारी।
चलत न देखन पाएउँ तोही। तात न रामहि सौंपेहु मोही।
बहुरि धीर धरि उठे सँभारी। कहु पितु मरन हेतु महतारी।
सुनि सुत बचन कहति कैकेई। मरमु पाँछि जनु माहुर देई।
आदिहु तें सबु आपनि करनी। कुटिल कठोर मुदित मन बरनी॥

भरतहि बिसरेउ पितु मरन सुनत राम बन गौनु ।
हेतु अपनपउ जानि जिअँ थकित रहे धरि मौनु ॥१६०॥

बिकल बिलोकि सुतहि समुझावति । मनहुँ जरे पर लोनु लगावति ।
तात राउ नहि सोचइ जोगू । बिढइ सुकृत जसु कीन्हेउ भोगू ।
जीवत सकल जनम फल पाए । अंत अमरपति सदन सिधाए ।
अस अनुमानि सोचु परिहरहू । सहित समाज राज पुर करहू ।
सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारू । पाकें छत जनु लाग अँगारू ।
धीरजु धरि भरि लेहिं उसासा । पापिनि सबहि भाँति कुल नासा ।
जौं पै कुरुचि रही अति तोही । जनमत काहे न मारे मोही ।
पेड़ काटि तैं पालउ सींचा । मीन जिअन निति बारि उलीचा ॥

हंसबंसु दसरथु जनकु राम लखन से भाइ ।
जननी तूँ जननी भई बिधि सन कछु न बसाइ ॥१६१॥

जब तैं कुमति कुमत जिअँ ठयेऊ । खंड खंड होइ हृदय न गयेऊ ।
बर मागत मन भइ नहि पीरा । गरि न जीह मुह परेउ न कीरा ।
भूप प्रतीति तोरि किमि कीन्ही । मरन काल बिधि मति हरि लीन्ही ।
बिधिहुँ न नारि हृदय गति जानी । सकल कपट अघ अवगुन खानी ।
सरल सुसील धरमरत राऊ । सो किमि जानइ तीय सुभाऊ ।
अस को जीव जंतु जग माहीं । जेहि रघुनाथ प्रान प्रिय नाहीं ।
भे अति अहित रामु तेउ तोही । को तू अहसि सत्य कहु मोही ।
जो हसि सो हसि मुहु मसि लाई । आँखि ओट उठि बैठहि जाई ॥

राम बिरोधी हृदय तें प्रकट कीन्ह बिधि मोहि ।
मो समान को पातकी बादि कहौं कछु तोहि ॥१६२॥

सुनि सत्रुघुन मातु कुटिलाई । जरहिं गात रिस कछु न बसाई ।
तेहि अवसर कुबरी तहँ आई । बसन बिभूषन बिबिध बनाई ।
लखि रिस भरेउ लखन लघु भाई । बरत अनल घृत आहुति पाई ।

हुमगि लात तकि कूबर मारा। परि मुह भर महि करत पुकारा।
कूबर टूटेउ फूट कपारू। दलित दसन मुख रुधिर प्रचारू।
आह दइअ मैं काह नसावा। करत नीक फलु अनइस पावा।
सुनि रिपुहन लखि नख सिख खोटी। लगे घसीटन धरि धरि झोंटी।
भरत दयानिधि दीन्हि छड़ाई। कौसल्या पहिं गे दोउ भाई॥

मलिन बसन बिबरन बिकल कृस सरीर दुख भारु।
कनक कलप बर बेलि बन मानहु हनी तुसारु॥१६३॥

भरतहि देखि मातु उठि धाई। मुरुछित अवनि परी झइँआई।
देखत भरतु बिकल भये भारी। परे चरन तन दसा बिसारी।
मातु तात कहँ देहि देखाई। कहँ सिय रामु लखनु दोउ भाई।
कइकइ कत जनमी जग माँझा। जौं जनमि त भइ काहे न बाँझा।
कुल कलंकु जेंहि जनमेउ मोही। अपजस भाजन प्रिय जन द्रोही।
को तिभुवन मोहि सरिस अभागी। गति असि तोरि मातु जेंहि लागी।
पितु सुरपुर बन रघुबर[१] केतू। मैं केवल सब अनरथ हेतू।
धिग मोहि भयेंउ बेनु बन आगी। दुसह दाहु दुख दूखन भागी॥

मातु भरत के बचन मृदु सुनि पुनि उठी सँभारि।
लिए उठाइ लगाइ उर लोचन मोचति बारि॥१६४॥

सरल सुभाय माय हिय लाए। अति हित मनहुँ राम फिरि आए।
भेंटेउ बहुरि लखनु लघु भाई। सोकु सनेहु न हृदय समाई।
देखि सुभाउ. कहत सबु कोई। राम मातु अस काहे न होई।
माता भरतु गोद बैठारे। आँसु पोंछि मृदु बचन उचारे।
अजहुँ बच्छ्रु बलि धीरजु धरहू। कुसमउ समुझि सोक परिहरहू।
जनि मानहु हिय हानि गलानी। काल करम गति अघटित जानी।
काहुहि दोस देहु जनि ताता। भा मोहि सब बिधि बाम बिधाता।

१-२, ३, ५; रघुकुल ६.

जो एतेहुँ दुख मोहि जिआवा। अजहुँ को जानइ का तेहि भावा॥
पितु आयेसु भूषन बसन तात तजे रघुबीर।
बिसमउ हरषु न हृदय कछु पहिरे बलकल चीर॥१६५॥

मुख प्रसंन मन रंगु[1] न रोषू। सब कर सब बिधि करि परितोषू।
चले बिपिन सुनि सिय सँग लागी। रहइ न राम चरन अनुरागी।
सुनतहि लखनु चले उठि साथा। रहहिं न जतन किये रघुनाथा।
तब रघुपति सबही सिरु नाई। चले संग सिय अरु लघु भाई।
रामु लखनु सिय बनहि सिधाए। गइउँ न संग न प्रान पठाए।
ऐहु सबु मा इन्ह आँखिन्ह आगें। तउ न तजा तनु जीव अभागें।
मोहि न लाज निज नेहु निहारी। राम सरिस सुत मैं महतारी।
जिअइ मरइ भल भूपति जाना। मोर हृदय सत कुलिस समाना॥
कौसल्या के बचन सुनि भरत सहित रनिवासु।
ब्याकुल बिलपत राजगृह मानहु सोक नेवासु॥१६६॥

बिलपहिं बिकल भरत दोउ भाई। कौसल्या लिऐ हृदय लगाई।
भाँति अनेक भरतु समुझाए। कहि बिबेकमय बचन सुनाए।
भरतहुँ मातु सकल समुझाईं। कहि पुरान श्रुति कथा सुहाईं।
छल बिहीन सुचि सरल सुबानी। बोले भरत जोरि जुग पानी।
जे अघ मातु पिता सुत मारें। गाइगोठ महिसुर पुर जारें।
जे अघ तिय बालक बध कीन्हे। मीत महीपति माहुर दीन्हे।
जे पातक उपपातक अहहीं। करम बचन मन भव कबि कहहीं।
ते पातक मोहि होहुँ बिधाता। जौं ऐहु होइ मोर मत माता॥
जे परिहरि हरि हर चरन भजहिं भूतगन घोर[2]।
तिन्ह कइ गति मोहि देउ बिधि जौं जननी मत मोर॥१६७॥

बेचहिं बेदु धरमु दुहि लेहीं। पिसुन पराय पाप कहि देहीं।

१–२, ३, ५; राग ६. — २–२, ३; घनघोर ५, ६.

कपटी कुटिल कलह प्रिय क्रोधी। बेद बिदूषक बिस्व बिरोधी।
लोभी लंपट लोलुप चारा। जे ताकहिं पर धनु पर दारा।
पावउँ मैं तिन्ह कै गति घोरा। जौं जननी ऐहु संमत मोरा।
जे नहि साधु संग अनुरागे। परमारथ पथ बिमुख अभागे।
जे न भजहिं हरि नर तनु पाई। जिन्हहि न हरि हर सुजसु सोहाई।
तजि श्रुति पंथु बाम पथ चलहीं। बंचक बिरचि बेषु जगु छलहीं।
तिन्ह कइ गति मोहि संकरु देऊ। जननी जौं ऐहु जानउँ भेऊ॥
मातु भरत के बचन सुनि साँचे सरल सुभायँ।
कहति राम प्रिय तात तुम्ह सदा बचन मन काय॥१६८॥

राम प्रानहुँ तें प्रान तुम्हारे। तुम्ह रघुपतिहि प्रानहु तें प्यारे।
बिधु बिष चवइ श्रवइ हिमु आगी। होइ बारिचर बारि बिरागी।
भयें ग्यानु बरु मिटइ न मोहू। तुम्ह रामहि प्रतिकूल न होहू।
मत तुम्हार ऐहु जो जग कहहीं। सो सपनेहुँ सुख सुगति न लहहीं।
अस कहि मातु भरतु हिय लाए। थन पय श्रवहिं नयन जल छाए।
करत बिलाप बहुत ऐहि भाँती। बैठेहिं बीति गई सब राती।
बामदेउ बसिष्ठ तब आए। सचिव महाजन सकल बोलाए।
मुनि बहु भाँति भरत उपदेसे। कहि परमारथ बचन सुदेसे॥
तात हृदय धीरजु धरहु करहु जो अवसर आजु।
उठे भरत गुर बचन सुनि करन कहेउ सबु साजु॥१६९॥

नृप तनु बेद बिहित[1] अन्हवावा। परम बिचित्र बिमानु बनावा।
गहि पग भरत मातु सब राखीं। रहीं राम[2] दरसन अभिलाषीं।
चंदन अगर भार बहु आए। अमित अनेक सुगंध सुहाए।
सरजु तीर रचि चिता बनाई। जनु सुरपुर सोपान सुहाई।

१–५, ६; बिदित २, ३.   २–३, ५, ६; रानि २.

ऐहि विधि दाह क्रिया सब कीन्ही। बिधिवत न्हाइ तिलांजुलि दीन्ही।
सोधि सुमृति सब बेद पुराना। कीन्ह भरत दसगात बिधाना।
जहँ जस मुनिवर आयेसु दीन्हा। तहँ तस सहस भाँति सबु कीन्हा।
भये बिसुद्ध दिये सब दाना। धेनु बाजि गज बाहन नाना॥

सिंघासन भूषन बसन अन्न धरनि धन धाम।
दिये भरत लहि भूमिसुर भे परिपूरन काम॥१७०॥

पितु हित भरत कीन्हि जसि करनी। सो मुख लाख जाइ नहि बरनी।
सुदिन सोधि मुनिबर तब आए। सचिव महाजन सकल बोलाए।
बैठे राजसभा सब जाई। पठए बोलि भरत दोउ भाई।
भरतु बसिष्ठ निकट बैठारे। नीति धरममय बचन उचारे।
प्रथम कथा सब मुनिवर बरनी। कइकइ कुटिल कीन्हि जसि करनी।
भूप धरम ब्रतु सत्य सराहा। जेहि तनु परिहरि प्रेमु निबाहा।
कहत राम गुन सील सुभाऊ। सजल नयन पुलकेउ मुनिराऊ।
बहुरि लखन सिय प्रीति बखानी। सोक सनेह मगन मुनि ग्यानी॥

सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ।
हानि लाभु जीवन मरनु जसु अपजसु बिधि हाथ॥१७१॥

अस बिचारि केहि देइअ दोसू। ब्यरथ काहि पर कीजिअ रोसू।
तात बिचारु करहु मन माहीं। सोचु जोगु दसरथु नृप नाहीं।
सोचिअ बिप्र जो बेद बिहीना। तजि निज धरमु बिषय लयलीना।
सोचिअ नृपति जो नीति न जाना। जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना।
सोचिअ बयसु कृपन धनवानू। जो न अतिथि सिव भगत सुजानू।
सोचिअ सूद्रु बिप्र अवमानी। मुखरु मान प्रिय ग्यान गुमानी।
सोचिअ पुनि पतिबंचक नारी। कुटिल कलह प्रिय इच्छाचारी।
सोचिअ बटु निज ब्रतु परिहरई। जो नहि गुर आयसु अनुसरई॥

१-२, ३, ६; सुद्दु ५.　　　१-२, ३, ६, अनुहरई ५.

सोचिअ गृही जो मोह बस करइ करमपथ त्याग ।
सोचिअ जती प्रपंच रत बिगत बिबेक बिराग ॥१७२॥

बैखानस सोइ सोचइ जोगू । तपु बिहाइ जेहि भावइ भोगू ।
सोचिअ पिसुन अकारन क्रोधी । जननि जनक गुर बंधु बिरोधी ।
सब बिधि सोचिअ पर अपकारी । निज तनु पोषक निरदय भारी ।
सोचनीय सबही बिधि सोई । जो न छाड़ि छलु हरि जनु होई ।
सोचनीय नहि कोसल राऊ । भुवन चारि दस प्रगट प्रभाऊ ।
भयेउ न अहइ न अब होनिहारा । भूपु भरत जस पिता तुम्हारा ।
बिधि हरि हरु सुरपति दिसिनाथा । बरनहिं सब दसरथ गुनगाथा ॥

कहहु तात केहि भाँति कोउ करिहि बड़ाई तासु ।
राम लखन तुम्ह सत्रुहन सरिस सुअन सुचि जासु ॥१७३॥

सब प्रकार भूपति बड़भागी । बादि बिषादु करिअ तेहि लागी ।
ऐहु सुनि समुझि सोचु परिहरहू । सिर धरि राज रजायसु करहू ।
रायँ राजपदु तुम्ह कहुँ दीन्हा । पिता बचनु फुर चाहिअ कीन्हा ।
तजे रामु जेहि बचनहि लागी । तनु परिहरेउ राम बिरहागी ।
नृपहि बचन प्रिय नहि प्रिय प्राना । करहु तात पितु बचन प्रवाना ।
करहु सीस धरि भूप रजाई । हइ तुम्ह कहँ सब भाँति भलाई ।
परसुराम पितु अग्या राखी । मारी मातु लोक सब साखी ।
तनय जजातिहि जोबनु दयेऊ । पितु अग्या अघ अजसु न भयेऊ ॥

अनुचित उचित बिचारु तजि जे पालिहि पितु बयन ।
ते भाजन सुख सुजस के बसहिं अमरपति अयन ॥१७४॥

अवसि नरेस बचन फुर करहू । पालहु प्रजा सोकु परिहरहू ।
सुरपुर नृपु पाइहि परितोषू । तुम्ह कहुँ सुकृतु सुजसु नहि दोषू ।
बेद बिहित[1] संमत सबही का । जेहि पितु देइ सो पावइ टीका ।

१–३, ५; विदित २, ६.

करहु राजु परिहरहु गलानी। मानहु मोर बचनु हित जानी॥
सुनि सुखु लहब राम बैदेहीं। अनुचित कहब न पंडित केहीं॥
कौसल्यादि सकल महतारीं। तेउ प्रजा सुख होहिं सुखारीं॥
मरम तुम्हार राम कर जानिहि। सो सब बिधि तुम्ह सन भल मानिहि॥
सौंपेहु राजु राम कें आएँ। सेवा करेहु सनेह सुहाएँ॥

कीजिअ गुर आयसु अवसि कहहिं सचिव कर जोरि।
रघुपति आएँ उचित जस तस तब करब बहोरि॥१७५॥

कौसल्या धरि धीरजु कहई। पूत पथ्य गुर आयेसु अहई॥
सो आदरिअ करिअ हित मानी। तजिअ बिषादु काल गति जानी॥
बन रघुपति सुरपति नरनाहू। तुम्ह एहि भाँति तात कदराहू॥
परिजन प्रजा सचिव सब अंबा। तुम्हहीं सुत सब कहँ अवलंबा॥
लखि बिधि बाम कालु कठिनाई। धीरजु धरहु मातु बलि जाई॥
सिर धरि गुर आयसु अनुसरहू। प्रजा पालि पुरजन दुखु हरहू॥
गुर के बचन सचिव अभिनंदनु। सुने भरत हियँ हित जनु चंदनु॥
सुनी बहोरि मातु मृदु बानी। सील सनेह सरल रस सानी॥

सानी सरल रस मातु बानी सुनि भरतु ब्याकुल भये।
लोचन सरोरुह श्रवत सींचत बिरह उर अंकुर नये॥
सो दसा देखत समय तेहि बिसरी सबहि सुधि देह की।
तुलसी सराहत सकल सादर सींव सहज सनेह की॥

भरतु कमल कर जोरि धीर धुरंधर धीर धरि।
बचन अमिअ जनु बोरि देत उचित उत्तर सबहि॥१७६॥

मोहि उपदेसु दीन्ह गुर नीका। प्रजा सचिव संमत सबही का॥
मातु उचित धरि आयेसु दीन्हा। अवसि सीस धरि चाहौं कीन्हा॥
गुर पितु मातु स्वामि हित बानी। सुनि मन मुदित करिअ भलि जानी॥

१–५, परम २, ३, प्रेम ६. २–२, ३, ५, सुरपुर ६

उचित कि अनुचित किये बिचारू। धरमु जाइ सिर पातक भारू।
तुम्ह तौ देहु सरल सिख सोई। जो आचरत मोर भल होई।
जद्यपि अेह समुझत हउँ नीके। तदपि होत परितोषु न जी के।
अब तुम्ह बिनय मोरि सुनि लेहू। मोहि अनुहरत सिखावहु देहू।
ऊतरु देउँ छमब अपराधू। दुखित दोष गुन गनहिं न साधू॥

पितु सुरपुर सिय रामु बन करन कहहु मोहि राजु।
अेहि तें जानहु मोर हित कै आपन बड़ काजु॥१७७॥

हित हमार सियपति सेवकाई। सो हरि लीन्ह मातु कुटिलाई।
मैं अनुमानि दीखि मन माहीं। आन उपाय मोर हित नाहीं।
सोक समाजु राजु केहि लेखें। लखन राम सिय पद बिनु देखें।
बादि बसन बिनु भूखन भारू। बादि बिरति बिनु ब्रह्म बिचारू।
सरुज सरीर बादि बहु भोगा। बिनु हरिभगति जायँ जप जोगा।
जायँ जीव बिनु देह सुहाई। बादि मोर सबु बिनु रघुराई।
जाउँ राम पहिं आयेसु देहू। एकहि आँक मोर हित एहू।
मोहि नृपु करि भल आपन चहहू। सोउ सनेह जड़ता बस कहहू॥

कैकेई सुअ कुटिल मति राम बिमुख गतलाज।
तुम्ह चाहत सुखु मोह बस मोहि से अधम के राज॥१७८॥

कहौं साँचु सब सुनि पतिआहू। चाहिअ धरमसील नरनाहू।
मोहि राजु हठि देइहहु जबहीं। रसा रसातल जाइहि तबहीं।
मोहि समान को पाप निवासू। जेहि लगि सीय राम बनबासू।
रायँ राम कहुँ काननु दीन्हा। बिछुरत गमनु अमरपुर कीन्हा।
मैं सठु सब अनरथ कर हेतू। बैठ बात सब सुनउँ सचेतू।
बिनु रघुबीर बिलोकिअ बासू। रहे प्रान सहि जग उपहासू।
राम पुनीत बिषय रस रूखे। लोलप भूमि भोग के भूखे।

१–२, ५; कैकइ सुअन ३, ६.

कहँ लगि कहौं हृदय कठिनाई । निदर कुलिसु जेहिं लही बड़ाई ॥
कारन तें कारजु कठिन होइ दोसु नहिं मोर ।
कुलस अस्थि तें उपल तें लोह कराल कठोर ॥१७९॥

कैकेई भव तनु अनुरागे । पावँर प्रान अघाइ अभागे ।
जौं प्रिय बिरह प्रान प्रिय लागे । देखब सुनब बहुत अब आगे ।
लखन राम सिय कहुँ बनु दीन्हा । पठइ अमरपुर पति हित कीन्हा ।
लीन्ह बिधवपन अपजसु आपू । दीन्हेउ प्रजहि सोकु संतापू ।
मोहि दीन्ह सुखु सुजसु सुराजू । कीन्ह कैकेई सब कर काजू ।
ऐहि तें मोर काह अब नीका । तेहि पर देन कहहु तुम्ह टीका ।
कैकै जठर जनमि जग माहीं । एह मोहि कहँ कछु अनुचित नाहीं ।
मोरि बात सब बिधिहिं बनाई । प्रजा पाँच कत करहु सहाई ॥
ग्रह ग्रहीत पुनि बात बस तेहि पुनि बीछी मार ।
तेहि पियाइअ बारुनी कहहु कौन[2] उपचार ॥१८०॥

कैकइ सुअन जोगु जगु जोई । चतुर बिरंचि दीन्ह मोहि सोई ।
दसरथ तनय राम लघु भाई । दीन्हि मोहि बिधि बादि बड़ाई ।
तुम्ह सबु कहहु कढ़ावन टीका । राय रजायसु सब[3] कहँ नीका ।
उतरु देउँ केहि बिधि केहि केही । कहहु सुखेन जथा रुचि जेही ।
मोहि कुमातु समेत बिहाई । कहहु कहिहि के कीन्हि भलाई ।
मो बिनु को सचराचर माहीं । जेहि सिय रामु प्रान प्रिय नाहीं ।
परम हानि सबु कहँ बड़ लाहू । अदिनु मोर नहि दूषन काहू ।
संसय सील प्रेम बस अहहू । सबुइ उचित सबु जो कछु कहहू ॥
राम मातु सुठि सरल चित मो पर प्रेमु बिसेखि ।
कहइ सुभाय सनेह बस मोरि दीनता देखि ॥१८१॥

१—२, ३, ५; पाँवर ६.
२—३, ५, ६; कौह २.
३—२, ३, राजु सबही ५, ६.

गुरु बिबेक सागर जगु जाना। जिन्हहि बिस्व करबदर समाना।
मो कहँ तिलक साज सज सोऊ। भये बिधि बिमुख बिमुख सब कोऊ।
परिहरि रामु सीय जग माहीं। कोउ न कहिहि मोर मत नाहीं।
सो मैं सुनब सहब सुखु मानी। अंतहुँ कीच तहाँ जहँ पानी।
डरु न मोहि जग कहहि कि पोचू। परलोकहु कर नाहिन सोचू।
एकइ उर बस दुसह दवारी। मोहि लगि भे सिय रामु दुखारी।
जीवनु लाहु लखन भल पावा। सबु तजि राम चरन मनु लावा।
मोर जनम रघुबर बन लागी। झूठ काह पछिताउँ अभागी॥

आपनि दारुन दीनता कहउँ सबहि सिरु नाइ।
देखें बिनु रघुनाथ पद जिअ कै जरनि न जाइ॥१८२॥

आन उपाउ मोहि नहि सूझा। को जिअ कै रघुबर बिनु बूझा।
एकहि आँक इहै मन माहीं। प्रातकाल चलिहौं प्रभु पाहीं।
जद्यपि मैं अनभल अपराधी। भै मोहि कारन सकल उपाधी।
तदपि सरन सनमुख मोहि देखी। छमि सब करिहहि कृपा बिसेखी।
सीलु सकुच सुठि सरल सुभाऊ। कृपा सनेह सदन रघुराऊ।
अरिहु क अनभल कीन्ह न रामा। मैं सिसु सेवकु जद्यपि बामा।
तुम्ह पै पाँच मोर भल मानी। आयेसु आसिष देहु सुबानी।
जेहि सुनि बिनय मोहि जनु जानी। आवहि बहुरि रामु रजधानी॥

जद्यपि जनमु कुमातु तें मैं सठु सदा सदोस।
आपन जानि न त्यागिहहिं मोहि रघुबीर भरोस॥१८३॥

भरत बचन सब कहँ प्रिय लागे। राम सनेह सुधा जनु पागे।
लोग बियोग बिषम बिष दागे। मंत्र सबीज सुनत जनु जागे।
मातु सचिव गुर पुर नर नारी। सकल सनेह बिकल भये भारी।
भरतहि कहहिं सराहि सराही। राम प्रेम मूरति तनु आही।

१-२ में यह अंश नहीं है।

तात भरत अस काहे न कहहू। प्रान समान राम प्रिय अहहू।
जो पाँवरु अपनी जड़ताईं। तुम्हहि सुगाइ मातु कुटिलाईं।
सो सठु कोटिक पुरुष समेता। बसहि कलप सत नरक निकेता।
अहि अघ अवगुन नहि मनि गहई। हरइ गरल दुख दारिद दहई॥
अवसि चलिअ बन रामु जहँ भरत मंत्रु भल कीन्ह।
सोकसिंधु बूड़त सबहि तुम्ह अवलंबनु दीन्ह॥१८४॥

भा सब कें मन मोदु न थोरा। जनु घन धुनि सुनि चातक मोरा।
चलत प्रात लखि निरनउ नीके। भरतु प्रान प्रिय भे सबही के।
मुनिहि बंदि भरतहि सिरु नाई। चले सकल घर बिदा कराई।
धन्य भरत जीवनु जग माहीं। सीलु सनेह सराहत जाहीं।
कहहिं परसपर भा बड़ काजू। सकल चलै कर साजहिं साजू।
जेहि राखहिं रहु घर रखवारी। सो जानइ जनु गरदनि मारी।
कोउ कह रहन कहिअ नहि काहू। को न चहइ जग जीवन लाहू॥
जरउ सो संपति सदन सुखु सुहृद मातु पितु भाइ।
सनमुख होत जो रामपद करइ न सहस सहाइ॥१८५॥

घर घर साजहिं बाहन नाना। हरषु हृदयँ प्रभात पयाना।
भरत जाइ घर कीन्ह बिचारू। नगरु बाजि गज भवन भँडारू।
संपति सब रघुपति कै आही। जौं बिनु जतनु चलौं तजि ताही।
तो परिनाम न मोरि भलाई। पाप सिरोमनि साँइदोहाई।
करइ स्वामि हित सेवकु सोई। दूषन कोटि देइ किन कोई।
अस बिचारि सुचि सेवक बोले। जे सपनेहुँ निज धरम न डोले।
कहि सबु मरमु धरमु भल भाखा। जो जेहि लायक सो तेहिं राखा।
करि सबु जतनु राखि रखवारे। राम मातु पहिं भरतु सिधारे॥

१–२, ३ ६ सदन ५ ७–४ तेहि २, ३, ६.

आरत जननी जानि सबु भरत सनेह सुजान।
कहेउ बनावन पालकीं सजन-सुखासन जान ॥१८६॥

चक्क चक्कि जिमि पुर नर नारी। चहत[1] प्रात उर आरत भारी।
जागत सब निसि भएउ बिहाना। भरत बोलाए सचिव सुजाना।
कहेउ लेहु सब तिलक समाजू। बनहिं देब मुनि रामहिं राजू।
बेगि चलहु सुनि सचिव जोहारे। तुरत तुरग रथ नाग सँवारे।
अरुंधती अरु अगिनि समाऊ। रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराऊ।
बिप्र बृंद चढ़ि बाहन जाना। चले सकल तप तेज निधाना।
नगर लोग सब सजि सजि जाना। चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना।
सिबिका सुभग न जाहिं बखानी। चढ़ि चढ़ि चलत भईं सब रानी॥
सौंपि नगर सुचि सेवकनि सादर सकहि[2] चलाइ।
सुमिरि राम सिय चरन तब चले भरतु दोउ भाइ ॥१८७॥

राम दरस बस सब नर नारी। जनु करि करिनि चले तकि बारी।
बिन सिय रामु समुझि मन माहीं। सानुज भरत पयादेहि जाहीं।
देखि सनेहु लोग अनुरागे। उतरि चले हय गय रथ त्यागे।
जाइ समीप राखि निज डोली। राम मातु मृदु बानी बोली।
तात चढ़हु रथ बलि महतारी। होइहि प्रिय परिवारु दुखारी।
तुम्हरे चलत चलिहि सबु लोगू। सकल सोक कृस नहिं मग जोगू।
सिर धरि बचन चरन सिरु नाई। रथ चढ़ि चलत भए दोउ भाई।
तमसा प्रथम दिवस करि बासू। दूसर गोमति तीर निवासू॥
पय अहार फल असन अेक निसि भोजन अेक लोग।
करत राम हित नेम ब्रत परिहरि भूषन भोग ॥१८८॥

सई तीर बसि चले बिहाने। शृंगबेरपुर सब निअराने।
समाचार सब सुने निषादा। हृदयँ बिचार[3] करै सबिषादा।

१-३, ५, ६; चलत २.
२-३, ५, ६; सकल २
३-६; बिषाद २, ३, ५.

कारन कवन भरतु बन जाहीं। है कछु कपटभाउ मन माहीं।
जौं पै जिअ न होति कुटिलाई। तौ कत लीन्ह संग[1] कटकाई।
जानहिं सानुज रामहि मारी। करौं अकंटक राजु सुखारी।
भरत न राजनीति उर आनी। तब कलंकु अब जीवनु हानी।
सकल सुरासुर जुरहिं जुझारा। रामहि समर न जीतनिहारा।
का आचरजु भरतु अस करहीं। नहिं बिष बेलि अमिअ फल फरहीं॥

अस बिचारि गुह ग्याति सन कहेउ सजग सब होहु।
हथवाँसहु बोरहु तरनि कीजिअ घाटारोहु॥१८९॥

होहु सँजोइल रोकहु घाटा। ठाटहु सकल मरइ के ठाटा।
सनमुख लोह भरत सन लेऊँ। जिअत न सुरसरि उतरन देऊँ।
समर मरनु पुनि सुरसरि तीरा। राम काजु छनभंगु सरीरा।
भरत भाइ नृपु मैं जन नीचू। बड़े भाग असि पाइअ मीचू।
स्वामि काज करिहउँ रन रारी। जस धवलिहउँ भुवन दसचारी।
तजउँ प्रान रघुनाथ निहोरें। दुहूँ हाथ मुद मोदक मोरें।
साधु समाज न जाकर लेखा। राम भगत महुँ जासु न रेखा।
जाय जिअत जग सो महि भारू। जननी जौबन बिटप कुठारू॥

बिगत बिषाद निषाद पति सबहि बढ़ाइ उछाहु।
सुमिरि राम मागेउ तुरत तरकस धनुष सनाहु॥१९०॥

बेगहु भाइहु सजहु सँजोऊ। सुनि रजाइ कदराइ न कोऊ।
भलेहिं नाथ सब कहहिं सहरषा। एकहि एक बढ़ावइ करषा।
चले निषाद जोहारि जोहारी। सूर सकल रन रूचइ रारी।
सुमिरि राम पद पंकज पनहीं। भाथीं बाँधि चढ़ाइन्हि धनहीं।
अँगरी पहिरि कूँड़ि सिर धरहीं। फरसा बाँस सेल सम करहीं।
एक कुसल अति ओड़न खाँड़े। कूदहिं गगन मनहुँ छिति छाँड़े।

१–२, ३, ५; संग लीन्ह ६

निज निज साजु समाजु बनाई। गुह राउतहि जोहारे जाई॥
देखि सुभट सब लायक जाने। लै लै नाम सकल सनमाने॥
भाइहु लावहु धोख जनि आजु काज बड़ मोहि।
सुनि सरोष बोले सुभट बीर अधीर न होहि॥१९१॥
राम प्रताप नाथ बल तोरे। करहिं कटकु बिनु भट बिनु घोरे॥
जीवत पाउ न पाछें धरहीं। रुंड मुंडमय मेदिनि करहीं॥
दीख निषादनाथ भल टोलू। कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू॥
एतना कहत छींक भइ बाएँ। कहेउ सगुनिअन्ह खेत सुहाएँ॥
बूढ़ु एकु कह सगुन बिचारी। भरतहि मिलिअ न होइहि रारी॥
रामहि भरतु मनावन जाहीं। सगुन कहइ अस बिग्रहु नाहीं॥
सुनि गुह कहइ नीक कह बूढ़ा। सहसा करि पछिताहिं बिमूढ़ा॥
भरत सुभाउ सीलु बिनु बूझें। बड़ि हित हानि जानि बिनु जूझें॥
गहहु घाट भट समिटि सब लेउँ मरमु मिलि जाइ।
बूझि मित्र अरि मध्य गति तस तब करिहउँ आइ॥१९२॥
लखब सनेहु सुभायँ सुहाएँ। बैरु प्रीति नहिं दुरइँ दुराएँ॥
अस कहि भेंट सँजोवन लागे। कंद मूल फल खग मृग मागे॥
मीन पीन पाठीन पुराने। भरि भरि भार कहारन्ह आने॥
मिलन साजु सजि मिलन सिधाए। मंगलमूल सगुन सुभ पाए॥
देखि दूरि तें कहि निज नामू। कीन्ह मुनीसहि दंड प्रनामू॥
जानि राम प्रिय दीन्हि असीसा। भरतहि कहेउ बुझाइ मुनीसा॥
राम सखा सुनि संदनु त्यागा। चले उतरि उमगत अनुरागा॥
गाउँ जाति गुहँ नाउँ सुनाई। कीन्ह जोहारु माथ महि लाई॥
करत दंडवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर लाइ।
मनहु लखन सन भेंट भइ प्रेमु न हृदय समाइ॥१९३॥

१-३, ५ ६; तस तब २.

भेंटत भरतु ताहि अति प्रीती। लोग सिहाहिं प्रेम कै रीती।
धन्य धन्य धुनि मंगलमूला। सुर सराहि तेहि बरिसहिं फूला।
लोक बेद सब भाँतिहिं नीचा। जासु छाँह छुइ लेइअ सींचा।
तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता। मिलत पुलक परिपूरित गाता।
राम राम कहि जे जमुहाहीं[1]। तिन्हहि न पाप पुंज समुहाहीं।
यह तौ राम लाइ उर लीन्हा। कुल समेत जगु पावन कीन्हा।
करमनास जलु सुरसरि परई। तेहि को कहहु सीस नहिं धरई।
उलटा नामु जपत जगु जाना। बालमीकि भये ब्रह्म समाना॥
स्वपच सबर खस जमन जड़ पावँर कोल किरात।
रामु कहत पावन[2] परम होत भुवन बिख्यात॥१९४॥
नहिं अचिरिजु जुग जुग चलि आई। केहि न दीन्हि रघुबीर बड़ाई।
राम नाम महिमा सुर कहहीं। सुनि सुनि अवध लोग सुखु लहहीं।
राम सखहि मिलि भरतु सप्रेमा। पूँछी कुसल[3] सुमंगल खेमा।
देखि भरत कर सीलु सनेहू। भा निषाद तेहि समय बिदेहू।
सकुच सनेहु मोदु मन बाढ़ा। भरतहि चितवत एकटक ठाढ़ा।
धरि धीरजु पद बंदि बहोरी। बिनय सप्रेम करत कर जोरी।
कुसल मूल पद पंकज पेखी। मैं तिहुँ काल कुसल निज लेखी।
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरें। सहित कोटि कुल मंगल मोरें॥
समुझि मोरि करतूति कुलु प्रभु महिमा जिअ जोइ।
जो न भजइ रघुबीर पद जग बिधि बंचित सोइ॥१९५॥
कपटी कायर कुमति कुजाती। लोक बेद बाहेर सब भाँती।
राम कीन्ह आपन जबही तें। भयउँ भुवन भूषन तबही तें।
देखि प्रीति सुनि बिनय सुहाई। मिलेउ बहोरि भरत लघु भाई।

१–२ जमुहाहीं ३, ५, ६ ३–२, ३, सकल ४, सकुल ६–
२–३, ५, ६, पावँर २

कहि निषाद निज नामु सुबानी । सादर सकल जोहारीं रानी ।
जानि लखन सम देहिं असीसा । जिअहु सुखी सय लाख बरीसा ।
निरखि निषाद नगर नर नारी । भये सुखी जनु लखनु निहारी ।
कहहिं लहेउ ऐहिं जीवन लाहू । भेंटेउ रामभद्र भरि बाहू ।
सुनि निषादु निज भाग बड़ाई । प्रमुदित मन लै चलेउ लवाई ॥
सनकारे सेवक सकल चले स्वामि रुख पाइ ।
घर तरु तर सर बाग बन बास बनाऐन्हि जाइ ॥१९६॥

शृंगबेरपुर भरत दीख जब । भे सनेह सब अंग सिथिल तब ।
सोहत दिए निषादहि लागू । जनु तनु[1] धरें बिनय[2] अनुरागू ।
ऐहि बिधि भरत सेनु सबु संगा । दीख जाइ जग पावनि गंगा ।
रामघाट कहँ कीन्ह प्रनामू । भा मनु मगनु मिले जनु रामू ।
करहिं प्रनाम नगर नर नारी । मुदित ब्रह्ममय बारि निहारी ।
करि मज्जनु माँगहि कर जोरी । रामचंद्र पद प्रीति न थोरी ।
भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू । सकल सुखद सेवक सुरधेनू ।
जोरि पानि बर मागउँ एहू । सीय राम पद सहज सनेहू ॥
ऐहि बिधि मज्जनु भरत करि गुर अनुसासन पाइ ।
मातु नहानीं जानि सब डेरा चले लवाइ ॥१९७॥

जहँ तहँ लोगन्ह डेरा कीन्हा । भरत सोधु सबही कर लीन्हा ।
गुर सेवा[3] करि आयेसु पाई । राममातु पहिं गे दोउ भाई ।
चरन चाँपि कहि कहि मृदु बानी । जननी सकल भरत सनमानी ।
भाइहि सौंपि मातु सेवकाई । आपु निषादहि लीन्ह बोलाई ।
चले सखा कर सों कर जोरे । सिथिल सरीरु सनेहु न थोरे ।
पूँछत सखहिं[4] सो ठाउँ देखाऊ । नेकु नयन मन जरनि जुड़ाऊ ।

१–१, ५, ६; धनु २.
२–२, ६; बिनय ३, ५.
३–१, ५, ६; गुर सेवा २.
४–६; सखहिं २. ३, ५.

जहँ सिय रामु लखनु निसि सोए। कहत भरे जल लोचन कोए।
भरत वचन सुनि भयेउ बिषादू। तुरत तहाँ लेइ गयेउ निषादू॥
जहँ सिंसुपा पुनीत तरु रघुबर किय विश्रामु।
अतिसनेह सादर भरत कीन्हेउ दंड प्रनामु॥१९८॥

कुस साँथरी निहारि सुहाई। कीन्ह प्रनामु प्रदच्छिन जाई।
चरन रेख रज आँखिन्ह लाई। बनइ न कहत प्रीति अधिकाई।
कनकबिंदु दुइ चारिक देखे। राखे सीस सीय सम लेखे।
सजल बिलोचन हृदय गलानी। कहत सखा सन वचन सुबानी।
श्रीहत सीय बिरह दुति हीना। जथा अवध नर नारि मलीना[1]।
पिता जनक देउँ पटतर केही। करतल भोगु जोगु जग जेही।
ससुर भानु कुल भानु भुआलू। जेहि सिहात अमरावतिपालू।
प्राननाथु रघुनाथ गोसाँई। जो बड़ होत सो राम बड़ाई॥
पतिदेवता सुतीयमनि सीय साँथरी देखि।
बिहरत हृदउ न हहरि हर पबि[2] तें कठिन बिसेषि॥१९९॥

लालन जोगु लखन लघु लोने। भे न भाइ अस अहहिं न होने।
पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे। सिय रघुबीरहि प्रान पिआरे।
मृदु मूरति सुकुमार सुभाऊ। तात बाउ तन लाग न काऊ।
ते बन सहहिं बिपति सब भाँती। निदरे कोटि कुलिस ओहि छाती।
राम जनमि जगु कीन्ह उजागर। रूप सील सुख सब गुन सागर।
पुरजन परिजन गुर पितु माता। राम सुभाउ सबहि सुखदाता।
बैरिउ राम बड़ाई करहीं। बोलनि मिलनि बिनय मन हरहीं।
सारद[3] कोटि कोटि सत सेखा। करि न सकहिं प्रभु गुन गन लेखा॥

१–५, ६; बिलीना २, ३.
२–५, ६; पवि २, ३.
३–५, ६, सादर २, ३

सुख सरूप रघुबंस मनि मंगल मोद निधान।
ते सोवत कुस डासि महि बिधि गति अतिबलवान॥

राम सुना दुखु कान न काऊ। जीवनतरु जिमि जोगवइ राऊ।
पलक नयन फनि मनि जेहि भाँती। जोगवहिं जननि सकल दिन राती।
ते अब फिरत बिपिन पदचारी। कंद मूल फल फूल अहारी।
धिग कैकई अमंगलमूला। भइसि प्रान प्रियतम प्रतिकूला।
मैं धिग धिग अघउदधि अभागी। सबु उतपातु भएउ जेहि लागी।
कुल कलंकु करि सृजेउ बिधाता। साँइदोह मोहि कीन्ह कुमाता।
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू। नाथ करिअ कत बादि बिषादू।
राम तुम्हहि प्रिय तुम्ह प्रिय रामहि। यह निरजोसु दोसु बिधि बामहि॥

बिधि बाम की करनी कठिन जेहिं मातु कीन्ही बावरी।
तेहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सरहना रावरी।
तुलसी न तुम्ह सो राम प्रीतमु कहत हौं सौहें किये।
परिनाम मंगल जानि अपने आनिए धीरजु हिये॥

अंतरजामी रामु सकुच सप्रेम कृपायतन।
चलिअ करिअ बिश्रामु यह बिचारि दृढ़ आनि मन॥२००॥

सखा बचन सुनि उर धरि धीरा। बास चले सुमिरत रघुबीरा।
यह सुधि पाइ नगर नर नारी। चले बिलोकन आरत भारी।
परदखिना करि करहिं प्रनामा। देहिं कैकइहि खोरि निकामा।
भरि भरि बारि बिलोचन लेहीं। बाम बिधातहि दूषन देहीं।
एक सराहहिं भरत सनेहू। कोउ कह नृपति निबाहेउ नेहू।
निंदहिं आपु सराहि निषादहि। को कहि सकइ बिमोह बिषादहि।
एहि बिधि राति लोगु सबु जागा। भा भिनुसार गुदारा लागा।
गुरहि सुनाव चढ़ाइ सुहाईं। नईं नाव सब मातु चढ़ाईं।
दंड चारि महँ भा सबु पारा। उतरि भरत तब सबहि सँभारा॥

प्रात क्रिया करि मातु पद बंदि, गुरहि सिरु नाइ।
आगें किये निषाद गन दीन्हेउ कटकु चलाइ ॥२०१॥
कियेउ निषादनाथु अगुआईं। मातु पालकीं सकल चलाईं।
साथ बोलाइ भाइ लघु दीन्हा। बिप्रन्ह सहित गवनु गुर कीन्हा।
आपु सुरसरिहि कीन्ह प्रनामू। सुमिरे लखन सहित सिय रामू।
गवने भरत पयादेहि पाएँ। कोतल संग जाहिं डोरिआएँ।
कहहिं सुसेवक बारहिं बारा। होइअ नाथ अस्व असवारा।
रामु पयादेहि पाय सिधाए। हम कहँ रथ गज बाजि बनाए।
सिर भर जाउँ उचित अस मोरा। सब तें सेवक धरमु कठोरा।
देखि भरत गति सुनि मृदु बानी। सब सेवक गन गरहिं गलानी ॥

भरत तीसरे पहर कहँ कीन्ह प्रबेसु प्रयाग।
कहत राम सिय राम सिय उमगि उमगि अनुराग ॥२०२॥

झलका झलकत पायन्ह कैसें। पंकज कोस ओस कन जैसें।
भरत पयादेहि आए आजू। भयेउ दुखित सुनि सकल समाजू।
खबरि लीन्ह सब लोग नहाए। कीन्ह प्रनामु त्रिबेनिहि आए।
सबिधि सितासित नीर नहाने। दिये दान महिसुर सनमाने।
देखत स्यामल धवल हलोरे। पुलकि सरीर भरत कर जोरे।
सकल काम प्रद तीरथराऊ। बेद बिदित जग प्रगट प्रभाऊ।
मागउँ भीख त्यागि निज धरमू। आरत काह न करइ कुकरमू।
अस जिय जानि सुजान सुदानी। सफल करहिं जग जाचक बानी ॥

अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहौं निरबान।
जनम जनम रति राम पद येह बरदानु न आन ॥२०३॥

जानहु रामु कुटिल करि मोही। लोगु कहउ गुर साहिब द्रोही।
सीताराम चरन रति मोरें। अनुदिन बढ़उ अनुग्रह तोरें।

१-२, ३, करहिं ४,

जलदु जनम भरि सुरति बिसारउ । जाचत जलु पबि पाहन डारउ ।
चातकु रटनि घटें घटि जाई । बढ़ें प्रेमु सब भाँति भलाई ।
कनकहि बान चढ़इ जिमि दाहें । तिमि प्रियतम पद नेम निबाहें ।
भरत बचन सुनि माँझ त्रिबेनी । भइ मृदु बानि सुमंगल देनी ।
तात भरत तुम सब बिधि साधू । राम चरन अनुराग अगाधू ।
बादि गलानि करहु मन माहीं । तुम्ह सम रामहि कोउ प्रिय नाहीं ॥

तनु पुलकेउ हिय हरषु सुनि बेनि बचन अनुकूल ।
भरत धन्य कहि धन्य सुर हरषित बरषहिं फूल ॥२०४॥

प्रमुदित तीरथराज निवासी । बैखानस बटु गृही उदासी ।
कहहिं परसपर मिलि दस पाँचा । भरत सनेहु सीलु सुचि साँचा ।
सुनत राम गुन ग्राम सुहाए । भरद्वाज मुनिबर पहिं आए ।
दंड प्रनामु करत मुनि देखे । मूरतिमंत भाग्य निज लेखे ।
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे । दीन्हि असीस कृतारथ कीन्हे ।
आसनु दीन्ह नाइ सिरु बैठे । चहत सकुच गृह जनु भजि पैठे ।
मुनि पूँछब किछु यह बड़ सोचू । बोले रिषि लखि सीलु सँकोचू ।
सुनहु भरत हम सब सुधि पाई । बिधि करतब पर किछु न बसाई ॥

तुम्ह गलानि जियँ जनि करहु समुझि मातु करतूति ।
तात कैकइहि दोसु नहिं गई गिरा मति धूति ॥२०५॥

यहउ कहत भल कहिहि न कोऊ । लोकु बेदु बुध संमत दोऊ ।
तात तुम्हार बिमल जसु गाई । पाइहि लोकउ बेदु बड़ाई ।
लोक बेद संमत सब कहई । जेहि पितु देइ राजु सो लहई ।
राउ सत्यब्रत तुम्हहि बोलाई । देत राजु सुखु धरमु बड़ाई ।
राम गवनु बन अनरथ मूला । जो सुनि सकल बिस्व भइ सूला ।
सो भावी बस रानि अयानी । करि कुचालि अंतहु पछितानी ।
तहउँ तुम्हार अलप अपराधू । कहइ सो अधमु अयान असाधू ।

करतेहु राजु त तुम्हहि न दोषू। रामहि होत सुनत संतोषू॥
अब अति कीन्हेहु भरत भल तुम्हहि उचित मत एहु।
सकल सुमंगल मूल जग रघुबर चरन सनेहु॥२०६॥

सो तुम्हार धनु जीवनु प्राना। भूरि भाग को तुम्हहि समाना।
यह तुम्हार आचरजु न ताता। दसरथ सुअन राम प्रिय भ्राता।
सुनहु भरत रघुपति मन माहीं। पेमपात्रु तुम्ह सम कोउ नाहीं।
लखन राम सीतहि अतिप्रीती। निसि सब तुम्हहि सराहत बीती।
जाना मरमु नहात प्रयागा। मगन होंहि तुम्हरे अनुरागा।
तुम्ह पर अस सनेह रघुबर कें। सुख जीवन जग जस जड़ नर कें।
येह न अधिक रघुबीर बड़ाई। प्रनत कुटुंब पाल रघुराई।
तुम्ह तउ भरत मोर मत एहू। धरें देह जनु राम सनेहू॥
तुम्ह कहँ भरत कलंक यह हम सब कहँ उपदेसु।
राम भगति रस सिद्धि हित भा यह समउ गनेसु॥२०७॥

नव बिधु बिमल तात जसु तोरा। रघुबर किंकर कुमुद चकोरा।
उदित सदा अँथइहि कबहूँ ना। घटिहि न जग नभ दिन दिन दूना।
कोक तिलोक प्रीति अति करही। प्रभु प्रतापु रबि छबिहि न हरिहीं।
निसि दिन सुखद सदा सब काहू। ग्रसिहि न कैकइ करतबु राहू।
पूरन राम सुपेम पियूषा। गुर अवमान दोष नहि दूषा।
राम भगति अब अमिअ अघाहूँ। कीन्हिहु सुलभ सुधा बसुधाहूँ।
भूप भगीरथ सुरसरि आनी। सुमिरत सकल सुमंगल खानी।
दसरथ गुन गन बरनि न जाहीं। अधिकु कहा जेहि सम जग नाहीं॥
जासु सनेह सकोच बस रामु प्रगट भए आइ।
जे हर हिय नयननि कबहुँ निरखे नहीं अघाइ॥२०८॥

कीरति बिधु तुम्ह कीन्हि अनूपा। जहँ बस राम पेम मृग रूपा।

१–३, ५, ६, रघुबर २

तात गलानि करहु जियँ जाएँ। डरहु दरिद्रहि पारसु पाएँ।
सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं। उदासीन तापस बन रहहीं।
सब साधन कर सुफल सुहावा। लखन राम सिय दरसनु पावा।
तेहि फल कर फलु दरस तुम्हारा। सहित पयाग सुभाग हमारा।
भरत धन्य तुम्ह जसु जगु जयेऊ। कहि अस पेम मगन मुनि भयेऊ।
सुनि मुनि बचन सभासद हरषे। साधु सराहि सुमन सुर बरषे।
धन्य धन्य धुनि गगन पयागा। सुनि सुनि भरतु मगन अनुरागा॥

पुलक गात हियँ रामु सिय सजल सरोरुह नयन।
करि प्रनामु मुनि मंडलिहि बोले गदगद बयन॥२०९॥

मुनि समाजु अरु तीरथराजू। साँचिहु सपथ अघाइ अकाजू।
ऐहि थल जौं किछु कहिअ बनाई। ऐहि सम अधिक न अघ अधमाई।
तुम्ह सर्वग्य कहउँ सतिभाऊ। उर अंतरजामी रघुराऊ।
मोहि न मातु करतब कर सोचू। नहि दुख जियँ जगु जानिहि पोचू।
नाहिन डरु बिगरिहि परलोकू। पितहु मरन कर मोहि न सोकू।
सुकृत सुजस भरि भुअन सुहाए। लछिमन राम सरिस सुत पाए।
राम बिरह तजि तनु छनभंगू। भूप सोच कर कवनु प्रसंगू।
राम लखन सिय बिनु पग पनहीं। करि मुनि बेष फिरहिं बन बनहीं॥

अजिन बसन फल असन महि सयन डासि कुस पात।
बसि तरु तर नित सहत हिम आतप बरषा बात॥२१०॥

ऐहि दुख दाह दहइ दिन छाती। भूख न बासर नीद न राती।
ऐहि कुरोग कर औषधु नाहीं। सोधेउँ सकल बिस्व मन माहीं।
मातु कुमत बढ़ई अघमूला। तेहिं हमार हित कीन्ह बँसूला।
कलि कुकाठ कर कीन्ह कुजंत्रू। गाड़ि अवधि पढ़ि कठिन कुमंत्रू।
मोहि लगि येहु कुठाटु तेहि ठाटा। घालेसि सबु जगु बारह बाटा।

१–५, ६, जसु जग २. २–२, ३, ६, नाहिन ५८ ...

मिटइ कुजोगु राम फिरि आएँ। रसइ अवध नहिं आन उपाएँ।
भरत बचन सुनि मुनि सुख पाई। सबहिं कीन्हि बहु भाँति बडाई।
तात करहु जनि सोचु बिसेखी। सब दुखु मिटिहि राम पग देखी॥
करि प्रबोधु मुनिबर कहेउ अतिथि पेम प्रिय होहु।
कंद मूल फल फूल हम देहिं लेहु करि छोहु॥२११॥

सुनि मुनि बचन भरत हियँ सोचू। भयेउ कुअवसरु कठिन सँकोचू।
जानि गरुइ गुर गिरा बहोरी। चरन बंदि बोले कर जोरी।
सिर धरि आयेसु करिअ तुम्हारा। परम धरम येहु नाथ हमारा।
भरत बचन मुनिबर मन भाए। सुचि सेवक सिख निकट बोलाए।
चाहिअ कीन्हि भरत पहुनाई। कंद मूल फल आनहु जाई।
भलेंहि नाथ कहि तिन्ह सिर नाए। प्रमुदित निज निज काज सिधाए।
मुनिहि सोचु पाहुन बड नेवता। तसि पूजा चाहिअ जस देवता।
सुनि रिधि सिधि अनिमादिक आईं। आयेसु होइ सो करहिं गोसाईं॥
राम बिरह ब्याकुल भरतु सानुज सहित समाज।
पहुनाई करि हरहु श्रम कहा मुदित मुनिराज॥२१२॥

रिधि सिधि सिर धरि मुनिबर बानी। बड भागिनि आपुहि अनुमानी।
कहहिं परसपर सिधि समुदाई। अतुलित अतिथि राम लघुभाई।
मुनिपद बंदि करिअ सोइ आजू। होंहिं सुखी सब राज समाजू।
अस कहि रचेउ रुचिर गृह नाना। जेहि बिलोकि बिलखाहिं बिमाना।
भोग बिभूति भूरि भरि राखे। देखत जिन्हहिं अमर अभिलाखे।
दासी दास साजु सब लीन्हे। जोगवत रहहिं मनहिं मनु दीन्हे।
सबु समाजु सजि सिधि पल माहीं। जे सुख सुरपुर सपनेहुँ नाहीं।
प्रथमहि बास दिये मन केही। सुंदर सुखद जथारुचि जेही॥

२-३, ५, ६, होइ २ ... २-२ ३, ६; सपनेहु सुरपुर ५
२-३, ५, अरि २, ६ ...

बहुरि सपरिजन भरत कहुँ रिषि अस आयेसु दीन्ह ।
बिधि बिसमय दायकु बिभव मुनिबर तप बल कीन्ह ॥२१३॥

मुनि प्रभाउ जब भरत बिलोका । सब लघु लगे लोकपति लोका ।
सुख समाजु नहि जाइ बखानी । देखत बिरति बिसारहिं ग्यानी ।
आसन सयन सुबसन बिताना । बन बाटिका बिहग मृग नाना ।
सुरभि फूल फल अमिअ समाना । बिमल जलासय बिबिध बिधाना ।
असन पान सुचि अमिअ अमी से । देखि लोग सकुचात जमी से ।
सुरसुरभी सुरतरु सबही कें । लखि अभिलाप सुरेस सची कें ।
रितु बसंत बह त्रिबिध बयारी । सब कहँ सुलभ पदारथ चारी ।
स्रक चंदन बनितादिक भोगा । देखि हरष बिसमयबस लोगा ॥

संपति चकई भरतु चक मुनि आयसु खेलवार ।
तेहि निसि आश्रम पिंजरा राखे भा भिनुसार ॥२१४॥

कीन्ह निमज्जनु तीरथराजा । नाइ मुनिहि सिरु सहित समाजा ।
रिषि आयसु असीस सिर राखी । करि दंडवत बिनय बहु भाखी ।
पथ गति कुसल साथ सब लीन्हे । चले चित्रकूटहि चितु दीन्हे ।
रामसखा कर दीन्हे लागू । चलत देह धरि जनु अनुरागू ।
नहि पदत्रान सीस नहि छाया । पेमु नेमु ब्रतु धरमु अमाया ।
लखन राम सिय पंथ कहानी । पूँछत सखहि कहत मृदु बानी ।
राम बास थल बिटप बिलोकें । उर अनुराग रहत नहि रोकें ।
देखि दसा सुर बरिसहिं फूला । भइ मृदु महि मगु मंगल मूला ॥

किये जाहिं छाया जलद सुखद बहइ बर बात ।
तस मगु भयेउ न राम कहँ जस भा भरतहि जात ॥२१५॥

जड़ चेतन मग जीव घनेरे । जे चितए प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे ।
ते सब भये परम पद जोगू । भरत दरस मेटा भव रोगू ।
येह बड़ि बात भरत कइ नाहीं । सुमिरत जिनहि रामु मन माहीं ।

चारकु राम कहत जग जेऊ। होत तरन तारन नर तेऊ।
भरतु राम प्रिय पुनि लघु भ्राता। कस न होइ मगु मंगलदाता[1]।
सिद्ध साधु मुनिबर अस कहहीं। भरतहिं निरखि हरषु हिय लहहीं।
देखि प्रभाउ सुरेसहि सोचू। जगु भल भलेहि पोच कहुँ पोचू।
गुरु सन कहेउ करिअ प्रभु सोई। रामहि भरतहि भेंट न होई॥

राम सकोची प्रेमबस भरत सुपेम पयोधि।
बनी बात बेगरन चहति करिअ जतनु छलु सोधि॥२१६॥

बचन सुनत सुरगुरु मुसकानें। सहसनयनु बिनु लोचन जानें।
कह गुर बादि छोभु छलु छाँड़ू। इहाँ कपट करि होइअ भाँड़ू[2]।
मायापति सेवक सन माया। करइ त उलटि परइ सुरराया।
तब किछु कीन्ह रामरुख जानी। अब कुचालि करि होइहि हानी।
सुनु सुरेस रघुनाथ सुभाऊ। निज अपराध रिसाहिं न काऊ।
जो अपराधु भगत कर करई। राम रोष पावक सो जरई।
लोकहुँ बेद बिदित इतिहासा। येह महिमा जानहिं दुरवासा।
भरत-सरिस को राम सनेही। जगु जप राम रामु जपु जेही॥

मनहुँ न आनिअ अमरपति रघुबर भगत[3] अकाजु।
अजसु लोक परलोक दुख दिन दिन सोक समाजु॥२१७॥

सुनु सुरेस उपदेसु हमारा। रामहि सेवकु परम पिआरा।
मानत सुखु सेवक सेवकाईं। सेवक बैर बैरु अधिकाई।
जद्यपि सम नहि राग न रोषू। गहहिं न पापु पूनु गुनु दोषू।
करम प्रधान बिस्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फलु चाखा।
तदपि करहिं सम बिषम बिहारा। भगत अभगत[4] हृदय अनुसारा।
अगुन अलेख अमान एकरस। रामु सगुन भये भगत पेम बस।

१-२, ३, ६, मंगलमाता ५.
२-२ में यह अर्धाली नहीं है।
३-२, ३, ६, भरत ५
४-२ ६, भरत भगत ३, ५.

राम सदा सेवक रुचि राखी। बेद पुरान साधु सुर भाखी।
अस जिय जानि तजहु कुटिलाई। करहु भरत पद प्रीति सुहाई॥
रामभगत परहित निरत परदुख दुखी दयाल।
भगत सिरोमनि भरत तें जनि डरपहु सुरपाल॥२१८॥

सत्यसंध प्रभु सुर हितकारी। भरत राम आयस अनुसारी।
स्वारथ बिबस बिकल तुम्ह होहू। भरतदोसु नहि राउर मोहू।
सुनि सुरबर सुरगुर बर बानी। भा प्रमोदु मन मिटी गलानी।
बरषि प्रसून हरषि सुरराऊ। लगे सराहन भरत सुभाऊ।
ऐहि बिधि भरतु चले मग जाहीं। दसा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं।
जबहिं रामु कहि लेहिं उसासा। उमगत पेमु मनहु चहुँ पासा।
द्रवहिं बचन सुनि कुलिस पषाना। पुरजन पेमु न जाइ बखाना।
बीच बास करि जमुनहि आए। निरखि नीरु लोचन जल छाए॥
रघुबर बरन बिलोकि बर बारि समेत समाज।
होत मगन बारिधि बिरह चढ़े बिबेक जहाज॥२१९॥

जमुन तीर तेहि दिन करि बासू। भयेउ समय सम सबहि सुपासू।
रातिहिं घाट घाट की तरनी। आईं अगनित जाहिं न बरनी।
प्रात पार भये एकहि खेवाँ। तोषे रामसखा की सेवाँ।
चले नहाइ नदिहि सिरु नाई। साथ निषादनाथु दोउ भाई।
आगें मुनिबर बाहन आछें। राजसमाजु जाइ सबु पाछें।
तेहि पाछें दोउ बंधु पयादें। भूषन बसन बेष सुठि सादें।
सेवक सुहृद सचिवसुत साथा। सुमिरत लखनु सीय रघुनाथा।
जहँ जहँ राम बास बिश्रामा। तहँ तहँ करहि सप्रेम प्रनामा॥
मगबासी नर नारि सुनि धाम काम तजि धाइ।
देखि सरूप सनेह बस मुदित जनम फलु पाइ॥२२०॥

कहहिं सपेम एक ऐक पाहीं। रामु लखनु सखि होहिं कि नाहीं।

बय बपु बरन रूपु सोइ आली। सीलु सनेहु सरिस सम चाली।
बेषु न सो सखि सीय न संगा। आगें अनी चली चतुरंगा।
नहिं प्रसंनमुख मानस खेदा। सखि संदेहु होइ ऍहिं भेदा।
तासु तरक तियगन मन मानी। कहहिं सकल तोहि सम न सयानी।
तेहि सराहि बानी फुरि पूजी। बोली मधुर बचन तिय दूजी।
कहि सपेम सब कथा प्रसंगू। जेहि बिधि राम राज रस भंगू।
भरतहि बहुरि सराहन लागी। सील सनेह सुभाय सुभागी॥
चलत पयादें खात फल पिता दीन्ह तजि राजु।
जात मनावन रघुबरहि भरत सरिस को आजु॥२२१॥
भायप भगति भरत आचरनू। कहत सुनत दुख दूषन हरनू।
जो किछु कहब थोर सखि सोई। रामबंधु अस काहे न होई।
हम सब सानुज भरतहि देखें। भइन्ह धन्य जुबती जन लेखें।
सुनि गुन देखि दसा पछिताहीं। कैकइ जननि जोगु सुतु नाहीं।
कोउ कह दूषनु रानिहि नाहिन। बिधि सबु कीन्ह हमहि जो दाहिन।
कहँ हम लोक बेद बिधि हीनी। लघु तिय कुल करतूति मलीनी।
बसहिं कुदेस कुगाँव कुबामा। कहँ येह दरसु पुन्य परिनामा।
अस अनद अचिरिजु प्रति ग्रामा। जनु मरु भूमि कलपतरु जामा॥
भरत दरसु देखत खुलेउ मग लोगन्ह कर भागु।
जनु सिंघलबासिन्ह भयेउ बिधि बस सुलभ प्रयागु॥२२२॥
निज गुन सहित राम गुन गाथा। सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा।
तीरथ मुनि आश्रम सुर धामा। निरखि निमज्जहिं करहिं प्रनामा।
मनहीं मन मागहिं बरु एहू। सीय राम पद पदुम सनेहू।
मिलहिं किरात कोल बनबासी। बैखानस बटु जती उदासी।
करि प्रनामु पूँछहिं जेहि तेही। केहि बन लखनु रामु बैदेही।

१–२ ६, राजहि १ ५

ते प्रभु समाचार सब कहहीं। भरतहि देखि जनम फलु लहहीं।
जे जन कहहिं कुसल हम देखे। ते प्रिय राम लखन सम लेखे।
ऐहि बिधि बूझत सबहि सुबानी। सुनत राम बन बास कहानी॥
तेहि बासर बसि प्रातहीं चले सुमिरि रघुनाथ।
राम दरस की लालसा भरत सरिस सब साथ॥२२३॥

मंगल सगुन होहिं सब काहू। फरकहिं सुखद बिलोचन बाहू।
भरतहि सहित समाज उछाहू। मिलिहहिं रामु मिटिहि दुख दाहू[1]।
करत मनोरथ जस जिय जाकें। जाहिं सनेह सुरा सब छाकें।
सिथिल अंग पग मग डगि डोलहिं। बिहबल बचन प्रेम बस बोलहिं।
राम सखा तेहि समय देखावा। सैल सिरोमनि सहज सुहावा।
जासु समीप सरित पय तीरा। सीय समेत[2] बसहिं दोउ बीरा।
देखि करहिं सब दंड प्रनामा। कहि जय जानकिजीवन रामा।
प्रेम मगन अस राज समाजू। जनु फिरि अवध चले रघुराजू॥
भरत प्रेमु तेहि समय जस तस कहि सकइ न सेषु।
कबिहि अगम जिमि ब्रह्म सुख अह मम मलिन जनेषु॥२२४॥

सकल सनेह सिथिल रघुबर कें। गये कोस दुइ दिनकर ढरकें।
जलु थलु देखि बसे निसि बीतें। कीन्ह गवनु रघुनाथ पिरीतें।
उहाँ रामु रजनी अवसेखा। जागे सीय सपन अस देखा।
सहित समाज भरत जनु आए। नाथ बियोग ताप तन ताए।
सकल मलिन मन दीन दुखारी। देखीं सासु आन अनुहारी।
सुनि सिय सपन भरे जल लोचन। भये सोच बस सोच बिमोचन।
लखन सपन यह नीक न होई। कठिन कुचाह सुनाइहि कोई।
अस कहि बंधु समेत नहाने। पूजि पुरारि साधु सनमाने॥

१–यह अर्धाली ३ में नहीं है। २–३,५,६, समीप २

सनमानि सुर मुनि बंदि बैठे उत्तर दिसि देखत भये।
नभ धूरि खग मृग भूरि भागे बिकल प्रभु आश्रम गये।
तुलसी उठे अवलोकि कारनु काह चित सचकित[1] रहे।
सब समाचार किरात कोलन्हि आइ तेहि अवसर कहे॥
सुनत सुमंगल बैन मन प्रमोद तन पुलक भर।
सरद सरोरुह नैन तुलसी भरे सनेह जल॥२२५॥
बहुरि सोच बस भे सियरवनू। कारन कवन भरत आगमनू।
एक आइ अस कहा बहोरी। सेन संग चतुरंग न थोरी।
सो सुनि रामहि भा अति सोचू। इत पितु बच इत बंधु सँकोचू।
भरत सुभाउ समुझि मन माहीं। प्रभु चित हित थिति पावत नाहीं।
समाधान तब भा येह जानें। भरतु कहें महुँ साधु सयाने।
लखनु लखेउ प्रभु हृदयँ खभारू। कहत समय सम नीति बिचारू।
बिनु पूछें कछु कहउँ गोसाईं। सेवकु समय न ढीठ ढिठाई।
तुम्ह सर्बग्य सिरोमनि स्वामी। आपनि समुझि कहउ अनुगामी॥
नाथ सुहृद सुठि सरल चित सील सनेह निधान।
सब पर प्रीति प्रतीति जियँ जानिअ आपु समान॥२२६॥
बिषई जीव पाइ प्रभुताई। मूढ़ मोहबस होहि जनाई।
भरतु नीति रत साधु सुजाना। प्रभु पद प्रेमु सकल जगु जाना।
तेऊ आजु राजपदु[2] पाई। चले धरम मरजाद मेटाई।
कुटिल कुबंधु कुअवसरु ताकी। जानि रामु बन बास अकेली।
करि कुमंत्रु मन साजि समाजू। आये करै अकंटक राजू।
कोटि प्रकार कलपि कुटिलाई। आये दलु बटोरि दोउ भाई।
जौं जिय होति न कपट कुचाली। केहि सोहाति रथ बाजि गजाली।
भरतहि दोसु देइ को जाएँ। जग बौराइ राजपदु पाएँ॥

१—२, ६; सचकित चित ५. २—३, ५, ६, रामपद २.

ससि गुर तिय गामी नहुपु चढ़ेउ भूमिसुर जान ।
लोक बेद तें बिमुख भा अधम न बेन समान ॥२२७॥

सहसबाहु सुरनाथु त्रिसंकू । केहि न राजमद दीन्ह कलंकू ।
भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ । रिपु रिन रंच न राखब काऊ ।
एक कीन्हि नहिं भरत भलाई । निदरे रामु जानि असहाई ।
समुझि परिहि सोउ आजु बिसेखी । समर सरोप रामु मुखु पेखी ।
एतना कहत नीति रस भूला । रन रस बिटपु पुलक मिस फूला ।
प्रभु पद बंदि सीस रज राखी । बोले सत्य सहज बलु भाखी ।
अनुचित नाथ न मानब मोरा । भरत हमहिं उपचार न थोरा ।
कहँ लगि सहिअ रहिअ मनु मारें । नाथ साथ धनु हाथ हमारें ॥
छत्र जाति रघुकुल जनमु राम अनुग जगु जान ।
लातहुँ मारें चढ़ति सिर नीच को धूरि समान ॥२२८॥

उठि कर जोरि रजायसु मागा । मनहुँ बीररस सोवत जागा ।
बाँधि जटा सिर कसि कटि भाथा । साजि सरासनु सायकु हाथा ।
आजु राम सेवक जसु लेऊँ । भरतहि समर सिखावन देऊँ ।
राम निरादर कर फलु पाई । सोवहुँ समर सेज दोउ भाई ।
आइ बना भल सकल समाजू । प्रगट करउँ रिस पाछिल आजू ।
जिमि करि निकर दलइ मृगराजू । लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू ।
तैसेहिं भरतहि सेन समेता । सानुज निदरि निपातउँ खेता ।
जौं सहाय कर संकरु आई । तौ मारउँ रन राम दोहाई ॥
अतिसरोष माखे लखनु लखि सुनि सपथ प्रवान ।
सभय लोक सब लोकपति चाहत भभरि भगान ॥२२९॥

जगु भय मगन गगन भइ बानी । लखन बाहु बलु बिपुल बखानी ।

१–२; अनुज ३, ४, ६. [illegible]

तात प्रताप प्रभाउ तुम्हारा। को कहि सकइ को जाननिहारा।
अनुचित उचित काजु किछु होऊ। समुझि करिअ भल कह सबु कोऊ।
सहसा करि पाछें पछिताहीं। कहहिं बेद बुध ते बुध नाहीं।
सुनि सुर बचन लखन सकुचाने। राम सीय सादर सनमाने।
कही तात तुम्ह नीति-सुहाई। सब तें कठिन राजमदु भाई।
जो अँचवत नृप मातहिं तेई। नाहिन साधु सभा जेहिं सेई।
सुनहु लखन भल भरत सरीसा। बिधि प्रपंच महँ सुना न दीसा॥

भरतहि होइ न राजमदु बिधि हरि हर पद पाइ।
कबहुँ कि काँजी सीकरनि, छीरसिंधु बिनसाइ॥२३०॥

तिमिरु तरुन तरनिहि मकु गिलई। गगनु मगन मकु मेघहि मिलई।
गोपद जल बूड़हिं घटजोनी। सहज छमा बरु छाड़इ छोनी।
मसक फूँक मकु मेरु उड़ाई। होइ न नृपमदु भरतहि भाई।
लखन तुम्हार सपथ पितु आना। सुचि सुबंधु नहि भरत समाना।
सगुनु खीरु अवगुन जलु ताता। मिलइ रचइ परपंचु बिधाता।
भरतु हंस रबि बंस तड़ागा। जनमि कीन्ह गुन दोष बिभागा।
गहि गुन पय तजि अवगुन बारी। निज जस जगत कीन्हि उजिआरी।
कहत भरत गुन सील सुभाऊ। पेम पयोधि मगन रघुराऊ॥

सुनि रघुबर बानी बिबुध देखि भरत पर हेतु।
सकल सराहत राम सो प्रभु को कृपानिकेतु॥२३१॥

जौं न होत जग जनम भरत को। सकल धरम धुर धरनि धरत को।
कबि कुल अगम भरत गुन गाथा। को जानइ तुम्ह बिनु रघुनाथा।
लखन राम सिय सुनि सुर बानी। अति सुखु लहेउ न जाइ बखानी।
इहाँ भरतु सब सहित सहाए। मंदाकिनीं पुनीत नहाए।
सरित समीप राखि सब लोगा। मागि मातु गुर सचिव नियोगा।
चले भरतु जहँ सिय रघुराई। साथ निषादनाथु लघु भाई।

समुझि मातु करतब सकुचाहीं। करत कुतरक कोटि मन माहीं।
रामु लखनु सिय सुनि मम नाऊँ। उठि जनि अनत जाहिं तजि ठाऊँ॥

मातु मतें महुँ मानि मोहि जो कछु करहिं सो थोर।
अघ अवगुन छमि आदरहिं समुझि आपनी ओर॥२३२॥

जौं परिहरहिं मलिन मनु जानी। जौं सनमानहिं सेवकु मानी।
मोरें सरन रामहि[2] की पनहीं। राम सुस्वामि दोसु सब जनहीं।
जग जस भाजन चातक मीना। नेम पेम निज निपुन नबीना।
अस मन गुनत चले मग जाता। सकुच सनेहँ सिथिल सब गाता।
फेरति मनहि[3] मातुकृत खोरी। चलत भगति बल धीरज धोरी।
जब समुझत रघुनाथ सुभाऊ। तब पथ परत उताइल पाऊ।
भरत दसा तेहि अवसर कैसी। जल प्रबाह जल अलि गति जैसी।
देखि भरत कर सोचु सनेहू। भा निषाद तेहि समय बिदेहू॥

लगे होन मंगल सगुन सुनि गुनि कहत निषादु।
मिटिहि सोच होइहि हरषु पुनि परिनाम बिषादु॥२३३॥

सेवक बचन सत्य सब जानें। आश्रम निकट जाइ निअरानें।
भरत दीख बन सैल समाजू। मुदित छुधित जनु पाइ सुनाजू।
ईति भीति जनु प्रजा दुखारी। त्रिबिध ताप पीडित ग्रह मारी।
जाइ सुराज सुदेस सुखारी। होहिं भरत गति तेहि अनुहारी।
राम बास बन संपति भ्राजा। सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा।
सचिव बिरागु बिबेकु नरेसू। बिपिन सुहावन पावन देसू।
भट जम नियम सैल रजधानी। सांति सुमति सुचि सुंदर रानी।
सकल अंग संपन्न सुराऊ। रामचरन आश्रित चित चाऊ॥

१–१, ५, ६ कहहिं २
२–५, ६, रामहिं २, ३
३–१, ५, ६, मनहु २

जीति मोह महिपालु दल सहित बिबेक भुआलु।
करत अकंटक राजु पुरँ सुख संपदा सुकालु ॥२३४॥
बन प्रदेस मुनि बास घनेरे। जनु पुर नगर गाउँगन खेरे।
बिपुल बिचित्र बिहग मृग नाना। प्रजा समाजु न जाइ बखाना।
खगहा करि हरि बाघ बराहा। देखि महिष वृष[1] साजु सराहा।
बयरु बिहाइ चरहिं एक संगा। जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा।
झरना झरहिं मत्तगज गाजहिं। मनहुँ निसान बिबिध बिधि बाजहिं।
चक्र चकोर चातक सुक पिक गन। कूजत मंजु मराल मुदितमन।
अलिगन गावत नाचत मोरा। जनु सुराज मंगल चहुँ ओरा।
बेलि बिटप तृन सफल सफूला। सब समाजु मुद मंगल मूला॥
रामसैल सोभा निरखि भरत हृदय अति पेमु।
तापस तप फलु पाइ जिमि सुखी सिराने नेमु ॥२३५॥
तब केवट ऊँचे चढ़ि धाई। कहेउ भरत सन भुजा उठाई।
नाथ देखिअहिं बिटप बिसाला। पाकरि जंबु रसाल तमाला।
तिन्ह[2] तरुबरन्ह मध्य बटु सोहा। मंजु बिसालु देखि मनु मोहा।
नील सघन पल्लव फल लाला। अबिचल[3] छाँह सुखद सब काला।
मानहु तिमिर अरुनमय रासी। बिरची बिधि सँकेलि सुखमासी।
ए तरु सरित समीप गोसाँई। रघुबर परनकुटी जहँ छाई।
तुलसी तरुबर बिबिध सोहाए। कहुँ कहुँ सिय कहुँ लखन लगाए।
बट छायाँ बेदिका बनाई। सिय निज पानि सरोज सुहाई॥
जहाँ बैठि मुनि गन सहित नित सिय रामु सुजान।
सुनहिं कथा इतिहास सब आगम निगम पुरान ॥२३६॥
सखा बचन सुनि बिटप निहारी। उमगे भरत बिलोचन बारी।

---

1 १–२, ३, ६, वृक ५. 3 ३–३, ५, ६, अबिरल २
2 २–५, ६, जिन्ह १, ३

करत प्रनाम चले दोउ भाई। कहत प्रीति सारद सकुचाई।
हरषहिं निरखि राम पद अंका। मानहुँ पारसु पायेउ रंका।
रज सिर धरि हियँ नयनन्हि लावहिं। रघुबर मिलन सरिस सुख पावहिं।
देखि भरत गति अकथ अतीवा। प्रेम मगन मृग खग जड़ जीवा।
सखहि सनेह बिबस मग भूला। कहि सुपंथ सुर बरषहिं फूला।
निरखि सिद्ध साधक अनुरागे। सहज सनेहु सराहन लागे।
होत न भूतल भाउ भरत को। अचर सचर चर अचर करत को॥

पेमु अमिअ मंदरु बिरहु भरत पयोधि गँभीर।
मथि प्रगटेउ सुर साधु हित कृपासिंधु रघुबीर॥२३७॥

सखा समेत मनोहर जोटा। लखेउ न लखन सघन बन ओटा।
भरत दीख प्रभु आश्रमु पावन। सकल सुमंगल सदनु सुहावन।
करत प्रबेस मिटे दुख दावा। जनु जोगीं परमारथु पावा।
देखे भरत लखन प्रभु आगें। पूँछे बचन कहत अनुरागें।
सीस जटा कटि मुनि पट बाँधें। तून कसें कर सरु धनु काँधें।
बेदी पर मुनि साधु समाजू। सीय सहित राजत रघुराजू।
बलकल बसन जटिल तनु स्यामा। जनु मुनि बेष कीन्ह रति कामा।
कर कमलनि धनु सायकु फेरत। जिय की जरनि हरत हँसि हेरत॥

लसत मंजु मुनि मंडली मध्य सीय रघुचंदु।
ग्यान सभाँ जनु तनु धरें भगति सच्चिदानंदु॥२३८॥

सानुज सखा समेत मगन मन। बिसरे हरष सोक सुख दुख गन।
पाहि नाथ कहि पाहि गोसाईं। भूतल परे लकुट की नाईं।
बचन सपेम लखन पहिचानें। करत प्रनामु भरत जियँ जानें।
बंधु सनेह सरस एहि ओरा। उत साहिब सेवा बस जोरा।
मिलि न जाइ नहि गुदरत बनई। सुकबि लखन मन की गति भनई।

१-२, ६; मनहु ३, ५.

रहे राखि सेवा पर भारू । चढ़ी चंग जनु खैंच खेलारू ।
कहत सप्रेम नाइ महि माथा । भरत प्रनाम करत रघुनाथा ।
उठे रामु सुनि पेम अधीरा । कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरा ॥
बरबस लिए उठाइ उर लाये कृपानिधान ।
भरत राम की मिलनि लखि बिसरे सबहि अपान ॥२३९॥
मिलनि प्रीति किमि जाइ बखानी । कबि कुल अगम करम मन बानी ।
परम पेम पूरन दोउ भाई । मन बुधि चित अहमिति बिसराई ।
कहहु सुपेमु प्रगट को करई । केहि छायाँ कबि मति अनुसरई ।
कबिहि अरथ आखर बलु साँचा । अनुहरि ताल गतिहि नटु नाँचा ।
अगम सनेहु भरत रघुबर को । जहँ न जाइ मनु बिधि हरि हर को ।
सो मैं कुमति कहौं केहि भाँती । बाजु सुराग कि गाँडर ताँती ।
मिलनि बिलोकि भरत रघुबर की । सुरगन सभय धकधकी धरकी ।
समुझाये सुरगुरु जड़ जागे । बरषि प्रसून प्रसंसन लागे ॥
मिलि सपेम रिपुसूदनहि केवट भेंटेउ राम ।
भूरि भायँ भेंटे भरत लछिमन करत प्रनाम ॥२४०॥
भेंटेउ लखन ललकि लघु भाई । बहुरि निषादु लीन्ह उर लाई ।
पुनि मुनि गन दुहुँ भाइन्ह बंदे । अभिमत आसिष पाइ अनंदे ।
सानुज भरत उमगि अनुरागा । धरि सिर सिय पद पदुम परागा ।
पुनि पुनि करत प्रनाम उठाए । सिर कर कमल परसि बैठाए ।
सीयँ असीस दीन्हि मन माहीं । मगन सनेह देह सुधि नाहीं ।
सब बिधि सानुकूल लखि सीता । भे निसोच उर अपडर बीता ।
कोउ किछु कहइ न कोउ किछु पूँछा । प्रेम भरा मनु निज गति छूछा ।
तेहि अवसर केवटु धीरजु धरि । जोरि पानि बिनवत प्रनामु करि ॥
नाथ साथ मुनिनाथ के मातु सकल पुरलोग ।
सेवक सेनप सचिव सब आए बिकल बियोग ॥२४१॥

सीलसिंधु सुनि गुर आगवनू। सिय समीप राखे रिपुदवनू।
चले सबेग रामु तेहि काला। धीर धरम धुर दीन दयाला।
गुरहि देखि सानुज अनुरागे। दंड प्रनाम करन प्रभु लागे।
मुनिबर धाइ लिए उर लाई। प्रेम उमगि भेंटे दोउ भाई।
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू। कीन्ह दूरि तें दंड प्रनामू।
रामसखा रिषि बरबस भेंटा। जनु महि लुठत सनेह समेटा।
रघुपति भगति सुमंगल मूला। नभ सराहि सुर बरिसहिं फूला।
ऐहि सम निपट नीच कोउ नाहीं। बड़ बसिष्ठ सम को जग माहीं॥

जेहि लखि लखनहुँ तें अधिक मिले मुदित मुनिराउ।
सो सीतापति भजन को प्रगट प्रताप प्रभाउ॥२४२॥

आरत लोग राम सबु जाना। करुनाकर सुजान भगवाना।
जो जेहि भायँ रहा अभिलाखी। तेहि तेहि कै तसि तसि रुख राखी।
सानुज मिलि पल महुँ सब काहू। कीन्ह दूरि दुखु दारुन दाहू।
येह बड़ि बात राम कै नाहीं। जिमि घट कोटि एक रबि छाहीं।
मिलि केवटहि उमगि अनुरागा। पुरजन सकल सराहहिं भागा।
देखीं राम दुखित महतारीं। जनु सुबेलि अवलीं हिम मारीं।
प्रथम राम भेंटी कैकेई। सरल सुभायँ भगति मति भेई।
पग परि कीन्ह प्रबोधु बहोरी। काल करम बिधि सिर धरि खोरी॥

भेंटीं रघुबर मातु सब करि प्रबोधु परितोषु।
अंब ईस आधीन जगु काहु न देइअ दोषु॥२४३॥

गुरतिय पद बंदे दुहु भाई। सहित बिप्रतिय जे सँग आई।
गंग गौरि सम सब सनमानीं। देहिं असीस मुदित मृदु बानीं।
गहि पद लगे सुमित्रा अंका। जनु भेंटी संपति अतिरंका।
पुनि जननी चरननि दोउ भ्राता। परे पेम ब्याकुल सब गाता।
अति अनुराग अंब उर लाए। नयन सनेह सलिल अन्हवाए।

तेहि अवसर कर हरप बिषादू। किमि कबि कहइ मूक जिमि स्वादू।
मिलि जननिहि सानुज रघुराऊ। गुर सन कहेउ कि धारिअ पाऊ।
पुरजन पाइ मुनीस नियोगू। जल थल तकि तकि उतरेउ लोगू॥
महिसुर मंत्री मातु गुर गनें लोग लिऐ साथ।
पावन आश्रमु गवनु किय भरत लखन रघुनाथ॥२४४॥

सीय आइ मुनिवर पग लागी। उचित असीस लही मन मागी।
गुरपतिनिहि मुनितियन्ह समेता। मिलीं पेमु कहि जाइ न जेता।
बंदि बंदि पग सिय सबही के। आसिर बचन लहे प्रिय जी के।
सासु सकल जब सीय निहारीं। मूदे सकल सहमि सुकुमारीं।
परीं बधिक बस मनहु मराली। काह कीन्ह करतार कुचाली।
तिन्ह सिय निरखि निपट दुखु पावा। सो सबु सहिअ जो दैउ सहावा।
जनकसुता तब उर धरि धीरा। नील नलिन लोयन भरि नीरा।
मिली सकल सासुन्ह सिय जाई। तेहि अवसर करुना महि छाई॥
लागि लागि पग सबनि सिय भेंटति अति अनुराग।
हृदयँ असीसहिं पेम बस रहिअहु भरी सोहाग॥२४५॥

बिकल सनेह सीय सब रानी। बैठन सबहि कहेउ गुर ग्यानी।
कहि जग गति मायिक मुनिनाथा। कहे कछुक परमारथ गाथा।
नृप कर सुरपुर गवनु सुनावा। सुनि रघुनाथ दुसह दुखु पावा।
मरन हेतु निज नेहु बिचारी। भे अति बिकल धीर धुर धारी।
कुलिस कठोर सुनत कटु बानी। बिलपत लखन सीय सब रानी।
सोक बिकल अति सकल समाजू। मानहुँ राजु अकाजेउ आजू।
मुनिबर बहुरि राम समुझाए। सहित समाज सुसरित नहाए।
ब्रतु निरंबु तेहि दिन प्रभु कीन्हा। मुनिहु कहें जलु काहु न लीन्हा॥

१–२, ३, ६; दीस ५.

भोरु भयें रघुनंदनहि जो मुनि आयेसु दीन्ह ।
श्रद्धा भगति समेत प्रभु सो सबु सादर कीन्ह ॥२४६॥
करि पितु क्रिया बेद जसि बरनी । भे पुनीत पातक तम तरनी ।
जासु नाम पावक अघ तूला । सुमिरत सकल सुमंगल मूला ।
सुद्ध सो भयेउ साधु संमत अस । तीरथ आवाहन सुरसरि जस ।
सुद्ध भएँ दुइ बासर बीते । बोले गुर सन मातु पिरीते ।
नाथ लोग सब निपट दुखारी । कंद मूल फल अंबु अहारी ।
सानुज भरतु सचिव सब माता । देखि मोहि पल जिमि जुग जाता ।
सब समेत पुर धारिअ पाऊ । आपु इहाँ अमरावति राऊ ।
बहुतु कहेउँ सबु कियेउँ ढिठाई । उचित होइ तस करिअ गोसाईं ॥
धरम सेतु करुनायतन कस न कहहु अस राम ।
लोग दुखित दिन दुइ दरसु देखि लहहुँ बिश्राम ॥२४७॥
राम बचन सुनि सभय समाजू । जनु जलनिधि महुँ बिकल जहाजू ।
सुनि गुर गिरा सुमंगल मूला । भयेउ मनहुँ मारुत अनुकूला ।
पावनि पय तिहुँ काल नहाहीं । जो बिलोकि अघ ओघ नसाहीं ।
मंगल मूरति लोचन भरि भरि । निरखहिं हरषि दंडवत करि करि ।
राम सैल बन देखन जाहीं । जहँ सुख सकल सकल दुख नाहीं ।
झरना झरहिं सुधा सम बारी । त्रिबिध तापहर त्रिबिध बयारी ।
बिटप बेलि तृन अगनित जाती । फल प्रसून पल्लव बहु भाँती ।
सुंदर सिला सुखद तरु छाहीं । जाइ बरनि बन छबि केहि पाहीं ॥
सरनि सरोरुह जल बिहग कूजत गुंजत भृंग ।
बैर बिगत बिहरत बिपिन मृग बिहंग बहुरंग ॥२४८॥
कोल किरात भिल्ल बनबासी । मधु सुचि सुंदर स्वादु सुधा सी ।
भरि भरि परनपुटीं रचि रूरीं । कंद मूल फल अंकुर जूरीं ।

१–३, ५, राम २, ६.

सबहि देहिं करि बिनय प्रनामा। कहि कहि स्वाद भेद गुन नामा॥
देहिं लोग बहु मोल न लेहीं। फेरत राम दोहाई देहीं॥
कहहिं सनेह मगन मृदु बानी। मानत साधु पेम पहिचानी॥
तुम्ह सुकृती हम नीच निषादा। पावा दरसनु राम प्रसादा॥
हमहि अगम अति दरसु तुम्हारा। जस मरु धरनि देवधुनि[1] धारा॥
राम कृपाल निषाद नेवाजा। परिजन प्रजउ चहिअ जस राजा॥

येह जिय जानि सँकोचु तजि करिअ छोहु लखि नेहु।
हमहि कृतारथ करन लगि फल तृन अंकुर लेहु॥२४९॥

तुम्ह प्रिय पाहुने बन पगु धारे। सेवा जोगु न भाग हमारे॥
देब काह हम तुम्हहि गोसाँई। ईंधनु पात किरात मिताई॥
येह हमारि अति बड़ि सेवकाई। लेहिं न बासन बसन चोराई॥
हम जड़ जीव जीवगन घाती। कुटिल कुचाली कुमति कुजाती॥
पाप करत निसि बासर जाहीं। नहिं पट कटि नहि पेट अघाहीं॥
सपनेहुँ धरम बुद्धि कस काऊ। येह रघुनंदन दरस प्रभाऊ॥
जब तें प्रभु पद पदुम निहारे। मिटे दुसह दुख दोष हमारे॥
बचन सुनत पुरजन अनुरागे। तिन्ह के भाग सराहन लागे॥

लागे सराहन भाग सब अनुराग बचन सुनावहीं।
बोलनि मिलनि सिय राम चरन सनेहु लखि सुखु पावहीं॥
नर नारि निदरहिं नेह निज सुनि कोल भिल्लनि की गिरा।
तुलसी कृपा रघुबंसमनि की लोह लै लौका[2] तिरा॥

बिहरहिं बन चहुँ ओर प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब।
जल ज्यों दादुर मोर भये पीन पावस प्रथम॥२५०॥

पुरनर नारि मगन अति प्रीती। बासर जाहिं पलक सम बीती॥

१–१, ६; देवधरि ३, ५.
२–२, ३, ६; नौका ५.

सीयँ सासु प्रति बेष बनाई। सादर करइ सरिस सेवकाई।
लखा न मरमु राम बिनु काहूँ। माया सब सिय माया माहूँ।
सीयँ सासु सेवा बस कीन्ही। तिन्ह लहि सुख सिख आसिष दीन्ही।
लखि सिय सहित सरल दोउ भाई। कुटिल रानि पछितानि अघाई।
अवनि जमहि जाचति कैकेई। महि न बीचु बिधि मीचु न देई।
लोकहुँ बेद बिदित कबि कहहीं। राम बिमुख थलु नरक न लहहीं।
यह संसउ सबके मन माहीं। राम गवनु बिधि अवध कि नाहीं॥

निसि न नीद नहि भूख दिन भरत बिकल सुचि सोच।
नीच बीच बिच मगन जस मीनहि सलिल सँकोच ॥२५१॥

कीन्हि मातु मिस काल कुचाली। ईति भीति जस पाकत साली।
केहि बिधि होइ राम अभिषेकू। मोहि अवकलत उपाउ न एकू।
अवसि फिरहिं गुर आयेसु मानी। मुनि पुनि कहब राम रुचि जानी।
मातु कहेहुँ बहुरहि रघुराऊ। राम जननि हठ करबि कि काऊ।
मोहि अनुचर कर केतिक बाता। तेहि महँ कुसमउ बाम बिधाता।
जौं हठ करउँ त निपट कुकरमू। हर गिरि तें गुरु सेवक धरमू।
एकउ जुगुति न मन ठहरानी। सोचत भरतहि रैनि बिहानी।
प्रात नहाइ प्रभुहि सिर नाई। बैठत पठये रिषयँ बोलाई॥

गुर पद कमल प्रनाम करि बैठे आयसु पाइ।
बिप्र महाजन सचिव सब जुरे सभासद आइ ॥२५२॥

बोले मुनिबरु समय समाना। सुनहु सभासद भरत सुजाना।
धरम धुरीन भानुकुल भानू। राजा रामु स्वबस भगवानू।
सत्यसंध पालक श्रुति सेतू। राम जनमु जग मंगल हेतू।
गुर पितु मातु बचन अनुसारी। खल दलु दलन देव हितकारी।
नीति प्रीति परमारथ स्वारथु। कोउ न राम सम जान जथारथु।

१–२, ३, ३ ५; ६६ ६

बिधि हरि हरु ससि रबि दिसिपाला। माया जीव करम कुलि काला।
अहिप महिप जहँ लगि प्रभुताई। जोग सिद्धि निगमागम गाई।
करि बिचार जिय देखहु नीकें। राम रजाइ सीस सबही कें॥

[१] राखें राम रजाइ रुख हम सब कर हित होइ।
[२] समुझि सयानें करहु अब सब मिलि संमत सोइ॥२५३॥

सब कहुँ सुखद राम अभिषेकू। मंगल मोद मूल मगु एकू।
केहि बिधि अवध चलहिं रघुराऊ। कहहु समुझि सोइ करिअ उपाऊ।
सब सादर सुनि मुनिबर बानी। नय परमारथ स्वारथ सानी।
उतरु न आव लोग भये भोरे। तब सिरु नाइ भरत कर जोरे।
भानुबंस भये भूप घनेरे। अधिक एक तें एक बड़ेरे।
जनम हेतु सब कहँ पितु माता। करम सुभासुभ देइ बिधाता।
दलि दुख सजइ सकल कल्याना। अस असीस राउरि जगु जाना।
सो गोसाइँ बिधि गति जेहि छेंकी। सकइ को टारि टेक जो टेकी॥

[१] बूझिअ मोहि उपाउ अब सो सब मोर अभागु।
[२] सुनि सनेहमय बचन गुर उर उमगा अनुरागु॥२५४॥

तात बात फुरि राम कृपाहीं। राम बिमुख सिधि सपनेहुँ नाहीं।
सकुचउँ तात कहत एक बाता। अरध तजहिं बुध सरबसु जाता।
तुम्ह कानन गवनहु दोउ भाई। फेरिअहि लखनु सीय रघुराई।
सुनि सुबचन हरषे दोउ भ्राता। भे प्रमोद परिपूरन गाता।
मन प्रसन्न तन तेजु बिराजा। जनु जिये राउ रामु भये राजा।
बहुत लाभु लोगन्ह लघु हानी। सम दुख सुख सब रोवहिं रानी।
कहहिं भरतु मुनि कहा सो कीन्हे। फलु जग जीवन्ह अभिमत दीन्हे।
कानन करउँ जनम भरि बासू। एहि तें अधिक न मोर सुपासू॥

१-२ में इतना अंश नहीं है।

सीयँ सासु प्रति बेष बनाई । सादर करइ सरिस सेवकाई ।
लखा न मरमु राम बिनु काहूँ । माया सब सिय माया माहूँ ।
सीयँ सासु सेवा बस कीन्ही । तिन्ह लहि सुख सिख आसिष दीन्ही ।
लखि सिय सहित सरल दोउ भाई । कुटिल रानि पछितानि अघाई ।
अवनि जमहि जाचति कैकेई । महि न बीचु बिधि मीचु न देई ।
लोकहुँ बेद बिदित कबि कहहीं । राम बिमुख थलु नरक न लहहीं ।
यह संसउ सबके मन माहीं । राम गवनु बिधि अवध कि नाहीं ॥
निसि न नीद नहि भूख दिन भरत बिकल सुचि सोच ।
नीच कीच बिच मगन जस मीनहि सलिल सँकोच ॥२५१॥
कीन्हि मातु मिस काल कुचाली । ईति भीति जस पाकत साली ।
केहि बिधि होइ राम अभिषेकू । मोहि अवकलत उपाउ न एकू ।
अवसि फिरहिं गुर आयेसु मानी । मुनि पुनि कहब राम रुचि जानी ।
मातु कहेहुँ बहुरहिं रघुराऊ । राम जननि हठ करबि कि काऊ ।
मोहि अनुचर कर केतिक बाता । तेहि महँ कुसमउ बाम बिधाता ।
जौं हठ करउँ त निपट कुकरमू । हर गिरि तें गुरु सेवक धरमू ।
एकउ जुगुति न मन ठहरानी । सोचत भरतहि रैनि बिहानी ।
प्रात नहाइ प्रभुहि सिर नाई । बैठत पठये रिषयँ बोलाई ॥
गुर पद कमल प्रनाम करि बैठे आयसु पाइ ।
बिप्र महाजन सचिव सब जुरे सभासद आइ ॥२५२॥
बोले मुनिबरु समय समाना । सुनहु सभासद भरत सुजाना ।
धरम धुरीन भानुकुल भानू । राजा रामु स्वबस भगवानू ।
सत्यसंध पालक श्रुति सेतू । राम जनमु जग मंगल हेतू ।
गुर पितु मातु बचन अनुसारी । खल दलु दलन देव हितकारी ।
नीति प्रीति परमारथ स्वारथु । कोउ न राम सम जान जथारथु ।

१–२, ३, ३ ५; ६६ ६

नाथ सपथ पितु चरन दोहाई। भयउ न भुअन भरत सम भाई॥
जे गुर पद अंबुज अनुरागी। ते लोकहुँ बेदहुँ बड़भागी॥
राउर जा पर अस अनुरागू। को कहि सकइ भरत कर भागू॥
लखि लघु बंधु बुद्धि सकुचाई। करत बदन पर भरत बड़ाई॥
भरतु कहहिं सोइ किएँ भलाई। अस कहि राम रहे अरगाई॥

तात भरत तब बोले मुनि सब सँकोचु तजि तात।
कृपासिंधु प्रिय बंधु सन कहहु हृदय कइ बात॥२५८॥

सुनि मुनि बचन राम रुख पाई। गुर साहिब अनुकूल अघाई॥
लखि अपनें सिर सबु छरु भारू। कहि न सकहिं कछु करहिं बिचारू॥
पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े। नीरज नयन नेह जल बाढ़े॥
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा। एहि तें अधिक कहौं मैं काहा॥
मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ। अपराधिहु पर कोह न काऊ॥
मो पर कृपा सनेहु बिसेषी। खेलत खुनिस न कबहूँ देखी॥
सिसुपन तें परिहरेउँ न संगू। कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू॥
मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही। हारेहुँ खेल जितावहिं मोही॥

महूँ सनेह सकोच बस सनमुख कही न बयन।
दरसन तृपित न आजु लगि पेम पिआसे नयन॥२५९॥

बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा। नीच बीचु जननी मिस पारा॥
यहउ कहत मोहि आजु न सोभा। अपनीं समुझि साधु सुचि को भा॥
मातु मंदि मैं साधु सुचाली। उर अस आनत कोटि कुचाली॥
फरइ कि कोदव बालि सुसाली। मुकुता प्रसव कि संबुक काली॥
सपनेहुँ दोसक लेसु न काहू। मोर अभाग उदधि अवगाहू॥
बिनु समुझें निज अघ परिपाकू। जारिउँ जायँ जननि कहि काकू॥
हृदयँ हेरि हारेउँ सब ओरा। एकहि भाँति भलेंहि भल मोरा॥

१-२ कहे ३, ५, ६

अंतरजामी रामु सिय तुम्ह सर्बग्य सुजान।
जौं फुर कहहु त नाथ निज कीजिअ बचनु प्रवान ॥२५५॥

भरत बचन सुनि देखि सनेहू। सभा सहित मुनि भए बिदेहू।
भरत महा महिमा जलरासी। मुनि मति ठाढ़ि तीर अबला सी।
गा चह पार जतनु हियँ हेरा। पावति नाव न बोहितु बेरा।
औरु करिहि को भरत बड़ाई। सरसीं सीपि कि सिंधु समाई।
भरतु मुनिहि मन भीतर भाए। सहित समाज राम पहिं आए।
प्रभु प्रनामु करि दीन्ह सुआसनु। बैठे सब सुनि मुनि अनुसासनु।
बोले मुनिबरु बचन बिचारी। देस काल अवसर अनुहारी।
सुनहु राम सर्बग्य सुजाना। धरम नीति गुन ग्यान निधाना॥

सब के उर अंतर बसहु जानहु भाउ कुभाउ।
पुरजन जननीं भरत हित होइ सो कहिअ उपाउ ॥२५६॥

आरत कहहिं बिचारि न काऊ। सूझ जुआरिहि आपन दाऊ।
सुनि मुनिबचन कहत रघुराऊ। नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ।
सब कर हित रुख राउरि राखें। आयसु किएँ मुदित फुर भाषें।
प्रथम जो आयसु मो कहुँ होई। माथें मानि करौं सिख सोई।
पुनि जेहि कहँ जस कहब गोसाईं। सो सब भाँति घटिहि सेवकाईं।
कह मुनि राम सत्य तुम्ह भाषा। भरत सनेहँ बिचारु न राखा।
तेहि तें कहउँ बहोरि बहोरी। भरत भगति बस भइ मति मोरी।
मोरें जान भरत रुचि राखी। जो कीजिअ सो सुभ सिव साखी॥

भरत बिनय सादर सुनिअ करिअ बिचारु बहोरि।
करब साधुमत लोकमत नृपनय निगम निचोरि ॥२५७॥

गुर अनुरागु भरत पर देखी। राम हृदयँ आनंदु बिसेषी।
भरतहि धरमधुरंधर जानी। निज सेवक तन मानस बानी।
बोले गुर आयस अनुकूला। बचन मंजु मृदु मंगल मूला।

नाथ सपथ पितु चरन दोहाई। भयउ न भुअन भरत सम भाई॥
जे गुर पद अंबुज अनुरागी। ते लोकहुँ बेदहुँ बड़भागी॥
राउर जा पर अस अनुरागू। को कहि सकइ भरत कर भागू॥
लखि लघु बंधु बुद्धि सकुचाई। करत बदन पर भरत बड़ाई॥
भरतु कहहिं सोइ किएँ भलाई। अस कहि रामु रहे अरगाई॥

तब मुनि बोले भरत सन सबु सँकोचु तजि तात।
कृपासिंधु प्रिय बंधु सन कहहु हृदय कै बात॥२५८॥

सुनि मुनि बचन राम रुख पाई। गुरु साहिब अनुकूल अघाई॥
लखि अपनें सिर सबु छरुभारू। कहि न सकहिं कछु करहिं बिचारू॥
पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े। नीरज नयन नेह जल बाढ़े॥
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा। एहि तें अधिक कहौं मैं काहा॥
मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ। अपराधिहु पर कोह न काऊ॥
मो पर कृपा सनेहु बिसेषी। खेलत खुनिस न कबहूँ देखी॥
सिसुपन तें परिहरेउँ न संगू। कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू॥
मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही। हारेहुँ खेल जितावहिं मोही॥

महूँ सनेह सकोच बस सनमुख कही न बयन।
दरसन तृपित न आजु लगि पेम पिआसे नयन॥२५९॥

बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा। नीच बीचु जननी मिसु पारा॥
यहउ कहत मोहि आजु न सोभा। अपनी समुझि साधु सुचि को भा॥
मातु मंदि मैं साधु सुचाली। उर अस आनत कोटि कुचाली॥
फरै कि कोदव बालि सुसाली। मुकुता प्रसव कि संबुक काली॥
सपनेहुँ दोस क लेसु न काहू। मोर अभाग उदधि अवगाहू॥
बिनु समुझें निज अघ परिपाकू। जारिउँ जायँ जननि कहि काकू॥
हृदयँ हेरि हारेउँ सब ओरा। एकहि भाँति भलेंहि भल मोरा॥

१–२, कहे ३, ५, ६

गुर गोसाँइ साहिब सिय रामू । लागत मोहि नीक परिनामू ॥

साधु सभाँ गुर प्रभु निकट कहउँ सुथल सतिभाउ ।
प्रेम प्रपंचु कि झूठ फुर जानहिं मुनि रघुराउ ॥२६०॥

भूपति मरनु पेम पनु राखी । जननी कुमति जगतु सबु साखी ।
देखि न जाहिं बिकल महतारीं । जरहिं दुसह जर पुर नर नारीं ।
महीं सकल अनरथ कर मूला । सो सुनि समुझि सहिउँ सब सूला ।
सुनि बन गवनु कीन्ह रघुनाथा । करि मुनि बेष लखन सिय साथा ।
बिनु पानहिन्ह पयादेहि पाएँ । संकरु साखि रहेउँ ऐहि घाएँ ।
बहुरि निहारि निषाद सनेहू । कुलिस कठिन उर भएउ न बेहू ।
अब सबु आँखिन्ह देखेउँ आई । जिअत जीव जड़ सबइ सहाई ।
जिन्हहि निरखि मग साँपिनि बीछीं । तजहिं बिषम बिषु तापस तीछीं ॥

तेइ रघुनंदनु लखनु सिय अनहित लागे जाहि ।
तासु तनय तजि दुसह दुख दैव सहावइ काहि ॥२६१॥

सुनि अति बिकल भरत बर बानी । आरति प्रीति बिनय नय सानी ।
सोक मगन सब सभा खभारू । मनहु कमल बन परेउ तुसारू ।
कहि अनेक बिधि कथा पुरानी । भरत प्रबोधु कीन्ह मुनि ग्यानी ।
बोले उचित बचन रघुनंदू । दिनकर कुल कैरव बन चंदू ।
तात जायँ जियँ करहु गलानी । ईस अधीन जीवगति जानी ।
तीनि काल तिभुअन मत मोरें । पुन्यसिलोक तात तर तोरें ।
उर आनत तुम्ह पर कुटिलाई । जाइ लोकु परलोकु नसाई ।
दोसु देहिं जननिहि जड़ तेई । जिन्ह गुर साधु सभा नहिं सेई ॥

मिटिहहिं पाप प्रपंच सब अखिल अमंगल भार ।
लोक सुजसु परलोकु सुखु सुमिरत नामु तुम्हार ॥२६२॥

१–२, ३, ५; तामस ६.

कहउँ सुभाउ सत्य सिव साखी। भरत भूमि रह राउरि राखी।
तात कुतरक करहु जनि जाएँ। बैर प्रेमु नहिं दुरइ दुराएँ।
मुनिगन निकट बिहग मृग जाहीं। बाधक बधिक बिलोकि पराहीं।
हित अनहित पसु पच्छिउ जाना। मानुष तनु गुन ग्यान निधाना।
तात तुम्हहि मइँ जानउँ नीके। करउँ काह असमंजसु जी के।
राखेउ रायँ सत्य मोहि त्यागी। तनु परिहरेउ पेमु पनु लागी।
तासु बचन-मेटत मन सोचू। तेहि तें अधिक तुम्हार सँकोचू।
तापर गुर मोहि आयसु दीन्हा। अवसि जो कहहु चहउँ सोइ कीन्हा॥

मनु प्रसन्न करि सकुच तजि कहहु करउँ सोइ आजु।
सत्यसंध रघुबर बचन सुनि भा सुखी समाजु॥२६३॥

सुरगन सहित सभय सुरराजू। सोचहिं चाहत होन अकाजू।
करत उपाउ बनत[1] कछु नाहीं। राम सरन सब गे मन माहीं।
बहुरि बिचारि परसपर कहहीं। रघुपति भगत भगति बस अहहीं।
सुधि करि अंबरीष दुरबासा। भे सुर सुरपति निपट निरासा।
सहे सुरन्ह बहु काल बिषादा। नरहरि किए प्रगट प्रहलादा।
लगि लगि कान कहहिं धुनि माथा। अब सुर काज भरत के हाथा।
आन उपाउ न देखिअ देवा। मानत रामु सुसेवक सेवा।
हिय सपेम सुमिरहु सब भरतहि। निज गुन सील राम बस करतहि॥

सुनि सुर मत सुरगुर कहेउ भल तुम्हार बड भागु।
सकल सुमंगल मूल जग भरत चरन अनुरागु॥२६४॥

सीतापति सेवक सेवकाई। कामधेनु सय सरिस सुहाई।
भरत भगति तुम्हरें मन आई। तजहु सोचु बिधि बात बनाई।
देखु देवपति भरत प्रभाऊ। सहज सुभायँ बिबस रघुराऊ।

१–३, ४ बनत उपाउ करत २, ६

मन थिर करहु देव डरु नाहीं। भरतहि जानि राम परिछाहीं।
सुनि सुरगुर सुर संमत सोचू। अंतरजामी प्रभुहि सकोचू।
निज सिर भारु भरत जियँ जाना। करत कोटि विधि उर अनुमाना।
करि विचारु मन दीन्ही ठीका। राम रजायस आपन नीका।
निज पन तजि राखेउ पनु मोरा। छोहु सनेहु कीन्ह नहिं थोरा॥

कीन्ह अनुग्रह अमित अति सब विधि सीतानाथ।
करि प्रनामु बोले भरतु जोरि जलज जुग हाथ॥२६५॥

कहउँ कहावउँ का अब स्वामी। कृपा अंबुनिधि अंतरजामी।
गुर प्रसंन साहिब अनुकूला। मिटी मलिन मन कलपित सूला।
अपडर डरेउँ न सोच समूलें। रविहि न दोसु देव दिसि भूलें।
मोर अभागु मातु कुटिलाई। विधि गति विषम काल कठिनाई।
पाउ रोपि सब मिलि मोहि घाला। प्रनतपाल पन आपन पाला।
येह नइ रीति न राउरि होई। लोकहुँ वेद विदित नहिं गोई।
जगु अनभल भल एकु गोसाईं। कहिअ होइ भल कासु भलाई।
देउ देवतरु सरिस सुभाऊ। सनमुख विमुख न काहुहि काऊ॥

जाइ निकट पहिचानि तरु छाँह समनि सब सोच।
मागत अभिमत पाव जगु राउ रंकु भल पोच॥२६६॥

लखि सब विधि गुर स्वामि सनेहू। मिटेउ छोभु नहिं मन संदेहू।
अब करुनाकर कीजिअ सोई। जन हित प्रभु चित छोभु न होई।
जो सेवकु साहिबहि सँकोची। निज हित चहइ तासु मति पोची।
सेवक हित साहिब सेवकाई। करइ सकल सुख लोभ बिहाई।
स्वारथु नाथ फिरें सबही का। किए रजाइ कोटि विधि नीका।
येह स्वारथ परमारथ सारू। सकल सुकृत फल सुगति सिंगारू।
देव एक विनती सुनि मोरी। उचित होइ तस करब बहोरी।
तिलक समाजु साजि सब आना। करिअ सुफल प्रभु जौं मनु माना॥

मातुल पठइअ मोहि बन कीजिअ सबहि सनाथ ।
नतरु फेरिअहिं बंधु दोउ नाथ चलउँ मैं साथ ॥२६७॥

नतरु जाहिं बन तीनिउ भाई । बहुरिअ सीय सहित रघुराई ।
जेहि बिधि प्रभु प्रसन्न मन होई । करुना सागर कीजिअ सोई ।
देवँ दीन्ह सबु मोहि अभारू । मोरें नीति न धरम बिचारू ।
कहउँ बचन सब स्वारथ हेतू । रहत न आरत कें चित चेतू ।
उतरु देइ सुनि स्वामि रजाई । सो सेवकु लखि लाज लजाई ।
अस मैं अवगुन उदधि अगाधू । स्वामि सनेहँ सराहत साधू ।
अब कृपाल मोहि सो मत भावा । सकुच स्वामि मन जाइ न पावा ।
प्रभु पद सपथ कहउँ सतिभाऊ । जग मंगल हित एक उपाऊ ।

प्रभु प्रसंन मन सकुच तजि जो जेहि आयसु देब ।
सो सिर धरि धरि करिहि सबु मिटिहि अनट अवरेब ॥२६८॥

भरत बचन सुचि सुनि सुर हरषे । साधु सराहि सुमन सुर बरषे ।
असमंजस बस अवध नेवासी । प्रमुदित मन तापस बनबासी ।
चुपहिं रहे रघुनाथ सँकोची । प्रभु गति देखि सभा सब सोची ।
जनक दूत तेहि अवसर आए । मुनि बसिष्ठ सुनि बेगि बोलाए ।
करि प्रनाम तिन्ह रामु निहारे । बेषु देखि भए निपट दुखारे ।
दूतन्ह मुनिबर बूझी बाता । कहहु बिदेह भूप कुसलाता ।
सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा । बोले चरबर जोरें हाथा ।
बूझब राउर सादर साईं । कुसल हेतु सो भयउ गोसाईं ॥

नाहि त कोसलनाथ कें साथ कुसल गइ नाथ ।
मिथिला अवध बिसेष तें जगु सब भयउ अनाथ ॥२६९॥

कोसलपति गति सुनि जनकौरा । भे सब लोक सोक बस बौरा ।
जेहिं देखे तेहि समय बिदेहू । नामु सत्य अस लाग न केहू ।
रानि कुचालि सुनत नरपालहि । सूझ न कछु जस मनि बिनु ब्यालहि ।

भरत राजु रघुबर बनबासू । भा मिथिलेसहि हृदयँ हराँसू ।
नृप बूझे बुध सचिव समाजू । कहहु बिचारि उचित का आजू ।
समुझि अवध असमंजस दोऊ । चलिअ कि रहिअ न कह कछु कोऊ ।
नृपहिं धीर धरि हृदय बिचारी । पठए अवध चतुर चर चारी ।
बूझि भरत सतिभाव कुभाऊ । आएहु बेगि न होइ लखाऊ ॥

गये अवध चर भरत गति बूझि देखि करतूति ।
चले चित्रकूटहि भरतु चार चले तेरहूति ॥२७०॥

दूतन्ह आइ भरत कइ करनी । जनक समाज जथामति बरनी ।
सुनि गुर परिजन सचिव महीपति । भे सब सोच सनेह बिकल अति ।
धरि धीरजु करि भरत बड़ाई । लिए सुभट साहनी* बोलाई ।
घर पुर देस राखि रखवारे । हय गय रथ बहु जान सँवारे ।
दुघरी साधि चले ततकाला । किये बिश्रामु न मग महिपाला ।
भोरहिं आजु नहाइ प्रयागा । चले जमुन उतरन सबु लागा ।
खबरि लेन हम पठए नाथा । तिन्ह कहि अस महि नायेउ माथा ।
साथ किरात छ सातक दीन्हे । मुनिबर तुरत बिदा चर कीन्हे ॥

सुनत जनक आगवनु सबु हरषेउ अवध समाजु ।
रघुनंदनहि सकोचु बड़ सोच बिबस सुरराजु ॥२७१॥

गरइ गलानि कुटिल कैकेई । काहि कहइ केहि दूषनु देई ।
अस मन आनि मुदित नर नारी । भयेउ बहोरि रहब दिन चारी ।
ऐहि प्रकार गत बासर सोऊ । प्रात नहान लाग सबु कोऊ ।
करि मज्जनु पूजहिं नर नारी । गनप गौरि तिपुरारि तमारी ।
रमारमन पद बंदि बहोरी । बिनवहिं अंजलि अंचल जोरी ।
राजा रामु जानकी रानी । आनँद अवधि अवध रजधानी ।
सुबस बसउ फिरि सहित समाजा । भरतहि रामु करहुँ जुबराजा ।

---

*१-२, ५, ६; साहिनी ३. [illegible]

हि सुख सुधा सींचि सब काहू । देव देहु जग जीवन लाहू ॥
गुर समाज भाइन्ह सहित रामराजु पुर होउ ।
अछत राम राजा अवध मरिअ माग सबु कोउ ॥२७२॥
सनेहमय पुरजन बानी । निंदहि जोग बिरति मुनि ग्यानी ।
विधि नित्य करम करि पुरजन । रामहि करहिं प्रनाम पुलकि तन ।
नीच मध्यम नर नारी । लहहिं दरसु निज निज अनुहारी ।
धान सबही सनमानहि । सकल सराहत कृपानिधानहि ।
काइहि ते रघुबर बानी । पालत नीति प्रीति पहिचानी ।
सकोच सिंधु रघुराऊ । सुमुख सुलोचन सरल सुभाऊ ।
राम गुन गन अनुरागे । सब निज भाग सराहन लागे ।
सम पुन्यपुंज जग थोरे । जिन्हहिं रामु जानत करि मोरें ॥
प्रेम मगन तेहि समय सब सुनि आवत मिथिलेसु ।
सहित सभा संभ्रम उठेउ रबिकुल कमल दिनेसु ॥२७३॥
सचिव गुर पुरजन साथा । आगें गवनु कीन्ह रघुनाथा ।
बरु दीख जनकपति जबहीं । करि प्रनाम रथु त्यागेउ तबहीं ।
दरसु लालसा उछाहू । पथ श्रम लेसु कलेसु न काहू ।
तहँ जहँ रघुबर बैदेही । बिनु मन तन दुख सुख सुधि केही ।
त जनकु चले एहि भाँती । सहित समाज प्रेम मति माती ।
निकट देखि अनुरागे । सादर मिलन परसपर लागे ।
जनक मुनि जन पद बंदन । रिषिन्ह प्रनामु कीन्ह रघुनंदन ।
न्ह सहित रामु मिलि राजहि । चले लवाइ समेत समाजहि ॥
आश्रम सागर सांत रस पूरन पावन पाथु ।
सेन मनहुँ करुना सरित लिएँ जाहिं रघुनाथु ॥२७४॥
ते ग्यान बिराग करारे । बचन ससोक मिलत नद नारे ।

१-२, जात १, ५, ६

सोच उसास समीर तरंगा। धीरज तट तरुबर कर भंगा।
विषम विषाद तोरावति धारा। भय भ्रम भँवर अवर्त अपारा।
केवट बुध विद्या बड़ि नावा। सकहिं न खेइ अैक नहिं आवा।
बनचर कोल किरात बिचारे। थके बिलोकि पथिक हियँ हारे।
आश्रम उदधि मिली जब जाई। मनहुँ उठेउ अंबुधि अकुलाई।
सोक बिकल दोउ राज समाजा। रहा न ग्यानु न धीरजु लाजा।
भूप रूप गुन सील सराही। रोवहिं सोक सिंधु अवगाही॥

अवगाहि सोक समुद्र सोचहिं नारि नर ब्याकुल महा।
दै दोष सकल सरोष बोलहिं बाम बिधि कीन्हो कहा।
सुर सिद्ध तापस जोगिजन मुनि देखि दसा बिदेह की।
तुलसी न समरथु कोउ जो तरि सकै सरित सनेह की॥

किए अमित उपदेस जहँ तहँ लोगन्ह मुनिबरन्ह।
धीरजु धरिअ नरेस कहेउ बसिष्ठ बिदेह सन॥२७५॥

जासु ग्यान रबि भव निसि नासा। बचन किरन मुनि कमल बिकासा।
तेहि कि मोह ममता निअराई। यह सिय राम सनेह बड़ाई।
बिषई साधक सिद्ध सयाने। त्रिबिध जीव जग बेद बखाने।
राम सनेह सरस मन जासू। साधु सभाँ बड़ आदर तासू।
सोह न राम पेम बिनु ग्यानू। करनधार बिनु जिमि जलजानू।
मुनि बहु बिधि बिदेह समुझाए। रामघाट सब लोग नहाए।
सकल सोक संकुल नर नारी। सो बासरु बीतेउ बिनु बारी।
पसु खग मृगन्ह न कीन्ह अहारू। प्रिय परिजन कर कौनु बिचारू॥

दोउ समाज निमिराजु रघुराजु नहाने प्रात।
बैठे सब बट बिटप तर मन मलीन कृस गात॥२७६॥

जे महिसुर दसरथपुर बासी। जे मिथिलापति नगर निवासी।

१-२, ६; पाठा ३, ५.

हंसबंस गुर जनक पुरोधा। जिन्ह जग मगु परमारथु सोधा॥
लगे कहन उपदेस अनेका। सहित धरम नय बिरति बिबेका॥
कौसिक कहि कहि कथा पुरानी। समुझाई सब सभा सुबानी॥
तब रघुनाथ कौसिकहि कहेऊ। नाथ कालि जल बिनु सब रहेऊ॥
मुनि कह उचित कहत रघुराई। गयेउ बीति दिन पहर अढ़ाई॥
रिषि रुख लखि कह तेरहुति राजू। इहाँ उचित नहि असन अनाजू॥
कहा भूप भल सबहि सोहाना। पाइ रजायसु चले नहाना॥

तेहि अवसर फल फूल दल मूल अनेक प्रकार।
लइ आये बनचर बिपुल भरि भरि काँवरि भार॥२७७॥

कामद भे गिरि राम प्रसादा। अवलोकत अपहरत बिषादा॥
सर सरिता बन भूमि बिभागा। जनु उमगत आनद अनुरागा॥
बेलि बिटप सब सफल सफूला। बोलत खग मृग अलि अनुकूला॥
तेहि अवसर बन अधिक उछाहू। त्रिबिध समीर सुखद सब काहू॥
जाइ न बरनि मनोहरताई। जनु महि करति जनक पहुनाई॥
तब सब लोग नहाइ नहाई। राम जनक मुनि आयसु पाई॥
देखि देखि तरुबर अनुरागे। जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे॥
दल फल मूल कंद बिधि नाना। पावन सुंदर सुधा समाना॥

सादर सब कहँ रामगुर पठए भरि भरि भार।
पूजि पितर सुर अतिथि गुर लगे करन फरहार॥२७८॥

ओहि बिधि बासर बीते चारी। रामु निरखि नर नारि सुखारी॥
दुहुँ समाज असि रुचि मन माहीं। बिनु सिय राम फिरब भल नाहीं॥
सीता राम संग बनवासू। कोटि अमरपुर सरिस सुपासू॥
परिहरि लखन रामु बैदेही। जेहि घरु भाव बाम बिधि तेही॥
दाहिन दइउ होइ जब सबही। राम समीप बसिअ बन तबहीं॥

१-२ में यह अंश नहीं है। १-२, ६ फूल

मंदाकिनि मज्जनु तिहुँ काला। राम दरसु मुद मंगल माला॥
अटनु रामगिरि बन तापस थल। असनु अमिय सम कंद मूल फल॥
सुख समेत संबत दुइ साता। पल सम होहिं न जनिअहिं जाता॥
अेहि सुख जोग न लोग सब कहहिं कहाँ अस भागु।
सहज सुभाय समाज दुहुँ राम चरन अनुरागु॥२७९॥
अेहि बिधि सकल मनोरथ करहीं। बचन सप्रेम सुनत मन हरहीं॥
सीय मातु तेहि समय पठाईं। दासीं देखि सुअवसरु आईं॥
सावकास सुनि सब सिय सासू। आयेउ जनकराज रनिवासू॥
कौसल्याँ सादर सनमानी। आसन दिये समय सम आनी॥
सीलु सनेहु सकल दुहुँ ओरा। द्रवहिं देखि सुनि कुलिस कठोरा॥
पुलक सिथिल तनु बारि बिलोचन। महि नख लिखन लगीं सब सोचन॥
सब सिय राम प्रीति कि सि मूरति। जनु करुना बहु बेष बिसूरति॥
सीय मातु कह बिधि बुधि बाँकी। जो पय फेनु फोर पबि टाँकी॥
सुनिअ सुधा देखिअहिं गरल सब करतूति कराल।
जहँ तहँ काक उलूक बक मानस सकृत मराल॥२८०॥
सुनि ससोच कह देबि सुमित्रा। बिधि गति बड़ि बिपरीत बिचित्रा॥
जो सृजि पालइ हरइ बहोरी। बाल केलि सम बिधि मति भोरी॥
कौसल्या कह दोसु न काहू। करम बिबस दुख सुख छति लाहू॥
कठिन करम गति जान बिधाता। जो सुभ असुभ सकल फल दाता॥
ईस रजाइ सीस सबही कें। उतपति थिति लय बिषहु अमी कें॥
देबि मोहबस सोचिअ बादी। बिधि प्रपंचु अस अचल अनादी॥
भूपति जिअब मरब उर आनी। सोचिअ सखि लखि निज हित हानी॥
सीयमातु कह सत्य सुबानी। सुकृती अवधि अवधपति रानी॥
लखनु रामु सिय जाहुँ बन भल परिनाम न पोचु।
गहबरि हियँ कह कौसिला मोहि भरत कर सोचु॥२८१॥

ईस प्रसाद असीस तुम्हारी। सुत सुतबधू देवसरि[1] बारी।
रामसपथ मैं कीन्हि न काऊ। सो करि कहौं सखी सतिभाऊ।
भरत सील गुन बिनय बड़ाई। भायप भगति भरोस भलाई।
कहत सारदहु कर मति हीचे। सागर सीप कि जाहिं उलीचे।
जानउँ सदा भरत कुल दीपा। बार बार मोहि कहेउ महीपा।
कसें कनकु मनि पारिखि पाएँ। पुरुष परिखिअहिं समय सुभाएँ।
अनुचित आजु कहब अस मोरा। सोक सनेह सयानप थोरा।
सुनि सुरसरि सम पावनि बानी। भईं सनेह बिकल सब रानी॥

कौसल्या कह धीर धरि सुनहु देबि मिथिलेसि।
को बिबेक निधि बल्लभहि तुम्हहि सकइ उपदेसि ॥२८२॥

रानि राय सन अवसरु पाई। अपनी भाँति कहब समुझाई।
रखिअहिं लखनु भरतु गवनहिं बन। जौं येह मत मानइ महीप मन।
तौ भल जतनु करब सुबिचारी। मोरें सोचु भरत कर भारी।
गूढ़ सनेह भरत मन माहीं। रहें नीक मोहि लागत नाहीं।
लखि सुभाउ सुनि सरल सुबानी। सब भइँ मगन करुन रस रानी।
नभ प्रसून झरि धन्य धन्य धुनि। सिथिल सनेह सिद्ध जोगी मुनि।
सबु रनिवासु बिथकि लखि रहेऊ। तब धरि धीर सुमित्राँ कहेऊ।
देबि दंड जुग जामिनि बीती। राममातु सुनि उठी सप्रीती॥

बेगि पाउ धारिअ थलहि कह सनेह सतिभाय।
हमरें तौ अब भूप[2] गति कै मिथिलेसु सहाय ॥२८३॥

लखि सनेह सुनि बचन बिनीता। जनकप्रिया गहे पाय पुनीता।
देबि उचित असि बिनय तुम्हारी। दसरथ घरिनि राम महतारी।
प्रभु अपने नीचहु आदरहीं। अगिनि धूम गिरि सिर तिनु धरहीं।
सेवकु राउ करम मन बानी। सदा सहाय महेसु भवानी।

१–२, ३, बिबुध सरि ५, ६. २–३, ५, ईसगति २, ६

रौरे अंग जोगु जग को है। दीप सहाय कि दिनकर सोहै॥
रामु जाइ बनु करि सुर काजू। अचल अवधपुर करिहहिं राजू॥
अमर नाग नर राम बाहु बल। सुख बसिहहिं अपने अपने थल॥
येह सब जागबलिक कहि राखा। देबि न होइ मुधा मुनि भाखा॥

अस कहि पग परि पेम अति सिय हित बिनय सुनाइ।
सिय समेत सियमातु तब चली सुआयसु पाइ॥२८४॥

प्रिय परिजनहि मिली बैदेही। जो जेहि जोगु भाँति तेहि तेही॥
तापस बेष जानकी देखी। भा सबु बिकल बिषाद बिसेखी॥
जनक रामगुर आयसु पाई। चले थलहि सिय देखी आई॥
लीन्हि लाइ उर जनक जानकी। पाहुनि पावन पेम प्रान की॥
उर उमगेउ अंबुधि अनुरागू। भयेउ भूप मनु मनहु पयागू॥
सिय सनेह बटु बाढ़त जोहा। तापर राम पेम सिसु सोहा॥
चिरजीवी मुनि ग्यानु बिकल जनु। बूड़त लहेउ बाल अवलंबनु॥
मोह मगन मति नहि बिदेह की। महिमा सिय रघुबर सनेह की॥

सिय पितु मातु सनेह बस बिकल न सकी सँभारि।
धरनिसुता धीरजु धरेउ समउ सुधरमु बिचारि॥२८५॥

तापस बेष जनक सिय देखी। भयेउ पेमु परितोषु बिसेखी॥
पुत्रि पवित्र किए कुल दोऊ। सुजस धवल जगु कह सबु कोऊ॥
जिति सुरसरि कीरतिसरि तोरी। गवनु कीन्ह बिधि अंड करोरी॥
गंग अवनि थल तीनि बड़ेरे। येहि किये साधु समाज घनेरे॥
पितु कह सत्य सनेह सुबानी। सीय सकुचि महुँ मनहुँ समानी॥
पुनि पितु मातु लीन्हि उर लाई। सिख आसिष हित दीन्हि सुहाई॥
कहति न सीय सकुचि मन माहीं। इहाँ बसब रजनी भल नाहीं॥
लखि रुख रानि जनायेउ राऊ। हृदयँ सराहत सीलु सुभाऊ॥

१–२, ३, ६; जिमि ५

बारबार मिलि भेंटि सिय बिदा कीन्हि सनमानि।
कही समय सिर भरत गति रानि सुबानि सयानि ॥२८६॥

सुनि भूपाल भरत ब्यवहारू। सोन सुगंध सुधा ससि सारू॥
मूँदे सजल नयन पुलके तन। सुजसु सराहन लगे मुदित मन॥
सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि। भरत कथा भव बंध बिमोचनि॥
धरम राजनय ब्रह्मबिचारू। इहाँ जथामति मोर प्रचारू॥
सो मति मोरि भरत महिमाहीं। कहइ काह छलि छुअति न छाहीं॥
बिधि गनपति अहिपति सिव सारद। कबि कोबिद बुध बुद्धि बिसारद॥
भरत चरित कीरति करतूती। धरम सील गुन बिमल बिभूती॥
समुझत सुनत सुखद सब काहू। सुचि सुरसरि रुचि निदर सुधाहू॥

निरवधि गुन निरुपम पुरुषु भरतु भरतसम जानि।
कहिअ सुमेरु कि सेर सम कबि कुल मति सकुचानि ॥२८७॥

अगम सबहि बरनत बरबरनी। जिमि जलहीन मीन गमु धरनी॥
भरत अमित महिमा सुनु रानी। जानहिं रामु न सकहिं बखानी॥
बरनि सप्रेम भरत अनुभाऊ। तिय जियकी रुचि लखि कह राऊ॥
बहुरहिं लखनु भरतु बन जाहीं। सब कर भल सबकें मन माहीं॥
देबि परंतु भरत रघुबर की। प्रीति प्रतीति जाइ नहि तरकी॥
भरतु अवधि सनेह ममता की। जद्यपि रामु सीँव समता की॥
परमारथ स्वारथ सुख सारे। भरत न सपनेहु मनहु निहारे॥
साधन सिद्धि राम पग नेहू। मोहि लखि परत भरत मत एहू॥

भोरेहुँ भरत न पेलिहहिं मनसहुँ राम रजाइ।
करिअ न सोचु सनेह बस कहेउ भूप बिलखाइ ॥२८८॥

राम भरत गुन गनत सप्रीती। निसि दंपतिहि पलक सम बीती॥
राज समाज प्रात जुग जागे। न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे॥

१-५, ६; बर नहि २, ३. २-५, ६; सीव २, ३.

गे नहाइ गुरु पहिं रघुराई। बंदि चरन बोले रुख पाई।
नाथ भरतु पुरजन महतारी। सोक बिकल बनबास दुखारी।
सहित समाज राउ मिथिलेसू। बहुत दिवस भये सहत कलेसू।
उचित होइ सोइ कीजिअ नाथा। हित सब ही कर रौरें हाथा।
अस कहि अति सकुचे रघुराऊ। मुनि पुलके लखि सीलु सुभाऊ।
तुम्ह बिनु राम सकल सुख साजा। नरक सरिस दुहु राज समाजा।

प्रान प्रान के जीव के जिव सुख के सुख राम।
तुम्ह तजि तात सोहात गृह जिन्हहि तिन्हहि बिधि बाम॥२८९॥

सो सुखु करमु धरमु जरि जाऊ। जहँ न राम पद पंकज भाऊ।
जोगु कुजोगु ग्यानु अग्यानू। जहँ नहिं राम पेमु परधानू।
तुम्ह बिनु दुखी सुखी तुम्हते ही। तुम्ह जानहु जिअ जो जेहि केही।
राउर आयसु सिर सबही कें। बिदित कृपालहि गति सब नीकें।
आपु आश्रमहिं धारिअ पाऊ। भयेउ सनेह सिथिल मुनिराऊ।
करि प्रनामु तब रामु सिधाए। रिषि धरि धीर जनक पहिं आए।
राम बचन गुरु नृपहि सुनाए। सील सनेह सुभायँ सुहाए।
महाराज अब कीजिअ सोई। सब कर धरम सहित हित होई॥

ग्यान निधान सुजान सुचि धरमधीर नरपाल।
तुम्ह बिनु असमंजस समन को समरथ ऐहि काल॥२९०॥

सुनि मुनिबचन जनक अनुरागे। लखि गति ग्यानु बिरागु बिरागे।
सिथिल सनेह गुनत मन माहीं। आए इहाँ कीन्ह भल नाहीं।
रामहि रायँ कहेउ बन जाना। कीन्ह आपु प्रिय प्रेमु प्रवाना।
हम अब बन तें बनहि पठाई। प्रमुदित फिरब बिबेक बड़ाई।
तापस मुनि महिसुर सुनि देखी। भये प्रेम बस बिकल बिसेखी।
समउ समुझि धरि धीरजु राजा। चले भरत पहिं सहित समाजा।

१–२ में यह अंश नहीं है। ४–६ २–२, ३,५५; बढाई ६... ४–१

भरत आइ आगे भइ लीन्ह । अवसर सरिस सुआसन दीन्ह ।
तात भरत कह तेरहुतिराऊ । तुम्हहि बिदित रघुबीर सुभाऊ ॥
राम सत्यब्रत धरमरत सब कर सीलु सनेहु ।
संकट सहत सकोचबस कहिअ जो आयसु देहु ॥२९१॥

सुनि तन पुलकि नयन भरि बारी । बोले भरतु धीर धरि भारी ।
प्रभु प्रिय पूज्य पिता सम आपू । कुल गुरु सम हित माय न बापू ।
कौसिकादि मुनि सचिव समाजू । ग्यान अंबुनिधि आपुनु आजू ।
सिसु सेवकु आयसु अनुगामी । जानि मोहि सिख देइअ स्वामी ।
एहि समाज थल बूझब राउर । मौन मलिन मैं बोलब बाउर ।
छोटे बदन कहौं बड़ि बाता । छमब तात लखि बाम बिधाता ।
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । सेवाधरमु कठिन जगु जाना ।
स्वामि धरम स्वारथहि बिरोधू । बैरु अंध प्रेमहि न प्रबोधू ॥
राखि राम रुख धरमु ब्रतु पराधीन मोहि जानि ।
सब के संमत सर्ब हित करिअ पेमु पहिचानि ॥२९२॥

भरत बचन सुनि देखि सुभाऊ । सहित समाज सराहत राऊ ।
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे । अरथु अमित अति आखर थोरे ।
ज्यों मुखु मुकुर मुकुरु निजपानी । गहि न जाइ अस अदभुत बानी ।
भूपु भरतु मुनिसाधु समाजू । गे जहँ बिबुध कुमुद द्विजराजू ।
सुनि सुधि सोच बिकल सब लोगा । मनहुँ मीन गन नव जल जोगा ।
देव प्रथम कुल गुर गति देखी । निरखि बिदेह सनेह बिसेखी ।
राम भगतिमय भरतु निहारे । सुर स्वारथी हहरि हियँ हारे ।
सब कोउ राम पेममय पेखा । भए अलेख सोचबस लेखा ॥
रामु सनेह सकोच बस कह ससोच सुरराजु ।
रचहु प्रपंचहि पंच मिलि नाहि त भयेउ अकाज ॥२९३॥

१–३, ५, ६; सकल २. २–३, ५, ६; सहित २.

सुरन्ह सुमिरि सारदा सराही। देवि देव सरनागति पाही।
फेरि भरत मति करि निज माया। पालु बिबुध कुल करि छल छाया।
बिबुध बिनय सुनि देवि सयानी। बोली सुर स्वारथ जड़ जानी।
मो सन कहहु भरत मति फेरू। लोचन सहस न सूझ सुमेरू।
बिधि हरि हर माया बड़ि भारी। सोउ न भरत मति सकै निहारी।
सो मति मोहि कहत करु भोरी। चंदिनि कर कि चंडकर चोरी।
भरत हृदयँ सिय राम निवासू। तहँ कि तिमिर जहँ तरनि प्रकासू।
अस कहि सारद गइ बिधि लोका। बिबुध बिकल निसि मानहुँ कोका॥

सुर स्वारथी मलीन मन कीन्ह कुमंत्र कुठाटु।
रचि प्रपंच माया प्रबल भय भ्रम अरति उचाटु ॥२९४॥

करि कुचालि सोचत सुरराजू। भरत हाथ सब काजु अकाजू।
गये जनकु रघुनाथ समीपा। सनमाने सब रबिकुल दीपा।
समय समाज धरम अबिरोधा। बोले तब रघुबंस पुरोधा।
जनक भरत संबादु सुनाई। भरत कहाउति कही सुहाई।
तात राम जस आयसु देहू। सो सबु करइ मोर मत एहू।
सुनि रघुनाथु जोरि जुग पानी। बोले सत्य सरल मृदु बानी।
बिद्यमान आपुनु मिथिलेसू। मोर कहब सब भाँति भदेसू।
राउर राय रजायसु होई। राउरि सपथ सही सिर सोई॥

राम सपथ सुनि मुनि जनकु सकुचे सभा समेत।
सकल बिलोकत भरत मुखु बनइ न ऊतरु देत ॥२९५॥

सभा सकुच बस भरत निहारी। राम बंधु धरि धीरजु भारी।
कुसमउ देखि सनेहु सँभारा। बढ़त बिंधि जिमि घटज निवारा।
सोक कनकलोचन मति छोनी। हरी बिमल गुन गन जग जोनी।

१—३ एवं ५ में यह अर्धाली नहीं है।

भरत बिबेक बराहँ बिसाला। अनायास उधरी तेहि काला।
करि प्रनामु सब कहँ कर जोरे। रामु राउ गुर साधु निहोरे।
छमब आजु अति अनुचित मोरा। कहउँ बदन मृदु बचन कठोरा।
हियँ सुमिरी सारदा सुहाई। मानस तें मुख पंकज आई।
बिमल बिबेक धरम नय साली। भरत भारती मंजु मराली॥

निरखि बिबेक बिलोचनन्हि सिथिल सनेहँ समाजु।
करि प्रनामु बोले भरतु सुमिरि सीय रघुराजु॥२९६॥

प्रभु पितु मातु सुहृद गुर स्वामी। पूज्य परम हित अंतरजामी।
सरल सुसाहिबु सील निधानू। प्रनत पाल सर्बग्य सुजानू।
समरथ सरनागत हितकारी। गुन गाहकु अवगुन अघ हारी।
स्वामि गोसाँइहि सरिस गोसाईं। मोहि समान मैं साइँ दोहाईं।
प्रभु पितु बचन मोह बस पेली। आयउँ इहाँ समाजु सकेली।
जग भल पोच ऊच अरु नीचू। अमिअ अमरपद माहुरु मीचू।
राम रजाइ मेट मन माहीं। देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं।
सो मैं सब बिधि कीन्हि ढिठाई। प्रभु मानी सनेह सेवकाई॥

कृपाँ भलाई आपनी नाथ कीन्ह भल मोर।
दूषन भे भूषन सरिस सुजसु चारु चहुँ ओर॥२९७॥

राउरि रीति सुबानि बड़ाई। जगत बिदित निगमागम गाई।
कूर कुटिल खल कुमति कलंकी। नीच निसील निरीस निसंकी।
तेउ सुनि सरन सामुहें आए। सकृत प्रनामु किहें अपनाए।
देखि दोष कबहुँ न उर आने। सुनि गुन साधु समाज बखाने।
को साहिब सेवकहि नेवाजी। आपु समाज साज सब साजी।
निज करतूति न समुझिअ सपनें। सेवक सकुच सोचु उर अपनें।
सो गोसाइँ नहि दूसर कोपी। भुजा उठाइ कहौं पन रोपी।
पसु नाचत सुक पाठ प्रबीना। गुन गति नट पाठक आधीना॥

यों सुधारि सनमानि जन कियें साधु सिरमोर।
को कृपाल बिनु पालिहै बिरिदावलि बरजोर॥२९८॥

सोक सनेह कि बाल सुभाएँ। आयेउँ लाइ रजायसु बाएँ।
तबहुँ कृपाल हेरि निज ओरा। सबहि भाँति भल मानेउ मोरा।
देखेउँ पाय सुमंगल मूला। जानेउँ स्वामि सहज अनुकूला।
बड़े समाज बिलोकेउँ भागू। बड़ी चूक साहिब अनुरागू।
कृपा अनुग्रह अंगु अघाई। कीन्हि कृपानिधि सब अधिकाई।
राखा मोर दुलार गोसाँईं। अपनें सील सुभायँ भलाईं।
नाथ निपट मैं कीन्हि ढिठाई। स्वामि समाज सकोचु बिहाई।
अबिनय बिनय जथारुचि बानी। छमिहि देउ अति आरत जानी॥

सुहृद सुजान सुसाहिबहि बहुत कहब बड़ि खोरि।
आयसु देइअ देव अब सबइ सुधारी मोरि॥२९९॥

प्रभु पद पदुम पराग दोहाई। सत्य सुकृत सुख सींव सुहाई॥
सो करि कहौं हिये अपने की। रुचि जागत सोवत सपने की।
सहज सनेह स्वामि सेवकाई। स्वारथ छल फल चारि बिहाई।
अग्याँ सम न सुसाहिब सेवा। सो प्रसाद जन पावइ देवा।
अस कहि प्रेम बिबस भए भारी। पुलक सरीर बिलोचन बारी।
प्रभु पद कमल गहे अकुलाई। समउ सनेहु न सो कहि जाई।
कृपासिंधु सनमानि सुबानी। बैठाए समीप गहि पानी।
भरत बिनय सुनि देखि सुभाऊ। सिथिल सनेह सभा रघुराऊ॥

रघुराउ सिथिल सनेह साधु समाजु मुनि मिथिलाधनी।
मन महुँ सराहत भरत भायप भगति की महिमा घनी।
भरतहि प्रसंसत बिबुध बरषत सुमन मानस मलिन से।
तुलसी बिकल सब लोग सुनि सकुचे निसागम नलिन से॥

देखि दुखारी दीन दुहुँ समाज नर नारि सब।
मघवा महा मलीन मुए मारि मंगल चहत ॥३००॥

कपट कुचालि सींव सुरराजू। पर अकाज प्रिय आपन काजू।
काक समान पाकरिपु रीती। छली मलिन कतहूँ न प्रतीती।
प्रथम कुमत करि कपट सँकेला। सो उचाटु सबके सिर मेला।
सुर मायाँ सब लोग बिमोहे। राम प्रेम अतिसय न बिछोहे।
भय उचाट बस मन थिर नाहीं। छन बन रुचि छन सदन सोहाहीं।
दुबिध मनोगति प्रजा दुखारी। सरित सिंधु संगम जनु बारी।
दुचित कतहुँ परितोषु न लहहीं। एक एक सन मरमु न कहहीं।
लखि हियँ हँसि कह कृपानिधानू। सरिस स्वान मघवान जुबानू ॥

भरतु जनकु मुनिगन सचिव साधु सचेत बिहाइ।
लागि देव माया सबहि जथाजोगु जनु पाइ ॥३०१॥

कृपासिंधु लखि लोग दुखारे। निज सनेहँ सुरपति छल भारे।
सभा राउ गुर महिसुर मंत्री। भरत भगति सब कै मति जंत्री।
रामहि चितवत चित्र लिखे से। सकुचत बोलत बचन सिखे से।
भरत प्रीति नति बिनय बड़ाई। सुनत सुखद बरनत कठिनाई।
जासु बिलोकि भगति लवलेसू। प्रेम मगन मुनिगन मिथिलेसू।
महिमा तासु कहइ किमि तुलसी। भगति सुभायँ सुमति हियँ हुलसी।
आपु छोटि महिमा बड़ि जानी। कबिकुल कानि मानि सकुचानी।
कहि न सकति गुन रुचि अधिकाई। मति गति बाल बचन की नाई ॥

भरत बिमल जसु बिमल बिधु सुमति चकोरकुमारि।
उदित बिमल जन हृदय नभ एकटक रही निहारि ॥३०२॥

भरत सुभाउ न सुगम निगमहूँ। लघु मति चापलता कबि छमहूँ।
कहत सुनत सतिभाउ भरत को। सीय राम पद होइ न रत को।
सुमिरत भरतहि प्रेमु राम को। जेहि न सुलभु तेहि सरिस बाम को।

देखि दयाल दसा सबही की। राम सुजान जानि जन जी की।
धरम धुरीन धीर नय नागर। सत्य सनेह सील सुख सागर।
देसु कालु लखि समउ समाजू। नीति प्रीति पालक रघुराजू।
बोले बचन बानि सरबसु से। हित परिनाम सुनत ससिरसु से।
तात भरत तुम्ह धरम धुरीना। लोक बेद बिद प्रेम प्रबीना॥

करम बचन मानस बिमल तुम्ह समान तुम्ह तात।
गुर समाज लघु बंधु गुन कुसमयँ किमि कहि जात॥३०३॥

जानहु तात तरनि कुल रीती। सत्यसंध पितु कीरति प्रीती।
समउ समाजु लाज गुरजन की। उदासीन हित अनहित मन की।
तुम्हहि बिदित सबही कर करमू[1]। आपन मोर परम हित धरमू।
मोहि सब भाँति भरोस तुम्हारा। तदपि कहउँ अवसर अनुसारा।
तात तात बिनु बात हमारी। केवल गुर कुल कृपाँ सँभारी।
नतरु प्रजा पुरजन[2] परिवारू। हमहि सहित सबु होत खुआरू।
जौं बिनु अवसर अथव दिनेसू। जग केहि कहहु न होइ कलेसू।
तस उतपातु तात बिधि कीन्हा। मुनि मिथिलेस राखि सबु लीन्हा॥

राज काज सब लाज पति धरम धरनि धन धाम।
गुर प्रभाउ पालिहि सबहि भल होइहि परिनाम॥३०४॥

सहित समाज तुम्हार हमारा। घर बन गुर प्रसाद रखवारा।
मातु पिता गुर स्वामि निदेसू। सकल धरम धरनी धर सेसू।
सो तुम्ह करहु करावहु मोहू। तात तरनि कुल पालक होहू।
साधक[3] एक सकल सिधि देनी। कीरति सुगति भूतिमय बेनी।
सो बिचारि सहि संकटु भारी। करहु प्रजा परिवारु सुखारी।
बाँटी बिपति सबहि मोहि भाई। तुम्हहि अवधि भरि बड़ि कठिनाई।

---

[1] १–२, ३, ५; मरमू ६.
[2] २–२, ५, ६; परिजन ३.
[3] २–२, ३, ५; साधन ६.

जानि तुम्हहि मृदु कहउँ कठोरा। कुसमयँ तात न अनुचित मोरा।
होंहि कुठायँ सुबंधु सहाये। ओडिअहिं हाथ असनिहु के घाये॥
सेवक कर पद नयन से मुख सो साहिबु होइ।
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि सुकबि सराहहिं सोइ॥३०५॥
सभा सकल सुनि रघुबर बानी। प्रेम पयोधि अमिअ जनु सानी।
सिथिल समाजु सनेह समाधी। देखि दसा चुप सारद साधी।
भरतहि भयेउ परम संतोषू। सनमुख स्वामि बिमुख दुखु दोषू।
मुखु प्रसंन मन मिटा बिषादू। भा जनु गूँगेहि गिरा प्रसादू।
कीन्ह सप्रेम प्रनामु बहोरी। बोले पानि पंकरुह जोरी।
नाथ भयेउ सुखु साथ गये को। लहेउँ लाहु जग जनमु भये को।
अब कृपाल जस आयसु होई। करउँ सीसु धरि सादर सोई।
सो अवलंब देउ मोहि देई। अवधि पारु पावउँ जेहि सेई॥
देव देव अभिषेक हित गुर अनुसासनु पाइ।
आनेउँ सब तीरथ सलिलु तेहि कहँ काह रजाइ॥३०६॥
एकु मनोरथु बड मन माहीं। सभय सकोच जात कहि नाहीं।
कहहु तात प्रभु आयसु पाई। बोले बानि सनेह सुहाई।
चित्रकूट सुनि थल तीरथ बन। खग मृग सर सरि निर्झर गिरिगन।
प्रभु पद अंकित अवनि बिसेखी। आयसु होइ त आवउँ देखी।
अवसि अत्रि आयसु सिर धरहू। तात बिगत भय कानन चरहू।
मुनि प्रसाद बनु मंगल दाता। पावन परम सुहावन भ्राता।
रिषिनायकु जहँ आयसु देहीं। राखेहु तीरथजलु थल तेहीं।
सुनि प्रभु बचन भरत सुखु पावा। मुनि पद कमल मुदित सिरु नावा॥
भरत राम संबादु सुनि सकल सुमंगल मूल।
सुर स्वारथी सराहि कुल बरषत सुरतरु फूल॥३०७॥

१—२, ३, ६, छरि छर ५

धन्य भरत जय राम गोसाँई। कहत देव हरषत बरिआई॥
मुनि मिथिलेस सभाँ सब काहू। भरत बचन सुनि भयेउ उछाहू॥
भरत राम गुन ग्राम सनेहू। पुलकि प्रसंसत राउ बिदेहू॥
सेवक स्वामि सुभाउ सुहावन। नेमु पेमु अतिपावन पावन॥
मति अनुसार सराहन लागे। सचिव सभासद सब अनुरागे॥
सुनि सुनि राम भरत संबादू। दुहु समाज हिय हरषु बिषादू॥
राममातु दुखु सुखु सम जानी। कहि गुन दोष प्रबोधीं रानी॥
एक कहहिं रघुबीर बड़ाई। एक सराहत भरत भलाई॥

अत्रि कहेउ तब भरत सन सैल समीप सुकूप।
राखिअ तीरथ तोय तहँ पावन अमिअ अनूप॥३०८॥

भरत अत्रि अनुसासन पाई। जल भाजन सब दिये चलाई॥
सानुज आपु अत्रि मुनि साधू। सहित गये जहँ कूप अगाधू॥
पावन पाथ पुन्य थल राखा। प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाखा॥
तात अनादि सिद्ध थल एहू। लोपेउ काल बिदित नहि केहू॥
तब सेवकन्ह सरस थलु देखा। कीन्ह सुजल हित कूप बिसेखा॥
बिधि बस भयेउ बिस्व उपकारू। सुगम अगम अति धरम बिचारू॥
भरतकूप अब कहिहहिं लोगा। अतिपावन तीरथ जल जोगा॥
प्रेम सनेम निमज्जत प्रानी। होइहहिं बिमल करम मन बानी॥

कहत कूप महिमा सकल गये जहाँ रघुराउ।
अत्रि सुनायेउ रघुबरहि तीरथ पुन्य प्रभाउ॥३०९॥

कहत धरम इतिहास सप्रीती। भयेउ भोरु निसि सो सुख बीती॥
नित्य निबाहि भरतु दोउ भाई। राम अत्रि गुर आयसु पाई॥
सहित समाज साज सब सादें। चले रामबन अटन पयादें॥
कोमल चरन चलत बिनु पनहीं। भइ मृदु भूमि सकुचि मनमनहीं॥

१-३, ५, ६; राम २.

कुस कंटक काँकरी कुराईं। कटुक कठोर कुबस्तु दुराईं।
महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे। बहत समीर त्रिबिध सुख लीन्हे।
सुमन बरषि सुर घन करि छाँहीं। बिटप फूलि फलि तृन मृदुताहीं।
मृग बिलोकि खग बोलि सुबानी। सेवहिं सकल राम प्रिय जानी॥

सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु राम कहत जमुहात।
राम प्रान प्रिय भरत कहुँ यह न होइ बड़ि बात॥३१०॥

एहि बिधि भरतु फिरत बन माहीं। नेम प्रेमु लखि मुनि सकुचाहीं।
पुन्य जलाश्रय भूमि बिभागा। खग मृग तरु तृन गिरि बन बागा।
चारु बिचित्र पबित्र बिसेखी। बूझत भरतु दिब्य सब देखी।
सुनि मन मुदित कहत रिषिराऊ। हेतु नाम गुन पुन्य प्रभाऊ।
कतहुँ निमज्जन कतहुँ प्रनामा। कतहुँ बिलोकत मन अभिरामा।
कतहुँ बैठि मुनि आयेसु पाई। सुमिरत सीय सहित दोउ भाई।
देखि सुभाउ सनेहु सुसेवा। देहिं असीस मुदित बनदेवा।
फिरहिं गयें दिनु पहर अढ़ाई। प्रभु पद कमल बिलोकहिं आई॥

देखे थल तीरथ सकल भरत पाँच दिन माँझ।
कहत सुनत हरि हर सुजसु गयेउ दिवसु भइ साँझ॥३११॥

भोर न्हाइ सबु जुरा समाजू। भरत भूमिसुर तेरहुति राजू।
भल दिन आजु जानि मन माहीं। रामु कृपाल कहत सकुचाहीं।
गुर नृप भरत सभा अवलोकी। सकुचि राम फिरि अवनि बिलोकी।
सील सराहि सभा सब सोची। कहुँ न राम सम स्वामि सँकोची।
भरत सुजान राम रुख देखी। उठि सप्रेम धरि धीर बिसेखी।
करि दंडवत कहत कर जोरी। राखीं नाथ सकल रुचि मोरी।
मोहि लगि सहेउ सबहिं संतापू। बहुत भाँति दुखु पावा आपू।
अब गोसाइँ मोहि देउ रजाई। सेवउँ अवध अवधि भरि जाई॥

१ १–६; कटु २, ३, ५। २ २–३, ६, सबहि सहेउ ३, ५।

जेहि उपायँ पुनि पाय जनु देखइ दीनदयाल।
सो सिख देइअ अवधि लगि कोसलपाल कृपाल ॥३१२॥

पुरजन परिजन प्रजा गोसाईं। सब सुचि सरस सनेहँ सगाईं॥
राउर बदि भल भव दुख दाहू। प्रभु बिनु बादि परमपद लाहू॥
स्वामि सुजानु जानि सब ही की। रुचि लालसा रहनि जन जी की॥
प्रनतपालु पालिहि सब काहू। देउ दुहूँ दिसि ओर निबाहू॥
अस मोहि सब बिधि भूरि भरोसो। किएँ बिचारु न सोचु खरो सो॥
आरति मोर नाथ कर छोहू। दुहुँ मिलि कीन्ह ढीठु हठि मोहू॥
येह बड़ दोषु दूरि करि स्वामी। तजि सकोच सिखइअ अनुगामी॥
भरत बिनय सुनि सबहि प्रसंसी। खीर नीर बिबरन गति हंसी॥

दीनबंधु सुनि बंधु के बचन दीन छलहीन।
देस काल अवसर सरिस बोले रामु प्रबीन ॥३१३॥

तात तुम्हारि मोरि परिजन की। चिंता गुरहि नृपहि घर बन की॥
माथे पर गुर मुनि मिथिलेसू। हमहिं तुम्हहिं सपनेहुँ न कलेसू॥
मोर तुम्हार परम पुरुषारथु। स्वारथु सुजसु धरमु परमारथु॥
पितु आयसु पालिअ दुहुँ भाईं। लोक बेद भल भूप भलाईं॥
गुर पितु मातु स्वामि सिख पालें। चलेहुँ कुमग पग परहिं न खालें॥
अस बिचारि सब सोच बिहाई। पालहु अवध अवधि भरि जाई॥
देसु कोसु पुरजन परिवारू। गुर पद रजहि लाग छरुभारू॥
तुम्ह मुनि मातु सचिव सिख मानी। पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी॥

मुखिया मुखु सो चाहिअइ खान पान कहुँ एक।
पालइ पोषइ सकल अँग तुलसी सहित बिबेक ॥३१४॥

राजधरम सरबसु एतनोई। जिमि मन माहँ मनोरथ गोई॥
बंधु प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती। बिनु अधार मन तोषु न साँती॥
भरत सील गुर सचिव समाजू। सकुच सनेह बिबस रघुराजू॥

प्रभु करि कृपा पाँवरी दीन्ही । सादर भरत सीस-धरि लीन्ही ।
चरनपीठ करुनानिधान के । जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के ।
संपुट भरत-सनेह-रतन के । आखर जुग जनु जीव जतन के ।
कुल कपाट कर कुसल करम के । विमल नयन सेवा सुधरम के ।
भरत मुदित अवलंब लहे तें । अस सुख जस सिय रामु रहे तें ॥

मागेउ बिदा प्रनामु करि राम लिए उर लाइ ।
लोग उचाटे अमरपति कुटिल कुअवसरु पाइ ॥३१५॥

सो कुचालि सब कहँ भइ नीकी । अवधि आस सम जीवनि जी की ।
नतरु लखन सिय राम वियोगा । हहरि मरत सबु लोग कुरोगा ।
राम कृपा अवरेव सुधारी । विवुध धारि भइ गुनद गोहारी ।
भेंटत भुज भरि भाइ भरत सो । राम प्रेम रसु कहि न परत सो ।
तन मन वचन उमग अनुरागा । धीर धुरंधर-धीरजु त्यागा ।
वारिज लोचन मोचत वारी । देखि दसा सुर-सभा दुखारी ।
मुनिगन गुर धुरधीर जनक से । ग्यान अनल मन कसे कनक से ।
जे बिरंचि निरलेप उपाए । पदुमपत्र जिमि जग जल जाए ॥

तेउ विलोकि रघुवर भरत प्रीति अनूप अपार ।
भए मगन मन तन वचन सहित विराग विचार ॥३१६॥

जहाँ जनक गुर गति मति भोरी । प्राकृत प्रीति कहत बड़ि खोरी ।
वरनत रघुवर भरत वियोगू । सुनि कठोर कवि जानिहि लोगू ।
सो सकोचु रसु अकथ सुवानी । समउ सनेहु सुमिरि सकुचानी ।
भेंटि भरतु रघुवर समुझाए । पुनि रिपुदवनु हरषि हिय लाए ।
सेवक-सचिव भरत रुख पाई । निज निज काज लगे सब जाई ।
सुनि दारुन दुखु दुहूँ समाजा । लगे चलन के साजन साजा ।
प्रभु पद पदुम बंदि दोउ भाई । चले सीस धरि राम रजाई ।
मुनि तापस बन देव निहोरी । सब सनमानि बहोरि बहोरी ॥

लखनहि भेंटि प्रनामु करि सिर धरि सिय पद धूरि ।
चले सप्रेम असीस सुनि सकल सुमंगल मूरि ॥३१७॥

सानुज राम नृपहि सिर नाई । कीन्हि बहुत बिधि बिनय बड़ाई ।
देव दया बस बड़ दुखु पायउ । सहित समाज काननहिं आयउ ।
पुर पगु धारिअ देइ असीसा । कीन्ह धीर धरि गवनु महीसा ।
मुनि महिदेव साधु सनमाने । बिदा किए हरि हर सम जाने ।
सासु समीप गए दोउ भाई । फिरे बंदि पग आसिष पाई ।
कौसिक बामदेव जाबाली । परिजन पुरजन सचिव सुचाली ।
जथाजोगु करि बिनय प्रनामा । बिदा किये सब सानुज रामा ।
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे । सब सनमानि कृपानिधि फेरे ॥

भरतमातु पद बंदि प्रभु सुचि सनेह मिलि भेंटि ।
बिदा कीन्हि सजि पालकी सकुच सोच सब मेटि ॥३१८॥

परिजन मातु पितहि मिलि सीता । फिरी प्रानप्रिय प्रेम पुनीता ।
करि प्रनामु भेंटी सब सासू । प्रीति कहत कबि हियँ न हुलासू ।
सुनि सिख अभिमत आसिष पाई । रही सीय दुहुँ प्रीति समाई ।
रघुपति पटु पालकीं मगाईं । करि प्रबोधु सब मातु चढ़ाईं ।
बार बार हिलि मिलि दुहुँ भाई । सम सनेह जननीं पहुँचाई ।
साजि बाजि गज बाहन नाना । भूप भरत दल कीन्ह पयाना ।
हृदयँ रामु सिय लखन समेता । चले जाहिं सब लोग अचेता ।
बसह बाजि गज पसु हियँ हारें । चले जाहिं परबस मन मारें ॥

गुर गुरतिय पद बंदि प्रभु सीता लखन समेत ।
फिरे हरष बिसमय सहित आए परनिकेत ॥३१९॥

बिदा कीन्ह सनमानि निषादू । चलेउ हृदयँ बड़ बिरह बिषादू ।
कोल किरात भिल्ल बनचारी । फेरे फिरे जोहारि जोहारी ।
प्रभु सिय लखन बैठि बट छाहीं । प्रिय परिजन बियोग बिलखाहीं ।

भरत सनेहु सुभाउ सुबानी। प्रिया अनुज सन कहत बखानी।
प्रीति प्रतीति बचन मन करनी। श्रीमुख राम प्रेम बस बरनी।
तेहि अवसर खग मृग जल मीना। चित्रकूट चर अचर मलीना।
बिबुध बिलोकि दसा रघुबर की। बरषि सुमन कहि गति घर घर की।
प्रभु प्रनामु करि दीन्ह भरोसो। चले मुदित मन डरु न खरोसो॥

सानुज सीय समेत प्रभु राजत परनकुटीर।
भगति ग्यानु बैराग्य जनु सोहत धरें सरीर॥३२०॥

मुनि महिसुर गुर भरत भुआलू। राम बिरहँ सबु साजु बिहालू।
प्रभु गुन ग्राम गनत मन माहीं। सब चुपचाप चले मग जाहीं।
जमुना उतरि पार सबु भयऊ। सो बासरु बिनु भोजन गयऊ।
उतरि देवसरि दूसर बासू। रामसखाँ सब कीन्ह सुपासू।
सई उतरि गोमतीं नहाए। चौथें दिवस अवधपुर आए।
जनकु रहे पुर बासर चारी। राज काज सब साज सँभारी।
सौंपि सचिव गुर भरतहि राजू। तेरहुति चले साजि सबु साजू।
नगर नारि नर गुर सिख मानी। बसे सुखेन राम रजधानी॥

राम दरस लगि लोग सब करत नेम उपबास।
तजि तजि भूषन भोग सुख जिअत अवधि कीं आस॥३२१॥

सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे। निज निज काज पाइ सिख ओधे।
पुनि सिख दीन्हि बोलि लघु भाई। सौंपी सकल मातु सेवकाई।
भूसुर ... र बिनय निहोरे।
ऊँच नी ... न करब सँकोचू।
परिजन पुरजन प्रजा बोलाए। समाधानु करि सुबस बसाए।
सानुज गे गुर गेहँ बहोरी। करि दंडवत कहत कर जोरी।

आयसु होइ त रहउँ सनेमा। बोले मुनि तन पुलकि सपेमा।
समुझब कहब करब तुम्ह जोई। धरम सारु जग होइहि सोई॥

सुनि सिख पाइ असीस बड़ि गनक बोलि दिनु साधि।
सिंघासन प्रभु पादुका बैठारे निरुपाधि॥३२२॥

राममातु गुर पद सिर नाई। प्रभु पदपीठि रजायसु पाई।
नंदिगाँव करि परनकुटीरा। कीन्ह निवासु धरम धुर धीरा।
जटा जूट सिर मुनिपट धारी। महि खनि कुस साँथरी सँवारी।
असन बसन बासन ब्रत नेमा। करत कठिन रिषिधरम सप्रेमा।
भूषन बसन भोग सुख भूरी। मन तन बचन तजे तिन तूरी।
अवधराजु सुरराजु सिहाई। दसरथ धनु सुनि धनद लजाई।
तेहि पुर बसत भरत बिनु रागा। चंचरीक जिमि चंपक बागा।
रमा बिलासु राम अनुरागी। तजत बमन जिमि जन बड़भागी॥

राम पेम भाजन भरतु बड़े न येहि करतूति।
चातक हंस सराहिअत टेक बिबेक बिभूति॥३२३॥

देह दिनहु दिन दूबरि होई। घटइ तेजु बलु मुख छबि सोई।
नित नव राम पेम पनु पीना। बढ़त धरम दलु मनु न मलीना।
जिमि जलु निघटत सरद प्रकासे। बिलसत बेतस बनज बिकासे।
सम दम संजम नियम उपासा। नखत भरत हिय बिमल अकासा।
ध्रुव बिस्वासु अवधि राका सी। स्वामि सुरति सुरबीथि बिकासी।
राम पेम बिधु अचल अदोखा। सहित समाज सोह नित चोखा।
भरत रहनि समुझनि करतूती। भगति बिरति गुन बिमल बिभूती।
बरनत सकल सुकबि सकुचाहीं। सेस गनेस गिरा गमु नाहीं॥

नित पूजत प्रभु पावरी प्रीति न हृदय समाति।
मागि मागि आयसु करत राज काज बहु भाँति॥३२४॥

१–२, ३; घटन ६; घटत न ५.   २–३, ५ में यह अर्धाली नहीं है।

पुलक गात हियँ सिय रघुबीरू। जीह नामु जपु लोचन नीरू।
लखनु रामु सिय कानन बसहीं। भरतु भवन बसि तपु तनु कसहीं।
दोउ दिसि समुझि कहत सबु लोगू। सब बिधि भरतु सराहन जोगू।
सुनि ब्रत नेम साधु सकुचाहीं। देखि दसा मुनिराज लजाहीं।
परम पुनीत भरत आचरनू। मधुर मंजु मुद मंगल करनू।
हरन कठिन कलि कलुष कलेसू। महा मोह निसि दलन दिनेसू।
पाप पुंज कुंजर मृगराजू। समन सकल संताप समाजू।
जन रंजन भंजन भव भारू। राम सनेह सुधाकर सारू॥

सिय राम पेम पियूष पूरन होत जनमु न भरत को।
मुनि मन अगम जम नियम सम दम बिषम ब्रत आचरत को।
दुख दाह दारिद दंभ दूषन सुजस मिस अपहरत को।
कलिकाल तुलसी से सठन्हि हठि राम सनमुख करत को॥

भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं।
सीय राम पद पेमु अवसि होइ भव रस बिरति॥३२५॥

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
द्वितीयो सोपान समाप्त

रामचरितमानस
तृतीय सोपान

श्रीगणेशाय नमः

मूलं धर्म्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेंदुमानंददं
वैराग्यांबुजभास्करं ह्यघघनध्वांतापहं तापहं ।
मोहांभोधरपूगपाटनविधौ स्वःसंभवं शंकरं
वंदे ब्रह्मकुलं कलंकशमनं श्रीरामभूपप्रियं ॥ १ ॥

सांद्रानंदपयोदसौभगतनुं पीतांबरं सुंदरं
पाणौ बाणशरासनं कटिलसत्तूनीरभारं वरं ।
राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितं
सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे ॥ २ ॥

उमा राम गुन गूढ़ पंडित मुनि पावहिं बिरति ।
पावहिं मोह-बिमूढ़ जे हरि बिमुख न धर्म्मरति ॥

पुर नर भरत प्रीति मैं गाई । मति अनुरूप अनूप सुहाई ।
अब प्रभु चरित सुनहु अतिपावन । करत जे बन सुर नर मुनि भावन ।
एक बार चुनि कुसुम सुहाए । निज कर भूषन राम बनाए ।
सीतहि पहिराए प्रभु सादर । बैठे फटिक सिला पर सुंदर ।
सुरपति सुत धरि बाइस बेखा । सठ चाहत रघुपति बल देखा ।
जिमि पिपीलिका सागर थाहा । महा मंदमति पावन चाहा ।
सीता चरन चोंच हति भागा । मूढ़ मंद मति कारन कागा ।
चला रुधिर रघुनायक जाना । सींक धनुष सायक संधाना ॥

अतिकृपाल रघुनायक सदा दीन पर नेह ।
ता सनु आइ कीन्ह छलु मूरख अवगुन गेह ॥ १ ॥

१–३, ४, ५, पूर्न ६ । ३–३, ४, ५ बायस ६ ।
२–३, ६, जवन ४, ५ । ४–इससे आगे ३ में दोहक संख्या ३ है ।

प्रेरित मंत्र ब्रह्मसर धावा । चला भाजि बाइस[1] भय पावा ।
धरि निज रूप गएउ पितु पाहीं । राम-बिमुख राखा तेहि नाही ।
भा निरास उपजी मन त्रासा । जथा चक्र भय रिषि दुर्बासा ।
ब्रह्मधाम सिवपुर सब लोका । फिरा श्रमित ब्याकुल भय सोका ।
काहू बैठन कहा न ओही । राखि को सकै राम कर द्रोही ।
मातु मृत्यु पितु समन समाना । सुधा होइ बिष सुनु हरिजाना ।
मित्र करै सत रिपु कै करनी । ता कहुँ बिबुधनदी बैतरनी ।
सब जगु ताहि अनलहु ते ताता । जो रघुबीर बिमुख सुनु भ्राता ।[2]
नारद देखा बिकल जयंता । लागि दया कोमल चित संता ।[3]
पठवा तुरत राम पहि ताही । कहेसि पुकारि प्रनत हित पाही ।
आतुर सभय गहेसि पद जाई । त्राहि त्राहि दयाल रघुराई ।
अतुलित बल अतुलित प्रभुताई । मैं मतिमंद जानि नहि पाई ।
निज कृत कर्म जनित फल पाएउँ । अब प्रभु पाहि सरन तकि आएउँ ।
सुनि कृपाल अतिआरत बानी । एक नयन करि तजा भवानी ॥

कीन्ह मोह बस द्रोह जद्यपि तेहि कर बध उचित ।
प्रभु छाड़ेउ करि छोह को कृपाल रघुबीर सम ॥ २ ॥

रघुपति चित्रकूट बसि नाना । चरित किए श्रुति[4] सुधा समाना ।
बहुरि राम अस मन अनुमाना । होइहि भीर सबहि मोहि जाना ।
सकल मुनिन्ह सन बिदा कराई । सीता सहित चले द्वौ[5] भाई ।
अत्रि के आश्रम जब प्रभु गएऊ । सुनत महा मुनि हरषित भएऊ ।
पुलकित गात अत्रि उठि धाए । देखि रामु आतुर चलि आए ।
करत दंडवत मुनि उर लाए । प्रेम बारि द्वौ जन अन्हवाए ।

१–३, ४, ५; बायस ६.
२–इसके आगे ३ में क्षेपक सख्या २ है ।
३–इसके आगे १ में क्षेपक संख्या ३ है ।
४–४, ५, ६; श्रति ३.
५–१; दै ४, ५; दोउ ६.

देखि राम छबि नयन जुड़ाने। सादर निज आश्रम तब आने।
करि पूजा कहि बचन सुहाए। दिये मूल फल प्रभु मन भाए॥
प्रभु आसन आसीन भरि लोचन सोभा निरखि।
मुनिवर परम प्रवीन जोरि पानि अस्तुति करत॥ ३॥

नमामि भक्तवत्सलं। कृपालु शील कोमलं।
भजामि ते पदांबुजं। अकामिनां स्वधामदं॥
निकाम श्याम सुंदरं। भवांबुनाथ मंदरं।
प्रफुल्ल कंज लोचनं। मदादि दोष मोचनं॥
प्रलंब बाहु विक्रमं। प्रभोऽप्रमेय वैभवं।
निषंग चाप सायकं। धरं त्रिलोक नायकं॥
दिनेश वंश मंडनं। महेश चाप खंडनं।
मुनींद्र संत रंजनं। सुरारि वृंद भंजनं॥
मनोज वैरि वंदितं। अजादि देव सेवितं।
विशुद्ध बोध विग्रहं। समस्त दूषणापहं॥
नमामि इंदिरापतिं। सुखाकरं सतां गतिं।
भजे सशक्ति सानुजं। शचीपति प्रियानुजं॥
त्वदंघ्रिमूल ये[१] नरा। भजंति हीनमत्सराः।
पतंति नो भवार्णवे। वितर्क वीचि संकुले॥
विविक्तवासिनस्सदा। भजंति मुक्तये मुदा।
निरस्य इंद्रियादिकं। प्रयांति ते गतिं स्वकं॥
त्वमेकमद्भुतं प्रभुं। निरीहमीश्वरं विभुं।
जगद्गुरुं च शाश्वतं। तुरीयमेव केवलं॥
भजामि भाववल्लभं। कुयोगिनां सुदुर्लभं।
स्वभक्त कल्प पादपं। समं सुसेव्यमन्वहं॥

१–६; जे ३, ४, ५.

अनूप रूप भूपतिं । नतोऽहमुर्विजापतिं ।
प्रसीद मे नमामि ते । पदाब्जभक्ति देहि मे ॥
पठंति ये स्तवं इदं । नरादरेन ते पदं ।
व्रजंति नात्र संशयं । त्वदीयभक्तिसंयुताः ॥

विनती करि मुनि नाइ सिरु कह कर जोरि बहोरि ।
चरन सरोरुह नाथ जनि कबहु तजै मति मोरि ॥ ४ ॥[1]

अनसूया के पद गहि सीता । मिलीं बहोरि सुसील बिनीता ।[2]
रिषिपतिनी मन सुख अधिकाई । आसिष देइ निकट बैठाई ।[3]
दिव्य बसन भूषन पहिराए । जे नित नूतन अमल सुहाए ।
कह रिषिबधू सरस मृदु बानी । नारिधर्म्म कछु ब्याज बखानी ।
मातु पिता भ्राता हितकारी । मितप्रद सब सुनु राजकुमारी ।
अमित दानि भर्ता बैदेही । अधम सो नारि जो सेव न तेही ।
धीरजु धर्म्म मित्र अरु नारी । आपद काल परखिअहि चारी ।
वृद्ध रोगबस जड़ धनहीना । अंध बधिर क्रोधी अतिदीना ।
ऐसेहु पति कर किएँ अपमाना । नारि पाव जमपुर दुख नाना ।
एकै धर्म्म एक ब्रत नेमा । काय बचन मन पति पद प्रेमा ।
जग पतिब्रता चारि बिधि अहहीं । बेद पुरान संत सब कहहीं ।
उत्तम के अस बस मन माहीं । सपनेहु आन पुरुष जगु नाहीं ।
मध्यम पर पति देखै कैसें । भ्राता पिता पुत्र निज जैसें ।
धर्म्म बिचारि समुझि कुल रहई । सो निकिष्ट त्रिय श्रुति अस कहई ।
बिनु अवसर भय तें रह जोई । जानेहु अधम नारि जग सोई ।
पति बंचक पर पति रति करई । रौरव नरक कल्प सत परई ।

१–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ४ है । ४–३, ४, ५; सरल, ६, ...
२–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ५ है । ५–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ७ है ।
३–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ६ है । ६–३, ६; पति ४, ५ ...

छन सुख लागि जन्म सत कोटी। दुख न सम्मुख तेहि सम को खोटी।
बिनु श्रम नारि परम गति लहई। पतिव्रत धर्म छाड़ि छल गहई।
पति प्रतिकूल जन्मि जहँ जाई। विधवा होइ पाइ तरुनाई॥

सहज अपावनि नारि पति सेवत सुभ गति लहइ।
जसु गावत श्रुति चारि अजहुँ तुलसिका हरिहि प्रिय॥
सुनु सीता तव नामु सुमिरि नारि पतिव्रत करहिं।
तोहि प्रान प्रिय राम कहिउँ कथा संसार हित॥ ५॥

सुनि जानकी परम सुख पावा। सादर तासु चरन सिरु नावा।
तब मुनि सन कह कृपानिधाना। आयसु होइ जाउँ बन आना।
सतत मोपर कृपा करेहू। सेवक जानि तजेहु जनि नेहू।
धर्म्म धुरंधर प्रभु कै बानी। सुनि सप्रेम बोले मुनि ज्ञानी।
जासु कृपा अज सिव सनकादी। चहत सकल परमारथबादी।
ते तुम्ह राम अकाम पिआरे। दीनबंधु मृदु बचन उचारे।
अब जानी मैं श्रीचतुराई। भजी तुम्हहि सब देव बिहाई।
जेहि समान अतिसय नहिं कोई। ता कर सील कस न अस होई।
केहि बिधि कहौं जाहु अब स्वामी। कहहु नाथ तुम्ह अंतरजामी।
अस कहि प्रभु बिलोकि मुनि धीरा। लोचन जल बह पुलक सरीरा॥

तन पुलक निर्भर प्रेम पूरन नयन मुख पंकज दिए।
मन ज्ञान गुन गोतीत प्रभु मैं दीख जप तप का किए।
जप जोग धर्म्म समूह तें नर भगति अनुपम पावई।
रघुबीर चरित पुनीत निसि दिनु दास तुलसी गावई॥

कलि मल समन दमन मन रामु सुजस सुख मूल।
सादर सुनहिं जे तिन्ह पर रामु रहहिं अनुकूल॥

१–३, ६, अजहु ४, ५ ३–३, ४, ५, कहौं जाहु बन ६
२–३, ४, ५; आयसु ६

कठिन काल मल कोस धर्म्म न ज्ञान न जोग जप।
परिहरि सकल भरोस रामहि भजहिं ते चतुर नर ॥ ६ ॥[1]

मुनि पद कमल नाइ करि सीसा। चले बनहि सुर नर मुनि ईसा।
आगे रामु अनुज पुनि पाछे। मुनिबर बेष बना[2] अति काछे।
उभय बीच श्री[3] सोहइ कैसी। ब्रह्म जीव बिच माया जैसी।
सरिता बन गिरि अवघट घाटा। पति पहिचानि देहिं बर बाटा।
जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया। करहिं मेघ तहँ तहँ नभ छाया।[4]
मिला असुर बिराध मग जाता।[5] आवतही रघुबीर निपाता।
तुरतहिं रुचिर रूप तेहि पावा।[6] देखि दुखी निज धाम पठावा।[7]
पुनि आए जहँ मुनि सरभंगा। सुंदर अनुज जानकी संगा॥

देखि राम मुख पंकज मुनिबर लोचन भृंग।
सादर पान करत अति धन्य जन्म सरभंग ॥१ क॥

कह मुनि सुनु रघुबीर कृपाला। संकर मानस राज मराला।
जात रहेउँ बिरंचि के धामा। सुनेउ श्रवन बन ऐहहिं रामा।
चितवत पंथ रहेउँ दिन राती। अब प्रभु देखि जुडानी छाती।
नाथ सकल साधन मैं हीना। कीन्ही कृपा जानि जन दीना।
सो कछु देव न मोहि निहोरा। निज पन राखेहु[8] जन मन चोरा।
तब लगि रहहु दीन हित लागी। जब लगि मिलौं तुम्हहि तनु त्यागी।
जोग जग्य जप तप व्रत कीन्हा। प्रभु कहँ देइ भगति बर लीन्हा।
येहि बिधि सर रचि मुनि सरभंगा। बैठे हृदय छाड़ि सब संगा॥

१—इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ८ है।
२—३, ६, बनो ४, बना ५
३—४, ५, ६, सिय ३
४—इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ९ है।
५—इसके आगे ३ में क्षेपक सं० १० है।
६—इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ११ है।
७—३, ६ आवा ४, ५
८—३, ४, ५, राखेउ ६

सीता अनुज समेत प्रभु नील जलद तनु स्याम।
मम हिय बसहु निरंतर सगुन रूप श्रीराम ॥ ८ क॥

अस कहि जोग अगिनि तनु जारा। राम कृपा बैकुंठ सिधारा।
ताते मुनि हरि लीन न भएऊ। प्रथमहि भेद भगति बर लएऊ।
रिषि निकाय मुनिबर गति देखी। सुखी भए निज हृदय बिसेखी।
अस्तुति करहिं सकल मुनि बृंदा। जयति प्रनत हित करुना कंदा।
पुनि रघुनाथ चले बन आगें। मुनिबर बृंद बिपुल सँग लागे।
अस्थि समूह देखि रघुराया। पूछा[1] मुनिन्ह लागि अति दाया।
जानतहूँ पूछिअ कस स्वामी। सबदरसी[2] तुम्ह अंतरजामी।
निसिचर निकर सकल मुनि खाए। सुनि रघुबीर नयन जल छाए॥

निसिचर हीन करौं महि भुज उठाइ पन कीन्ह।
सकल मुनिन्ह के आस्रमहिं[3] जाइ जाइ सुख दीन्ह ॥ ९ क॥

मुनि अगस्त्य कर सिष्य सुजाना। नाम सुतीछन रति भगवाना।
मन क्रम बचन राम पद सेवक। सपनेहु आन भरोस न देवक।
प्रभु आगवनु स्रवन सुनि पावा। करत मनोरथ आतुर धावा।
हे बिधि[4] दीनबंधु रघुराया। मो से सठ पर करिहहिं दाया।
सहित अनुज मोहि राम गोसाईं। मिलिहहिं निज सेवक की नाईं।
मोरे जिय भरोस दृढ़ नाहीं। भगति बिरति न ग्यान मन माहीं।
नहिं सतसंग जोग जप जागा। नहिं दृढ़ चरन कमल अनुरागा।
एक बानि करुनानिधान की। सो प्रिय जाकें गति न आन की।[5]
होइहहिं सुफल आजु मम लोचन। देखि बदन पंकज भव मोचन।
निर्भर प्रेम मगन मुनि ग्यानी। कहि न जाइ सो दसा भवानी।

१–३, ४, ५, पूछी ६
२–४, ५, ६, समदरसी १.
३–४, ५; आस्रम १, आस्रमन्हि ६.
४–१, ४, ५, हे बिधि ६.
५–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० १२ है।

दिसि अरु बिदिसि पथ नहि सूझा। को मैं चलेउँ कहाँ नहि बूझा।
कबहुँक फिरि पाछे पुनि जाई। कबहुँक नृत्य करइ गुन गाई।
अबिरल प्रेम-भगति मुनि पाई। प्रभु देखैं तरु ओट लुकाई।
अतिसय प्रीति देखि रघुबीरा। प्रगटे हृदय हरन भव भीरा।
मुनि मग माँझ अचल होइ बैसा। पुलक सरीर पनसफल जैसा।
तब रघुनाथ निकट चलि आए। देखि दसा निज जन मन भाए।[2]
मुनिहि राम बहु भाँति जगावा। जान[3] न ध्यानजनित सुख पावा।
भूप रूप तब राम दुरावा। हृदय चतुर्भुज रूप देखावा।
मुनि अकुलाइ उठा तब कैसें। बिकल हीन मनि फनिबर जैसें।
आगे देखि राम तन स्यामा। सीता अनुज सहित सुख धामा।
परेउ लकुट इव चरनन्हि लागी। प्रेम मगन मुनिबर बड़भागी।
भुज बिसाल गहि लिये उठाई। परम प्रीति राखे उर लाई।
मुनिहि मिलत अस सोह कृपाला। कनक तरुहि जनु भेंट तमाला।
राम बदनु बिलोक मुनि ठाढ़ा। मानहु चित्र माँझ लिखि काढ़ा॥

तब मुनि हृदय धीर धरि गहि पद बारहि बार।
निज आस्रम प्रभु आनि करि पूजा बिबिध प्रकार॥ ४ क॥

कह मुनि प्रभु सुनु बिनती मोरी। अस्तुति करौं कवन बिधि तोरी।
महिमा अमित मोरि मति थोरी। रबि सन्मुख खद्योत अँजोरी।
स्याम तामरस दाम सरीरं। जटा मुकुट परिधन मुनि चीरं।
पानि चाप सर कटि तूनीरं। नौमि निरंतर श्री रघुबीरं।
मोह-बिपिन घन-दहन कृसानुः। संत सरोरुह-कानन भानुः।
निसिचर करि बरूथ मृगराजः। त्रातु सदा नो भव खग बाजः।
अरुन नयन राजीव सुबेसं। सीता नयन चकोर निसेसं।

१—२-३, ४, ५; मलि ६... ३—२, ४, ५; जाग ६, ८
२—इसके आगे २ में क्षेपक सं० ११ है। ४—२, ६; परिधन ४, ५, ८

मरालं । नौमि राम उर बाहु बिसालं ।
उरगादः । समन सु कर्कस तर्क बिपादः ।
रंजन सुर जूथः । त्रातु सदा नो कृपा बरूथः ।
सगुन बिषम सम रूपं । ज्ञान गिरा गोतीतमनूपं ।
अमलमखिलमनवद्यमपारं । नौमि रामं भंजन महि भारं ।
भक्त कल्प पादप आरामः । तर्जन क्रोध लोभ मद कामः ।
अतिनागर भवसागर सेतुः । त्रातु सदा दिनकर कुल केतुः ।
अतुलित भुज प्रताप बल धामः । कलि मल बिपुल बिभंजन नामः ।
धर्मवर्म नर्मद गुनग्रामः । संतत सं तनोतु मम रामः ।
जदपि बिरज ब्यापक अबिनासी । सबके हृदयँ निरंतर बासी ।
तदपि अनुज श्री सहित खरारी । बसतु मनसि मम काननचारी ।
जे जानहिं ते जानहुँ स्वामी । सगुन अगुन उर अंतरजामी ।
जो कोसलपति राजिव नयना । करौ सो राम हृदय मम अयना ।
अस अभिमान जाइ जनि भोरे । मैं सेवक रघुपति पति मोरे ।
सुनि मुनि बचन राम मन भाए । बहुरि हरषि मुनिबर उर लाए ।
परम प्रसंन जानु मुनि मोही । जो बर मागहु देउँ सो तोही ।
मुनि कह मैं बर कबहुँ न जाचा । समुझि न परइ झूठ का साचा ।
तुम्हहि नीक लागै रघुराई । सो मोहि देहु दास सुखदाई ।
अबिरल भगति बिरति बिज्ञाना । होहु सकल गुन ज्ञान निधाना ।
प्रभु जो दीन्ह सो बरु मैं पावा । अब सो देहु मोहि जो भावा ॥

अनुज जानकी सहित प्रभु चाप बान धर राम ।
मम हिय गगन इंदु इव बसहु सदा यह काम ॥ ५क ॥

१–४, ५, ६, राम ३
२–३, ६, से ४, ५.
३–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० १४ है।
४–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० १५ है।
५–३,४,५ निःकाम ६.

एवमस्तु करि[1] रमानिवासा। हरषि चले कुंभज रिषि पासा।[2]
बहुत दिवस गुर दरसनु पाए। भए मोहि येहिं आस्रम आए।
अब प्रभु संग जाउँ गुर पाहीं। तुम्ह कहँ नाथ निहोरा नाहीं।
देखि कृपानिधि मुनि चतुराई। लिए संग बिहसे द्वौ भाई।
पंथ कहत निज भगति अनूपा। मुनि आश्रम पहुँचे सुरभूपा।[3]
तुरत सुतीछन गुर पहि गअेऊ। करि दंडवत कहत अस भअेऊ।
नाथ कोसलाधीसु कुमारा। आए मिलन जगत आधारा।
राम अनुज समेत बैदेही। निसि दिनु देव जपत हहु जेही।
सुनत अगस्ति तुरत उठि धाये। हरि बिलोकि लोचन जल छाये।
मुनि पद कमल परे द्वौ भाई। रिषि अति प्रीति लिए उर लाई।
सादर कुसल पूछि मुनि ग्यानी। आसन बर[4] बैठारे आनी।
पुनि करि बहु प्रकार प्रभु पूजा। मोहि सम भाग्यवंत नहि दूजा।
जहँ लगि रहे अपर मुनि बृंदा। हरषे सब बिलोकि सुख कंदा॥

मुनि समूह महँ बैठे[5] सन्मुख सब की ओर।
सरद इंदु तन चितवत मानहुँ निकर चकोर॥ ६क॥[6]

तब रघुबीर कहा मुनि पाहीं। तुम्ह सन प्रभु दुराव कछु नाहीं।
तुम्ह जानहु जेहि कारन आअेउँ। ता तें तात न कहि समुझाअेउँ।
अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही। जेहि प्रकार मारौं मुनि द्रोही।[7]
मुनि मुसुकाने सुनि प्रभु बानी। पूछेहु नाथ मोहि का जानी॥

१–४,५; कहि ३, ६.
२–इसके आगे ३ में क्षेपक संख्या १६ है।
३–इसके आगे ३ में क्षेपक संख्या १७ है।
४–४,५, पर ३,६.
५–३, ६; बैठि के ४, ५.
६–इसके आगे ३ में क्षेपक संख्या १८ है।
७–इसके आगे ३ में क्षेपक संख्या १९ है।

तुम्हरेइ भजन प्रभाव अघारी । जानौं महिमा कछुक तुम्हारी ।[१]
ऊमरितरु बिसाल तव माया । फल ब्रह्मांड अनेक निकाया ।
जीव चराचर जंतु समाना । भीतर बसहिं न जानहिं आना ।
ते फल भक्षक कठिन कराला । तव भय डरत सदा सोउ काला ।
ते तुम्ह सकल लोकपति साईं । पूछेहु मोहि मनुज की नाईं ।
यह बर मागौं कृपानिकेता । बसहु हृदय स्री अनुज समेता ।
अबिरल भगति बिरति सतसंगा । चरन सरोरुह प्रीति अभंगा ।
जद्यपि ब्रह्म अखंड अनंता । अनुभवगम्य भजहिं जेहि संता ।
अस तव रूप बखानौं जानौं । फिरि फिरि सगुन ब्रह्म रति मानौं ।[२]
संतत दासन्ह देहु बड़ाई । ता ते मोहि पूछेहु रघुराई ।
है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ । पावन पंचबटी तेहि नाऊँ ।[३]
दंडक बन पुनीत प्रभु करहू । उग्र स्राप मुनिबर कै हरहू ।
बास करहु तहँ रघुकुल राया । कीजे सकल मुनिन्ह पर दाया ।
चले राम मुनि आयसु पाई । तुरतहि पंचबटी निअराई ॥[४]

गीधराज सैं भेंट भइ बहु बिधि प्रीति बढ़ाइ ।
गोदावरी निकट प्रभु रहे पर्नगृह छाइ ॥ ७ ॥

जब ते राम कीन्ह तहँ बासा । सुखी भए मुनि बीती त्रासा ।
गिरि बन नदी ताल छबि छाए । दिन दिन प्रति अति होहिं सुहाए ।
खग मृग बृंद अनंदित रहहीं । मधुप मधुर गुंजत छबि लहहीं ।
सो बन बरनि न सक अहिराजा । जहाँ प्रगट रघुबीर बिराजा ।
एक बार प्रभु सुख आसीना । लछिमन बचन कहे छल हीना ।

१—इसके आगे ३ में चेपक संख्या २० है ।
२—इसके आगे ३ में चेपक संख्या २१ है ।
३—इसके आगे ३ में चेपक संख्या २२ है ।
४—इसके आगे ३ में चेपक संख्या २३ है ।

येह कर फल मन[1] विषय बिरागा। तब मम धर्म उपज अनुरागा।
स्रवनादिक नव भगति दृढ़ाहीं। मम लीला रति अति मन माहीं।
संत चरन पंकज अतिप्रेमा। मन क्रम वचन भजन दृढ़ नेमा।
गुरु पितु मातु बंधु पति देवा। सब मोहि कहँ जानै दृढ़ सेवा।
मम गुन गावत पुलक सरीरा। गदगद गिरा नयन बह नीरा।
काम आदि मद दंभ न जाकें। तात निरंतर बस मैं ता कें॥

बचन कर्म मन मोरि गति भजनु करहिं निष्काम[2]।
तिन्ह के हृदय कमल महुँ करौं सदा बिस्राम॥ १०॥

भगतिजोग सुनि अति सुख पावा। लछिमन प्रभु चरनन्हि सिरु नावा।[3]
ओहि बिधि गए कछुक दिन बीती। कहत बिराग ग्यान गुन नीती।
सूपनखा रावन कै बहिनी। दुष्ट हृदय दारुन जस अहिनी।
पंचबटी सो गै ओेक बारा। देखि बिकल भै जुगल कुमारा।
भ्राता पिता पुत्र उरगारी। पुरुष मनोहर निरखत नारी।
होइ बिकल सक मनहि न[4] रोकी। जिमि रबिमनि द्रव रबिहि बिलोकी।[5]
रुचिर रूप धरि प्रभु पहिं जाई। बोली बचन बहुत मुसुकाई।
तुम्ह सम पुरुष न मो सम नारी। येह सँजोग बिधि रचा बिचारी।
मम अनुरूप पुरुष जग माहीं। देखेउँ खोजि लोक तिहुँ नाहीं।
ता ते अब लगि रहिउँ कुमारी। मनु माना कछु तुम्हहि निहारी।
सीतहि चितइ कही प्रभु बाता। अहै कुआर[6] मोर लघु भ्राता।
गइ लछिमन रिपु भगिनी जानी। प्रभु बिलोकि बोले मृदु बानी।
सुंदरि सुनु मैं उन्ह कर दासा। पराधीन नहिं तोर सुपासा।

१—४, ५, पुनि ३, ६.
२—३, ४, ५; नि.काम ६
३—इसके आगे ३ में नोक सत्या २४ है।
४—३, ४, ६, मन नहिं ५
५—इसके आगे ३ में स्नोक सख्या २५ है।
६—४, ५, कुमार ३, ६

सुर नर मुनि सचराचर साईं। मैं पूछौं निज प्रभु की नाईं॥
मोहि समुझाइ कहहु सोइ देवा। सब तजि करौं चरन रज सेवा॥
कहहु ग्यान बिराग अरु माया। कहहु सो भगति करहु जेहि दाया॥
ईस्वर जीव भेद प्रभु सकल कहहु समुझाइ।
जा तें होइ चरन रति सोक मोह भ्रम जाइ॥ ८॥

थोरेहि महँ सब कहौं बुझाई। सुनहु तात मति मन चितु लाई॥
मैं अरु मोर तोर तैं माया। जेहि बस कीन्हे जीव निकाया॥
गो गोचर जहँ लगि मन जाई। सो सब माया जानेहु भाई॥
तेहि कर भेद सुनहु तुम्ह सोऊ। बिद्या अपर अबिद्या दोऊ॥
एक दुष्ट अतिसय दुखरूपा। जा बस जीव परा भव कूपा॥
एक रचै जग गुन बस जा कें। प्रभु प्रेरित नहि निज बल ता कें॥
ग्यान मान जहँ एको नाहीं। देख ब्रह्म समान सब माहीं॥
कहिअ तात सो परम बिरागी। तृन सम सिद्धि तीनि गुन त्यागी॥
माया ईस न आपु कहुँ जान कहिअ सो जीव।
बंध मोच्छप्रद सर्ब पर माया प्रेरक सीव॥ ९॥

धर्म तें बिरति जोग तें ग्याना। ग्यान मोक्षप्रद बेद बखाना॥
जा तें बेगि द्रवउँ मैं भाई। सो मम भगति भगत सुखदाई॥
सो सुतंत्र अवलंब न आना। तेहि आधीन ग्यान बिग्याना॥
भगति तात अनुपम सुख मूला। मिलइ जो संत होइँ अनुकूला॥
भगति कि साधन कहौं बखानी। सुगम पंथ मोहि पावहिं प्रानी॥
प्रथमहि बिप्र चरन अति प्रीती। निज निज कर्म निरत श्रुति रीती॥

१–३, ६, हो ४, ५. ४–३, ६, सब ४, ५.
२–४, ५, जीवहि ३, ६. ५–४, ५, ६; सुभ ३.
३–४, ५, थोरेहि ३, थोरे ६. ६–३, ६, प्राहीं ४, ५.

येह कर फल मन[1] विषय बिरागा। तब मम धर्म उपज अनुरागा।
स्रवनादिक नव भगति दृढ़ाहीं। मम लीला रति अति मन माहीं।
संत चरन पंकज अतिप्रेमा। मन क्रम बचन भजन दृढ़ नेमा।
गुरु पितु मातु बंधु पति देवा। सब मोहि कहँ जानै दृढ़ सेवा।
मम गुन गावत पुलक सरीरा। गदगद गिरा नयन बह नीरा।
काम आदि मद दंभ न जाकें। तात निरंतर बस मैं ता कें॥

बचन कर्म मन मोरि गति भजनु करहिं निष्काम[2]।
तिन्ह के हृदय कमल महुँ करौं सदा बिस्राम॥ १०॥

भगतिजोग सुनि अति सुख पावा। लछिमन प्रभु चरनन्हि सिरु नावा।[3]
अेहि बिधि गए कछुक दिन बीती। कहत बिराग ग्यान गुन नीती।
सूपनखा रावन कै बहिनी। दुष्ट हृदय दारुन जस अहिनी।
पंचबटी सो गै अेक बारा। देखि बिकल भै जुगल कुमारा।
भ्राता पिता पुत्र उरगारी। पुरुष मनोहर निरखत नारी।
होइ बिकल सक मनहि न[4] रोकी। जिमि रबिमनि द्रव रबिहि बिलोकी।[5]
रुचिर रूप धरि प्रभु पहिं जाई। बोली बचन बहुत मुसुकाई।
तुम्ह सम पुरुष न मो सम नारी। येह सँजोग बिधि रचा बिचारी।
मम अनुरूप पुरुष जग माहीं। देखेउँ खोजि लोक तिहुँ नाहीं।
ता ते अब लगि रहिउँ कुमारी। मनु माना कछु तुम्हहि निहारी।
सीतहि चितइ कही प्रभु बाता। अहै कुआर[6] मोर लघु भ्राता।
गइ लछिमन रिपु भगिनी जानी। प्रभु बिलोकि बोले मृदु बानी।
सुंदरि सुनु मैं उन्ह कर दासा। पराधीन नहि तोर सुपासा।

१—४, ५; पुनि २, ६; ४—३, ४, ६; मन नहि ५।
२—३, ४, ५; निःकाम ६। ५—इसके आगे ३ में क्षेपक संख्या २५ है।
३—इसके आगे ३ में क्षेपक संख्या २४ है। ६—४, ५; कुमार ३, ६।

प्रभु समर्थ[1] कोसलपुर राजा। जो कछु करहिं उन्हहिं सब छाजा।[2]
सेवक सुख चह मान भिखारी। व्यसनी धन सुभगति बिभिचारी।
लोभी जसु चह चार गुमानी[3]। नभ दुहि दूध चहत ए प्रानी।
पुनि फिरि राम निकट सो आई। प्रभु लछिमन पहिं बहुरि पठाई।
लछिमन कहा तोहि सो बरई। जो तृन तोरि लाज परिहरई।
तब खिसिआनि राम पहिं गई। रूप भयंकर प्रगटत भई।[4]
सीतहि सभय देखि रघुराई। कहा अनुज सन सयन बुझाई।।[5]

लछिमन अति लाघव सों नाक कान बिनु कीन्हि।
ता के कर रावन कहँ मनौ चुनवती दीन्हि।। ११।।

नाक कान बिनु भइ बिकरारा। जनु स्रव सैल गेरु कै धारा।[6]
खरदूषन पहिं गइ बिलपाता[7]। धिग धिग तव पौरुष बल भ्राता।
तेहिं पूछा सब कहेसि बुझाई। जातुधान सुनि सेन बनाई।[8]
धाए निसिचर निकर[9] बरूथा। जनु सपच्छ कज्जल गिरि जूथा।
नाना बाहन नाना कारा। नानायुध धर घोर अपारा।
सूपनखा आगे करि लीनी। असुभ रूप श्रुति नासा हीनी।[10]
असगुन अमित होहिं भयकारी। गनहिं न मृत्यु बिबस सब झारी।
गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं। देखि कटकु भट अति हरषाहीं।
कोउ कह जिअत धरहु द्वौ भाई। धरि मारहु तिय लेहु छड़ाई।[11]
धूरि पूरि नभ मंडल रहा। राम बोलाइ अनुज सन कहा।

१–४, ५; असमर्थ ६, समर्थ २.
२–इसके आगे ३ में क्षेपक संख्या २६ है।
३–४, ५, ६, गुनानी २.
४–इसके आगे ३ में क्षेपक संख्या २७ है।
५–इसके आगे ३ मे क्षेपक संख्या २८ है।
६–इसके आगे ३ मे क्षेपक संख्या २९ है।
७–२, ६, बिलपाता ४, ५
८–इसके आगे ३ में क्षेपक संख्या ३० है।
९–४, ५, बरन २, ६.
१०–इसके आगे ३ में क्षेपक संख्या ३१ है।
११–इसके आगे ३ में क्षेपक संख्या ३२ है।

लै जानकिहि जाहु गिरि कंदर । आवा निसिचर कटकु भयंकर ।
रहेहु सजग सुनि प्रभु कै बानी । चले सहित श्री सर धनु पानी ।
देखि राम रिपु दल चलि आवा । बिहसि कठिन कोदंड चढ़ावा ॥

कोदंड कठिन चढ़ाइ सिर जटजूट बाँधत सोह क्यों ।
मरकत सैल पर लरत दामिनि कोटि सों जुग भुजग ज्यों ।
कटि कसि निषंग बिसाल भुज गहि चाप बिसिख सुधारि कै ।
चितवत मनहु मृगराज प्रभु गजराज घटा निहारि कै ॥

आइ गए बगमेल धरहु धरहु धावत सुभट ।
जथा बिलोकि अकेल बाल रबिहि घेरत दनुज ॥१२॥

प्रभु बिलोकि सर सकहि न डारी । थकित भई रजनीचर धारी ।
सचिव बोलि बोले खरदूषन । येह कोउ नृप बालक नर भूषन ।
नाग असुर सुर नर मुनि जेते । देखे जिते हते हम केते ।
हम भरि जन्म सुनहु सब भाई । देखी नहि असि सुदरताई ।
जद्यपि भगिनी कीन्हि कुरूपा । बध लायक नहि पुरुष अनूपा ।
देहु तुरत निज नारि दुराई । जीअत भवन जाहु द्वौ भाई ।
मोर कहा तुम्ह ताहि सुनावहु । तासु बचन सुनि आतुर आवहु ।
दूतन्ह कहा राम सन जाई । सुनत राम बोले मुसुकाई ।
हम छत्री मृगया बन करहीं । तुम्ह से खल मृग खोजत फिरहीं ।
रिपु बलवंत देखि नहि डरहीं । एक बार कालहु सन लरहीं ।
जद्यपि मनुज दनुज कुल घालक । मुनि पालक खल सालक बालक ।
जो न होइ बल घर फिरि जाहू । समर बिमुख मैं हतौं न काहू ।
रन चढ़ि करिअ कपट चतुराई । रिपु पर कृपा परम कदराई ।

१—३, ४, ५ लखत ६
२—इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ३३ है ।
३—४, ५, ६, हने ३
४—इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ३४ है ।
५—इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ३५ है ।

दूतन्ह जाइ तुरत सब कहेऊ। सुनि खरदूषन उर अति दहेऊ॥
उर दहेउ कहेउ कि धरहु धाए बिकट भट रजनीचरा।
सर चाप तोमर सक्ति सूल कृपान परिघ परसु धरा।
प्रभु कीन्हि धनुष टँकोर प्रथम कठोर घोर भयावहा।
भए बधिर ब्याकुल जातुधान न ज्ञान तेहि अवसर रहा॥

सावधान होइ धाए जानि सबल आराति।
लागे बरषन राम पर अस्त्र सस्त्र बहु भाँति॥
तिन्ह के आयुध तिल सम करि काटे रघुबीर।
तानि सरासन स्रवन लगि पुनि छाड़े निज तीर॥ १३॥

तब चले बान कराल। फुंकरत जनु बहु[१] ब्याल।
कोपेउ समर स्रीराम। चले बिसिख निसित निकाम।
अवलोकि खरतर तीर। मुरि चले निसिचर बीर।[२]
भए क्रुद्ध तीनिउ भाइ। जे[३] भागि रन ते जाइ।
तेहि बधब हम निज पानि। फिरे मरन मन महु ठानि।[४]
आयुध अनेक अकार[५]। सनमुख ते करहि प्रहार।
रिपु परम कोपे जानि। प्रभु धनुष सर संधानि।
छाड़े बिपुल नाराच। लगे कटन बिकट पिसाच।
उर सीस भुज कर चरन। जहँ तहँ लगे महि परन।
चिक्करत लागत बान। धर परत कुधर समान।
भट कटत तन सत खंड। पुनि उठत करि पाखंड।
नभ उड़त बहु भुज मुंड। बिनु मौलि धावत रुंड।
खग कंक काक सृगाल। कटकटहिं कठिन कराल॥

१—४, ५, ६; निज ३. ४—३, ४, ५; प्रकार ६.
२—इसके आगे ३ में क्षेपक सं० १६ है। ५—इसके आगे ३ में क्षेपक सं० १७ है।
३—३, ६; जो ४, ५.

कटकटहिं जंबुक भूत प्रेत पिसाच खप्पर संचहीं।
बेताल बीर कपाल ताल बजाइ जोगिनि नंचहीं।
रघुबीर बान प्रचंड खंडहिं भटन्ह के उर भुज सिरा।
जहँ तहँ परहिं उठि लरहिं धर धरु धरु करहिं भयकर गिरा।
अंतावरी गहि उड़त गीध पिसाच कर गहि धावहीं।
संग्राम पुर बासी मनहु बहु बाल गुडी उड़ावहीं।
मारे पछारे उर बिदारे बिपुल भट कहँरत परे।
अवलोकि निज दल बिकल भट तिसिरादि खरदूषन फिरे।
सर सक्ति तोमर परसु सूल कृपान एकहि बारहीं।
करि कोप स्रीरघुबीर पर अगिनित निसाचर डारहीं।
प्रभु निमिष महु रिपु सर निवारि प्रचारि डारे सायका।
दस दस बिसिख उर माझ मारे सकल निसिचर नायका।
महि परत उठि भट भिरत मरत न करत माया अति घनी।
सुर डरत चौदह सहस प्रेत बिलोकि एक अवधधनी।
सुर मुनि सभय प्रभु देखि मायानाथ अति कौतुक करयो।
देखहि परस्पर राम करि संग्राम रिपुदल लरि मरयो॥

राम राम कहि तनु तजहिं पावहिं पद निर्बान।
करि उपाय रिपु मारे छन महु कृपानिधान।
हरषित बरषहिं सुमन सुर बाजहिं गगन निसान।
अस्तुति करि करि सब चले सोभित बिबिध बिमान॥ १४॥

जब रघुनाथ समर रिपु जीते। सुर नर मुनि सबके भय बीते।
तब लछिमन सीतहि लै आए। प्रभु पद परत हरषि उर लाए।
सीता चितव स्याम मृदु गाता। परम प्रेम लोचन न अघाता।

१–४, ५, खर्पर ३; खप्पर ६, ३–३, ६; धर धरु ४, ५.
२–३, ६; कराल ४, ५.

पंचवटी बसि श्रीरघुनायक। करत चरित सुर मुनि सुखदायक।
धुआँ देखि खरदूषन केरा। जाइ सुपनखा रावन प्रेरा।
बोली बचन क्रोध करि भारी। देस कोस कै सुरति बिसारी।
करसि पान सोवसि दिनु राती। सुधि नहि तव सिर पर आराती।
राजु नीति बिनु धन बिनु धर्मा। हरिहि समर्पे बिनु सतकर्मा।
बिद्या बिनु बिबेक उपजाएं। स्रम फल पढ़े किए अरु पाए।
संग ते जती कुमंत्र ते राजा। मान तें ग्यान पान तें लाजा।
प्रीति प्रनय बिनु मद तें गुनी। नासहि बेगि नीति अस सुनी॥

रिपु रुज पावक पाप प्रभु अहि गनिअ न छोट करि।
अस कहि बिबिधि बिलाप करि लागी रोदन करन॥
सभा माँझ परि ब्याकुल बहु प्रकार कह रोइ।
तोहि जिअत दसकंधर मोरि कि असि गति होइ॥ १५॥

सुनत सभासद उठे अकुलाई। समुझाई गहि बाँह उठाई।
कह लंकेस कहसि निज बाता। केइ तव नासा कान निपाता।
अवध नृपति दसरथ के जाए। पुरुषसिंघ बन खेलन आए।
समुझि परी मोहि उन्ह कै करनी। रहित निसाचर करिहहिं धरनी।
जिन्ह कर भुज बल पाइ दसानन। अभय भए बिचरत मुनि कानन।
देखत बालक काल समाना। परम धीर धन्वी गुन नाना।
अतुलित बल प्रताप द्वौ भ्राता। खल बध रत सुर मुनि सुख दाता।
सोभा धाम राम अस नामा। तिन्ह के संग नारि एक स्यामा।[२]
रूप रासि बिधि नारि सवारी। रति सतकोटि तासु बलिहारी।[३]
तासु अनुज काटे स्रुति नासा। सुनि तव भगिनि करहिं परिहासा।
खरदूषन सुनि लगे पुकारा। छन महुँ सकल कटक उन्ह मारा।

१-४, ५; धुआ ३, ६.
२-इसके आगे ३ में क्षेपक स० ३८ है।
३-इसके आगे ३ में क्षेपक स० ३९ है।

खरदूषन तिसिरा करि घाता। सुनि दससीस जरे सब गाता ॥
सूपनखहि समुझाइ करि बल बोलेसि बहु भाँति।
गअेउ भवन अति सोच बस नींद परै नहि राति ॥ १६ ॥
सुर नर असुर नाग खग माही। मोरे अनुचर कहँ कोउ नाहीं।
खरदूषन मोहि सम बलवंता। तिन्हहि को मारइ बिनु भगवंता।
सुर रंजन भजन महि भारा। जौ भगवंत लीन्ह अवतारा।
तौ मैं जाइ बैरु हठि करऊँ। प्रभु सर प्रान तजे भव तरऊँ।
होइहि भजनु न तामस देहा। मन क्रम वचन मंत्र दृढ़ एहा।
जौं नर रूप भूप सुत कोऊ। हरिहौं नारि जीति रन दोऊ।
चला अकेल जान चढ़ि तहवाँ। बस मारीच सिंधु तट जहवाँ।
इहाँ राम जसि जुगुति बनाई। सुनहु उमा सो कथा सुहाई ॥
लछिमन गए बनहिं जब लेन मूल फल कंद।
जनकसुता मन बोले बिहसि कृपा सुख वृंद ॥ १७ ॥
सुनहु प्रिया व्रत रुचिर सुसीला। मैं कछु करबि ललित नर लीला।
तुम्ह पावक महु करहु निवासा। जौं लगि करौं निसाचर नासा।
जबहि राम सबु कहा बखानी। प्रभु पद धरि हिय अनल समानी।
निज प्रतिबिंब राखि तहँ सीता। तैसइ सील - रूप - सुबिनीता।
लछिमनहूँ येह मरम न जाना। जो कछु चरित रचा[३] भगवाना।
दसमुख गअेउ जहाँ मारीचा। नाइ माथ स्वारथ रत नीचा।
नवनि नीच कै अति दुखदाई। जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई।
भयदायक खल कै प्रिय बानी। जिमि अकाल के कुसुम भवानी ॥
करि पूजा मारीच तब सादर पूछी बात।
कवन हेतु मन व्यग्र अति अकसर आयेहु तात ॥ १८ ॥

१–३, ६ जौ ४, ५. २–४, ५, ६ त्येउ २

३–इसके आगे ३ में क्षेपक स० ४० है।

दसमुख सकल कथा तेहि आगें। कही सहित अभिमान अभागें।
होहु कपटमृग तुम्ह छलकारी। जेहि बिधि हरि आनौं नृपनारी।
तेहि पुनि कहा सुनहु दससीसा। ते नररूप चराचर ईसा।
तासों तात बयरु नहि कीजै। मारे मरिअ जिआए जीजै।
मुनि मख राखन गएउ कुमारा। बिनु फर सर रघुपति मोहि मारा।
सत जोजन आएउँ छन माहीं। तिन्ह सन बयरु किए भल नाहीं।
भइ मम कीट भृंग की नाईं। जहँ तहँ मैं देखौं दोउ भाई।
जौं नर तात तदपि अति सूरा। तिन्हहि बिरोधि न आइहि पूरा॥
जेहि ताड़का सुबाहु हति खंडेउ हर कोदंड।
खर दूषन तिसिरा बधेउ मनुज कि अस बरिबंड॥ १९॥

जाहु भवन कुलकुसल बिचारी। सुनत जरा दीन्हिसि बहु गारी।
गुरु जिमि मूढ़ करसि मम बोधा। कहु जग मोहि समान को जोधा।
तब मारीच हृदय अनुमाना। नवहि बिरोधे नहि कल्याना।
सस्त्री मर्मी प्रभु सठ धनी। बैद बंदि कबि भानसगुनी[२]।
उभय भाँति देखा निज मरना। तब ताकिसि रघुनायक सरना।
उतरु देत मोहि बधब अभागें। कस न मरौं रघुपति सर लागें।
अस जियँ जानि दसानन संगा। चला राम पद प्रेम अभंगा।
मन अति हरष जनाव न तेही। आजु देखिहौं परम सनेही॥
निज परम प्रीतम देखि लोचन सुफल करि सुख पाइहौं।
श्री सहित अनुज समेत कृपानिकेत पद मन लाइहौं।
निर्बान दायक क्रोध जा कर भगति अबसहि बस करी।
निज पानि सर संधानि सो मोहि बधिहि सुख सागर हरी॥

१—इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ४१ है। २—३, मानसगुनी ४, ५, ६.

मम पाछे धर धावत धरे सरासन बान।
फिरि फिरि प्रभुहि बिलोकिहौं धन्य न मो सम आन॥ २०॥[1]

तेहि बन निकट दसानन गयेऊ। तब मारीच कपटमृग भयेऊ।
अतिबिचित्र कछु बरनि न जाई। कनक देह मनि रचित बनाई।
सीता परम रुचिर मृग देखा। अंग अंग सुमनोहर बेखा।
सुनहु देव रघुबीर कृपाला। येहि मृग कर अतिसुंदर छाला।
सत्यसंध प्रभु बधि करि येही। आनहु चर्म कहति बैदेही।
तब रघुपति जानत सब कारन। उठे हरषि सुर काजु सवारन।
मृग बिलोकि कटि परिकर बाँधा। करतर[2] चाप रुचिर सर साँधा।
प्रभु लछिमनहि कहा समुझाई। फिरत बिपिन निसिचर बहु भाई।
सीता केरि करेहु रखवारी। बुधि बिबेक बल समय बिचारी।[3]
प्रभुहि बिलोकि चला मृग भाजी। धाए रामु सरासन साजी।
निगम नेति सिव ध्यान न पावा। मायामृग पाछे सोइ[4] धावा।
कबहुँ निकट पुनि दूरि पराई। कबहुँक प्रगटै कबहुँ छपाई।
प्रगटत दुरत करत छल भूरी। येहि बिधि प्रभुहि गयौ लै दूरी।
तब तकि राम कठिन सर मारा। धरनि परेउ करि घोर पुकारा।
लछिमन कै प्रथमहि लै नामा। पाछे सुमिरेसि मन महुँ रामा।
प्रान तजत प्रगटेसि निजु देहा। सुमिरेसि रामु समेत सनेहा।
अंतर प्रेमु तासु पहिचाना। मुनि दुर्लभ गति दीन्हि सुजाना॥

बिपुल सुमन सुर बरषहिं गावहिं प्रभु[5] गुन गाथ।
निज पद दीन्ह असुर कहु दीनबंधु रघुनाथ॥ २१॥

खल बधि तुरत फिरे रघुबीरा। सोह चाप कर कटि तूनीरा।

१–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ४२ है। ४–४, ५, सो १, ६
२–४, ५, करतल ३, ६ ५–३, ६, सुर ४, ५.
३–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ४३ है।

आरत गिरा सुनी जब सीता। कह लछिमन सन परम सभीता॥
जाहु वेगि संकट अति भ्राता। लछिमन बिहसि कहा सुनु माता॥
भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई। सपनेहु संकट परै कि सोई॥[1]
मरम बचन जब सीता बोला। हरि प्रेरित लछिमन मन डोला॥[2]
बन दिसि देव सौंपि सब काहू। चले जहाँ रावन ससि राहू॥[3]
सून बीच दसकंधर देखा। आवा निकट जती के बेखा॥
जाकें डर सुर असुर डेराहीं। निसि न नींद दिन अन्न न खाहीं॥
सो दससीस स्वान की नाईं। इत उत चितइ चला भड़िहाईं॥
इमि कुपंथ पग देत खगेसा। रह न तेज तन बुधि बल लेसा॥[5]
नाना बिधि कहि कथा सुहाई। राजनीति भय प्रीति देखाई॥
कह सीता सुनु जती गोसाईं। बोलेहु बचन दुष्ट की नाईं॥
तब रावन निज रूप देखावा। भई सभय जब नाम सुनावा॥
कह सीता धरि धीरजु गाढ़ा। आइ गयउ प्रभु रहु खल ठाढ़ा॥
जिमि हरिबधुहि छुद्र सस[6] चाहा। भयेसि काल बस निसिचर नाहा॥[7]
सुनत बचन दससीस लजाना[8]। मन महुँ चरन बंदि सुख माना॥

क्रोधवंत तब रावन लीन्हिसि रथ बैठाइ।
चला गगन पथ आतुर भय रथ हाँकि न जाइ॥ २२॥

हा जग एक बीर रघुराया। केहिं अपराध बिसारेहु दाया॥
आरति हरन सरन सुखदायक। हा रघुकुल सरोज दिननायक॥
हा लछिमन तुम्हार नहिं दोसा। सो फलु पायेउँ कीन्हेउँ रोसा॥[9]

१–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ४४ है। ६–३, ६; जस ४, ५.
२–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ४५ है। ७–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ४८ है।
३–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ४६ है। ८–४, ६; रिसाना ३, ५.
४–३, ६, हरन ४, ५. ९–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ४९ है।
५–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ४७ है।

निविध विलाप करति बैदेही। भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही।
बिपति मोरि को प्रभुहि सुनावा। पुरोडास चह रासभ खावा।
सीता कै बिलाप सुनि भारी। भये चराचर जीव दुखारी।[१]
गीधराज सुनि आरत बानी। रघु कुल तिलक नारि पहिचानी।
अधम निसाचर लीन्हे जाई। जिमि मलेछ बस कपिला गाई।[२]
सीते पुत्रि करसि जनि त्रासा। करिहौं जातुधान कर नासा।
धावा क्रोधवंत खग कैसे। छूटै पबि पर्वत कहुँ जैसे।
रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होई। निर्भय चलेसि न जानेहि[३] मोही।
आवत देखि कृतांत समाना। फिरि दसकंधर कर अनुमाना।
की मैनाक कि खगपति होई। मम बल जान सहित पति सोई।
जाना जरठ जटायू एहा। मम कर तीरथ छाँडिहि देहा।[४]
सुनत गीध क्रोधातुर धावा। कह सुनु रावन मोर सिखावा।
तजि जानकिहि कुसल गृह जाहू। नाहि त असि होइहि बहुबाहू।
राम रोष पावक अतिघोरा। होइहि सकल सलभ कुल तोरा।
उतरु न देत दसानन जोधा। तबहि गीध धावा करि क्रोधा।
धरि कच बिरथ कीन्ह महि गिरा। सीतहि राखि गीध पुनि फिरा।
चोचन्ह मारि बिदारेसि देही। दंड एक भइ मुरछा तेही।[५]
तब सक्रोध निसिचर खिसिआना। काढ़ेसि परम कराल कृपाना।
काटेसि पंख परा खग धरनी। सुमिरि राम करि अद्भुत करनी।[६]
सीतहि जान चढ़ाइ बहोरी। चला उताइल त्रास न थोरी।
करति बिलाप जाति नभ सीता। ब्याध बिबस जनु मृगी सभीता।
गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारी। कहि हरि नाम दीन्ह पट डारी।

१–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ५० है। ४–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ५२ है।
२–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ५१ है। ५–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ५३ है।
३–४ ५, ६, जानेसि ३. ६–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ५४ है।

ओहि बिधि सीतहि सो लै गयेऊ। बन असोक महँ राखत भयेऊ॥
हारि परा खल बहु बिधि भय अरु प्रीति देखाइ।
तब असोक पादप तर राखिसि जतनु कराइ॥
जेहि बिधि कपटकुरंग सँग धाइ चले श्रीराम।
सो छबि सीता राखि उर रटति रहति हरि नाम॥ २३॥

रघुपति अनुजहि आवत देखी। बाहिज चिंता कीन्हि बिसेखी।
जनकसुता परिहरिहु अकेली। आयेहु तात बचन मम पेली।[1]
निसिचर निकर फिरहि बनमाही। मम सीता आश्रम महँ[2] नाही।[3]
गहि पद कमल अनुज कर जोरी। कहेउ नाथ कछु मोहि न खोरी।
अनुज समेत गए प्रभु तहवाँ[4]। गोदावरि तट आस्रम जहवाँ।
आश्रमु देखि जानकी हीना। भए बिकल जस प्राकृत दीना।
हा गुन खानि जानकी सीता। रूप सील ब्रत नेम, पुनीता।
लछिमन समुझाए बहु भाँती। पूछत चले लता तरु पाती।
हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी। तुम देखी सीता मृगनयनी।
खंजन सुक कपोत मृग मीना। मधुप निकर कोकिला, प्रबीना।
कुंद कली दाडिम दामिनी। कमल सरद ससि अहिभामिनी।
बरुन पास मनोज धनु हंसा। गज केहरि निज सुनत प्रसंसा।
श्रीफल कनक कदलि हरपाहीं। नेकु न संक सकुच मन माहीं।
सुनु जानकी तोहि बिनु आजू। हरषे सकल पाइ जनु राजू।
किमि सहि जात अनख तोहि पाही। प्रिया बेगि प्रगटसि कस नाहीं।
ओहि बिधि खोजत बिलपत स्वामी। मनहु महा बिरही अतिकामी।

१–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ५५ है। ४–४, ५, ६; तहाँ, जहाँ ३.
२–४, ५; मम मन सीता आश्रम ३, ६. ५–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ५७ है।
३–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ५६ है। ६–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ५८ है।

पूरन काम्रु राम्रु सुख रासी। मनुज चरित कर अज अविनासी।
आगे परा गीधपति देखा। सुमिरत राम चरन जिन्ह रेखा॥
कर सरोज सिर परसेउ कृपासिंधु रघुबीर।
निरखि राम छवि धाम मुख बिगत भई सब पीर॥ २४॥

तब कह गीध बचन धरि धीरा। सुनहु राम भंजन भव भीरा।
नाथ दसानन यह गति कीन्ही। तेहि खल जनकसुता हरि लीन्ही।
लै दच्छिन दिसि गयेउ गोसाईं। बिलपति अति कुररी की नाईं।
दरस लागि प्रभु राखेउँ प्राना। चलन चहत अब कृपानिधाना।
राम कहा तनु राखहु ताता। मुख मुसुकाइ कही तेहि बाता।
जाकर नाम मरत मुख आवा। अधमौ मुकुत होइ श्रुति गावा।
सो मम लोचन गोचर आगे। राखौं देह नाथ केहि खाँगे।
जल भरि नयन कहहिं रघुराई। तात करम निज ते गति पाई।
परहित बस जिन्ह के मन माहीं। तिन्ह कहुँ जग दुर्लभ कछु नाहीं।
तनु तजि तात जाहु मम धामा। देउँ काह तुम्ह पूरन कामा॥
सीता हरन तात जनि कहहु पिता सन जाइ।
जौं मैं राम्रु त कुल सहित कहिहि दसानन आइ॥ २५॥

गीध देह तजि धरि हरि रूपा। भूषन बहु पट पीत अनूपा।
स्याम गात बिसाल भुज चारी। अस्तुति करत नयन भरि बारी॥
जय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुन प्रेरक सही।
दससीस बाहु प्रचंड खंडन चंड सर मंडन मही।
पाथोद गात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं।
नित नौमि राम्रु कृपाल बाहु बिसाल भव भय मोचनं।
बलमप्रमेयमनादिमजमब्यक्तमेकमगोचरं।
गोबिंद गोपर द्वंद हर बिग्यान घन धरनी धरं।

२—इसके आगे २ में क्षेपक संख्या ५६ है।

जे[1] राम मंत्र जपंत संत अनंत जन मन रंजनं।
नित नौमि राम अकाम प्रिय कामादि खल दल गंजन।
जेहि श्रुति निरंजन ब्रह्म व्यापक बिरज अज कहि गावहीं।
करि ध्यान ग्यान बिराग जोग अनेक मुनि जेहि पावहीं।
सो प्रगट करुनाकंद सोभावृंद अग जग मोहई।
मम हृदय पंकज भृंग अंग अनंग बहु छबि सोहई।
जो अगम सुगम सुभाव निर्मल असम सम सीतल सदा।
पस्यंति जं जोगी जतनु करि करत मन गो बस सदा[2]।
सो राम रमानिवास सतत दास बस त्रिभुवन धनी।
मम उर बसेउ[3] सो समन संसृति जासु कीरति पावनी॥

अबिरल भगति मागि बर गीध गएउ हरि धाम।
तेहि की क्रिया जथोचित निज कर कीन्ही राम॥ २६॥

कोमल चित अति दीन दयाला। कारन बिनु रघुनाथ कृपाला।
गीध अधम खग आमिष भोगी। गति दीन्ही जो जाचत जोगी।
सुनहु उमा ते लोग अभागी। हरि तजि होहिं बिषय अनुरागी।
पुनि सीतहि खोजत द्वौ भाई। चले बिलोकत बन बहुताई।
संकुल लता बिटप घन कानन। बहु खग मृग तहँ गज पचानन।
आवत पंथ कबंध निपाता। तेहि सब कही श्राप[4] कै बाता।
दुर्बासा मोहि दीन्ही श्रापा। प्रभु पद पेखि मिटा सो पापा।
सुनु गंधर्ब कहौं मैं तोही। मोहि न सोहाइ ब्रह्म कुल द्रोही॥

मन क्रम बचन कपट तजि जो कर भूसुर सेव।
मोहि समेत बिरंचि सिव बस ताकें सब देव॥ २७॥

१–४ ५, ६, जो २ ३–४, ५, बसउ २, ६
२–४, ५, ६, सदा २ ४ ३, ६, श्राप ४, ५

सापत[1] ताडत परुष कहंता। बिप्र पूज्य अस गावहिं संता।
निअ बिप्र सील गुन हीना। सूद्र न गुन गन ग्यान प्रबीना।[2]
हि निज धर्म ताहि समुझावा। निज पद प्रीति देखि मन भावा।
पति चरन कमल सिरु नाई। गअेउ गगन आपनि गति पाई।
हे देह गति राम उदारा। सबरी कें आस्रम पगु धारा।
री देखि राम गृह आए। मुनि के बचन समुझि जिय भाए।
नेज लोचन बाहु बिसाला। जटा मुकुट सिर उर बनमाला।
म गोर सुंदर दोउ भाई। सबरी परी चरन लपटाई।
मगन मुख बचन न आवा। पुनि पुनि पद सरोज सिरु नावा।
र जल लै चरन पखारे। पुनि सुंदर आसन बैठारे॥

कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि।
प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि॥ २८॥

जोरि आगे भइ ठाढ़ी। प्रभुहि बिलोकि प्रीति अति बाढ़ी।
नेधि अस्तुति करौं तुम्हारी। अधम जाति मैं जड मति भारी।
ते अधम अधम अति नारी। तिन्ह महँ मैं अतिमंद[3] अघारी।
घुपति सुनु भामिनि बाता। मानौं एक भगति कर नाता।
पाँति कुल धर्म बडाई। धन बल परिजन गुन चतुराई।
हीन नर सोहै कैसा। बिनु जल बारिद देखिअ जैसा।
भगति कहौं तोहि पाहीं। सावधान सुनु धरु मन माहीं।
भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा॥
गुर पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान।
चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान॥ २९॥

प मम दृढ़ बिस्वासा। पंचम भजनु सो बेद प्रकासा।

५, सापत ६ ३–१, ४, ५ मतिमंद ६
ागे ५ में क्षेपक स० ६० है।

छठ दम सील बिरति बहु कर्मा । निरत निरंतर सज्जन धर्मा ।
सातव सम मोहिमय जग देखा । मो तें संत अधिक करि लेखा ।
आठव जथालाभ संतोषा । सपनेहु नहि देखइ पर दोषा ।
नवम सरल सब सन छल हीना । मम भरोस हिय हरष न दीना ।
नव महुँ एकौ जिन्ह के होई । नारि पुरुष सचराचर कोई ।
सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरे । सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें ।
जोगि बृंद दुर्लभ गति जोई । तो कहुँ आजु सुलभ भइ सोई ।[1]
मम दरसन फल परम अनूपा । जीव पाव निज सहज सरूपा ।
जनकसुता कइ सुधि भामिनी । जानहि कहु[2] करिबर गामिनी ।
पंपासरहि जाहु रघुराई[3] । तहँ होइहि सुग्रीव मिताई ।
सो सब कहिहि देव रघुबीरा । जानतहूँ पूछहु मति धीरा ।
बार बार प्रभु पद सिरु नाई । प्रेम सहित सब कथा सुनाई ॥

कहि कथा सकल बिलोकि हरि मुख हृदय पद पंकज धरे ।
तजि जोग पावक देह हरि पद लीन भइ जहँ नहि फिरे ।
नर बिबिध कर्म अधर्म बहु मत सोक प्रद सब त्यागहू ।
बिस्वास करि कह दास तुलसी राम पद अनुरागहू ॥

जाति हीन अघ जन्म महि मुक्त कीन्हि असि नारि ।
महा मंद मन सुख चहसि ऐसे प्रभुहि बिसारि ॥ ३० ॥

चले राम त्यागा बन सोऊ । अतुलित बल नरकेहरि दोऊ ।
बिरही इव प्रभु करत बिषादा । कहत कथा अनेक संबादा ।
लछिमन देखु बिपिन कइ सोभा । देखत केहि कर मन नहि छोभा ।
नारि सहित सब खग मृग बृंदा । मानहु मोरि करत हहिं निंदा ।
हमहि देखि मृग निकर पराहीं । मृगीं कहहिं तुम्ह कह भय नाहीं ।

१—इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ६१ है । ३—इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ६२ है ।
२—३, ६; कहु ४, ५.

तुम्ह आनंद करहु मृग जाए। कंचन मृग खोजन ए आए।
सग लाइ करिनी करि लेहीं। मानहु मोहि सिखावनु देहीं।
सास्त्र सुचिंतित पुनि पुनि देखिअ। भूप सुसेवित बस नहिं लेखिअ।
राखिअ नारि जदपि उर माही। जुबती सास्त्र नृपति बस नाही।
देखहु तात बसंत सोहावा। प्रिया हीन[2] मोहि भय उपजावा॥

बिरह बिकल बल हीन मोहि जानेसि निपट अकेल।
सहित बिपिन मधुकर खग मदन कीन्हि बगमेल॥
देखि गएउ भ्राता सहित तासु दूत सुनि बात।
डेरा कीन्हेउ मनहु तब कटकु हटिकि मनजात॥ ३१॥

बिटप बिसाल लता अरुझानी। बिबिध बितान दिए जनु तानी।
कदलि तालबर धजा[3] पताका। देखि न मोह धीर मन जाका।
बिबिध भाँति फूले तरु नाना। जनु बानैत बने बहु बाना।
कहुँ कहुँ सुंदर बिटप सुहाए। जनु भट बिलग बिलग होइ छाए।
कूजत पिक मानहु गज माते। ढेंक महोख ऊँट बेसराते।
मोर चकोर कीर बर बाजी। पारावत मराल सब ताजी।
तीतिर लावक पदचर जूथा। बरनि न जाइ मनोज बरूथा।
रथ गिरि सिला दुंदुभी झरना। चातक बंदी गुन गन बरना।
मधुकर मुखर भेरि सहनाई। त्रिबिध बयारि बसीठी आई।
चतुरंगिनी सेन सँग लीन्हे। बिचरत सबहि चुनौती दीन्हे।
लछिमन देखत काम अनीका। रहहिं धीर तिन्ह कै जग लीका।
एहि कें एक परम बल नारी। तेहि तें उबर सुभट सोइ भारी॥

तात तीनि अति प्रबल ये[4] काम क्रोध अरु लोभ।
मुनि बिग्यान धाम मन करहिं निमिष महुँ छोभ॥

१—३, ६; सुचिंतिय ४, ५   ३—४, ५, ध्वजा ३, ६
२—३, ६, बिहीन ४, ५   ४—४, ५, खल ३, ६

छठ दम सील बिरति बहु कर्मा। निरत निरंतर सज्जन धर्मा।
सातव सम मोहिमय जग देखा। मो तें संत अधिक करि लेखा।
आठव जथालाभ संतोषा। सपनेहु नहि देखइ पर दोषा।
नवम सरल सब सन छल हीना। मम भरोस हिय हरष न दीना।
नव महुँ एकौ जिन्ह के होई। नारि पुरुष सचराचर कोई।
सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरे। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें।
जोगि बृंद दुर्लभ गति जोई। तो कहुँ आजु सुलभ भइ सोई।[1]
मम दरसन फल परम अनूपा। जीव पाव निज सहज सरूपा।
जनकसुता कइ सुधि भामिनी। जानहि कहु[2] करिवर गामिनी।
पंपासरहि जाहु रघुराई[3]। तहँ होइहि सुग्रीव मिताई।
सो सब कहिहि देव रघुबीरा। जानतहूँ पूछहु मति धीरा।
बार बार प्रभु पद सिरु नाई। प्रेम सहित सब कथा सुनाई॥

कहि कथा सकल बिलोकि हरि मुख हृदय पद पंकज धरे।
तजि जोग पावक देह हरि पद लीन भइ जहँ नहि फिरे।
नर बिबिध कर्म अधर्म बहु मत सोक प्रद सब त्यागहू।
बिस्वास करि कह दास तुलसी राम पद अनुरागहू॥

जाति हीन अघ जन्म महि मुक्त कीन्हि असि नारि।
महा मंद मन सुख चहसि ऐसे प्रभुहि बिसारि॥ ३०॥

चले राम त्यागा बन सोऊ। अतुलित बल नरकेहरि दोऊ।
बिरही इव प्रभु करत बिषादा। कहत कथा अनेक संबादा।
लछिमन देखु बिपिन कइ सोभा। देखत केहि कर मन नहि छोभा।
नारि सहित सब खग मृग बृंदा। मानहु मोरि करत हहिं निंदा।
हमहि देखि मृग निकर पराहीं। मृगीं कहहिं तुम्ह कह भय नाहीं।

१–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ६१ है। ३–इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ६२ है।
२–१, ६, बहु ४, ५.

तुम्ह आनंद करहु मृग जाए। कंचन मृग खोजन ए आए।
संग लाइ करिनी करि लेहीं। मानहु मोहि सिखावनु देहीं।
सास्त्र सुचिंतित[1] पुनि पुनि देखिअ। भूप सुसेवित बस नहिं लेखिअ।
राखिअ नारि जदपि उर माही। जुवती सास्त्र नृपति बस नाही।
देखहु तात बसंत सोहावा। प्रिया हीन[2] मोहि भय उपजावा॥

बिरह बिकल बल हीन मोहि जानेसि निपट अकेल।
सहित बिपिन मधुकर खग मदन कीन्हि बगमेल॥
देखि गएउ भ्राता सहित तासु दूत सुनि बात।
डेरा कीन्हेउ मनहु तब कटकु हटकि मनजात॥ ३१॥

बिटप बिसाल लता अरुझानी। बिबिध बितान दिए जनु तानी।
कदलि तालबर धजा[3] पताका। देखि न मोह धीर मन जाका।
बिबिध भाँति फूले तरु नाना। जनु बानैत बने बहु बाना।
कहुँ कहुँ सुंदर बिटप सुहाए। जनु भट बिलग बिलग होइ छाए।
कूजत पिक मानहु गज माते। ढेंक महोख ऊँट बेसराते।
मोर चकोर कीर बर बाजी। पारावत मराल सब ताजी।
तीतिर लावक पदचर जूथा। बरनि न जाइ मनोज बरूथा।
रथ गिरि सिला दुंदुभी झरना। चातक बंदी गुन गन बरना।
मधुकर मुखर भेरि सहनाई। त्रिबिध बयारि बसीठी आई।
चतुरंगिनी सेन सँग लीन्हे। बिचरत सबहि चुनौती दीन्हे।
लछिमन देखत काम अनीका। रहहिं धीर तिन्ह कै जग लीका।
ऐहि के एक परम बल नारी। तेहि ते उबर सुभट सोइ भारी॥

तात तीनि अति प्रबल ये[4] काम क्रोध अरु लोभ।
मुनि बिज्ञान धाम मन करहिं निमिष महुँ छोभ॥

१—२, ६; सुचितिय ४, ५   ३—४, ५, ध्वजा ३, ६
२—३, ६, बिहीन ४, ५   ४—४, ५, खल ३, ६.

छठ दम सील बिरति बहु कर्मा। निरत निरंतर सज्जन धर्मा।
सातव सम मोहिमय जग देखा। मो तें संत अधिक करि लेखा।
आठव जथालाभ संतोषा। सपनेहु नहि देखइ पर दोषा।
नवम सरल सब सन छल हीना। मम भरोस हिय हरष न दीना।
नव महुँ एको जिन्ह के होई। नारि पुरुष सचराचर कोई।
सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरे। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें।
जोगि बृंद दुरलभ गति जोई। तो कहुँ आजु सुलभ भइ सोई।[1]
मम दरसन फल परम अनूपा। जीव पाव निज सहज सरूपा।
जनकसुता कइ सुधि भामिनी। जानहि कहु[2] करिवर गामिनी।
पंपासरहि जाहु रघुराई[3]। तहँ होइहि सुग्रीव मिताई।
सो सब कहिहि देव रघुबीरा। जानतहूँ पूछहु मति धीरा।
बार बार प्रभु पद सिरु नाई। प्रेम सहित सब कथा सुनाई॥

कहि कथा सकल बिलोकि हरि मुख हृदय पद पंकज धरे।
तजि जोग पावक देह हरि पद लीन भइ जहँ नहि फिरे।
नर बिबिध कर्म अधर्म बहु मत सोक प्रद सब त्यागहू।
बिस्वास करि कह दास तुलसी राम पद अनुरागहू॥

जाति हीन अघ जन्म महि मुक्त कीन्हि असि नारि।
महा मंद मन सुख चहसि ऐसे प्रभुहि बिसारि॥ ३०॥

चले राम त्यागा बन सोऊ। अतुलित बल नरकेहरि दोऊ।
बिरही इव प्रभु करत बिषादा। कहत कथा अनेक संबादा।
लछिमन देखु बिपिन कइ सोभा। देखत केहि कर मन नहि छोभा।
नारि सहित सब खग मृग बृंदा। मानहु मोरि करत हहिं निंदा।
हमहि देखि मृग निकर पराहीं। मृगी कहहिं तुम्ह कह भय नाहीं।

१—इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ६१ है। ३—इसके आगे ३ में क्षेपक सं० ६२ है।
२—३, ६, कहु ४, ५.

कुहू कुहू कोकिल धुनि करहीं। सुनि रव सरस ध्यान मुनि टरहीं॥
फल भर नम्र[१] बिटप सब रहे भूमि निअराइ।
पर उपकारी पुरुष जिमि नवहिं सुसंपति पाइ॥ ३४॥
देखि राम अतिरुचिर तलावा। मज्जनु कीन्ह परम सुख पावा।
देखी सुंदर तरु बर छाया। बैठे अनुज सहित रघुराया।
तहँ पुनि सकल देव मुनि आए। अस्तुति करि निज धाम सिधाए।
बैठे परम प्रसन्न कृपाला। कहत अनुज मन कथा रसाला।
बिरहवंत भगवंतहि देखी। नारद मन भा सोच बिसेखी।
मोर श्राप करि अंगीकारा। सहत रामु नाना दुख भारा।
ऐसे प्रभुहि बिलोकौं जाई। पुनि न बनिहि अस अवसरु आई।
यह बिचारि नारद कर बीना। गए जहाँ प्रभु सुख आसीना।
गावत राम चरित मृदु बानी। प्रेम सहित बहु भाँति बखानी।
करत दंडवत लिए उठाई। राखे बहुत बार उर लाई।
स्वागत पूँछि निकट बैठारे। लछिमन सादर चरन पखारे॥
नाना बिधि बिनती करि प्रभु प्रसन्न जिय जानि।
नारद बोले बचन तब जोरि सरोरुह पानि॥ ३५॥
सुनहु उदार परम[२] रघुनायक। सुंदर अगम सुगम बर दायक।
देहु एक बर मागौं स्वामी। जद्यपि जानत अंतरजामी।
जानहु मुनि तुम्ह मोर सुभाऊ। जन सन कबहुँ कि करौं दुराऊ।
कवन बस्तु असि प्रिय मोहि लागी। जो मुनिबर न सकहु तुम्ह माँगी।
जन कहुँ कछु अदेय नहि मोरे। अस बिस्वास तजहुँ जनि भोरें।
तब नारद बोले हरषाई। अस बर मागौं करौं ढिठाई।
जद्यपि प्रभुके नाम अनेका। श्रुति कह अधिक एक तें एका।
राम सकल नामन्ह ते अधिका। होउ नाथ अघ खग गन बधिका॥

१—२, ६; भारनं नम्रि ४, ५   २—२, ६, सहज ४, ५.

लोभ के इच्छा दंभ बल काम के केवल नारि।
क्रोध के परुष वचन बल मुनिवर कहहिं बिचारि ॥ ३२ ॥

गुनातीत सचराचर स्वामी। राम उमा सब अंतरजामी।
कामिन्ह कै दीनता देखाई। धीरन्ह के मन बिरति दृढ़ाई।
क्रोध मनोज लोभ मद माया। छूटहि सकल राम की दाया।
सो नर इंद्रजाल नहि भूला। जापर होइ सो नट अनुकूला।
उमा कहउँ मैं अनुभव अपना। सत[1] हरि भजनु जगत सब सपना।
पुनि प्रभु गए सरोवर तीरा। पंपा नाम सुभग गंभीरा।
संत हृदय जस निर्मल बारी। बाँधे[2] घाट मनोहर चारी।
जहँ तहँ पिअहि बिबिध मृग नीरा। जनु उदार गृह जाचक भीरा ॥

पुरैनि सघन ओट जल बेगि न पाइअ मर्म।
माया छन्न न देखिऐ जैसे निर्गुन ब्रह्म ॥
सुखी मीन सब एक रस अति अगाध जल माहिं।
जथा धर्मसीलन्ह के दिन सुख संजुत जाहिं ॥ ३३ ॥

बिकसे सरसिज नाना रंगा। मधुर[3] मुखर गुंजत बहु भृंगा।
बोलत जलकुक्कुट कलहंसा। प्रभु बिलोकि जनु करत प्रसंसा।
चक्रवाक बक खग समुदाई। देखत बनइ बरनि नहि जाई।
सुंदर खग गन गिरा सोहाई। जात पथिक जनु लेत बोलाई।
ताल समीप मुनिन्ह गृह छाए। चहुँ दिसि कानन बिटप सुहाए।
चंपक बकुल कदंब तमाला। पाटल पनस पनास[4] रसाला।
नव पल्लव कुसुमित[5] तरु नाना। चंचरीक पटली कर गाना।
सीतल मंद सुगंध सुभाऊ। संतत बहै मनोहर बाऊ।

१–६; सत्य, जग ३, ४, ५.
२–३, ६; बांध ४, ५.
३–३; मधुकर ४, ५, ६.
४–४, ५; परास ३; पलास ६.
५–३, ६; मुकुलित ४, ५.

कुहू कुहू कोकिल धुनि करहीं। सुनि रव सरस ध्यान मुनि टरहीं॥
फल भर नम्र[1] बिटप सब रहे भूमि निअराइ।
पर उपकारी पुरुष जिमि नवहिं सुसंपति पाइ॥ ३४॥

देखि राम अतिरुचिर तलावा। मज्जनु कीन्ह परम सुख पावा।
देखी सुंदर तरु बर छाया। बैठे अनुज सहित रघुराया।
तहँ पुनि सकल देव मुनि आए। अस्तुति करि निज धाम सिधाए।
बैठे परम प्रसन्न कृपाला। कहत अनुज सन कथा रसाला।
बिरहवंत भगवंतहि देखी। नारद मन भा सोच बिसेखी।
मोर श्राप करि अंगीकारा। सहत रामु नाना दुख भारा।
ऐसे प्रभुहि बिलोकौं जाई। पुनि न बनिहि अस अवसरु आई।
अेह बिचारि नारद कर बीना। गए जहाँ प्रभु सुख आसीना।
गावत राम चरित मृदु बानी। प्रेम सहित बहु भाँति बखानी।
करत दंडवत लिए उठाई। राखे बहुत बार उर लाई।
स्वागत पूँछि निकट बैठारे। लछिमन सादर चरन पखारे॥
नाना बिधि बिनती करि प्रभु प्रसन्न जिय जानि।
नारद बोले बचन तब जोरि सरोरुह पानि॥ ३५॥

सुनहु उदार परम[2] रघुनायक। सुंदर अगम सुगम बर दायक।
देहु एक बर मागौं स्वामी। जद्यपि जानत अंतरजामी।
जानहु मुनि तुम्ह मोर सुभाऊ। जन सन कबहुँ कि करौं दुराऊ।
कवन बस्तु असि प्रिय मोहि लागी। जो मुनिवर न सकहु तुम्ह माँगी।
जन कहुँ कछु अदेय नहि मोरें। अस बिस्वास तजहुँ जनि भोरें।
तब नारद बोले हरषाई। अस बर मागौं करौं ढिठाई।
जद्यपि प्रभुके नाम अनेका। श्रुति कह अधिक एक ते एका।
राम सकल नामन्ह ते अधिका। होउ नाथ अघ खग गन बधिका॥

१–३, ६; भारनं नम्रि ४, ५. २–३, ६, सहज ४, ५.

राका रजनी भगति तव राम नाम सोइ सोम।
अपर नाम उडुगन बिमल बसहु भगत उर ब्योम॥
एवमस्तु मुनि सन कहेउ कृपासिंधु रघुनाथ।
तब नारद मन हरष अति प्रभु पद नाअेउ माथ॥ ३६॥

अति प्रसन्न रघुनाथहि[1] जानी। पुनि नारद बोले मृदु बानी।
राम जबहि प्रेरेहु निज माया। मोहेहु मोहि सुनहु रघुराया।
तब बिबाह मैं चाहउँ कीन्हा। प्रभु केहि कारन करै न दीन्हा।
सुनि मुनि तोहि कहौं सह रोसा। भजहिं जे मोहि तजि सकल भरोसा।
करौं सदा तिन्ह कै रखवारी। जिमि बालक राखै महतारी।
गह[2] सिसु बच्छ अनल अहि धाई। तहँ राखै जननी अरगाई।
प्रौढ भये तेहि सुत पर माता। प्रीति करै नहिं पाछिलि बाता।
मोरे प्रौढ तनय सम ग्यानी। बालक सुत सम दास अमानी।
जनहि मोर बल निज बल ताही। दुहु कहँ काम क्रोध रिपु आही।
अेह बिचारि पंडित मोहि भजहीं। पाअेहु ग्यान भगति नहि तजहीं॥

काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह कै धारि।
तिन्ह महँ अति दारुन दुखद माया रूपी नारि॥ ३७॥

सुनु मुनि कह पुरान श्रुति संता। मोह बिपिन कहुँ नारि बसंता।
जप तप नेम जलास्रय झारी। होइ ग्रीषम सोखै सब नारी।
काम क्रोध मद मत्सर भेका। इन्हहि हरष प्रद बरषा एका।
दुर्बासना कुमुद समुदाई। तिन्ह कहँ सरद सदा सुखदाई।
धर्म सकल सरसीरुह बृंदा। होइ हिम तिन्हहि दहै सुख मंदा।
पुनि ममता जवास बहुताई। पलुहइ नारि सिसिर रितु पाई।
पाप उलूक निकर सुखकारी। नारि निबिड़ रजनी अँधिआरी।

१—३, ६, रघु नाथहि ४, ५. २—३; गहि ४, ५, ६

बुधि बलु सील सत्य सब मीना । बनसी सम त्रिय कहहिं प्रबीना ॥
अवगुन मूल सूल प्रद प्रमदा सब दुख खानि ।
ता ते कीन्ह निवारन मुनि मैं यह जिय जानि ॥ ३८ ॥

सुनि रघुपति के बचन सुहाए । मुनि तन पुलक नयन भरि आए ।
कहहु कवन प्रभु के असि रीती । सेवक पर ममता अरु प्रीती ।
जे न भजहिं अस प्रभु भ्रम त्यागी । ग्यान रंक नर मंद अभागी ।
पुनि सादर बोले मुनि नारद । सुनहु राम बिग्यान बिसारद ।
संतन्ह के लच्छन रघुबीरा । कहहु नाथ भंजन भव भीरा ।
सुनु मुनि संतन्ह के गुन कहऊँ । जिन्ह ते[1] मैं उन्हके बस रहऊँ ।
षट बिकार जित अनघ अकामा । अचल अकिंचन सुचि सुख धामा ।
अमितबोध अनीह मितभोगी । सत्यसार कवि कोविद जोगी ।
सावधान मानद मदहीना । धीर धर्मगति[2] परम प्रबीना ॥
गुनागार संसार दुख रहित बिगत संदेह ।
तजि मम चरन सरोज प्रिय तिन्ह कहुँ देह न गेह ॥ ३९ ॥

निज गुन स्रवन सुनत सकुचाहीं । पर गुन सुनत अधिक हरषाहीं ।
सम सीतल नहि त्यागहिं नीती । सरल सुभाउ सबहि सन प्रीती ।
जप तप ब्रत दम संजम नेमा । गुरु गोविंद बिप्र पद प्रेमा ।
स्रद्धा छमा मैत्री दाया । मुदिता मम पद प्रीति अमाया ।
बिरति बिबेक बिनय बिग्याना । बोध जथारथ बेद पुराना ।
दंभ मान मद करहिं न काऊ । भूलि न देहिं कुमारग पाऊ ।
गावहिं सुनहिं सदा मम लीला । हेतु रहित पर हित रत सीला ।
मुनि सुनु साधुन के गुन जेते । कहि न सकहिं सारद स्रुति तेते ॥

१–४, ५, ६; जाते ३. २–४, ५, ६; भगतिपथ ३.

केहि सक न सारद सेष नारद सुनत पद पंकज गहे।
अस दीनबंधु कृपाल अपने भक्तगुन निज मुख कहे।
सिरु नाइ बारहि बार चरनन्हि ब्रह्मपुर नारद गए।
ते धन्य तुलसीदास आस बिहाइ जे हरि रँग रए॥

रावनारि जसु पावन गावहिं सुनहिं जे लोग।
राम भगति दृढ़ पावहिं बिनु बिराग जप जोग॥
दीप सिखा सम जुबति तन[1] मन जनि होसि पतंग।
भजहि राम तजि काम मद करहि सदा सत संग॥ ४०॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने विमलवैराग्य-
सम्पादिनी नाम तृतीयः सोपानः॥

शुभमस्तु॥

श्री राम सहाय नमः॥

१–४, ५; जुवती ३.

रामचरितमानस
चतुर्थ सोपान

श्रीगणेशायनमः

कुंदेंदीवरसुंदरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ
शोभाढ्यो वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृंदप्रियौ ।
मायामानुषरूपिणो रघुवरौ सद्धर्मवर्मौ हि तौ
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ॥ १ ॥

ब्रह्मांभोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं
श्रीमच्छंभुमुखेंदुसुंदरवरं संशोभितं सर्वदा ।
संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं
धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥ २ ॥

मुक्ति जन्म महि जानि ज्ञान खानि अघ हानिकर ।
जहँ बस संभु भवानि सो कासी सेइअ कस न ॥
जरत सकल सुर बृंद विषम गरल जेहिं पान किअ ।
तेहि न भजसि मन मंद को कृपाल संकर सरिस ॥

आगे चले बहुरि रघुराया । रिष्यमूक पर्वत नियराया ।
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा । आवत देखि अतुल बल सींवा ।
अति सभीत कह सुनु हनुमाना । पुरुष जुगल बल रूप निधाना ।
धरि बटु रूप देखु तैं जाई । कहेसु जानि जिय सयन बुझाई ।
पठए बालि होहिं मन मैला । भागौं तुरत तजौं यह सैला ।
बिप्र रूप धरि कपि तहँ गयेऊ । माथ नाइ पूछत अस भयेऊ ।
को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा । छत्री रूप फिरहु बन बीरा ।
कठिन भूमि कोमल पद गामी । कवन हेतु बिचरहु बन स्वामी ।
मृदुल मनोहर सुंदर गाता । सहत दुसह बन आतप बाता ।
की तुम्ह तीनि देव मह कोऊ । नर नारायन की तुम्ह दोऊ ॥

जग कारन तारन भव भंजन धरनी भार।
की तुम्ह अखिल भुवन पति लीन्ह मनुज अवतार ॥ १ ॥

कोमलेस दसरथ के जाए। हम पितु बचन मानि वन आए।
नाम राम लछिमन दोउ भाई। संग नारि सुकुमारि सुहाई।
इहाँ हरी निसिचर बैदेही। बिप्र फिरहिं हम खोजत तेही।
आपन चरित कहा हम गाई। कहहु बिप्र निज कथा बुझाई।
प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना। सो सुख उमा जाइ नहि बरना।
पुलकित तन मुख आव न बचना। देखत रुचिर बेप कै रचना।
पुनि धीरजु धरि अस्तुति कीन्ही। हरप हृदय निज नाथहि चीन्ही।
मोर न्याउ मैं पूछा साईं। तुम्ह पूछहु कस नर की नाईं।
तव माया बस फिरौं भुलाना। ता ते मैं नहि प्रभु पहिचाना ॥

एकु मैं मंद मोह बस कुटिल हृदय अज्ञान।
पुनि प्रभु मोहि बिसारेउ दीन बंधु भगवान ॥ २ ॥

जदपि नाथ बहु अवगुन मोरे। सेवक प्रभुहि परै जनि भोरें।
नाथ जीव तव माया मोहा। सो निस्तरै तुम्हारेहि छोहा।
तापर मैं रघुबीर दोहाई। जानौं नहि कछु भजन उपाई।
सेवक सुत पति मातु भरोसे। रहै असोच बनै प्रभु पोसे।
अस कहि परेउ चरन अकुलाई। निज तनु प्रगटि प्रीति उर छाई।
तब रघुपति उठाइ उर लावा। निज लोचन जल सींचि जुड़ावा।
सुनु कपि जिय मानसि जनि ऊना। तैं मम प्रिय लछिमन ते दूना।
समदरसी मोहि कह सब कोऊ। सेवक प्रिय अनन्य गति सोऊ ॥

सो अनन्य जाके असि मति न टरइ हनुमंत।
मैं सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवंत ॥ ३ ॥

१–३, ६; मन ४, ५

देखि पवनसुत पति अनुकूला । हृदय हरष बीती सब सूला ।
नाथ सैल पर कपिपति रहई । सो सुग्रीव दास तव अहई ।
तेहि सन नाथ मैत्री कीजे । दीन जानि तेहि अभय करीजे[1] ।
सो सीता कर खोज कराइहि । जहँ तहँ मरकट कोटि पठाइहि ।
येहि विधि सकल कथा समुझाई । लिए दुऔ जन पीठि चढ़ाई ।
जब सुग्रीव राम कहुँ देखा । अतिसय जन्म धन्य करि लेखा ।
सादर मिलेउ नाइ पद माथा । भेंटेउ अनुज सहित रघुनाथा ।
कपि कर मन विचारु येहि रीती । करिहहिं विधि मोसन ए प्रीती ।।

तब हनुमंत उभय दिसि की[2] सब कथा सुनाइ ।
पावक साखी देइ करि जोरी प्रीति दृढ़ाइ ।। ४ ।।

कीन्हि प्रीति कछु बीच न राखा । लछिमन राम चरित सब भाखा ।
कह सुग्रीव नयन भरि वारी । मिलिहि नाथ मिथिलेस कुमारी ।
मंत्रिन्ह सहित इहाँ ऐक बारा । बैठ रहेउँ मैं करत विचारा ।
गगन पंथ देखी मैं जाता । परबस परी बहुत विलपाता[3] ।
राम राम हा राम पुकारी । हमहि देखि दीन्हेउ पट डारी ।
मागा राम तुरत तेहिं दीन्हा । पट उर लाइ सोच अति कीन्हा ।
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा । तजहु सोच मन आनहु धीरा ।
सब प्रकार करिहौं सेवकाई । जेहि विधि मिलिहि जानकी आई ।।

सखा बचन सुनि हरषे कृपासिंधु बलसींव ।
कारन कवन बसहु बन मोहि कहहु सुग्रीव ।। ५ ।।

नाथ बालि अरु मैं द्वौ भाई । प्रीति रही कछु बरनि न जाई ।
मयसुत मायावी तेहि नाऊँ । आवा सो प्रभु हमरे गाऊँ ।
अर्ध राति पुर द्वार पुकारा । बाली रिपु बल सहै[4] न पारा ।

१–३, ६, अभय कर दाजे ४, ५.   ३–४, ५, ६ विलपाता ३
२–४, ५, ६ बइ ३   ४–३, ६ सहा ४, ५

धावा वालि देखि सो भागा। मैं पुनि गएउँ बंधु सँग लागा।
गिरि बर गुहा पैठ सो जाई। तब बाली मोहि कहा बुझाई।
परखेसु मोहि एक पखवारा। नहि आवौं तब जानेसु मारा।
मास दिवस तहँ रहेउँ खरारी। निसरी रुधिर धार तहँ भारी।
बालि हतेसि मोहि मारिहि आई। सिला देइ तहँ चलेउँ पराई।
मंत्रिन्ह पुर देखा बिनु साईं। दीन्हेउ मोहि राजु बरिआईं।
बाली ताहि मारि गृह आवा। देखि मोहि जिय भेद बढ़ावा।
रिपु सम मोहि मारेसि अति भारी। हरि लीन्हेसि सर्बसु अरु नारी।
ताके भय रघुबीर कृपाला। सकल भुवन मइँ फिरेउँ बिहाला।
इहाँ श्राप बस आवत नाहीं। तदपि सभीत रहौं मन माहीं।
सुनि सेवक दुख दीन दयाला। फरकि उठी द्वै भुजा बिसाला॥

सुनु सुग्रीव मारिहौं बालिहि एकहि बान।
ब्रह्म रुद्र सरनागत गए न उबरिहि[१] प्रान॥ ६॥

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी। तिन्हहि बिलोकत पातक भारी।
निज दुख गिरि सम रज करि जाना। मित्र क दुख रज मेरु समाना।
जिन्ह के असि मति सहज न आई। ते सठ कत हठि करत मिताई।
कुपथ निवारि सुपंथ, चलावा। गुन प्रगटइ अवगुनन्हि दुरावा।
देत लेत मन संक न धरई। बल अनुमान सदा हित करई।
बिपतिकाल कर सतगुन नेहा। श्रुति कह संत मित्र गुन एहा।
आगे कह मृदु बचन बनाई। पाछे अनहित मन कुटिलाई।
जा कर चित अहि गति सम भाई। अस कुमित्र परिहरेहि भलाई।
सेवक सठ नृप कृपन कुनारी। कपटी मित्र सूल सम चारी।
सखा सोच त्यागहु बल मोरें। सब बि[illegible] मैं तोरें।
कह सुग्रीव सुन[illegible]। बालि [illegible] रन धीरा।

१–३, ६; तक न

दुंदुभि अस्थि ताल देखराए। बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाए[1]।
देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती। बालि बधब इन्ह भइ परतीती।
बार बार नावइ पद सीसा। प्रभुहि जानि मन हरष कपीसा।
उपजा ज्ञान बचन तब बोला। नाथ कृपा मन भएउ अलोला।
सुख संपति परिवार बड़ाई। सब परिहरि करिहौं सेवकाई।
ए सब राम भगति के बाधक। कहहिं संत तव पद अवराधक।
सत्रु मित्र सुख दुख जग माहीं। मायाकृत परमारथ नाहीं।
बालि परम हित जासु प्रसादा। मिलेहु राम तुम्ह समन बिषादा।
सपने जेहि सन होइ लराई। जागे समुझत मन सकुचाई।
अब प्रभु कृपा करहु येहि भाँती। सब तजि भजनु करौं दिनुराती।
सुनि बिराग संजुत कपि बानी। बोले बिहसि रामु धनुपानी।
जो कछु कहेहु सत्य सब सोई। सखा बचन मम मृषा न होई।
नट मर्कट इव सबहि नचावत। रामु खगेस बेद अस गावत।
लै सुग्रीव संग रघुनाथा। चले चाप सायक गहि हाथा।
तब रघुपति सुग्रीव पठावा। गर्जेसि जाइ निकट बल पावा।
सुनत बालि क्रोधातुर धावा। गहि कर चरन नारि समुझावा।
सुनु पति जिन्हहिं मिलेउ सुग्रीवा। ते द्वौ बंधु तेज बल सींवा।
कोसलेस सुत लछिमन रामा। कालहु जीति सकहिं संग्रामा॥

कह बाली सुनु भीरु प्रिय समदरसी रघुनाथ।
जौं कदाचि मोहि मारहि तौ पुनि होउँ सनाथ॥ ७॥

अस कहि चला महा अभिमानी। तृन समान सुग्रीवहि जानी।
भिरे उभौ बाली अति तर्जा। मुठिका मारि महा धुनि गर्जा।
तब सुग्रीव बिकल होइ भागा। मुष्टि प्रहार बज्र सम लागा।
मैं जो कहा रघुबीर कृपाला। बंधु न होइ मोर यह काला।

१–३, ६; ढहाए ४, ५.

एक रूप तुम्ह भ्राता दोऊ । तेहि भ्रम तें नहिं मारेउँ सोऊ
कर परसा सुग्रीव सरीरा । तनु भा कुलिस गई सब[1] पीरा
मेली कंठ सुमन कै माला । पठवा पुनि बल देइ बिसाला
पुनि नाना बिधि भई लराई । बिटप ओट देखहिं रघुराई ।

बहु छल बल सुग्रीव करि हिय हारा भय मानि ।
मारा बालि राम तब हृदय माझ सर तानि ॥ ८ ॥

परा बिकल महि सर के लागे । पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगे ।
स्याम गात सिर जटा बनाए । अरुन नयन सर चाप चढ़ाए ।
पुनि पुनि चितइ चरन चित दीन्हा । सुफल जन्म माना प्रभु चीन्हा ।
हृदय प्रीति मुख बचन कठोरा । बोला चितइ राम की ओरा ।
धर्म हेतु अवतरेहु गोसाईं । मारेहु मोहि ब्याध की नाईं ।
मैं बैरी सुग्रीव पिआरा । अवगुन कवन नाथ मोहि मारा ।
अनुज बधू भगिनी सुतनारी । सुन सठ कन्या सम ए चारी ।
इन्हहि कुदृष्टि बिलोकै जोई । ताहि बधें कछु पाप न होई ।
मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाना । नारि सिखावनु करसि न काना ।
मम भुज बल आश्रित तेहि जानी । मारा चहसि अधम अभिमानी ॥

सुनहु राम स्वामी सन चल न चातुरी मोरि ।
प्रभु अजहूँ मैं पापी अंतकाल गति तोरि ॥ ९ ॥

सुनत राम अति कोमल बानी । बालि सीस परसेउ निज पानी ।
अचल करौं तनु राखहु प्राना । बालि कहा सुनु कृपानिधाना ।
जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं । अंत राम कहि आवत नाहीं ।
जासु नाम बल संकर कासी । देत सबहि सम गति अबिनासी ।
मम लोचन गोचर सोइ आवा । बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा ।

१-३, ६; सबै गै ४, ५.

गोचर जासु गुन नित नेति कहि श्रुति गावहीं।
जीति पवन मन गो निरस करि मुनि ध्यान कबहुँक पावहीं।
मोहि जानि अति अभिमान बस प्रभु कहेउ राखु सरीरही।
अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि बबूरही॥
अब नाथ करि करुना बिलोकहु देहु जो बर मागऊँ।
जेहि जोनि जन्मौं कर्मबस तहँ राम पद अनुरागऊँ।
यह तनय मम सम बिनय बल कल्यान प्रद प्रभु लीजिए।
गहि बाँह सुर नर नाह आपन दास अंगद कीजिए॥

राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग।
सुमनमाल जिमि कंठ ते गिरत न जानै नाग॥ १०॥

राम बालि निज धाम पठावा। नगर लोग सब ब्याकुल धावा।
नाना बिधि बिलाप कर तारा। छूटे केस न देह सँभारा।
तारा बिकल देखि रघुराया। दीन्ह ज्ञान हरि लीन्ही माया।
छिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित अति अधम सरीरा।
प्रगट सो तनु तव आगे सोवा। जीव नित्य केहि लगि तुम्ह रोवा।
उपजा ज्ञान चरन तब लागी। लीन्हेसि परम भगति बर मागी।
उमा दारुजोषित की नाईं। सबहि नचावत रामु गोसाईं।
तब सुग्रीवहि आयेसु दीन्हा। मृतक कर्म बिधिवत सब कीन्हा।
राम कहा अनुजहि समुझाई। राजु देहु सुग्रीवहि जाई।
रघुपति चरन नाइ करि माथा। चले सकल प्रेरित रघुनाथा॥

लछिमन तुरत बोलाए पुरजन बिप्र समाज।
राज दीन्ह सुग्रीव कहँ अंगद कहँ जुबराज॥ ११॥

उमा राम सम हित जग माहीं। गुरु पितु मातु बंधु प्रभु नाहीं।
सुर नर मुनि सब कै यह रीती। स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती।

१–४, ५, ६; करत ३.

बालि त्रास ब्याकुल दिन राती। तन बहु ब्रन चिंता जर छाती।
सोइ सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ। अतिकृपाल रघुबीर सुभाऊ।
जानतहूँ अस प्रभु परिहरहीं। काहे न बिपति जाल नर परहीं।
पुनि सुग्रीवहि लीन्ह बोलाई। बहु प्रकार नृपनीति सिखाई।
कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीसा। पुर न जाउँ दस चारि बरीसा।
गत ग्रीषम बरषा रितु आई। रहिहउँ निकट सैल पर छाई।
अंगद सहित करहु तुम राजू। संतत हृदय धरेहु मम काजू।
जब सुग्रीव भवन फिरि आए। रामु प्रबरषन गिरि पर छाए॥

प्रथमहि देवन्ह गिरि गुहा राखेउ रुचिर बनाइ।
रामु कृपानिधि कछुक दिन बास करहिंगे आइ॥ १२॥

सुंदर बन कुसुमित अति सोभा। गुंजत मधुप निकर मधु लोभा।
कंद मूल फल पत्र सुहाए। भए बहुत जब ते प्रभु आए।
देखि मनोहर सैल अनूपा। रहे तहँ अनुज सहित सुरभूपा।
मधुकर खग मृग तनु धरि देवा। करहिं सिद्ध मुनि प्रभु कै सेवा।
मंगलरूप भयउ बन तब ते। कीन्ह निवास रमापति जब ते।
फटिक सिला अतिसुभ्र सुहाई। सुख आसीन तहाँ द्वौ भाई।
कहत अनुज सन कथा अनेका। भगति बिरति नृपनीति बिबेका।
बरषा काल मेघ नभ छाए। गर्जत लागत परम सुहाए॥

लछिमन देखु मोर गन नाचत बारिद पेखि।
गृही बिरति रत हरष जस बिष्नु भगत कहुँ देखि॥ १३॥

घन घमंड नभ गर्जत घोरा। प्रिया हीन डरपत मन मोरा।
दामिनि दमक रह न घन माहीं। खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं।
बरखहिं जलद भूमि निअराएँ। जथा नवहिं बुध बिद्या पाएँ।
बूँद अघात सहहिं गिरि कैसे। खल के बचन संत सह जैसे।
छुद्र नदीं भरि चलीं तोराई। जस थोरेहुँ धन खल इतराई।

भूमि परत भा ढाबर पानी। जनु जीवहि माया लपटानी।
समिटि समिटि जल भरहि तलावा। जिमि सदगुन सज्जन पहिं आवा।
सरिता जल जलनिधि महुँ जाई। होइ अचल[1] जिमि जिव हरि पाई॥

हरित भूमि तृन संकुल समुझि परहि नहिं पंथ।
जिमि पाखंड बाद तें गुप्त होहिं सदग्रंथ॥ १४॥

दादुर धुनि चहु दिसा सुहाई। बेद पढ़हि जनु बटु समुदाई।
नव पल्लव भये बिटप अनेका। साधक मन जस मिले बिबेका।
अर्क जवास पात बिनु भयेऊ। जस सुराज खल उद्यम गयेऊ।
खोजत कतहुँ मिलइ नहि[2] धूरी। करै क्रोध जिमि धरमहि दूरी।
ससि संपन्न सोह महि कैसी। उपकारी कै संपति जैसी।
निसि तम घन खद्योत बिराजा। जनु दंभिन कर मिला समाजा।
महावृष्टि चलि फूटि किआरी। जिमि सुतंत्र भये बिगरहिं नारी।
कृषी निरावहि चतुर किसाना। जिमि बुध तजहिं मोह मद माना।
देखिअत चक्रवाक खग नाहीं। कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीं।
ऊसर बरषै तृन नहि जामा। जिमि हरिजन हिय उपज न कामा।
बिबिध जंतु संकुल महि भ्राजा। प्रजा बाढ़ जिमि पाइ सुराजा।
जहँ तहँ रहे पथिक थकि नाना। जिमि इंद्रिय गन उपजे ज्ञाना॥

कबहुँ प्रबल चल[3] मारुत जहँ तहँ मेघ बिलाहिं।
जिमि कपूत के उपजे कुल सद्धर्म नसाहिं॥
कबहु दिवस महुँ निबिड़ तम कबहुँक प्रगट पतंग।
बिनसइ उपजइ ज्ञान जिमि पाइ कुसंग सुसंग॥ १५॥

बरषा बिगत सरद रितु आई। लछिमन देखहु परम सुहाई।
फूलें कास सकल महि छाई। जनु बरषा कृत[4] प्रगट बुढ़ाई।

१—२, ६; अचलव ४, ५. ३—३, ४, ५; चद ६.
२—४, ५, ६; कतहू मिलइहि ३. ४—४, ५, ६; कृतु ३.

उदित अगस्ति पंथ जल सोखा। जिमि लोभहि सोखइ संतोषा।
सरिता सर निर्मल जल सोहा। संत हृदय जस गत मद मोहा।
रस रस सूख सरित सर पानी। ममता त्याग करहिं जिमि ग्यानी।
जानि सरद रितु खंजन आए। पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए।
पंक न रेनु सोह असि धरनी। नीति निपुन नृप कै जसि करनी।
जल संकोच बिकल भइ मीना। अबुध कुटुंबी जिमि धन हीना।
बिनु घन निर्मल सोह अकासा। हरिजन इव परिहरि सब आसा।
कहुँ कहुँ बृष्टि सारदी थोरी। कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी॥

चले हरषि तजि नगर नृप तापस बनिक भिखारि।
जिमि हरि भगति पाइ स्रम तजहिं आश्रमी चारि॥ १६॥

सुखी मीन जे नीर अगाधा। जिमि हरि सरन न एकौ बाधा।
फूले कमल सोह सर कैसा। निर्गुन ब्रह्म सगुन भएँ जैसा।
गुंजत मधुकर मुखर अनूपा। सुंदर खग रव नाना रूपा।
चक्रबाक मन दुख निसि पेखी। जिमि दुर्जन पर संपति देखी।
चातक रटत तृषा अति ओही। जिमि सुख लहइ न संकर द्रोही।
सरदातप निसि ससि अपहरई। संत दरस जिमि पातक टरई।
देखि इंदु चकोर समुदाई। चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई।
मसक दंस बीते हिम त्रासा। जिमि द्विज द्रोह किएँ कुल नासा॥

भूमि जीव संकुल रहे गए सरद रितु पाइ।
सदगुर मिले जाहिं जिमि संसय भ्रम समुदाइ॥ १७॥

बरषा गत निर्मल रितु आई। सुधि न तात सीता कै पाई।
एक बार कैसेहुँ सुधि जानौं। कालहु जीति निमिष महुँ आनौं।
कतहुँ रहउ जौं जीवति होई। तात जतनु करि आनौं सोई।
सुग्रीवहु सुधि मोरि बिसारी। पावा राज कोस पुर नारी।

१–४, ५, ६, जसि २

जेहि सायक मारा मैं बाली। तेहि सर हतउँ मूढ़ कहँ काली।
जासु कृपा छूटहिं मद मोहा। ताकहुँ उमा कि सपनेहु कोहा।
जानहिं यह चरित्र मुनि ज्ञानी। जिन्ह रघुबीर चरन रति मानी।
लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना। धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना॥
तब अनुजहि समुझावा रघुपति करुनासींव।
भय देखाइ लै आवहु तात सखा सुग्रीव॥१८॥

इहाँ पवनसुत हृदय बिचारा। रामकाजु सुग्रीव बिसारा।
निकट जाइ चरनन्हि सिरु नावा। चारिहु बिधि तेहि कहि समुझावा।
सुनि सुग्रीव परम भय माना। बिषय मोर हरि लीन्हेउ ग्याना।
अब मारुतसुत दूत समूहा। पठवहु जहँ तहँ बानर जूहा।
कहहु पाख महु आव न जोई। मोरें कर ताकर बध होई।
तब हनुमंत बोलाए दूता। सब कर करि सनमान बहूता।
भय अरु प्रीति नीति देखराई। चले सकल चरनन्हि सिरु नाई।
एहि अवसर लछिमनु पुर आए। क्रोध देखि जहँ तहँ कपि धाए॥
धनुष चढ़ाइ कहा तब जारि करौं पुर छार।
ब्याकुल नगरु देखि तब आएउ बालिकुमार॥१९॥

चरन नाइ सिरु बिनती कीन्ही। लछिमनु अभयबाँह तेहि दीन्ही।
क्रोधवंत लछिमन सुनि काना। कह कपीस अतिभय अकुलाना।
सुनु हनुमंत संग लै तारा। करि बिनती समुझाउ कुमारा।
तारा सहित जाइ हनुमाना। चरन बंदि प्रभु सुजस बखाना।
करि बिनती मंदिर लै आए। चरन पखारि पलँग बैठाए।
तब कपीस चरनन्हि सिरु नावा। गहि भुज लछिमन कंठ लगावा।
नाथ बिषय सम मद कछु नाहीं। मुनि मन मोह करै छन माहीं।
सुनत बिनीत बचन सुख पावा। लछिमन तेहि बहु बिधि समुझावा।
पवन तनय सब कथा सुनाई। जेहि बिधि गए दूत समुदाई॥

हरषि चले सुग्रीव तब अंगदादि कपि साथ।
रामानुज आगे करि आए जहँ रघुनाथ ॥ २० ॥

नाइ चरन सिरु कह कर जोरी। नाथ मोहि कछु नाहिन खोरी।
अतिसय प्रबल देव तव माया। छूटै राम करहु जौं दाया।
बिषय बस्य सुर नर मुनि स्वामी। मैं पाँवर पसु कपि अतिकामी।
नारि नयन सर जाहि न लागा। घोर क्रोध तम निसि जो जागा।
लोभ पास जेहि गर न बँधाया। सो नर तुम्ह समान रघुराया।
येह गुन साधन तें नहि होई। तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई।
तब रघुपति बोले मुसुकाई। तुम्ह प्रिय मोहि भरत जिमि भाई।
अब सोइ जतनु करहु मन लाई। जेहि बिधि सीता कै सुधि पाई ॥

येहि बिधि होत बतकही आए बानर जूथ।
नाना बरन सकल दिसि देखिअ कीस बरूथ ॥ २१ ॥

बानर कटक उमा मैं देखा। सो मूरुख जो करन चह लेखा।
आइ राम पद नावहिं माथा। निरखि बदनु सब होहिं सनाथा।
अस कपि एक न सेना माहीं। राम कुसल जेहि पूछा नाहीं।
यह कछु नहि प्रभु कइ अधिकाई। बिस्वरूप ब्यापक रघुराई।
ठाढ़े जहँ तहँ आयेसु पाई। कह सुग्रीव सबहि समुझाई।
राम काजु अरु मोर निहोरा। बानर जूथ जाहु चहुँ ओरा।
जनकसुता कहुँ खोजहु जाई। मास दिवस महँ आयेहु भाई।
अवधि मेटि जो बिनु सुधि पाए। आवइ बनिहि सो मोहि मराए ॥

बचन सुनत सब बानर जहँ तहँ चले तुरंत।
तब सुग्रीव बोलाए अंगद नल हनुमंत ॥ २२ ॥

सुनहु नील अंगद हनुमाना। जामवंत मतिधीर सुजाना।
सकल सुभट मिलि दच्छिन जाहू। सीता सुधि पूछेहु सब काहू।
मन क्रम बचन सो जतन बिचारेहु। रामचंद्र कर काजु सवाँरेहु।

मातु पीठि सेइअ उर आगी। स्वामिहि सर्व भाव छल त्यागी।
तजि माया, सेइअ परलोका। मिटहि सकल भव संभव सोका।
देह धरे कर येह फलु भाई। भजिअ राम सब काम बिहाई।
सोइ गुनज्ञ सोई बड़भागी। जो रघुबीर चरन अनुरागी।
आयेसु मागि चरन सिरु नाई। चले हरषि सुमिरत रघुराई।
पाछे पवन तनय सिरु नावा। जानि काजु प्रभु निकट बोलावा।
परसा सीस सरोरुह पानी। कर मुद्रिका दीन्ह जन जानी।
बहु प्रकार सीतहि समुझाअेहु। कहि बल बिरह बेगि तुम्ह आअेहु।
हनुमत जन्म सुफल करि माना। चलेउ हृदय धरि कृपानिधाना।
जद्यपि प्रभु जानत सब बाता। राजनीति राखत सुर त्राता॥

चले सकल बन खोजत सरिता सर गिरि खोह।
राम काज लय लीन मन बिसरा तन कर छोह॥ २३॥

कतहु होइ निसिचर सें भेटा। प्रान लेहिं अेक एक चपेटा।
बहु प्रकार गिरि कानन हेरहिं। कोउ मुनि मिलइ ताहि सब घेरहिं।
लागि तृषा अतिसय अकुलाने। मिलै न जल घन गहन भुलाने।
मन हनुमान कीन्ह अनुमाना। मरन चहत सब बिनु जल पाना।
चढ़ि गिरि सिखर चहूँ दिसि देखा। भूमि बिबर अेक कौतुक पेखा।
चक्रबाक बक हंस उड़ाहीं। बहुतक खग प्रबिसहिं तेहि माहीं।
गिरि ते उतरि पवनसुत आवा। सब कहुँ लै सोइ बिबर देखावा।
आगे कै हनुमंतहि लीन्हा। पैठे बिबर बिलंबु न कीन्हा॥

दीख जाइ उपवन बर सर बिकसित बहु कंज।
मंदिर एक रुचिर तहँ बैठि नारि तपपुंज॥ २४॥

दूरि ते ताहि सबन्हि सिरु नावा। पूछे निज बृत्तांत सुनावा।

१-३, ६; गुन ग्यान ४, ५.
२-४, ५, ६; घन ३.
२-४, ५. सरबर बिगसित बहु ६;
म? बिगसित बहुतक ३.

तेहि तब कहा करहु जल पाना। खाहु सुरस सुंदर फल नाना।
मज्जनु कीन्ह मधुर फल खाए। तासु निकट पुनि सब चलि आए।
तेहि सब आपनि कथा सुनाई। मैं अब जाब जहाँ रघुराई।
मूदहु नयन बिबर तजि जाहू। पैहहु सीतहि जनि पछिताहू।
नयन मूँदि पुनि देखहिं बीरा। ठाढ़े सकल सिंधु के तीरा।
सो पुनि गई जहाँ रघुनाथा। जाइ पद कमल नाएसि माथा।
नाना भाँति बिनय तेहि कीन्ही। अनपायनी भगति प्रभु दीन्ही॥

बदरीबन कहुँ सो गई प्रभु अग्या धरि सीस।
उर धरि राम चरन जुग जे बंदत अज ईस॥ २५॥

इहाँ बिचारहिं कपि मन माहीं। बीती अवधि काज कछु नाहीं।
सब मिलि कहहिं परस्पर बाता। बिनु सुधि लएँ करब का भ्राता।
कह अंगद लोचन भरि बारी। दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी।
इहाँ न सुधि सीता कै पाई। उहाँ गएँ मारिहि कपिराई।
पिता बधे पर मारत मोही। राखा राम निहोर न ओही।
पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं। मरन भएउ कछु संसय नाहीं।
अंगद बचन सुनत कपि बीरा। बोलि न सकहिं नयन बह नीरा।
छन एक सोच मगन होइ रहे। पुनि अस बचन कहत सब भए।
हम सीता कै सुधि लीन्हें बिना। नहिं जैहैं जुबराज प्रबीना।
अस कहि लवन सिंधु तट जाई। बैठे कपि सब दर्भ डसाई।
जामवंत अंगद दुख देखी। कही कथा उपदेस बिसेषी।
तात राम कहुँ नर जनि मानहु। निर्गुन ब्रह्म अजित अज जानहु।
हम सब सेवक अति बड़भागी। संतत सगुन ब्रह्म अनुरागी॥

निज इच्छा प्रभु अवतरइ सुर महि गो द्विज लागि।
सगुन उपासक संग तहँ रहहिं मोच्छ सब त्यागि॥ २६॥

१–३, ४, ५, कमलपद ६ २–४, ५, ६, अवतरइ प्रभु ३

ओहि बिधि कथा कहहिं बहु भाँती। गिरि कंदरा सुनी संपाती।
बाहेरि होइ देखि बहु कीसा। मोहि अहार दीन्ह जगदीसा।
आजु सबन्हि कहु भच्छन करऊँ। दिन बहु चलेउ अहार बिनु मरऊँ।
कबहु न मिलै भरि उदर अहारा। आजु दीन्ह बिधि एकहि बारा।
डरपे गीध बचन सुनि काना। अब भा मरन सत्य हम जाना।
कह अंगद बिचारि मन माहीं। धन्य जटायू सम कोउ नाहीं।
राम काज कारन तनु त्यागी। हरिपुर गअेउ परम बडभागी।
सुनि खग हरष सोक जुत बानी। आवा निकट कपिन्ह भय मानी।
तिन्हहि अभय करि पूछेसि जाई। कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई।
सुनि संपाति बंधु कै करनी। रघुपति महिमा बहु बिधि बरनी॥

मोहि लै जाहु सिंधु तट देउँ तिलांजलि ताहि।
बचन सहाइ करबि मइँ पैहहु खोजहु जाहि॥ २७॥

अनुज क्रिया करि सागर तीरा। कहि निज कथा सुनहु कपि बीरा।
हम द्वौ बंधु प्रथम तरुनाई। गगन गए रबि निकट उडाई।
तेज न सहि सक सो फिर आवा। मैं अभिमानी रबि निअरावा।
जरे पंख अति तेज अपारा। परेउ भूमि करि घोर चिकारा।
मुनि अेक नाम चंद्रमा ओही। लागी दया देखि करि मोही।
बहु प्रकार तेहि ज्ञान सुनावा। देह जनित अभिमान छडावा।
त्रेता ब्रह्म मनुज तनु धरिही। तासु नारि निसचर पति हरिही।
तासु खोज पठइहि प्रभु दूता। तिन्हहि मिले तैं होब पुनीता।
जमिहहिं पंख करसि जनि चिंता। तिन्हहि दिखाइ देहेसु तैं सीता।
मुनि कइ गिरा सत्य भइ आजू। सुनि मम बचन करहु प्रभु काजू।
गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका। तहँ रह रावन सहज असंका।
तहँ असोक उपबन जहँ रहई। सीता बैठि सोच रत अहई॥

१—४, ५, ६, मुना ३ — २—६, ५, ६ करु ३

मैं देखउँ तुम्ह नाही गीधहि दृष्टि अपार।
बूढ़ भयेउँ न त करतेउँ कछुक सहाय तुम्हार ॥ २८ ॥

जो नाघै सत जोजन सागर। करै सो राम काज मति आगर।
मोहि बिलोकि धरहु मन धीरा। राम कृपा कस भयेउ सरीरा।
पापिउ जाकर नाम सुमिरहीं। अति अपार भव सागर तरहीं।
तासु दूत तुम्ह तजि कदराई। रामु हृदय धरि करहु उपाई।
अस कहि गरुड़ गीध जब गयेऊ। तिन्ह के मन अति बिसमै भयेऊ।
निज निज बल सब काहू भाखा। पार जाइ कैं संसय राखा।
जरठ भयेउँ अब कहै रिछेसा। नहि तन रहा प्रथम बल लेसा।
जबहिं त्रिबिक्रम भए खरारी। तब मैं तरुन रहेउँ बल भारी ॥

बलि बाँधत प्रभु बाढ़ेउ सो तनु बरनि न जाइ।
उभय घरी महँ दीन्ही सात प्रदच्छिन धाइ ॥ २९ ॥

अंगद कहै जाउँ मैं पारा। जिय संसय कछु फिरती बारा।
जामवंत कह तुम्ह सब लायक। पठइअ किमि सबही कर नायक।
कहइ रिच्छपति सुनु हनुमाना। का चुप साधि रहेहु बलवाना।
पवन तनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिग्यान निधाना।
कवन सो काजु कठिन जग माहीं। जो नहि होइ तात तुम्ह पाहीं।
राम काज लगि तब अवतारा। सुनतहि भयेउ पर्बताकारा।
कनक बरन तन तेज बिराजा। मानहु अपर गिरिन्ह कर राजा।
सिंहनाद करि बारहि बारा। लीलहि नाघउँ जलनिधि खारा।
सहित सहाय रावनहि मारी। आनौं इहाँ त्रिकूट उपारी।
जामवंत मै पूछउँ तोही। उचित सिखावनु दीजहु मोही।
अेतना करहु तात तुम्ह जाई। सीतहि देखि कहहु सुधि आई।
तब निज भुज बल राजिवनयना। कउतुक लागि संग कपि सेना ॥

१-४, ५, ६; उमा ३. २-४, ५, ६; तात होइ ३.

कपि सेन संग सँघारि निसिचर रामु सीतहि आनिहं।
त्रैलोक पावन सुजसु सुर मुनि नारदादि बखानिहं।
जो सुनत गावत कहत समुभत परम पद नर पावई।
रघुबीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावई॥

भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे नर अरु नारि।
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिसिरारि[1] ॥ ३० ॥

नीलोपल[2] तन स्याम काम कोटि सोभा अधिक।
सुनिय तासु गुन ग्राम जासु नाम अघ खग बधिक॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने विशुद्धसंतोष सम्पादिनी नाम चतुर्थः सोपानः॥

॥ शुभमस्तु ॥

१–३, ४, ५; त्रिपुरारि ६.   २–३, ४, ५; नीलोत्पल ६.

रामचरितमानस
पंचम सोपान

श्रीगणेशाय नमः

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं गीर्वाण[1] शांतिप्रदं
ब्रह्माशंभुफणींद्रसेव्यमनिश वेदान्तवेद्यं विभुं ।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरि
वंदेहं करुनाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिं ।। १ ।।

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेस्मदीये सत्यं वदामि च भवानखिलांतरात्मा।
भक्ति प्रयच्छ रघुपुंगव निर्भरां मे कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ।।२।।

अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ।।३।।

जामवंत के बचन सुहाए । सुनि हनुमंत हृदय अति भाए ।
तब लगि मोहि परिखहु[2] तुम्ह भाई । सहि दुख कंद मूल फल खाई ।
जब लगि आवौं सीतहि देखी । होइहि[3] काजु मोहि हरप बिसेखी ।
अस कहि नाइ सबन्हि कहुँ माथा । चलेउ हरपि हिय धरि रघुनाथा ।
सिंधु तीर अेक भूधर सुंदर । कौतुक कूदि चढेउ ता ऊपर ।
बार बार -रघुबीर सँभारी । तरकेउ पवनतनय बल भारी ।
जेहि गिरि चरन देइ हनुमंता । चलेउ सो गा पाताल तुरंता ।
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना । एही[4] भाँति, चला हनुमाना ।
जलनिधि रघुपति दूत बिचारी । तइँ मैनाक होहि श्रमहारी ।।
हनूमान तेहि, परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम ।
राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम ।। १ ।।
जात पवनसुत देवन्ह देखा । जानैं कहुँ बल बुद्धि बिसेखा ।

१–४, ५, ६ निर्वाण २ — ३–३, ४, ५; होइ ६
२–३, ४, ५ परिखेहु ६. — ४–३, ४, ५, तेही ६

सुरसा नाम अहिन्ह[1] कै माता। पठइन्हि आइ कही तिहि बाता।
आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा। सुनत बचन कह पवनकुमारा।
राम काजु करि फिरि मैं आवौं। सीता कइ सुधि प्रभुहि सुनावौं।
तब तुअ बदन पइठिहौं आई। सत्य कहौं मोहि जान दे माई।
कवनेहु जतन देइ नहि जाना। ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना।
जोजन भरि तेहि बदनु पसारा। कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा।
सोरह जोजन मुख तेहि ठएऊ। तुरत पवनसुत बत्तिस भएऊ।
जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा। तासु दून कपि रूप देखावा।
सत जोजन तेहि आनन कीन्हा। अतिलघु रूप पवनसुत लीन्हा।
बदन पइठि पुनि बाहेर आवा। मागा बिदा ताहि सिरु नावा।
मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा। बुधि बल मरमु तोर मैं पावा॥

राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान।
आसिष देइ गई सो हरषि चलेउ हनुमान॥ २॥

निसिचरि एक सिंधु महुँ रहई। करि माया नभ के खग गहई।
जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं। जल बिलोकि तिन्ह कै परिछाहीं।
गहइ छाँह सक सो न उड़ाई। ऐहि बिधि सदा गगनचर खाई।
सोइ छल हनूमान कहँ कीन्हा। तासु कपटु कपि तुरतहि चीन्हा।
ताहि मारि मारुतसुत बीरा। बारिधि पार गएउ मतिधीरा।
तहाँ जाइ देखी बन सोभा। गुंजत चंचरीक मधु लोभा।
नाना तरु फल फूल सुहाए। खग मृग बृंद देखि मन भाए।
सैल बिसाल देखि एक आगे। तापर धाइ चढ़ेउ भय त्यागे।
उमा न कछु कपि कै अधिकाई। प्रभु प्रताप जो कालहि खाई।
गिरि पर चढ़ि लंका तेहि देखी। कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेखी।

१-२; अहिनन्ह ४, ५; अहिन ६. ३-४, ६; बदे ३, ५.
२-४, ५, ६; सो ३.

अति उतंग जलनिधि चहुँ पासा। कनककोट कर परम प्रकासा ॥

कनक कोट विचित्र मनिकृत सुंदरायतना घना।
चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथी चारु पुर बहु बिधि बना।
गज बाजि खच्चर निकर पदचर रथ बरूथन्हि को गनै।
बहु रूप निसिचर जूथ अति बल सेन बरनत नहिं बनै ॥
बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बापी सोहहीं।
नर नाग सुर गंधर्ब कन्या रूप मुनि मन मोहहीं।
कहुँ माल देह बिसाल सैल समान अति बल गर्जहीं।
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहु बिधि एक एकन्ह तर्जहीं ॥
करि जतन भट कोटिन्ह बिकट तन नगर चहुँ दिसि रच्छहीं।
कहुँ महिष मानुष धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीं।
ओहि लागि तुलसीदास इन्हकी कथा कछुअेक है कही।
रघुबीर सर तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहहिं सही ॥

पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह बिचार।
अतिलघु रूप धरौं निसि नगर करौं पइसार ॥ ३ ॥

मसक समान रूप कपि धरी। लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी।
नाम लंकिनी एक निसिचरी। सो कह चलेसि मोहि निंदरी।
जानेहिं नही मरमु सठ मोरा। मोर अहार जहाँ लगि चोरा।
मुठिका एक महाकपि हनी। रुधिर बमत धरनी ढनमनी।
पुनि संभारि उठी सो लंका। जोरि पानि कर बिनय ससंका।
जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा। चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा।
बिकल होसि तैं कपि कें मारें। तब जानेसु निसिचर संघारे।
तात मोर अति पुन्य बहूता। देखेउँ नयन राम कर दूता ॥

१-३ ४, बिकट बिकराल बहु ४, ५.

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिअ तुला ओक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग॥ ४॥

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदय राखि कोसलपुर राजा।
गरल सुधा रिपु करैं मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई।
गरुड़ सुमेरु रेनु सम ताही। राम कृपा करि चितवा जाही।
अति लघु रूप धरेउ हनुमाना। पैठा नगर सुमिरि भगवाना।
मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा। देखे जहँ तहँ अगनित जोधा।
गओउ दसानन मंदिर माहीं। अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं।
सयन किएँ देखा कपि तेही। मंदिर महुँ न दीखि बैदेही।
भवन एक पुनि दीख सुहावा। हरिमंदिर तहँ भिन्न बनावा॥

रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ।
नव तुलसिका बृंद तहँ देखि हरष कपिराइ॥ ५॥

लंका निसिचर निकर निवासा। इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा।
मन महुँ तरक करैं कपि लागा। तेहीं समय बिभीषनु जागा।
राम राम तेहि सुमिरन कीन्हा। हृदय हरष कपि सज्जन चीन्हा।
ओहि सन हठि करिहौं पहिचानी। साधु ते होइ न कारज हानी।
बिप्र रूप धरि बचन सुनाए। सुनत बिभीषन उठि तहँ आए।
करि प्रनामु पूछी कुसलाई। बिप्र कहहु निज कथा बुझाई।
की तुम्ह हरि दासन्ह महँ कोई। मोरें हृदय प्रीति अति होई।
की तुम्ह रामु दीन अनुरागी। आओहु मोहि करन बड़भागी॥

तब हनुमंत कही सब राम कथा निज नाम।
सुनत जुगल तन पुलक मन मगन सुमिरि गुन ग्राम॥ ६॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी। जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी।
तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा। करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा।
तामस तनु कछु साधन नाहीं। प्रीति न पद सरोज मन माहीं।

.माहिं भा भरोस हनुमंता । बिनु हरि कृपा मिलहिं नहि संता ।
रघुबीर अनुग्रह कीन्हा । तौ तुम्ह मोहि दरसु हठि दीन्हा ।
ुनहु बिभीषन प्रभु कइ रीती । करहिं सदा सेवक पर प्रीती ।
कहहु कवन मैं परम कुलीना । कपि चंचल सबहीं बिधि हीना ।
ात लेइ जो नाम हमारा । तेहि दिन ताहि[1] न मिलै अहारा ॥

अस मैं अधम सखा सुनु मोहू पर रघुबीर ।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन भरे बिलोचन नीर ॥ ७ ॥

ानतहूँ अस स्वामि बिसारी । फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी ।
ेहि बिधि कहत राम गुन ग्रामा । पावा अनिर्वाच्य बिश्रामा ।
ुनि सब कथा बिभीषन कही । जेहि बिधि जनकसुता तहँ रही ।
ब हनुमंत कहा सुनु भ्राता । देखी चहौं जानकी माता ।
ुगुति बिभीषन सकल सुनाई । चलेउ पवनसुत बिदा कराई ।
रि सोइ रूप गएउ पुनि तहवाँ । बन असोक सीता रह जहवाँ ।
खि मनहि महुँ कीन्ह प्रनामा । बैठेहि बीति जात निसि जामा ।
ृसतनु सीस जटा ओक बेनी । जपति हृदय रघुपति गुन श्रेनी ॥

निज पद नयन दिएँ मन राम चरन महु[2] लीन ।
परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकी दीन ॥ ८ ॥

रु पल्लव महुँ रहा लुकाई । करै बिचार करौं का भाई ।
हि अवसर रावनु तहँ आवा । संग नारि बहु किए बनावा ।
हु बिधि खल सीतहि समुझावा । साम दान भय भेद देखावा ।
ह रावनु सुनु सुमुखि सयानी । मंदोदरी आदि सब रानी ।
व अनुचरीं करौं पन मोरा । एक बार बिलोकु मम ओरा ।
ृन धरि ओट कहति बैदेही । सुमिरि अवधपति परम सनेही ।
ुनु दसमुख खद्योत प्रकासा । कबहुँ कि नलिनी करइ बिकासा ।

---

[1] १–३, ६, माहि ४, ५. [2] २–४, ५, ६; कमल पद ३

अस मन समुझु कहति जानकी । खल सुधि नहि रघुबीर बान की ।
सठ सूनें हरि आनेहि मोही । अधम निलज्ज लाज नहि तोही ॥

आपुहि सुनि खद्योत सम रामहि भानु समान ।
परुप बचन सुनि काढ़ि असि बोला अति खिसिआन ॥ ९ ॥

सीता तैं मम कृत अपमाना । कटिहौं तव सिर कठिन[1] कृपाना ।
नाहि त सपदि मानु मम बानी । सुमुखि होति न त जीवन हानी ।
स्याम सरोज दाम सम सुंदर । प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर ।
सो भुज कंठ कि तव असि घोरा । सुनु सठ अस प्रवान पन[2] मोरा ।
चंद्रहास हरु मम परितापं । रघुपति बिरह अनल संजातं ।
सीतल निसि तव असि[3] बर धारा । कह सीता हरु मम दुख भारा ।
सुनत बचन पुनि मारन धावा । मयतनयाँ कहि नीति बुझावा ।
कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई । सीतहि बहु बिधि त्रासहु जाई ।
मास दिवस महुँ कहा न माना । तौ मैं मारबि काढ़ि कृपाना ॥

भवन गएउ दसकंधर इहाँ पिसाचिनि बृंद ।
सीतहि त्रास देखावहिं धरहिं रूप बहु मंद ॥ १० ॥

त्रिजटा नाम राछसी एका । राम चरन रति निपुन बिबेका ।
सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना । सीतहि सेइ करहु हित अपना ।
सपने बानर लंका जारी । जातुधान सेना सब मारी ।
खर आरूढ़ नगन दससीसा । मुंडित सिर खंडित भुज बीसा ।
एहि बिधि सो दच्छिन दिसि जाई । लंका मनहु बिभीषन पाई ।
नगर फिरी रघुबीर दोहाई । तब प्रभु सीता[4] बोलि पठाई ।
येह सपना मैं कहौं पुकारी । होइहि सत्य गएँ दिन चारी ।
तासु बचन सुनि ते सब डरीं । जनकसुता के चरनन्हि परीं ॥

१–२, ४, ५; काढ़ि ६. ३–४, ५, ६; इवि २.
२–२; प्रमान पन ६; प्रवान मन ४,५. ४–२, ४, ५; सीतहि ६.

जहँ तहँ गईं सकल तब सीता कर मन सोच।
मास दिवस बीतें मोहि मारिहि निसिचर पोच ॥ ११ ॥

त्रिजटा मन बोलीं कर जोरी। मातु बिपति सगिनि तइँ मोरी।
तजौं देह करु बेगि उपाई। दुसह बिरहु अब नहि सहि जाई।
आनि काठ रचु चिता बनाई। मातु अनल पुनि देहि लगाई।
सत्य करहि मम प्रीति सयानी। सुनै को श्रवन सूल सम बानी।
सुनत बचन पद गहि समुझाएसि। प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि।
निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी। अस कहि सो निज भवन सिधारी।
कह सीता बिधि भा प्रतिकूला। मिलहि न पावक मिटहि न सूला।
देखिअत प्रगट गगन अंगारा। अवनि न आवत एकौ तारा।
पावकमय ससि स्रवत न आगी। मानहु मोहि जानि हतभागी।
सुनहि बिनय मम बिटप असोका। सत्य नाम करु हरु मम सोका।
नूतन किसलय अनल समाना। देहि अगिनि तन करहि निदाना।
देखि परम बिरहाकुल सीता। सो छन कपिहि कलप सम बीता ॥

कपि करि हृदय बिचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब।
जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ ॥ १२ ॥

तब देखी मुद्रिका मनोहर। राम नाम अंकित अति सुंदर।
चकित चितव मुदरी पहिचानी। हरष बिषाद हृदय अकुलानी।
जीति को सकै अजय रघुराई। माया तें असि रचि नहि जाई।
सीता मन बिचार कर नाना। मधुर बचन बोलेउ हनुमाना।
रामचंद्र गुन बरनैं लागा। सुनतहि सीता कर दुख भागा।
लागीं सुनैं श्रवन मन लाई। आदिहु तें सब कथा सुनाई।
श्रवनामृत जेहि कथा सुहाई[2]। कही सो प्रगट होति किन भाई।
तब हनुमंत निकट चलि गएऊ। फिर बैठीं मन बिसमय भएऊ।

१–४, ५, ‹नि ३, ६. २–४, ५, सुहाई, कहि ३, सुनाई, कहि ६.

राम दूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करुना निधान की।
यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी।
नर बानरहि संग कहु कैसें। कही कथा भै संगति जैसें॥

कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास।
जाना मन क्रम बचन येह कृपासिंधु कर दास॥ १३॥

हरिजन जानि प्रीति अति बाढ़ी[1]। सजल नयन पुलकावलि ठाढ़ी[1]।
बूडत बिरह जलधि हनुमाना। भएहु तात मो कहुँ जलजाना।
अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी। अनुज सहित सुख भवन खरारी।
कोमल चित कृपालु रघुराई। कपि केहि हेतु धरी निठुराई।
सहज बानि सेवक सुख दायक। कबहुँक सुरति करत रघुनायक।
कबहुँ नयन मम सीतल ताता। होइहहिं निरखि स्याम मृदु गाता।
बचनु न आव नयन भरे[2] बारी। अहह नाथ हौं निपट बिसारी।
देखि परम बिरहाकुल सीता। बोला कपि मृदु बचन बिनीता।
मातु कुसल प्रभु अनुज समेता। तव दुख दुखी सुकृपानिकेता।
जनि जननी मानहु जिय[3] ऊना। तुम्ह ते प्रेमु राम कें दूना॥

रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर।
अस कहि कपि गदगद भएउ भरे बिलोचन नीर॥ १४॥

कहेउ राम बियोग तव सीता। मो कहु सकल भए बिपरीता।
नव तरु किसलय मनहुँ कृसानू। कालनिसा सम निसि ससि भानू।
कुबलय बिपिन कुंत बन सरिसा। बारिद तपत तेल जनु बरिसा।
जे हित[4] रहे करत तेइ पीरा। उरग स्वास सम त्रिबिध समीरा।
कहेहू तें कछु दुख घटि होई। काहि कहौं येह जान न कोई।
तत्त्व प्रेम कर मम अरु तोरा। जानत प्रिया एकु मनु मोरा।

१–२, ६, अति गाढ़ी, बाढ़ी ४, ५. ३–२, ४, ५, मन ६
२–३, ४, ५, भरि ६ ४–३, ४, ५, जेहि तव ६

सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं। जासु प्रीति रस अेतनेहि माहीं।
प्रभु संदेसु सुनत बैदेही। मगन प्रेम तन सुधि नहि तेही।
कह कपि हृदय धीर धरु माता। सुमिरु[१] राम सेवक सुख दाता।
उर आनहु रघुपति प्रभुताई। सुनि मम बचन तजहु कदराई॥
निसिचर निकर पतंग सम रघुपति बान कृसानु।
जननी हृदय धीर धरु जरे निसाचर जानु॥ १५॥

जौ रघुबीर होति सुधि पाई। करते नहि बिलंबु रघुराई।
राम बान रबि उए जानकी। तम बरूथ कहँ जातुधान की।
अबहिं मातु मैं जाउँ लवाई। प्रभु आअेसु नहि राम दोहाई।
कछुक दिवस जननी धरु धीरा। कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा।
निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं। तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहिं।
हैं सुत कपि सब तुम्हहि[२] समाना। जातुधान अति भट बलवाना।
मोरें हृदय परम संदेहा। सुनि कपि प्रगट कीन्हि निज देहा।
कनकभूधराकार सरीरा। समर भयंकर अतिबल बीरा।
सीता मन भरोस तब भयेऊ। पुनि लघु रूप पवनसुत लयेऊ॥
सुनु माता साखामृग नहि बल बुद्धि बिसाल।
प्रभु प्रताप तें गरुड़हि खाइ परम लघु ब्याल॥ १६॥

मन संतोष सुनत कपि बानी। भगति प्रताप तेज बल सानी।
आसिष दीन्हि राम प्रिय जाना। होहु तात बल सील निधाना।
अजर अमर गुन निधि सुत होहू। करहुँ बहुत रघुनायक छोहू।
करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना। निर्भर प्रेम मगन हनुमाना।
बार बार नाअेसि पद सीसा। बोला बचन जोरि कर कीसा।
अब कृतकृत्य भअेउँ मैं माता। आसिष तव अमोघ बिख्याता।
सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा। लागि देखि सुंदर फल रूखा।

१–२, ४, ५; सुमिरि ६ २–४ ५, तुम्हहि ३, तुम्हहिं ६

सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी । परम सुभट रजनीचर भारी[1] ।
तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं । जौं तुम्ह सुख मानहु मन माहीं ॥

देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकी जाहु ।
रघुपति चरन हृदय धरि तात मधुर फल खाहु ॥ १७ ॥

चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा । फल खाएसि तरु तोरैं लागा ।
रहे तहाँ बहु भट रखवारे । कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ।
नाथ एक आवा कपि भारी । तेहि असोक बाटिका उजारी ।
खाएसि फल अरु बिटप उपारे । रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे ।
सुनि रावन पठए[2] भट नाना । तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना ।
सब रजनीचर कपि संघारे । गए पुकारत कछु अधमारे ।
पुनि पठयउ तेहि अच्छकुमारा । चला संग लै सुभट अपारा ।
आवत देखि बिटप गहि तर्जा । ताहि निपाति महाधुनि गर्जा ॥

कछु मारेसि कछु मर्देसि कछु मिलयेसि धरि धूरि ।
कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु, मर्कट बल भूरि ॥ १८ ॥

सुनि सुत बध लंकेस रिसाना । पठएसि मेघनाद बलवाना ।
मारसि जनि सुत बाँधेसु ताही । देखिअ कपिहि कहाँ कर आही ।
चला इंद्रजित अतुलित जोधा । बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा ।
कपि देखा दारुन भट आवा । कटकटाइ गर्जा अरु धावा ।
अतिबिसाल तरु एक उपारा । बिरथ कीन्ह लंकेस कुमारा ।
रहे महा भट ताके संगा । गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगा ।
तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा । भिरे जुगल मानहु गजराजा ।
मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई । ताहि एक छन मुरुछा आई ।
उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया । जीति न जाइ प्रभंजनजाया ॥

ब्रह्म अस्त्र तेहिं साधा कपि मन कीन्ह बिचार ।
जौं न ब्रह्म सर मानौं महिमा मिटइ अपार ॥ १९ ॥

१—४, ५, ६ भारी ३ २—४, ५ पठए १, ६

ब्रह्मबान कपि कहुँ तेहि मारा। परतिहुँ बार कटकु संघारा।
तेहि देखा कपि मुरुछित भयेऊ। नागपास बाँधेसि लै गयेऊ।
जासु नाम जपि सुनहु भवानी। भव बंधन काटहिं नर ज्ञानी।
तासु दूत कि बंध तर आवा। प्रभु कारज लगि कपिहि बँधावा।
करि बंधन सुनि निसिचर धाए। कौतुक लागि सभा सब आए।
दसमुख सभा दीखि कपि जाई। कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई।
कर जोरे सुर दिसिप बिनीता। भृकुटि बिलोकत सकल सभीता।
देखि प्रताप न कपि मन संका। जिमि अहिगन महुँ गरुड़ असंका॥

कपिहि बिलोकि दसानन बिहसा कहि दुर्बाद।
सुत बध सुरति कीन्हि पुनि उपजा हृदय बिषाद॥ २०॥

कह लंकेस कवन तइँ कीसा। केहि के बल घालेहि बन खीसा।
की धौं श्रवन सुने नहिं मोही। देखौं अति असंक सठ तोही।
मारे निसिचर केहि अपराधा। कहु सठ तोहि न प्रान कै बाधा।
सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया। पाइ जासु बल बिरचति माया।
जाके बल बिरंचि हरि ईसा। पालत सृजत हरत दससीसा।
जा बल सीस धरत सहसानन। अंडकोस समेत गिरि कानन।
धरै जो बिबिध देह सुरत्राता। तुम्ह से सठन्ह सिखावनु दाता।
हरकोदंड कठिन जेहि भंजा। तोहि समेत नृप दल मद गंजा।
खर, दूषन त्रिसिरा अरु बाली। बधे सकल अतुलित बलसाली॥

जा के बल लवलेस ते जितेहु चराचर झारि।
तासु दूत मैं, जा करि हरि आनिहु प्रियनारि॥ २१॥

जानउँ मै तुम्हारि प्रभुताई। सहसबाहु सन परी लराई।
समर बालि सन करि जसु पावा। सुनि कपि बचन बिहसि बहरावा।
खाऔउँ फल प्रभु लागी भूखा। कपि सुभाव ते तोरेउँ रूखा।
सब के देह परम प्रिय स्वामी। मारहिं मोहि कुमारगगामी।

जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे । तेहि पर बाँधेउ तनय तुम्हारे ।
मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा । कीन्ह चहौं निज प्रभु कर काजा ।
बिनती करौं जोरि कर रावन । सुनहु मान तजि मोर सिखावन ।
देखहु तुम्ह निज कुलहि बिचारी । भ्रम तजि भजहु भगत भयहारी ।
जा के डर अति काल डेराई । जो सुर असुर चराचर खाई ।
ता सों बयरु कबहु नहि कीजे । मोरे कहे जानकी दीजे ॥

प्रनत पाल रघुनायक करुनासिंधु खरारि ।
गए सरन प्रभु राखिहैं तव अपराध बिसारि ॥ २२ ॥

राम चरन पंकज उर धरहू । लंका अचल राजु तुम्ह करहू ।
रिषि पुलस्ति जसु बिमल मयंका । तेहि ससि महु जनि होहु कलंका ।
राम नाम बिनु गिरा न सोहा । देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ।
बसन हीन नहि सोह सुरारी । सब भूषन भूषित बर नारी ।
राम बिमुख संपति प्रभुताई । जाइ रही पाई बिनु पाई ।
सरित मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं । बरषि गए पुनि तबहि सुखाहीं ।
सुनु दसकंठ कहौं पन रोपी । बिमुख राम त्राता नहि कोपी ।
संकर सहस बिष्णु अज तोही । सकहिं न राखि राम कर द्रोही ॥

मोह मूल बहु सूल प्रद त्यागहु तम अभिमान ।
भजहु राम रघुनायक कृपासिंधु भगवान ॥ २३ ॥

जदपि कही कपि अतिहित बानी । भगति बिबेक बिरति नय सानी ।
बोला बिहसि महा अभिमानी । मिला हमहि कपि गुर बड़ ग्यानी ।
मृत्यु निकट आई खल तोही । लागेसि अधम सिखावन मोही ।
उलटा होइहि कह हनुमाना । मतिभ्रम तोहि प्रगट मैं जाना ।
सुनि कपि बचन बहुत खिसिआना । बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राना ।
सुनत निसाचर मारन धाए । सचिवन्ह सहित बिभीषन आए ।

१-४, ५, ६; सजल ३.

नाइ सीस करि बिनय बहूता। नीति बिरोध न मारिय दूता।
आन दंड कछु करिअ गोसाईं। सबहीं कहा मंत्र भल भाई।
सुनत बिहसि बोला दसकंधर। अंग भंग करि पठइअ बंदर॥

कपि कै ममता पूँछि पर सबहि कहौं समुझाइ।
तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ॥ २४॥

पूँछ हीन बानर तहँ जाइहि। तब सठ निज नाथहि लइ आइहि।
जिन्ह कै कीन्हिसि बहुत बड़ाई। देखौं मैं तिन्ह कै प्रभुताई।
बचन सुनत कपि मन मुसुकाना। भइ सहाय सारद मैं जाना।
जातुधान सुनि रावन बचना। लागे रचैं मूढ़ सोइ रचना।
रहा न नगर बसन घृत तेला। बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला।
कौतुक कहँ आए पुरबासी। मारहिं चरन करहिं बहु हाँसी।
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी। नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी।
पावक जरत देखि हनुमंता। भयेउ परम लघु रूप तुरंता।
निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारीं। भईं सभीत निसाचर नारीं॥

हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास।
अट्टहास करि गर्जा कपि बढ़ि लाग अकास॥ २५॥

देह बिसाल परम हरुआई। मंदिर तें मंदिर चढ़ धाई।
जरइ नगर भा लोग बिहाला। झपट लपट बहु कोटि कराला।
तात मातु हा सुनिअ पुकारा। ऐहि अवसर को हमहि उबारा।
हम जो कहा येह कपि नहिं होई। बानर रूप धरे सुर कोई।
साधु अवज्ञा कर फल ऐसा। जरै नगर अनाथ कर जैसा।
जारा नगरु निमिष ऐक माहीं। एक बिभीषन कर गृह नाहीं।
ताकर दूत अनल जेहि सिरिजा। जरा न सो तेहि कारन गिरिजा।
उलटि पलटि लंका सब जारी। कूदि परा पुनि सिंधु मझारी॥

१-४, ५, कहौं ३, कहा ६.

पूँछ बुझाइ खोइ स्रम धरि लघु रूप बहोरि।
जनकसुता के आगे ठाढ़ भयेउ कर जोरि॥ २६॥

मातु मोहि दीजे किछु चीन्हा। जैसे रघुनायक मोहि दीन्हा।
चूड़ामनि उतारि तब दयेऊ। हरख समेत पवनसुत लयेऊ।
कहेहु तात अस मोर प्रनामा। सब प्रकार प्रभु पूरन कामा।
दीन दयालु बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी।
तात सक्रसुत कथा सुनायेहु। बान प्रताप प्रभुहि समुझायेहु।
मास दिवस महँ नाथ न आवा[1]। तौ पुनि मोहि जिअत नहि पावा[1]।
कहु कपि केहि बिधि राखौं प्राना। तुम्हहूँ तात कहत अब जाना।
तोहि देखि सीतलि भइ छाती। पुनि मो कहु सो दिन सो राती॥

जनकसुतहि समुझाइ करि बहु बिधि धीरजु दीन्ह।
चरन कमल सिरु नाइ कपि गवनु राम पहि कीन्ह॥ २७॥

चलत महा धुनि गर्जेसि भारी। गर्भ स्रवहिं सुनि निसिचर नारी।
नाघि सिंधु ओहि पारहि आवा। सबद किलकिला कपिन्ह सुनावा।
हरषे सब बिलोकि हनुमाना। नूतन जनम कपिन्ह तब जाना।
मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा। कीन्हेसि रामचंद्र कर काजा।
मिले सकल अति भए सुखारी। तलफत मीन पाव जिमि[2] बारी।
चले हरषि रघुनायक पासा। पूछत कहत नवल इतिहासा।
तब मधुबन भीतर सब आए। अंगद संमत मधुफल खाए।
रखवारे जब बरिजइ[3] लागे। मुष्टि प्रहार हनत सब भागे॥

जाइ पुकारे ते सब बन उजार जुबराज।
सुनि सुग्रीव हरष कपि करि आए प्रभु काज॥ २८॥

जौ न होति सीता सुधि पाई। मधुबन के फल सकहिं कि खाई।

१–३, ४, ६; आवै; पावै ५. ३–३, ४, ५ बरजै ६.
२–४, ५ ६, जनु ३

येहि बिधि मन बिचार कर राजा। आइ गए कपि सहित समाजा।
आइ सबन्हि नावा पद सीसा। मिलेउ सबन्हि अति प्रीति कपीसा।
पूछी कुसल कुसल पद देखी। राम कृपा भा काजु बिसेखी।
नाथ काजु कीन्हेउ हनुमाना। राखे सकल कपिन्ह के प्राना।
सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ। कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेऊ।
राम कपिन्ह जब आवत देखा। किए काजु मन हरप बिसेखा।
फटिक सिला बैठे द्वौ भाई। परे सकल कपि चरनन्हि जाई॥

प्रीति सहित सब भेंट रघुपति करुना पुंज।
पूछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज॥ २९॥

जामवंत कह सुनु रघुराया। जापर नाथ करहु तुम्ह दाया।
ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर। सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर।
सोइ बिजई बिनई गुन सागर। तासु सुजसु त्रैलोक उजागर।
प्रभु की कृपा भयेउ सबु काजू। जन्म हमार सुफल भा आजू।
नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी। सहसहु मुख न जाइ सो बरनी।
पवनतनय के चरित सुहाए। जामवंत रघुपतिहि सुनाए।
सुनत कृपानिधि मन अति भाए। पुनि हनुमान हरपि हिय लाए।
कहहु तात केहि भांति जानकी। रहति करति रच्छा स्वप्रान की॥

नाम पाहरू राति दिनु[1] ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहि बाट॥ ३०॥

चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही। रघुपति हृदय लाइ सोइ लीन्ही।
नाथ जुगल लोचन भरि बारी। बचन कहे कछु जनककुमारी।
अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना। दीन बंधु प्रनतारति हरना।
मन क्रम बचन चरन अनुरागी। केहि अपराध नाथ हौं त्यागी।
अवगुन एक मोर मैं माना। बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना।

१–४, ५, ६ प्रेम ३   २–४, ५, ६ दिवस निसि ३

सो नयनन्हि कर अपराधा । निसरत प्रान करहिं हठि बाधा ।
बिरह अगिनि तनु तूल समीरा । स्वास जरइ छन माह सरीरा ।
नयन स्रवहि जलु निज हित लागी । जरै न पाव देह बिरहागी ।
सीता कै अति बिपति-बिसाला । बिनहि कहें भलि दीन दयाला ॥

निमिष निमिष करुनानिधि जाहिं कलप सम बीति ।
बेगि चलिय प्रभु आनिय भुज बल खल दल जीति ॥ ३१ ॥

सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना । भरि आए जल राजिव नयना ।
बचन काय मन मम गति[१] जाही । सपनेहु बूझिय बिपति कि ताही ।
कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई । जब तव सुमिरन भजनु न होई ।
केतिक बात प्रभु जातुधान की । रिपुहि जीति आनिबी जानकी ।
सुनु कपि तोहि समान उपकारी । नहि कोउ सुर नर मुनि तनुधारी ।
प्रतिउपकार करौं का तोरा । सनमुख होइ न सकत मन मोरा ।
सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाही । देखेउँ करि बिचार मन माहीं ।
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता । लोचन नीर पुलक अति गाता ॥

सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत ।
चरन परेउ प्रेमाकुल-त्राहि त्राहि भगवंत ॥ ३२ ॥

बार बार प्रभु चहै उठावा । प्रेम मगन तेहि उठब न भावा ।
प्रभु कर पंकज कपि के सीसा । सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा ।
सावधान मन करि पुनि संकर । लागे कहन कथा अति सुंदर ।
कपि उठाइ प्रभु हृदय लगावा । कर गहि परम निकट बैठावा ।
कहु कपि रावन पालित लंका । केहि बिधि दहेहु दुर्ग अति बंका ।
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना । बोला बचन बिगत अभिमाना ।
साखामृग कै बडि मनुसाई । साखा-ते साखा पर जाई ।
नाँघि सिंधु हाटकपुर जारा । निसिचर गन बधि बिपिन उजारा ।

१–३, ६, मति ४, ५

सो सब तव प्रताप रघुराई। नाथ न कछू मोरि प्रभुताई॥
ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम्ह अनुकूल।
तव प्रभाव[१] बड़वानलहि जारि सकै खलु तूल॥ ३३॥
नाथ भगति अति सुखदायनी। देहु कृपा करि अनपायनी।
सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी। एवमस्तु तब कहेउ भवानी।
उमा राम सुभाउ जेहि जाना। ताहि भजनु तजि भाव न आना।
येह संबाद जासु उर आवा। रघुपति चरन भगति सोइ पावा।
सुनि प्रभु बचन कहहिं कपिबृंदा। जय जय जय कृपालु सुखकंदा।
तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा। कहा चलै कर करहु बनावा।
अब बिलंबु केहि कारन कीजै। तुरत कपिन्ह कहु आयसु दीजै।
कौतुक देखि सुमन बहु बरषी। नभ ते भवन चले सुर हरषी॥
कपिपति बेगि बोलाए आए जूथप जूथ।
नाना बरन अतुल बल बानर भालु बरूथ॥ ३४॥
प्रभु पद पंकज नावहिं सीसा। गर्जहिं भालु महाबल कीसा।
देखी राम सकल कपि सेना। चितइ कृपा करि राजिवनयना।
राम कृपा बलु पाइ कपिंदा। भए पच्छजुत मनहु गिरिंदा।
हरषि राम तब कीन्ह पयाना। सगुन भए सुंदर सुभ नाना।
जासु सकल मंगलमय कीती। तासु पयान सगुन येह नीती।
प्रभु पयान जाना बैदेही। फरकि बाम अँग जनु कहि देही।
जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई। असगुन भयेउ रावनहि सोई।
चला कटकु को बरनै पारा। गर्जहिं बानर भालु अपारा।
नख आयुध गिरि पादप धारी। चले गगन महि इच्छाचारी।
केहरि नाद भालु कपि करहीं। डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं॥

१–३, ४, ५, प्रताप ६

चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खरभरे।
मन हरष दिनकर सोम सुर मुनि नाग किन्नर दुख टरे।
कटकटहिं मर्कट बिकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं।
जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुन गन गावहीं॥
सहि सक न भार उदार अहिपति बार बारहि मोहई।
गह दसन पुनि पुनि कमठ पृष्ठ कठोर सो किमि सोहई।
रघुबीर रुचिर पयान प्रस्थिति जानि परम सुहावनी।
जनु कमठ खर्पर सर्पराज सो लिखत अबिचल पावनी॥
येहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर।
जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर॥ ३५॥

उहाँ निसाचर रहहिं ससंका। जब ते जारि गअेउ कपि लंका।
निज निज गृह सब करहिं बिचारा। नहि निसिचर कुल केर उबारा।
जासु दूत बल बरनि न जाई। तेहि आए पुर कवन भलाई।
दूतिन्ह सन सुनि पुरजन बानी। मंदोदरी अधिक अकुलानी।
रहसि जोरि कर पति पद लागी। बोली बचन नीति रस पागी।
कंत करष हरि सन परिहरहू। मोर कहा अतिहित हिय धरहू।
समुझत जासु दूत कइ करनी। स्रवहि गर्भ रजनीचर घरनी।
तासु नारि निज सचिव बोलाई। पठवहु कंत जो चहहु भलाई।
तव कुल कमल बिपिन दुखदाई। सीता सीत निसा सम आई।
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हे। हित न तुम्हार संभु अज कीन्हे॥
राम बान अहिगन सरिस निकर निसाचर भेक।
जब लगि ग्रसत न तब लगि जतनु करहु तजि टेक॥ ३६॥

स्रवन सुनी सठ ताकरि बानी। बिहसा जगत बिदित अभिमानी।
सभय सुभाव नारि कर साँचा। मंगल महुँ भय मन अतिकाँचा।
जौं आवै मर्कट कटकाई। जिअहिं बिचारे निसिचर खाई।

कंपहिं लोकप जाकी त्रासा। तासु नारि सभीत बड़ि हासा।
अस कहि बिहसि ताहि उर लाई। चलेउ सभा ममता अधिकाई।
मंदोदरी हृदय कर चिंता। भएउ कंत पर बिधि बिपरीता।
बैठेउ सभा खबरि असि पाई। सिंधु पार सेना सब आई।
बूझेसि सचिव उचित मत कहहू। ते सब हँसे मष्ट करि रहहू।
जितेहु सुरासुर तब स्रम नाहीं। नर बानर केहि लेखे माहीं॥
सचिव बैद गुर तीनि जो प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिही नास॥ ३७॥

सोइ रावन कहुँ बनी सहाई। अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई।
अवसर जानि बिभीषनु आवा। भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा।
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन। बोला बचन पाइ अनुसासन।
जो कृपाल पूँछेहु मोहि बाता। मति अनुरूप कहौं हित ताता।
जो आपन चाहइ[1] कल्याना। सुजसु सुमति सुभगति सुख नाना।
सो पर नारि लिलारु गोसाईं। तजौ[2] चौथि के चंद कि नाईं।
चौदह भुवन एक पति होई। भूत द्रोह तिष्ठै नहिं सोई।
गुन सागर नागर नर जोऊ। अलप लोभ भल कहै न कोऊ॥
काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं[3] जेहि संत॥ ३८॥

तात राम नहिं नर भूपाला। भुवनेस्वर कालहु कर काला।
ब्रह्म अनामय अज भगवंता। ब्यापक अजित[4] अनादि अनंता।
गो द्विज धेनु देव हितकारी। कृपासिंधु मानुष तनु धारी।
जन रंजन भंजन खल ब्राता। बेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता।
ताहि बयरु तजि नाइअ माथा। प्रनतारति भंजन रघुनाथा।

१–६, चहह ३, ४, ५ ३–३, ६, भज भजही ४, ५.
२–३, ४, ५, तजे ६ ४–३ ६, अजित ४, ५.

देहु नाथ प्रभु कहँ बैदेही। भजहु राम बिनु हेतु सनेही।
सरन गए प्रभु ताहु न त्यागा। बिस्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा।
जासु नाम त्रय ताप नसावन। सोइ प्रभु प्रगट समुझु जिय रावन॥
बार बार पद लागउँ बिनय करउँ दससीस।
परिहरि मान मोह मद भजहु कोसलाधीस॥
मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन कहि पठई येह बात।
तुरत सो मैं प्रभु सन कही पाइ सुअवसरु तात॥ ३९॥

माल्यवंत अति सचिव सयाना। तासु बचन सुनि अति सुख माना।
तात अनुज तव नीति बिभूषन। सो उर धरहु जो कहत बिभीषन।
रिपु उतकर्ष कहत सठ दोऊ। दूरि न करहु इहाँ हइ कोऊ।
माल्यवंत गृह गअेउ बहोरी। कहइ बिभीषनु पुनि कर जोरी।
सुमति कुमति सबके उर रहहीं। नाथ पुरान निगम अस कहहीं।
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना। जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना।
तव उर कुमति बसी बिपरीता। हित अनहित मानहु रिपु प्रीता।
कालराति निसिचर कुल केरी। तेहि सीता पर प्रीति घनेरी॥
तात चरन गहि मागौं राखहु मोर दुलार।
सीता देहु राम कहुँ अहित न होइ तुम्हार॥ ४०॥

बुध पुरान श्रुति संमत बानी। कही बिभीषन नीति बखानी।
सुनत दसानन उठा रिसाई। खल तोहि निकट मृत्यु अब आई।
जियसि सदा सठ मोर जिआवा। रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा।
कहसि न खल अस को जग माही। भुजबल जाहि जिता मैं नाही।
मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती। सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती।
अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा। अनुज गहे पद बारहि बारा।
उमा संत कइ इहइ बड़ाई। मंद करत जो करैं भलाई।

१–४, ५, ६; सब ३.   २–३, ४, ५, जेहि अंता ६

तुम्ह पितु सरिस भलेहि मोहि मारा। राम भजे हित नाथ तुम्हारा।
सचिव संग लै नभ पथ गअेऊ। सबहि सुनाइ कहत अस भअेऊ॥
रामु सत्य संकल्प प्रभु सभा काल बस तोरि।
मैं रघुबीर सरन अब जाउँ देहु जनि खोरि॥ ४१॥
अस कहि चला बिभीषनु जबहीं। आयू हीन भए सब तबहीं।
साधु अवज्ञा तुरत भवानी। कर कल्यान अखिल कै हानी।
रावन जबहि बिभीषनु त्यागा। भअेउ बिभव बिनु तबहि अभागा।
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं। करत मनोरथ बहु मन माहीं।
देखिहौं जाइ चरन जलजाता। अरुन मृदुल सेवक सुख दाता।
जे पद परसि तरी रिषिनारी। दंडक कानन पावन कारी।
जे पद जनकसुता उर लाए। कपट कुरंग, संग धर धाए।
हर उर सर सरोज पद जेई। अहोभाग्य मैं देखिहौं तेई॥
जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि भरतु रहे मन लाइ।
ते पद आज बिलोकिहौं इन्ह नयनन्हि अब जाइ॥ ४२॥
अेहि बिधि करत सप्रेम बिचारा। आअेउ सपदि सिंधु येहि[1] पारा।
कपिन्ह बिभीषनु आवत देखा। जाना कोउ रिपु दूत बिसेखा।
ताहि राखि कपीस पहि आए। समाचार सब ताहि सुनाए।
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई। आवा मिलन दसानन भाई।
कह प्रभु सखा बुझिए[2] काहा। कहै कपीस सुनहु नरनाहा।
जानि न जाइ निसाचर माया। कामरूप केहि कारन आया।
भेद हमार लेन सठ आवा। राखिअ बाँधि मोहि अस भावा।
सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी। मम पन सरनागत भयहारी।
सुनि प्रभु बचन हरष हनुमाना। सरनागत बच्छल[3] भगवाना॥

१-३, ४, ५; के ६.
२-३, ६; बूझिय ४, ५.
३-३, ४, ५; बत्सल ६.

सरनागत कहुँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि ।
ते नर पावर पापमय तिन्हहि बिलोकत हानि ॥ ४३ ॥

कोटि बिप्र बध लागहि जाहू । आए सरन तजौं नहि ताहू ।
सन्मुख होइ जीव मोहि जबही । जन्म कोटि अघ नासहि तबही ।
पापवंत कर सहज सुभाऊ । भजनु मोर तेहि भाव न काऊ ।
जौं पै दुष्ट हृदय सोइ होई । मोरें सन्मुख आव कि सोई ।
निर्मल मन जन सो मोहि पावा । मोहि कपट छल छिद्र न भावा ।
भेद लेन पठवा दससीसा । तबहु न कछु भय हानि कपीसा ।
जग महु सखा निसाचर जेते । लछिमनु हनइ निमिष महु तेते ।
जौं सभीत आवा सरनाई । रखिहौं ताहि प्रान की नाई ॥

उभय भाति तेहि आनहु हसि कह कृपा निकेत ।
जय कृपाल कहि कपि चले अंगद हनू समेत ॥ ४४ ॥

सादर तेहि आगे करि बानर । चले जहाँ रघुपति करुनाकर ।
दूरिहि ते देखे दोउ भ्राता । नयनानंद दान के दाता ।
बहुरि राम छबि धाम बिलोकी । रहेउ ठठुकि अेक टक पल रोकी ।
भुज प्रलंब कंजारुन लोचन । स्यामल गात प्रनत भय मोचन ।
सिंह कंध आयत उर सोहा । आनन अमित मदन मन मोहा ।
नयन नीर पुलकित अति गाता । मन धरि धीर कही मृदु बाता ।
नाथ दसानन कर मैं भ्राता । निसिचर बंस जन्म सुर त्राता ।
सहज पाप प्रिय तामस देहा । जथा उलूकहि तम पर नेहा ॥

स्रवन सुजसु सुनि आअेउँ प्रभु भंजन भव भीर ।
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर ॥ ४५ ॥

अस कहि करत दंडवत देखा । तुरत उठे प्रभु हरष बिसेखा ।

१–४, ५, ६, छबि ३.

न वचन सुनि प्रभु मन भावा। भुज बिसाल गहि हृदय लगावा।
नुज सहित मिलि ढिग बैठारी। बोले बचन भगत भय हारी।
हु लंकेस सहित परिवारा। कुसल कुठाहर बास तुम्हारा।
ल मंडली बसहु दिनु राती। सखा धर्म निबहइ केहि भाँती।
जानौं तुम्हारि सब रीती। अति नय निपुन न भाव अनीती।
भल बास नरक कर ताता। दुष्ट संग जनि देइ बिधाता।
र पद देखि कुसल रघुराया। जौ तुम्ह कीन्हि जानि जन दाया॥
तब लगि कुसल न जीव कहु सपनेहु मन बिस्राम।
जब लगि भजत न राम कहु सोक धाम तजि काम॥ ४६॥
लगि हृदय बसत खल नाना। लोभ मोह मच्छर[1] मद माना।
लगि उर न बसत रघुनाथा। धरे चाप सायक कटि भाथा।
ता तरन तमी अधियारी। राग द्वेष उलूक सुखकारी।
लगि बसति जीव मन माहीं। जब लगि प्रभु प्रताप रवि नाहीं।
मैं कुसल मिटे भय भारे। देखि राम पद कमल तुम्हारे।
ह कृपाल जा पर अनुकूला। ताहि न ब्याप त्रिबिध भव सूला।
निसिचर अति अधम सुभाऊ। सुभ आचरनु कीन्ह नहिं काऊ।
सु रूप मुनि ध्यान न आवा। तेहि प्रभु हरषि हृदय मोहि लावा॥
अहोभाग्य मम अमित अति राम कृपा सुख पुंज।
देखेउँ नयन बिरंचि सिव सेव्य जुगल पद कंज॥ ४७॥
हु सखा निज कहउँ सुभाऊ। जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ।
नर होइ चराचर द्रोही। आवइ सभय सरन तकि मोही।
जे मद मोह कपट छल नाना। करौं सद्य तेहि साधु समाना।
जननी जनक बंधु सुत दारा। तनु धनु भवन सुहृद परिवारा।
सब कै ममता ताग बटोरी। मम पद मनहि बाँध बरि डोरी।

१–३, ४, ५, म०ा१ ६.

समदरसी इच्छा कछु नाही। हरष सोक भय नहिं मन माही।
अस सज्जन मम उर बस कैसे। लोभी हृदय बसै धनु जैसे।
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरे। धरों देह नहि आन निहोरे॥
सगुन उपासक परहित[१] निरत नीति दृढ़ नेम।
ते नर प्रान समान मम जिन्हके द्विज पद प्रेम॥ ४८॥

सुनु लंकेस सकल गुन तोरे। ता ते तुम्ह अतिसय प्रिय मोरे।
राम बचन सुनि बानर जूथा। सकल कहहिं जय कृपा बरूथा।
सुनत बिभीषनु प्रभु कै बानी। नहिं अघात स्रवनामृत जानी।
पद अंबुज गह बारहि बारा। हृदय समात न प्रेमु अपारा।
सुनहु देव सचराचर स्वामी। प्रनतपाल उर अंतरजामी।
उर कछु प्रथम बासना रही। प्रभु पद प्रीति सरित सो बही।
अब कृपाल निज भगति पावनी। देहु सदा सिव मन भावनी।
एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा। मागा तुरत सिंधुकर नीरा।
जदपि सखा तव इच्छा नाही। मोर दरसु अमोघ जग माही।
अस कहि राम तिलक तेहि सारा। सुमन बृष्टि नभ भई अपारा॥
रावन क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड।
जरत बिभीषनु राखेउ[२] दीन्हेउ राजु अखंड॥
जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिए दस माथ।
सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ॥ ४९॥

अस प्रभु छाड़ि भजहि जे आना। ते नर पसु बिनु पूँछ बिषाना।
निज जन जानि ताहि अपनावा। प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा।
पुनि सर्बज्ञ सर्ब उर बासी। सर्ब रूप सब रहित उदासी।
बोले बचन नीति प्रतिपालक। कारन मनुज दनुज कुल घालक।
सुनु कपीस लंकापति बीरा। केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा।

१–३, ४, ५; परम हित ६. २–४, ५; राखा ३, ६.

संकुल मकर उरग झष जाती। अतिअगाध दुस्तर सब भाँती।
कह लंकेस सुनहु रघुनायक। कोटि सिंधु सोषक तव सायक।
जद्यपि तदपि नीति असि गाई। बिनय करिअ सागर सन जाई॥
प्रभु तुम्हार कुल गुर जलधि कहिहि उपाय बिचारि।
बिनु प्रयास सागर तरिहि सकल भालु कपि धारि॥ ५०॥

सखा कही तुम्ह नीकि उपाई। करिअ दैव जौं होइ सहाई।
मंत्र न येह लछिमन मन भावा। राम बचन सुनि अति दुख पावा।
नाथ दैव कर कौन भरोसा। सोखिअ सिंधु करिअ मन रोसा।
कादर मन कहुँ एक अधारा। दैव दैव आलसी पुकारा।
सुनत बिहसि बोले रघुबीरा। ऐसइ करब धरहु मन धीरा।
अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई। सिंधु समीप गए रघुराई।
प्रथम प्रनामु कीन्ह सिरु नाई। बैठे पुनि तट दर्भ डसाई।
जबहि बिभीषनु प्रभु पहि आए। पाछें रावन दूत पठाए॥
सकल चरित तिन्ह देखे धरे कपट कपि देह।
प्रभु गुन हृदय सराहहिं सरनागत पर नेह॥ ५१॥

प्रगट बखानहिं राम सुभाऊ। अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ।
रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने। सकल बाँधि कपीस[1] पहि आने।
कह सुग्रीव सुनहु सब बानर। अंग भंग करि पठवहु निसिचर।
सुनि सुग्रीव बचन कपि धाए। बाँधि कटक चहु पास फिराए।
बहु प्रकार मारन कपि लागे। दीन पुकारत तदपि न त्यागे।
जो हमार हर नासा काना। तेहि कोसलाधीस कै आना।
सुनि लछिमन सब निकट बोलाए। दया लागि हसि तुरत छोड़ाए।
रावन कर दीजहु येह पाती। लछिमन बचन बाँचु कुलघाती॥

१–३, ४, ५, ताहि बाँधि कपिपति ६.

कहेहु मुखागर मूढ़ सन मम संदेसु उदार।
सीता देइ मिलहु न त आवा कालु तुम्हार ॥ ५२ ॥

तुरत नाइ लछिमन पद माथा। चले दूत बरनत गुन गाथा।
कहत राम जसु लंका आए। रावन चरन सीस तिन्ह नाए।
बिहसि दसानन पूछी बाता। कहसि न कस आपनि कुसलाता।
पुनि कहु खबरि बिभीषन केरी। जाहि मृत्यु आई अति नेरी।
करतु राजु लंका सठ त्यागी। होइहि जव कर कीट अभागी।
पुनि कहु भालु कीस कटकाई। कठिन काल प्रेरित चलि आई।
जिन्हके जीवन कर रखवारा। भएउ मृदुल चित सिंधु बिचारा।
कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी। जिन्ह के हृदय त्रास अति मोरी॥

की भइ भेंट कि फिरि गए स्रवन सुजसु सुनि मोर।
कहसि न रिपु दल तेज बल बहुत चकित चित तोर ॥ ५३ ॥

नाथ कृपा करि पूछेहु जैसे। मानहु कहा क्रोध तजि तैसें।
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा। जातहि राम तिलक तेहि सारा।
रावन दूत हमहि सुनि काना। कपिन्ह बाधि दीन्हे दुख नाना।
स्रवन नासिका काटइ लागे। राम सपथ दीन्हे हम त्यागे।
पूछिहु नाथ राम कटकाई। बदन कोटि सत बरनि न जाई।
नाना बरन भालु कपि धारी। बिकटानन बिसाल भयकारी।
जेहि पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा। सकल कपिन्ह महँ तेहि बलु थोरा।
अमित नाम भट कठिन कराला। अमित नाग बलु बिपुल बिसाला॥

द्विविद मयंद नील नलु अंगद गद बिकटासि।
दधिमुख केहरि निसठ सठ जामवंत बलरासि ॥ ५४ ॥

ए कपि सब सुग्रीव समाना। इन्ह सम कोटिन्ह गनइ को नाना।

१–३, ६; कहु ४, ५.   २–४, ५; दुबिद ६.

राम कृपा अतुलित बल तिन्हहीं । तृन समान त्रैलोकहि गनहीं ।
अस मैं स्रवन सुना दसकंधर । पदुम अठारह जूथप बंदर ।
नाथ कटक महँ सो कपि नाहीं । जो न तुम्हहि जीतइ रन माहीं ।
परम क्रोध मीजहिं सब हाथा । आयेसु पै न देहि रघुनाथा ।
सोखहिं सिंधु सहित झष ब्याला । पूरहिं न त भरि कुधर बिसाला ।
मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा । ऐसेइ बचन कहहिं सब कीसा ।
गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका । मानहु ग्रसन चहत हहिं लंका ॥

सहज सूर कपि भालु सब पुनि सिर पर प्रभु राम ।
रावन काल कोटि कहु जीति सकहिं संग्राम ॥ ५५ ॥

राम तेज बल बुधि बिपुलाई । सेष सहस सत सकहिं न गाई ।
सक सर एक सोखि सत सागर । तव भ्रातहि पूछेउ नय नागर ।
तासु बचन सुनि सागर पाहीं । मागत पंथ कृपा मन माहीं ।
सुनत बचन बिहसा दससीसा । जो असि मति सहाय कृत कीसा ।
सहज भीरु कर बचन दृढ़ाई । सागर सन ठानी मचलाई ।
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई । रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई ।
सचिव सभीत बिभीषनु जाकें । बिजय बिभूति कहाँ जग ताकें ।
सुनि खल बचन दूत रिसि बाढ़ी । समय बिचारि पत्रिका काढ़ी ।
रामानुज दीन्हीं यह पाती । नाथ बँचाइ जुड़ावहु छाती ।
बिहसि बाम कर लीन्ही रावन । सचिव बोलि सठ लाग बचावन ॥

बातन्ह मनहि रिझाइ सठ जनि घालसि कुल खीस ।
राम बिरोध न उबरसि सरन बिष्नु अज ईस ॥
की तजि मान अनुज इव प्रभु पद पंकज भृंग ।
होहि कि राम सरानल खल कुल सहित पतंग ॥ ५६ ॥

१–४, ५, नतरु धरि ६ ३–६, दूतहि ३, ४, ५
२–३, ५ ६, दिढाइ ४. ४–३, ६, सपसन ४, ५

सुनत सभय मन मुख मुसुकाई। कहत दसानन सबहिं सुनाई।
भूमि परा कर गहत अकासा। लघु तापस कर बाग बिलासा।
कह सुक नाथ सत्य सब बानी। समुझहु छाड़ि प्रकृति अभिमानी।
सुनहु बचन मम परिहरि क्रोधा। नाथ राम सन तजहु बिरोधा।
अति कोमल रघुबीर सुभाऊ। जद्यपि अखिल लोक कर राऊ।
मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिही। उर अपराध न एकौ धरिहीं।
जनकसुता रघुनाथहि दीजे। अेतना कहा मोर प्रभु कीजे।
जब तेहि कहा देन बैदेही। चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही।
नाइ चरन सिरु चला सो तहाँ। कृपासिंधु रघुनायक जहाँ।
करि प्रनामु निज कथा सुनाई। राम कृपा आपनि गति पाई।
रिषि अगस्ति की स्राप भवानी। राछस भयेउ रहा मुनि ग्यानी।
बंदि राम पद बारहि बारा। मुनि निज आस्रम कहुँ पगु धारा॥

विनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति।
बोले रामु सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति॥ ५७॥

लछिमन बान सरासन आनू। सोखौं बारिधि बिसिख कृसानू।
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती। सहज कृपन सन सुंदर नीती।
ममतारत सन ग्यान कहानी। अतिलोभी सन बिरति बखानी।
क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा। ऊसर बीज बोयें[१] फल जथा।
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा। येह मत लछिमन के मन भावा।
संधानेउ प्रभु बिसिख कराला। उठी उदधि उर अंतर ज्वाला।
मकर उरग झख गन अकुलाने। जरत जंतु जलनिधि जब जाने।
कनक थार भरि मनि गन नाना। बिप्र रूप आए तजि माना॥

काटेहि पइ[२] कदली फरै कोटि जतन कोउ सींच।
विनय न मान खगेस सुनु डाटेहि पै नव नीच॥ ५८॥

१–४, ५, बए ३, ६. २–३, ४, ५; काटे पर ६.

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे । छमहु नाथ सब अवगुन मेरे ।
गगन समीर अनल जल धरनी । इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी ।
तव प्रेरित माया उपजाए । सृष्टि हेतु सब ग्रंथन्हि गाए ।
प्रभु आअेसु जेहि कर जस अहई । सो तेहि भाँति रहे सुख लहई ।
प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही । मरजादा पुनि तुम्हरिअ कीन्ही ।
ढोल गवार सूद्र पसु नारी । सकल ताड़ना के अधिकारी ।
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई । उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई ।
प्रभु अज्ञा अपेल स्रुति गाई । करौं सो वेगि जो तुम्हहि सोहाई ॥

सुनत बिनीत बचन अति कह कृपाल मुसुकाइ ।
जेहि बिधि उतरइ कपि कटकु तात सो कहहु उपाइ ॥ ५८ ॥

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई । लरिकाईं रिषि आसिष पाई ।
तिन्ह के परस किए गिरि भारे । तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ।
मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई । करिहौं बल अनुमान सहाई ।
अेहि बिधि नाथ पयोधि बधाइअ । जेहि अेह सुजसु लोक तिहु गाइअ ।
अेहि सर मम उत्तर तट बासी । हतहु नाथ खल नर अघरासी ।
सुनि कृपाल सागर मन पीरा । तुरतहि हरी राम रन धीरा ।
देखि राम बल पौरुष भारी । हरषि पयोनिधि भअेउ सुखारी ।
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा । चरन बंदि पाथोधि सिधावा ॥

निज भवन गवनेउ सिंधु श्रीरघुपतिहि येह मन भाअेऊ ।
येह चरित कलि मल हर जयामति दास तुलसी गाअेऊ ।
सुखभवन संसय समन दवन बिषाद रघुपति गुन गना ।
तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना ॥

सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलयान ॥ ६० ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
ज्ञानसम्पादिनी नाम पंचमः सोपानः ॥

रामचरितमानस
षष्ठ सोपान

श्रीगणेशाय नमः

लव निमेष परवानु[1] जुग बरष कलप सर चंड।
भजसि न मन तेहि राम कहुँ कालु जासु कोदंड ॥[2]

रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं
योगीन्द्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुनं निर्विकारं।
मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृंदैकदेवं
वंदे कंदावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपं ॥१॥

शंखेन्द्वाभमतीवसुंदरतनुं शार्दूलचर्माम्बरं
कालव्यालकरालभूषणधरं गंगाशशांकप्रियं।
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं।
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं श्री शंकरं मन्मथारिं[3] ॥२॥

यो ददाति सतां शंभुः कैवल्यमपि दुर्लभं।
खलानां दंडकृद्योसौ[4] शंकरः शं तनोतु मे[5] ॥३॥

सिंधु बचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ।
अब बिलंबु केहि काम करहु सेतु उतरइ कटकु ॥
सुनहु भानुकुल केतु जामवंत कर जोरि कह।
नाथ नाम तव सेतु नर चढ़ि भव सागर तरहिं ॥

यह लघु जलधि तरत कति बारा। अस सुनि पुनि कह पवनकुमारा।
प्रभु प्रताप बड़वानल भारी। सोखेउ प्रथम पयोनिधि बारी।
तव रिपु नारि रुदन जल धारा। भरेउ बहोरि भयेउ तेहिं खारा।

१–४, ५; परमानु ६.
२–सभी प्राचीन प्रतियों में यह दोहा श्लोकों के पहले आया है।
३–४, ५, ६; कन्दर्पह शङ्करम् ३.
४–८, ५; मा ३, ६.

सुनि अति उकुति पवन सुत केरी। हरषे कपि रघुपति तन हेरी।
जामवंत बोले दोउ भाई। नल नीलहि सब कथा सुनाई।
राम प्रताप सुमिरि मन माहीं। करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं।
बोलि लिए कपि निकर बहोरी। सकल सुनहु बिनती कछु मोरी।
राम चरन पंकज उर धरहू। कौतुक एक भालु कपि करहू।
धावहु मर्कट बिकट बरूथा। आनहु बिटप गिरिन्ह के जूथा।
सुनि कपि भालु चले करि हूहा। जय रघुबीर प्रताप समूहा॥

अति उतंग गिरि पादप[1] लीलहि लेहि उठाइ।
आनि देहिं नल नीलहिं रचहिं ते सेतु बनाइ॥ १॥

सैल बिसाल आनि कपि देहीं। कंदुक इव नल नील ते लेहीं।
देखि सेतु अति सुंदर रचना। बिहसि कृपानिधि[1] बोले बचना।
परम रम्य उत्तम येह धरनी। महिमा अमित जाइ नहि बरनी।
करिहौं इहाँ संभु थापना। मोरे हृदय[1] परम कलपना।
सुनि कपीस बहु दूत पठाए। मुनिबर सकल[1] बोलि लै आए।
लिंग थापि बिधिवत करि पूजा। सिव समान प्रिय मोहि[1] न दूजा।
सिव द्रोही[1] मम भगत कहावा। सो[1] नर सपनेहु मोहि न पावा।
संकर बिमुख भगति चह मोरी। सो नारकी मूढ़ मति थोरी॥

संकर प्रिय मम द्रोही सिव द्रोही मम दास।
ते नर करहिं कल्प भरि घोर नरक महुँ बास॥ २॥

जे रामेस्वर दरसनु करिहहि। ते तनु तजि मम[2] लोक सिधरिहहिं।
जो[1] गंगाजलु आनि चढ़ाइहि। सो साजुज्य मुक्ति[1] नर पाइहि।
होइ अकाम जो छल तजि सेइहि। भगति मोरि तेहि संकर देइहि।
मम कृत सेतु जो दरसन करिही। सो बिनु स्रम भव सागर तरिही।

१–४, ५, ६, तरु शैल गन २ ७–४, ५, ६, हरि २

राम वचन सब के जिय भाए। मुनि वर निज निज आस्रम आए।
गिरिजा रघुपति के यह रीती। संतत करहिं प्रनत पर प्रीती।
बाँधा सेतु नील नल नागर। रामकृपा जसु भएउ उजागर।
बूड़हिं आनहि बोरहिं जेई। भए उपल बोहित सम तेई।
महिमा यह न जलधि कइ बरनी। पाहन गुन न कपिन्ह कइ करनी॥
श्री रघुबीर प्रताप ते सिंधु तरे पाषान।
ते मतिमंद जे राम तजि भजहिं जाइ प्रभु आन॥ ३॥

बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा। देखि कृपानिधि के मन भावा।
चली सेन कछु बरनि न जाई। गर्जहिं मर्कट भट समुदाई।
सेतुबंध ढिग चढ़ि रघुराई। चितव कृपाल सिंधु बहुताई।
देखन कहुँ प्रभु करुनाकंदा। प्रगट भए सब जलचर बृंदा।
मकर नक्र नाना झख ब्याला। सत जोजन तन[३] परम बिसाला।
अइसेउ एक तिन्हहि जे खाहीं। एकन्ह के डर तेपि डेराहीं।
प्रभुहि बिलोकहिं टरहि न टारे। मन हरषित सब भए सुखारे।
तिन्ह की ओट न देखिअ बारी। मगन भए हरि रूप निहारी।
चला कटकु प्रभु आयेसु पाई[४]। को कहि सक कपि दल बिपुलाई॥
सेतुबंध भइ भीर अति कपि नभ पंथ उड़ाहिं।
अपर जलचरन्हि ऊपर चढ़ि चढ़ि पारहि जाहिं॥ ४॥

अस कौतुक बिलोकि द्वौ भाई। बिहँसि चले कृपाल रघुराई।
सेन सहित उतरे रघुबीरा। कहि न जाइ कपि जूथप भीरा।
सिंधु पार प्रभु डेरा कीन्हा। सकल कपिन्ह कहुँ आयेसु दीन्हा।
खाहु जाइ फल मूल सुहाए। सुनत भालु कपि जहँ तहँ धाए।

१—४, ५, ६; बाँधेउ ३.   ३—२, ६; प्रति ४, ५.
२—४, ५, ६, नाना मकर नक्र झख ३. ४—४, ५, ६; कछु बरनि न जाई ३.

सब तरु फरे राम हित लागी। रितु अरु कुरितु[1] काल गति त्यागी।
खाहिं मधुर फल बिटप हलावहिं। लंका सन्मुख सिखर चलावहिं।
जहँ कहुँ फिरत निसाचर पावहिं। घेरि सकल बहु नाच नचावहिं।
दसनन्हि काटि नासिका काना। कहि प्रभु सुजसु देहि तब जाना।
जिन्ह कर नासा कान निपाता। तिन्ह रावनहि कही सब बाता।
सुनत स्रवन बारिधि बंधाना। दसमुख बोलि उठा अकुलाना॥

बाँध्यो बननिधि नीरनिधि जलधि सिंधु बारीस।
सत्य तोयनिधि कंपति उदधि पयोधि नदीस॥ ५॥

निज बिकलता बिचारि[2] बहोरी। बिहसि गअेउ[2] गृह करि भय भोरी।
मंदोदरी सुन्यो प्रभु आयो। कौतुकहीं पाथोधि बँधायो।
कर गहि पतिहि भवन निज आनी। बोली परम मनोहर बानी।
चरन नाइ सिरु अंचलु रोपा। सुनहु बचन पिअ परिहरि कोपा।
नाथ बयरु कीजे ताही सो। बुधि बल सकिअ जीति जाही सो।
तुम्हहि रघुपतिहि अंतरु कैसा। खलु खद्योत दिनकरहि जैसा।
अतिबल मधु कैटभ जेहि मारे। महाबीर दितिसुत संघारे।
जेहि बलि बाँधि सहसभुज मारा। सोइ अवतरेउ हरन महि भारा।
तासु बिरोध न कीजिअ नाथा। काल करम जिव जाके हाथा॥

समहि सौंपि[3] जानकी नाइ कमल पद माथ।
सुत कहुँ राज समर्पि बन जाइ भजिअ रघुनाथ॥ ६॥

नाथ दीन दयाल रघुराई। बाघौ सन्मुख गए न खाई।
चाहिअ करन सो सब करि बीते। तुम्ह सुर असुर चराचर जीते।
संत कहहिं असि नीति दसानन। चौथेपन जाइहि नृप कानन।
तासु भजनु कीजिअ तहँ भरता। जो करता पालक संहरता।

[1] १–४, ५, ६; रितु अरितु अकाल ३.
[2] २–४, ५, ६; ब्याकुलता निज समुझि, चला ३.
[3] ३–४, ५, ६; सौंपहु ३.

सोइ रघुबीर प्रनत अनुरागी। भजहु नाथ ममता सब त्यागी।
मुनिबर जतनु करहिं जेहि लागी। भूप राजु तजि होहिं बिरागी।
सोइ कोसलाधीस रघुराया। आएउ करन तोहि पर दाया।
जौं पिअ मानहु मोर सिखावन। सुजसु होइ तिहु पुर अतिपावन॥
अस कहि नयन नीर भरि[1] गहि पद कंपित गात।
नाथ भजहु रघुनाथहि अचल होइ अहिवात[2]॥ ७॥

तब रावन मयसुता उठाई। कहइ लाग खल निज प्रभुताई।
सुनु तइ प्रिया वृथा भय माना। जग जोधा को मोहि समाना।
बरुन कुबेर पवन जम काला। भुज बल जितेउँ सकल दिगपाला।
देव दनुज नर सब बस मोरे। कवन हेतु उपजा भय तोरे।
नाना बिधि तेहि कहेसि बुझाई। सभा बहोरि बैठ[3] सो जाई।
मंदोदरी हृदय अस जाना। काल बस्य[4] उपजा अभिमाना।
सभा आइ मंत्रिन्ह तेहि बूझा। करब कवन बिधि रिपु सैं जूझा।
कहहिं सचिव सुनु निसिचरनाहा। बार बार प्रभु पूछहु[5] काहा।
कहहु कवन भय करिअ बिचारा। नर कपि भालु अहार हमारा॥
सबके बचन[6] स्रवन सुनि कह प्रहस्त कर जोरि।
नीति बिरोध न करिअ प्रभु मंत्रिन्ह मति अति थोरि॥ ८॥

कहहिं सचिव सठ[7] ठकुरसोहाती। नाथ न पूर आव एहि भाँती।
बारिधि नाघि एक कपि आवा। तासु चरित मन महुँ सबु गावा।
छुधा न रही तुम्हहि तब काहू। जारत नगरु कस न धरि खाहू।
सुनत नीक आगे दुख पावा। सचिवन अस मत प्रभुहि सुनावा।
जेहि बारीस बधाएउ हेला। उतरेउ सेन समेत सुबेला।

१–४, ५, ६, लोचन बारि भरि, रघुबीर पद मम अहिवात न जात २
२–४, ५, बिबध ३, ६
३–४, ५, ६, पूछहु प्रभु ३
४–४, ५, ६, बचन सबहि के २
५–४, ५, सब ३, ६

सो भनु मनुज खाव हम भाई। बचन कहहि सब गाल फुलाई।
तात बचन मम सुनु[1] अति आदर। जनि मन गुनहु मोहि करि कादर।
प्रिय बानी जे सुनहि जे कहहीं। अइसे नर निकाइ जग अहहीं।
बचन परम हित सुनत कठोरे। सुनहिं जे कहहिं ते नर प्रभु थोरे।
प्रथम बसीठ पठउ सुनु नीती। सीता[2] देइ करहु पुनि प्रीती॥
नारि पाइ फिरि जाहि जो तो न बढाइअ रारि।
नाहि त सन्मुख समर महि तात करिअ हठि मारि॥ ९॥

येह मत जउ मानहु प्रभु मोरा। उभय प्रकारु सुजसु जग तोरा।
सुत सन कह दसकंठ रिसाई। असि मति सठ केहि तोहि सिखाई।
अबही ते उर संसय होई। बेनु मूल सुत भएहु घमोई।
सुनि पितु गिरा परुप अतिघोरा। चला भवन कहि बचन कठोरा।
हित मत तोहि न लागत कैसे। काल बिबस कहुँ भेषज जैसे।
संध्या समय जानि दससीसा। भवन चलेउ निरखत भुज बीसा।
लंका सिखर उपर आगारा। अतिबिचित्र तहँ होइ अखारा।
बैठ जाइ तेहि मंदिर रावन। लागे किन्नर गुन गन गावन।
बाजहि ताल पखाउज बीना। नृत्य करहि अपछरा प्रबीना॥
सुनासीर सत सरिस सो संतत करइ बिलास।
परम प्रबल रिपु सीस पर तद्यपि सोच न[3] त्रास॥ १०॥

इहाँ सुबेल सैल रघुबीरा। उतरे सेन सहित अति भीरा।
सिखर एक उतंग अति देखी[4]। परम रम्य[4] सम सुभ्र बिसेखी।
तहँ तरु किसलय सुमन सुहाए। लछिमन रचि निज हाथ डसाए।

१—४, ५, ६, सुनु मम बचन तात २
२—४, ५, ६, सीतहि २
३—४, ५, तदपि सोच नहिं ६, तदपि न कछु मन २
४—४, ५, ६, सैल सृग एक सुंदर देखा। अति उतग २

तापर[1] रुचिर मृदुल मृगछाला। तेहि आसन आसीन कृपाला।
प्रभु कृत सीस कपीस उछंगा। बाम दहिन दिसि चाप निषंगा।
दुहु कर कमल सुधारत बाना। कह लंकेस मंत्र लगि काना।
बडभागी अंगद हनुमाना। चरन कमल चापत बिधि नाना।
प्रभु पाछें लछिमन बीरासन। कटि निषंग कर बान सरासन॥
ऐहि बिधि कृपा रूप[2] गुन धाम रामु आसीन।
धन्य ते नर ऐहि ध्यान जे[3] रहत सदा लयलीन॥
पूरब दिसा बिलोकि प्रभु देखा उदित मयंक।
कहत सबहि देखहु ससिहि मृगपति सरिस असंक॥ ११॥

पूरब दिसि गिरि गुहा निवासी। परम प्रताप तेज बल रासी।
मत्त नाग तम कुंभ बिदारी। ससि केसरी गगन बन चारी।
बिथुरे नभ मुकुताहल तारा। निसि सुंदरी केर सिंगारा।
कह प्रभु ससि महु मेचकताई। कहहु काह निज निज मति भाई।
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई। ससि महु प्रगट भूमि कै झाईं।
मारेउ राहु ससिहि कह कोई। उर मह परी स्यामता सोई।
कोउ कह जब बिधि रति मुख कीन्हा। सारभाग ससि कर हरि लीन्हा।
छिद्र सो प्रगट इंदु उर माहीं। तेहि मग देखिअ नभ परिछाहीं।
प्रभु कह गरल बंधु ससि केरा। अतिप्रिय निज उर दीन्ह बसेरा।
बिष संजुत कर निकर पसारी। जारत बिरहवंत नर नारी॥
कह हनुमंत[3] सुनहु प्रभु ससि तुम्हार प्रिय दास।
तव मूरति बिधु उर बसति सोइ स्यामता अभास[4]॥

१—४, ५, ६, तेहि पर २ ३—४, ५, ६, मारुतसुत २.
२—४, ५, ६, करुणासीन, ४—४, ५ भास २, ६
ते नर धन्य जे ध्यान एहि २

पवन तनय के बचन सुनि बिहसे रामु सुजान।
दच्छिन दिसि अवलोकि प्रभु[1] बोले कृपानिधान॥ १२॥

देखु बिभीषन दच्छिन आसा। घन घमंड दामिनी बिलासा।
मधुर मधुर गरजै घन घोरा। होइ बृष्टि जनि[2] उपल कठोरा।
कहत बिभीषन सुनहु कृपाला। होइ न तड़ित न बारिद माला।
लंका सिखर उपर[3] आगारा। तहँ दसकंधर देख अखारा।
छत्र मेघडंबर सिर धारी। सोइ जनु जलद घटा अति कारी।
मंदोदरी स्रवन ताटंका। सोइ प्रभु जनु दामिनी दमंका।
बाजहिं ताल मृदंग अनूपा। सोइ रव मधुर[4] सुनहु सुरभूपा।
प्रभु मुसुकान समुझि अभिमाना। चाप चढ़ाइ बान संधाना॥

छत्र मुकुट ताटंक तब हते एक ही बान।
सब के देखत महि परे मरमु न कोऊ जान॥
अस कौतुक करि राम सर प्रबिसेउ आइ निषंग।
रावन सभा ससंक सब देखि महा रस भंग॥ १३॥

कंप न भूमि न मरुत बिसेखा। अस्त्र सस्त्र कछु नयन न देखा।
सोचहिं सब निज हृदय मझारी। असगुन भएउ भयंकर भारी।
दसमुख देखि सभा भय पाई। बिहसि बचन कह जुगुति बनाई।
सिरौ गिरे संतत सुभ जाही। मुकुट परे[5] कस असगुन ताही।
सयन करहु निज निज गृह जाई। गवने भवन सकल सिर नाई।
मंदोदरी सोच उर बसेऊ। जब ते श्रवनपूर महि खसेऊ।
सजल नयन कह जुग कर जोरी। सुनहु प्रानपति बिनती मोरी।
कंत राम बिरोध परिहरहू। जानि मनुज जनि हठ उर[6] धरहू॥

१–४, ५, ६; दिसा बिलोकि पुनि ३.
२–३, ४, ५; जनु ६.
३–४, ५, ६; ऊपर ३.
४–४, ५, ६; सरस ३.
५–४, ५, ६; रासे ३.
६–४, ५; मन हठ ३; हठ मन ६.

बिस्वरूप रघुबंस मनि करहु बचन बिस्वासु।
लोक कल्पना बेद कर अंग अंग प्रति जासु ॥ १४ ॥

पद पाताल सीस अज धामा। अपर लोक अँग अँग बिश्रामा।
भृकुटि बिलास भयंकर काला। नयन दिवाकर कच घनमाला।
जासु घ्रान अस्विनीकुमारा। निसि अरु दिवस निमेष अपारा।
स्रवन दिसा दस बेद बखानी। मरुत स्वास निगम निज बानी।
अधर लोभ जम दसन कराला। माया हास बाहु दिगपाला।
आनन अनल अंबुपति जीहा। उतपति पालन प्रलय समीहा।
रोमराजि अष्टादस भारा। अस्थि सैल सरिता नस जारा।
उदर उदधि अधगो जातना। जगमय प्रभु की बहु कलपना ॥

अहंकार सिव बुद्धि अज मन ससि चित्त महान।
मनुज बास सचराचर[1] रूप राम भगवान ॥
अस बिचारि सुनु प्रानपति प्रभु सन बयरु बिहाइ।
प्रीति करहु रघुबीर पद मम अहिवात न जाइ ॥ १५ ॥

बिहसा नारि बचन सुनि काना। अहो मोह महिमा बलवाना।
नारि सुभाउ सत्य सब[2] कहहीं। अवगुन आठ सदा उर रहहीं।
साहस अनृत चपलता माया। भय अबिबेक असौच अदाया।
रिपु कर रूप सकल तैं गावा। अति बिसाल भय मोहि सुनावा।
सो सब प्रिया सहज बस मोरें। समुझि परा प्रसाद अब तोरें।
जानिउँ प्रिया[3] तोरि चतुराई। एहि बिधि कहहु[4] मोरि प्रभुताई।
तव बतकही गूढ़ मृगलोचनि[5]। समुझत सुखद सुनत भय मोचनि।
मंदोदरि मन महुँ अस ठयऊ। पियहि काल बस मति भ्रम भयऊ ॥

१—४, ५, ६; चर अचर मय ३. ४—४, ५, ६; मिस कहहि ३.
२—४, ५; कवि ३, ६. ५—३, ४, ५; मोचनि ६.
३—३, ४, ५; जानेउँ प्रिया ६.

एहि विधि करत विनोद बहु प्रात प्रगट[1] दसकंध ।
सहज असंक लंकपति सभा गएउ मद अंध ॥
फूलइ फरइ न बेत जदपि सुधा बर्षहिं जलद ।
मूरख हृदय न चेत जौं गुर मिलहिं बिरंचि सम[2] ॥ १६ ॥

इहाँ प्रात जागे रघुराई । पूछा मत सब सचिव बोलाई ।
कहहु बेगि का करिअ उपाई । जामवंत कह पद सिरु नाई ।
सुनु सर्वज्ञ सकल उर बासी । बुधि बल तेज धर्म गुन रासी[3] ।
मंत्र कहौं निज मति अनुसारा । दूत पठाइअ बालिकुमारा ।
नीक मंत्र सब के मन माना । अंगद सन कह कृपानिधाना ।
बालितनय बुधि बल गुन धामा । लंका जाहु तात मम कामा ।
बहुत बुझाइ तुम्हहि का कहऊँ । परम चतुर मैं जानत अहऊँ ।
काजु हमार तासु हित होई । रिपु सन करेहु बतकही सोई ॥

प्रभु अज्ञा धरि सीस चरन बंदि अंगद उठेउ ।
सोइ गुन सागर ईस राम कृपा जापर करहु ॥
स्वयं सिद्ध सब काजु नाथ मोहि आदरु दियेउ ।
अस बिचारि जुबराज तनु पुलकित हरषित हिऐउ ॥ १७ ॥

बंदि चरन उर धरि प्रभुताई । अंगद चलेउ सबहि सिरु नाई ।
प्रभु प्रताप उर सहज असंका । रन बाँकुरा बालिसुत बंका ।
पुर पैठत रावन कर बेटा । खेलत रहा सो होइ गै[4] भेटा ।
बातहि बात करष बढ़ि आई । जुगल अतुल बल पुनि तरुनाई ।
तेहि अंगद कहुँ लात उठाई । गहि पद पटकेउ भूमि भवाई ।

१–४, ५, ६; बहु बिधि जल्पेसि सकल निसि प्रात भए, सुलंकपति ३.
२–४, ५; सिव ६; सत ३.
३–४, ५, ६; गुनरासी । सत्य संध प्रभु सब उर बासी ३.
४–४, ५, ६; सो होइ गै ३.

निसिचर निकर देखि भट भारी। जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी।
एक एक सन मरमु न कहहीं। समुझि तासु बध चुप करि रहहीं।
भएउ कोलाहल नगर मझारी। आवा कपि लंका जेहि जारी।
अब धौं काह करिहि करतारा। अति सभीत सब करहिं बिचारा।
बिनु पूछे मगु देहि देखाई। जेहि बिलोक सोइ जाइ सुखाई॥

गएउ सभा दरबार तब सुमिरि राम पद कंज।
सिंघ ठवनि इत उत चितव धीर बीर बल पुंज॥ १८॥

तुरित निसाचर एक पठावा। समाचार रावनहि जनावा।
सुनत बिहसि बोला दससीसा। आनहु बोलि कहाँ कर कीसा।
आएसु पाइ दूत बहु धाए। कपिकुंजरहि बोलि लै आए।
अंगद दीख दसानन बैसे। सहित प्रान कज्जलगिरि जैसे।
भुजा बिटप सिर सृंग समाना। रोमावली लता जनु नाना।
मुख नासिका नयन अरु काना। गिरि कंदरा खोह अनुमाना।
गएउ सभाँ मन नेकु न मुरा। बालि तनय अतिबल बाँकुरा।
उठेउ सभासद कपि कहु देखी। रावन उर भा क्रोध बिसेखी॥

जथा मत्त गज जूथ महुँ पंचानन चलि जाइ।
राम प्रताप सुमिरि मन[१] बैठ सभा सिरु नाइ॥ १९॥

कह दसकंठ कवन तैं बंदर। मैं रघुबीर दूत दसकंधर।
मम जनकहि तोहि रही मिताई। तब हित कारन आएउँ भाई।
उत्तम कुल पुलस्ति कर नाती। सिव बिरंचि पूजेहु बहु भाँती।
बर पाएहु कीन्हेहु सब काजा। जीतेहु लोकपाल सब[२] राजा।
नृप अभिमान मोह बस किंबा। हरि आनेहु सीता जगदंबा।
अब सुभ कहा सुनहु तुम्ह मोरा। सब अपराध छमिहि प्रभु तोरा।
दसन गहहु तृन कंठ कुठारी। परिजन सहित संग निज नारी।

१–४, ५, ६; समारि उर ३.   २–४, ५, ६; सुर ३.

सादर जनकसुता करि आगे। ऐहि विधि चलहु सकल भय त्यागे॥
प्रनतपाल रघुबंसमनि त्राहि त्राहि अब मोहि।
आरत गिरा सुनत[1] प्रभु अभय करैगो[2] तोहि॥ २०॥

रे कपिपोत बोलु[3] संभारी। मूढ़ न जानेहि मोहि सुरारी।
कहु निज नाम जनक कर भाई। केहि नाते मानिए मिताई।
अंगद नाम बालि कर बेटा। ता सो कबहु भई ही भेटा।
अंगद बचन सुनत सकुचाना। हाँ बाली[4] बानर मैं जाना।
अंगद तही बालि कर बालक। उपजेहु बंस अनल कुल घालक।
गर्भ न गऔउ व्यर्थ तुम्ह जाऔहु। निज मुख तापस दूत कहाऔहु।
अब कहु कुसल बालि कहँ अहई। बिहसि बचन तब अंगद कहई।
दिन दस गए बालि पहिं जाई। बूझेहु कुसल सखा उर लाई।
राम बिरोध कुसल जसि होई। सो सब तोहि सुनाइहि सोई।
सुनु सठ भेद होइ मन ता के। श्रीरघुबीर हृदय नहि जा के॥
हम कुल घालक सत्य तुम्ह कुल पालक दससीस।
अंधौ बधिर[5] न अस कहहिं नयन कान तब बीस॥ २१॥

सिव बिरंचि सुर मुनि समुदाई। चाहत जासु चरन सेवकाई।
तासु दूत होइ हम कुल बोरा। अइसिहु मति उर बिहर न तोरा।
सुनि कठोर बानी कपि केरी। कहत दसाननु नयन तरेरी।
खल तब कठिन बचन सब सहऊँ। नीति धर्म मैं जानत अहऊँ।
कह कपि धर्मसीलता तोरी। हमहुँ सुनी कृत पर त्रिय चोरी।
देखी[6] नयन दूत रखवारी। बूडि न मरहु धर्म्म ब्रत धारी।
कान नाक बिनु भगिनि निहारी। छमा कीन्हि तुम्ह धरम बिचारी।

१–४, ५, ६; सुनतहि आरत बचन ३.
२–३ ४, ५; करहि गे ६.
३–३, ४, ५, न बोलु ६.
४–३, ४, रहा बालि ५, ६.
५–४, ५, ६, बहिर कहइ ३.
६–४, ५, ६; देखिउँ ३.

धरमसीलता तव जग जागी। पावा दरसु महूँ[1] वड़भागी॥
जनि जल्पसि जड़ जंतु कपि सठ विलोकु मम वाहु।
लोकपाल वल विपुल ससि ग्रसन हेतु सव राहु॥
पुनि नभ सर मम कर निकर कमलन्हि पर करि वास।
सोभत भअेउ मराल इव संभु सहित कैलास॥ २२॥

तुम्हरे कटक माझ सुनु अंगद। मो सन भिरिहि कवन जोधा वद।
तव प्रभु नारि विरह वल हीना। अनुज[2] तासु दुख दुखी मलीना।
तुम्ह सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ। अनुज हमार भीरु अति सोऊ।
जामवंत मंत्री अति बूढ़ा[3]। सो कि होइ अव समरारूढ़ा।
सिल्पिकर्म जानहि नल नीला। है कपि एक महा वलसीला।
आवा प्रथम नगरु जेहि जारा। सुनत वचन कह[4] वालिकुमारा।
सत्य वचन कहु निसिचर नाहा। साचेंहु कीस कीन्ह पुर दाहा।
रावन नगर अल्प कपि दहई। सुनि अस वचन सत्य[5] को कहई।
जो अति सुभट सराहेहु रावन। सो सुग्रीव केर लघु धावन।
चलै वहुत सो वीर न होई। पठवा खवरि लेन हम सोई॥
सत्य नगरु कपि जारेउ[6] विनु प्रभु आअेसु पाइ।
फिरि न गअेउ सुग्रीव[6] पहिं तेहि भय रहा लुकाइ॥
सत्य कहहि दसकंठ सव मोहि न सुनि कछु कोह।
कोउ न हमारे कटक अस तो सन लरत जो सोह॥
प्रीति विरोध समान सन करिय नीति असि आहि।
जौं मृगपति वध मेडुकन्हि भल कि कहै कोउ ताहि॥

१–३, हमहू ४, ५, हमहु ६.
२–४, ५, ६; ३उ ३
३–४, ५, ६; मूढ़ा ३.
४–४, ५, ६; मुनिहसि वोलेउ ३
५–४, ५, ६, को अस झूठ सुनै ३.
६–४, ५, ६; अव जानेउँ पुर दहेउ कपि, गयउ न फिरि निज नाथ ३.

जद्यपि लघुता राम कहुँ तोहि बधे बड़ दोष ।
तदपि कठिन दसकंठ सुनु छत्र जाति कर रोष ॥
बक्र उक्ति धनु बचन सर हृदय दहेउ रिपु कीस ।
प्रतिउत्तर सड़सिन्ह मनहुँ काढ़त भट दससीस ॥
हँसि बोलेउ दसमौलि तब कपि कर बड़ गुन एक ।
जो[1] प्रतिपालै तासु हित करै उपाय अनेक ॥ २३ ॥

धन्य कीस जो निज प्रभु काजा । जहँ तहँ नाचै परिहरि लाजा ।
नाचि कूदि करि लोग रिझाई । पति हित करै धर्म निपुनाई ।
अंगद स्वामिभक्त तव जाती । प्रभु गुन कस न कहसि ऐहि भाँती ।
मैं गुन गाहक परम सुजाना । तव कटु रटनि करौं नहि काना ।
कह कपि तव गुन गाहकताई । सत्य पवनसुत मोहि सुनाई ।
बन बिधंसि सुत बधि पुर जारा । तदपि न तेहि कछु कृत अपकारा ।
सोइ बिचारि तव प्रकृति सुहाई । दसकंधर मैं कीन्हि ढिठाई ।
देखेउँ आइ जो कछु कपि भाखा । तुम्हरे लाज न रोष न माखा ।
जौं असि मति पितु खाए[2] कीसा । कहि अस बचन हसा दससीसा ।
पितहि खाइ खातेउँ पुनि तोही । अबही समुझि परा कछु मोही ।
बालि बिमल जस भाजनु जानी । हतौं न तोहि अधम अभिमानी ।
कहु[3] रावन रावन जग केते । मैं निज स्रवन सुने सुनु जेते ।
बलिहि जितन ऐक गएउ पताला । राखेउ बाँधि सिसुन्ह हयसाला ।
खेलहि बालक मारहिं जाई । दया लागि बलि दीन्ह छोड़ाई ।
एकु बहोरि सहसभुज देखा । धाइ धरा जिमि जंतु बिसेखा ।
कौतुक लागि भवन लै आवा । सो पुलस्ति मुनि जाइ छोड़ावा ॥

१–६; जौ ३, ४, ५ ३–४, ५, ६; सुनु ३.
२–४, ५; खाएहि ३; खाएहु ६.

एक कहत मोहि सकुच अति रहा बालि की काँख।
इन्ह[1] महु रावन तैं कवन सत्य बदहि तजि माख ॥ २४ ॥

सुनु सठ सोइ रावन बलसीला। हरगिरि जान जासु भुज लीला।
जान उमापति जासु सुराई। पूजेउ जेहि सिर सुमन चढ़ाई।
सिर सरोज निज करन्हि उतारी। पूजेउ अमित बार[2] त्रिपुरारी।
भुज बिक्रम जानहि दिगपाला। सठ अजहूँ जिन्हके उर साला।
जानहि दिग्गज उर कठिनाई। जब जब भिरउँ[3] जाइ बरिआई।
जिन्ह के दसन कराल न फूटे। उर लागत मूलक इव टूटे।
जासु चलत डोलति इमि धरनी। चढ़त मत्त गज जिमि लघु तरनी।
सोइ रावनु जग बिदित प्रतापी। सुनेहि न स्रवन अलीक प्रलापी॥

तेहि रावन कहँ लघु कहसि नर कर करसि बखान।
रे कपि बर्बर खर्ब खल अब जाना तव जान[4] ॥ २५ ॥

सुनि अंगद सकोप कह बानी। बोलु सँभारि अधम अभिमानी।
सहसबाहु भुज गहन अपारा। दहन अनल सम जासु कुठारा।
जासु परसु सागर खर धारा। बूडे नृप अगनित बहु बारा।
तासु गर्ब जेहि देखत भागा। सो नर क्यों दससीस अभागा।
राम मनुज कस रे सठ बंगा। धन्वी कामु नदी पुनि गंगा।
पसु सुरधेनु कल्पतरु रूखा। अन्न' दान अरु रस पीयूखा।
बैनतेय खग अहि सहसानन। चिंतामनि पुनि उपल दसानन।
सुनु मतिमंद लोक बैकुंठा। लाभ कि रघुपति भगति अकुंठा॥

सेन सहित तव मान मथि बन उजारि पुर जारि।
कस रे सठ हनुमान कपि गयेउ जो तव सुत मारि ॥ २६ ॥

सुनु रावन' परिहरि चतुराई। भजसि न कृपासिंधु रघुराई।

१–४, ५, ६, तिन्ह २ ३–४, ५, ६ भिरौं ३
२–४, ५, ६ अमित बार पूजेउ २ ४–३, ४, ५ ज्ञान ६

जौं खल भएसि राम कर द्रोही। ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही॥
मूढ़ बृथा[1] जनि मारसि गाला। राम बयर होइहि अस हाला॥
तव सिर निकर कपिन्ह के आगे। परिहरि धरनि राम सर लागे॥
ते तव सिर कंदुक सम[2] नाना। खेलिहहिं भालु कीस चौगाना॥
जबहिं समर कोपिहि रघुनायक। छुटिहहिं अति कराल बहु सायक॥
तब कि चलिहि अस गाल तुम्हारा। अस बिचारि भजु राम उदारा॥
सुनत बचन रावन परजरा। जरत महानल जनु घृत परा॥

कुंभकरन अस बंधु मम सुत प्रसिद्ध सक्रारि।
मोर पराक्रम नहिं सुनहि जितेउँ चराचर झारि॥ २७॥

सठ साखामृग जोरि सहाई। बाँधा सिंधु इहै प्रभुताई॥
नाघहिं खग अनेक बारीसा। सूर न होहिं ते सुनु सब[3] कीसा॥
मम भुज सागर बल जल पूरा। जहँ बूड़े बहु सुर नर सूरा॥
बीस पयोधि अगाध अपारा। को अस बीर जो पाइहि पारा॥
दिगपालन्ह मैं नीर भरावा। भूप सुजसु खल मोहि सुनावा॥
जौं पै समर सुभट तव नाथा। पुनि पुनि कहसि जासु गुनगाथा॥
तौ बसीठ पठवत केहि काजा। रिपु सन प्रीति करत नहिं लाजा॥
हर गिरि मथन निरखु मम बाहू। पुनि सठ कपि निज प्रभुहि सराहू॥

सूर कवन रावन सरिस स्वकर काटि जेहिं सीस।
हुने अनल अति हरख बहु बार साखि गौरीस[4]॥ २८॥

जरत बिलोकेउँ जबहिं कपाला। बिधि के लिखे अंक निज भाला॥
नर के कर आपन बध बाँची। हसेउँ जानि बिधि गिरा असाँची॥
सोउ मन समुझि त्रास नहिं मोरे। लिखा बिरंचि जरठ मति भोरे॥
आन बीर बल सठ मम आगे। पुनि पुनि कहसि लाज पति त्यागे॥

१–४, ५, ६; मुधा ३.   ३–४, ५; सठ ६; जड़ ३.
२–४, ५, ६; इव ३.   ४–४, ५, ६; महु बार बहु हरषित साखि गिरीस ३.

कह अंगद सलज्ज जग माही। रावन तोहि, समान कोउ नाही।
ाजवंत तव सहज सुभाऊ। निज मुख निज गुन कहसि न काऊ।
रि अरु सैल कथा चित रही। ता ते बार बीस तैं कही।
ो भुज बल राखेहु उर घाली। जीतेहु सहसबाहु बलि बाली।
ुु मतिमंद देहि अब पूरा। काटे सीस कि होइअ सूरा।
द्रजालि[1] कहुँ कहिअ न बीरा। काटइ निज कर सकल सरीरा॥
जरहि पतंग मोह[2] बस भार बहहि खरबृंद।
ते नहि सूर कहावहि[2] समुझि देखु मतिमंद॥ २९॥

न जनि बतनढ़ान खल करही। सुनु मम बचन मान परिहरही।
मुख मैं न बमीठी आओेउ। अस बिचारि रघुबीर पठाओेउ।
। बार अस[3] कहइ कृपाला। नहि गजारि जसु बधे सृगाला।
। महु समुझि बचन प्रभु केरे। सहेउँ कठोर बचन सठ तेरे।
हे त करि मुख भंजन तोरा। लै जातेउँ सीतहि बरजोरा।
उँ, तव ,बलु अधम सुरारी। सूने हरि आनिहि पर नारी।
निसिचर पति गर्ब बहूता। मैं रघुपति सेवक कर दूता।
न राम अपमानहि डरऊँ। तोहि देखत अस कौतुक करऊँ॥
तोहि पटकि महि सेन हति चौपट करि तव गाउँ।
तव -जुवतीन्ह[4] समेत सठ जनकसुतहि लै जाउँ॥ ३०॥

मस करौं तदपि न बड़ाई। मुओहि बधे नहि कछु[5] मनुसाई।
कामबस कृपन-बिमूढ़ा। अतिदरिद्र अजसी अतिबूढ़ा।
रोगबस संतत क्रोधी। बिष्णुबिमुख श्रुति संत बिरोधी।
पक निंदक अघखानी। जीवत सव सम चौदह प्रानी।

–४, ५, ६; बाजीगर ३ ४–४, ५, ६; मदोदरी ३.
–४, ५ ६; बिमोह, सराहिअहि ३. ५–४, ५, ६; कछु नहि ३
–४, ५, ६; इमि ३

अस बिचारि खल बधउँ न तोही । अब जनि रिस उपजावसि मोही ।
सुनि सकोप कह निसिचरनाथा । अधर दसन दसि[1] मीजत हाथा ।
रे कपि अधम[2] मरन अब चहसी । छोटे बदन बात बड़ि कहसी ।
कटु जल्पसि जड़ कपि बल जाकें । बल प्रताप बुधि तेज न ताकें ॥

अगुन अमान जानि[3] तेहि दीन्ह पिता बनबास ।
सो दुख अरु जुबती बिरह पुनि निसदिन[3] मम त्रास ॥
जिन्हके बल कर गर्ब तोहि अइसे मनुज अनेक ।
खाहिं निसाचर दिवस निसि मूढ़ समुझु तजि टेक ॥३०क॥

जब तेहिं कीन्ह राम कइ निंदा । क्रोधवंत अति भयेउ कपिंदा ।
हरि हर निंदा सुनै जो काना । होइ पाप गोघात समाना ।
कटकटान कपिकुंजर भारी । दुहु भुजदंड तमकि महि मारी ।
डोलत धरनि सभासद खसे । चले भाजि भय मारुत ग्रसे ।
गिरत सँभारि उठा दसकंधर । भूतल परे मुकुट अतिसुंदर[4] ।
कछु तेहि लै निज सिरन्हि[5] सवाँरे । कछु अंगद प्रभु पास पवाँरे ।
आवत मुकुट देखि कपि भागे । दिनही लूक परन बिधि लागे ।
की रावन करि कोप चलाए । कुलिस चारि आवत अति धाए ।
कह प्रभु हसि जनि हृदय डेराहू । लूक न असनि केतु नहि राहू ।
ए किरीट दसकंधर केरे । आवत बालितनय के प्रेरे ॥

तरकि पवनसुत कर गहेउ[6] आनि धरे प्रभु पास ।
कौतुक देखहिं भालु कपि दिनकर सरिस प्रकास ॥

१–४, ५, ६, डसि ३
२–४, ५, ६; पोत ३.
३–८, ५, ६; बिचारि, अनुदिन ३.
४–८, ५, ६, गिरत दसानन उठा सँभारा, भूतल परेउ मुकुट पटचारी ३.
५–८, ५, ६; बहुकर निज करन्हि ३
६–८, ५, ६; कूदि गहे वर पवनसुत ३.

उहाँ सकोप दसानन सब सन कहत रिसाइ[1]।
धरहु कपिहि धरि मारहु सुनि अंगद मुसुकाइ[2] ॥ ३१ ॥

ओहि बधि बेगि सुभट सब धावहु। खाहु भालु कपि जहँ तहँ पावहु।
मर्कट हीन करहु महि जाई। जिअत धरहु तापस द्वौ भाई।
पुनि सकोप बोलेउ जुबराजा। गाल बजावत तोहि न लाजा।
मरु गर काटि निलज कुलघाती। बल बिलोकि बिहरति[3] नहि छाती।
रे त्रियचोर कुमारग गामी। खल मलरासि मंदमति कामी।
सन्यपाति जल्पसि दुर्बादा। भयेसि कालबस खल[4] मनुजादा।
या को फलु पावहिगो आगे। बानर भालु चपेटन्हि लागे।
रामु मनुज बोलत असि बानी। गिरहि न तव रसना अभिमानी।
गिरिहहिं रसना ससय नाही। सिरन्हि समेत समर महि माही॥

सो नर क्यों दसकंध बालि बध्यो जेहि एक सर।
बीसहु लोचन अंध धिग तव जन्म कुजाति जड़॥
तव सोनित की प्यास तृपित राम सायक निकर।
तजौं तोहि तेहि त्रास कटु जल्पक निसिचर अधम॥ ३२॥

मै तव दसन तोरिबे लायक। आयेसु मोहि न दीन्ह रघुनायक।
अस रिस होति दसो मुख तोरौं। लंका गहि समुद्र महँ बोरौं।
गूलरि फल समान तव लंका। बसहु मध्य तुम्ह जंतु असंका।
मैं बानर फल खात न बारा। आयेसु दीन्ह न राम उदारा।
जुगुति सुनत रावन मुसुकाई। मूढ़ सिखिहि कहँ बहुत झुठाई।
बालि न कबहुँ गाल अस मारा। मिलि तपसिन्ह तैं भयेसि लबारा।

१-४, ५, ६, उहा कहत दसकंध रिसाई। धरि मारहु कपि भाजि न जाई॥ ३
२-४, ५, ६, महि अकास करि फरि रोहाई ३.
३-४, ५, ६, बिहरी ३
४-४, ५, ६, निसि ३   ५-४, ५, ६ नर ३

साचेहु मैं लबार भुजबीहा । जौं न उपारिउँ तव दस जीहा ।
समुझि राम प्रताप कपि कोपा[1] । सभा माझ पन करि पद रोपा ।
जउ मम चरन सकसि सठ टारी । फिरहिं रामु सीता मैं हारी ।
सुनहु सुभट सब कह दससीसा । पद गहि धरनि पछारहु कीसा ।
इंद्रजीत आदिक बलवाना । हरषि उठे जहँ तहँ भट नाना ।
झपटहिं करि बल बिपुल उपाई । पद न टरै बैठहिं सिरु नाई ।
पुनि उठि झपटहिं सुरआराती । टरै न कीस चरन ऐहि भाँती ।
पुरुष कुजोगी जिमि उरगारी । मोह बिटप नहि सकहि उपारी ॥

कोटिन्ह मेघनाद सम सुभट उठे हरषाइ ।
झपटहिं टरै न कपि चरन पुनि बइठहि सिरु नाइ ॥[2]
भूमि न छाड़त कपि चरन देखत रिपु मद भाग ।
कोटि बिघ्न ते संत कर मन जिमि नीति न त्याग ॥ ३३ ॥

कपि बलु देखि सकल हिय हारे । उठा आपु कपि के परचारे[3] ।
गहत चरन कह बालिकुमारा । मम पद गहे न तोर उबारा ।
गहसि न राम चरन सठ जाई । सुनत फिरा मन अति सकुचाई ।
भऐउ तेज हत श्री सब गई । मध्य दिवस जिमि ससि सोहई ।
सिंघासन बैठेउ सिर नाई । मानहु संपति सकल गवाई ।
जगदात्मा प्रानपति रामा । तासु बिमुख किमि लह बिस्रामा ।
उमा राम की भृकुटि बिलासा । होइ बिस्व पुनि पावइ नासा ।
तृन ते कुलिस कुलिस तृन करई । तासु दूत पन कहु किमि टरई ।
पुनि कपि कही नीति बिधि नाना । मान न ताहि कालु निअराना ।
रिपु मद मथि प्रभु सुजसु सुनायो । येह कहि चल्यो बालि नृप जायो ।
हतौं न खेत खेलाइ खेलाई । तोहि अबहि का करौं बड़ाई ।

१–४,५,६, राम प्रताप सुमिरि कपि कोपा ३. ३–४, ५, ६, जुबराज प्रचारे ३.
२–३ में यह दोहा नहीं है ।

प्रथमहि तासु तनय कपि मारा । सो सुनि रावन भएेउ दुखारा ।
जातुधान अंगद पन देखी । भय ब्याकुल सब भये बिसेखी ॥
रिपु बल धरषि हरषि कपि बालितनय बल पुंज ।
पुलक सरीर नयन जल[1] गहे राम पद कंज ॥
साँझ जानि दसकंधर[2] भवन गएेउ बिलखाइ ।
मंदोदरी रावनहि[3] बहुरि कहा समुझाइ ॥ ३४ ॥

कंत समुझि मन तजहु कुमतिही । सोह न समर तुम्हहि रघुपतिही ।
रामानुज लघु रेख खचाई । सोउ नहि नाघेहु असि मनुसाई ।
पिय तुम्ह ताहि जितब संग्रामा । जा के दूत केर येह[4] कामा ।
कौतुक सिंधु नाँघि तव लंका । आएेउ कपि केहरी असंका ।
रखवारे हति बिपिन उजारा । देखत तोहि अक्ष तेहि मारा ।
जारि सकल पुर[5] कीन्हेसि छारा । कहाँ रहा बल गर्ब तुम्हारा ।
अब पति मृषा गाल जनि मारहु । मोर कहा कछु हृदय बिचारहु ।
पति रघुपतिहि नृपति जनि[6] मानहु । अग जग नाथ अतुल बल जानहु ।
बान प्रताप जान मारीचा । तासु कहा नहि मानेहि[7] नीचा ।
जनक सभा अगनित भूपाला[8] । रहे तुम्हो बल अतुल[8] बिसाला ।
भंजि धनुष जानकी बिआही । तब संग्राम जितेहु किन ताही ।
सुरपति सुत जानै बल थोरा । राखा जियत आँखि गहि फोरा ।
सूपनखा कै गति तुम्ह देखी । तदपि हृदय नहि लाज बिसेखी ॥
बधि बिराध खरदूखनहि लीला हत्यो कबंध ।
बालि एक सर मारयो तेहि जानहु दसकंध ॥ ३५ ॥

१—४, ५, ६, सजल सुलोचन पुलक तन ३
२—४, ५, ६, दसमौलि तब ३
३—४, ५, ६, निसिचरहि ३
४—४, ५, ६, अस ३.
५—४, ५, ६, नगर सबु ३.
६—४, ५, ६, मति ३
७—३, ४, ५, मानेहु ६
८—४, ५, ६, महिपाला, बिपुल ३

जेहि जलनाथु बधाएउ हेला। उतरे प्रभु दल सहित सुबेला।
कारुनीक दिनकर कुल केतू। दूत पठाएउ तव हित हेतू।
सभा माझ जेहि तव बल मथा। करि बरूथ महु मृगपति जथा।
अंगद हनुमत अनुचर जा के। रन बाकुरे बीर अति बाँके।
तेहि कहुँ पिय पुनि पुनि नर कहहू। मुधा मान ममता मद बहहू।
अहह कंत कृत राम बिरोधा। काल बिबस मन उपज न बोधा।
काल दंड गहि काउ[1] न मारा। हरै धर्म बल बुद्धि बिचारा।
निकट काल जेहि आवत साईं। तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाईं॥

दुइ सुत मरे[2] दहेउ पुर अजहुँ पूर पिय देहु।
कृपासिंधु रघुनाथ[3] भजि नाथ बिमल जसु लेहु॥ ३६॥

नारि बचन सुनि बिसिख समाना। सभा गएउ उठि होत बिहाना।
बैठ जाइ सिंघासन फूली। अति अभिमान त्रास सब भूली।
इहाँ राम अंगदहि बोलावा। आइ चरन पंकज सिरु नावा।
अति आदर समीप बैठारी। बोले बिहँसि कृपाल खरारी।
बालितनय कौतुक अति मोही। तातें सत्य कहु पूछउँ तोही।
रावनु जातुधान कुल टीका। भुज बल अतुल जासु जग लीका।
तासु मुकुट तुम्ह चारि चलाए। कहहु तात कवनी बिधि पाए।
सुनु सर्बज्ञ प्रनत सुखकारी। मुकुट न होहि भूप गुन चारी।
साम दान अरु दंड बिभेदा। नृप उर बसहि नाथ कह बेदा।
नीति धर्म के चरन सुहाए। अस जिअ जानि नाथ पहिं आए॥

धर्म हीन प्रभु पद बिमुख काल बिबस दससीस।
तेहि परिहरि गुन आए[4] सुनहु कोसलाधीस॥

१—४, ५; काहु ३, ६. ३—४, ५, ६; रघुपतिहि ३.
२—४, ५, मारे ३; मारेउ ६. ४—४, ५, ६; आए गुन तजि रावनहि ३.

परम चतुरता स्रवन सुनि बिहँसे रामु उदार।
समाचार पुनि सब कहे गढ़ के बालिकुमार॥ ३७॥

रिपु के समाचार जब पाए। राम सचिव सब निकट बोलाए।
लंका बाँके चारि दुआरा। केहि बिधि लागिअ करहु बिचारा।
तब कपीस रिच्छेस बिभीषन। सुमिरि हृदय दिनकर कुल भूषन।
करि बिचार तिन्ह मंत्र दृढ़ावा। चारि अनी कपि कटकु बनावा।
जथाजोग सेनापति कीन्हे। जूथप सकल बोलि तब लीन्हे।
प्रभु प्रताप कहि सब समुझाए। सुनि कपि सिंघनाद करि धाए।
हरषित राम चरन सिर नावहिं। गहि गिरि सिखर बीर सब धावहिं[1]।
गर्जहिं तर्जहिं भालु कपीसा। जय रघुबीर कोसलाधीसा।
जानत परम दुर्ग अति लंका। प्रभु-प्रताप कपि चलेउ असंका।
घटाटोप करि चहुँ दिसि घेरी। मुखहिं निसान बजावहिं भेरी॥

जयति राम जय लछिमन[2] जय कपीस सुग्रीव।
गर्जहिं सिंघनाद[2] कपि भालु महा बल सींव॥ ३८॥

लंका भयेउ कोलाहल भारी। सुना दसानन अति अहंकारी।
देखहु बनरन्ह केरि ढिठाई। बिहसि निसाचर सेन बोलाई।
आए कीस काल के प्रेरे। छुधावंत सब निसिचर[3] मेरे।
अस कहि अट्टहास सठ कीन्हा। गृह बैठे अहार बिधि दीन्हा।
सुभट सकल चारिहु दिसि जाहू। धरि धरि भालु कीस सब खाहू।
उमा रावनहि अस अभिमाना। जिमि टिट्टिभ खग सूत उताना।
चले निसाचर आयेसु मागी। गहि कर भिंडिपाल बर साँगी।
तोमर मुद्गर परसु[4] प्रचंडा। सूल कृपान परिघ[4] गिरि खंडा।
जिमि अरुनोपल निकर निहारी। धावहिं सठ खग मांसअहारी।

१—यह अर्धाली ३ में नहीं है। ३—४, ५, ६; रजनीचर ३.
२—४, ५, ६; भ्राता सहित, केहरिनाद ३. ४—४, ५, ६; परिघ, परसु ३.

चोच भंग दुख तिन्हहि न सूझा। तिमि धाए मनुजाद अबूझा॥

नानायुध सर चाप धर जातुधान बल बीर।
कोट कगूरन्हि चढि गए कोटि कोटि रन धीर॥ ३९॥

कोट कगूरन्हि सोहहि कैसे। मेरु के सृंगन्हि जनु घन बैसे।
बाजहि ढोल निसान जुझाऊ। सुनि धुनि होइ भटन्हि मन चाऊ।
बाजहि भेरि नफीरि अपारा। सुनि कादर उर जाहि दरारा।
देखिन्ह[1] जाइ कपिन्ह कै ठट्टा। अति बिसाल तनु भालु सुभट्टा।
धावहि गनहि न अवघट घाटा। पर्बत फोरि करहि गहि बाटा।
कटकटाहि कोटिन्ह भट गर्जहिं। दसन ओठ काटहि अति तर्जहिं।
उत रावन इत राम दोहाई। जयति जयति जय परी लराई।
निसिचर सिखर समूह ढहावहिं[2]। कूदि धरहिं कपि फेरि चलावहिं॥

धरि कुधर खंड प्रचंड मर्कट भालु गढ़ पर डारहीं।
झपटहिं चरन गहि पटकि महि भजि चलत बहुरि पचारहीं।
अति तरल तरुन प्रताप तर्पहिं तमकि गढ़ चढ़ि चढ़ि गए।
कपि भालु चढि मंदिरन्ह जहँ तहँ राम जसु गावत भए॥

एकु एक निसिचर गहि[3] पुनि कपि चले पराइ।
ऊपर आपु[4] हेठ भट गिरहिं धरनि पर आइ॥ ४०॥

राम प्रताप प्रबल कपि जूथा। मर्दहि निसिचर सुभट[5] बरूथा।
चढे दुर्ग पुनि जहँ तहँ बानर। जय रघुबीर प्रताप दिवाकर।
चले निसाचर[6] निकर पराई। प्रबल पवन जिमि घन समुदाई।
हाहाकार भयेउ पुर भारी। रोवहिं बालक[7] आतुर नारी।

१–४, ५, देखेन्हि ३; देखि न ६
२–३, ६, चलावहि ४, ५
३–४, ५, गहि निसिचर ६, गहि रजनिचर ३
४–४, ५, ६, आपुनु ३.
५–४, ५, ६, भिरर ३
६–४, ५, ६ तमीचर ३
७–४, ५, ६, आरत बालक ३

सब मिलि देहिं रावनहि गारी । राजु करत ऐहि मृत्यु हकारी ।
निज दल बिचल सुनी तेहि[2] काना । फेरि सुभट लंकेस रिसाना ।
जो रन बिमुख फिरा मैं जाना[2] । सो मैं हतब[3] कराल कृपाना ।
सर्वसु खाइ भोग करि नाना । समरभूमि भए वल्लभ[4] प्राना ।
उग्र बचन सुनि सकल डेराने[5] । चले क्रोध करि सुभट[5] लजाने ।
सन्मुख मरन बीर कै सोभा । तब तिन्ह तजा प्रान कर लोभा ॥

बहु आयुध धर सुभट सब भिरहिं पचारि पचारि ।
ब्याकुल किए[6] भालु कपि परिघ त्रिसूलन्हि[6] मारि ॥ ४१ ॥

भय आतुर कपि भागन लागे । जद्यपि उमा जीतिहहिं आगे ।
कोउ कह कहँ अंगद हनुमंता । कहँ नल नील दुबिद बलवंता ।
निज दल बिकल सुना[7] हनुमाना । पच्छिम द्वार रहा बलवाना ।
मेघनाद तहँ करै लराई । टूट न द्वार परम कठिनाई ।
पवनतनय मन भा अति क्रोधा । गर्जेउ प्रबल काल सम जोधा ।
कूदि लंक गढ़ ऊपर आवा । गहि गिरि मेघनाद कहुँ धावा ।
भंजेउ रथ सारथी निपाता । ताहि हृदय महु मारेसि लाता ।
दुसरें सूत बिकल तेहि जाना । स्यंदन घालि तुरत गृह आना ॥

अंगद सुना पवनसुत गढ़ पर गयेउ अकेल ।
रन बाँकुरा बालिसुत तरकि चढ़ेउ[8] कपि खेल ॥ ४२ ॥

जुद्ध बिरुद्ध क्रुद्ध द्वौ बंदर[9] । राम प्रताप सुमिरि उर अंतर ।
रावन भवन चढ़े द्वौ[10] धाई । करहिं कोसलाधीस दोहाई ।

१—४, ५, ६; जव ३.
२—३, ४, ५; सुना मैं काना ६.
३—४, ५, ६; तेहि मारिहौं ३.
४—४, ५, ६; दुर्लभ ३.
५—४, ५, ६; संकाने । फिरे क्रोध करि बीर ३.
६—४, ५; ब्याकुल कीन्हे, त्रिसूलन ६; कीन्हे ब्याकुल, प्रचंडन्हि ३.
७—४, ५, ६; बिचल सुनी ३.
८—४, ५, ६; समर, चढ़ा ३.
९—५; बानर ३, ६; बनर ४.
१०—४, ५, ६; तब.

कलस सहित गहि भवनु ढहावा। देखि निसाचरपति भय पावा।
नारिबृंद कर पीटहिं छाती। अब दुइ कपि आए उतपाती।
कपिलीला करि तिन्हहि डेरावहिं। रामचंद्र कर सुजसु सुनावहिं।
पुनि कर गहि कंचन के खंभा। कहेन्हि करिअ उतपात अरंभा।
गर्जि परे[1] रिपु कटक मझारी। लागे मर्दइ भुज बल भारी।
काहुहि लात चपेटन्हि केहू। भजहु न रामहि सो फलु लेहू॥

एक एक सो मर्दहिं[2] तोरि चलावहिं मुंड।
रावन आगे परहिं ते जनु फूटहिं दधि कुंड॥ ४३॥

महा महा मुखिआ जे पावहिं। ते पद गहि प्रभु पास चलावहिं।
कहइ बिभीषनु तिन्ह के नामा। देहि रामु तिन्हहूँ निज धामा।
खल मनुजाद द्विजामिष भोगी। पावहिं गति जो जाचत जोगी।
उमा रामु मृदु चित करुनाकर। बयरभाव सुमिरत मोहि निसिचर।
देहिं परम गति सो जिअ जानी। अस कृपाल को कहहु भवानी।
अस प्रभु सुनि न भजहिं भ्रम त्यागी। नर मति मंद ते परम अभागी।
अंगद अरु हनुमंत प्रबेसा। कीन्ह दुर्ग अस कह अवधेसा।
लंका द्वौ कपि सोहहिं कैसे। मथहिं सिंधु दुइ मंदर जैसे॥

भुज बल रिपु दल दलमलि देखि दिवस कर अंत।
कूदे जुगल बिगत स्रम[3] आए जहँ भगवंत॥ ४४॥

प्रभु पद कमल सीस तिन्ह नाए। देखि सुभट रघुपति मन भाए।
राम कृपा करि जुगल निहारे। भए बिगत स्रम परम सुखारे।
गए जानि अंगद हनुमाना। फिरे भालु मर्कट भट नाना।
जातुधान प्रदोष बल पाई। धाए करि दससीस दोहाई।
निसिचर अनी देखि कपि फिरे। जहँ तहँ कटकटाइ भट भिरे।

१–४, ५, ६, कूदि परे ३.— २–४, ५, ६, सन मर्दि कर ३. ३–४, ५, ६, प्रयास बिनु ३.

द्वौ दल प्रबल पचारि पचारी । लरत[1] सुभट, नहि मानहिं[1] हारी ।
महावीर निसिचर सब कारे[2] । नाना बरन बलीमुख भारे ।
सबल जुगल दल समबल जोधा । कौतुक करत लरत[3] करि क्रोधा ।
प्राविट सरद पयोद घनेरे । लरत मनहु मारुत के प्रेरे ।
अनिप अकंपन अरु अतिकाया । बिचलत सेन कीन्हि इन्ह माया ।
भयेउ निमिष महं अति अंधियारा । वृष्टि होइ रुधिरोपल छारा ॥

देखि निबिड तम दसहु दिसि कपिदल भयेउ खभार ।
एकहि एकु न देखई[4] जहँ तहँ करहि पुकार ॥ ४५ ॥

सकल मरमु रघुनायक जाना[5] । लिए बोलि अंगद हनुमाना ।
समाचार सब कहि समुझाए । सुनत कोपि कपिकुंजर धाए ।
पुनि कृपाल हसि चाप चढ़ावा । पावक सायक सपदि चलावा ।
भयेउ प्रकास कतहु तम नाहीं । ज्ञान उदय जिमि संसय[6] जाहीं ।
भालु बलीमुख पाइ प्रकासा । धाए हरषि[7] बिगत स्रम त्रासा ।
हनूमान अंगद रन गाजे । हाँक सुनत रजनीचर भाजे ।
भागत भट पटकहिं धरि धरनी । करहिं भालु कपि अद्भुत करनी ।
गहि पद डारहि सागर माहीं । मकर उरग झष धरि धरि खाहीं ॥

कछु मारे कछु घायल[8] कछु गढ़ चले पराइ ।
गर्जहि भालु बलीमुख रिपु दल बल बिचलाइ ॥ ४६ ॥

निसा जानि कपि चारिउ अनी । आए जहाँ कोसलाधनी ।
राम कृपा करि चितवा सबही । भए बिगत स्रम बानर तबही ।
उहाँ दसानन सचिव[9] हकारे । सब सन कहेसि सुभट जे मारे ।

१–४, ५, ६, लरहि, मानत २.
२–४,५,६, बार तमीचर सब अति २.
३–४, ५ ६; बिबिध प्रकार भिरत २.
४–४, ५, ६; देख तब २.
५–४,५,६; यह सब मरम राम बिभु २.
६–४, ५, ६; दुख सब २.
७–४, ५, ६; कोपि २.
८–४, ५, ६; कछु घायल कछु रन परे, मर्कट भालु भट २.
९–४, ५, ६; सुभट २

आधा कटकु कपिन्ह संहारा। कहहु बेगि का करिअ बिचारा।
माल्यवंत अतिजरठ निसाचर। रावन मातु पिता मंत्री बर।
बोला बचन नीति अतिपावन। सुनहु तात कछु मोर सिखावन।
जब ते तुम्ह सीता हरि आनी। असगुन होहिं न जाहि बखानी।
बेद पुरान जासु जस गायो[1]। राम बिमुख काहु न सुखु पायो[1]॥

हिरन्याक्ष भ्राता सहित मधु कैटभ बलवान।
जेहि मारे सोइ अवतरेउ कृपासिंधु भगवान॥
कालरूप खल बन दहन गुनागार घनबोध।
सिव बिरंचि जेहि सेवहि तासो[2] कवन बिरोध॥ ४७॥

परिहरि बयरु देहु बैदेही। भजहु कृपानिधि परम सनेही।
ताके बचन बान सम लागे। करिआ मुह[3] करि जाहि अभागे।
बूढ भएसि न त मरतेउँ तोही। अब जनि नयन देखावसि मोही।
तेहि अपने मन अस अनुमाना। बध्यो चहत एहि कृपानिधाना[4]।
सो उठि गएउ कहत दुर्बादा। तब सकोप बोलेउ घननादा।
कौतुक प्रात देखिअहु मोरा। करिहौं बहुत कहौं का थोरा।
सुनि सुत बचन भरोसा आवा। प्रीति समेत अंक बैठावा।
करत बिचार भएउ भिनुसारा। लागे कपि पुनि चहूँ दुआरा।
कोपि कपिन्ह दुर्घट गढ़ु घेरा। नगरु कोलाहलु भएउ घनेरा।
बिबिधायुध धर निसिचर धाये। गढ़ ते पर्बत सिखर ढहाये॥
ढाहे महीधर सिखर कोटिन्ह बिबिध बिधि गोला चले।
बहरात जिमि पबिपात गर्जत जनु प्रलय के बादले।

१–४, ५, ६, गावा, पावा ३.
२–४ ५ ६, जेहि सेवहि सिव कमलभव तेहि सन ३.
३–४, ५, मुख २, ६
४–४, ५, ६; श्री भगवाना ३

मर्कट विकट भट जुटत कटत न लटत तन, जर्जर भए ।
गहि सयल तेहि[1] गढ़ पर चलावहिं जहँ सो तहँ निसिचर हए ॥
मेघनाद सुनि स्रवन अस गढ़ पुनि छेका आइ ।
उतर्‌यो बीर दुर्ग ते[2] सन्मुख चल्यो बजाइ ॥ ४८ ॥

कहँ कोसलाधीस द्वौ भ्राता । धन्वी सकल लोक विख्याता ।
कहँ नल नील दुबिद सुग्रीवा । अंगद हनूमंत बल सींवा ।
कहाँ विभीषनु भ्राता द्रोही । आजु सबहि[3] हठि मारौं ओही ।
अस कहि कठिन बान संधाने । अतिसय क्रोध स्रवन लगि ताने ।
सर समूह सो छाड़ै लागा । जनु सपक्ष धावहिं बहु नागा ।
जहँ तहँ परत देखिअहिं बानर । सन्मुख होइ न सके तेहि अवसर ।
जहँ तहँ भागि चले[4] कपि रीछा । बिसरी सबहि जुद्ध कै ईछा ।
सो कपि भालु न रन महँ देखा । कीन्हेसि जेहि न प्रान अवसेखा ॥
दस दस सर सब मारेसि[5] परे भूमि कपि बीर ।
सिंहनाद करि गर्जा मेघनाद बल[5] धीर ॥ ४९ ॥

देखि पवनसुत कटक बिहाला । क्रोधवंत जनु धायेउ काला ।
महासैल अेक तुरत[6] उपारा । अतिरिस मेघनाद पर डारा ।
आवत देखि गअेउ नभ सोई । रथ सारथी तुरग सब खोई ।
बार बार पचार हनुमाना । निकट न आव मरमु सो जाना ।
रघुपति निकट[7] गअेउ घननादा । नाना भाँति करेसि दुर्बादा ।
अस्त्र सस्त्र आयुध सब डारे । कौतुक ही प्रभु काटि निवारे ।

१—४, ५, ६; तेइ ३.
२—४, ५, ६; उतरि दुर्ग ते बीर बर ३.
३—४, ५, ६; सठहि ३.
४—४, ५, ६; भागे भय व्याकुल ३.
५—४, ५, ६; मारेसि दस दस बिसिख सब, गर्जत भएउ मेघनाद रन ३.
६—४, ५, ६; महीधर तमकि ३.
७—४, ५, ६, राम समीप ३.

देखि प्रताप[1] मूढ़ खिसिआना । करै लाग माया बिधि नाना ।
जिमि कोउ करै गरुड़ सैं खेला । डरपावै गहि स्वल्प सपेला ॥

जासु प्रबल माया बस सिव बिरंचि बड छोट ।
ताहि देखावै निसिचर निज माया मति खोट ॥ ५० ॥

नभ चढ़ बरषै बिपुल अँगारा । महि ते प्रगट होहि जलधारा ।
नाना भाति पिसाच पिसाची । मारु काटु धुनि बोलहि नाची ।
बिष्टा पूय रुधिर कच हाड़ा । बरषइ कबहुँ उपल बहु छाड़ा ।
बरषि धूरि कीन्हेसि अँधिआरा । सूझ न आपन हाथ पसारा ।
कपि अकुलाने[2] माया देखे । सब कर मरन बना ऐहि लेखे ।
कौतुक देखि राम मुसुकानें । भए सभीत सकल कपि जानें ।
एक बान काटी सब माया । जिमि दिनकर हर तिमिर निकाया ।
कृपा दृष्टि कपि भालु बिलोके । भए प्रबल रन रहहिं न रोके ॥

आऐसु मागि[3] राम पहि अंगदादि कपि साथ ।
लछिमन चले क्रुद्ध होइ[3] बान सरासन हाथ ॥ ५१ ॥

छतज नयन उर बाहु बिसाला । हिमगिरि निभ तनु कछु ऐक लाला ।
इहाँ दसानन सुभट पठाए । नाना सस्त्र अस्त्र गहि धाए ।
भूधर नख बिटपायुध धारी । धाए कपि जय राम पुकारी ।
भिरे सकल जोरिहि सन जोरी । इत उत जय इच्छा नहि थोरी ।
मुठिकन्ह लातन्ह दातन्ह[4] काटहिं । कपि जयसील मारि पुनि डाटहिं ।
मारु मारु धरु धरु धरु मारू । सीस तोरि गहि भुजा उपारू ।
असि रव पूरि रही नव खंडा । धावहिं जहँ तहँ रुंड प्रचंडा ।
देखहि कौतुक नभ सुर बृंदा । कबहुक बिसमय कबहु अनंदा ॥

१-४, ५, ६; प्रभाउ ३. ३-४, ५, ६, मागेउ, सकोप अति ३,
२-४, ५, ६; अकुलाने कपि ३. ४-३, ४, ५; दातन्ह ६.

रुधिर गाड़ भरि भरि जम्यो[1] ऊपर धूरि उड़ाइ।
जनु अँगार रासिन्ह पर मृतक धूम रह्यो छाइ॥ ५२॥

घायल बीर बिराजहि कैसे। कुसुमित किंसुक के तरु जैसे।
लछिमन मेघनाद द्वौ जोधा। भिरहि परसपर करि अति क्रोधा।
एकहि एक सकै नहि जीती। निसिचर छल बल करै अनीती।
क्रोधवंत तब भअेउ अनंता। भंजेउ रथ सारथी तुरंता।
नाना बिधि प्रहार कर सेषा। राच्छस भअेउ प्रान अवसेषा।
रावनसुत निज मन अनुमाना। संकट भअेउ हरिहि मम प्राना।
बीरघातिनी छाड़िसि साँगी। तेज पुंज लछिमन उर लागी।
मुरछा भई सक्ति के लागे। तब चलि गअेउ निकट भय त्यागे॥

मेघनाद सम कोटि सत जोधा रहे उठाइ।
जगदाधार सेष[2] किमि उठइ चले खिसिआइ॥ ५३॥

सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू। जारै भुवन चारि दस आसू।
सक संग्राम जीति को ताही। सेवहि सुर नर अग जग जाही।
यह कौतूहल जानै सोई। जा पर कृपा राम कै होई।
संध्या भई फिरी द्वौ बाहनी। लगे सँभारन निज निज अनी।
ब्यापक ब्रह्म अजित भुवनेश्वर। लछिमन कहाँ बूझ करुनाकर।
तब लगि लै आअेउ हनुमाना। अनुज देखि प्रभु अति दुख माना।
जामवंत कह बैद सुषेना। लंका रहै को पठई लेना।
धरि लघु रूप गअेउ हनुमंता। आनेउ भवन समेत तुरंता॥

राम पदारबिंद[3] सिर नाअेउ आइ सुषेन।
कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवनसुत लेन॥ ५४॥

राम चरन सरसिज उर राखी। चला प्रभंजनसुत बल भाखी।

१–४,५,६; जम्यो गाड़ भरि भरि रुधिर २. ३–४,५,६; रघुपति चरन सरोज ३.
२–४,५,६; अनत ३.

उहाँ दूत ओक मरमु जनावा । रावनु कालनेमि गृह आवा ।
दसमुख कहा मरमु तेहि सुना । पुनि पुनि कालनेमि सिरु धुना ।
देखत तुम्हहि नगरु जेहि जारा । तासु पंथ को रोकै न पारा[1] ।
भजि रघुपति करु हित[2] आपना । छाड़हु नाथ मृषा[2] जल्पना ।
नील कंज तनु सुंदर स्यामा । हृदय राखु लोचनाभिरामा ।
मैं तैं मोर मूढ़ता[3] त्यागू । महा मोह निसि सूतत[3] जागू ।
काल ब्याल कर भक्षक जोई । सपनेहु समर कि जीतिअ सोई ॥

सुनि दसकंठ रिसान अति तेहि मन कीन्ह बिचार ।
राम दूत कर मरौं बरु येह खल रत मल भार ॥ ५५ ॥

अस कहि चला रचिसि मग माया । सर मंदिर बर बाग बनाया ।
मारुतसुत देखा सुभ आस्रम । मुनिहि बूझि जलु पिअउँ जाइ स्रम ।
राक्षस कपट बेष तहँ सोहा । मायापति दूतहि चह मोहा ।
जाइ पवनसुत नाअेउ माथा । लाग सो कहै राम गुन गाथा ।
होत महा रन रावन रामहि । जितिहहि रामु न संसय या महि ।
इहाँ भए मैं देखौं भाई । ज्ञान दृष्टि बलु मोहि अधिकाई ।
माँगा जल तेहि दीन्ह कमंडल । कह कपि नहि अघाउँ थोरे जल ।
सर मज्जन करि आतुर आवहु । दिच्छा देउँ ज्ञान जेहि पावहु ॥

सर पैठत कपि पद गहा मकरी तब अकुलान ।
मारी सो धरि दिब्य तनु चली गगन चढ़ि जान ॥ ५६ ॥

कपि तव दरस भइउँ निःपापा । मिटा तात मुनिवर कर सापा ।
मुनि न होइ येह निसिचर घोरा । मानहु सत्य बचन कपि[4] मोरा ।
अस कहि गई अपछरा जबही । निसिचर निकट गअेउ कपि[5] तबही ।

१–४, ५, ६; रोकनिहारा ३. सोवत ३
२–४,५,६, हित करु, वृथा ३. ४–४, ५, ६; प्रभु ३.
३–४,५,६; अहंकार ममता मद, ५–४, ५, ६; सो ३.

कह कपि मुनि गुरु दछिना लेहू । पाछें हमहि मंत्र तुम्ह देहू ।
सिर लंगूर लपेटि पछारा । निज तनु प्रगटेसि मरती बारा ।
राम राम कहि छाड़ेसि प्राना । सुनि मन हरषि चलेउ हनुमाना ।
देखा सैल न औषध चीन्हा । सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा ।
गहि गिरि निसि नभ धावत भएऊ । अवधपुरी ऊपर कपि गएऊ ॥

देखा भरत बिसाल अति निसिचर मन अनुमानि ।
बिनु फर सायक[1] मारेउ चाप स्रवन लगि तानि ॥ ५७ ॥

परेउ मुरुछि महि लागत सायक । सुमिरत राम राम रघुनायक ।
सुनि प्रिय बचन भरतु तब[2] धाए । कपि समीप अति आतुर आए ।
बिकल बिलोकि कीस उर लावा । जागत नहि बहु भाँति जगावा ।
मुख मलीन मन भए दुखारी । कहत बचन भरि लोचन बारी ।
जेहि बिधि राम बिमुख मोहि कीन्हा । तेहि पुनि येह दारुन दुख दीन्हा ।
जौं मोरें मन बच अरु काया । प्रीति राम पद कमल अमाया ।
तौ कपि होउ बिगत स्रम सूला । जौं मोपर रघुपति अनुकूला ।
सुनत बचन उठि बैठ कपीसा । कहि जय जयति कोसलाधीसा ॥

लीन्ह कपिहि उर लाइ पुलकित तन लोचन सजल ।
प्रीति न हृदय समाइ सुमिरि राम रघुकुल तिलक ॥ ५८ ॥

तात कुसल कहु सुखनिधान की । सहित अनुज अरु मातु जानकी ।
कपि सब चरित समास[3] बखाने । भए दुखी मन महु पछिताने ।
अहह दैव मैं कत जग जाएउँ । प्रभु के एकहु काज न आएउँ ।
जानि कुअवसरु मन धरि धीरा । पुनि कपि सन बोले बलबीरा ।
तात गहरु होइहि तोहि जाता । काजु नसाइहि होत प्रभाता ।
चढ़ु मम सायक सैल समेता । पठवउँ तोहि जहँ कृपानिकेता ।

१–४ ५, ६; सर तकि ३. ३–४, ५, ६; सछेप ३ ·
२–४, ५, ६; उठि ३.

सुनि कपि मन उपजा अभिमाना । मोरे भार चलिहि किमि बाना ।
राम प्रभाउ बिचारि बहोरी । बंदि चरन कह कपि कर जोरी ॥
तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहौं नाथ तुरंत ।
अस कहि आयसु पाइ पद बंदि चलेउ हनुमंत[१] ॥
भरत बाहु बल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार ।
मन महु जात सराहत[२] पुनि पुनि पवनकुमार ॥ ५९ ॥

उहा रामु लछिमनहि निहारी । बोले बचन मनुज अनुसारी ।
अर्धराति गइ कपि नहि आयेउ । राम उठाइ अनुज उर लायेउ ।
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ । बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ ।
मम हित लागि तजेहु पितु माता । सहेहु बिपिन हिम आतप बाता ।
सो अनुरागु कहाँ अब भाई । उठहु न सुनि मम बच बिकलाई ।
जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू । पिता बचन मनितेउँ नहि ओहू ।
सुत बित नारि भवन परिवारा । होहि जाहि जग बारहि बारा ।
अस बिचारि जिय जागहु ताता । मिलै न जगत सहोदर भ्राता ।
जथा पंख बिनु खग अति दीना । मनि बिनु फनि करिबर कर हीना ।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही । जौं जड़ दैव जिआवै मोही ।
जैहौं अवध कौन मुहु[३] लाई । नारि हेतु प्रिय भाइ गवाई ।
बरु अपजसु सहतेउँ जग माही । नारि हानि बिसेष छति नाही ।
अब अपलोकु सोकु सुत तोरा । सहिहि निठुर कठोर उर मोरा ।
निज जननी के एक कुमारा । तात तासु तुम्ह प्रान अधारा ।
सौंपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी । सब बिधि सुखद परम हित जानी ।

१-४, ५, ६, तव प्रताप उर राखि गोसाईं । २-४, ५, ६; जात सराहत मनहि मन २
जैहौं राम बान का नाई ॥ ३-४ ५, ६, मुख १.
भरत हरषि तब आयसु दयऊ ।
पद सिर नाइ चलत कपि भयऊ ॥

उतरु काह देहौं तेहि . जाई । उठि किन मोहि सिखावहु भाई ।
बहु बिधि सोचत सोच बिमोचन । स्रवत सलिल राजिव दल लोचन ।
उमा एक अखंड रघुराई । नर गति भगत कृपाल देखाई ॥
प्रभु प्रलाप[१] सुनि कान बिकल भए, बानर निकर ।
आइ गयेउ हनुमान जिमि करुना महँ बीर रस ॥ ६० ॥

हरषि राम भेंटेउ हनुमाना । अति कृतज्ञ प्रभु परम सुजाना ।
तुरत बैद तब कीन्हि उपाई । उठि बैठे लछिमन हरषाई ।
हृदय लाइ प्रभु भेंटेउ[२] भ्राता । हरषे सकल भालु कपि भ्राता ।
कपि पुनि[३] बैद तहाँ पहुँचावा । जेहि बिधि तबहिं ताहि लै आवा ।
यह वृत्तांत दसानन सुनेऊ । अतिबिषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ ।
ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा । बिबिध जतन करि ताहि जगावा[४] ।
जागा निसिचर देखिअ कैसा । मानहु कालु देह धरि बैसा ।
कुंभकरन बूझा कहु[५] भाई । काहे तव मुख रहे सुखाई ।
कथा कही सब तेहि अभिमानी । जेहि प्रकार सीता हरि आनी ।
तात कपिन्ह सब निसिचर मारे । महा महा जोधा संहारे ।
दुर्मुख सुररिपु मनुजअहारी । भट अतिकाय अकंपन भारी ।
अपर महोदर आदिक बीरा । परे समर महि सब रन धीरा ॥
सुनि दसकंधर बचन तब, कुंभकरन बिलखान ।
जगदंबा हरि आनि अब, सठ चाहत कल्यान ॥ ६१ ॥

भल न कीन्ह तैं निसिचर नाहा । अब मोहि आइ जगाएहि काहा ।
अजहूँ तात त्यागि अभिमाना । भजहु राम होइहि कल्याना ।
हैं दससीस मनुज रघुनायक । जा के हनूमान से पायक ।

१—४, ५, ६, बिलाप ३. २—४, ५, ६; भेटेउ प्रभु ३, ६. ३—४, ५, ६; पुनि कपि ३. ४—४, ५, ६; गएउ । करि बहु ... जतन जगावत भएऊ ३. ५—४, ५, ६, सुनु ३.

अहह बंधु तैं कीन्हि खोटाई। प्रथमहि मोहि न सुनाएहि आई।
कीन्हेहु प्रभु बिरोध तेहि देव क। सिव बिरंचि सुर जाके सेवक।
नारद मुनि मोहि ज्ञान जो कहा[1]। कहतेउँ तोहि समय निर्बहा[1]।
अब भरि अंक भेटु मोहि भाई। लोचन सुफल करौं मैं[2] जाई।
स्याम गात सरसीरुह लोचन। देखौं जाइ तापत्रय मोचन॥

राम रूप गुन सुमिरत[3] मगन भएउ छन एक।
रावन मागेउ कोटि घट मद अरु महिप अनेक॥ ६२॥

महिप खाइ करि मदिरा पाना। गर्जा बज्राघात समाना।
कुंभकरन दुर्मद रन रंगा। चला दुर्ग तजि सेन न संगा।
देखि बिभीषनु आगे आएउ। परेउ चरन निज नाम सुनाएउ[4]।
अनुज उठाइ हृदय तेहि लायो[5]। रघुपति भगत जानि मन भायो[5]।
तात लात रावन मोहि मारा। कहत परम हित मंत्र बिचारा।
तेहि गलानि रघुपति पहिं आएउँ। देखि दीन प्रभु के मन भाएउँ।
सुनु सुत भएउ काल बस रावन। सो कि मान अब परम सिखावन।
धन्य धन्य तैं धन्य बिभीषन। भएहु तात निसिचर कुल भूषन।
बंधु बंस तैं कीन्ह उजागर। भजेहु राम सोभा सुख सागर॥

बचन कर्म मन कपट तजि भजेहु राम रन धीर।
जाहु न निज पर सूझ मोहि भएउँ काल बस बीर॥ ६३॥

बंधु बचन सुनि चला[6] बिभीषन। आएउ जहँ त्रैलोक बिभूषन।
नाथ भूधराकार सरीरा। कुंभकरन आवत रन धीरा।
एतना कपिन्ह सुना जब काना। किलकिलाइ धाए बलवाना।

१—४, ५, ६, कहेऊ, निर्बहेऊ ३
२—४, ५, ६; निज ३.
३—४, ५, ६; सुमिरि मन ३.
४—४, ५, ६; गएऊ। पद गहि नाम कहत निज भएऊ ३.
५—४, ५, ६; लावा, भावा ३.
६—४, ५ ६; फिरा ३.

लिए उठाइ[1] विटप अरु भूधर । कटकटाइ डारहिं ता ऊपर ।
कोटि कोटि गिरि सिखर प्रहारा । करहिं भालु कपि एक एक[2] बारा ।
मुरयो न मनु तनु टरयो न टारयो[3] । जिमि गज अर्क फलनि को मारयो[3] ।
तब मारुतसुत मुठिका हन्यो[4] । परयो धरनि व्याकुल सिर धुन्यो[4] ।
पुनि उठि तेहि मारेउ हनुमंता । घुर्मित भूतल परेउ तुरंता ।
पुनि नल नीलहि अवनि पछारेसि । जहँ तहँ पटकि पटकि भट डारेसि ।
चली बलीमुख सेन पराई । अति भय त्रसित न कोउ समुहाई ॥

अंगदादि कपि मुरछित[5] करि समेत सुग्रीव ।
काँख दाबि कपिराज कहुँ चला अमित बल सींव ॥ ६४ ॥

उमा करत रघुपति नर लीला । खेल गरुड़ जिमि अहि गन मीला ।
भृकुटि भंग जो कालहि खाई । ताहि कि सोहै ऐसि लराई ।
जग पावनि कीरति बिस्तरिहहिं । गाइ गाइ भवनिधि नर तरिहहिं ।
मुरछा गइ मारुतसुत जागा । सुग्रीवहि तब खोजन लागा ।
सुग्रीवहु[6] कै मुरछा बीती । निबुकि गयेउ तेहि मृतक प्रतीती ।
काटेसि दसन नासिका काना । गर्जि अकास चलेउ तेहि जाना ।
गहेउ चरन गहि भूमि[7] पछारा । अतिलाघव उठि पुनि तेहि मारा ।
पुनि आयेउ प्रभु पहिं बलवाना । जयति जयति जय कृपानिधाना[8] ।
नाक कान काटे जिय[9] जानी । फिरा क्रोध करि भै मन ग्लानी ।
सहज भीम पुनि बिनु श्रुति नासा । देखत कपि दल उपजी त्रासा ॥

१–४, ५, ६; उपारि २
२–४, ५, ६; एकहि २.
३–४,५,६; मुरै न मन तन टरै न टारा । जिमि गज अर्क फलन्हि कर मारा । २.
४–४, ५, ६, हनेऊ, धुनेऊ २.
५–४, ५, ६; घाय बस २.
६–४, ५, ६, कपिराजहु २.
७–४,५,६; गहेसि चरन धरि धरनि २.
८–४, ५, ६; जय जय कारुनीक — भगवाना २
९–४, ५, ६; सोइ २.

[illegible]

जय जय जय रघुबंसमनि धाए कपि दै हूह।
एकहि बार तासु[1] पर छाड़ेन्हि गिरि तरु जूह॥ ६५

कुंभकरन रन रंग[2] बिरुद्धा। सन्मुख चला काल जनु क्रुद्धा।
कोटि कोटि करि धरि धरि खाई। जनु टीडी गिरि गुहा समाई।
कोटिन्ह गहि सरीर सन मर्दा। कोटिन्ह मीजि मिलव महि गर्दा।
मुख नासा स्रवनन्हि की बाटा। निसरि पराहि भालु कपि ठाटा।
रन मद मत्त निसाचर दर्पा। बिस्व ग्रसिहि जनु ऐहि बिधि अर्पा।
मुरे सुभट सब[3] फिरहि न फेरे। सूझ न नयन सुनहि नहि टेरे।
कुंभकरन कपि फौज बिडारी[3]। सुनि धाई रजनीचर धारी।
देखी राम बिकल कटकाई। रिपु अनीक नाना बिधि आई।
सुनु सुग्रीव बिभीषन अनुज[4] सभारेहु सेन।
मैं देखौं खल बल दलहि बोले राजिवनयन॥ ६६॥

कर सारंग साजि[5] कटि भाथा। अरि दल दलन[6] चले रघुनाथा।
प्रथम कीन्हि प्रभु धनुष टँकोरा। रिपु दल बधिर भओउ सुनि सोरा।
सत्यसंध छाड़े सर लक्षा। कालसर्प जनु चले सपक्षा।
जहँ तहँ चले बिपुल[6] नाराचा। लगे कटन भट बिकट पिसाचा।
कटहि चरन उर सिर भुजदंडा। बहुतक बीर होहि सत खंडा।
घुमि घुमि घायल महि परहीं। उठि संभारि सुभट पुनि लरहीं।
लागत बान जलद[7] जिमि गाजहिं। बहुतक देखि कठिन सर भागहिं।
रुंड प्रचंड मुंड बिनु धावहिं। धरु धरु मारु मारु धुनि गावहिं॥

१–४, ५, ६; जो तासु ३.
२–४, ५, ६; रन ३.
३–४, ५, ६; बितारी ३.
४–४, ५, ६; सुनु सौमित्र कपीस
सुग्ह सकल ३.
५–४, ५, ६; बिबिल,
मृगपति टवनि ३.
६–४,५,६; अति जव चले निसित ३.
७–४, ५, ६; बनद ३.

छन महु प्रभु के सायकन्हि काटे विकट पिसाच ।
पुनि रघुबीर निषंग[1] महु प्रविसे सब नाराच ॥ ६७ ॥

कुंभकरन मन दीख बिचारी । हति छन माझ निसाचर[2] धारी ।
भा अति क्रुद्ध महा[3] बल बीरा । कियो[3] मृगनायक नाद गँभीरा ।
कोपि महीधर लेइ उपारी । डारै जहँ मरकट भट भारी ।
आवत देखि सैल प्रभु भारे । सरन्हि काटि रज सम करि डारे ।
पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक । छाड़े अति कराल बहु सायक ।
तनु महु प्रविसि निसरि सर जाहीं । जनु दामिनि घन माझ समाही ।
सोनित स्रवत सोह तन कारे । जनु कज्जल गिरि गेरु पनारे ।
बिकल बिलोकि भालु कपि धाए । बिहसा जबहि निकट कपि[4] आए ॥
महानाद करि गर्जा[5] कोटि कोटि गहि कीस ।
महि पटकै गजराज इव सपथ करै दससीस ॥ ६८ ॥

भागे भालु बलीमुख जूथा । वृक बिलोकि जिमि मेष बरूथा ।
चले भागि कपि भालु भवानी । बिकल पुकारत आरत बानी ।
यह निसिचर दुकाल सम अहई । कपि कुल देस परन अब चहई ।
कृपा बारिधर राम खरारी । पाहि पाहि प्रनतारति हारी ।
सकरुन बचन सुनत भगवाना । चले सुधारि सरासन बाना ।
राम सेन निज पाछे घाली । चले सकोप महा बलसाली ।
खैंचि धनुष सर सत संधाने । छूटे तीर सरीर समाने ।
लागत सर धावा रिस भरा । कुधर डगमगत डोलति धरा ।
लीन्ह एक तेहि सैल उपाटी । रघुकुलतिलक भुजा सोइ काटी ।
धावा बाम बाहु गिरि धारी । प्रभु सोउ भुजा काटि महि पारी ।

१—४, ५, ६, रघुपति के त्रोन ३.
२—४, ५, ६, हतो निमिष महु निसिचर ३. ४—४, ५, ६, भट ३
३—४, ५, ६; भएउ क्रुद्ध दारुन, करि ३ ५—४, ५, ६, गर्जत धाएउ बेग अति ३.

काटे भुजा सोह खल कैसा। पक्ष हीन मंदरगिरि जैसा।
उग्र बिलोकनि प्रभुहि बिलोका। ग्रसन चहत मानहु त्रैलोका॥
करि चिक्कार घोर अति[1] धावा बदनु पसारि।
गगन सिद्ध सुर त्रासित हा हा हेति पुकारि॥ ६९॥

सभय देव करुनानिधि जान्यो। स्रवन प्रजंत सरासन तान्यो।
बिसिख निकर निसिचर मुख भरेऊ। तदपि महाबल भूमि न परेऊ।
सरन्हि भरा मुख सन्मुख[2] धावा। कालत्रोन सजीव जनु आवा।
तब प्रभु कोपि तीव्र सर लीन्हा। धर ते भिन्न तासु सिर कीन्हा।
सो सिर परेउ दसानन आगे। बिकल भएउ जिमि फनि मनि त्यागे।
धरनि धसै धर धाव प्रचंडा। तब प्रभु काटि कीन्ह दुइ खंडा।
परे भूमि जिमि नभ ते भूधर। हेठ दाबि कपि भालु निसाचर।[3]
तासु तेजु प्रभु बदन समाना। सुर मुनि सबहि अचंभौ माना।
सुर[4] दुंदभी बजावहि हरषहिं। अस्तुति करहिं सुमन बहु[4] बरषहिं।
करि बिनती सुर सकल सिधाए। तेही समय देवरिषि आए।
गगनोपरि हरि गुन गन गाए। रुचिर बीर रस प्रभु मन भाए।
बेगि हतहु खल कहि मुनि गए। रामु समर महि सोभत[5] भए॥
संग्रामभूमि बिराज रघुपति अतुल बल कोसल धनी।
स्रमबिंदु मुख राजीव लोचन अरुन[6] तन सोनित कनी।
भुज जुगल फेरत सर सरासन भालु कपि चहु दिसि बने।
कह दास तुलसी कहि न सक छबि सेष जेहि आनन घने॥
निसिचर अधम मलाकर[7] ताहि दीन्ह निज धाम।
गिरिजा ते नर मंदमति जे न भजहि श्रीराम॥ ७०॥

१—४,५,६; करि चिकार अति घोर तर ३.
२—४, ५, ६; सनमुख सो ३.
३—१ में यह अर्धाली नहीं है।
४—४, ५, ६; नभ, जय जय करि प्रसून सुर ३.
५—४, ५, ६; सोहत ३.
६—४,५,६; रुचिर ३.
७—४, ५, ६; मलायतन ३.

दिन के अंत फिरीं द्वौ अनी। समर भई सुभटन्ह स्रम घनी।
राम कृपा कपि दल बल बाढ़ा। जिमि तृन पाइ लाग अति डाढ़ा।
छीजहिं निसिचर दिनु अरु राती। निज मुख कहें सुकृत[1] जेहि भाँती।
बहु बिलाप दसकंधर करई। बंधु सीस पुनि पुनि उर धरई।
रोवहिं नारि हृदय हति पानी। तासु तेज बल बिपुल बखानी।
मेघनाद तेहि अवसर आओेउ[2]। कहि बहु कथा पिता समुझाओेउ[2]।
देखेहु कालि मोरि मनुसाई। अबहिं बहुत का करौं बड़ाई।
इष्टदेव सैं बल रथ पाओेउँ। सो बलु तात न तोहि देखाओेउँ।
ओेहि बिधि जल्पत भओेउ बिहाना। चहुँ दुआर लागे कपि नाना।
इत कपि भालु काल सम बीरा। उत रजनीचर अति रन धीरा।
लरहिं सुभट निज निज जय हेतू। बरनि न जाइ समर खगकेतू॥

मेघनाद मायामय[3] रथ चढ़ि गओेउ अकास।
गर्जेउ अट्टहास करि[3] भइ कपि कटकहि त्रास॥ ७१॥

सक्ति सूल तरवारि कृपाना। अस्त्र सस्त्र कुलिसायुध नाना।
डारै परसु परिघ पापाना। लागेउ बृष्टि करै बहु बाना।
दस दिसि रहे बान नभ[4] छाई। मानहु मघा मेघ झरि लाई।
धरु धरु मारु सुनिअ धुनि[5] कानों। जो मारै तेहि कोउ न जाना।
गहि गिरि तरु अकास कपि धावहिं। देखहि तेहि न दुखित फिरि आवहिं।
अवघट घाट बाट गिरि कंदर। माया बल कीन्हेसि सर पंजर।
जाहिं कहाँ ब्याकुल भओे बंदर। सुरपति बंदि परेउ जनु मंदर।
मारुतसुत अंगद नल नीला। कीन्हेसि बिकल सकल बलसीला।
पुनि लछिमन सुग्रीव बिभीषन। सरन्हि मारि कीन्हेसि जर्जर तन।

१–४, ५, ६; धरम ३.
२–४, ५, ६; आवा, समुझावा ३.
३–४, ५, ६; माया रचित, प्रलय पयोद जिमि ३
४–४, ५, ६, रहे दसहु दिसि सायक ३.
५–४, ५, ६ सुनहिं कपि ३

पुनि रघुपति सें जूझै लागा। सर-छाड़ै होइ लागहिं नागा।
ब्याल पास बस भऐउ खरारी। स्वबस अनंत एक अबिकारी।
नट इव कपट चरित कर नाना। सदा स्वतंत्र एक भगवाना।
रन सोभा लगि प्रभुहि बँधायो[1]। नागपास देवन्ह भय पायो[1]॥
गिरिजा जासु[2] नाम जपि मुनि काटहिं भव पास।
सो कि बंध तर आवै[2] ब्यापक बिस्व-निवास॥ ७२॥

चरित राम के सगुन भवानी। तर्कि न जाहिं बुद्धि बल बानी।
अस बिचारि जे तज्ञ बिरागी। रामहि भजहिं तर्क सब त्यागी।
ब्याकुल कटक कीन्ह घननादा। पुनि भा प्रगट कहै दुर्बादा।
जामवंत कह खलु रहु ठाढ़ा। सुनि करि ताहि क्रोध अति बाढ़ा।
बूढ़ जानि सठ छाड़ेउँ तोही। लागेसि अधम[3] पचारै मोही।
अस कहि तरल[4] त्रिसूल चलायो। जामवंत कर गहि सोइ धायो।
मारिसि मेघनाद कै छाती। परा भूमि[5] घुर्मित सुरघाती।
पुनि रिसान गहि चरन फिरायो[6]। महि पछारि निज बल देखरायो[6]।
बर प्रसाद सो मरै न मारा। तब गहि पद लंका पर डारा।
इहाँ देवरिषि गरुड़ पठायो[7]। राम समीप सपदि सो आयो[7]॥
खगपति सब धरि खाए माया नाग बरूथ।
माया बिगत भए सब[8] हरषे बानर जूथ॥
गहि गिरि पादप उपल नख धाये कीस रिसाइ।
चले तमीचर बिकलतर गढ़ पर चढ़े पराइ॥ ७३॥

१–४, ५, ६, बधावा, दसा देखि —देवन्ह भय पावा २
२–४, ५, ६; खगपति जाकर, सो प्रभु आव कि बधतर २.
३–४, ५, ६; पतित २.
४–४, ५, ६; तीव्र त्रिसूल चलावा
५–४, ५, ६; धरनि २.
६–४, ५, ६; फिरावा, देखरावा २
७–४, ५, ६, पठवा, आवा २.
८–४, ५, ६, पन्नगारि खाए सकल छनमहँ ब्याल बरूथ। भए बिगत माया तुरत २.

मेघनाद कै मुरछा जागी। पितहि बिलोकि लाज अति लागी।
तुरत गएउ गिरि बर कंदरा। करौं अजय मख अस मन धरा।
इहाँ बिभीषन मंत्र बिचारा। सुनहु नाथ बल अतुल उदारा।[1]
मेघनाद मख करै अपावन। खल मायावी देव सतावन।
जौं प्रभु सिद्ध होइ सो पाइहि। नाथ बेगि पुनि जीति न जाइहि।
सुनि रघुपति अतिसय सुख माना। बोले अंगदादि कपि नाना।
लछिमन संग जाहु सब भाई। करहु बिधंस जग्य कर जाई।
तुम्ह लछिमन मारेहु रन ओही। देखि सभय सुर दुख अति मोही।
मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई। जेहि छीजै निसिचर सुनु भाई।[3]
जामवंत सुग्रीव[4] बिभीषन। सेन समेत रहेहु तीनिउँ जन।
जब रघुबीर दीन्ह अनुसासन। कटि निषंग कसि साजि सरासन।
प्रभु प्रताप उर धरि रन धीरा। बोले घन इव गिरा गभीरा।
जौं तेहि आजु बधे बिनु आवउँ। तौ रघुपति सेवक न कहावउँ।
जौं सत संकर करहिं सहाई। तदपि हतौं रघुबीर दोहाई॥

रघुपति चरन नाइ सिरु[5] चलेउ तुरंत-अनंत।
अंगद नील मयंद नल संग सुभट[6] हनुमंत॥ ७४॥

जाइ कपिन्ह देखा सो बैसा। आहुति देत रुधिर अरु भैंसा।
कीन्ह कपिन्ह सब[6] जग्य बिधंसा। जब न उठै तब करहिं प्रसंसा।
तदपि न उठै धरेन्हि कच जाई। लातन्हि हति हति चले पराई।
लै त्रिसूल धावा कपि भागे। आए जहँ रामानुज आगे।
आवा परम क्रोध कर मारा। गर्ज घोर रव बारहि बारा।

१—४, ५, ६; सो सुधि पाइ बिभीषन कहई। सुनु प्रभु समाचार अस अहई। ३.
२—४, ५, ६; रिपु ३.
३—३ में यह अर्धाली नहीं है।
४—४, ५, ६; कपिराज ३.
५—४, ५, ६; बदि राम पद कमल जुग, रिपम ३.
६—४, ५, ६; तब कीन्हेउ कृत ३.

पुनि रघुपति सैं जूझै लागा। सर छाड़ै होइ लागहिं नागा।
ब्याल पास बस भएउ खरारी। स्वबस अनंत एक अबिकारी।
नट इव कपट चरित कर नाना। सदा स्वतंत्र एक भगवाना।
रन सोभा लगि प्रभुहि बँधायो[1]। नागपास देवन्ह भय पायो[1]॥

गिरिजा जासु[2] नाम जपि मुनि काटहिं भव पास।
सो कि बंध तर आवै[2] ब्यापक बिस्व निवास॥ ७२॥

चरित राम के सगुन भवानी। तर्कि न जाहिं बुद्धि बल बानी।
अस बिचारि जे तज्ञ बिरागी। रामहि भजहिं तर्क सब त्यागी।
ब्याकुल कटक कीन्ह घननादा। पुनि भा प्रगट कहै दुर्बादा।
जामवंत कह खलु रहु ठाढ़ा। सुनि करि ताहि क्रोध अति बाढ़ा।
बूढ़ जानि सठ छाड़ेउँ तोही। लागेसि अधम[3] पचारै मोही।
अस कहि तरल[4] त्रिसूल चलायो। जामवंत कर गहि सोइ धायो।
मारिसि मेघनाद कै छाती। परा भूमि[5] घुर्मित सुरघाती।
पुनि रिसान गहि चरन फिरायो[6]। महि पछारि निज बल देखरायो[6]।
बर प्रसाद सो मरै न मारा। तब गहि पद लंका पर डारा।
इहाँ देवरिषि गरुड़ पठायो[7]। राम समीप सपदि सो आयो[7]॥

खगपति सब धरि खाए माया नाग बरूथ।
माया बिगत भए सब[8] हरषे बानर जूथ॥
गहि गिरि पादप उपल नख धाये कीस रिसाइ।
चले तमीचर बिकलतर गढ़ पर चढ़े पराइ॥ ७३॥

१–४, ५, ६; बधावा, दसा देखि देवन्ह भय पावा २.
२–४, ५, ६; खगपति जाकर, सो प्रभु आव कि बधतर २
३–४, ५, ६; पतित ३.
४–४, ५, ६; तीव्र त्रिसूल चलावा
५–४, ५, ६; धरनि २.
६–४, ५, ६; फिरावा, देखरावा १
७–४, ५, ६, पठवा, आवा १.
८–४, ५, ६; पन्नगारि खाए छकल छनमहं ब्याल बरूथ। भए बिगत माया तुरत १.

मेघनाद कै मुरछा जागी। पितहि बिलोकि लाज अति लागी।
तुरत गयेउ गिरि बर कंदरा। करौं अजय मख अस मन धरा।
इहाँ बिभीषन मंत्र बिचारा। सुनहु नाथ बल अतुल उदारा।[1]
मेघनाद मख करै अपावन। खल मायावी देव सतावन।
जौ प्रभु सिद्ध होइ सो पाइहि। नाथ बेगि पुनि[2] जीति न जाइहि।
सुनि रघुपति अतिसय सुख माना। बोले अंगदादि कपि नाना।
लछिमन संग जाहु सब भाई। करहु बिधंस यज्ञ कर जाई।
तुम्ह लछिमन मारेहु रन ओही। देखि सभय सुर दुख अति मोही।
मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई। जेहि छीजै निसिचर सुन भाई।[3]
जामवंत सुग्रीव[4] बिभीषन। सेन समेत रहेहु तीनिउँ जन।
जब रघुबीर दीन्ह अनुसासन। कटि निषंग कसि साजि सरासन।
प्रभु प्रताप उर धरि रन धीरा। बोले घन इव गिरा गभीरा।
जौ तेहि आजु बधे बिनु आवउँ। तौ रघुपति सेवक न कहावउँ।
जौ सत संकर करहिं सहाई। तदपि हतौं रघुबीर दोहाई॥

रघुपति चरन नाइ सिरु[5] चलेउ तुरंत अनंत।
अंगद नील मयंद नल संग सुभट[6] हनुमंत॥ ७४॥

जाइ कपिन्ह देखा सो बैसा। आहुति देत रुधिर अरु भैंसा।
कीन्ह कपिन्ह सब जज्ञ बिधंसा। जब न उठै तब करहिं प्रसंसा।
तदपि न उठै धरेन्हि कच जाई। लातन्हि हति हति चले पराई।
लै त्रिसूल धावा कपि भागे। आए जहँ रामानुज आगे।
आवा परम क्रोध कर मारा। गर्ज घोर रव बारहि बारा।

१–४, ५, ६; सो सुधि पाइ बिभीषन कहई। सुनु प्रभु समाचार अस अहई। २.

२–४, ५, ६; रिपु २.

३–२ में यह अर्धाली नहीं है।

४–४, ५, ६, कपिराज २.

५–४, ५, ६; बंदि राम पद कमल जुग, सिरम २

६–४, ५, ६, तब कीसन्ह कृत २

कोपि मरुतसुत अंगद धाए। हति त्रिसूल उर धरनि गिराए।
प्रभु कहँ छाड़ेसि सूल प्रचंडा। सर हति कृत अनंत जुग खंडा।
उठि बहोरि मारुति जुबराजा। हतहिं कोपि तेहि घाउ न बाजा।
फिरे बीर रिपु मरै न मारा। तब धावा करि घोर चिकारा।
आवत देखि क्रुद्ध जनु काला। लछिमन छाडे बिसिख कराला।
देखिसि आवत पवि सम बाना। तुरत भजेउ खल अंतरधाना।
बिबिध बेष धरि करै लराई। कबहुँक प्रगट कबहु दुरि जाई।
देखि अजय रिपु डरपे कीसा। परम क्रुद्ध तब भए अहीसा।
लछिमन मन अस मंत्र दृढ़ावा। ऐहि पापिहि मैं बहुत खेलावा[१]।
सुमिरि कोसलाधीस प्रतापा। सर संधान कीन्ह करि दापा।
छाडा बान माझ उर लागा। मरती बार कपटु सब त्यागा॥

रामानुज कहँ रामु कहँ अस कहि छाड़ेसि प्रान।
धन्य धन्य तव जननी[२] कह अंगद हनुमान॥ ७५॥

बिनु प्रयास हनुमान उठायो[३]। लंका द्वार राखि पुनि आयो[३]।
तासु मरन सुनि सुर गंधर्बा। चढ़ि बिमान आए नभ सर्बा।
बरषि सुमन दुंदुभी बजावहिं। श्री रघुनाथ[४] बिमल जसु गावहिं।
जय अनंत जय जगदाधारा। तुम्ह प्रभु सब देवन्हि निस्तारा।
अस्तुति करि सुर सिद्ध सिधाए। लछिमन कृपासिंधु पहिं आए।
सुत बध सुना दसानन जबहीं। मुरछित भजेउ परेउ महि तबहीं।
मंदोदरी रुदन कर भारी। उर ताडन बहु भाँति पुकारी।
नगर लोग सब व्याकुल सोचा। सकल कहहिं दसकंधर पोचा॥

१-४, एहि पापिहि मैं बहुत खेलावा। ३-४, ५, ६; उठावा, आवा २.
अब बध उचित कपिन्ह भय पावा। २. ४-४, ५, ६; रघुबीर २.
२-४,५,६; धन्य सक्रजित मातु तन २.

तब दसकंठ बिबिध बिधि[1] समुझाई सब नारि।
नस्वर रूप जगत[2] सब देखहु हृदय बिचारि॥ ७६॥

तिन्हहि ग्यान उपदेसा रावन। आपुन मंद कथा सुभ पावन[2]।
पर उपदेस कुसल बहुतेरे। जे आचरहि ते नर न घनेरे।
निसा सिरानि भयेउ भिनुसारा। लगे भालु कपि चारिहु द्वारा।
सुभट बोलाइ दसानन बोला। रन सन्मुख जाकर मन डोला।
सो अबहीं बरु जाउ पराई। संजुग बिमुख भए न भलाई।
निज भुज बल मैं बयरु बढ़ावा। देहौं उतरु जो रिपु चढ़ि आवा।
अस कहि मरुत बेग रथ साजा। बाजे सकल जुझाऊ बाजा।
चले बीर सब अतुलित बली। जनु कज्जल कै आँधी चली।
असगुन अमित होहिं तेहि काला। गनै न भुज बल गर्ब बिसाला॥

अति गर्ब गनइ न सगुन असगुन स्रवहिं आयुध हाथ ते।
भट गिरत रथ ते बाजि गज चिक्करत भाजहिं साथ ते।
गोमाय गृद्ध करार[3] खर रव स्वान बोलहिं[4] अति घने।
जनु काल दूत उलूक बोलहिं बचन परम भयावने॥

ताहि कि संपति सगुन सुभ सपनेहु मन बिस्राम।
भूत द्रोह रत मोह बस राम बिमुख रति काम॥ ७७॥

चलेउ निसाचर कटकु अपारा। चतुरंगिनी अनी बहु धारा।
बिबिध भाँति बाहन रथ जाना। बिपुल बरन पताक ध्वज नाना।
चले मत्त गज जूथ घनेरे। प्राविट् जलद मरुत जनु प्रेरे।
बरन बरन बिरदैत निकाया। समर सूर जानहिं बहु माया।
अति बिचित्र बाहिनी बिराजी। बीर बसंत सेन जनु साजी।
चलत कटकु दिगसिंधुर डिगहीं। छुभित पयोधि कुधर डगमगहीं।

१–४,५,६, लंकेस अनेक बिधि, प्रपच ६
२–४,५,६, भावन ३.
३–३, ४, ५; गीध कराल ६
४–४, ५, ६; रोवहिं ३

उठी रेनु रबि गअेउ छपाई। मरुत थकित बसुधा अकुलाई।
पनव निसान घोर रव बाजहिं। प्रलय समय[१] के घन जनु गाजहिं।
भेरि नफीरि बाज सहनाई। मारू राग सुभट सुखदाई।
केहरिनाद बीर सब करहीं। निज निज बल पौरुष उचरहीं।
कहे दसानन, सुनहु सुभट्टा। मर्दहु भालु कपिन्ह के ठट्टा।
हौं मारिहौं भूप द्वौ भाई। अस कहि सन्मुख फौज रेंगाई।
येह सुधि सकल कपिन्ह जब पाई। धाए करि रघुबीर दोहाई॥

धाए बिसाल कराल मर्कट भालु काल समान ते।
मानहु सपक्ष उडाहिं भूधर बृंद नाना बान ते।
नख दसन सैल महाद्रुमायुध सबल संक न मानही।
जय राम रावन मत्त गज मृगराज सुजसु बखानही॥

दुहु दिसि जय जयकार करि निज निज जोरी जानि।
भिरे बीर इत रामहि[२] उत रावनहि बखानि॥ ७८॥

रावनु रथी बिरथ रघुबीरा। देखि बिभीषनु भअेउ अधीरा।
अधिक प्रीति मन भा संदेहा। बंदि चरन कह सहित सनेहा।
नाथ न रथ नहि तन पद त्राना। केहि बिधि जितब बीर बलवाना।
सुनहु सखा कह कृपानिधाना। जेहि जय होइ सो[३] स्यदन आना।
सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ ध्वजा पताका।
बल बिबेक दम पर हित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे।
ईस भजनु सारथी सुजाना। बिरति चर्म[४] संतोष कृपाना।
दान परसु बुधि सक्ति प्रचडा। बर बिज्ञान कठिन कोदंडा।
अमल अचल मन त्रोन[५] समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना।

१–४, ५, ६, महाप्रलय ३
२–४ ५, ६ रघुपतिहि ३
३–४, ५, सो ३, ६
४–८, ५, चर्म ३, ६
५–३, ६, तून ४, ५

कवच अभेद विप्र गुर पूजा । ऐहि सम विजय उपाय न दूजा ।
सखा धर्ममय अस रथ जाके । जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके ॥
महा अजय संसार रिपु जीति सकै सो वीर ।
जाके अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मति धीर ॥
सुनि प्रभु बचन बिभीषन[1] हरषि गहे पद कंज ।
ऐहि मिस मोहि उपदेसेहु[1] राम कृपा सुख पुंज ॥
उत पचार दसकंधर[2] इत अंगद हनुमान ।
लरत निसाचर भालु कपि करि निज निज प्रभु आन ॥ ७९ ॥

सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना । देखत रन नभ चढ़े बिमाना ।
हमहू उमा रहे तेहि संगा । देखत राम चरित रन रंगा ।
सुभट समर रस दुहु दिसि माते । कपि जयसील राम बल ताते ।
एक एक सन भिरहिं पचारहिं । एकन्ह एक मर्दि महि पारहिं ।
मारहिं काटहिं धरहिं पछारहिं । सीस तोरि सीसन्ह सन मारहिं ।
उदर बिदारहिं भुजा उपारहिं[3] । गहि पद अवनि पटकि भट डारहिं[3] ।
निसिचर भट महि गाड़हि भालू । ऊपर ढारि[4] देहिं बहु बालू ।
बीर बलीमुख जुद्ध बिरुद्धे । देखिअत बिपुल काल जनु क्रुद्धे ॥
क्रुद्धे कृतांत समान कपि तनु स्रवत सोनित राजहीं ।
मरदहिं निसाचर कटक भट बलवंत घन जिमि गाजहीं ।
मारहिं चपेटन्हि डाटि दातन्ह काटि लातन्ह मीजहीं ।
चिक्करहिं मर्कट भालु छल बल करहिं जेहि खल छीजहीं ॥
धरि गाल फारहिं उर बिदारहिं गल अँतावरि मेलहीं ।
प्रह्लाद पति जनु बिबिध तनु धरि समर अंगन खेलहीं ।

१–४, ५, ६; सुनत बिभीषन प्रभु बचन,   ३–४, ५, ६; उपाटहि, डाटहिं ३
एहि बिधि मोहि उपदेस दिअ ३.   ४–३, ४, ५; डारि ६.
२–४, ५, ६; दसकण्ठ भट ३.

धरु मारु काटु पछारु घोर गिरा गगन महि भरि रही।
जय राम जो तृन ते कुलिस कर कुलिस ते कर तृन सही॥
निज दल बिचलत देखेसि[१] बीसभुजा दसचाप।
रथ चढ़ि चलेउ दसानन[१] फिरहु फिरहु करि दाप॥ ८०॥

धायेउ परम क्रुद्ध दसकंधर। सन्मुख चले हूह दै बंदर।
गहि कर पादप उपल पहारा। डारेन्हि तापर एकहि बारा।
लागहिं सैल बज्र तनु तासू। खंड खंड होइ फूटहिं आसू।
चला न अचल रहा रथ[३] रोपी। रन दुर्मद रावन अतिकोपी।
इत उत झपटि दपटि कपि जोधा। मर्दै लाग भयेउ अति क्रोधा।
चले पराइ भालु कपि नाना। त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना।
पाहि पाहि रघुबीर गोसाईं। येह खल खाइ काल की नाईं।
तेहि देखे कपि सकल पराने। दसहु चाप सायक संधाने॥
संधानि धनु सर निकर छाड़ेसि उरग जिमि उड़ि लागहीं।
रहे पूरि सर धरनी गगन दिसि बिदिसि कहँ कपि भागहीं।
भयो अति कोलाहलु बिकल कपि दल भालु बोलहिं आतुरे।
रघुबीर करुना सिंधु आरत बंधु जन रक्षक हरे॥
निज दल बिकल देखि कटि कसि[२] निषंग धनु हाथ।
लछिमनु चले क्रुद्ध होइ[२] नाइ राम पद माथ॥ ८१॥

रे खल का मारसि कपि भालू। मोहि बिलोकु तोर मैं कालू।
खोजत रहेउँ तोहि सुत घाती। आजु निपाति जुड़ावौं छाती।
अस कहि छाड़ेसि बान प्रचंडा। लछिमन किये सकल सत खंडा।
कोटिन्ह आयुध रावन डारे। तिल प्रवान करि काटि निवारे।

१—४, ५, ६; बिचल बिलोकि तेहि, चलेउ दसानन कोपि तब २.
२—४, ५, ६; बिचलित देखि अनीक निज कटि, सरोष तब २.
३—४, ५, ६, महारथ २

पुनि निज बानन्ह कीन्ह प्रहारा। स्यंदनु भंजि सारथी मारा।
सत सत सर मारे दस भाला। गिरि सृंगन्ह जनु प्रविसहि ब्याला।
सत सर पुनि मारा उर माहीं। परेउ धरनितल[1] सुधि कछु नाहीं।
उठा प्रबल पुनि मुरुछा जागी। छाड़िसि ब्रह्म दीन्हि जो साँगी॥

सो ब्रह्म दत्त प्रचंड सक्ति अनंत उर लागी सही।
परयो बीरु बिकल उठाव दसमुख अतुल बल महिमा रही।
ब्रह्मांड भवन बिराज जाके एक सिर जिमि रज कनी।
तेहि चह उठावन मूढ़ रावन जान नहिं त्रिभुअन धनी॥

देखि पवन सुत धाएउ[2] बोलत बचन कठोर।
आवत कपिहि हन्यो तेहिं[2] मुष्टि प्रहार प्रघोर॥ ८२॥

जानु टेकि कपि भूमि न गिरा। उठा सँभारि बहुत रिस भरा।
मुठिका एक ताहि कपि मारा। परेउ सैल जनु बज्र प्रहारा।
मुरुछा गै[3] बहोरि सो जागा। कपि बल बिपुल सराहन लागा।
धिग धिग मम पौरुष धिग मोही। जौं तैं जियत उठेसि[4] सुर द्रोही।
असकहि लछिमन कहुँ कपि ल्यायो। देखि दसानन बिसमय पायो।
कह रघुबीर समुझु जिय भ्राता। तुम्ह कृतांत भच्छक सुर त्राता।
सुनत बचन उठि बैठ कृपाला। गई गगन सो सकति कराला।
पुनि कोदंड बान गहि धाए। रिपु सन्मुख अति आतुर आए[5]।

आतुर बहोरि बिभंजि स्यंदन सूत हति ब्याकुल कियो।
गिरयो धरनि दसकंधर बिकलतर बान सत बेध्यो हियो।
सारथी दूसर घालि रथ तेहि तुरत लंका लै गयो।
रघुबीरबंधु प्रताप पुंज बहोरि प्रभु चरनन्हि नयो॥

१–४, ५, ६; अवनितल ३.
२–४, ५, ६; देखत धाएउ पवनसुत, आवत तेहि उर महँ हतेउ ३.
३–४,५,६; गै मुरुछा ३
४–३,४,५, रहेसि ६.
५–४,५,६; धरि सर चाप चलत पुनि भए। रिपु समीप अति आतुर गए। ३.

उहाँ दसानन जागि करि करै लाग कछु जग्य।
राम बिरोधा[1] बिजय चह सठ हठ बस अति अग्य ॥ ८३

इहाँ बिभीषन सब सुधि पाई। सपदि जाइ रघुपतिहि सुनाई
नाथ करै रावन अेक जागा। सिद्ध भए नहि मरिहि अभागा
पठवहु नाथ[2] बेगि भट बंदर। करहिं बिधंस आव दसकंधर
प्रात होत प्रभु सुभट पठाए। हनुमदादि अंगद सब धाए
कौतुक कूदि चढ़े कपि लंका। पैठे रावन भवन असंका
जग्य करत जबही सो देखा। सकल कपिन्ह भा क्रोध बिसेषा
रन ते निलज भाजि गृह आवा। इहाँ आइ बक ध्यान लगावा
अस कहि अंगद मारा[3] लाता। चितव न सठ स्वारथ मन राता।
नहि चितव जब करि कोप कपि[4] गहि दसन लातन्ह मारहीं
धरि केस नारि निकारि बाहेर तेऽतिदीन पुकारहीं
तब उठेउ क्रुद्ध कृतांत सम गहि चरन बानर डारई।
अेहि बीच कपिन्ह बिधंस कृत मख देखि मन महु हारई ॥
जग्य बिधंसि कुसल कपि[5] आए रघुपति पास।
चलेउ निसाचर क्रुद्ध होइ त्यागि जिवन कै आस ॥ ८४ ॥

चलत होहिं अति असुभ भयंकर। बैठहि गीध उडाइ सिरन्ह पर।
भअेउ काल बस काहु न माना। कहेसि बजावहु जुद्ध निसाना।
चली तमीचर अनी अपारा। बहु गज रथ पदाति असवारा।
प्रभु सन्मुख धाए खल कइसे। सलभ समूह अनल कहँ जैसे।
इहाँ देवतन्ह अस्तुति[6] कीन्ही। दारुन बिपति हमहि अेहि दीन्ही।

१–४, ५ राम बिरोधी बिजय चह ६, जय चाहत रघुपति बिमुख ३
२–४, ५, ६; देव ३
३–४, ५, ६, मारेउ ३
४–४, ५, ६; करि कोपि तव ३
५–४, ५, ६, मख बिधसि कपि कुसल सब, लकपति ३.
६–४, ५, ६, बिनती ३

अस जनि राम खेलावहु एही। अतिसय दुखित होति बैदेही।
देव बचन सुनि प्रभु मुसुकाना। उठि रघुबीर सुधारे बाना।
जटाजूट दृढ़ बाँधे माथे। सोहहिं सुमन बीच बिच गाथे।
अरुन नयन बारिद तनु स्यामा। अखिल लोक लोचनाभिरामा।
कटि तट परिकर कस्यो निषंगा। कर कोदंड कठिन सारंगा॥

सारंग कर सुंदर निषंग सिलीमुखाकर कटि कस्यो।
भुजदंड पीन मनोहरायत उर धरासुर पद लस्यो।
कह दास तुलसी जबहिं प्रभु सर चाप कर फेरन लगे।
ब्रह्मांड दिग्गज कमठ अहि महि सिंधु भूधर डगमगे॥

सोभा देखि हरषि सुर[1] बरषहिं सुमन अपार।
जय जय जय करुनानिधि छबि बल गुन आगार[1]॥ ८५॥

एही बीच निसाचर अनी। कसमसात आई अति घनी।
देखि चले सन्मुख कपि भट्टा[2]। प्रलय काल के जनु घन घट्टा[2]।
बहु कृपान तरवारि चमकहिं। जनु दह दिसि दामिनी दमंकहिं।
गज रथ तुरग चिकार कठोरा। गर्जहिं[3] मनहु बलाहक घोरा।
कपि लंगूर बिपुल नभ छाए। मनहु इंद्र धनु उए सुहाए।
उठै धूरि मानहु जल धारा। बान बुंद भै बृष्टि अपारा।
दुहुँ दिसि पर्बत करहिं प्रहारा। बज्रपात जनु बारहिं बारा।
रघुपति कोपि बान झरि लाई। घायल भै निसिचर समुदाई।
लागत बान बीर चिक्करहीं। घुर्मि घुर्मि जहँ तहँ महि परहीं।
स्रवहिं सैल जनु निर्झर भारी। सोनित सरि कादर भयकारी॥

१-४, ५, ६; हरषे देव बिलोकि छबि, जय जय,प्रभु गुन ग्यान बल धाम
हरन महि भार ३.

२-४, ५, ६, भटा घटा २   ३-४, ५, ६; गर्जत २.

काद‍र भयंकर रुधिर सरिता चली[१] परम अपावनी।
दोउ कूल दल रथ रेत चक्र अवर्त बहति भयावनी।
जलजंतु गज पदचर तुरग खर बिबिध बाहन को गने।
सर सक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चर्म कमठ घने॥

बीर परहिं जनु तीर तरु मज्जा बहु बह फेन।
कादर देखि डरहिं तहँ[२] सुभटन्ह के मन चेन॥ ८६॥

मज्जहि भूत पिसाच बेताला। प्रमथ[३] महा झोटिंग कराला।
काक कंक लै भुजा उड़ाहीं। अेक ते छीनि एक लै खाहीं।
एक कहहि ऐसिउ सौंघाई। सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई।
कहरत भट घायल तट गिरे। जहँ जहँ मनहु अर्धजल परे।
खैंचहिं गीध आँत तट भए। जनु बनसी खेलत चित दए।
बहु भट बहहिं चढ़े खग जाही। जनु नावरि खेलहिं सरि माही।
जोगिनि भरि भरि खप्पर संचहिं। भूत पिसाच बधू नभ नंचहिं।
भट कपाल करताल बजावहिं। चामुंडा नाना बिधि गावहिं।
जंबुक निकर कटक्कट कट्टहिं। खाहिं हुहाहिं अघाहिं दपट्टहिं।
कोटिन्ह रुंड मुंड बिनु चल्लहिं[४]। सीस हरे महि जय जय बोल्लहिं॥

बोल्लहिं जो जय जय मुंड रुंड प्रचंड सिरु बिनु धावहीं।
खप्परिन्ह खग्ग अलुज्झि जुज्झहि सुभट भटन्ह ढहावहीं[५]।
बानर निसाचर निकर मर्दहि राम बल[६] दर्पित भए।
संग्राम अंगन सुभट सोवहिं राम सर निकरन्हि हए॥

रावन हृदय बिचारा[७] भा निसिचर संघार।
मैं अकेल कपि भालु बहु माया करउँ अपार॥ ८७॥

१–४, ५, ६; बढ़ी ३.
२–४, ५, ६; देखत डरहिं तेहि ३.
३–३, ४, ६; प्रथम ५.
४–३,५; बोल्लहिं ४,६.
५–४,५,६, सुभट सुरपुर पावहीं ३.
६–४,५,६; निसिचर बरूथ बिमर्दि- गर्जहि भालु कवि ३.
७–४,५,६; हृदय बिचारेउ दसबदन ३

देवन्ह प्रभुहि पयादें देखा। उपजा उर अति छोभ बिसेखा।
सुरपति निज रथु तुरत पठावा। हरष सहित मातलि लै आवा।
तेज पुंज रथ दिव्य अनूपा। हरषि[1] चढ़े कोसलपुर भूपा।
चंचल तुरग मनोहर चारी। अजर अमर मन सम गतिकारी।[2]
रथारूढ़ रघुनाथहि देखी। धाये कपि बलु पाइ बिसेखी।
सही न जाइ कपिन्ह कै मारी। तब रावन माया बिस्तारी।
सो माया रघुबीरहि बाची। लछिमन कपिन्ह सो मानी साँची[3]।
देखी कपिन्ह निसाचर अनी। अनुज सहित बहु कोसलधनी॥

बहु राम लछिमन देखि मर्कट भालु मन अति अपडरे[4]।
जनु चित्र लिखित समेत लछिमन जहँ सो तहँ चितवहिं खरे।
निज सेन चकित बिलोकि हँसि सर चाप सजि कोसलधनी।
माया हरी हरि निमिष महु हरषी सकल मर्कट[5] अनी॥

बहुरि राम सब तन चितइ बोले बचन गभीर।
द्वंद जुद्ध देखहु सकल स्रमित भए अति बीर॥ ८८॥

अस कहि रथु रघुनाथ चलावा। बिप्र चरन पंकज सिरु नावा।
तब लंकेस क्रोध उर छावा। गर्जत तर्जत सन्मुख धावा[6]।
जीतेहु जे भट संजुग माहीं। सुनु तापस मैं तिन्ह सम नाहीं।
रावन नाम जगत जस जाना। लोकप जाके बंदीखाना।
खर दूषन बिराध[7] तुम्ह मारा। बधेहु ब्याध इव बालि बिचारा।
निसिचर निकर सुभट संघारेहु। कुंभकरन घननादहि मारेहु।
आजु बयरु[8] सबु लेउँ निबाही। जौ रन भूप भाजि नहिं जाही।

१–४,५,६; बिहसि ३.
२–३ में यह अर्धाली नहीं है।
३–४,५,६; सब काहू मानी करि साँची ३.
४–४,५,६; बहु बालिसुत लछिमन कपीस बिलोकि मर्कट अपडरे ३.
५–४, ५, ६; बानर ३.
६–४, ५, ६; आवा ३.
७–४,५,६; कबंध ३.
८–४,५,६; बयर आजु ३.

आजु करौं खलु काल हवाले। परेहु कठिन रावन के पाले।
सुनि दुर्बचन काल बस जाना। बिहसि बचन कह[१] कृपानिधाना।
सत्य सत्य सब तव प्रभुताई। जल्पसि जनि देखाउ मनुसाई॥

जनि जल्पना करि सुजसु नासहि नीति सुनहि करहि छमा।
संसार महु पूरुष त्रिबिध पाटल रसाल पनस समा।
अेक सुमनप्रद अेक सुमन फल अेक फलइ केवल लागहीं।
अेक कहहिं कहहिं करहिं अपर अेक करहिं कहत न बागहीं॥

राम बचन सुनि बिहसा[२] मोहि सिखावत ज्ञान।
बयरु करत नहि तब डरे[३] अब लागे प्रिय प्रान॥ ८९॥

कहि दुर्बचन क्रुद्ध दसकंधर। कुलिस समान लाग छाडै सर।
नानाकार सिलीमुख धाए। दिसि अरु बिदिसि गगन महि छाए।
पावक सर[४] छाड़ेउ रघुबीरा। छन महु जरे निसाचर तीरा।
छाड़िसि तीब्र सक्ति खिसिआई। बान संग प्रभु फेरि चलाई[५]।
कोटिन्ह चक्र त्रिसूल पवारइ। बिनु प्रयास प्रभु काटि निवारइ।
निफल होहिं रावन सर कैसे। खल के सकल मनोरथ जैसे।
तब सत बान सारथी मारेसि। परेउ भूमि जय राम पुकारेसि।
राम कृपा करि सूत उठावा। तब प्रभु परम क्रोध कहुँ पावा॥

भये क्रुद्ध जुद्ध बिरुद्ध रघुपति त्रोन सायक कसमसे।
कोदंड धुनि अति चंड सुनि मनुजाद सब[६] मारुत ग्रसे।
मंदोदरी उर कंप कंपति कमठ भू भूधर त्रसे।
चिकरहिं दिग्गज दसन गहि महि देखि कौतुक सुर हसे॥

१–४, ५, ६; कहेउ बिहसि तब ३.
२–४, ५, ६; बिहसि कह ३.
३–४, ५, ६; डरेहु ३.
४–४, ५, ६; अनल बान ३.
५–४, ५, ६; पठाई ३.
६–३, ४, ५; भय ६.

तानेउ चाप[1] स्रवन लगि छाड़े बिसिख कराल।
राम मार्गन गन चले लहलहात जनु ब्याल॥ ९०॥

चले बान सपक्ष जनु उरगा। प्रथमहि हत्यो सारथी तुरगा।
रथ बिभंजि हति केतु पताका। गर्जा अति अंतर बल थाका।
तुरग आन रथ चढ़ि खिसिआना। अस्त्र सस्त्र छाड़ेसि बिधि नाना।
बिफल होहि सब उद्यम ता के। जिमि पर द्रोह निरत मनसा के।
तब रावन दस सूल चलावा। बाजि चारि महि मारि गिरावा।
तुरग उठाइ कोपि रघुनायक। खैंचि सरासन छाड़े सायक।
रावन सिर सरोज बन चारी। चलि रघुबीर सिलीमुख धारी।
दस दस बान भाल दस मारे। निसरि गए चले रुधिर पनारे।
स्रवत रुधिर धाएउ बलवाना। प्रभु पुनि कृत धनु सर संधाना।
तीस तीर रघुबीर पवारे। भुजन्ह समेत सीस महि पारे।
काटत ही पुनि भए नबीने। राम बहोरि भुजा सिर छीने।
कटत झटिति पुनि नूतन भए। प्रभु बहु बार बाहु सिर हए।
पुनि पुनि प्रभु काटत भुज बीसा[2]। अतिकौतुकी कोसलाधीसा।
रहे छाइ नभ सिर अरु बाहू। मानहु अमित केतु अरु राहू॥

जनु राहु केतु अनेक नभ पथ स्रवत सोनित धावहीं।
रघुबीर तीर प्रचंड लागहिं भूमि गिरन न पावहीं।
अेक एक सर सिर निकर छेदे नभ उड़त इमि सोहहीं।
जनु कोपि दिनकर कर निकर जहँ तहँ बिधुंतुद पोहहीं॥

जिमि जिमि प्रभु हर तासु सिर तिमि तिमि होहि अपार।
सेवत बिषय बिबर्ध जिमि नित नित नूतन मार॥ ९१॥

दसमुख देखि सिरन्ह कै बाढ़ी। बिसरा मरन भई रिस गाढ़ी।
गर्जेउ मूढ़ महा अभिमानी। धाएउ दसौ सरासन तानी।

१–४, ५, ६; तानि सरासन ३. २–३, ६; बीसा ४, ५

समर भूमि दसकंधर कोप्यो । बरपि बान रघुपति रथ तोप्यो ।
दंड एक रथु देखि न परेऊ[1] । जनु निहार महु दिनकर दुरेऊ[1] ।
हाहाकार सुरन्ह जब कीन्हा । तब प्रभु कोपि कार्मुक लीन्हा ।
सर निवारि रिपु के सिर काटे । ते दिसि विदिसि गगन महि पाटे ।
काटे सिर नभ मारग धावहिं । जय जय धुनि करि भय उपजावहिं ।
कहँ लछिमन सुग्रीव[2] कपीसा । कहँ रघुबीर कोसलाधीसा ॥

कहँ रामु कहि सिर निकर धाए देखि मर्कट भजि चले ।
संधानि धनु रघुबंसमनि हँसि सरन्हि सिर बेधे भले ।
सिर मालिका कर कालिका गहि[3] बृंद बृंदन्हि बहु मिली ।
करि रुधिर सरि मज्जनु मनहु संग्राम बट पूजन चलीं ॥

पुनि दसकंठ क्रुद्ध होइ छाड़ी[4] सक्ति प्रचंड ।
चली बिभीषन सन्मुख[4] मनहु काल कर दंड ॥ ९२ ॥

आवत देखि सक्ति अति घोरा[5] । प्रनतारति भंजन पन मोरा[5] ।
तुरत बिभीषनु पाछे मेला । सन्मुख राम सहेउ सोइ सेला ।
लागि सक्ति मुरुछा कछु भई । प्रभु कृत खेल सुरन्ह बिकलई ।
देखि बिभीषन प्रभु स्रम पायो । गहि कर गदा क्रुद्ध होइ धायो ।
रे कुभाग्य सठ मंद कुबुद्धे । तैं सुर नर मुनि नाग बिरुद्धे ।
सादर सिव कहु सीस चढ़ाए । एक एक के कोटिन्ह पाए ।
तेहि कारन खल अब लगि बाँच्यो । अब तव काल सीसु पर नाच्यो ।
राम बिमुख सठ चहसि[6] संपदा । अस कहि हनेसि माझ उर गदा ॥

१–४,५,६; परा । दिनमनि दुरा ३.
२–४,५,६; हनुमान ३.
३–४,५,६; गहि कालिका कर ३.
४–४,५,६; रावन अति कोप करि छाडेसि,
सन्मुख चली बिभीषनहि ३.
५–४, ५; ६; सरधारा । प्रनतारति हर बिरदु सँभारा ३.
६–४, ५; चह ३, ६.

उर माझ गदा प्रहार घोर कठोर लागत महि परयो।
दसबदन सोनित स्रवत पुनि संभारि धायो रिस भरयो।
द्वौ भिरे अतिबल मल्ल जुद्ध बिरुद्ध अेकु एकहि हने।
रघुबीर बल दर्पित[1] बिभीषनु घालि नहि ताकहु गने॥

उमा बिभीषनु रावनहि सन्मुख चितव कि काउ।
सो अब भिरत काल ज्यों[2] श्रीरघुबीर प्रभाउ॥ ९३॥

देखा स्रमित बिभीषनु भारी। धाअेउ हनूमान गिरिधारी।
रथ तुरंग सारथी निपाता। हृदय माझ तेहि मारेसि लाता।
ठाढ़ रहा अति कंपित गाता। गअेउ बिभीषनु जहँ जनत्राता।
पुनि रावन कपि[3] हतेउ प्रचारी। चलेउ[3] गगन कपि पूँछ पसारी।
गहिसि पूँछ कपि सहित उड़ाना। पुनि फिरि भिरेउ प्रबल हनुमाना।
लरत अकास जुगल सम जोधा। एकहि एकु हनत करि क्रोधा।
सोहहिं नभ छल बल बहु करहीं। कज्जल गिरि सुमेरु जनु लरहीं।
बुधि बल निसिचर परै न पारयो। तब मारुतसुत प्रभु संभारयो[4]॥

संभारि श्रीरघुबीर धीर प्रचारि कपि रावनु हन्यो।
महि परत पुनि उठि लरत देवन्ह जुगल कहुँ जय जय भन्यो।
हनुमंत संकट देखि मर्कट भालु क्रोधातुर चले।
रन मत्त रावन सकल सुभट प्रचंड भुज बल दलमले॥

तब रघुबीर पचारे[5] धाए कीस पचंड।
कपि दल प्रबल देखि[6] तेहि कीन्ह प्रगट पाखंड॥ ९४॥

अंतर्धान भअेउ छन एका। पुनि प्रगटे खल रूप अनेका।
रघुपति कटक भालु कपि जेते। जहँ तहँ प्रगट दसानन तेते।

१–४, ५, ६, गर्जित ३
२–४,५,६; भिरत सो काल समान अब ३.
३–४, ५, ६; तेहि, चला ३.
४–४, ५, ६; पारा, सभारा ३
५–४, ५, ६, राम प्रचारे बीर तब ३.
६–४, ५; कपि दल प्रबल देखि ४, कपि दल प्रबल बिलोकि ३.

देखे कपिन्ह अमित दससीसा । जहँ तहँ भजे भालु अरु कीसा[1] ।
भागे बानर[2] धरहिं न धीरा । त्राहि त्राहि लछिमन रघुबीरा ।
दह दिसि धावहिं कोटिन्ह रावन । गर्जहिं घोर कठोर भयावन ।
डरे सकल सुर चले पराई । जय कै आस तजहु अब भाई ।
सब सुर जिते एक दसकंधर । अब बहु भए तकहु गिरि कंदर ।
रहे बिरंचि संभु मुनि ज्ञानी । जिन्ह जिन्ह प्रभु महिमा कछु जानी ॥

जाना प्रताप ते रहे निर्भय कपिन्ह रिपु माने फुरे ।
चले बिचलि मर्कट भालु सकल कृपाल पाहि भयातुरे ।
हनुमंत अंगद नील नल अतिबल लरत रन बाँकुरे ।
मर्दहिं दसानन कोटि कोटिन्ह कपट भू भट अंकुरे ॥

सुर बानर देखे बिकल हस्यो कोसलाधीस ।
सजि सारंग[3] एक सर हते सकल दससीस ॥ ९५ ॥

प्रभु छन महु माया सब काटी । जिमि रबि उए जाहि तम फाटी ।
रावनु एक देखि सुर हरषे । फिरे सुमन बहु प्रभु पर बरषे ।
भुज उठाइ रघुपति कपि फेरे । फिरे एक एकन्ह तब टेरे ।
प्रभु बलु पाइ भालु कपि धाए । तरल तमकि संजुग महि आए ।
अस्तुति करत देवतन्हि[4] देखे । भएउँ एक मैं इन्ह के लेखे ।
सठहु सदा तुम्ह मोर मरायल । अस कहि कोपि गगन पर[5] धायल ।
हाहाकार करत सुर भागे । खलहु जाहु कहँ मोरे आगे ।
देखि बिकल सुर अंगद धायो । कूदि चरन गहि भूमि गिरायो ॥

गहि भूमि पारयो लात मारयो बालिसुत प्रभु पहि गयो ।
संभारि उठि दसकंठ घोर कठोर रव गर्जत भयो ।

१–४, ५, ६; भागे भालु बिकट भट ३.
२–४, ५, ६; चले बली मुख ३.
३–४, ५, ६; बिसिखासन ३.
४–४, ५; अस्तुति करत देव तेहि ६; करत प्रसंसा सुर तेहि ३.
५–४, ५; गगन पथ ३, ६.

करि दाप चाप चढ़ाइ दस संधान सर बहु बरषई।
किये सकल भट घायल भयाकुल देखि निज बल हरषई॥
तब रघुपति रावन[१] के सीस भुजा सर चाप।
काटे बहुत बढ़े पुनि जिमि तीरथ कर पाप[२]॥ ९६॥

सिर भुज बाढ़ि देखि रिपु केरी। भालु कपिन्ह रिस भई घनेरी।
मरत न मूढ़ कटेहु भुज सीसा। धाए कोपि भालु भट कीसा।
बालितनय मारुति नल नीला। बानरराज दुबिद[२] बलसीला।
बिटप महीधर करहि प्रहारा। सोइ गिर तरु गहि कपिन्ह सो मारा।
एक नखन्हि रिपु बपुप बिदारी। भागि चलहि अेक लातन्ह मारी।
तब नल नील सिरन्हि चढ़ि गअेऊ। नखन्ह लिलार बिदारत भअेऊ।
रुधिर देखि बिषाद उर भारी[३]। तिन्हहि धरन कहु भुजा पसारी।
गहे न जाहिं करन्हि पर फिरहीं। जनु जुग मधुप कमलबन चरहीं।
कोपि कूदि द्वौ धरेसि बहोरी। महि पटकत भजे भुजा मरोरी।
पुनि सकोप दस धनु कर लीन्हे। सरन्हि मारि घायल कपि कीन्हे।
हनुमदादि मुरुछित करि बंदर। पाइ प्रदोष हरष दसकंधर।
मुरुछित देखि सकल कपि बीरा। जामवंत धाअेउ रन धीरा।
संग भालु भूधर तरु धारी। मारन लगे पचारि पचारी।
भअेउ क्रुद्ध रावनु बलवाना। गहि पद महि पटकै भट नाना।
देखि भालुपति निज दल घाता। कोपि माझ उर मारेसि लाता॥

उर लात घात प्रचंड लागत बिकल रथ ते महि परा।
गहे भालु बीसहु कर मनहु कमलन्हि बसे निसि मधुकरा।
मुरुछित बिलोकि बहोरि पद हति भालुपति प्रभु पहि गयो।
निसि जानि स्यंदन घालि तेहि तब सूत जतनु करत भयो॥

१-४, ५, ६, लकेश, काटे भए बहोरि २-४, ५, ६; दुबिद कपीस पनस ३. जिमि कर्ममूढ़ कर पाप ३. ३-४, ५, ६; बिलोकि सकोप सुरारी ३.

मुरछा बिगत[1] भालु कपि सब आए प्रभु पास।
निसिचर सकल रावनहि घेरि रहे अतित्रास॥ ९७॥
तेही निसि सीता पहिं जाई। त्रिजटा कहि सब कथा सुनाई।
सिर भुज बाढ़ि सुनत रिपु केरी। सीता उर भइ त्रास घनेरी।
मुख मलीन उपजी मन चिंता। त्रिजटा सन बोली तब सीता।
होइहि काह कहसि किन माता। केहि बिधि मरिहि बिस्व दुख दाता।
रघुपति सर सिर कटेहु न मरई। बिधि बिपरीत चरित सब करई।
मोर अभाग्य जिआवत ओही। जेहि हौं हरि पद कमल बिछोही।
जेहि कृत कपट कनकमृग झूठा। अजहु सो दैव मोहि पर रूठा।
जेहि बिधि मोहि दुख दुसह सहाए। लछिमन कहुँ कटु बचन कहाए।
रघुपति बिरह सबिष सर भारी। तकि तकि मार बार बहु मारी।
ऐसेहु दुख जो राख मम प्राना। सोइ बिधि ताहि जिआव न आना।
बहु बिधि कर[2] बिलाप जानकी। करि करि सुरति कृपानिधान की।
कह त्रिजटा सुनु राजकुमारी। उर सर लागत मरै सुरारी।
प्रभु ता ते उर हतै न तेही। ओहि के हृदय बसति बैदेही॥
ओहि के हृदय बस जानकी जानकी उर मम बास है।
मम उदर भुअन अनेक लागत बान सब कर नास है।
सुनि बचन हरष बिषाद मन अति देखि पुनि त्रिजटा कहा।
अब मरिहि रिपु ओहि बिधि सुनहि सुंदरि तजहि संसय महा॥
काटत सिर होइहि बिकल छुटि जाइहि तव ध्यान।
तब रावनहि[3] हृदय महु मरिहहि रामु सुजान॥ ९८॥
अस कहि बहुत भाँति समुझाई। पुनि त्रिजटा निज भवन सिधाई।
राम सुभाउ सुमिरि बैदेही। उपजी बिरह बिथा अति तेही।

१–४, ५, ६, गै मुरछा तब ३. ३–४, ५, ६, रावन कहँ ३.
२–३, ४, ५; करत ६.

निसिहि ससिहि निंदति बहु भाँती। जुग सम भई सिराति[1] न राती।
करति बिलाप मनहि मन भारी। राम बिरह जानकी दुखारी।
जब अति भअेउ बिरह उर दाहू। फरकेउ बाम नयन अरु बाहू।
सगुन बिचारि धरी मन धीरा। अब मिलिहहिं कृपाल रघुबीरा।
इहाँ अर्द्धनिसि रावनु जागा। निज सारथि सन खीझन लागा।
सठ रनभूमि छड़ाइसि मोही। धिग धिग अधम मंदमति तोही।
तेहि पद गहि बहु बिधि समुझावा। भोरु भए रथ चढ़ि पुनि धावा।
सुनि आगवनु दसानन केरा। कपि दल खरभर भअेउ घनेरा।
जहँ तहँ भूधर बिटप उपारी। धाए कटकटाइ भट भारी॥

धाए जो मर्कट बिकट भालु कराल कर भूधर धरा।
अति कोप करहिं प्रहार मारत भजि चले रजनीचरा।
बिचलाइ दल बलवंत कीसन्ह घेरि पुनि रावनु लियो।
चहुँ दिसि चपेटन्हि मारि नखन्हि बिदारि तन ब्याकुल कियो॥

देखि महा मर्कट प्रबल रावन कीन्ह बिचार।
अंतरहित होइ निमिष महु कृत माया बिस्तार॥ ९९॥

जब कीन्ह तेहि पाखंड। भअे प्रगट जंतु प्रचंड।
बेताल भूत पिसाच। कर धरे धनु नाराच।
जोगिनि गहे करबाल। अेक हाथ मनुज कपाल।
करि सद्य सोनित पान। नाचहिं करहिं बहु गान।
धरु मारु बोलहिं घोर। रहि पूरि धुनि चहुँ ओर।
मुख बाइ धावहिं खान। तब लगे कीस परान।
जहँ जाहिं मर्कट भागि। तहँ बरत देखहिं आगि।
भअे बिकल बानर भालु। पुनि लाग बरषै बालु।
जहँ तहँ थकित करि कीस। गर्जेउ बहुरि दससीस।

---

[1] १–४, ५, न राति सिराती ६, बिहाति न राती ३

लछिमन कपीस समेत। भए सकल बीर अचेत।
हा राम हा रघुनाथ। कहि सुभट मीजहि हाथ।
ओहि बिधि सकल बल तोरि। तेहि कीन्ह कपट बहोरि।
प्रगटेसि बिपुल हनुमान। धाए गहे पाषान।
तिन्ह रामु घेरे जाइ। चहुँ दिसि बरूथ बनाइ।
मारहु धरहु जनि जाइ। कटकटहिं पूँछ उठाइ।
दह दिसि लँगूर बिराज। तेहि मध्य कोसलराज॥
तेहि मध्य कोसलराज सुंदर स्याम तन सोभा लही
जनु इंद्रधनुष अनेक की बर बारि तुंग तमालही
प्रभु देखि हरष बिषाद उर सुर बदत जय जय जै करी
रघुबीर एकहि तीर कोपि निमेष महु माया हरी।
माया बिगत कपि भालु हरषे बिटप गिरि गहि सब फिरे
सर निकर छाड़े राम रावन बाहु सिर पुनि महि गिरे।
श्री राम रावन समर चरित अनेक कल्प जो गावहीं।
सत सेष सारद निगम कबि तेउ तदपि पार न पावहीं॥
ता के गुन गन कछु कहे[1] जड़मति तुलसीदास।
जिमि निज बल अनुरूप ते माछी उड़ै अकास[1]॥
काटे सिर भुज बार बहु मरत न भट लंकेस।
प्रभु क्रीड़त सुर सिद्ध मुनि[2] ब्याकुल देखि कलेस॥१००॥

काटत बढ़हिं सीस समुदाई। जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई।
मरै न रिपु स्रम भएउ बिसेखा। राम बिभीषन तन तब देखा।
उमा कालु मरु जाकीं ईछा। सो प्रभु जन कर प्रीति परीछा।

१—४, ५, ६, कहे तासु गुन गन कछुक,
निज पौरुष अनुसार जिमि मसक उड़ाहिं अकास॥ ३.
२—४, ५, ६; मुनि सिद्ध सुर ३.

सुनु सर्बग्य चराचर नायक। प्रनतपाल सुर मुनि सुख दायक।
नाभिकुंड पियूष[१] बस या के। नाथ जिअत रावनु बल ताके।
सुनत बिभीषन बचन कृपाला। हरषि गहे कर बान कराला।
असुभ होन लागे तब नाना। रोवहि खर सृकाल बहु[२] स्वाना।
बोलहिं खग जग आरति हेतू। प्रगट भए नभ जहँ तहँ केतू।
दस दिसि दाह होन अति लागा। भञेउ परब बिनु रबिउपरागा।
मंदोदरि उर कंपति भारी। प्रतिमा स्रवहि नयन मग बारी॥

प्रतिमा रुदहिं[३] पबि पात नभ अतिबात बह डोलति मही।
बरषहिं बलाहक रुधिरु कच रज असुभ अति सक को कही।
उतपात अमित बिलोकि नभ सुर[४] बिकल बोलहि जय जए।
सुर सभय जानि कृपाल रघुपति चाप सर जोरत भए॥

खैंचि सरासन स्रवन लगि[५] छाडे सर अेकतीस।
रघुनायक सायक चले मानहु काल फनीस॥१०१॥

[illegible]क एक नाभिसर सोखा। अपर लगे भुज सिर करि रोषा।
[illegible] सिर बाहु चले नाराचा। सिर भुज हीन रुंड महि नाचा।
[illegible]ने धसै धर धाव प्रचंडा। तब सर हति प्रभु कृत दुइ[६] खंडा।
[illegible]उ मरत घोर रव भारी। कहाँ रामु रन हतौं पचारी।
[illegible] भूमि गिरत दसकंधर। छुभित सिंधु सरि दिग्गज भूधर।
[illegible] परेउ द्वै[७] खंड बढ़ाई। चापि भालु मर्कट समुदाई।
[illegible]रि आगे भुज सीसा। धरि सर चले जहाँ जगदीसा।
[illegible] सब निषंग महु जाई[८]। देखि सुरन्ह दुंदुभी बजाई।

---

१ ५, ६; नाभी कुंड सुधा ३
२ ५, ६, असगुन होन लगे तब। रोवहिं बहु सृकाल खर स्वाना। ३
३ ५, ६; स्रवहिं ३.
४ ५, ६; सुरमुनि ३
५–४, ५, ६; आकर्षेउ धनु कान लगि ३
६–४, ५, ६; जुग ३
७–४, ५, धरनि परेउ द्वौ ६, परेउ बीर द्वौ ३.
८–४, ५, ६; आई ३.

तासु तेज समान प्रभु आनन। हरषे देखि संभु चतुरानन।
जय जय धुनि पूरी ब्रह्मंडा। जय रघुबीर प्रबल भुजदंडा।
बरषहिं सुमन देव मुनि बृंदा। जय कृपाल जय जयति मुकुंदा॥

जय कृपाकंद मुकुंद द्वंद हरन सरन सुख प्रद प्रभो।
खल दल बिदारन परम कारन कारुनीक सदा बिभो।
सुर सुमन बरषहिं हरष संकुल[१] बाज दुंदुभि गहगही।
संग्राम अंगन राम अंग अनंग बहु सोभा लही॥
सिर जटा मुकुट प्रसून बिच बिच अति मनोहर राजहीं।
जनु नीलगिरि पर तड़ित पटल समेत उडुगन भ्राजहीं।
भुजदंड सर कोदंड फेरत रुधिर कन तन अति बने।
जनु रायमुनी तमाल पर बैठीं बिपुल सुख आपने॥

कृपा दृष्टि करि बृष्टि प्रभु अभय किए सुरबृंद।
भालु कीस सब हरषे[२] जय सुख धाम मुकुंद॥१०२॥

पति सिर देखत मंदोदरी। मुरुछित बिकल धरनि खसि परी।
जुबति बृंद रोवत उठि धाईं। तेहि उठाइ रावन पहिं आईं।
पति गति देखि ते करहिं पुकारा। छूटे कच नहि बपुष सँभारा[३]।
उर ताड़ना करहिं बिधि नाना। रोवत करहिं प्रताप बखाना।
तव बल नाथ डोल नित धरनी। तेज हीन पावक ससि तरनी।
सेष कमठ सहि सकहिं न भारा। सो तनु भूमि परेउ भरि छारा।
बरुन कुबेर सुरेस समीरा। रन सन्मुख धरि काहु न धीरा।
भुज बल जितेहु काल जम साईं। आजु परेहु अनाथ की नाईं।
जगत बिदित तुम्हारि प्रभुताई। सुत परिजन बल बरनि न जाई।
राम बिमुख अस हाल तुम्हारा। रहा न कोउ कुल रोवनिहारा।

१—४,५,६, सुर सिद्ध मुनि गंधर्व हरषे ३. ३—४,५,६, छूटे चिकुर न सरीर सँभारा ३.
२—४,५,६, हरषे बानर भालु सब ३.

तव बस विधि प्रपंच सब नाथा। सभय दिसिप नित नावहिं माथा।
अब तव सिर भुज जंबुक खाहीं। राम विमुख यह अनुचित नाहीं।
काल बिबस पति कहा न माना। अग जग नाथु मनुज करि जाना॥
जानेउ मनुज करि दनुज कानन दहन पावक हरि स्वयं।
जेहि नमत सिव ब्रह्मादि सुर पिअ भजेहु नहि करुनामयं।
आजन्म ते पर द्रोह रत पापौघमय तव तनु अयं।
तुम्हहूँ दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं॥
अहह नाथ रघुनाथ सम कृपा सिंधु नहि आन।
जोगिवृंद दुर्लभ गति[1] तोहि दीन्हि भगवान॥१०३॥

मंदोदरी बचन सुनि काना। सुर मुनि सिद्ध सबन्हि सुख माना।
अज महेस नारद सनकादी। जे मुनि बर परमारथबादी।
भरि लोचन रघुपतिहि निहारी। प्रेम मगन सब भऐउ सुखारी।
रुदनु करत देखी[2] सब नारी। गऐउ बिभीषनु मन दुखु भारी।
बंधु दसा बिलोकि[3] दुख कीन्हा। तब प्रभु अनुजहि[3] आऐसु दीन्हा।
लछिमन तेहि बहु बिधि समुझायो[4]। बहुरि बिभीषनु प्रभु पहि आयो[4]।
कृपा दृष्टि प्रभु ताहि बिलोका। करहु क्रिया परिहरि सब सोका।
कीन्हि क्रिया प्रभु आऐसु मानी। बिधिवत देस काल जिअ जानी॥
मंदोदरी आदि सबु[5] देइ तिलांजलि ताहि।
भवन गईं रघुपति[6] गुन गन बरनत मन माहि॥१०४॥

आइ बिभीषनु पुनि सिरु नायो। कृपासिंधु तब अनुज बोलायो।
तुम्ह कपीस अंगद नल नीला। जामवंत मारुति नयसीला।

१–४, ५, ६, को, मुनि दुर्लभ जो परम गति ३.
२–४, ५, ६; बिलोकि ३.
३–४, ५, ६; देखत, राम अनुज कहँ ३.
४–४, ५, ६, जाइ ताहि समुझाएउ, आएउ ३.
५–४, ५, ६; मय तनयादिक नारि सनु, रघुबीर ३.

सब मिलि जाहु बिभीषन साथा। सारेहु तिलकु कहेउ रघुनाथा।
पिता बचन मैं नगर न आवौं। आपु सरिस कपि अनुज पठावौं।
तुरत चले कपि सुनि प्रभु बचना। कीन्ही जाइ तिलक की रचना।[1]
सादर सिंहासन बैठारी। तिलक सारि[2] अस्तुति अनुसारी।
जोरि पानि सबही सिर नाए। सहित बिभीषन प्रभु पहि आए।
तब रघुबीर बोलि कपि लीन्हे। कहि प्रिय बचन सुखी सब कीन्हे॥

किए सुखी कहि बानी सुधा सम बल तुम्हारे रिपु हयो।
पायो बिभीषन राजु तिहुँ पुर जसु तुम्हारो नित नयो।
मोहि सहित सुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जे गाइहैं।
संसार सिंधु अपार पार प्रयास बिनु नर पाइहैं॥

प्रभु के बचन स्रवन सुनि[2] नहि अघाहि कपि पुंज।
बार बार सिर नावहिं[2] गहहिं सकल पद कंज॥१०५॥

पुनि प्रभु बोलि लिअेउ हनुमाना। लंका जाहु कहेउ भगवाना।
समाचार जानकिहि सुनावहु। तासु कुसल लै तुम्ह चलि आवहु।
तब हनुमंत नगर महु आए। सुनि निसिचरी निसाचर धाए।
बहु प्रकार तिन्ह पूजा कीन्ही। जनकसुता देखाइ पुनि[3] दीन्ही।
दूरिहि ते प्रनामु कपि कीन्हा। रघुपति दूत जानकी चीन्हा।
कहहु तात प्रभु कृपा निकेता। कुसल अनुज कपि सेन समेता।
सब बिधि कुसल कोसलाधीसा। मातु समर जीत्यो दससीसा।
अबिचल राजु बिभीषनु पायो। सुनि कपि बचन हरष उर छायो॥

अतिहरष मन तन पुलक लोचन सजल कह पुनि पुनि रमा।
का देउँ तोहि त्रैलोक महुँ कपि किमपि नहि बानी समा।

१–४, ५, ६, कीन्ह ३.
२–४, ५, ६; सुनत राम के बचन मृदु,
बारहि बार बिलोकि मुख ३.
३–४, ५, ६; तिन्ह ३.

सुनु मात मैं पायो अखिल जग राजु आजु न संसयं।
रन जीति रिपु दल बंधु जुत पस्यामि राममनामयं॥
सुनु सुत सदगुन सकल तव हृदय बसहु हनुमंत।
सानुकूल कोसलपति[1] रहहु समेत अनंत॥१०६॥

अब सोइ जतनु करहु तुम्ह ताता। देखौं नयन स्याम मृदु गाता।
तब हनुमान राम पहिं जाई। जनकसुता कै कुसल सुनाई।
सुनि संदेसु भानुकुलभूषन[2]। बोलि लिए जुबराज बिभीषन।
मारुतसुत के संग सिधावहु। सादर जनकसुतहि लै आवहु।
तुरतहिं सकल गए जहँ सीता। सेवहिं सब निसिचरी बिनीता।
बेगि बिभीषन तिन्हहि सिखायो[3]। तिन्ह बहु बिधि मज्जनु करवायो।
बहु प्रकार[4] भूषन पहिराए। सिबिका रुचिर साजि पुनि ल्याए।
ता पर हरषि चढ़ी बैदेही। सुमिरि राम सुख धाम सनेही।
बेतपानि रक्षक चहुँ पासा। चले सकल मन परम हुलासा।
देखन भालु कीस सब आए। रक्षक कोपि निवारन धाए।
कह रघुबीर कहा मम मानहु। सीतहि सखा पयादे आनहु।
देखहुँ[5] कपिजन नीकी नाईं। बिहसि कहा रघुनाथ गोसाईं।
सुनि प्रभु बचन भालु कपि हरषे। नभ ते सुरन्ह सुमन बहु बरषे।
सीता प्रथम अनल महु राखी। प्रगट कीन्हि चह अंतरसाखी॥

तेहि कारन करुनानिधि[6] कहे कछुक दुर्बाद।
सुनत जातुधानी सब[6] लागी करै बिषाद॥१०७॥

प्रभु के बचन सीस धरि सीता। बोली मन क्रम बचन पुनीता।

१–४, ५, ६; रघुरथमनि ३.
२–४, ५, ६; बानी पतग कुल भूषन् ३.
३–४, ५, ६; सिखावा, सादर तिन्ह सीतहि अन्हवावा ३.
४–४, ५, ६; दिव्य बसन ३.
५–४, ५, ६; देखहिं ३.
६–४, ५, ६; करुनायतन, सकल ३.

लछिमन होहु धरम के नेगी। पावक प्रगट करहु तुम्ह बेगी।
सुनि लछिमन सीता कै बानी। बिरह बिबेक धरम निति सानी।
लोचन सजल जोरि कर दोऊ। प्रभु सन कछु कहि सकत न ओऊ।
देखि राम रुख लछिमनु धाए। पावक प्रगटि काठ[2] बहु लाए।
पावक प्रबल देखि[3] बैदेही। हृदय हरष नहि भय कछु तेही।
जौं मन बच क्रम मम उर माहीं। तजि रघुबीर आन गति नाहीं।
तौ कृसानु सब कै गति जाना। मोकहु होउ श्रीखंड समाना॥
श्रीखंड सम पावक प्रबेस कियो सुमिरि प्रभु मैथिली।
जय कोसलेस महेस बंदित चरन रति अतिनिर्मली।
प्रतिबिंब अरु लौकिक कलंक प्रचंड पावक महुँ जरे।
प्रभु चरित काहु न लखे नभ सुर सिद्ध मुनि देखहिं खरे॥
धरि रूप पावक पानि गहि श्री सत्य स्रुति जग[4] बिदित जो।
जिमि छीरसागर इंदिरा रामहि समर्पी आनि सो।
सो राम बाम बिभाग राजति रुचिर अतिसोभा भली।
नव नीलनीरज निकट मानहुँ कनक पंकज की कली॥
बरषहिं सुमन हरषि सुर[5] बाजहिं गगन निसान।
गावहिं किंनर सुरबधू[5] नाचहिं चढ़ी बिमान॥
जनकसुता[6] समेत प्रभु सोभा अमित अपार।
देखि भालु कपि हरषे[6] जय रघुपति सुख सार॥१०८॥
तब रघुपति अनुसासन पाई। मातलि चलेउ चरन सिरु नाई।
आए देव सदा स्वारथी। बचन कहहिं जनु परमारथी।

१–४, ५; नुति ३, ६.
२–४, ५, ६; प्रगटि कृसानु ३.
३–४, ५, ६; प्रबल अनल बिलोकि ३.
४–४, ५, ६; तब अनल भूसुर रूप कर गहि सत्य श्री श्रुति ३.
५–४, ५, ६; हरषि सुमन बरषहिं बिबुध, अपछरा ३.
६–४, ५, ६; श्री जानकी, देखत हरषे भालु कपि ३.

दीनबंधु दयाल रघुराया। देव कीन्हि देवन्ह पर दाया।
बिस्व द्रोह रत येह खल कामी। निज अघ गअेउ कुमारग गामी।
तुम्ह समरूप ब्रह्म अबिनासी। सदा एकरस सहज उदासी।
अकल अगुन अज अनघ अनामय। अजित अमोघसक्ति करुनामय।
मीन कमठ सूकर नरहरी। बामन परसुराम बपु धरी।
जब जब नाथ सुरन्ह दुखु पायो। नाना तन धरि तुम्हइँ नसायो।
येह खल मलिन सदा[1] सुर द्रोही। काम लोभ मद रत अतिक्रोही।
अधम सिरोमनि तव पद पावा[2]। येह हमरे मन बिसमय आवा।
हम देवता परम अधिकारी। स्वारथ रत प्रभु[3] भगति बिसारी।
भव प्रवाह संतत हम परे। अब प्रभु पाहि सरन अनुसरे॥

करि बिनती सुर सिद्ध सब रहे जहँ तहँ कर जोरि।
अतिसप्रेम तनु पुलकि बिधि[4] अस्तुति करत बहोरि॥१०९॥

जय राम सदा सुखधाम हरे। रघुनायक सायक चाप धरे।
भव बारन दारन सिंघ प्रभो। गुन सागर नागर नाथ बिभो।
तन काम अनेक अनूप छबी। गुन गावत सिद्ध मुनिंद्र कबी।
जसु पावन रावन नाग महा। खगनाथ जथा करि कोप गहा।
जनरंजन भंजन सोक भयं। गतक्रोध सदा प्रभु बोधमयं।
अवतार उदार अपार गुनं। महि भार बिभंजन ज्ञानघनं।
अज व्यापकमेकमनादि सदा। करुनाकर राम नमामि मुदा।
रघुबंस बिभूषन दूषनहा। कृत भूप बिभीषनु दीन रहा।
गुन ज्ञान निधान अमान अजं। नित राम नमामि बिभुं बिरजं।
भुजदंड प्रचंड प्रताप बलं। खल बृंद निकंद महा कुसलं।

१–४, ५, ६; रावन पापमूल ३.
२–४,५,६; सोइ कृपाल तव धाम सिधावा ३.
३–४, ५, ६; तव ३.
४–६; अति सप्रेम तन पुलकित ४, ५; अतिसय प्रेम सरोज भव ३.

बिनु कारन दीन दयाल हितं । छबि धाम नमामि रमासहितं ।
भव तारन कारन काजपरं । मन संभव दारुन दोष हरं ।
सर चाप मनोहर तून धरं[1] । जलजारुन लोचन भूपवरं ।
सुख मंदिर सुंदर श्रीरमनं । मद मार मुधा[2] ममता समन ।
अनवद्य अखंड न गोचर गो । सब रूप सदा सब होइ न गो[3] ।
इति बेद बदंति न दंतिकथा । रबि आतप भिन्नमभिन्न जथा ।
कृतकृत्य बिभो सब बानर ए । निरखंति तवानन सादर ए[4] ।
धिग जीवन देव सरीर हरे । तव भक्ति बिना भव भूलि परे ।
अब दीन दयाल दया करिए । मति मोरि बिभेदकरी हरिए ।
जेहि ते बिपरीत क्रिया करिए । दुख सो सुख मानि सुखी चरिए ।
खल खंडन मंडन रम्य छमा । पद पंकज सेवित संभु उमा ।
नृप नायक दे बरदानमिदं । चरनांबुज प्रेमु सदा सुभदं ॥

बिनय कीन्हि चतुरानन[5] प्रेम पुलक अति गात ।
सोभा सिंधु बिलोकत[5] लोचन नहीं अघात ॥११०॥

तेहि अवसर दसरथ तहँ आए । तनय बिलोकि नयन जल छाए ।
अनुज सहित प्रभु बंदन[6] कीन्हा । आसिर्बाद पिता तब दीन्हा ।
तात सकल तव पुन्य प्रभाऊ । जीत्यो अजय निसाचर राऊ ।
सुनि सुत बचन प्रीति अति बाढ़ी । नयन सलिल[7] रोमावलि ठाढ़ी ।
रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना । चितै पितहि दीन्हेउ दृढ़ ग्याना ।
ता तें उमा मोक्ष नहि पायो । दसरथ भेद भगति मन लायो ।
सगुनोपासक मोक्ष न लेहीं । तिन्ह कहु राम भगति निज देहीं ।
बार बार करि प्रभुहि प्रनामा । दसरथ हरषि गए सुरधामा ॥

१–४, ५ नाग ३, ६
२–४, ५, ६, मदा ३
३–४, ५, ६ सो ३.
४–४, ५ ६ ज ३
५–४, ५, ६, बहु भाँति बिधि,
बदन बिलोकत राम कर ३
६–४,५,६, सहित अनुज प्रनाम प्रभु ३
७–४, ५, ६, सरोर ३

अनुज जानकी सहित प्रभु कुसल कोसलाधीस ।
सोभा देखि हरषि मन अस्तुति कर सुरईस ॥१११॥

जय राम सोभाधाम । दायक प्रनत बिस्राम ।
धृत तून बर सर चाप । भुजदंड प्रबल प्रताप ।
जय दूषनारि खरारि । मर्दन निसाचर धारि ।
येह दुष्ट मारेउ नाथ । भये देव सकल सनाथ ।
जय हरन धरनी भार । महिमा उदार अपार ।
जय रावनारि कृपाल । किये जातुधान बिहाल ।
लंकेस अति बल गर्ब । किये बस्य सुर गंधर्ब ।
मुनि सिद्ध खग नर नाग । हठि पंथ सब के लाग ।
पर द्रोह रत अति दुष्ट । पायो सो फलु पापिष्ट ।
अब सुनहु दीन दयाल । राजीव नयन बिसाल ।
मोहि रहा अति अभिमान । नहि कोउ मोहि समान ।
अब देखि प्रभु पद कंज । गत मान प्रद दुख पुंज ।
कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव । अव्यक्त जेहि श्रुति गाव ।
मोहि भाव कोसल भूप । श्रीराम सगुन सरूप ।
बैदेहि अनुज समेत । मम हृदय करहु निकेत ।
मोहि जानिए निज दास । दे भक्ति रमानिवास ॥

दे भक्ति रमानिवास त्रास हरन सरन सुख दायकं ।
सुख धाम राम नमामि काम अनेक छबि रघुनायकं ।
सुर बृंद रंजन द्वंद भंजन मनुज तनु अतुलित बलं ।
ब्रह्मादि संकर सेव्य राम नमामि करुना कोमलं ॥

अब करि कृपा बिलोकि मोहि आयेसु देहु कृपाल ।
काह करौं सुनि प्रिय बचन बोले दीनदयाल ॥११२॥

१–४, ५, ६, छबि बिलोकि मन हरष अति ३

सुनु सुरपति कपि भालु हमारे। परे भूमि निसिचरन्हि जे मारे।
मम हित लागि तजे इन्ह प्राना। सकल जिआउ सुरेस सुजाना।
सुनु खगेस[1] प्रभु कै येह बानी। अति अगाध जानहिं मुनि ग्यानी।
प्रभु सक त्रिभुवन मारि जियाई। केवल सक्रहि दीन्हि बड़ाई।
सुधा बरषि कपि भालु जिआए। हरषि उठे सब प्रभु पहिं आए।
सुधा बृष्टि भै दुहुँ दल ऊपर। जिए भालु कपि नहिं रजनीचर।
रामाकार भए तिन्ह के मन। मुक्त भए छूटे भव बंधन[2]।
सुर अंसिक सब कपि अरु रीछा। जिए सकल रघुपति की ईछा।
राम सरिस को दीन हितकारी। कीन्हे मुकुत निसाचर झारी।
खल मल धाम काम रत रावन। गति पाई जो मुनिवर पाव न॥

सुमन बरषि सब सुर चले चढ़ि चढ़ि रुचिर बिमान।
देखि सुअवसर प्रभु[3] पहिं आएउ संभु सुजान॥
परम प्रीति कर जोरि जुग नलिन नयन भरि बारि।
पुलकित तन गदगद गिरा बिनय करत त्रिपुरारि॥११३॥

मामभिरक्षय रघुकुलनायक। धृत बर चाप रुचिर कर सायक।
मोह महा घन पटल प्रभंजन। संसय बिपिन अनल सुर रंजन।
अगुन सगुन गुन मंदिर सुंदर। भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर।
काम क्रोध मद गज पंचानन। बसहु निरंतर जन मन कानन।
बिषय मनोरथ पुंज कंज बन। प्रबल तुषार उदार पार मन।
भव बारिधि मंथन[4] परम दर। बारय तारय संसृति दुस्तर।
स्याम गात राजीव बिलोचन। दीन बंधु प्रनतारति मोचन।
अनुज जानकी सहित निरंतर। बसहु राम नृप मम उर अंतर।
मुनि रंजन महिमंडल मंडन। तुलसिदास प्रभु त्रास बिखंडन॥

१–४,५,६, खगपति ३.   ३–४, ५, ६; राम ३.
२–४,५,६, गए ब्रह्मपद तजि सरीर रन ३   ४–४,५; मदर ३, ६

नाथ जबहि कोसलपुरी होइहि तिलक तुम्हार।
कृपासिंधु मैं आउब[1] देखन चरित उदार ॥११४॥

करि बिनती जब संभु सिधाए। तब प्रभु निकट बिभीषनु आए।
नाइ चरन सिरु कह मृदु बानी। बिनय सुनहु प्रभु सारँगपानी।
सकुल सदल प्रभु रावनु मारयो। पावन जसु त्रिभुवन बिस्तारयो।
दीन मलीन हीन मति जाती। मो पर कृपा कीन्हि बहु भाँती।
अब जन गृह पुनीत प्रभु कीजे। मज्जनु करिय समर श्रम छीजे।
देखि कोस मंदिर संपदा। देहु कृपाल कपिन्ह कहुँ मुदा।
सब बिधि नाथ मोहि अपनाइअ। पुनि मोहि सहित अवधपुर[2] जाइअ।
सुनत बचन मृदु दीन दयाला। सजल भए द्वौ नयन बिसाला॥

तोर कोस गृह मोर सब सत्य बचन सुनु भ्रात।
भरत दसा सुमिरत[3] मोहि निमिष कल्प सम जात॥
तापस बेष गात[4] कृस जपत निरंतर मोहि।
देखौं बेगि सो जतन करु सखा निहोरौं तोहि॥
बीते अवधि जाउँ जौं[5] जिअत न पावौं बीर।
सुमिरत अनुज प्रीति प्रभु पुनि पुनि पुलक सरीर॥
करेहु कल्प भरि राजु तुम्ह मोहि सुमिरेहु मन माहिं।
पुनि मम धाम पाइहहु[6] जहाँ संत सब जाहिं॥११५॥

सुनत बिभीषन बचन राम के। हरषि गहे पद कृपाधाम के।
बानर भालु सकल हरषाने। गहि प्रभु पद गुन बिमल बखाने।
बहुरि बिभीषनु भवन सिधायो। मनि गन बसन बिमान भरायो।

१—४, ५, ६, तब मैं आउब सुनहु प्रभु १.
२—४, ५, ६; अवध प्रभु १.
३—४, ५, ६; दसा भरत के सुमिरि १.
४—४, ५, ६; सरीर १.
५—४, ५, ६; जौं जैहौं बीते अवधि, प्रीति भरत कै समुझि १.
६—४, ५, ६; सिधाइहहु १.

लै पुष्पक प्रभु आगे राखा। हसि करि कृपासिंधु तब[1] भाखा।
चढि बिमान सुनु सखा बिभीषन। गगन जाइ बरषहु पट भूषन।
नभ पर जाइ बिभीषन तबही। बरषि दिए मनि अंबर सबही।
जोइ जोइ मन भावै सोइ लेहीं। मनि मुख मेलि डारि कपि देहीं।
हसे रामु श्री अनुज समेता। परम कौतुकी कृपानिकेता॥

मुनि जेहि ध्यान न पावहिं[2] नेति नेति कह बेद।
कृपासिंधु सोइ कपिन्ह सन करत अनेक बिनोद॥
उमा जोग जप दान तप नाना मख ब्रत नेम।
रामु कृपा नहि करहिं तसि जसि निष्केवल प्रेम॥११६॥

भालु कपिन्ह पट भूषन पाए। पहिरि पहिरि रघुपति पहि आए।
नाना जिनस देखि सब[3] कीसा। पुनि पुनि हसत कोसलाधीसा।
चितै सबन्ह पर कीन्ही दाया। बोले मृदुल बचन रघुराया।
तुम्हरे बल मे रावनु मार्यो। तिलक बिभीषन कहँ पुनि सार्यो।
निज निज गृहे अब तुम्ह सब जाहू। सुमिरेहु मोहि डरपहु[4] जनि काहू।
बचन सुनत प्रेमाकुल बानर। जोरि पानि बोले सब सादर।
प्रभु जोइ कहहु तुम्हहिं सब सोहा। हमरे होत बचन सुनि मोहा।
दीन जानि कपि किए सनाथा। तुम्ह त्रैलोक ईस रघुनाथा।
सुनि प्रभु बचन लाज हम मरहीं। मसक कहूँ[5] खगपति हित करहीं।
देखि राम रुख बानर रीछा। प्रेम मगन नहि गृह कै ईछा॥

प्रभु प्रेरित कपि भालु सब राम रूप उर राखि।
हरष बिषाद सहित चले बिनय बिबिध बिधि[6] भाखि॥

१–४, ५ अस ३, ६
२–४,५ ६ ध्यान न पावहि जाहि मुनि ३
३–४, ५ ६, प्रभु ३
४–४, ५, ६ डरहु ३
५–४,५,६ कबहुँ ३
६–४,५,६, समेत तब चले बिनय बहु ३.

कपिपति नील रीछपति अंगद नल[1] हनुमान।
सहित बिभीषन अपर जे जूथप कपि बलवान॥
कहि न सकहिं कछु प्रेम बस भरि भरि लोचन बारि।
सन्मुख चितवहि राम तन नयन निमेष निवारि॥११७॥

अतिसय प्रीति देखि रघुराई। लीन्हे सकल बिमान चढ़ाई।
मन महु बिप्र चरन सिरु नायो। उत्तर दिसिहि बिमानु चलायो।
चलत बिमान कोलाहलु होई। जय रघुबीर कहै सबु कोई।
सिंहासनु अति उच्च मनोहर। श्री समेत प्रभु बैठे ता पर।
राजत रामु सहित भामिनी। मेरु शृंग जनु घनु दामिनी।
रुचिर बिमानु चलेउ अति आतुर। कीन्ही सुमन बृष्टि हरषे सुर।
परम सुखद चलि त्रिबिध बयारी। सागर सर सरि निर्मल बारी।
सगुन होहिं सुंदर चहुँ पासा। मन प्रसंन निर्मल नभ आसा।
कह रघुबीर देखु रन सीता। लछिमन, इहाँ हत्यो इँद्रजीता।
हनूमान अंगद के मारे। रन महि परे निसाचर भारे।
कुंभकरन रावन द्वौ भाई। इहाँ हते सुर मुनि दुखदाई॥

इहाँ सेतु बाध्यो अरु[2] थापेउँ सिव सुख धाम।
सीता सहित कृपानिधि[2] संभुहि कीन्ह प्रनाम॥
जहँ, जहँ कृपासिंधु[3] बन कीन्ह बास बिस्राम।
सकल देखाए जानकिहि कहे सबन्हि के नाम॥११८॥

तुरत[4] बिमान तहाँ चलि आवा। दंडकबन जहँ परम सुहावा।
कुंभजादि मुनि नायक नाना। गए रामु सबके अस्थाना।

१–४,५,६; जामवंत कपिराज नल अंगदादि ३.
२–४,५,६; यह देखु सुदर सेतु जहँ, कृपारतन ३.
३–४, ५, ६; करुनासिंधु ३.
४–४, ५, ६; सपदि ३.

सकल रिषिन्ह सन पाइ असीसा। चित्रकूट आओउ[१] जगदीसा।
तहँ करि मुनिन्ह केर संतोषा। चला बिमान तहाँ ते चोखा।
बहुरि राम जानकिहि देखाई। जमुना कलि मल हरनि सोहाई।
पुनि देखी सुरसरी पुनीता। राम कहा प्रनाम करु सीता।
तीरथपति पुनि देखु प्रयागा। निरखत जन्म कोटि अघ भागा।
देखु परम पावनि पुनि बेनी। हरन सोक हरि लोक निसेनी।
पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि। त्रिबिध ताप भव रोग नसावनि॥

सीता सहित अवध कहु कीन्ह कृपाल प्रनाम।
सजल नयन तन पुलकित पुनि पुनि हरषित राम[२]॥
पुनि प्रभु आइ त्रिबेनी[३] हरषित मज्जनु कीन्ह।
कपिन्ह सहित बिप्रन्ह कहु[४] दान बिबिध बिधि दीन्ह॥११९॥

प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई। धरि बटु रूप अवधपुर जाई।
भरतहि कुसल हमारि सुनाओहु। समाचार लै तुम्ह चलि आओहु।
तुरत पवन सुत[५] गवनत भओऊ। तब प्रभु भरद्वाज पहि गओऊ।
नाना बिधि मुनि पूजा कीन्ही। अस्तुति करि पुनि आसिष दीन्ही।
मुनि पद बंदि जुगल कर जोरी। चढ़ि बिमान प्रभु चले बहारी।
इहाँ निषाद सुना प्रभु आए। नाव नाव कह लोग बोलाए।
सुरसरि नाघि जान तब[६] आयो। उतरेउ तट प्रभु आओसु पायो।
तब सीता पूजी सुरसरी। बहु प्रकार पुनि चरनन्हि परी।
दीन्हि असीस हरषि मन गंगा। सुंदरि तव अहिवात अभगा।
सुनत गुहा धाओउ प्रेमाकुल। आओउ निकट परम सुख संकुल।

१-४, ५, ६, देखत २.
२-४, ५, ६, तब रघुनायक श्री
 सहित अवधहि कीन्ह प्रनाम।
 सजल बिलोचन पुलकि तन
 पुनि पुनि हरषत राम॥ २
३-४,५,६, बहुरि त्रिबेनी आइ प्रभु २.
४-४, ५, ६, समेत महीसुरन्ह २.
५-४, ५, ६; हरि २
६-४, ५, ६; जब आवा २

प्रभुहि सहित बिलोकि बैदेही। परेउ अवनि तन सुधि नहि तेही।
प्रीति परम बिलोकि रघुराई। हरषि उठाइ लियो उर लाई॥

लियो हृदय लाइ कृपानिधान सुजान राम रमापती।
बैठारि परम समीप बूझी कुसल सो कर बीनती।
अब कुसल पद पंकज बिलोकि बिरंचि संकर सेव्य जे।
सुख धाम पूरन काम राम नमामि राम नमामि ते॥
सब भाति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यों उर लाइयो।
मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोह बस बिसराइयो।
अेह रावनारि चरित्र पावन राम पद रति प्रद सदा।
कामादि हर बिज्ञान कर सुर सिद्ध मुनि गावहि मुदा॥

समर बिजय रघुबीर के चरित जे सुनहि[१] सुजान।
बिजय बिबेक बिभूति नित तिन्हहि देहिं भगवान॥
अेह कलिकाल मलायतन मन करि देखु बिचार।
श्रीरघुनाथ नामु तजि नाहिन[२] आन अधार॥१२०॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने विमल-
विज्ञानसम्पादिनी नाम षष्ठः सोपानः समाप्त।

शुभमस्तु॥

१-४, ५, ६; रघुपति चरित सुनहिं जे सदा ३.

२-४, ५, ६; श्रीरघुनायक नाम तजि नहि कछु ३.

रामचरितमानस

सप्तम सोपान

केकीकंठाभनीलं सुर वरविलसद्विप्रपादाब्जचिन्हं
सोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नं ।
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरजुतं बंधुना सेव्यमानं
नौमीड्यं जानकीसं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामं ॥ १ ॥
कोशलेंद्रपदकंजमंजुलौ कोमलावजमहेशवंदितौ ।
जानकीकरसरोजलालितौ चिंतकस्य मनभृंगसंगिनौ ॥ २ ॥
कुंदइंदुदरगौरसुंदरं अंबिकापतिमभीष्टसिद्धिदं ।
कारुनीककलकंजलोचनं नौमि शंकरमनंगमोचनं ॥ ३ ॥

रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग ।
जहँ तहँ सोचहि नारि नर कृसतन राम बियोग ॥
सगुन होहिं सुंदर सकल मन प्रसंन सब केर ।
प्रभु आगवन जनाव जनु नगर रम्य चहु फेर ॥
कौसल्यादि मातु सब मन अनंद अस होइ ।
आओउ प्रभु श्री अनुज जुत कहन चहत अब कोइ ॥
भरत नयन भुज दक्षिन फरकत बारहि बार ।
जानि सगुन मन हरप अति लागे करन बिचार ॥

रहेउ[२] एक दिनु अवधि अधारा । समुझत मन दुख भओउ अपारा ।
कारन कवन नाथ नहि आओउ । जानि कुटिल किधौं मोहि बिसराओउ ।
अहह धन्य लछिमन बड़भागी । राम पदारबिंदु अनुरागी ।
कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा । ता ते नाथ संग नहि लीन्हा ।
जौ करनी समुझै प्रभु मोरी । नहि निसतार कलप सत कोरी ।

१-४, ५; कोमलाबुज ६. २-४, ५, ६; रहा ३.

जन अवगुन प्रभु मान न काऊ। दीनबंधु अति मृदुल सुभाऊ।
मोरे जिअ भरोस दृढ़ सोई। मिलिहहि राम सगुन सुभ होई।
बीते अवधि रहहि जो प्राना। अधम कवन जग मोहि समाना॥

राम बिरह[1] सागर महँ भरत मगन मन होत।
बिप्र रूप धरि पवनसुत आइ गएउ जनु पोत॥
बैठे देखि कुसासन जटा मुकुट कृस गात।
राम राम रघुपति जपत स्रवत नयन जलजात॥ १ ॥

देखत हनूमान अति हरषेउ। पुलक गात लोचन जल बरषेउ।
मन महँ बहुत भाँति सुख मानी। बोलेउ श्रवन सुधा सम बानी।
जासु बिरह सोचहु दिन राती। रटहु निरंतर गुन गन पाँती।
रघुकुल तिलक सुजन[2] सुखदाता। आएउ कुसल देव मुनि त्राता।
रिपु रन जीति सुजस सुर गावत। सीता सहित अनुज प्रभु आवत।
सुनत बचन बिसरे सब दूखा। तृषावंत जिमि पाइ[3] पियूषा।
को तुम्ह तात कहाँ ते आए। मोहि परम प्रिय बचन सुनाए।
मारुतसुत मैं कपि हनुमाना। नाम मोर सुनु कृपानिधाना।
दीनबंधु रघुपति कर किंकर। सुनत भरत भेंटेउ उठि सादर।
मिलत प्रेम नहि हृदय समाता। नयन स्रवत जल पुलकित गाता।
कपि तव दरस सकल दुख बीते। मिले आजु मोहि राम पिरीते।
बार बार बूझी कुसलाता। तो कहुँ देउँ काह[4] सुनु भ्राता।
एहि संदेस सरिस जग माहीं। करि बिचार देखेउँ कछु नाहीं।
नाहिन तात उरिन मैं तोही। अब प्रभु चरित सुनावहु मोही।
तब हनुमंत नाइ पद माथा। कहे सकल रघुपति गुन गाथा।
कहु कपि कबहुँ कृपाल गुसाँई। सुमिरहि मोहि दास की नाई॥

१-४, ५ ६, सो जन २
२-४, ५, ६ अनुज सहित पुर ३
३-४, ५, ६, पाव ३
४-३, ४, ५, कहा ६

निज दास ज्यों रघुबंस भूषन कबहु मम सुमिरन कर्यो।
सुनि भरत बचन बिनीत अति कपि पुलकि तन चरनन्हि पर्यो।
रघुबीर निज मुख जासु गुन गन कहत अग जग नाथ जो।
काहे न होइ बिनीत परम पुनीत सद्गुन सिंधु[१] सो॥

राम प्रान प्रिय नाथ तुम्ह सत्य बचन मम तात।
पुनि पुनि मिलत भरत सुनि हरष न हृदय समात॥

भरत चरन सिरु नाइ तुरित गएउ कपि राम पहिं।
कही कुसल सब जाइ हरषि चलेउ[२] प्रभु जान चढ़ि॥ २॥

हरषि भरत कोसलपुर आए। समाचार सब गुरहि सुनाए।
पुनि मंदिर मह बात जनाई। आवत नगर कुसल रघुराई।
सुनत सकल जननी उठि धाई। कहि प्रभु कुसल भरत समुझाई।
समाचार पुरबासिन्ह पाए। नर अरु नारि हरषि सब धाए।
दधि दुर्बा रोचन फल फूला। नव तुलसीदल मंगल मूला।
भरि भरि हेम थार भामिनी। गावत चलीं[३] सिंधुरगामिनी।
जे जैसेहि तैसेहि[४] उठि धावहिं। बाल बृद्ध कहँ संग न लावहिं।
एक एकन्ह कहँ बूझहि भाई। तुम्ह देखे दयाल रघुराई।
अवधपुरी प्रभु आवत जानी। भई सकल सोभा कै खानी।
बहइ सुहावन त्रिबिध समीरा। भइ सरऊ अति निर्मल नीरा॥[५]

हरषित गुर परिजन अनुज भूसुर बृंद समेत।
चले भरत मन प्रेम अति[६] सन्मुख कृपानिकेत॥

१—४, ५, ६, पाथ ३.
२—३, ४, ५, चले ६.
३—६, चलि ३, ४, ५.
४—८, ५, जो जैसे तैसेहि ३, ६.
५—४,५,६, भइ सरऊ अति निर्मल नीरा। बहइ सुहावन त्रिबिध समीरा॥ ३.
६—४, ५, ६, अति प्रेम मन ३.

बहुतक चढ़ीं अटारिन्हि निरखहिं गगन बिमान।
देखि मधुर सुर हरषित करहिं सुमंगल गान॥
राकाससि रघुपति पुर सिंधु देखि हरषान।
बढ़यो कोलाहल करत जनु नारि तरंग समान॥ ३॥

इहाँ भानुकुल कमल दिवाकर। कपिन्ह देखावत नगर मनोहर[1]।
सुनु कपीस अंगद लंकेसा। पावन पुरी रुचिर यह देसा।
जद्यपि सब बैकुंठ बखाना। बेद पुरान बिदित जगु जाना।
अवधपुरी सम प्रिय नहिं[2] सोऊ। येह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ।
जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि। उत्तर दिसि बह सरऊ पावनि।
जा मज्जन ते बिनहिं प्रयासा। मम समीप नर पावहिं बासा।
अति प्रिय मोहि इहाँ के बासी। मम धामदा पुरी सुखरासी।
हरषे सब कपि सुनि प्रभु बानी। धन्य अवध जो राम बखानी॥

आवत देखि लोग सब कृपासिंधु भगवान।
नगर निकट प्रभु प्रेरेउ उतरेउ भूमि बिमान॥
उतरि कहेउ प्रभु पुष्पकहि तुम्ह कुबेर पहिं जाहु।
प्रेरित राम चलेउ सो हरष बिरह अति ताहु॥ ४॥

आए भरत संग सब लोगा। कृस तन श्रीरघुबीर बियोगा।
बामदेव बसिष्ठ मुनि नायक। देखे प्रभु महि धरि धनु सायक।
धाइ धरे[3] गुर चरन सरोरुह। अनुज सहित अति पुलक तनोरुह।
भेटि कुसल बूझी मुनिराया। हमरे कुसल तुम्हारिहिं दाया।
सकल द्विजन्ह मिलि नायेउ माथा। धरम धुरंधर रघुकुल नाथा।
गहे भरत पुनि प्रभु पद पंकज। नमत जिन्हहि सुर मुनि संकर अज।

१–३, ६, सुधाकर ४, ५.
२–४, ५, ६, सरिस प्रिय मोहि न ३.
३–४, ५, ६, गहे ३

परे। भूमि नहि उठत उठाए। बर करि कृपासिंधु उर लाए।
स्यामल गात रोम भए ठाढ़े। नव राजीव नयन जल बाढ़े॥
राजीव लोचन श्रवत जल तन ललित पुलकावलि घनी।
अति प्रेम हृदय लगाइ अनुजहि मिले प्रभु त्रिभुवन धनी।
प्रभु मिलत अनुजहि सोह मो पहि जाति नहि उपमा कही।
जनु प्रेम अरु सिंगार तनु धरि मिले बर सुषमा लही॥
बूझत कृपानिधि कुसल भरतहि बचन बेगि न आवई।
सुनु सिवा सो सुख बचन मन ते भिन्न जान जो पावई।
अब कुसल कौसलनाथ आरत जानि जन दरसन दियो।
बूड़त बिरह बारीस कृपानिधान मोहि कर गहि लियो॥
पुनि प्रभु हरषि सत्रुहन भेटे हृदय लगाइ।
लछिमन भरत मिले तब परम प्रेम दोउ भाइ॥ ५॥

भरतानुज लछिमनु पुनि भेटे। दुसह बिरह संभव दुख मेटे।
सीता चरन भरत सिरु नावा। अनुज समेत परम सुख पावा।
प्रभु बिलोकि हरषे पुरबासी। जनित बियोग बिपति सब नासी।
प्रेमातुर सब लोग निहारी। कौतुक कीन्ह कृपाल खरारी।
अमिति रूप प्रगटे तेहि काला। जथाजोग मिले सबहि कृपाला।
कृपादृष्टि रघुबीर बिलोकी। किए सकल नर नारि बिसोकी।
छन महि सबहि मिले भगवाना। उमा मरमु यह काहु न जाना।
ऐहि बिधि सबहि सुखी करि रामा। आगे चले सील गुन धामा।
कौसल्यादि मातु सब धाई। निरखि बच्छ जनु धेनु लवाई॥
जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृह चरन बन परबस गईं।
दिन अंत पुर रुख श्रवत थन हुंकार करि धावत भईं।

१–४, ५, परमा १, ६.

मम हित लागि जन्म इन्ह हारे । भरतहु ते मोहि अधिक पिआरे ।
सुनि प्रभु बचन मगन सब भए । निमिषि निमिषि उपजत सुख नए ॥

कौसल्या के चरनन्हि पुनि तिन्ह नाऐउ माथ ।
आसिष दीन्हे हरषि तुम्ह प्रिय मम जिमि रघुनाथ ॥
सुमन बृष्टि नभ संकुल भवन चले सुखकंद ।
चढ़ी अटारिन्ह देखहि नगर नारि बर बृंद ॥ ८ ॥

कंचन कलस बिचित्र सवाँरे । सबहि धरे सजि निज निज द्वारे ।
बंदनिवार पताका केतू । सबन्हि बनाए मंगल हेतू ।
बीथी सकल सुगंध सिचाई । गजमनि रचि बहु चौक पुराई ।
नाना भाति सुमंगल साजे । हरषि नगर निसान बहु बाजे ।
जहँ तहँ नारि निछावरि करहीं । देहिं असीस हरष उर भरहीं ।
कंचन थार आरती नाना । जुवती सजे करहिं सुभ गाना ।
करहिं आरती आरतिहर के । रघुकुल कमल बिपिन दिनकर के ।
पुर सोभा संपति कल्याना । निगम सेष सारदा बखाना ।
तेउ ओह चरित देखि ठगि रहहीं । उमा तासु गुन नर किमि कहहीं ॥

नारि कुमुदिनी अवध सर रघुपति बिरह दिनेस ।
अस्त भए बिगसत भईं निरखि रामु राकेस ॥
होहि सगुन सुभ बिबिधि बिधि बाजहि गगन[१] निसान ।
पुर नर नारि सनाथ करि भवन चले भगवान ॥ ९ ॥

प्रभु जानी कैकई लजानी । प्रथम तासु गृह गए भवानी ।
ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा । पुनि निज भवन गवन हरि कीन्हा ।
कृपासिंधु तब मंदिर गए[२] । पुर नर नारि सुखी सब भए[२] ।
गुरु बसिष्ठ द्विज लिए बुलाई । आजु सुघरी सुदिन समुदाई[३] ।

१–४, ५, ६; नाक ३. ३–४, ५; सुभदाई ३, ६.
२–३, ४, ५; गएऊ, भएऊ ६.

अति प्रेम प्रभु सब मातु भेटी बचन मृदु बहु बिधि कहे।
गइ बिषम बिपति बियोग भव तिन्ह हरष सुख अगनित लहे॥
भेटेउ तनय सुमित्रा राम चरन रति जानि।
रामहि मिलत कइकई हृदय बहुत सकुचानि॥
लछिमन सब मातन्ह मिलि हरषे आसिस पाइ।
कैकइ कहँ पुनि पुनि[1] मिले मन कर छोभ न जाइ॥ ६॥

सासुन्ह सबनि मिली बैदेही। चरनन्हि लागि हरषु अति तेही।
देहि असीस बूझि कुसलाता। होइ[2] अचल तुम्हार अहिवाता।
सब रघुपति मुख कमल बिलोकहिं। मंगल जानि नयन जल रोकहिं।
कनक थार आरती उतारहिं। बार बार प्रभु गात निहारहिं।
नाना भाति निछावरि करहीं। परमानंद हरष उर भरहीं।
कौसल्या पुनि पुनि रघुबीरहि। चितवति कृपासिंधु रन धीरहि।
हृदय बिचारति बारहि बारा। कवन भाँति लंकापति मारा।
अति सुकुमार जुगल मम बारे। निसिचर सुभट महा बल भारे॥

लछिमन अरु सीता सहित प्रभुहि बिलोकति मातु।
परमानंद मगन मन पुनि पुनि पुलकित गातु॥ ७॥

लंकापति कपीस नल नीला। जामवंत अंगद सुभ सीला।
हनुमदादि सब बानर बीरा। धरे मनोहर मनुज सरीरा।
भरत सनेह सील ब्रत नेमा। सादर सब बरनहि अति प्रेमा।
देखि नगर बासिन्ह कै रीती। सकल सराहहि प्रभु पद प्रीती।
पुनि रघुपति सब सखा बोलाए। मुनि पद लागहु सकल[3] सिखाए।
गुर बसिष्ठ कुलपूज्य हमारे। इन्हकी कृपा दनुज रन मारे।
ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे। भए समर सागर कहु बेरे।

१–३, ४, ५; कैकेई कहुँ पुनि ६. ३–४, ५, ६, लगन कुसल ६.
२–४, ५, होउ ३, होहिं ६.

मम हित लागि जन्म इन्ह हारे । भरतहु ते मोहि अधिक पिआरे ।
सुनि प्रभु बचन मगन सब भए । निमिष निमिष उपजत सुख नए ॥
कौसल्या के चरनन्हि पुनि तिन्ह नाअेउ माथ ।
आसिष दीन्हे हरषि तुम्ह प्रिय मम जिमि रघुनाथ ॥
सुमन बृष्टि नभ संकुल भवन चले सुखकंद ।
चढ़ी अटारिन्ह देखहि नगर नारि बर बृंद ॥ ८ ॥

कंचन कलस बिचित्र सवाँरे । सबहि धरे सजि निज निज द्वारे ।
बंदनिवार पताका केतू । सबन्हि बनाए मंगल हेतू ।
बीथी सकल सुगंध सिचाई । गजमनि रचि बहु चौक पुराई ।
नाना भाति सुमंगल साजे । हरषि नगर निसान बहु बाजे ।
जहँ तहँ नारि निछावरि करहीं । देहिं असीस हरष उर भरहीं ।
कंचन थार आरती नाना । जुवती सजे करहिं सुभ गाना ।
करहिं आरती आरतिहर के । रघुकुल कमल बिपिन दिनकर के ।
पुर सोभा संपति कल्याना । निगम सेष सारदा बखाना ।
तेउ अेह चरित देखि ठगि रहहीं । उमा तासु गुन नर किमि कहहीं ॥
नारि कुमुदिनी अवध सर रघुपति बिरह दिनेस ।
अस्त भए बिगसत भईं निरखि राम राकेस ॥
होहिं सगुन सुभ बिबिधि बिधि बाजहि गगन[१] निसान ।
पुर नर नारि सनाथ करि भवन चले भगवान ॥ ९ ॥

प्रभु जानी कैकई लजानी । प्रथम तासु गृह गए भवानी ।
ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा । पुनि निज भवन गवन हरि कीन्हा ।
कृपासिंधु तब मंदिर गए[२] । पुर नर नारि सुखी सब भए[२] ।
गुरु बसिष्ठ द्विज लिए बुलाई । आजु सुघरी सुदिन समुदाई[३] ।

१–४, ५, ६; नाक ३. ३–४, ५; सुमदाई ३, ६.
२–३, ४, ५; गएऊ, भएऊ ६.

सब द्विज देहु हरषि अनुसासन। रामचंद्र बैठहि सिंघासन।
मुनि बसिष्ठ के बचन सुहाए। सुनत सकल बिप्रन्ह अति भाए।
कहहि बचन मृदु बिप्र अनेका। जग अभिराम राम अभिषेका।
अब मुनिबर बिलंब नहि कीजे। महाराज कह तिलक करीजे॥

तब मुनि कहेउ सुमंत्र सन सुनत चलेउ हरषाइ[१]।
रथ अनेक बहु बाजि गज तुरत सवारे जाइ॥
जहँ तहँ धावन पठै पुनि मंगल द्रव्य मगाइ।
हरष समेत बसिष्ठ पद पुनि सिरु नायेउ आइ॥१०॥

अवधपुरी अति रुचिर बनाई। देवन्ह सुमन बृष्टि झर लाई।
राम कहा सेवकन्ह बुलाई। प्रथम सखन्ह अन्हवावहु जाई।
सुनत बचन जहँ तहँ जन धाए। सुग्रीवादि तुरत अन्हवाए।
पुनि करुनानिधि भरत हँकारे। निज कर राम जटा निरुआरे।
अन्हवाए प्रभु तीनिउँ भाई। भगत बछल कृपाल रघुराई।
भरत भाग्य प्रभु कोमलताई। सेष कोटि सत सकहि न गाई।
पुनि निज जटा राम बिबराए। गुर अनुसासन मागि नहाए।
करि मज्जन प्रभु भूषन साजे। अंग अनंग देखि सत लाजे[२]॥

सासुन्ह सादर जानकिहि मज्जन तुरत कराइ।
दिव्य बसन बर भूषन अँग अँग सजे बनाइ॥
राम बाम दिसि सोभति रमा रूप गुन खानि।
देखि मातु सब हरषी जन्म सुफल निज जानि॥
सुनु खगेस तेहि अवसर ब्रह्मा सिव मुनि बृंद।
चढ़ि बिमान आए सब सुर देखन सुखकंद॥११॥

प्रभु बिलोकि मुनि मनु अनुरागा। तुरत दिव्य सिंघासन मागा।

१-४, ५, ६, सिर नाइ ३   २-४, ५; कोटि छबि लाजे ६; कोटि छबि छाजे ३.

/

रबि सम तेज सो बरनि न जाई। बैठे रामु द्विजन्ह सिरु नाई।
जनक सुता समेत रघुराई। पेखि प्रहरषे मुनि समुदाई।
बेद मंत्र तब द्विजन्ह उचारे। नभ सुर मुनि जय जयति पुकारे।
प्रथम तिलक बसिष्ठ मुनि कीन्हा। पुनि सब बिप्रन्ह आअेसु दीन्हा।
सुत बिलोकि हरषी महतारी। बार बार आरती उतारी।
बिप्रन्ह दान बिबिधि बिधि दीन्हे। जाचक सकल अजाचक कीन्हे।
सिंघासन पर त्रिभुअन साईं। देखि सुरन्ह दुंदुभी बजाईं॥

नभ दुंदुभी बाजहि बिपुल गंधर्ब किन्नर गावहीं।
नाचहि अपछरा बृंद परमानंद सुर मुनि पावहीं।
भरतादि अनुज बिभीषनांगद हनुमदादि समेत ते।
गहे छत्र चामर ब्यजन धनु असि चर्म सक्ति बिराजते॥
श्री सहित दिनकर बंस भूषन काम बहु छबि सोहई।
नव अंबुधर बर गात अंबर पीत सुर मन मोहई।
मुकुटांगदादि बिचित्र भूषन अंग अंगन्हि प्रति सजे।
अंभोज नयन बिसाल उर भुज धन्य नर निरखंति जे॥

वोह सोभा समाज सुख कहतु न बनै खगेस।
बरनै सारद सेष श्रुति सो रस जान महेस॥
भिन्न भिन्न अस्तुति करि गअे सुर निज निज धाम।
बंदी बेष बेद तब आए जहँ श्रीराम॥
प्रभु सर्बज्ञ कीन्ह अति आदर कृपानिधान।
लखेउ न काहू मरम कछु[१] लगे करन गुन गान॥ १२॥

जय सगुन निर्गुन रूप रूप अनूप भूप सिरोमने।
दसकंधरादि प्रचंड निसिचर प्रबल खल भुज बल हने।

१–३, ६; कहूँ ४, ५

अवतार नर संसार भार बिभंजि दारुन दुख दहे।
जय प्रनत पाल दयाल प्रभु संजुक्त सक्ति नमामहे॥
तव बिषम माया बस सुरासुर नाग नर अग जग हरे।
भव पंथ भ्रमत अमित[१] दिवस निसि काल कर्म गुननि भरे।
जे नाथ करि करुना बिलोके त्रिबिधि दुख ते निर्बहे।
भव खेद छेदन दच्छ हम कहु रच्छ राम नमामहे॥
जे ग्यान मान बिमत्त तव भव हरनि भक्ति न आदरी।
ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी।
बिस्वास करि सब आस परिहरि दास तव जे होइ रहे।
जपि नाम तव बिनु श्रम तरहि भव नाथ सो स्मरामहे॥
जे चरन सिव अज पूज्य रज सुभ परसि मुनिपतिनी तरी।
नख निर्गता मुनि बंदिता त्रैलोक पावनि सुरसरी।
ध्वज कुलिस अंकुस कंज जुत बन फिरत कंटक किन लहे।
पद कंज द्वंद मुकुंद राम रमेस नित्य भजामहे॥
अब्यक्त मूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने।
षट कंध साखा पंचबीस अनेक पर्न सुमन घने।
फल जुगल बिधि कटु मधुर बेलि अकेलि जेहि आस्रित रहे।
पल्लवत फूलत नवल नित संसार बिटप नमामहे॥
जे ब्रह्म अजमद्वैतमनुभवगम्य मन पर ध्यावहीं।
ते कहहु जानहु नाथ हम तव सगुन जस नित गावहीं।
करुनायतन प्रभु सदगुनाकर देव येह बर मागहीं।
मन बचन कर्म बिकार तजि तव चरन हम अनुरागहीं॥

सब के देखत बेदन्ह बिनती कीन्हि उदार।
अंतर्धान भए पुनि गए ब्रह्म आगार॥

१–४, ५, ६; भ्रमित ३.

बैनतेय सुनु संभु तब आए जहँ रघुबीर।
बिनय करत गदगद गिरा पूरित पुलक सरीर॥ १३॥

जय राम रमा रमनं समनं। भव ताप भयाकुल पाहि जनं।
अवधेस सुरेस रमेस बिभो। सरनागतमागत पाहि प्रभो॥
दससीस बिनासन बीस भुजा। कृत दूरि महा महि भूरि रुजा।
रजनीचर बृंद पतंग रहे। सर पावक तेज प्रचंड दहे॥
महि मंडल मंडन चारुतरं। धृत सायक चाप निषंग बरं।
मद मोह महा ममता रजनी। तम पुंज दिवाकर तेज अनी॥
मनजात किरात निपात किए। मृग लोक कुभोग सरेन हिए।
हति नाथ अनाथन्हि पाहि हरे। बिषया बन पाँवर भूलि परे॥
बहु रोग बियोगन्हि लोग हए। भवदंघ्रि निरादर के फल ए।
भवसिंधु अगाध परे नर ते। पद पंकज प्रेम न जे करते॥
अति दीन मलीन दुखी नितहीं। जिन्हके पद पंकज प्रीति नहीं।
अवलंब भवंत कथा जिन्हकें। प्रिय संत अनंत सदा तिन्हकें॥
नहि राग न लोभ न मान मदा। तिन्हकें सम बैभव वा बिपदा।
ऐहि ते तव सेवक होत मुदा। मुनि त्यागत जोग भरोस सदा॥
करि प्रेम निरंतर नेम लिए। पद पंकज सेवत सुद्ध हिए।
सम मानि निरादर आदरही। सब संत सुखी बिचरंति मही॥
मुनि मानस पंकज भृंग भजे। रघुबीर महा रनधीर अजे।
तव नाम जपामि नमामि हरी। भव रोग महा गद मान अरी॥
गुन सील कृपा परमायतनं। प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं।
रघुनंद निकंदय द्वंदघनं। महिपाल बिलोकय दीनजनं॥

बार बार बर मागौं हरषि देहु श्रीरंग।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग॥
बरनि उमापति राम गुन हरषि गए कैलास।
तब प्रभु कपिन्ह दिवाए सब बिधि सुखप्रद बास॥ १४॥

सुनु खगपति यह कथा पावनी। त्रिबिधि ताप भव भय दावनी।
महाराज कर सुभ अभिषेका। सुनत लहहिं नर बिरति बिबेका।
जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं। सुख संपति नाना बिधि पावहिं।
सुर दुर्लभ सुख करि जग माहीं। अंत काल रघुपति पुर जाहीं।
सुनहिं बिमुक्त बिरत अरु बिषई। लहहिं भगति गति संपति नई।
खगपति राम कथा मैं बरनी। स्वमति बिलास त्रास दुख हरनी।
बिरति बिबेक भगति दृढ़ करनी। मोह नदी कहँ सुंदर तरनी।
नित नव मंगल कौसलपुरी। हरषित रहहिं लोग सब कुरी।
नित नइ प्रीति राम पद पंकज। सबके जिन्हहि नमत सिव मुनि अज।
मंगन बहु प्रकार पहिराए। द्विजन्ह दान नाना बिधि पाए॥

ब्रह्मानंद मगन कपि सब के प्रभु पद प्रीति।
जात न जाने दिवस तिन्ह गए मास षट बीति॥ १५॥

बिसरे गृह सपनेहु सुधि नाहीं। जिमि परद्रोह संत मन नाहीं।
तब रघुपति सब सखा बोलाए। आइ सबन्हि सादर सिरु नाए।
परम प्रीति समीप बैठारे। भगत सुखद मृदु बचन उचारे।
तुम्ह अति कीन्हि मोरि सेवकाई। मुख पर केहि बिधि करौं बड़ाई।
ता ते मोहि तुम्ह अति प्रिय लागे। मम हित लागि भवन सुख त्यागे।
अनुज राज संपति बैदेही। देह गेह परिवार सनेही।
सब मम प्रिय नहिं तुम्हहि समाना। मृषा न कहौं मोर यह बाना।
सब के प्रिय सेवक यह नीती। मोरें अधिक दास पर प्रीती॥

अब गृह जाहु सखा सब भजेहु मोहि दृढ़ नेम।
सदा सर्बगत सर्बहित जानि करेहु अति प्रेम॥ १६॥

सुनि प्रभु बचन मगन सब भए। को हम कहा बिसरि तन गए।
एक टक रहे जोरि कर आगे। सकहिं न कछु कहि अति अनुरागे।

१-४, ५: माही ३, ६.

परम प्रेमु तिन्ह कर प्रभु देखा। कहा बिबिधि बिधि ग्यान बिसेखा।
प्रभु सन्मुख कछु कहन न पारहिं। पुनि पुनि चरन सरोज निहारहिं।
तब प्रभु भूषन बसन मगाए। नाना रंग अनूप सुहाए।
सुग्रीवहि प्रथमहि पहिराए। बसन भरत निज हाथ बनाए।
प्रभु प्रेरित लछिमन पहिराए। लंकापति रघुपति मन भाए।
अंगद बैठ रहा नहि डोला। प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोला॥

जामवंत नीलादि सब पहिराए रघुनाथ।
हिय धरि राम रूप सब चले नाइ पद माथ॥
तब अंगद उठि नाइ सिरु सजल नयन कर जोरि।
अति बिनीत बोले बचन मनहु प्रेम रस बोरि॥ १७॥

सुनु सर्बग्य कृपा सुख सिंधो। दीन दयाकर आरत बंधो।
मरती बेर नाथ मोहि बाली। गएउ तुम्हारेहि कोछे घाली।
असरन सरन बिरदु संभारी। मोहि जनि तजहु भगत हितकारी।
मोरे तुम्ह प्रभु गुर पितु माता। जाउँ कहाँ तजि पद जलजाता।
तुम्हहि बिचारि कहहु नरनाहा। प्रभु तजि भवन काज मम काहा।
बालक ग्यान बुद्धि बल हीना। राखहु सरन नाथ[१] जन दीना।
नीच टहल गृह कै सब करिहौं। पद पंकज बिलोकि भव तरिहौं।
अस कहि चरन परेउ प्रभु पाही। अब जनि नाथ कहहु गृह जाही॥

अंगद बचन बिनीत सुनि रघुपति करुना सींव।
प्रभु उठाइ उर लाएउ सजल नयन राजीव॥
निज उर माल बसन मनि बालितनय पहिराइ।
बिदा कीन्हि भगवान तब बहु प्रकार समुझाइ॥ १८॥

भरत अनुज सौमित्रि समेता। पठवन चले भगत कृत चेता।
अंगद हृदय प्रेम नहि थोरा। फिरि फिरि चितव राम की ओरा।

---

१ १–३, ४, ५; जानि ६.

बार बार कर दंड प्रनामा । मन अस रहन कहहिं मोहि रामा ।
राम बिलोकनि बोलनि चलनी ।सुमिरि सुमिरि सोचत हसि मिलनी ।
प्रभु रुख देखि विनय बहु भाखी । चलेउ हृदय पद पंकज राखी ।
अति आदर सब कपि पहुचाए । भाइन्ह सहित भरत पुनि आए ।
तब सुग्रीव चरन गहि नाना । भाति विनय कीन्हे हनुमाना ।
दिन दस करि रघुपति पद सेवा । पुनि तव चरन देखिहौं देवा ।
पुन्य पुंज तुम्ह पवनकुमारा । सेवहु जाइ कृपाआगारा ।
अस कहि कपि सब चले तुरंता । अंगद कहे सुनहु हनुमंता ॥

कहेहु दंडवत प्रभु सैं तुम्हहि कहौं कर जोरि ।
बार बार रघुनायकहि सुरति कराअेहु मोरि ॥
अस कहि चलेउ बालिसुत फिरि आअेउ हनुमंत ।
तासु प्रीति प्रभु सन कही मगन भए भगवंत ॥
कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि ।
चित्त खगेस राम कर समुझि परै कहु काहि ॥ १९ ॥

पुनि कृपाल लियो बोलि निपादा । दीन्हे भूपन बसन प्रसादा ।
जाहु भवन मम सुमिरन करेहू । मन क्रम बचन धरम अनुसरेहू ।
तुम्ह मम सखा भरत सम भ्राता । सदा रहेहु पुर आवत जाता ।
बचन सुनत उपजा सुख भारी । परेउ चरन भरि लोचन बारी ।
चरन नलिन उर धरि गृह आवा । प्रभु सुभाउ परिजनन्हि सुनावा ।
रघुपति चरित देखि पुरबासी । पुनि पुनि कहहि धन्य सुखरासी ।
राम राज बैठे त्रैलोका । हरपित भए गए सब सोका ।
बयरु न कर काहू सन कोई । राम प्रताप बिपमता खोई ॥

बरनाश्रम निज निज धरम निरत वेद पथ लोग ।
चलहि सदा पावहि सुखहि नहि भय सोक न रोग ॥ २० ॥

दैहिक दैविक भौतिक तापा । राम राज नहि काहुहि ब्यापा ।

सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधरम निरत श्रुति नीती[१]।
चारिउ चरन धर्म जग माहीं। पूरि रहा सपनेहु अघ नाहीं।
राम भगति रत नर अरु नारी। सकल परम गति के अधिकारी।
अल्प मृत्यु नहि कवनिउ पीरा। सब सुंदर सब बिरुज सरीरा।
नहि दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहि कोउ अबुध न लक्षन हीना।
सब निर्दंभ धर्मरत पुनी। नर अरु नारि चतुर सब गुनी।
सब गुनज्ञ पंडित सब ज्ञानी। सब कृतज्ञ नहि कपट सयानी॥

राम राज नभगेस सुनु सचराचर जग माहि।
काल कर्म[२] सुभाव गुन कृत दुख काहुहि नाहि॥ २१॥

भूमि सप्त सागर मेखला। एक भूप रघुपति कोसला।
भुअन अनेक रोम प्रति जासू। अेह प्रभुता कछु बहु[त न तासू।
सो महिमा समुझत प्रभु केरी। यह बरनत हीनता घनेरी।
सो महिमा खगेस जिन्ह जानी। फिरि] अेहि चरित तिन्हहु रति मानी।
सोउ जाने कर फल येह लीला। कहहि महा मुनिबर दमुसीला[३]।
राम राज कर सुख संपदा। बरनि न सकै फनीस सारदा।
सब उदार सब पर उपकारी। बिप्र चरन सेवक नर नारी।
एक नारि ब्रत रत सब झारी। ते मन बच क्रम पति हितकारी॥

दंड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज।
जीतहु मनहि सुनिअ अस[४] रामचंद्र के राज॥ २२॥

फूलहि फरहि सदा तरु कानन। रहहि एक सँग गज पंचानन।
खग मृग सहज बयरु बिसराई। सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई।
कूजहि खग मृग नाना बृंदा। अभय चरहि बन करहि अनंदा।
सीतल सुरभि पवन बह मंदा। गुंजत अलि ले चलि मकरंदा।

१–४, ५, ६; रीती ३.
२–इतना अंश ५ में नहीं है।
३– ३, ६; बरद सुसीला ४, ५
४–४, ५, ६; अस सुनिय जग ३

लता बिटप लागे मधु चवहीं[1]। मनभावतो धेनु पय स्रवहीं।
सस्य संपन्न सदा रह धरनी। त्रेता भै कृतजुग कै करनी।
प्रगटी गिरिन्ह बिबिधि मनि खानी। जगदात्मा भूप जग जानी।
सरिता सकल बहहिं बर बारी। सीतल अमल स्वाद सुखकारी।
सागर निज मरजादा रहहीं। डारहि रत्न तटन्हि नर लहहीं।
सरसिज संकुल सकल तड़ागा। अति प्रसंन दस दिसा बिभागा॥

बिधु महि पूर मयूखन्हि रबि तप जेतनेहि काज।
मागे बारिद देहि जल रामचंद्र के राज॥ २३॥

कोटिन्ह बाजिमेध प्रभु कीन्हे। दान अनेक द्विजन्ह कहँ दीन्हे।
श्रुति पथ पालक धर्म धुरंधर। गुनातीत अरु भोग पुरंदर।
पति अनुकूल सदा रह सीता। सोभा खानि सुसील बिनीता।
जानति कृपासिंधु प्रभुताई। सेवति चरन कमल मनु लाई।
जद्यपि गृह सेवक सेवकिनी। बिपुल सकल सेवा बिधि गुनी।
निज कर गृह परिचरजा करई। रामचंद्र आयेस अनुसरई।
जेहि बिधि कृपासिंधु सुख मानइ। सोइ कर श्री सेवा बिधि जानइ।
कौसल्यादि सासु गृह माही। सेवइ सबन्हि मान मद नाही।
उमा रमा ब्रह्माणि[2] बंदिता। जगदंबा संततमनिंदिता॥

जासु कृपा कटाक्ष सुर चाहत चितव न सोइ।
राम पदारबिंदु रति करति सुभावहि खोइ॥ २४॥

सेवहि सानकूल सब भाई। राम चरन रति अति अधिकाई।
प्रभु मुख कमल बिलोकत रहहीं। कबहु कृपाल हमहि कछु कहहीं।
राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती। नाना भाति सिखावहि नीती।
हरषित रहहिं नगर के लोगा। करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा।
अहनिसि बिधिहि मनावत रहही। श्री रघुबीर चरन रति चहहीं।

१–३, ६; स्रवहीं ४, ५. २–१, ५; ब्रह्मादि ३, ६.

दुइ सुत सुंदर सीता जाए। लव कुस वेद पुरानन्हि गाए।
दोउ बिजई बिनई गुन मंदिर। हरि प्रतिबिंब मनहु अति सुंदर।
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे। भए रूप गुन सील घनेरे॥
ज्ञान गिरा गोतीत अज माया मन गुन पार।
सोइ सच्चिदानंद घन कर नर चरित उदार॥ २५॥

प्रात काल सरऊ करि मज्जन। बैठहिं सभा संग द्विज सज्जन।
बेद पुरान बसिष्ठ बखानहि। सुनहिं राम जद्यपि सब जानहिं।
अनुजन्ह संजुत भोजन करहीं। देखि सकल जननी सुख भरहीं।
भरत सत्रुहन दोनौ[1] भाई। सहित पवन सुत उपवन जाई।
बूझहि बैठि राम गुन गाहा। कह हनुमान सुमति अवगाहा।
सुनत बिमल गुन अति सुख पावहिं। बहुरि बहुरि करि बिनय कहावहिं।
सब के गृह गृह होहि[2] पुराना। राम चरित पावन बिधि नाना।
नर अरु नारि राम गुन गानहिं। करहिं दिवस निसि जात न जानहिं॥
अवधपुरी बासीन्ह[3] कर सुख संपदा समाज।
सहस सेस नहि कहि सकहि जहँ नृप राम बिराज॥ २६॥

नारदादि सनकादि मुनीसा। दरसन लागि कोसलाधीसा।
दिन प्रति सकल अयोध्या आवहिं। देखि नगरु बिराग बिसरावहिं।
जातरूप मनि रचित अटारी। नाना रंग रुचिर गच ढारी।
पुर चहु पास कोट अति सुंदर। रचे कँगूरा रंग रंग बर।
नव ग्रह निकर अनीक बनाई। जनु घेरी अमरावति आई।
महि बहु रंग रचित गच काचा। जो बिलोकि मुनिबर मन नाचा।
धवल धाम ऊपर नभ चुंबत। कलस मनहु रबि ससि दुति निंदत।
बहु मनि रचित झरोखा भ्राजहिं। गृह गृह प्रति मनि दीप बिराजहिं॥

१-४, ५ दूनौ ३, ६.
२-४, ५, ६, होहि बेद ३
३-४, ५, ६ बासिन्ह ३.

मनि दीप राजहिं भवन भ्राजहिं देहरीं बिद्रुम रची।
मनि खंभ भीति बिरंचि बिरची कनक मनि मरकत खची।
सुंदर मनोहर मंदिरायत अजिर रुचिर फटिक रचे।
प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाइ बहु बज्रन्हि खचे॥

चारु चित्रसाला गृह गृह प्रति लिखे बनाइ।
राम चरित जे निरख मुनि ते मन लेहिं चुराइ॥ २७॥

सुमन बाटिका सबहिं लगाईं। बिबिधि भाँति करि जतन बनाईं।
लता ललित बहु जाति सुहाईं। फूलहिं सदा बसंत कि नाईं।
गुंजत मधुकर मुखर[१] मनोहर। मारुत त्रिबिधि सदा बह सुंदर।
नाना खग बालकन्हि जिआए। बोलत मधुर उड़ात सुहाए।
मोर हंस सारस पारावत। भवननि पर सोभा अति पावत।
जहँ तहँ देखहिं निज परिछाहीं। बहु बिधि कूजहिं नृत्य कराहीं।
सुक सारिका पढ़ावहिं बालक। कहहु राम रघुपति जनपालक।
राज दुआर सकल बिधि चारू। बीथीं चौहट रुचिर बजारू॥

बाजार रुचिर न बनै बरनत बस्तु बिनु गथ पाइए।
जहँ भूप रमानिवास तहँ की संपदा किमि गाइए।
बैठे बजाज सराफ बनिक अनेक मनहुँ कुबेर ते।
सब सुखी सब सच्चरित सुंदर नारि नर सिसु जरठ जे॥

उत्तर दिसि सरजू बह निर्मल जल गंभीर।
बाँधे घाट मनोहर स्वल्प पंक नहिं तीर॥ २८॥

दूरि फराक रुचिर सो घाटा। जहँ जल पिअहिं बाजि गज ठाटा।
पनिघट परम मनोहर नाना। तहाँ न पुरुष करहिं अस्नाना।
राजघाट सब बिधि सुंदर बर। मज्जहिं तहाँ बरन चारिउ नर।
तीर तीर देवन्ह के मंदिर। चहुँ दिसि तिन्ह कीं[२] उपबन सुंदर।

१—३, ६; मुखर ४, ५.   २—४, ५; जिन्ह की ३; तिन्ह के ६.

कहुँ कहुँ सरिता तीर उदासी। बसहिं ज्ञान रत मुनि संन्यासी।
तीर तीर तुलसिका सुहाई। वृंद वृंद बहु मुनिन्ह लगाई।
पुर सोभा कछु बरनि न जाई। बाहेर नगर परम रुचिराई।
देखत पुरी अखिल अघ भागा। बन उपवन वापिका तड़ागा॥

बापी तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहहीं।
सोपान सुंदर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहहीं।
बहु रंग कंज अनेक खग कूजहिं मधुप गुंजारहीं।
आराम रम्य पिकादि खग रव जनु पथिक हंकारहीं॥

रमानाथ जहँ राजा सो पुर बरनि कि जाइ।
अनिमादिक सुख संपदा रही अवध सब छाइ॥ २९॥

जहँ तहँ नर रघुपति गुन गावहिं। बैठि परसपर इहै सिखावहिं।
भजहु प्रनत प्रतिपालक रामहि। सोभा सील रूप गुन धामहि।
जलज बिलोचन स्यामल गातहि। पलक नयन इव सेवक त्रातहि।
धृत सर रुचिर चाप-तूनीरहि। संत कंज बन रबि रनधीरहि।
[काल कराल ब्याल खगराजहि। नमत राम अकाम ममता जहि।
लोभ मोह मृग जूथ किरातहि। मनसिज करि हरिजन सुखदातहि।][1]
संसय सोक निबिड़ तम भानुहि। दनुज गहन घन दहन कृसानुहि।
जनक सुता समेत रघुबीरहि। कस न भजहु भंजन भव भीरहि।
बहु बासना मसक हिम रासिहि। सदा एक रस अज अबिनासिहि।
मुनि रंजन भंजन महि भारहि। तुलसिदास के प्रभुहि उदारहि॥

ऐहि बिधि नगर नारि नर करहिं राम गुन गान।
सानुकूल सब पर रहहिं संतत कृपानिधान॥ ३०॥

जब तें राम प्रताप खगेसा। उदित भएउ अति प्रबल दिनेसा।
पूरि प्रकास रहेउ तिहुँ लोका। बहुतेन्ह सुख बहुतन मन सोका।

१-इतना अंश ३ में नहीं है।

जिन्हहिं सोक ते कहौं बखानी। प्रथम अविद्या निसा नसानी।
अघ उलूक जहँ तहाँ लुकाने। काम क्रोध कैरव सकुचाने।
बिबिध कर्म गुन काल सुभाऊ। ए चकोर सुख लहहिं न काऊ।
मत्सर मान मोह मद चोरा। इन्ह कर हुनर न कवनिहु ओरा।
धरम तडाग ग्यान बिग्याना। ए पंकज बिकसे बिधि नाना।
सुख संतोष बिराग बिबेका। बिगत सोक ए कोक अनेका।

येह प्रताप रबि जाकें उर जब[१] करै प्रकास।
पछिले बाढ़हिं प्रथम जे कहे ते पावहि नास॥ ३१॥

भ्रातन्ह सहित रामु अेक बारा। संग परम प्रिय पवनकुमारा।
सुंदर उपबन देखन गए। सब तरु कुसुमित पल्लव नए।
जानि समय सनकादिक आए। तेज पुंज गुन सील सुहाए।
ब्रह्मानंद सदा लयलीना। देखत बालक बहुकालीना।
रूप धरे जनु चारिउ बेदा। समदरसी मुनि बिगत बिभेदा।
आसा बसन ब्यसन येह तिन्हहीं। रघुपति चरित होहिं तहँ सुनहीं।
तहाँ रहे सनकादि भवानी। जहँ घटसंभव मुनि बर ग्यानी।
राम कथा मुनिबर बहु[२] बरनी। ग्यानजोति पावक जिमि अरनी॥

देखि राम मुनि आवत हरखि दंडवत कीन्ह।
स्वागत पूछि पीत पट प्रभु बैठन कहँ दीन्ह॥ ३२॥

कीन्ह दंडवत तीनिउ भाई। सहित पवनसुत सुख अधिकाई।
मुनि रघुपति छबि अतुल बिलोकी। भए मगन मन सके न रोकी।
स्यामल गात सरोरुह लोचन। सुंदरता मंदिर भव मोचन।
अेकटक रहे निमेष न लावहिं। प्रभु कर जोरे सीस नवावहिं।
तिन्ह कै दसा देखि रघुबीरा। स्रवत नयन जल पुलक सरीरा।
कर गहि प्रभु मुनिबर बैठारे। परम मनोहर बचन उचारे।

१–३, ६; उरहि जब प्रभु ४, ५. २–४, ५, ६; मुनि बहु बिधि ३.

आजु धन्य मैं सुनहु मुनीसा। तुम्हरे दरस जाहिं अघ खीसा।
बड़े भाग पाइब[1] सतसंगा। बिनहिं प्रयास होहिं भव भंगा।
संत संग[2] अपबर्ग कर कामी भव कर पंथ।
कहहिं संत कबि कोबिद श्रुति पुरान सदग्रंथ[2]॥ ३३॥

सुनि प्रभु बचन हरषि मुनि चारी। पुलकित तन अस्तुति अनुसारी।
जय भगवंत अनंत अनामय। अनघ अनेक एक करुनामय।
जय निर्गुन जय जय गुनसागर[3]। सुख मंदिर सुंदर अति नागर।
जय इंदिरा रमन जय भूधर। अनुपम अज[4] अनादि सोभाकर।
ज्ञान निधान अमान मान प्रद। पावन सुजसु पुरान बेद बद।
तज्ञ कृतज्ञ अज्ञता भंजन। नाम अनेक अनाम निरंजन।
सर्ब सर्बगत सर्बउरालय। बससि सदा हम कहु परिपालय।
द्वंद बिपति भव फंद बिभंजय। हृदि बसि राम काम मद गंजय॥
परमानंद कृपायतन मन पर पूरनकाम[5]।
प्रेम भगति अनपायनी देहु हमहि श्रीराम॥ ३४॥

...हु भगति रघुपति अति[6] पावनि। त्रिबिध ताप भव दाप नसावनि।
...नत काम सुर[7] धेनु कलपतरु। होइ प्रसन्न दीजे प्रभु यह बरु।
भव बारिद कुंभज रघुनायक। सेवत सुलभ सकल सुख दायक।
...नसंभव दारुन दुख दारय। दीनबंधु समता बिस्तारय।
...ास त्रास इरिषादि निवारक। बिनय बिबेक बिरति बिस्तारक।
...प मौलि मनि मंडन धरनी। देहि भगति संसृति सरि तरनी।

१—४, ५, ६, पाइअ ३.
२—४, ५, ६, पंथ, सदग्रंथ ३
३—४, ५, ६; गुननिधि ३.
४—३, ६, अति अनुपम ४, ५
५—३, मन परिपूरन काम ४, ५, ६.
६—३, ६, की ४, ५
७—४, ५, ६, धुक ३.

मुनि मन 'मानस हंस' निरंतर । चरन कमल बंदित अज संकर ।
रघुकुल केतु सेतु श्रुति रक्षक । काल कर्म सुभाय गुन भक्षक ।
तारन तरन हरन सब दूषन । तुलसिदास प्रभु त्रिभुवन भूषन ॥
बार बार अस्तुति करि प्रेम सहित सिरु नाइ ।
ब्रह्मभवन सनकादि गे अति अभिष्ट बर पाइ ॥ ३५ ॥

सनकादिक बिधि लोक सिधाए । भ्रातन्ह राम चरन सिरु नाए ।
पूछत प्रभुहि सकल सकुचाहीं । चितवहि सब मारुतसुत पाहीं ।
सुनी चहहिं प्रभु मुख कै बानी । जो सुनि होइ सकल भ्रम हानी ।
अंतरजामी प्रभु सभ जाना । बूझत कहहु काह हनुमाना ।
जोरि पानि कह तब हनुमंता । सुनहु दीनदयाल भगवंता ।
नाथ भरत कछु पूछन चहहीं । प्रश्न करत मन सकुचत अहहीं ।
तुम्ह जानहु कपि मोर सुभाऊ । भरतहि मोहि कछु अंतर काऊ ।
सुनि प्रभु बचन भरत गहे चरना । सुनहु नाथ प्रनतारति हरना ॥
नाथ न मोहि संदेह कछु सपनेहु सोक न मोह ।
केवल कृपा तुम्हारि ही कृपानंद संदोह ॥ ३६ ॥

करौं कृपानिधि एक ढिठाई । मैं सेवक तुम्ह जन सुखदाई ।
संतन्ह कै महिमा रघुराई । बहु बिधि बेद पुरानन्ह गाई ।
श्रीमुख तुम्ह पुनि कीन्हि बड़ाई । तिन्ह पर प्रभुहि प्रीति अधिकाई ।
सुना चहौं प्रभु तिन्ह कर लक्षन । कृपासिंधु गुन ज्ञान बिचक्षन ।
संत असंत भेद बिलगाई । प्रनत पाल मोहि कहहु बुझाई ।
संतन्ह के लक्षन सुनु भ्राता । अगनित श्रुति पुरान बिख्याता ।
संत असंतन्हि कै असि करनी । जिमि कुठार चंदन आचरनी ।
काटै परसु मलय सुनु भाई । निज गुन देइ सुगंध बसाई ॥
ता तें सुर सीसन्ह चढ़त जग बल्लभ श्रीखंड ।
अनल दाहि पीटत घनहि परसु बदनु येह दंड ॥ ३७ ॥

बिषय अलंपट सील गुनाकर। पर दुख दुख सुख सुख देखे पर।
सम अभूतरिपु बिमद बिरागी। लोभामरष हरष भय त्यागी।
कोमल चित दीनन्ह पर दाया। मन बच क्रम मम भगति अमाया।
सबहि मानप्रद आपु अमानी। भरत प्रान सम मम ते प्रानी।
बिगत काम मम नाम परायन। सांति बिरति बिनती मुदितायन।
सीतलता सरलता मैत्री। द्विज पद प्रीति धर्म जनयित्री।
ए सब लक्षन बसहि जासु उर। जानेहु तात संत संतत फुर।
सम दम नियम नीति नहि डोलहिं। परुष बचन कबहू नहि बोलहि॥

निंदा अस्तुति उभय सम ममता मम पद कंज।
ते सज्जन मम प्रान प्रिय गुन मंदिर सुख पुंज॥ ३८॥

सुनहु असंतन्ह केर सुभाऊ। भूलेहु संगति करिय न काऊ।
तिन्ह कर संग सदा दुखदाई। जिमि कपिलहि घालइ हरहाई।
खलन्ह हृदय अति ताप बिसेखी। जरहि सदा पर संपति देखी।
जहँ कहुँ निंदा सुनहि पराई। हरषहिं मनहु परी निधि पाई।
काम क्रोध मद लोभ परायन। निर्दय कपटी कुटिल मलायन।
बयरु अकारन सब काहू सों। जो कर हित अनहित ताहू सों।
झूठइ लेना झूठइ देना। झूठइ भोजन झूठ चबेना।
बोलहिं मधुर बचन जिमि मोरा। खाइ महा अहि हृदय कठोरा॥

पर द्रोही पर दार रत पर धन पर अपवाद।
ते नर पावर पाप मय देह धरें मनुजाद॥ ३९॥

लोभइ ओढ़न लोभइ डासन। सिस्नोदर पर जमपुर त्रास न।
काहू की जौं सुनहि बड़ाई। स्वास लेहि जनु जूड़ी आई।
जब काहू कै देखहिं बिपती। सुखी भए मानहु जग नृपती।
स्वारथ रत परिवार बिरोधी। लंपट काम लोभ अति क्रोधी।

१–३, ४, ५, जनयत्री ६. २–४, ५, ६; निदय ३.

मातु पिता गुर बिप्र न मानहिं । आपु गए अरु घालहिं आनहिं ।
करहिं मोह बस द्रोह परावा । संत संग हरिकथा न भावा ।
अवगुन सिंधु मंदमति कामी । बेद बिदूषक पर धन स्वामी ।
बिप्र द्रोह पर द्रोह बिसेषा । दंभ कपट जिय धरे सुबेषा ॥
ऐसे अधम मनुज खल कृतजुग त्रेता नाहिं ।
द्वापर कछुक बृंद बहु होइहहिं कलिजुग माहिं ॥ ४० ॥
परहित सरिस धर्म नहिं भाई । पर पीडा सम नहिं अधमाई ।
निर्नय सकल पुरान बेद कर । कहेउँ तात जानहिं कोबिद नर ।
नर सरीर धरि जे पर पीरा । करहिं ते सहहिं महा भव भीरा ।
करहिं मोह बस नर अघ नाना । स्वारथ रत परलोक नसाना ।
काल रूप तिन्ह कहँ मैं भ्राता । सुभ अरु असुभ करम फल दाता ।
अस बिचारि जे परम सयाने । भजहिं मोहि संसृति दुख जाने ।
त्यागहिं कर्म सुभासुभ दायक । भजहिं मोहि सुर नर मुनि नायक ।
संत असंतन्ह के गुन भाषे । ते न परहिं भव जिन्ह लखि राखे ॥
सुनहु तात माया कृत गुन अरु दोष अनेक ।
गुन यह उभय न देखिअहिं देखिअ सो अबिबेक ॥ ४१ ॥
श्रीमुख बचन सुनत सब भाई । हरषे प्रेम न हृदय समाई ।
करहिं बिनय अति बारहिं बारा । हनूमान हिय हरष अपारा ।
पुनि रघुपति निज मंदिर गए । एहि बिधि चरित करत नित नए ।
बार बार नारद मुनि आवहिं । चरित पुनीत राम के गावहिं ।
नित नव चरित देखि मुनि जाहीं । ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं ।
सुनि बिरंचि अतिसय सुख मानहिं । पुनि पुनि तात करहु गुन गानहिं ।
सनकादिक नारदहि सराहहिं । जद्यपि ब्रह्म निरत मुनि आहहिं ।
सुनि गुन गान समाधि बिसारी । सादर सुनहिं परम अधिकारी ॥

१-२, ६, अनु ४, ५ २-१, ५, ६; सुर श्रुति ३

जीवनमुक्त ब्रह्मपर चरित सुनहिं तजि ध्यान।
जे हरि कथा न करहिं रति तिन्ह के हिय पाषान ॥ ४२ ॥

एक बार रघुनाथ बोलाए। गुरु द्विज पुरबासी सब आए।
बैठे गुर मुनि अरु द्विज[1] सज्जन। बोले बचन भगतभव[2] भंजन।
सुनहु सकल पुरजन मम बानी। कहौं न कछु ममता उर आनी।
नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई। सुनहु करहु जौ तुम्हहि सुहाई।
सोइ सेवक प्रियतम मम सोई। मम अनुसासन मानै जोई।
जौ अनीति कछु भाषौं भाई। तौ मोहि बरजहु भय बिसराई।
बडे भाग मानुष तनु पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रन्थन्हि गावा।
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा। पाइ न जेहि परलोक सँवारा ॥
सो परत्र दुख पावै सिर धुनि धुनि पछिताइ।
कालहि कर्महि ईस्वरहि मिथ्या दोस लगाइ ॥ ४३ ॥
ऐहि तन कर फल बिषय न भाई। स्वर्गौ स्वल्प अंत दुखदाई।
नर तनु पाइ बिषय मन देहीं। पलटि सुधा ते सठ बिष लेहीं।
ताहि कबहु भल कहै न कोई। गुंजा ग्रहै[2] परसमनि खोई।
आकर चारि लक्ष चौरासी। जोनि भ्रमत यह जिव अबिनासी।
फिरत सदा माया कर प्रेरा। काल कर्म सुभाव गुन घेरा।
कबहुक करि करुना नर देही। देत ईस बिनु हेतु सनेही।
नर तनु भव बारिधि कहु बेरो। सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो।
करनधार[1] सदगुर दृढ़ नावा। दुर्लभ साजु सुलभ करि पावा ॥
जो न तरै भवसागर नर समाज अस पाइ।
सो कृत निंदक मंदमति आत्माहन[3] गति जाइ ॥ ४४ ॥

१–४, ५; ६, सदषि अनुप मुनि, मय ३   २–२, ४, ५, गहै ६
३–४, ५, आत्महन ३, ६

जौं परलोक इहाँ सुख चहहू। सुनि मम बचन हृदय दृढ़ गहहू।
सुलभ सुखद मारग यह भाई। भगति मोरि पुरान श्रुति गाई।
ग्यान अगम प्रत्यूह अनेका। साधन कठिन न मन कहुँ टेका।
करत कष्ट बहु पावै कोऊ। भक्तिहीन मोहि प्रिय नहिं[1] सोऊ।
भक्ति सुतंत्र सकल सुख खानी। बिनु सतसंग न पावहिं प्रानी।
पुन्य पुंज बिनु मिलहिं न संता। सतसंगति संसृति कर अंता।
पुन्य एक जग महुँ नहिं दूजा। मन क्रम बचन बिप्र पद पूजा।
सानकूल तेहि पर मुनि देवा। जो तजि कपटु करै द्विज सेवा॥

औरौ एक गुपुत मत सबहि कहौं कर जोरि।
संकर भजन बिना नर भगति न पावै मोरि॥ ४५॥

कहहु भगति पथ कवन प्रयासा। जोग न मख जप तप उपवासा।
सरल सुभाव न मन कुटिलाई। जथालाभ संतोष सदाई।
मोर[2] दास कहाइ नर आसा। करइ तौ कहहु कहा बिस्वासा।
बहुत कहौं का कथा बढ़ाई। ऐहि आचरन बस्य मैं भाई।
बैर न बिग्रह आस न त्रासा। सुखमय ताहि सदा सब आसा।
अनारंभ अनिकेत अमानी। अनघ अरोष दक्ष बिग्यानी।
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा। तृन सम बिषय स्वर्ग अपबर्गा।
भगति पच्छ हठ नहिं सठताई। दुष्ट तर्क सब दूरि बहाई॥

मम गुन ग्राम नाम रत गत ममता मद मोह।
ता कर सुख सोइ जानै परानंद संदोह॥ ४६॥

सुनत सुधा सम बचन राम के। गहे सबनि पद कृपाधाम[3] के।
जननि जनक गुर बंधु हमारे। कृपानिधान प्रान ते प्यारे।
तनु धनु धाम राम हितकारी। सब बिधि तुम्ह प्रनतारतिहारी।

१—४, ५, ६, प्रिय मोहि न ३ ३—२, ६, कृपानिधान ४, ५,
२—३, ६, सो हरि ४, ५

अस सिख तुम्ह बिनु देइ न कोऊ। मातु पिता स्वारथ रत ओऊ।
हेतु रहित जग जुग उपकारी। तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी।
स्वारथ मीत सकल जग माहीं। सपनेहु प्रभु परमारथ नाहीं।
सब के बचन प्रेम रस साने। सुनि रघुनाथ हृदय हरषाने।
निज निज गृह गए आइसु पाई। बरनत प्रभु बतकही सुहाई॥
उमा अवधबासी नर नारि कृतारथ रूप।
ब्रह्म सच्चिदानंद घन रघुनायक जहँ भूप॥ ४७॥
एक बार बसिष्ठ मुनि आए। जहाँ रामु सुखधाम सुहाए।
अतिआदर रघुनायक कीन्हा। पद पखारि पादोदक लीन्हा।
राम सुनहु मुनि कह कर जोरी। कृपासिंधु बिनती कछु मोरी।
देखि देखि आचरन तुम्हारा। होत मोह मम हृदय अपारा।
महिमा अमित बेद नहि जाना। मैं केहि भाँति कहौं भगवाना।
उपरोहित[1] कर्म अतिमंदा। बेद पुरान सुमृति कर निंदा।
जब न लेउँ मैं तब बिधि मोही। कहा लाभ आगे सुत तोही।
परमात्मा, ब्रह्म, नररूपा। होइहि रघुकुल भूषन भूपा॥
तब मैं हृदय बिचारा जोग जग्य ब्रत दान।
जा कहु करिअ सो पैहौं धर्म न ऐहि सम आन॥ ४८॥
जप तप नियम जोग निज धर्मा। श्रुति संभव नाना सुभ कर्मा।
ज्ञान दया दम तीरथ मज्जन। जहँ लगि धर्म कहत श्रुति सज्जन।
आगम निगम पुरान अनेका। पढ़े सुने कर फल प्रभु एका।
तब पद पंकज प्रीति निरंतर। सब साधन कर येह फल सुंदर।
छूटै मल कि मलहि के धोए। घृत कि पाव कोइ बारि बिलोए।
प्रेम भगति जल बिनु रघुराई। अभिअंतर मल कबहुँ न जाई।

१–४, ५; उपरोहिती करम ३;
उपरोहित्य कर्म ६.

सोइ सर्वज्ञ तज्ञ सोइ पंडित। सोइ गुन गृह बिज्ञान अखंडित।
दक्ष सकल लच्छन जुत सोई। जाके पद सरोज रति होई॥

नाथ एक बर मागौं राम कृपा करि देहु।
जन्म जन्म प्रभु पद कमल कबहु घटै जनि नेहु॥ ४९॥

अस कहि मुनि बसिष्ठ गृह आए। कृपासिंधु के मन अति भाए।
हनूमान भरतादिक भ्राता। संग लिए सेवक सुखदाता।
पुनि कृपाल पुर बाहेर गए। गज रथ तुरग मगावत भए।
देखि कृपा करि सकल सराहे। दिए उचित जिन्ह जिन्ह तेइँ चाहे।
हरन सकल श्रम प्रभु श्रम पाई। गए जहाँ सीतल अवराई।
भरत दीन्ह निज बसन डसाई। बैठे प्रभु सेवहि सब भाई।
मारुतसुत तब मारुत करई। पुलक बपुप लोचन जल भरई।
हनूमान सम नहि बड़ भागी। नहि कोउ राम चरन अनुरागी।
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई। बार बार प्रभु निज मुख गाई॥

तेहि अवसर मुनि नारद आए करतल बीन।
गावन लागे राम कल कीरति सदा नवीन॥ ५०॥

मामवलोकय पंकज लोचन। कृपा बिलोकनि सोच बिमोचन।
नील तामरस स्याम कामअरि। हृदय कंज मकरंद मधुप हरि।
जातुधान बरूथ बल भंजन। मुनि सज्जन रंजन अघ गंजन।
भूसुर ससि नव बृंद बलाहक। असरन सरन दीन जन गाहक।
भुजबल बिपुल भार महि खंडित। खर दूपन बिराध बध पंडित।
रावनारि सुख रूप भूप बर। जय दसरथ कुल कुमुद सुधाकर।
सुजस पुरान बिदित निगमागम। गावत सुर मुनि संत समागम।
कारुनीक ब्यलीक मद खंडन। सब बिधि कुसल कोसला मंडन।
कलि मल मथन नाम ममताहन। तुलसिदास प्रभु पाहि प्रनत जन॥

१–४, ५, जेइ ३, ६.

प्रेम सहित मुनि नारद बरनि राम गुन ग्राम ।
सोभासिंधु हृदय धरि गए जहाँ बिधिधाम ॥ ५१ ॥

गिरिजा सुनहु बिसद यह कथा । मैं सब कही मोरि मति जथा ।
रामचरित सत कोटि अपारा । श्रुति सारदा न बरनै पारा ।
राम अनंत अनंत गुनानी । जन्म कर्म अनंत नामानी ।
जल सीकर महि रज गनि जाहीं । रघुपति चरित न बरनि सिराहीं ।
बिमल कथा हरि पद दायनी । भगति होइ सुनि अनपायनी ।
उमा कहेउँ सब कथा सुहाई । जो भुसुंडि खगपतिहि सुनाई ।
कछुक राम गुन कहेउँ बखानी । अब का कहौं सो कहहु भवानी ।
सुनि सुभ कथा उमा हरषानी । बोली अतिबिनीत मृदु बानी ।
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी । सुनेउँ राम गुन भव भय हारी ॥

तुम्हरी कृपा कृपायतन अब कृतकृत्य न मोह ।
जानेउँ राम प्रताप प्रभु चिदानंद संदोह ॥
नाथ तवानन ससि श्रवत कथा सुधा रघुबीर ।
स्रवन पुटन्हि मन पान करि नहि अघात मति धीर ॥ ५२ ॥

रामचरित जे सुनत अघाहीं । रस बिसेष जाना तिन्ह नाहीं ।
जीवनमुक्त महामुनि जेऊ । हरि गुन सुनहि निरंतर तेऊ ।
भवसागर चह पार जो पावा । राम कथा ता कहँ दृढ़ नावा ।
बिषइन्ह कहँ पुनि हरि गुन ग्रामा । श्रवन सुखद अरु मन अभिरामा ।
श्रवनवंत अस को जग माहीं । जाहि न रघुपति चरित सुहाहीं ।
ते जड़ जीव निजात्मक घाती । जिन्हहि न रघुपति कथा सोहाती ।
हरिचरित्रमानस तुम्ह गावा । सुनि मैं नाथ अमित सुख पावा ।
तुम्ह जो कही यह कथा सुहाई । कागभुसुंडि गरुड़ प्रति गाई ॥

बिरति ग्यान बिग्यान दृढ़ राम चरन अति नेह ।
बायस तन रघुपति भगति मोहि परम संदेह ॥ ५३ ॥

नर सहस्र महँ सुनहु पुरारी। कोउ अेक होइ धर्म व्रत धारी।
धर्मसील, कोटिक महँ कोई। विषय बिमुख बिराग रत होई।
कोटि बिरक्त मध्य श्रुति कहई। सम्यक ज्ञान सकृत कोउ लहई।
ज्ञानवंत कोटिक महँ कोऊ। जीवनमुक्त सकृत जग सोऊ।
तिन्ह सहस्र महुँ सब सुख खानी। दुर्लभ ब्रह्म लीन बिज्ञानी।
धर्मसील बिरक्त अरु ज्ञानी। जीवनमुक्त ब्रह्म पर प्रानी।
सब ते सो दुर्लभ सुरराया। राम भगति रत गत मद माया।
सो हरि भगति काग किमि पाई। बिस्वनाथ मोहि कहहु बुझाई॥

राम परायन ज्ञान रत गुनागार मति धीर।
नाथ कहहु केहि कारन पाअेउ काग सरीर॥ ५४॥

येह प्रभु चरित पवित्र सुहावा। कहहु कृपाल काग कहँ पावा।
तुम्ह केहि भाँति सुना मदनारी। कहहु मोहि अति कौतुक भारी।
गरुड महा ज्ञानी गुन रासी। हरि सेवक अति निकट निवासी।
तेहि केहि हेतु काग सन जाई। सुनी कथा मुनि निकर बिहाई।
कहहु कवन बिधि भा संबादा। दोउ हरि भगत काग उरगादा।
गौरि गिरा सुनि सरल सुहाई। बोले सिव सादर सुख पाई।
धन्य सती पावनि मति तोरी। रघुपति चरन प्रीति नहि थोरी।
सुनहु परम पुनीत इतिहासा। जो सुनि सकल लोक भ्रम नासा।
उपजै राम चरन बिस्वासा। भवनिधि तर नर बिनहि प्रयासा॥

ऐसिअ प्रस्न बिहंगपति कीन्हि काग सन जाइ।
सो सब सादर कहिहौं सुनहु उमा मन लाइ॥ ५५॥

मैं जिमि कथा सुनी भव मोचनि। सो प्रसंग सुनु सुमुखि सुलोचनि।
प्रथम दच्छ गृह तव अवतारा। सती नाम तब रहा तुम्हारा।

१-४, ५, ६ सोक ३

दक्ष जज्ञ तव भा अपमाना । तुम्ह अति क्रोध तजे तब प्राना ।
मम अनुचरन्ह कीन्ह मख भंगा । जानहु तुम्ह सो सकल प्रसंगा ।
तब अति सोच भअेउ मन मोरे । दुखी भअेउँ बियोग प्रिय तोरे ।
सुंदर बन गिरि सरित तडागा । कौतुक देखत फिरौं बैरागा ।
गिरि सुमेरु उत्तर दिसि दूरी । नील सैल अेक सुंदर भूरी ।
तासु कनकमय सिखर सुहाए । चारि चारु मोरे मन भाए ।
तिन्ह पर अेक अेक बिटप बिसाला । बट पीपर पाकरी रसाला ।
सैलोपरि सर सुंदर सोहा । मनि सोपान देखि मन मोहा ॥

सीतल अमल मधुर जल जलज बिपुल बहु रंग ।
कूजत कलरव हंस गन गुंजत मंजुल भृंग ॥ ५६ ॥

तेहि गिरि रुचिर बसै खग सोई । तासु नास कलपांत न होई ।
मायाकृत गुन दोष अनेका । मोह मनोज आदि अबिबेका ।
रहे ब्यापि समस्त जग माहीं । तेहि गिरि निकट कबहु नहि जाहीं ।
तह बसि हरिहि भजै जिमि कागा । सो सुनु उमा सहित अनुरागा ।
पीपर तरु तर ध्यान सो धरई । जाप जज्ञ पाकरि तर करई ।
आंब छांह कर मानस पूजा । तजि हरि भजनु काजु नहि दूजा ।
बर तर कह हरि कथा प्रसंगा । आवहि सुनहि अनेक बिहंगा ।
राम चरित्र बिचित्र बिधि नाना । प्रेम सहित कर सादर गाना ।
सुनहि सकल मति बिमल मराला । बसहि निरंतर जे तेहि काला ।
जब मै जाइ सो कौतुक देखा । उर उपजा आनंद बिसेखा ॥

तब कछु काल मराल तनु धरि तहँ कीन्ह निवास ।
सादर सुनि रघुपति गुन पुनि आअेउँ कैलास ॥ ५७ ॥

गिरिजा कहेउँ सो सब इतिहासा । मै जेहि समय गअेउँ खग पासा ।
अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू । गए काग पहि खगकुलकेतू ।

१-४, ५ गएउ ३, ६ २-३, ६ भग ४, ५.

जब रघुनाथ कीन्ह रन क्रीडा । समुझत चरित होत मोहि व्रीड़ा ।
इंद्रजीत कर आपु बधायो । तब नारद मुनि गरुड पठायो ।
बंधन काटि गयो उरगादा । उपजा हृदय प्रचंड बिषादा ।
प्रभु बंधन समुझत बहु भाँती । करत बिचार उरगआराती ।
ब्यापक ब्रह्म बिरज बागीसा । माया मोह पार परमीसा ।
सो अवतार सुनेउँ जग माहीं । देखेउँ सो प्रभाव कछु नाहीं ॥

भव बंधन ते छूटहिं नर जपि जा कर नाम ।
खर्ब निसाचर बाँधेऊ नागपास सोइ राम ॥ ५८ ॥

नाना भाँति मनहि समुझावा । प्रगट न ज्ञान हृदय भ्रम छावा ।
खेद खिन्न मन तर्क बढ़ाई । भएउ मोह बस तुम्हरिहि नाईं ।
ब्याकुल गएउ देवरिषि पाहीं । कहेसि जो संसय निज मन माहीं ।
सुनि नारदहि लागि अति दाया । सुनु खग प्रबल राम कै माया ।
जो ज्ञानिन्ह कर चित अपहरई । बरिआईं बिमोह मन करई ।
जेहि बहु बार नचावा मोही । सोइ ब्यापी बिहंगपति तोही ।
महामोह उपजा उर तोरे । मिटिहि न बेगि कहे खग मोरे ।
चतुरानन पहिं जाहु खगेसा । सोइ करेहु जेहि होइ निदेसा ॥

अस कहि चले देवरिषि करत राम गुन गान ।
हरि माया बल बरनत पुनि पुनि परम सुजान ॥ ५९ ॥

तब खगपति बिरंचि पहिं गएऊ । निज संदेह सुनावत भएऊ ।
सुनि बिरंचि रामहि सिरु नावा । समुझि प्रताप प्रेम अति छावा ।
मन महुँ करइ बिचार बिधाता । माया बस कबि कोबिद ज्ञाता ।
हरि माया कर अमित प्रभावा । बिपुल बार जेहि मोहि नचावा ।
अगजगमय जग मम उपराजा । नहिं आचरजु मोह खगराजा ।

१-४, ५, ६; सब ३.

तब बोले बिधि गिरा सुहाई। जान महेस राम प्रभुताई।
बैनतेय संकर पहिं जाहू। तात अनत पूछहु जनि काहू।
तहँ होइहि तव संसय हानी। चलेउ बिहंग सुनत बिधि बानी॥

परमातुर बिहंगपति आयेउ तब मो पास।
जात रहेउँ कुबेर गृह रहेहु उमा कैलास॥ ६० ॥

तेहि मम पद सादर सिरु नावा। पुनि आपन संदेहु सुनावा।
सुनि ताकरि बिनती[1] मृदु बानी। प्रेम सहित मैं कहेउँ भवानी।
मिलेहु गरुड़ मारग महँ मोही। कवन भाँति समुझावौं तोही।
तबहि होइ सब संसय भंगा। जब बहु काल करिअ सतसंगा।
सुनिअ तहाँ हरि कथा सुहाई। नाना भाँति मुनिन्ह जो गाई।
जेहि महँ आदि मध्य अवसाना। प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना।
नित हरि कथा होति जहँ भाई। पठवौं तहाँ सुनहु तुम्ह जाई।
जाइहि सुनत सकल संदेहा। राम चरन होइहि अति नेहा॥

बिनु सतसंग न हरि कथा तेहि बिनु मोह न भाग।
मोह गए बिनु राम पद होइ न दृढ़ अनुराग॥ ६१ ॥

मिलहि न रघुपति बिनु अनुरागा। किए जोग तप[2] ज्ञान बिरागा।
उत्तर दिसि सुंदर गिरि नीला। तहँ रह कागभुसुंडि सुसीला।
राम भगति पथ परम प्रबीना। ज्ञानी गुन गृह बहुकालीना।
राम कथा सो कहइ निरंतर। सादर सुनहि बिबिध बिहंगबर।
जाइ सुनहु तहँ हरि गुन भूरी। होइहि मोह जनित दुख दूरी।
मैं जब तेहि सब कहा बुझाई। चलेउ हरषि मम पद सिरु नाई।
ता ते उमा न मैं समुझावा। रघुपति कृपा मरम मैं पावा।
होइहि कीन्ह कबहु अभिमाना। सो खोवै चह कृपानिधाना।
कछु तेहि ते पुनि मैं नहि राखा। समुझै खग खग ही कै भाषा।

१–४, ५, ६; बिनीत ३, २–४, ५; जप १, ६

प्रभु माया बलवंत भवानी। जाहि न मोह कवन अस ज्ञानी॥
ज्ञानी भगति सिरोमनि त्रिभुवनपति कर जान।
ताहि मोह माया नर पावर करहिं गुमान॥
सिव बिरंचि कहुँ मोहै को है बपुरा आन।
अस जिय जानि भजहिं[1] मुनि मायापति भगवान॥ ६२॥

गयेउ गरुड़ जहँ बसइ भुसुंडी[2]। मति अकुंठ हरि भगति अखंडी[2]।
देखि सैल प्रसन्न मन भयेऊ। माया मोह सोच सब गयेऊ।
करि तड़ाग मज्जन जल पाना। बट तर गयेउ हृदय हरषाना।
बृद्ध बृद्ध बिहंग तहँ आए। सुनै राम के चरित सुहाए।
कथा अरंभ करइ सोइ चाहा। तेही समय गयेउ खगनाहा।
आवत देखि सकल खगराजा। हरषेउ बायस सहित समाजा।
अतिआदर खगपति कर कीन्हा। स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा।
करि पूजा समेति अनुरागा। मधुर बचन तब बोलेउ कागा॥
नाथ कृतारथ भयेउँ मइ तव दरसन खगराज।
आयसु देहु सो करौं अब प्रभु आयेहु केहि काज॥
सदा कृतारथ रूप तुम्ह कह मृदु बचन खगेस।
जेहि कै अस्तुति सादर निज मुख कीन्हि महेस॥ ६३॥

सुनहु तात जेहि कारन आयेउँ। सो सब भयेउ दरस तव पायेउँ।
देखि परम पावन तव आश्रम। गयेउ मोह संसय नाना भ्रम।
अब श्रीराम कथा अतिपावनि। सदा सुखद दुख पुंज नसावनि।
सादर तात सुनावहु मोही। बार बार बिनवौं प्रभु तोही।
सुनत गरुड़ कै गिरा बिनीता। सरल सुप्रेम सुखद सुपुनीता।
भयेउ तासु मन परम उछाहा। लाग कहइ रघुपति गुन गाहा।
[illegible]

१–४, ५, ६; भजहि ३: [illegible] २–३, ६; भुसुंडा, अखडा ४, ५.

प्रथमहि अति अनुराग भवानी । राम चरित सर कहेसि बखानी ।
पुनि नारद कर मोह अपारा । कहेसि बहुरि रावन अवतारा ।
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई । तब सिसु चरित कहेसि मन लाई ॥

बाल चरित कहि बिबिधि बिधि मन मह परम उछाह ।
रिषि आगमन कहेसि पुनि श्रीरघुबीर बिवाह ॥ ६४ ॥

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा । पुनि नृप बचन राज रस भंगा ।
पुर बासिन्ह कर बिरह बिषादा । कहेसि राम लछिमन संबादा ।
बिपिन गवनु केवट अनुरागा । सुरसरि उतरि निवास प्रयागा ।
बालमीक प्रभु मिलन बखाना । चित्रकूट जिमि बसे भगवाना ।
सचिवागमनु नगर नृप मरना । भरतागवन प्रेम बहु बरना ।
करि नृप क्रिया संग पुरबासी । भरत गए जहँ प्रभु सुखरासी ।
पुनि रघुपति बहु बिधि समुझाए । लै पादुका अवधपुर आए ।
भरत रहनि सुरपतिसुत करनी । प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि बरनी ॥

कहि बिराध बध जेहि बिधि देह तजी सरभंग ।
बरनि सुतीछन प्रीति पुनि प्रभु अगस्ति सत संग ॥ ६५ ॥

कहि दंडक बन पावनताई । गीध मइत्री पुनि तेहि गाई ।
पुनि प्रभु पंचबटीं कृत बासा । भंजी सकल मुनिन्ह की त्रासा ।
पुनि लछिमन उपदेस अनूपा । सूर्पनखा जिमि कीन्हि कुरूपा ।
खरदूषन बध बहुरि बखाना । जिमि सब मरमु दसानन जाना ।
दसकंधर मारीच बतकही । जेहि बिधि भई सो सब तेहि कही ।
पुनि माया सीता कर हरना । श्रीरघुबीर बिरह कछु बरना ।
पुनि प्रभु गीध क्रिया जिमि कीन्ही । बधि कबंध सबरिहि गति दीन्ही ।
बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा । जेहि बिधि गए सरोबर तीरा ॥

प्रभु नारद संबाद कहि मारुति मिलन प्रसंग ।
पुनि सुग्रीव मिताई बालि प्रान कर भंग ॥

कपिहि तिलक करि प्रभु कृत सैल प्रबरपन बास ।
बरनन[1] बरषा सरद ऋतु[2] राम रोष कपि त्रास ॥ ६६ ॥

जेहि बिधि कपिपति कीस पठाए । सीता खोज सकल दिसि धाए ।
बिवर प्रबेस कीन्ह जेहि भाँती । कपिन्ह बहोरि मिला संपाती ।
सुनि सब कथा समीरकुमारा । नाघत भयेउ पयोधि अपारा ।
लंका कपि प्रबेस जिमि कीन्हा । पुनि सीतहि धीरजु जिमि दीन्हा ।
बन उजारि रावनहि प्रबोधी । पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी ।
आए कपि सब जहँ रघुराई । बैदेही की कुसल सुनाई ।
सेन समेति जथा रघुबीरा । उतरे जाइ बारिनिधि तीरा ।
मिला बिभीषन जेहि बिधि आई । सागर निग्रह कथा सुनाई ॥

सेतु बाँधि कपि सेन जिमि उतरी सागर पार ।
गयेउ बसीठी बीर बर जिहि बिधि बालिकुमार ॥
निसिचर कीस लराई बरनिसि[3] बिबिधि प्रकार ।
कुंभकरन घननाद कर बल पौरुष संघार ॥ ६७ ॥

निसिचर निकर मरन बिधि नाना । रघुपति रावन समर बखाना ।
रावन बध मंदोदरि सोका । राज बिभीषन देव असोका ।
सीता रघुपति मिलन बहोरी । सुरन्ह कीन्हि अस्तुति कर जोरी ।
पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्ह समेता । अवध चले प्रभु कृपानिकेता ।
जेहि बिधि राम नगर निज आए । बायस बिसद चरित सब गाए ।
कहेसि बहोरि राम अभिषेका । पुर बरनन नृपनीति अनेका ।
कथा समस्त भुसुंडि बखानी । जो मैं तुम्ह सन कही भवानी ।
सुनि सब राम कथा खगनाहा । कहत बचन मन परम उछाहा ॥

१–४, ५, ६, बरनत ३. ३–२, ४, ५; बरनेसि ६.
२–४, ५, अरद ६, कर ३.

गऐउ¹ मोर संदेह सुनेउँ सकल रघुपति चरित।
भऐउ राम पद नेह तव प्रसाद बायसतिलक ॥
मोहि भऐउ अति मोह प्रभु बंधन रन महु निरखि।
चिदानंद संदोह रामु- बिकल कारन कवन ॥ ६८ ॥

देखि चरित अति नर अनुसारी। भयेउ हृदय मम संसय भारी।
सोइ भ्रम अब हित करि मैं माना²। कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना।
जो अति आतप ब्याकुल होई। तरु छाया सुख जानै सोई।
जौं नहि होत मोह अति मोही। मिलतेउँ तात कवन बिधि तोही।
सुनतेउँ किमि हरि कथा सुहाई। अति बिचित्र बहु बिधि तुम्ह गाई।
निगमागम पुरान मत एहा। कहहिं सिद्ध मुनि नहि संदेहा।
संत बिसुद्ध मिलहिं परि तेही। चितवहिं राम कृपा करि जेही।
राम कृपा तव दरसन भऐऊ। तव प्रसाद सब² संसय गऐऊ ॥

सुनि बिहगपति बानी सहित बिनय अनुराग।
पुलकि गात लोचन सजल मन हरषेउ अति काग ॥
श्रोता सुमति सुसील सुचि कथा रसिक हरि दास।
पाइ उमा अति गोप्यमपि सज्जन करहिं प्रकास ॥ ६९ ॥

बोलेउ कागभुसुंडि बहोरी। नभगनाथ पर प्रीति न थोरी।
सब बिधि नाथ पूज्य तुम्ह मेरे। कृपापात्र रघुनायक केरे।
तुम्हहि न संसय मोह न माया। मो पर नाथ कीन्हि तुम्ह दाया।
पठै मोह मिस खगपति तोही। रघुपति दीन्हि बड़ाई मोही।
तुम्ह निज मोह कही खगसाईं। सो नहि कछु आचरज गोसाईं।
नारद भव बिरंचि सनकादी। जे मुनिनायक आतमबादी।
मोह न अंध कीन्ह केहि केही। को जग काम नचाव न जेही।

१–४, ५, जाना ३, ६. २–३, ६; सब ४, ५

तृस्ना केहि न कीन्ह चौरहा[1] । केहि कर हृदय क्रोध नहि दहा[1] ॥
ज्ञानी तापस सूर कवि कोबिद गुन आगार ।
केहि कै लोभ बिडंबना कीन्हि न ऐहि संसार ॥
श्रीमद बक्र न कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि ।
मृगलोचनि के नैनसर[2] को अस लाग न जाहि ॥ ७० ॥

गुन कृत सन्यपात नहि केही । कोउ न मान मद तजेउ निबेही ।
जौबन ज्वर केहि नहि बलकावा । ममता केहि कर जस न नसावा ।
मच्छर काहि कलंक न लावा । काहि न सोक समीर डोलावा ।
चिंता साँपिनि को नहिं[3] खाया । को जग जाहि न ब्यापी माया ।
कीट मनोरथ दारु सरीरा । जेहि न लाग घुन को अस धीरा ।
सुत बित लोक[4] ईषना तीनी । केहि कै मति इन्ह कृत न मलीनी ।
यह सब माया कर परिवारा । प्रबल अमिति को बरनै पारा ।
सिव चतुरानन जाहि डेराहीं । अपर जीव केहि लेखे माहीं ॥
ब्यापि रहेउ संसार महु माया कटक प्रचंड ।
सेनापति कामादि भट दंभ कपट पाखंड ॥
सो दासी रघुबीर कै संमुझे मिथ्या सोपि ।
छूट न राम कृपा बिनु नाथ कहौं पद रोपि ॥ ७१ ॥

जो माया सब जगहि नचावा । जासु चरित लखि काहु न पावा ।
सोइ प्रभु भ्रू बिलास खगराजा । नाच नटी इव सहित समाजा ।
सोइ सच्चिदानंद घन रामा । अज बिज्ञान रूप बल[5] धामा ।
ब्यापक ब्याप्य अखंड अनंता । अखिल अमोघ सक्ति भगवंता ।
अगुन अदभ्र[6] गिरागोतीता । सबदरसी अनवद्य अजीता ।

१–३, ४, ५, चौराहा, दाहा ६. ४–३, ४, ५; नारि ६.
२–४, ५, मृगलोचनि के लोचन ३, ६. ५–४, ५, ६, गुन ३.
३–४, ५, ६; काहि न ३, ६. ६–४, ५, ६, अदभ्र ३.

निर्मम[१] निराकार निरमोहा। नित्य निरंजन सुखसंदोहा।
प्रकृति पार प्रभु सब उर बासी। ब्रह्म निरीह बिरज अबिनासी।
इहाँ मोह कर कारन नाहीं। रबि सन्मुख तम कबहु कि जाहीं॥

भगत हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनु भूप।
किए चरित पावन परम प्राकृत नर अनुरूप॥
जथा अनेक बेष धरि नृत्य करै नट कोइ।
सोइ सोइ भाव देखावै आपुन होइ न[२] सोइ॥ ७२॥

असि रघुपति लीला उरगारी। दनुज बिमोहनि जन सुखकारी।
जे मति मलिन बिषय बस कामी। प्रभु पर मोह धरहिं इमि स्वामी।
नयन दोष जा कहँ जब होई। पीत बरन ससि कहु कह सोई।
जब जेहि दिसि भ्रम होइ खगेसा। सो कह पच्छिम उअेउ दिनेसा।
नौकारूढ़ चलत जग देखा। अचल मोह बस आपुहि लेखा।
बालक भ्रमहि न भ्रमहि गृहादी। कहहिं परसपर मिथ्याबादी।
हरि बिषइक अस मोह बिहंगा। सपनेहु नहि अज्ञान प्रसंगा।
माया बस मतिमंद अभागी। हृदय जमनिका बहु बिधि लागी।
ते सठ हठ बस संसय करहीं। निज अज्ञान राम पर धरहीं॥

काम क्रोध मद लोभ रत गृहासक्त दुख रूप।
ते किमि जानहि रघुपतिहि मूढ़ परे तम कूप॥
निर्गुन रूप सुलभ अति सगुन जान नहि[२] कोइ।
सुगम अगम नाना चरित सुनि मुनि मन भ्रम होइ॥ ७३॥

सुनु खगेस रघुपति प्रभुताई। कहौं जथामति कथा सुहाई।
जेहि बिधि मोह भअेउ प्रभु मोही। सोउ सब कथा सुनावौं तोही।
राम कृपा भाजन तुम्ह ताता। हरि गुन प्रीति मोहि सुखदाता।
ताते नहि कछु तुम्हहि दुरावौं। परम रहस्य मनोहर गावौं।

१–४, ५, ६, निर्मल ३. २–४, ५; न जानहि ३, ६.

सुनहु राम कर सहज सुभाऊ। जन अभिमान न राखहिं काऊ।
संसृत मूल सूलप्रद नाना। सकल सोक दायक अभिमाना।
ता ते करहिं कृपानिधि दूरी। सेवक पर ममता अतिभूरी।
जिमि सिसु तन ब्रन होइ गुसाईं। मातु चिराव कठिन की नाईं।

जदपि प्रथम दुख पावै रोवै बाल अधीर।
ब्याधि नास हित जननी गनइ[१] न सो सिसु पीर॥
तिमि रघुपति निज दास कर हरहिं मान हित लागि।
तुलसिदास ऐसे प्रभुहि कस न भजहु भ्रम त्यागि॥ ७४॥

राम कृपा आपनि जड़ताई। कहौं खगेस सुनहु मन लाई।
जब जब राम मनुज तनु धरहीं। भक्त हेतु लीला बहु करहीं।
तब तब अवधपुरी मैं जाऊँ। बाल चरित बिलोकि हरषाऊँ।
जन्म महोत्सव देखौं जाई। बरष पाँच तहँ रहौं लुभाई।
इष्ट देव मम बालक रामा। सोभा बपुष कोटि सत कामा।
निज प्रभु बदन निहारि निहारी। लोचन सुफल करौं उरगारी।
लघु बायस बपु धरि हरि संगा। देखौं बाल चरित बहु रंगा॥

लरिकाईं जहँ जहँ फिरहिं तहँ तहँ संग उड़ाउँ।
जूठनि परइ अजिर महँ सो उठाइ करि खाउँ॥
एक बार अति सैसव[२] चरित किए रघुबीर।
सुमिरत प्रभु लीला सोइ पुलकित भयेउ सरीर॥ ७५॥

कहँ भुसुंडि सुनहु खगनायक। राम चरित सेवक[३] सुखदायक।
नृप मंदिर सुंदर सब भाँती। खचित कनक मनि नाना जाती।
बरनि न जाइ रुचिर अगनाई। जहँ खेलहिं नित चारिउ भाई।
बाल बिनोद करत रघुराई। बिचरत अजिर जननि सुखदाई।

१–३, ४, ५; गनत ६.
२–३, ४ ५. अतिसय स ब६
३–४, ५, ६; सेवत ३.

मरकत मृदुल कलेवर स्यामा। अंग अंग प्रति छवि बहु कामा।
नव राजीव अरुन मृदु चरना। पदज रुचिर नख ससि दुति हरना।
ललित अंक कुलिसादिक चारी। नूपुर चारु मधुर रव कारी।
चारु पुरट मनि रचित बनाई। कटि किंकिनि कल मुखर सुहाई॥
रेखा त्रय सुंदर उदर नाभी रुचिर गभीर।
उर आयत भ्राजत बिबिधि बाल बिभूपन चीर॥ ७६॥

अरुन पानि नख करज मनोहर। बाहु बिसाल बिभूपन सुंदर।
कंध बाल केहरि दर ग्रीवाँ। चारु चिबुक आनन छबि सीवाँ।
कलबल बचन अधर अरुनारे। दुइ दुइ दसन बिसद बर बारे।
ललित कपोल मनोहर [नासा। सकल सुखद ससिकर सम हासा।
नील][1] कंज लोचन भव मोचन। भ्राजत भाल तिलक गोरोचन।
बिकट भृकुटि सम श्रवन सुहाए। कुंचित कच मेचक छवि छाए।
पीत भीन झिगुली तन सोही। किलकनि चितवनि भावति मोही।
रूप रासि नृप अजिर बिहारी। नाचहिं निज प्रतिबिंब निहारी।
मोहि सन करहिं बिबिध बिधि क्रीड़ा। बरनत मोहि होति अति[2] ब्रीड़ा।
किलकत मोहि धरन जब धावहिं। चलौं भागि तब पूप देखावहिं॥
आवत निकट हसहिं प्रभु भाजत रुदन कराहिं।
जाउँ समीप गहन पद फिरि फिरि चितइ पराहिं॥
प्राकृत सिसु इव लीला देखि भअेउ मोहि मोह।
कवन चरित्र करत प्रभु चिदानंद संदोह॥ ७७॥

अेतना मन आनत खगराया। रघुपति प्रेरित ब्यापी माया।
सो माया न दुखद मोहि काहीं। आन जीव इव संसृति नाहीं।
नाथ इहाँ कछु कारन आना। सुनहु सो सावधान हरिजाना।
ज्ञान अखंड एक सीतावर। माया बस्य जीव सचराचर।

१–इतना अंश ५ में नहीं है। २–४, ५, ६; चरित होति मोहि ३.

जौ सब के रह ज्ञान एक रस। ईस्वर जीवहि भेद कहहु कस।
माया बस्य, जीव अभिमानी। ईस-बस्य माया गुन खानी।
परबस जीव स्वबस भगवंता। जीव अनेक एक श्रीकंता।
मुधा भेद जद्यपि कृत माया। बिनु हरि जाइ न कोटि उपाया॥

रामचंद्र के भजन बिनु जो चह पद निरबान।
ज्ञानवंत अपि सो नर पसु बिनु पूँछ बिषान॥
राकापति षोडस उअहिं तारागन समुदाइ।
सकल गिरिन्ह दव लाइअ बिनु रबि राति न जाइ॥ ७८॥

ऐसेहि हरि बिनु[1] भजन खगेसा। मिटै न जीवन्ह केर कलेसा।
हरि सेवकहि न ब्याप अबिद्या। प्रभु प्रेरित ब्यापै तेहि बिद्या।
ता ते नास न होइ दास कर। भेद भगति बाढ़ै बिहंग बर।
भ्रम ते चकित राम मोहि देखा। बिहसे सो सुनु चरित बिसेखा।
तेहि कौतुक कर मरमु न काहू। जाना अनुज न मातु पिताहू।
जानुपानि धाए मोहि धरना। स्यामल गात अरुन कर चरना।
तब मैं भागि चलेउँ उरगारी। राम गहन कह भुजा पसारी।
जिमि जिमि दूरि उड़ाउँ अकासा। तहँ भुज हरि[2] देखौं निज पासा॥

ब्रह्मलोक लगि गअेउँ मैं चितअेउँ पाछ उड़ात।
जुग अंगुल कर बीच सब राम भुजहि मोहि तात॥
सप्ताबरन भेद करि जहाँ लागि[3] गति मोरि।
गअेउँ तहाँ प्रभु भुज निरखि ब्याकुल भअेउँ बहोरि॥ ७९॥

मूँदेउँ नयन त्रसित जब भअेऊँ। पुनि चितवत कोसलपुर गअेऊँ।
मोहि बिलोकि राम मुसुकाहीं। बिहसत तुरत गअेउँ मुख माहीं।
उदर माझ सुनु अंडजराया। देखेउँ बहु ब्रह्मांड निकाया।

---

[1] १–४, ५, ६, बिनु हरि ३. [3] ३–४, ५ (लगि); लगे २, ६
[2] २–४, ५, ६; हरि भुज ३.

अतिबिचित्र तहँ लोक अनेका। रचना अधिक एक ते एका।
कोटिन्ह चतुरानन गौरीसा। अगनित उडगन रबि रजनीसा।
अगनित लोकपाल जम काला। अगनित भूधर भूमि बिसाला।
सागर सरि सर बिपिन अपारा। नाना भाँति सृष्टि बिस्तारा।
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किन्नर। चारि प्रकार जीव सचराचर॥

जो नहि देखा नहि सुना जो मनहूँ न समाइ।
सो सब अद्भुत देखेउँ बरनि कवनि बिधि जाइ॥
एक एक ब्रह्मांड महु रहौं बरष सत एक।
ऐहि बिधि देखत फिरौं मैं अंडकटाह अनेक॥ ८०॥

लोक लोक प्रति भिन्न बिधाता। भिन्न बिस्नु सिव मनु दिसित्राता।
नर गंधर्ब भूत बेताला। किन्नर निसिचर पसु खग ब्याला।
देव दनुज गन नाना जाती। सकल जीव तहँ आनहि भाँती।
महि सरि सागर सर गिरि नाना। सब प्रपंच तहँ आनै आना।
अंडकोस प्रति प्रति निज रूपा। देखेउँ जिनस अनेक अनूपा।
अवधपुरी प्रतिभुवन निनारी[१]। सरऊ भिन्न भिन्न नर नारी।
दसरथ कौसल्या सुनु ताता। बिबिध रूप भरतादिक भ्राता।
प्रतिब्रह्मांड राम अवतारा। देखौं बाल बिनोद अपारा[२]॥

भिन्न भिन्न मैं दीख सबु[३] अति बिचित्र हरिजान।
अगनित भुवन फिरेउँ प्रभु राम न देखउँ आन॥
सोइ सिसुपन सोइ सोभा सोइ कृपाल रघुबीर।
भुवन भुवन देखत फिरौं प्रेरित मोह समीर॥ ८१॥

भ्रमत मोहि ब्रह्मांड अनेका। बीते मनहु कल्प सत एका।
फिरत फिरत निज आश्रम आयेउँ। तहँ पुनि रहि कछु काल गवाँयेउँ।

१—४, ५, ६, निहारी ३ ३—४, ५, ६, सबु दीख मैं ३
२—४, ५, ६, उदारा ३

निज प्रभु जन्म अवध सुनि पाऔउँ । निर्भर प्रेम हरषि उठि धाऔउँ ।
देखौं जन्म महोत्सव जाई । जेहि बिधि प्रथम कहा मैं गाई ।
राम उदर देखेउँ जग नाना । देखत बनइ न जाइ बखाना ।
तहँ पुनि देखेउँ राम सुजाना । मायापति कृपाल भगवाना ।
करौं बिचार बहोरि बहोरी । मोह कलिल ब्यापित मति मोरी ।
उभय घरी महँ मैं सब देखा । भए[१] भ्रमित मन मोह बिसेखा ॥

देखि कृपाल बिकल मोहि बिहँसे तब रघुबीर ।
बिहँसत ही मुख बाहेर आऔउँ सुनु मतिधीर ॥
सोइ लरिकाई मो सन करन लगे पुनि राम ।
कोटि भाँति समुझावौं मन न लहै बिश्राम ॥ ८२ ॥

देखि चरित येह सो प्रभुताई । समुझत देह दसा बिसराई ।
धरनि परेउँ मुख आव न बाता । त्राहि त्राहि आरत जन त्राता ।
प्रेमाकुल प्रभु मोहि बिलोकी । निज माया प्रभुता तब रोकी ।
कर सरोज प्रभु मम सिर धरेऊ । दीनदयाल सकल दुख हरेऊ ।
कीन्ह राम मोहि बिगत बिमोहा । सेवक सुखद कृपा संदोहा ।
प्रभुता प्रथम बिचारि बिचारी । मन महँ होइ हरष अति भारी ।
भगतबछलता प्रभु कै देखी । उपजी मम उर प्रीति बिसेखी ।
सजल नयन पुलकित कर जोरी । कीन्हिउँ बहु बिधि बिनय बहोरी ॥

सुनि सप्रेम मम बानी देखि दीन निज दास ।
बचन सुखद गंभीर मृदु बोले रमानिवास ॥
काकभसुंडि मागु बर अति प्रसंन मोहि जानि ।
अनिमादिक सिधि अपर रिधि मोक्ष सकल सुख खानि ॥ ८३ ॥

ज्ञान बिबेक बिरति बिज्ञाना । मुनि दुर्लभ गुन जे जग जाना ।
आजु देउँ सब संसय नाहीं । मागु जो तोहि भाव मन माहीं ।

१-४, ५ भएउँ ६.

सुनि प्रभु बचन अधिक अनुरागेउँ। मन अनुमान करन तब लागेउँ।
प्रभु कह देन सकल सुख सही। भगति आपनी देन न कही।
भगति हीन गुन सब सुख ऐसे[१]। लवन बिना बहु ब्यंजन जैसे।
भजनहीन सुख कवने काजा। अस बिचारि बोलेउँ खगराजा।
जौ प्रभु होइ प्रसन्न बर देहू। मोपर करहु कृपा अरु नेहू।
मन भावत बर मागौं स्वामी। तुम्ह उदार उर अंतरजामी॥

अबिरल भगति बिसुद्ध तव श्रुति पुरान जो गाव।
जेहि खोजत जोगीस मुनि प्रभु प्रसाद कोउ पाव॥
भगत कलपतरु प्रनत हित कृपासिंधु सुखधाम।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करि राम॥ ८४॥

एवमस्तु कहि रघुकुलनायक। बोले बचन परम सुखदायक।
सुनु बायस तैं सहज सयाना। काहे न मागसि अस बरदाना।
सब सुख खानि भगति तैं मागी। नहि जग कोउ तोहि सम बडभागी।
जो मुनि कोटि जतन नहि लहहीं। जे जप जोग अनल तन दहहीं।
रीझेउँ देखि तोरि चतुराई। मागेहु भगति मोहि अति भाई।
सुनु बिहंग प्रसाद अब मोरे। सब सुभ गुन बसिहहिं उर तोरे।
भगति ज्ञान बिज्ञान बिरागा। जोग चरित्र रहस्य बिभागा।
जानब तैं सबही कर भेदा। मम प्रसाद नहि साधन खेदा॥

माया संभव भ्रम सब अब न ब्यापिहहिं तोहि।
जानेसु ब्रह्म अनादि अज अगुन गुनाकर मोहि॥
मोहि भगति प्रिय संतत अस बिचारि सुनु काग।
काय बचन मन मम पद करेसु अचल अनुराग॥ ८५॥

अब सुनु परम बिमल मम बानी। सत्य सुगम निगमादि बखानी।
निज सिद्धांत सुनावौं तोही। सुनि मन धरु सब तजि भजु मोही।

१–४, ५; कैसे ६

मम माया संभव संसारा । जीव चराचर बिबिधि प्रकारा ।
सब मम प्रिय सब मम उपजाए । सब ते अधिक मनुज मोहि भाए ।
तिन्ह मह द्विज द्विज मह श्रुतिधारी । तिन्ह मह निगम धर्म अनुसारी ।
तिन्ह मह प्रिय बिरक्त पुनि ग्यानी । ग्यानिहु ते अतिप्रिय बिग्यानी ।
तिन्ह ते पुनि मोहि प्रिय निज दासा । जेहि गति मोरि न[1] दूसरि आसा ।
पुनि पुनि सत्य कहौं तोहि पाहीं । मोहि सेवक सम प्रिय कोउ नाहीं ।
भगति हीन बिरंचि किन होई । सब जीवहु[2] सम प्रिय मोहि सोई ।
भगतिवंत अति नीचौ प्रानी । मोहि प्रान प्रिय असि मम बानी ॥

सुचि सुसील सेवक सुमति प्रिय कहु काहि न लाग ।
श्रुति पुरान कह नीति असि सावधान सुनु काग ॥ ८६ ॥

एक पिता के बिपुल कुमारा । होहिं पृथक गुन सील अचारा ।
कोउ पंडित कोउ तापस ग्याता । कोउ धनवंत सूर कोउ दाता ।
कोउ सर्बग्य धर्मरत कोई । सब पर पितहि प्रीति सम होई ।
कोउ पितु भगत बचन मन कर्मा । सपनेहु जान न दूसर धर्मा ।
सो सुत प्रिय पितु प्रान समाना । जद्यपि सो सब भाँति अयाना ।
ऐहि बिधि जीव चराचर जेते । त्रिजग देव नर असुर समेते ।
अखिल बिस्व यह मोर उपाया । सब पर मोहि बराबरि दाया ।
तिन्ह मह जो परिहरि मद माया । भजइ मोहि मन बच अरु काया ॥

पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोइ ।
सर्ब भाव भज कपट तजि मोहि परम प्रिय सोइ ॥
सत्य कहौं खग तोहि सुचि सेवक मम प्रान प्रिय ।
असं बिचारि भजु मोहि परिहरि आस भरोस सब ॥ ८७ ॥

कबहूँ काल न ब्यापिहि तोहीं । सुमिरेसु भजेसु[3] निरंतर मोहीं ।

१–६, भगति मोरि न ४, ५. ३–४, ५, सुमिरेहु भजेहु ६
२–४, ५, सब जीवन ६.

प्रभु वचनामृत सुनि न अघाऊँ। तनु पुलकित मन अति हरषाऊँ।
सो सुख जानै मन अरु काना। नहि रसना पहि जाइ बखाना।
प्रभु सोभा सुख जानहिं नयना। कहि किमि सकहिं तिन्हहिं नहि बयना।
बहु बिधि मोहि प्रबोधि सुख देई। लगे करन सिसु कौतुक तेई।
सजल नयन कछु मुख करि रूखा। चितै मातु लागी अति भूखा।
देखि मातु आतुर उठि धाई। कहि मृदु बचन लिए उर लाई।
गोद राखि कराव पय पाना। रघुपति चरित ललित कर गाना॥

जेहि सुख लागि पुरारि असुभ बेष कृत सिव सुखद।
अवधपुरी नर नारि तेहि सुख महुँ संतत मगन॥
सोई सुख लवलेस जिन्ह बारक सपनेहुँ लहेउ।
ते नहि गनहि खगेस ब्रह्म सुखहि सज्जन सुमति॥ ८८॥

मैं पुनि अवध रहेउँ कछु काला। देखेउँ बाल बिनोद रसाला।
राम प्रसाद भगति बर पाऐउँ। प्रभु पद बंदि निजाश्रम आऐउँ।
तब ते मोहि न ब्यापी माया। जब ते रघुनायक अपनाया।
येह सब गुप्त चरित मैं गावा। हरि माया जिमि मोहि नचावा।
निज अनुभव अब कहौं खगेसा। बिनु हरि भजन न जाहिं कलेसा।
राम कृपा बिनु सुनु खगराई। जानि न जाइ राम प्रभुताई।
जाने बिनु न होइ परतीती। बिनु परतीति होइ नहि प्रीती।
प्रीति बिना नहि भगति दृढ़ाई। जिमि खगपति जल कै चिकनाई॥

बिनु गुर होइ कि ज्ञान ज्ञान कि होइ बिराग बिनु।
गावहिं बेद पुरान सुख कि लहिअ हरि भगति बिनु॥
कोउ बिश्राम कि पाव तात सहज संतोष बिनु।
चलै कि जल बिनु नाव कोटि जतन पचि पचि मरिअ॥ ८९॥

बिनु संतोष काम न नसाही। काम अछत सुख सपनेहु नाही।

१–४, ५ न काम ६ ।

तीरथ अमित कोटि सम पावन । नाम अखिल अघ पूग[१] नसावन ।
हिमगिरि कोटि अचल रघुबीरा । सिंधु कोटि सत सम गंभीरा ।
कामधेनु सत कोटि समाना । सकल काम दायक भगवाना ।
सारद कोटि अमित चतुराई । बिधि सत कोटि सृष्टि निपुनाई ।
बिस्नु कोटि सम पालन कर्ता । रुद्र कोटि सत सम संघर्ता ।
धनद कोटि सत सम धनवाना । माया कोटि प्रपंच निधाना ।
धरा[२] धरन सत कोटि अहीसा । निरवधि निरुपम प्रभु जगदीसा ॥

निरुपम न उपमा आन राम समान रामु निगम कहे ।
जिमि कोटि सत खद्योत सम रबि कहत अति लघुता लहे ।
ऐहि भाति निज निज मति बिलास मुनीस हरिहि बखानहीं ।
प्रभु भाव गाहक अतिकृपाल सप्रेम सुनि सुख मानहीं ॥

रामु अमित गुन सागर थाह कि पावै कोइ ।
संतन्ह सन जस किछु सुनेउँ तुम्हहि सुनाऐउँ सोइ ॥

भाव बस्य भगवान सुख निधान करुना भवन ।
तजि ममता मद मान भजिअ सदा सीतारवन ॥ ९२ ॥

सुनि भुसुंडि के बचन सुहाए । हरषित खगपति पंख फुलाए ।
नयन नीर मन अति हरषाना । श्री रघुपति प्रतापु[३] उर आना ।
पाछिल मोह समुझि पछिताना । ब्रह्म अनादि मनुज करि माना ।
पुनि पुनि काग चरन सिरु नावा । जानि राम सम प्रेम बढ़ावा ।
गुर बिनु भवनिधि तरै न कोई । जौ बिरंचि संकर सम होई ।
संसय सर्प ग्रसेउ मोहि ताता । दुखद लहरि कुतर्क बहु ब्राता ।
तव सरूप गारुड़ि रघुनायक । मोहि जिआऐउ जन सुखदायक ।
तव प्रसाद मम मोह नसाना । राम रहस्य अनूपम जाना ॥

१–४, ५; पुज ६.
२–४, ६; धाना ५.
३–४, ५; प्रभाव ६.

राम भजन बिनु मिटहि कि कामा । थल बिहीन तरु कबहुँ कि जामा ।
बिनु बिज्ञान कि समता आवै । कोउ अवकास कि नभ बिनु पावै ।
श्रद्धा बिना धर्म नहि होई । बिनु महि गंध कि पावै कोई ।
बिनु तप तेज कि कर बिस्तारा । जल बिनु रस कि होइ संसारा ।
सील कि मिल बिनु बुध सेवकाई । जिमि बिनु तेज न रूप गोसाई ।
निज सुख बिनु मन होइ कि थीरा । परस कि होइ बिहीन समीरा ।
कवनिउँ सिद्धि कि बिनु बिस्वासा । बिनु हरि भजन न भव भय नासा ॥

बिनु बिस्वास भगति नहि तेहि बिनु द्रवहिं न रामु ।
राम कृपा बिनु सपनेहु जीव न लह बिश्रामु ॥

अस बिचारि मति धीर तजि कुतर्क संसय सकल ।
भजहु राम रघुबीर करुनाकर सुंदर सुखद ॥ ९० ॥

निज मति सरिस नाथ मइ गाई । प्रभु प्रताप महिमा खगराई ।
कहेउँ न कछु करि जुगति बिसेखी । येह सब मैं निज नयनन्हि देखी ।
महिमा नाम रूप गुन गाथा । सकल अमित अनंत रघुनाथा ।
निज निज मति मुनि हरि गुन गावहिं । निगम सेष सिव पार न पावहिं ।
तुम्हहिं आदि खग मसक प्रजंता । नभ उड़ाहिं नहि पावहिं अंता ।
तिमि रघुपति महिमा अवगाहा । तात कबहुँ कोउ पाव कि थाहा ।
रामु काम सत कोटि सुभग तन । दुर्गा कोटि अमित अरि मर्दन ।
सक्र कोटि सत सरिस बिलासा । नभ सत कोटि अमित अवकासा ॥

मरुत कोटि सत सरिस बल रबि सत कोटि प्रकास ।
ससि सत कोटि सुसीतल समन सकल भव त्रास ॥
काल कोटि सत सरिस अति दुस्तर दुर्ग दुरंत ।
धूमकेतु सत कोटि सम दुराधरष भगवंत ॥ ९१ ॥

प्रभु अगाध सत कोटि पताला । समन कोटि सत सरिस कराला ।

तीरथ अमित कोटि सम पावन । नाम अखिल अघ पूग[1] नसावन ।
हिमगिरि कोटि अचल रघुबीरा । सिंधु कोटि सत सम गंभीरा ।
कामधेनु सत कोटि समाना । सकल काम दायक भगवाना ।
सारद कोटि अमित चतुराई । बिधि सत कोटि सृष्टि निपुनाई ।
बिस्नु कोटि सम पालन कर्ता । रुद्र कोटि सत सम संघर्ता ।
धनद कोटि सत सम धनवाना । माया कोटि प्रपंच निधाना ।
धरा[2] धरन सत कोटि अहीसा । निरवधि निरुपम प्रभु जगदीसा ॥

निरुपम न उपमा आन राम समान रामु निगम कहे ।
जिमि कोटि सत खद्योत सम रवि कहत अति लघुता लहे ।
ऐहि भाँति निज निज मति बिलास मुनीस हरिहि बखानहीं ।
प्रभु भाव गाहक अतिकृपाल सप्रेम सुनि सुख मानहीं ॥

रामु अमित गुन सागर थाह कि पावै कोइ ।
संतन्ह सन जस किछु सुनेउँ तुम्हहि सुनाएउँ सोइ ॥

भाव बस्य भगवान सुख निधान करुना भवन ।
तजि ममता मद मान भजिअ सदा सीतारवन ॥ ९२ ॥

सुनि भुसुंडि के बचन सुहाए । हरषित खगपति पंख फुलाए ।
नयन नीर मन अति हरषाना । श्री रघुपति प्रतापु[3] उर आना ।
पाछिल मोह समुझि पछिताना । ब्रह्म अनादि मनुज करि माना ।
पुनि पुनि काग चरन सिरु नावा । जानि राम सम प्रेम बढ़ावा ।
गुर बिनु भवनिधि तरै न कोई । जौं बिरंचि संकर सम होई ।
संसय सर्प ग्रसेउ मोहि ताता । दुखद लहरि कुतर्क बहु ब्राता ।
तव सरूप गारुड़ि रघुनायक । मोहि जिआएउ जन सुखदायक ।
तव प्रसाद मम मोह नसाना । राम रहस्य अनूपम जाना ॥

१–४, ५, पुज ६. ३–४, ५, प्रभाव ६.
२–४, ६, धाना ५.

राम भजन बिनु मिटिहि कि कामा। थल बिहीन तरु कबहुँ कि जामा।
बिनु बिज्ञान कि समता आवै। कोउ अवकास कि नभ बिनु पावै।
श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई। बिनु महि गंध कि पावै कोई।
बिनु तप तेज कि कर बिस्तारा। जल बिनु रस कि होइ संसारा।
सील कि मिल बिनु बुध सेवकाई। जिमि बिनु तेज न रूप गोसाई।
निज सुख बिनु मन होइ कि थीरा। परस कि होइ बिहीन समीरा।
कवनिउँ सिद्धि कि बिनु बिस्वासा। बिनु हरि भजन न भव भय नासा॥

बिनु बिस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न रामु।
राम कृपा बिनु सपनेहु जीव न लह बिश्रामु॥
अस बिचारि मति धीर तजि कुतर्क संसय सकल।
भजहु राम रघुबीर करुनाकर सुंदर सुखद॥ ९०॥

निज मति सरिस नाथ मइ गाई। प्रभु प्रताप महिमा खगराई।
कहेउँ न कछु करि जुगति बिसेखी। येह सब मैं निज नयनन्हि देखी।
महिमा नाम रूप गुन गाथा। सकल अमित अनंत रघुनाथा।
निज निज मति मुनि हरि गुन गावहिं। निगम सेष सिव पार न पावहिं।
तुम्हहिं आदि खग मसक प्रजंता। नभ उड़ाहिं नहि पावहिं अंता।
तिमि रघुपति महिमा अवगाहा। तात कबहुँ कोउ पाव कि थाहा।
रामु काम सत कोटि सुभग तन। दुर्गा कोटि अमित अरि मर्दन।
सक्र कोटि सत सरिस बिलासा। नभ सत कोटि अमित अवकासा॥

मरुत कोटि सत सरिस बल रबि सत कोटि प्रकास।
ससि सत कोटि सुसीतल समन सकल भव त्रास॥
काल कोटि सत सरिस अति दुस्तर दुर्ग दुरंत।
धूमकेतु सत कोटि सम दुराधरष भगवंत॥ ९१॥

प्रभु अगाध सत कोटि पताला। समन कोटि सत सरिस कराला।

तीरथ अमित कोटि सम पावन । नाम अखिल अघ पूग[1] नसावन ।
हिमगिरि कोटि अचल रघुबीरा । सिंधु कोटि सत सम गंभीरा ।
कामधेनु सत कोटि समाना । सकल काम दायक भगवाना ।
सारद कोटि अमित चतुराई । बिधि सत कोटि सृष्टि निपुनाई ।
बिस्नु कोटि सम पालन कर्ता । रुद्र कोटि सत सम संघर्ता ।
धनद कोटि सत सम धनदाना । माया कोटि प्रपंच निधाना ।
धरा[2] धरन सत कोटि अहीसा । निरवधि निरुपम प्रभु जगदीसा ।।

निरुपम न उपमा आन राम समान रामु निगम कहै ।
जिमि कोटि सत खद्योत सम रबि कहत अति लघुता लहै ।
ऐहि भांति निज निज मति बिलास मुनीस हरिहि बखानहीं ।
प्रभु भाव गाहक अतिकृपाल सप्रेम सुनि सुख मानही ।।

रामु अमित गुन सागर थाह कि पावै कोइ ।
संतन्ह सन जस किछु सुनेउँ तुम्हहि सुनाऐउँ सोइ ।।

भाव वस्य भगवान सुख निधान करुना भवन ।
तजि ममता मद मान भजिअ सदा सीतारवन ।। ९२ ।।

सुनि भुसुंडि के बचन सुहाए । हरषित खगपति पंख फुलाए ।
नयन नीर मन अति हरषाना । श्री रघुपति प्रतापु[3] उर आना ।
पाछिल मोह समुझि पछिताना । ब्रह्म अनादि मनुज करि माना ।
पुनि पुनि काग चरन सिरु नावा । जानि राम सम प्रेम बढ़ावा ।
गुर बिनु भवनिधि तरै न कोई । जौं बिरंचि संकर सम होई ।
संसय सर्प ग्रसेउ मोहि ताता । दुखद लहरि कुतर्क बहु ब्राता ।
तव सरूप गारुड़ि रघुनायक । मोहि जिआऐउ जन सुखदायक ।
तव प्रसाद मम मोह नसाना । राम रहस्य अनूपम जाना ।।

१–४, ५ पुंज ६
२–४, ६, धाना ५
३–४, ५, प्रभाव ६

ताहि प्रसंसि बिबिधि बिधि सीस नाइ कर जोरि।
बचन बिनीत सप्रेम मृदु बोलेउ गरुड़ बहोरि॥
प्रभु अपने अबिबेक तें बूझौं स्वामी तोहि।
कृपासिंधु सादर कहहु जानि दास निज मोहि॥ ९३॥

तुम्ह सर्बग्य तग्य तमपारा। सुमति सुसील सरल आचारा।
ज्ञान बिरति बिज्ञान निवासा। रघुनायक के तुम्ह प्रिय दासा।
कारन कवन देह येह पाई। तात सकल मोहि कहहु बुझाई।
राम चरित सर सुंदर स्वामी। पाऐहु कहाँ कहहु नभगामी।
नाथ सुना मैं अस सिव पाहीं। महा प्रलयेहुँ नास तव नाहीं।
मुधा बचन नहि ईस्वर कहई। सोउ मोरे मन संसय अहई।
अग जग जीव नाग नर देवा। नाथ सकल जगु काल कलेवा।
अंडकटाह अमित लयकारी। कालु सदा दुरतिक्रम भारी॥
तुम्हहि न ब्यापत काल अति कराल कारन कवन।
मोहि सो कहहु कृपाल ज्ञान प्रभाव कि जोग बल॥
प्रभु तव आश्रम आएँ मोर मोह भ्रम भाग।
कारन कवन सो नाथ सब कहहु सहित अनुराग॥ ९४॥

गरुड़ गिरा सुनि हरषेउ कागा। बोलेउ उमा परम अनुरागा।
धन्य धन्य तव मति उरगारी। प्रस्न तुम्हारि मोहि अति प्यारी।
सुनि तव प्रस्न सप्रेम सुहाई। बहुत जनम कै सुधि मोहि आई।
सब निज कथा कहौं मैं गाई। तात सुनहु सादर मन लाई।
जप तप मख सम दम ब्रत दाना। बिरति बिबेक जोग बिज्ञाना।
सब कर फल रघुपति पद प्रेमा। तेहि बिनु कोउ न पावै छेमा।
ऐहिं तन राम भगति मैं पाई। ता तें मोहि ममता अधिकाई।
जेहि तें कछु निज स्वारथ होई। तेहि पर ममता कर सब कोई॥

१–४, ५; भादउँ ६.

पन्नगारि असि नीति श्रुति संमत सज्जन कहहिं।
अति नीचहु सन प्रीति करिअ जानि निज परम हित ॥[1]
पाट कीट तें होइ तेहि तें पाटंबर रुचिर।
कृमि पालै सबु कोइ परम अपावन प्रान सम ॥ ९५ ॥

स्वारथ साँच[2] जीव कहुँ एहा। मन क्रम बचन राम पद नेहा।
सोइ पावन सोइ सुभग सरीरा। जो तनु पाइ भजै[2] रघुबीरा।
राम बिमुख लहि बिधि सम देही। कबि कोबिद न प्रसंसहि तेही।
राम भगति ऐहि तन उर जामी। ता ते मोहि परम प्रिय स्वामी।
तजौं न तनु निज इच्छा मरना। तनु बिनु बेद भजनु नहिं बरना।
प्रथम मोह मोहि बहुत बिगोवा। राम बिमुख सुख कबहु न सोवा।
नाना जन्म कर्म पुनि नाना। किए जोग जप तप मख दाना।
कवन जोनि जनमेउँ जहँ नाहीं। मैं खगेस भ्रमि भ्रमि जग माहीं।
देखेउँ करि सब करम गोसाईं। सुखी न भएउँ अबहि की नाईं।
सुधि मोहि नाथ जन्म बहु केरी। सिव प्रसाद मति मोह न घेरी ॥

प्रथम जन्म के चरित अब कहौं सुनहु बिहँगेस।
सुनि प्रभु पद रति उपजै जातें मिटहि कलेस ॥
पूरुब कल्प एक प्रभु जुग कलिजुग मल मूल।
नर अरु नारि अधर्म रत सकल निगम प्रतिकूल ॥ ९६ ॥

तेहि कलिजुग कोसलपुर जाई। जन्मत भएउँ सूद्र तनु पाई।
सिव सेवक मन क्रम अरु बानी। आन देव निंदक अभिमानी।
धन मदमत्त परम बाचाला। उग्र बुद्धि उर दंभ बिसाला।
जदपि रहेउँ रघुपति रजधानी। तदपि न कछु महिमा तब जानी।
अब जाना मइँ अवध प्रभावा। निगमागम पुरान अस गावा।
कवनेहुँ जन्म अवध बस जोई। राम परायन सो परि होई।

१–६, सब ४, ५. २–५, भजिय ६; भभत्र ४.

अवध प्रभाव जान तब प्रानी । जब उर बसहिं रामु धनुपानी ।
सो कलिकाल कठिन उरगारी । पाप परायन सब नर नारी ॥
कलिमल ग्रसे धर्म सब लुप्त भए सदग्रंथ ।
दंभिन्ह निज मति कल्पि करि प्रगट किए बहु पंथ ॥
भए लोग सब मोह बस लोभ ग्रसे सुभ कर्म ।
सुनु हरिजान ज्ञान निधि कहौं कछुक कलि धर्म ॥ ९७ ॥
बरन धर्म नहिं आश्रम चारी । श्रुति बिरोध रत सब नर नारी ।
द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन । कोउ नहिं मान निगम अनुसासन ।
मारग सोइ जा कहुँ जोइ भावा । पंडित सोइ जो गाल बजावा ।
मिथ्यारंभ दंभ रत जोई । ता कहुँ संत कहइ सब कोई ।
सोइ सयान जो पर धन हारी । जो कर दंभ सो बड़ आचारी ।
जो कह झूठ मसखरी जाना । कलिजुग सोइ गुनवंत बखाना ।
निराचार जो श्रुति पथ त्यागी । कलिजुग सोइ ज्ञानी बैरागी[1] ।
जाके नख अरु जटा बिसाला । सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला ॥
असुभ बेष भूषन धरे भक्षाभक्ष जे खाहिं ।
तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर पूजित[2] कलिजुग माहिं ॥
जे अपकारी चार तिन्ह कर गौरव मान्य तेइ ।
मन क्रम बचन लबार तेइ बकता कलिकाल महुँ ॥ ९८ ॥
नारि बिबस नर सकल गोसाईं । नाचहिं नट मर्कट की नाईं ।
सूद्र द्विजन्ह उपदेसहिं ज्ञाना । मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना ।
सब नर काम लोभ रत क्रोधी । देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी ।
गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी । भजहिं नारि पर पुरुष अभागी ।
सौभागिनी बिभूषन हीना । बिधवन्ह के सिंगार नबीना ।

१–४, ५ सोइ ज्ञानी सो बिरागी ६ २–४ ५ पूज्य ते ६

गुर सिष बधिर अंध क[1] लेखा। एक न सुनै एक नहि देखा।
हरै सिष्य धन सोक न हरई। सो गुर घोर नरक महुँ परई।
मातु पिता बालकन्हि बोलावहिं। उदर भरै सोइ धर्म सिखावहिं॥
ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर कहहिं[2] न दूसरि बात।
कौड़ी लागि तें लोभ[3] बस करहिं बिप्र गुर घात॥
बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन हम तुम्ह ते कछु घाटि।
जानै ब्रह्म सो बिप्रबर आँखि देखावहिं डाटि॥ ९९॥

पर त्रिय लंपट कपट सयाने। मोह द्रोह ममता लपटाने।
तेइ अभेदबादी ज्ञानी नर। देखा मैं चरित्र कलिजुग कर।
आपु गए अरु तिन्हहूँ घालहिं। जे कहुँ सन्मारग[4] प्रतिपालहिं।
कल्प कल्प भरि एक एक नरका। परहिं जे दूषहिं श्रुति करि तरका।
जे बरनाधम तेलि कुम्हारा। स्वपच किरात कोल कलवारा।
नारि मुई गृह संपति नासी। मूड़ मुड़ाइ होहिं संन्यासी।
ते बिप्रन्ह सन आपु पुजावहिं। उभय लोक निज हाथ नसावहिं।
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी। निराचार सठ[5] बृषली स्वामी।
सूद्र करहिं जप तप ब्रत नाना। बैठि बरासन कहहिं पुराना।
सब नर कल्पित करहिं अचारा। जाइ न बरनि अनीति अपारा॥
भए बरनसंकर कलि भिन्न सेतु मन लोग।
करहिं पाप पावहिं दुख भय रुज सोक बियोग॥
श्रुति संमत हरि भक्ति पथ संजुत बिरति बिबेक।
तेहि न चलहिं नर मोह बस कल्पहिं पंथ अनेक॥१००॥

बहु दाम सवारहिं धाम जती। बिषया हरि लीन्हि रही[6] बिरती।

१–४, ५, का ६.
२–६, कहहि ४, ५
३–४, ५, लागि लोम ६.
४–४, ५, सत मारग ६
५–६; सो ४, ५.
६–६, न रही ४, ५.

तपसी धनवंत दरिद्र गृही। कलि कौतुक तात न जात कही।
कुलवंति निकारहिं नारि सती। गृह आनहिं चेरि निबेरि गती।
सुत मानहिं मातु पिता तब लौं। अबलानन दीख नहीं जब लौं।
ससुरारि पिआरि लगी जब तें। रिपु रूप कुटुंब भए तब तें।
नृप पाप परायन धर्म नहीं। करि दंड बिडंब प्रजा नितहीं।
धनवंत कुलीन मलीन अपी। द्विजचीन्ह जनेउ उघार तपी।
नहि मान पुरान न बेदहिं जो। हरि सेवक संत सही कलि सो।
कबिबृंद उदार दुनी न सुनी। गुन दूषक ब्रात न कोपि गुनी।
कलि बारहिं बार दुकाल परे। बिनु अंन दुखी सब लोगु मरे॥

सुनु खगेस कलि कपट हठ दंभ द्वेष पाखंड।
मान मोह मारादि[१] मद ब्यापि रहे ब्रह्मंड॥
तामस धर्म करहिं नर जप तप ब्रत मख दान।
देव न बरषैं धरनि पर[२] बए न जामहिं धान॥१०१॥

अबला कच भूषन भूरि छुधा। धन हीन दुखी ममता बहुधा।
सुख चाहहिं मूढ़ न धर्मरता। मति थोरि कठोरि न कोमलता।
नर पीड़ित रोग न भोग कहीं। अभिमान बिरोध अकारनहीं।
लघु जीवन संबत पंचदसा। कलपांत न नास गुमानु असा।
कलिकाल बिहाल किए मनुजा। नहिं मानत क्वौ अनुजा तनुजा।
नहिं तोष बिचार न सीतलता। सब जाति कुजाति भये मँगता।
इरिषा परुषाच्छर लोलुपता। भरि पूरि रही समता बिगता।
सब लोग बियोग बिसोक हए। बरनाश्रम धर्म अचार गए।
दम दान दया नहिं जानपनी। जड़ता परबंचनताऽतिघनी।
तनुपोषक नारि नरा सगरे। परनिंदक जे जग मों बगरे।

१-६; मायादि ४, ५.   २-४, ५; धरनी ६.

सुनु ब्यालारि काल कलि मल अवगुन आगार।
गुनौ बहुत कलियुग कर बिनु प्रयास निस्तार ॥
कृतयुग त्रेता द्वापरहुँ[1] पूजा मख अरु जोग।
जो गति होइ सो कलि हरिनाम ते' पावहिं लोग ॥१०२॥

कृतजुग सब जोगी बिज्ञानी। करि हरिध्यान तरहि भव प्रानी।
त्रेता बिबिध जग्य नर करहीं। प्रभुहि समपि कर्म भव तरहीं।
द्वापर करि रघुपति पद पूजा। नर भव तरहि उपाव न दूजा।
कलिजुग केवल हरि गुन गाहा। गावत नर पावहि भव थाहा।
कलिजुग जोग न जग्य न ज्ञाना। एक अधार राम गुन गाना।
सब भरोस तजि जो भज रामहिं। पेम समेत गाव गुन ग्रामहि।
सोइ भव तर, कछु संसय नाहीं। नामप्रताप प्रगट कलि माहीं।
कलि कर एक पुनीत प्रतापा। मानस पुन्य होहिं नहिं पापा ॥

कलिजुग सम जुग आन नहि जौं नर कर बिस्वास।
गाइ राम गुन गन बिमल भव तर बिनहि प्रयास ॥
प्रगट चारि पद धर्म के कलि महुँ एक प्रधान।
जेन केन बिधि दीन्हे दान करे कल्यान ॥१०३॥

नित[2] जुग धर्म होहि सब केरे। हृदय राम माया के प्रेरे।
सुद्ध सत्व समता बिज्ञाना। कृत प्रभाव प्रसंन मन जाना।
सत्व बहुत रज कछु रति कर्मा। सब बिधि सुख त्रेता कर धर्मा।
बहु रज स्वल्प सत्व कछु तामस। द्वापर धर्म हरप भय मानस।
तामस बहुत रजोगुन थोरा। कलि प्रभाव बिरोध चहुँ ओरा।
बुध जुगधर्म जानि मन माहीं। तजि अधर्म रति धर्म कराहीं।
कालधर्म नहि ब्यापहिं ताही। रघुपति चरन प्रीति अति जाही।
नट कृत बिकट कपट खगराया। नटसेवकहि न ब्यापै माया।

१–४, ५, द्वापर ६. २–४, ५; कृत ६.

हरि माया कृत दोष गुन बिनु हरि भजन न जाहिं।
भजिअ राम तजि काम सब अस बिचारि मन माहिं॥
तेहि कलि काल बरष बहु बसेउँ अवध बिहगेस।
परेउ दुकाल बिपतिबस तब मैं गएउँ बिदेस॥१०४॥

गएउँ उजेनी सुनु उरगारी। दीन मलीन दरिद्र दुखारी।
गएँ काल कछु संपति पाई। तहँ पुनि करौं संभु सेवकाई।
बिप्र एक बैदिक सिव पूजा। करै सदा तेहि काजु न दूजा।
परम साधु परमारथ बिंदक। संभु उपासक नहि हरि निंदक।
तेहि सेवौं मैं कपट समेता। द्विज दयाल अति नीति निकेता।
बाहिज नम्र देखि मोहि साईं। बिप्र पढ़ाव पुत्र की नाईं।
संभु मंत्र मोहि द्विजबर दीन्हा। सुभ उपदेस बिबिध बिधि कीन्हा।
जपौं मंत्र सिव मंदिर जाई। हृदय दंभ अहमिति अधिकाई॥

मैं खल मल संकुल मति नीच जाति बस मोहँ।
हरिजन द्विज देखे जरौं करौं बिस्नु कर द्रोह॥
गुरं नित मोहि प्रबोध दुखित देखि आचरन मम।
मोहि उपजै अतिक्रोध दंभिहि नीति कि भावई॥१०५॥

एक बार गुर लीन्ह बोलाई। मोहि नीति बहु भाति सिखाई।
सिव सेवा कर फल सुत सोई। अबिरल भगति राम पद होई।
रामहि भजहिं तात सिव धाता। नर पावर कै केतिक बाता।
जासु चरन अज सिव अनुरागी। तासु द्रोह सुख चहसि अभागी।
हर कहुँ हरिसेवक गुर कहेऊ। सुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ।
अधम जाति मैं बिद्या पाएँ। भएउँ जथा अहि दूध पिआएँ।
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती। गुर कर द्रोह करौं दिनु राती।
अतिदयाल गुर स्वल्प न क्रोधा। पुनि पुनि मोहि सिखाव सुबोधा।
जेहि ते नीच बड़ाई पावा। सो प्रथमहि हठि ताहि नसावा।

धूम अनल संभव सुनु भाई। तेहि बुझाव घन पदवी पाई।
रज मग परी निरादर रहई। सब कर पद प्रहार नित सहई।
मरुत उड़ाव प्रथम तेहि भरई। पुनि नृप नयन किरीटन्हि परई।
सुनु खगपति अस समुझि प्रसंगा। बुध नहि करहिं अधम कर संगा।
कबि कोबिद गावहिं असि नीती। खल सन कलह न भल नहि प्रीती।
उदासीन नित रहिअ गोसाईं। खल परिहरिअ स्वान की नाईं।
मैं खल हृदय कपट कुटिलाई। गुर हित कहै न मोहि सोहाई॥

एक बार हर मंदिर जपत रहेउँ सिव नाम।
गुर आयेउ अभिमान तें उठि नहि कीन्ह प्रनाम॥
सो दयाल नहि कहेउ कछु उर न रोष लव लेस।
अतिअघ गुरु अपमानता सहि नहि सके महेस॥१०६॥

मंदिर माझ भई नभबानी। रे हतभाग्य अग्य अभिमानी।
जद्यपि तव गुर के नहि क्रोधा। अतिकृपाल चित सम्यक बोधा।
तदपि श्राप सठ दैहौं तोही। नीति बिरोध सोहाइ न मोही।
जौं नहि दंड करौं खल तोरा। भ्रष्ट होइ श्रुति मारग मोरा।
जे सठ गुर सन इरिषा करहीं। रौरव नरक कोटि जुग परहीं।
त्रिजग जोनि पुनि धरहि सरीरा। अयुत जन्म भरि पावहिं पीरा।
बैठि रहेसि अजगर इव पापी। सर्प होहि खल मल मति ब्यापी।
महा बिटप कोटर महु जाई। रहु अधमाधम अधगति पाई॥

हाहाकार कीन्ह गुर दारुन सुनि सिव श्राप।
कंपित मोहि बिलोकि अति उर उपजा परिताप।
करि दंडवत सप्रेम द्विज सिव सन्मुख कर जोरि।
बिनय करत गदगद स्वर समुझि घोर गति मोरि॥१०७॥

नमामीशमीशाननिर्वानरूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजेहं।

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं । गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशं ।
करालं महाकालकालं कृपालं । गुनागार संसारपारं नतोहं ।
तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभीरं । मनोभूतकोटिप्रभाश्री शरीरं ।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगंगा । लसद्भालबालेंदु कंठे भुजंगा ।
चलत्कुंडलं भ्रूसुनेत्रं विशालं । प्रसंनाननं नीलकंठं दयालं ।
मृगाधीशचर्मांबरं रुंडमालं । प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ।
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं । अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ।
त्रयःशूल निर्मूलनं शूलपानिं । भजेहं भवानीपतिं भावगम्यं ।
कलातीतकल्यानकल्पांतकारी । सदा सज्जनानंददाता पुरारी ।
चिदानंदसंदोहमोहापहारी । प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ।
न जावदुमानाथपादारविंदं । भजंतीह लोके परे वा नरानां ।
न तावत्सुखं शांति संतापनाशं । प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ।
न जानामि जोगं जपं नैव पूजां । नतोहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ।
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं । प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठंति नरा भक्त्या तेषां शंभु प्रसीदति ॥

सुनि बिनती सर्बग्य सिव देखि बिप्र अनुरागु ।
पुनि मंदिर नभ बानी भइ द्विजबर बर मागु ॥
जौं प्रसन्न प्रभु मोपर नाथ दीन पर नेहु ।
निज पद भगति देइ प्रभु पुनि दूसर बर देहु ॥
तव माया बस जीव जड़ संतत फिरै भुलान ।
तेहि पर क्रोध न करिअ प्रभु कृपासिंधु भगवान ॥
शंकर दीन दयाल अब येहि पर होहु कृपाल ।
श्राप अनुग्रह होइ जेहि नाथ थोरेही काल ॥१०८॥

१–४, ५; त्रिधा ६.

ओहि कर होइ परम कल्याना। सोइ करहु अब कृपानिधाना।
विप्र गिरा सुनि परहित सानी। एवमस्तु इति भै नम बानी।
जदपि कीन्ह ओहि दारुन पापा। मैं पुनि दीन्हि क्रोध करि श्रापा।
तदपि तुम्हारि साधुता देखी। करिहौं ओहि पर कृपा विसेखी।
छमासील जे पर उपकारी। ते द्विज मोहि प्रिय जथा खरारी।
मोर श्राप द्विज व्यर्थ न जाइहि। जनम सहस अवस्य[१] यह पाइहि।
जन्मत मरत दुसह दुख होई। ओहि स्वल्पौ नहि ब्यापिहि सोई।
कवनेउ जन्म मिटिहि नहि ज्ञाना। सुनहि सुद्र मम वचन प्रवाना।
रघुपति पुरी जन्म तव भयेऊ। पुनि तैं मम सेवा मन दयेऊ।
पुरी प्रभाउ अनुग्रह मोरे। राम भगति उपजिहि उर तोरे।
सुनु मम वचन सत्य अब भाई। हरि तोषन व्रत द्विज सेवकाई।
अब जनि करहि विप्र अपमाना। जानेसु संत अनंत समाना।
इंद्रकुलिस मम सूल विसाला। कालदंड हरिचक्र कराला।
जो इन्ह कर मारा नहि मरई। विप्र द्रोह पावक सो जरई।
अस विवेक राखेहु मन माही। तुम्ह कह जग दुर्लभ कछु नाही।
औरो एक आसिषा मोरी। अप्रतिहति गति होइहि तोरी॥

सुनि सिव वचन हरषि गुर एवमस्तु इति भाखि।
मोहि प्रबोधि गओउ गृह संभु चरन उर राखि॥
प्रेरित काल विंधिगिरि जाइ भओउँ मैं व्याल।
पुनि प्रयास विनु सो तनु तजेउँ गए कछु काल॥
जोइ तनु धरौं तजौं पुनि अनायास हरिजान।
जिमि नूतन पट पहिरै नर परिहरै पुरान॥
सिव राखी श्रुति नीति अरु मैं नहि पाव क्लेस।
ओहि विधि धरेउँ विविधि तनु ज्ञान न गओउ खगेस॥१०९॥

१–४, ५; सहस्र अवसि ६.

त्रिजग देव नर जोइ तनु धरऊँ । तहँ तहँ राम भजन अनुसरऊँ ।
एक सूल मोहि बिसर न काऊ । गुर कर कोमल सील सुभाऊ ।
चर्म देह द्विज कै मैं पाई । सुर दुर्लभ पुरान श्रुति गाई ।
खेलौं तहूँ बालकन्ह मीला । करौं सकल रघुनायक लीला ।
प्रौढ़ भए मोहि पिता पढ़ावा । समुझौं सुनौं गुनौं नहि भावा ।
मन ते सकल बासना भागी । केवल राम चरन लय लागी ।
कहु खगेस अस कवन अभागी । खरी सेव सुरधेनुहि त्यागी ।
प्रेम मगन मोहि कछु न सोहाई । हारेउ पिता पढ़ाइ पढ़ाई ।
भए काल बस जब पितु माता । मैं बन गएउँ भजन जनत्राता ।
जहँ जहँ बिपिनि मुनिस्वर पावौं । आश्रम जाइ जाइ सिरु नावौं ।
बूझौं तिन्हहि राम गुन गाहा । कहहिं सुनौं हरषित खगनाहा ।
सुनत फिरौं हरि गुन अनुबादा । अब्याहत गति संभु प्रसादा ।
छूटी त्रिबिधि ईषना गाढ़ी । एक लालसा उर अति बाढ़ी ।
राम चरन बारिज जब देखौं । तब निज जन्म सफल करि लेखौं ।
जेहि पूँछौं सोइ मुनि अस कहई । ईस्वर सर्ब भूत मय अहई ।
निर्गुन मत नहि मोहि सुहाई । सगुन ब्रह्म रति उर अधिकाई ।।

गुर के बचन सुरति करि राम चरन मनु लाग ।
रघुपति जस गावत फिरौं छन छन नव अनुराग ।।
मेरु सिखर बट छाया मुनि लोमस आसीन ।
देखि चरन सिरु नाएउ बचन कहेउँ अतिदीन ।।
सुनि मम बचन बिनीत मृदु मुनि कृपाल खगराज ।
मोहि सादर पूछत भए द्विज आयहु केहि काज ।।
तब मैं कहा कृपानिधि तुम्ह सर्बग्य सुजान ।
सगुन ब्रह्म अवराधन मोहि कहहु भगवान ।।११०।।

तब मुनीस रघुपति गुन गाथा । कहे कछुक सादर खगनाथा ।

ब्रह्मज्ञान रत मुनि विज्ञानी। मोहि परम अधिकारी जानी॥
लागे करन ब्रह्म उपदेसा। अज अद्वैत अगुन हृदयेसा॥
अकल अनीह अनाम अरूपा। अनुभवगम्य अखंड अनूपा॥
मन गोतीत अमल अबिनासी। निर्बिकार निरवधि सुखरासी॥
सो तैं ताहि तोहि नहि भेदा। बारि बीचि इव गावहिं बेदा॥
बिबिधि भाति मोहि मुनि समुझावा। निर्गुन मत मम हृदयँ न आवा॥
पुनि मैं कहेउँ नाइ पद सीसा। सगुन उपासन कहहु मुनीसा॥
राम भगति जल मम मन मीना। किमि बिलगाइ मुनीस प्रबीना॥
सोइ उपदेस कहहु करि दाया। निज नयनन्हि देखौं रघुराया॥
भरि लोचन बिलोकि अवधेसा। तब सुनिहौं निर्गुन उपदेसा॥
मुनि पुनि कहि हरिकथा अनूपा। खंडि सगुन मत अगुन निरूपा॥
तब मैं निर्गुन मत करि दूरी। सगुन निरूपौं करि हठ भूरी॥
उत्तर प्रतिउत्तर मैं कीन्हा। मुनि तन भए क्रोध के चीन्हा॥
सुनु प्रभु बहुत अवज्ञा किए। उपज क्रोध ज्ञानिन्ह[१] के हिये॥
अतिसंघरषन जौं कर कोई। अनल प्रगट चंदन ते होई॥

बारंबार सकोप मुनि करै निरूपन ज्ञान।
मैं अपनें मन बैठ तब करौं बिबिधि अनुमान॥
क्रोध कि द्वैत बुद्धि बिनु द्वैत कि बिनु अज्ञान।
माया बस परिछिन्न जड़ जीव कि ईस समान॥१११॥

कबहु कि दुख सब कर हित ताके। तेहि कि दरिद्र परसमनि जाके॥
परद्रोही की होहिं निसंका। कामी पुनि कि रहहिं अकलंका॥
बंस कि रह द्विज अनहित कीन्हे। कर्म कि होहिं स्वरूपहिं चीन्हे॥
काहू सुमति कि खल सँग जामी। सुभ गति पाव कि पर त्रिय गामी॥
भव कि परहिं परमात्मा बिंदक। सुखी कि होहिं कबहु हरि निंदक॥

१–४, ५; ज्ञानिहु:६.
३५॥

राजु कि रहै नीति बिनु जानें । अघ कि रहहिं हरि चरित बखानें ॥
पावन जस कि पुन्य बिनु होई । बिनु अघ अजस कि पावै कोई ॥
लाभु कि कछु हरि भगति समाना । जेहि गावहिं श्रुति संत पुराना ॥
हानि कि जग ओहि सम कछु भाई । भजिय न रामहि नर तनु पाई ॥
अघ कि पिसुनता सम कछु आना । धर्म कि दया सरिस हरिजाना ॥
ओहि बिधि अमिति जुगति मन गुनऊँ । मुनि उपदेस न सादर सुनेऊँ ॥
पुनि पुनि सगुन पच्छ मैं रोपा । तब मुनि बोलेउ बचन सकोपा ॥
मूढ़ परम सिख देउँ न मानसि । उत्तर प्रतिउत्तर बहु आनसि ॥
सत्य बचन बिस्वास न करही । बायस इव सबही तें डरही ॥
सठ स्वपक्ष तव हृदयँ बिसाला । सपदि होहि पच्छी चंडाला ॥
लीन्ह स्राप मैं सीस चढ़ाई । नहि कछु भय न दीनता आई ॥

तुरत भओउँ मैं काग तब पुनि मुनि पद सिरु नाइ ।
सुमिरि राम रघुबंस मनि हरषित चलेउँ उड़ाइ ॥
उमा जे राम चरन रत बिगत काम मद क्रोध ।
निज प्रभुमय देखहिं जगत केहि सन करहिं बिरोध ॥११२॥

सुनु खगेस नहि कछु रिषि दूषन । उर प्रेरक रघुबंस बिभूषन ।
कृपासिंधु मुनि मति करि भोरी । लीन्ही प्रेम परिच्छा मोरी ।
मन बच क्रम मोहि निज जन जाना । मुनि मति पुनि फेरी भगवाना ।
रिषि मम सहनसीलता देखी । राम चरन बिस्वास बिसेखी ।
अतिबिसमय पुनि पुनि पछ्तोई । सादर मुनि मोहि लीन्ह बोलाई ।
मम परितोष बिबिधि बिधि कीन्हा । हरषित राममंत्र तब दीन्हा ।
बालकरूप राम कर ध्याना । कहेउ मोहि मुनि कृपानिधाना ।
सुंदर सुखद मोहि अति भावा । सो प्रथमहि मैं तुम्हहि सुनावा ।
मुनि मोहि कछुक काल तहँ राखा । रामचरितमानस तब भाखा ।

१-६; बिनु तामस ४, ५. २-४, ५; महत ६.

सादर मोहि यह कथा सुनाई । पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई ।
रामचरित सर गुप्त सुहावा । संभु प्रसाद तात मैं पावा ।
तोहि निज भगत राम कर जानी । ता ते मैं सब कहेउँ बखानी ।
राम भगति जिन्ह के उर नाहीं । कबहुँ न तात कहिय तिन्ह पाहीं ।
मुनि मोहि बिबिधि भाँति समुझावा । मइँ सप्रेम मुनि पद सिरु नावा ।
निज कर कमल परसि मम सीसा । हरषित आसिष दीन्हि मुनीसा ।
राम भगति अबिरल उर तोरे । बसिहि सदा प्रसाद अब मोरे ॥

सदा राम प्रिय होब[1] तुम्ह सुभ गुन भवन अमान ।
कामरूप इच्छामरन ज्ञान बिराग निधान ॥
जेहि आश्रम तुम्ह बसब पुनि सुमिरत श्री भगवंत ।
ब्यापिहि तहँ न अबिद्या जोजन एक प्रजंत ॥११३॥

काल कर्म गुन दोष सुभाऊ । कछु दुख तुम्हहि न ब्यापिहि काऊ ।
रामरहस्य ललित बिधि नाना । गुप्त प्रगट इतिहास पुराना ।
बिनु श्रम तुम्ह जानब सब सोऊ । नित नव नेह राम पद होऊ ।
जो इच्छा करिहहु मन माहीं । हरि प्रसाद कछु दुरलभ नाहीं ।
सुनि मुनि आसिष सुनु मति धीरा । ब्रह्मगिरा भइ गगन गभीरा ।
एवमस्तु तव बच[2] मुनि ज्ञानी । यह मम भगत कर्म मन बानी ।
सुनि नभ गिरा हरष मोहि भअेऊ । प्रेम मगन सब संसय गअेऊ ।
करि बिनती मुनि आयसु पाई । पद सरोज पुनि पुनि सिरु नाई ।
रूप सहित अेहि आश्रम आअेउँ । प्रभु प्रसाद दुर्लभ बर पाअेउँ ।
ाँ बसत मोहि सुनु खगईसा । बीते कल्प सात अरु बीसा ।
रौं सदा रघुपति गुन गाना । सादर सुनहि बिहंग सुजाना ।
तब जब अवधपुरी रघुबीरा । धरहिं भगत हित मनुज सरीरा ।
ब तब जाइ रामपुर रहऊँ । सिसु लीला बिलोकि सुख लहऊँ ।

---

[1] १–४, ५; होहु ६.

[2] २–६; बचन ४, ५.

पुनि उर राखि राम सिसुरूपा। निज आश्रम आवौं खगभूपा।
कथा सकल मैं तुम्हहिं सुनाई। काग देह जेहि कारन पाई।
कहेउँ तात सब प्रस्न तुम्हारी। राम भगति महिमा अति भारी॥
तातें येह तनु मोहि प्रिय भएेउ राम पद नेह।
निज प्रभु दरसन पाएेउँ गए सकल संदेह॥
भगति पच्छ हठ करि रहेउँ दीन्ह महारिषि श्राप।
मुनि दुर्लभ बर पाएेउँ देखहु भजन प्रताप॥११४॥

जे असि भगति जानि परिहरहीं। केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं।
ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी। खोजत आकु फिरहिं पय लागी।
सुनु खगेस हरि भगति बिहाई। जे सुख चाहहिं आन उपाई।
ते सठ महासिंधु बिनु तरनी। पैरि पार चाहहिं जड़ करनी।
सुनि भसुंडि के बचन भवानी। बोलेउ गरुड़ हरषि मृदु बानी।
तव प्रसाद प्रभु मम उर माहीं। संसय सोक मोह भ्रम नाहीं।
सुनेउँ पुनीत राम गुन ग्रामा। तुम्हरी कृपा लहेउँ बिश्रामा।
एक बात प्रभु पूछौं तोही। कहहु बुझाइ कृपानिधि मोही।
कहहिं संत मुनि बेद पुराना। नहि कछु दुर्लभ ज्ञान समाना।
सोइ मुनि तुम्ह सन कहेउ गुसाईं। नहि आदरेहु भगति की नाईं।
ज्ञानहि भगतिहि अंतरु केता। सकल कहहु प्रभु कृपानिकेता।
सुनि उरगारि बचन सुख माना। सादर बोलेउ काग सुजाना।
भगतिहि ज्ञानहि नहि कछु भेदा। उभै हरहिं भव संभव खेदा।
नाथ मुनीस कहहिं कछु अंतर। सावधान सोउ सुनु बिहंगबर।
ज्ञान बिराग जोग बिज्ञाना। ए सब पुरुष सुनहु हरिजाना।
पुरुष प्रताप प्रबल सब भाँती। अबला अबल सहज जड़ जाती॥

१-४, ५; तातें ६.

पुरुष त्यागि सक नारिहि जो बिरक्त मति धीर।
न तु कामी बिषयाबस बिमुखु जो पद रघुबीर॥
सोउ मुनि ज्ञान निधान मृगनयनी बिधु मुख निरखि।
बिबस होइ हरिजान नारि बिस्व माया प्रगट॥११५॥

इहाँ न पक्षपात कछु राखौं। बेद पुरान संत मत भाखौं।
मोह न नारि नारि के रूपा। पन्नगारि यह रीति अनूपा।
माया भगति सुनहु तुम्ह दोऊ। नारि बर्ग जानै सब कोऊ।
पुनि रघुबीरहि भगति पियारी। माया खलु नर्त्तकी बिचारी।
भगतिहि सानकूल रघुराया। ता ते तेहि डरपति अति माया।
राम भगति निरुपम निरुपाधी। बसै जासु उर सदा अबाधी।
तेहि बिलोकि माया सकुचाई। करि न सकै कछु निज प्रभुताई।
अस बिचारि जे मुनि बिज्ञानी। जाचहिं भगति सकल सुख खानी॥

यह रहस्य रघुनाथ कर बेगि न जानै कोइ।
जो जानै रघुपति कृपा सपनेहु मोह न होइ॥
औरौ ज्ञान भगति कर भेद सुनहु सुप्रबीन।
जो सुनि होइ राम पद प्रीति सदा अबिछीन॥११६॥

सुनहु तात यह अकथ कहानी। समुझत बनै न जाइ बखानी।
ईश्वर अंस जीव अबिनासी। चेतन अमल सहज सुख रासी।
सो माया बस भयेउ गुसाईं। बध्यो कीर मर्कट की नाईं।
जड़ चेतनहि ग्रंथि परि गई। जदपि मृषा छूटत कठिनई।
तब ते जीव भयेउ संसारी। छूट न ग्रंथि न होइ सुखारी।
श्रुति पुराने बहु कहेउ उपाई। छूट न अधिक अधिक अरुझाई।
जीव हृदय तम मोह बिसेखी। ग्रंथि छूटि किमि परै न देखी।
अस संयोग ईस जब करई। तबहु कदाचित सो निरुअरई।
सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई। जौ हरि कृपा हृदय बस आई।

जप तप व्रत जम नियम अपारा। जे श्रुति कह सुभ धर्म अचारा।
तेइ तृन हरित चरै जब गाई। भाव बच्छ सिसु पाइ पेन्हाई।
नोइ निबृत्ति पात्र बिस्वासा। निर्मल मन अहीर निज दासा।
परम धर्ममय पय दुहि भाई। अवटै अनल अकाम बनाई।
तोष मरुत तब छमा जुड़ावै। धृति सम जावनु देइ जमावै।
मुदिता मथै बिचार मथानी। दम अधार रजु सत्य सुबानी।
तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता। बिमल बिराग सुभग सुपुनीता॥

जोग अगिनि करि प्रगट तब कर्म सुभासुभ लाइ।
बुद्धि सिरावै ज्ञान घृत ममता मल जरि जाइ।
तब बिज्ञानरूपिनी बुद्धि बिसद घृत पाइ।
चित्त दिआ भरि धरै दृढ़ समता दिअटि बनाइ।
तीनि अवस्था तीनि गुन तेहि कपास ते काढ़ि।
तूल तुरीय सवारि पुनि बाती करै सुगाढ़ि।
अेहि बिधि लेसै दीप तेज रासि बिज्ञानमय।
जातहि तासु समीप जरहि मदादिक सलभ सब॥११७॥

सोहमस्मि इति बृत्ति अखंडा। दीप सिखा सोइ परम प्रचंडा।
आतम अनुभव सुख सुप्रकासा। तब भव मूल भेद भ्रम नासा।
प्रबल अबिद्या कर परिवारा। मोह आदि तम मिटै अपारा।
तब सोइ बुद्धि पाइ उजिआरा। उर गृह बैठि ग्रंथि निरुआरा।
छोरन ग्रंथि पाव जौ सोई। तौ यह जीव कृतारथ होई।
छोरत ग्रंथि जानि खगराया। बिघ्न अनेक करै तब माया।
रिद्धि सिद्धि प्रेरै बहु भाई। बुद्धिहि लोभ देखावहिं आई।
कल बल छल करि जाहिं समीपा। अंचल बात बुझावहिं दीपा।
होइ बुद्धि जौ परम सयानी। तिन्ह तन चितव न अनहित जानी।

जो तेहि बिघन बुद्धि नहिं बाधी । तो बहोरि सुर करहिं उपाधी ।
इंद्री द्वार झरोखा नाना । तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना ।
आवत देखहिं बिषय बयारी । ते हठि देहिं कपाट उघारी ।
जब सो प्रभंजन उर गृह जाई । तबहि दीप बिज्ञान बुझाई ।
ग्रंथि न छूटि मिटा सो प्रकासा । बुद्धि बिकल भइ बिषय बतासा ।
इंद्रिन्ह सुरन्ह न ज्ञान सोहाई । बिषय भोग पर प्रीति सदाई ।
बिषय समीर बुद्धि कृत भोरी । तेहि बिधि दीप को बार बहोरी ॥

तब फिरि जीव बिबिधि बिधि पावै संसृति क्लेस ।
हरिमाया अतिदुस्तर तरि न जाइ बिहगेस ॥
कहत कठिन समुझत कठिन साधत कठिन बिबेक ।
होइ घुनाक्षर न्याय जो पुनि प्रत्यूह अनेक ॥११८॥

ज्ञानपंथ कृपान कै धारा । परत खगेस होइ नहिं बारा ।
जो निर्बिघ्न पंथ निर्बहई । सो कैवल्य परमपद लहई ।
अतिदुर्लभ कैवल्य परमपद । संत पुरान निगम आगम बद ।
राम भजत सोइ मुकुति गुसाईं । अनइच्छित आवै बरिआईं ।
जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई । कोटि भाँति कोउ करै उपाई ।
तथा मोक्ष सुख सुनु खगराई । रहि न सकै हरि भगति बिहाई ।
अस बिचारि हरि भगत सयाने । मुक्ति निरादर भगति लुभाने ।
भगति करत बिनु जतन प्रयासा । संसृति मूल अबिद्या नासा ।
भोजन करिअ तृपिति हित लागी । जिमि सो असन पचवै जठरागी ।
असि हरि भगति सुगम सुखदाई । को अस मूढ़ न जाहि सोहाई ॥

सेवक सेव्य भाव बिनु भव न तरिय उरगारि ।
भजहु राम पद पंकज अस सिद्धांत बिचारि ॥

१-४, ५, साधन ६ ३-४, ५, पचवै ६
२-४, ५, गमन ६

जो चेतन कह जड़ करै जड़हि करै चैतन्य।
अस समर्थ रघुनायकहि भजहिं जीव ते धन्य ॥११९॥

कहेउँ ज्ञान सिद्धांत बुझाई। सुनहु भगति मनि कै प्रभुताई।
राम भगति चिंतामनि सुंदर। बसै गरुड़ जाके उर अंतर।
परम प्रकास रूप दिन राती। नहि कछु चहिअ दिआ घृत बाती।
मोह दरिद्र निकट नहि आवा। लोभ बात नहि ताहि बुझावा।
प्रबल अविद्या तम मिटि जाई। हारहिं सकल सलभ समुदाई।
खल कामादि निकट नहि जाहीं। बसै भगति जाके उर माहीं।
गरल सुधा सम अरि हित होई। तेहि मनि बिनु सुख पाव न कोई।
ब्यापहिं मानस रोग न भारी। जिन्हके बस सब जीव दुखारी।
राम भगति मनि उर बस जाके। दुख लवलेस न सपनेहु ताके।
चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं। जे मनि लागि सुजतन कराहीं।
सो मनि जदपि प्रगट जग अहई। राम कृपा बिनु नहि कोउ लहई।
सुगम उपाय पाइबे केरे। नर हतभाग्य देहिं भटभेरे।
पावन पर्बत बेद पुराना। राम कथा रुचिराकर नाना।
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी। ज्ञान बिराग नयन उरगारी।
भाव सहित खोजै जो प्रानी। पाव भगति मनि सब सुखखानी।
मोरे मन प्रभु अस बिस्वासा। राम ते अधिक राम कर दासा।
राम सिंधु घन सज्जन धीरा। चंदन तरु हरि संत समीरा।
सब कर फल हरि भगति सुहाई। सो बिनु संत न काहूँ पाई।
अस बिचारि जोइ कर सतसंगा। राम भगति तेहि सुलभ बिहंगा ॥

ब्रह्म पयोनिधि मंदर ज्ञान संत सुर आहि।
कथा सुधा मथि काढ़हिं भगति मधुरता जाहि ॥
बिरति चर्म असि ज्ञान मद लोभ मोह रिपु मारि।
जय पाइअ सो हरि भगति देखु खगेस बिचारि ॥१२०॥

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ। जौ कृपाल मोहि ऊपर भाऊ।
नाथ मोहि निज सेवक जानी। सप्त प्रस्न मम कहहु बखानी।
प्रथमहि कहहु नाथ मतिधीरा। सब ते दुर्लभ कवन सरीरा।
बड़ दुख कवन कवन सुख भारी। सोउ संछेपहि कहहु बिचारी।
संत असंत मरम तुम्ह जानहु। तिन्ह कर सहज सुभाउ बखानहु।
कवन पुन्य श्रुति बिदित बिसाला। कहहु कवन अघ परम कराला।
मानस रोग कहहु समुझाई। तुम्ह सर्बज्ञ कृपा अधिकाई।
तात सुनहु सादर अति प्रीती। मैं संछेप कहौं यह नीती।
नर तन सम नहि कवनिउ देही। जीव चराचर जाचत जेही।
नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी। ज्ञान बिराग भगति सुभ[1] देनी।
सो तनु धरि हरि भजहिं न जे नर। होहिं बिषयरत मंद मंदतर।
काँचु किरिच बदले ते[2] लेहीं। कर ते डारि परसमनि देहीं।
नहि दरिद्र सम दुख जग माहीं। संत मिलन सम सुख जग नाहीं।
पर उपकार बचन मन काया। संत सहज सुभाउ खगराया।
संत सहहिं दुख परहित लागी। पर दुख हेतु असंत अभागी।
भूर्ज तरू सम संत कृपाला। परहित निति[3] सह बिपति बिसाला।
सन इव खल पर बंधन करई[4]। खाल कढ़ाइ बिपति सहि मरई।
खल बिनु स्वारथ पर अपकारी। अहि मूषक इव सुनु उरगारी।
पर संपदा बिनासि नसाहीं। जिमि ससि हति हिम उपल बिलाहीं।
दुष्ट उदय जग आरथ[5] हेतू। जथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू।
संत उदय संतत सुखकारी। बिस्व सुखद जिमि इंदु तमारी।
परम धरम श्रुति बिदित अहिंसा। पर निंदा सम अघ न गिरीसा।

१–४, ५; सुख ६.
२–६, जे ४, ५
३–४, ५, नित ६.
४–६; सहई ४, ५
५–४, ५, आरति ६

हरि गुर निंदक दादुर होई। जनम सहस्र पाव तन सोई।
द्विज निंदक बहु नरक भोग करि। जग जन्मै बायस सरीर धरि।
सुर श्रुति निंदक जे अभिमानी। रौरव नरक परहिं ते प्रानी।
होहिं उलूक संत निंदा रत। मोह निसा प्रिय ज्ञान भानु गत।
सब कै निंदा जे जड़ करहीं। ते चमगादुर होइ अवतरहीं।
सुनहु तात अब मानस रोगा। जिन्ह ते दुख पावहिं सब लोगा।
मोह सकल ब्याधिन्ह कर मूला। तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला।
काम बात कफ लोभ अपारा। क्रोध पित्त नित छाती जारा।
प्रीति करहिं जौं तीनिउ भाई। उपजै सन्यपात दुखदाई।
बिषय मनोरथ दुर्गम नाना। ते सब सूल नाम को जाना।
ममता दादु कंडु इरषाई। हरष बिषाद गरह बहुताई।
पर सुख देखि जरनि सोइ छई। कुष्ट दुष्टता मन कुटिलई।
अहंकार अति दुखद डमरुआ। दंभ कपट मद मान नेहरुआ।
तृष्णा उदरबृद्धि अति भारी। त्रिबिधि ईषना तरुन तिजारी।
जुग बिधि ज्वर मत्सर अबिबेका। कहँ लगि कहौं कुरोग अनेका॥

एक ब्याधि बस नर मरहिं ए असाधि बहु ब्याधि।
पीड़हिं संतत जीव कहु सो किमि लहइ समाधि॥
नेम धर्म आचार तप ज्ञान जज्ञ जप दान।
भेषज पुनि कोटिन्ह नहि रोग जाहिं हरि जान॥१२१॥

ऐहि बिधि सकल जीव जग रोगी। सोक हरष भय प्रीति बियोगी।
मानस रोग कछुक मैं गाए। हहिं सब के लखि बिरलेन्हि पाए।
जाने ते छीजहिं कछु पापी। नास न पावहिं जन परितापी।
बिषय कुपथ्य पाइ अंकुरे। मुनिहु हृदय का नर बापुरे।
राम कृपा नासहिं सब रोगा। जौं एहि भाँति बनै संजोगा।
सदगुर बैद बचन बिस्वासा। संजम यह न बिषय कै आसा।

रघुपति भगति सजीवनि मूरी । अनूपान श्रद्धा मति रूरी ।
अेहि बिधि भलेही रोग नसाहीं । नाहि त जतन कोटि नहि जाहीं ।
जानिअ तब मन बिरुज गोसाईं । जब उर बल बिराग अधिकाई ।
सुमति छुधा बाढ़ै नित नई । बिषय आस दुर्बलता गई ।
बिमल ज्ञान जल जब सो नहाई । तब रह राम भगति उर छाई ।
सिव अज सुक सनकादिक नारद । जे मुनि ब्रह्म बिचार बिसारद ।
सब कर मत खगनायक एहा । करिअ राम पद पंकज नेहा ।
श्रुति पुरान सब ग्रंथ कहाहीं । रघुपति भगति बिना सुख नाही ।
कमठ पीठि जामहि बरु बारा । बंध्यासुत बरु काहुहि मारा ।
फूलहि नभ बरु बहु बिधि फूला । जीव न लह सुख हरि प्रतिकूला ।
तृषा जाइ बरु मृगजल पाना । बरु जामहि सस सीस बिखाना ।
अंधकार बरु रबिहि नसावै । राम बिमुख न जीव सुख पावै ।
हिम ते अनल प्रगट बरु होई । बिमुख राम सुख पाव न कोई ॥

बारि मथे घृत होइ बरु सिकता ते बरु तेल ।
बिनु हरि भजन न भव तरिअ येह सिद्धांत अपेल ॥
मसकहि करै बिरंचि प्रभु अजहि मसक ते हीन ।
अस बिचारि तजि संसय रामहि भजहिं प्रबीन ॥१२२॥

विनिश्चितं वदामि ते न अन्यथा वचांसि मे ।
हरिं नरा भजन्ति जे तिदुस्तरं तरंति ते ॥

कहेउँ नाथ हरि चरित अनूपा । ब्यास समास स्वमति अनुरूपा ।
श्रुति सिद्धांत इहै उरगारी । राम भजिअ सब काज बिसारी ।
प्रभु रघुपति तजि सेइअ काही । मोहि से सठ पर ममता जाही ।
तुम्ह बिग्यान रूप नहि मोहा । नाथ कीन्हि मोपर अति छोहा ।
पूछेहु राम कथा अतिपावनि । सुक सनकादि संभु मन भावनि ।
सतसंगति दुर्लभ संसारा । निमिष दंड भरि एको बारा ।

संत बिटप सरिता गिरि धरनी। परहित हेतु सबन्ह कै करनी।
संत हृदय नवनीत समाना। कहा कबिन्ह परि कहै न जाना।
निज परिताप द्रवै नवनीता। पर दुख द्रवहिं संत सुपुनीता[1]।
जीवन जन्म सुफल मम भयेऊ। तव प्रसाद संसय सब गयेऊ।
जानेहु सदा मोहि निज किंकर। पुनि पुनि उमा कहइ बिहंगबर॥

तासु चरन सिरु नाइ करि प्रेम सहित मतिधीर।
गयेउ गरुड़ बैकुंठ तब हृदय राखि रघुबीर॥
गिरिजा संत समागम सम न लाभ कछु आन।
बिनु हरि कृपा न होइ सो गावहिं बेद पुरान॥१२५॥

कहेउं परम पुनीत इतिहासा। सुनत श्रवन छूटहि भवपासा।
प्रनत कल्पतरु करुना पुंजा। उपजै प्रीति राम पद कंजा।
मन क्रम बचन जनित अघ जाई। सुनहि जे कथा श्रवन मन लाई।
तीर्थाटन साधन समुदाई। जोग बिराग ज्ञान निपुनाई।
नाना कर्म धर्म ब्रत दाना। संजम दम जप तप मख नाना।
भूत दया द्विज गुर सेवकाई। बिद्या बिनय बिबेक बड़ाई।
जहँ लगि साधन बेद बखानी। सब कर फल हरि भगति भवानी।
सो रघुनाथ भगति श्रुति गाई। राम कृपा काहू एक पाई॥

मुनि दुर्लभ हरि भगति नर पावहिं बिनहिं प्रयास।
जे यह कथा निरंतर सुनहि मानि बिस्वास॥१२६॥

सोइ सर्बज्ञ गुनी सोइ ज्ञाता। सोइ महि मंडन[2] पंडित दाता।
धर्म परायन सोइ कुल त्राता। राम चरन जाकर मन राता।
नीति निपुन सोइ परम सयाना। श्रुति सिद्धांत नीक तेहि जाना।
सोइ[3] कबि कोविद सोइ[3] रनधीरा। जो छल छाँड़ि भजै रघुबीरा।

१–४, ५; सुसत पुनीता ६. ३–४, ५; सो ६
२–४, ५, मडिन ६.

देखु गरुड निज हृदय बिचारी। मैं रघुबीर भजन अधिकारी।
सकुनाधम सब भाँति अपावन। प्रभु मोहि कीन्ह बिदित जगपावन॥
आजु धन्य मैं धन्य अति जद्यपि सब बिधि हीन।
निज जन जानि राम मोहि संत समागम दीन्ह॥
नाथ जथामति भाषेउँ राखेउँ नहि कछु गोइ।
चरित, सिंधु रघुनायक[1] थाह कि पावै कोइ॥१२३॥

सुमिरि राम के गुन गन नाना। पुनि पुनि हरष भुसुंडि सुजाना।
महिमा निगम नेति करि गाई। अतुलित बल प्रताप प्रभुताई।
सिव अज पूज्य चरन रघुराई। मोपर कृपा परम मृदुलाई।
अस सुभाउ कहुँ सुनउँ न देखौं। केहि खगेस रघुपति सम लेखौं।
साधक सिद्ध बिमुक्त उदासी। कबि कोबिद कृतज्ञ, संन्यासी।
जोगी सूर सुतापस ज्ञानी। धर्म निरत पंडित बिज्ञानी।
तरहिं न बिनु सेए मम स्वामी। राम नमामि नमामि नमामी।
सरन गए मो से अघरासी। होहिं सुद्ध नमामि अबिनासी॥
जासु नाम भव भेषज हरन घोर त्रय सूल।
सो कृपालु मोहि पर सदा रहौ राम[2] अनकूल॥
सुनि भुसुंडि के बचन सुभ देखि राम पद नेह।
बोलेउ प्रेम सहित गिरा गरुड़ बिगत संदेह॥१२४॥

मैं कृतकृत्य भयेउँ तव बानी। सुनि रघुबीर भगति रस सानी।
राम चरन नूतन रति भई। माया जनित बिपति सब गई।
मोह जलधि बोहित तुम्ह भए। मो कहँ नाथ बिबिध सुख दए।
मो पहिं होइ न प्रतिउपकारा। बंदौं तव पद बारहि बारा।
पूरनकाम राम अनुरागी। तुम्ह सम तात न कोउ बडभागी।

---

१ १–६, रघुनाय वर ४ ५ २–४ ५ मोहि ... पर सदा रहौ ६

संत बिटप सरिता गिरि धरनी । परहित हेतु सबन्ह कै करनी ।
संत हृदय नवनीत समाना । कहा कबिन्ह परि कहै न जाना ।
निज परिताप द्रवै नवनीता । पर दुख द्रवहिं संत सुपुनीता[1] ।
जीवन जन्म सुफल मम भयेऊ । तव प्रसाद संसय सब गयेऊ ।
जानेहु सदा मोहि निज किंकर । पुनि पुनि उमा कहइ विहंगवर ॥

तासु चरन सिरु नाइ करि प्रेम सहित मतिधीर ।
गयेउ गरुड बैकुंठ तब हृदय राखि रघुबीर ॥
गिरिजा संत समागम सम न लाभ कछु आन ।
बिनु हरि कृपा न होइ सो गावहिं बेद पुरान ॥१२५॥

कहेउ परम पुनीत इतिहासा । सुनत श्रवन छूटहिं भवपासा ।
प्रनत कल्पतरु करुना पुंजा । उपजै प्रीति राम पद कंजा ।
मन क्रम बचन जनित अघ जाई । सुनहिं जे कथा श्रवन मन लाई ।
तीर्थाटन साधन समुदाई । जोग बिराग ग्यान निपुनाई ।
नाना कर्म धर्म ब्रत दाना । संजम दम जप तप मख नाना ।
भूत दया द्विज गुर सेवकाई । बिद्या बिनय बिबेक बडाई ।
जहँ लगि साधन बेद बखानी । सब कर फल हरि भगति भवानी ।
सो रघुनाथ भगति श्रुति गाई । राम कृपा काहू अेक पाई ॥

मुनि दुर्लभ हरि भगति नर पावहिं बिनहिं प्रयास ।
जे यह कथा निरंतर सुनहिं मानि बिस्वास ॥१२६॥

सोइ सर्बग्य गुनी सोइ ग्याता । सोइ महि मंडन[2] पंडित दाता ।
धर्म परायन सोइ कुल त्राता । राम चरन जाकर मन राता ।
नीति निपुन सोइ परम सयाना । श्रुति सिद्धांत नीक तेहि जाना ।
सोइ[3] कबि कोबिद सोइ[3] रनधीरा । जो छल छाँड़ि भजे रघुबीरा ।

१–४, ५ सुसंत पुनीता ६ ३–४, ५ सो ६
२–४, ५, मंडित ६

धन्य देस सो जहँ सुरसरी। धन्य नारि पतिव्रत अनुसरी॥
धन्य सो भूप नीति जो करई। धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई॥
सो धन धन्य प्रथम गति जाकी। धन्य पुन्यरत मति सोइ जाकी॥
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा। धन्य जन्म द्विज भगति अभंगा॥

सो कुल धन्य उमा सुनु जगत पूज्य सुपुनीत।
श्री रघुबीर परायन जेहि नर उपज बिनीत॥१२७॥

मति अनुरूप कथा मैं भाषी। जद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी॥
तव मन प्रीति देखि अधिकाई। तौ मैं रघुपति कथा सुनाई॥
यह न कहिय सठहीं हठसीलहि। जो मन लाइ न सुन हरि लीलहि॥
कहिय न लोभिहि क्रोधिहि कामिहि। जो न भजइ सचराचर स्वामिहि॥
द्विजद्रोहिहि न सुनाइअ कबहूँ। सुरपति सरिस होइ नृप जबहूँ॥
राम कथा के तेइ अधिकारी। जिन्ह के सतसंगति अति प्यारी॥
गुर पद प्रीति नीति रत जेई। द्विज सेवक अधिकारी तेई॥
ता कहँ यह बिसेषि सुखदाई। जाहि प्रान प्रिय श्री रघुराई॥

राम चरन रति जो चह अथवा पद निर्बान।
भाव सहित सो येहि कथा करौ श्रवन पुट पान॥१२८॥

राम कथा गिरिजा मैं बरनी। कलिमल समनि मनोमल हरनी॥
संसृति रोग सजीवन मूरी। राम कथा गावहिं श्रुति सूरी॥
ऐहि मह रुचिर सप्त सोपाना। रघुपति भगति केर पंथाना॥
अति हरि कृपा जाहि पर होई। पाउँ देइ ऐहि मारग सोई॥
मनकामना सिद्धि नर पा[illegible] तजि गागा
कहहिं सुनहिं अनुमोदन क[illegible] तरहीं
सुनि सब कथा हृदय अति [illegible] सुहाई

कृपा -मम गत संदेहा । राम चरन उपजेउ नव नेहा ॥
मैं कृतकृत्य भइउँ अब तव प्रसाद बिस्वेस ।
उपजी -राम भगति दृढ़ बीते सकल कलेस ॥१२९॥

सुभ ।संभु उमा संवादा । सुख संपादन समन बिषादा ।
भंजन गंजन संदेहा । जन रंजन सज्जन प्रिय एहा ।
उपासक जे जग माहीं । ओह सम प्रिय तिन्हके कछु नाहीं ।
ते कृपा जथामति, गावा । मैं यह पावन चरित सुहावा ।
कलिकाल न साधन दूजा । जोग जग्य जप तप ब्रत पूजा ।
ई सुमिरिय गाइअ रामहि । संतत सुनिय राम गुन ग्रामहि ।
पतितपावन बड़ बाना । गावहिं कबि श्रुति संत पुराना ।
भजहि मन तजि कुटिलाई । राम भजे गति केहि नहि पाई ॥
पाई न केहि गति पतितपावन राम भजि सुनु सठ मना ।
गनिका अजामिल ब्याध गीध गजादि खल तारे घना ।
आभीर जमन किरात खस स्वपचादि अति अघरूप जे ।
कहि नाम बारक तेपि पावन होहिं राम नमामि ते ॥
रघुबंसभूषन चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं ।
कलिमल मनोमल धोइ बिनु श्रम रामधाम सिधावहीं ।
सत पंच चौपाईं मनोहर जानि जो नर उर धरे ।
दारुन अबिद्या पंच जनित बिकार श्री रघुबर हरे ॥
सुंदर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो ।
सो एक राम अकाम हित निर्बान प्रद सम आन को ।
जाकी कृपा लव लेस ते मतिमंद तुलसीदास हू ।
पायो परम बिश्रामु राम समान प्रभु नाहीं कहूँ ॥
मो सम दीन न दीनहित तुम्ह समान रघुबीर ।
अस बिचारि रघुबंस मनि हरहु बिषम भवभीर ॥

धन्य देस सो जहँ सुरसरी। धन्य नारि पतिव्रत अनुसरी।
धन्य सो भूप नीति जो करई। धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई।
सो धन धन्य प्रथम गति जाकी। धन्य पुन्यरत मति सोइ जाकी।
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा। धन्य जन्म द्विज भगति अभंगा॥

सो कुल धन्य उमा सुनु जगत पूज्य सुपुनीत।
श्री रघुबीर परायन जेहि नर उपज बिनीत ॥१२७॥

मति अनुरूप कथा मैं भाषी। जद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी।
तव मन प्रीति देखि अधिकाई। तौ मैं रघुपति कथा सुनाई।
यह न कहिय सठहीं हठसीलहिं। जो मन लाइ न सुन हरि लीलहिं।
कहिय न लोभिहि क्रोधिहि कामिहि। जो न भजइ सचराचर स्वामिहि।
द्विजद्रोहिहि न सुनाइअ कबहूँ। सुरपति सरिस होइ नृप जबहूँ।
राम कथा के तेइ[1] अधिकारी। जिन्ह के सतसंगति अति प्यारी।
गुर पद प्रीति नीति रत जेई। द्विज सेवक अधिकारी तेई।
ता कहँ यह बिसेषि सुखदाई। जाहि प्रान प्रिय श्री रघुराई॥

राम चरन रति जो चह अथवा पद निर्बान।
भाव सहित सो येहि कथा करौ श्रवन पुट पान ॥१२८॥

राम कथा गिरिजा मैं बरनी। कलिमल समनि मनोमल हरनी।
संसृति रोग सजीवन मूरी। राम कथा गावहिं श्रुति सूरी
येहि महँ रुचिर सप्त सोपाना। रघुपति भगति केर पंथाना
अति हरि कृपा जाहि पर होई। पाउँ देइ येहि मारग सोई
मनकामना सिद्धि नर पावा। जे येह कथा कपट तजि गावा
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं। ते गोपद इव भवनिधि तरहीं
सुनि सब कथा हृदय अति भाई। गिरिजा बोली गिरा सुहाई

१-४, ५, ते ६

ाथ कृपा मम गत संदेहा । राम चरन उपजेउ नव नेहा ॥
मैं कृतकृत्य भइउँ अब तव प्रसाद बिस्वेस ।
उपजी राम भगति दृढ़ बीते सकल कलेस ॥१२९॥

यह सुभ संभु उमा संबादा । सुख संपादन समन बिषादा ।
भव भंजन गंजन संदेहा । जन रंजन सज्जन प्रिय एहा ।
राम उपासक जे जग माहीं । ऐहि सम प्रिय तिन्हके कछु नाहीं ।
रघुपति कृपा जथामति गावा । मैं यह पावन चरित सुहावा ।
ऐहि कलिकाल न साधन दूजा । जोग जग्य जप तप ब्रत पूजा ।
रामहि सुमिरिय गाइअ रामहि । संतत सुनिय राम गुन ग्रामहि ।
जासु पतितपावन बड़ बाना । गावहिं कबि श्रुति संत पुराना ।
ताहि भजहि मन तजि कुटिलाई । राम भजे गति केहि नहि पाई ॥
पाई न केहि गति पतितपावन राम भजि सुनु सठ मना ।
गनिका अजामिल ब्याध गीध गजादि खल तारे घना ।
आभीर जमन किरात खस स्वपचादि अति अघरूप जे ।
कहि नाम बारक तेपि पावन होहिं राम नमामि ते ॥
रघुबंसभूषन चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं ।
कलिमल मनोमल धोइ बिनु श्रम रामधाम सिधावहीं ।
सत पंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरे ।
दारुन अबिद्या पंच जनित बिकार श्री रघुबर हरे ॥
सुंदर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो ।
सो एक राम अकाम हित निर्बान प्रद सम आन को ।
जाकी कृपा लव लेस ते मतिमंद तुलसीदास हू ।
पायो परम बिश्रामु राम समान प्रभु नाहीं कहूँ ॥
मो सम दीन न दीनहित तुम्ह समान रघुबीर ।
अस बिचारि रघुबंस मनि हरहु बिषम भवभीर ॥

कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ॥१३०॥

यत्पूर्वं प्रभुना कृतं सुकविना श्रीसंभुना दुर्गमं ।
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिसं प्राप्त्यै तु रामायणं ॥
मत्वा तद्रघुनाथनाम निरतं स्वांतस्तमःशांतये ।
भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसं ॥ १ ॥

पुण्यं पापहरं सदा सिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं ।
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमांबुपूरं शुभम् ॥
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहंति ये ।
ते संसारपतंगघोरकिरणैर्दह्यंति नो मानवाः ॥ २ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने अविरल-
हरिभक्तिसंपादिनी नाम सप्तम सोपानः समाप्त ॥

॥ शुभमस्तु ॥